इति लीलाओंकी अनुक्रमणिका.

॥ श्री ॥

ागरत्नाकरकी अकारादि क्रमसे पदानुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

ख

ग.

झ.

ह.

रागमालानुक्रमणिका.

इति श्रीरागरत्नाकरकी अनुक्रमणिका समाप्त.

श्रीः।

अथ समीचीन

रागरत्नाकर।

मङ्गलाचरणश्लोकाः।

सिन्दूरारुणभालं, कालं विघ्नस्य शर्मगणपालम्।
मोदकपूरितवदनं, सत्सुखसदनं नमस्यामः॥ १॥

वन्दामहे महेशान–चण्डकोदण्डखण्डनम्।
जानकीहृदयानन्द–चन्दनं रघुनन्दनम्॥ २॥

इन्दीवरदलश्याम-मिन्दिरानन्दकन्दलम्।
वन्दारुजनमन्दारं वन्देऽहं यदुनन्दनम्॥ ३॥

यो देवैर्विनिबद्धपाणियुगलैरिन्द्रादिभिः स्तूयते
यो ब्रह्माण्डसहस्रपालनविधौ कारुण्यपूर्णेक्षणः।
वर्तन्तेऽखिलसिद्धयोऽनुचरणमालम्ब्य यस्याश्रयं
तं वन्दे निगमागमस्तुतपदं लक्ष्मीपतिं सादरम्॥ ४॥

यं ध्यायन्ति सुराऽसुराश्च निखिला यक्षाः पिशाचोरगाः
राजानश्च तथा मुनीन्द्रनिवहाः सर्वार्थदं सिद्धये।
भक्तानां-वरदाभयप्रदकरं पाशांकुशाऽलंकृतं
चञ्चच्चामरवीज्यमानमनिशं सोऽहं श्रये शंकरम्॥ ५॥

लोकानुद्धरयन् श्रुतीर्मुखरयन् क्षोणीरुहान् हर्षयन्
शैलान् विद्रवयन् मृगान् विवशयन् गोवृन्दमानन्दयन् ।
गोपान्संभ्रमयन् मुनीन्मुकुलयन् सप्तस्वरान् जृम्भयः
न्नोङ्कारार्थमुदीरयन् विजयते वंशीनिनादः शिशोः ॥ ६ ॥

त्वरितनिहतकंसं योगिहृद्याब्जहंसं
यदुकुमुदसुचन्द्रं रक्षणे त्यक्ततन्द्रम् ।
श्रुतिजलनिधिसारं निर्गुणं निर्विकारं
हृदय भज मुकुन्दं नित्यमानन्दकन्दम् ॥ ७ ॥

दोर्भ्यां दोर्भ्यां व्रजन्तं व्रजसदनजनाह्वानतः प्रोल्लसन्तं
मन्दं मन्दं हसन्तं मधुमधुरवचो मेति मेति ब्रुवन्तम् ।
गोपालीपाणिपालीतरलितवलयध्वानमुग्धान्तरालं
वन्दे तं देवमिन्दीवरविमलदलश्यामलं नन्दबालम् ॥ ८ ॥

नमस्ते सते सर्वलोकाश्रयाय नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय ।
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय९॥

शिखण्डालंकारी युवतिपटहारी जलमुचां
त्विषां गर्वध्वंसी सलिलतरवंशीवरधरः ।
यशोदामोदाब्धि वदनविधुलोकेन प्रथयन्
स्वभक्ताज्ञापाली दिशतु वनमाली मम शिवम् ॥ १० ॥

यो भूमिभारोद्धरणाय चक्री चक्रेऽवतारं वसुदेवगेहे ।
गोपीजनाऽनन्दकरो मुकुन्दःपायात्स वो यादवराजहंसः॥ ११ ॥

वन्दना—गणेशजीकी ।

दोहा—एकरदन करिवरवदन, मदनकदनके लाल ।
गणनायक लायक सदा, सुखी करहु सब काल ॥
चौ०—सुखी करहु सब काल सुमंगलमूल सर्वगुणज्ञाता ।
हरन अमंगलहेत मनावत शंकर विष्णु विधाता ॥

दास जानि मम दोष निवारण करहु षडाननभ्राता ।
प्रणमत सीताराम जयति प्रभु ऋद्धिसिद्धिवरदाता ॥
दौड़–जयति गणपति जगवन्दन । करन खलदलमदगंजन ॥
चरण प्रभुके नित ध्यावत ।
नारायण गोविंद भक्तियुत ग्रन्थ सन्तहित गावत ॥ १२ ॥
दोहा–गुरु गोविंद मनाय उर, मंगलहित करि ध्यान ।
मंगलमय व्रजराजके, चरित लिखत करि गान ॥ १३ ॥
कमलनयन करुणाकरन, कमलापति करतार ।
करहु कृपा कालियदमन, कामद कान्ह कुमार ॥ १४ ॥
सुन्दर रस भरपूर यह, रसिक जनन मुदकार ।
लिखत रागरत्नाकरहि, प्रगट हेत संसार ॥ १५ ॥
श्रीगुरुपद सुमिरन करूं, जिनसे पायो ज्ञान ।
रामकृष्णकी भक्तिमें, निशिदिन रह मम ध्यान ॥ १६ ॥
गोपी ओपी जगतमें, जिनकी उलटी रीति ।
तिनके पद वन्दन करूं, करी कृष्णसों प्रीति ॥ १७ ॥
व्रज समुद्र मथुरा कमल, वृन्दावन मकरन्द ।
व्रजवनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचन्द ॥ १८ ॥
क्रीट मुकुट कटि काछनी, पीताम्बर वनमाल ।
यह मूरति मम मन वसी, सदा विहारीलाल ॥ १९ ॥
नवरसमें कवियन कह्यो, सरस अधिक शृंगार ।
ताहूमें अति सरस है, प्रभुको रासविहार ॥ २० ॥
चन्द मिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुणविस्तार ।
दृढव्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नित्य विहार ॥ २१ ॥
काहूके वल भजनको, काहूके आचार ।
व्यास भरोसे कुँवरके, सोवत पाँव पसार ॥ २२ ॥

मुरली मदनगुपालकी, बाजत गहिर गँभीर ।
कृष्णदास ब्राजत सुनी, कालिन्दीके तीर ॥ २३ ॥
श्रीनारायण अति सुभट, जिनको ब्रजसों हेत ।
ठौर ठौर लीला रची, निकट जात संकेत ॥ २४ ॥
सोरठा--हरणहेत भुविभार, प्रगटे हरि वसुदेवगृह ।
कीन्हो चरित अपार, गाय गाय जेहि जन तरत ॥२५॥

गोविन्दनाममहिमा–सवैया ।

गोविंदके गुण गान करौ नित, मोहन कृष्ण मुकुंद मुरारी ।
माधव और गुपाल गदाधर, श्रीव्रजराज हरे गिरिधारी ॥
देवकिनन्दन कंसनिकंदन, भारविभंजन भूमिविहारी ।
नेम रु प्रेमते ताहि भजौ नित, गोविंद नाम सदा हितकारी ॥२६॥

कुंडलिया ।

हरिया हरिसों हेत कर, निशिदिन आठौ याम ।
भवसागरके भँवरमें, यहै एक विश्राम ॥
यहै एक विश्राम काम जब हरिसों परिहै ।
मात पिता सुत बंधु, पीर कोऊ नहिं हरिहै ॥
ब्रजवल्लभ यह कहत, देखु राहटकी घरिया ।
निशिदिन आठौ याम, हेतु हरिसों करु हरिया ॥ २७ ॥

कवित्त ।

वृन्दावन धाम नीको, ब्रजको विश्राम नीको,
श्यामा श्याम नाम नीको, मन्दिर अनन्दको ॥
कालीदह न्हान नीको, यमुना पयपान नीको,
रेणुकाको खान नीको, स्वाद नीको कन्दको ॥
राधाकृष्ण अंग नीको, सन्तनको संग नीको,

गौर श्याम रंग नीको, युगुल मुखचन्दको।
नील पीत पट नीको, वंशीवट तट नीको,
गोपनमें सुभट नीको, नट नीको, नन्दको॥ २८॥

समाजीवचन।

श्रीव्रजराज कुँवरवर गाइये। भक्तनको मनभावतो गाइये॥
आनँदके कन्द निधिवर गाइये। श्रीलाड़िलीललनवर गाइये॥२९॥
दो०--नवहि अंग शृंगारके, होरी चोरी दान।
छलहि करन वन ऋतु गमन, विरह मिलन अरु मान॥ ३०॥
नागरिया नव नागरी, खेलन रास विलास।
पल पल वारों हे सखी, नित नव नागरिदास॥ ३१॥
सुखमन रूप अनूप है, कह बरणै कवि नन्द।
अब वृन्दावन बरणि हौं, जहँ वृन्दावनचन्द॥ ३२॥
वृन्दावन आनंदघन, कछु छबि बरणि न जाय।
कृष्ण ललित लीलाकरण, धारि रह्यो जडताय॥ ३३॥
मुक्ति कहै गोपालसों, मेरी मुक्ति वताय।
व्रजरज उड़ि मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय॥ ३४॥
धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम।
धनि वृन्दावनरसिक जो, सुमिरैं राधाश्याम॥ ३५॥
नारायण व्रजभूमिको, सुरपति नावैं माथ॥
जहाँ जाय गोपी भये, श्रीगोपेश्वरनाथ॥ ३६॥

श्रीठाकुरजी-वचन।

दो०--श्रीराधे मेरी लाड़िली, मेरी ओर तू देख।
मैं तोहि राखौं नयनमें, काजरकीसी रेख॥ ३७॥

श्रीप्रियाजी-वचन।

दो०-मैं बेटी वृषभानकी, राधा मेरो नावँ।
तीन लोकमें गाइये, बरसानो नँदगावँ॥ ३८॥

ललितासखी–वचन ।

दो०--आवौ प्यारे मोहना, पलक झाँपि तोहि लेउँ ।
ना मैं देखौं औरको, ना तोहि देखन देउँ ॥ ३९ ॥

विशाखासखी–वचन ।

दो०–ए रे कठिन अहीरके, नेक पीर पहिचान ।
तेरे दर्शन कारनै, छाँड़ि दई कुलकान ॥ ४० ॥

श्रीठाकुरजी–वचन ।

दो०–राधे आधे नयनसों, तिरछी चितवन चाय ।
ज्यों निशान आगे चलै, पाछेको फहराय ॥ ४१ ॥

श्रीप्रियाजी–वचन ।

दो०--कर मुरली लकुटी गहे, घूँघरवारे केश ।
हरि हमरे नैनन वसें, सदा मनोहर भेश ॥ ४२ ॥

ललितासखी–वचन ।

दो०--मोहनि मूरति श्यामकी, मो मन रही समाय ।
ज्यों मेंहदीके पातमें, लाली लखी न जाय ॥ ४३ ॥

विशाखासखी–वचन ।

दो०–हाथ जोरि विनती करों, सुनिय गरीब निवाज ।
आपनही कर राखिये, बाँह गहेकी लाज ॥ ४४ ॥

श्रीठाकुरजी–वचन ।

दो०--लट सम्हारु प्रिय नागरी, कहा भयो है तोहि ।
तेरी लट नागिन भई, डसा चहत है मोहि ॥ ४५ ॥

श्रीप्रियाजी–वचन ।

दो०–तू कान्हर घर नन्दके, मैं बेटी वृषभान ।
तू तो सुन्दर साँवरो, मैं हूँ चतुर सुजान ॥ ४६ ॥

ललितासखी-वचन।

दो०--जलसुतके नीचे वसै, मोतीसुतके बीच।
सो माँगत है राधिका, करौ श्याम बकशीश ॥ ४७ ॥

विशाखासखी-वचन।

दो०--मोर मुकुटकी लटकपर, अटकि रहे दृग मोर।
कान्ह कुँवर सखि यमुनतट, नटवर नन्दकिशोर ॥४८॥

श्रीठाकुरजी-वचन।

दो०--गोरे मुखपै तिल बन्यो, ताहि करूं परणाम।
मानों चन्द्र बिछायके, पौढ़े शालिकराम ॥ ४९ ॥

श्रीप्रियाजी-वचन।

दो०--मनमोहन मनमोहना, मनमोहन मनमाहिं।
या मोहनते सोहना, तीन लोकमें नाहिं ॥ ५० ॥

ललितासखी-वचन।

दो०--जिन मोरनके पंख लखि, राखत अपने शीस।
तिनके भागनकी सखी, कौन कर सकै रीस ॥ ५१ ॥

विशाखासखी-वचन।

दो०--मेरे प्यारे मोहना, मेरे मनके चोर।
तेरो मुख देखे विना, दीखत नहिं कोइ और ॥ ५२ ॥

श्रीठाकुरजी-वचन।

दो०--राधेजूके वदनपै, बेंदी अति छवि देय।
मानों फूली केतकी, भ्रमर वासना लेय ॥ ५३ ॥

श्रीप्रियाजी-वचन।

दो०--आव पियारे मोहना, पलक झाँप तोहि लेउँ।

ना मैं देखौं औरको, ना तोहि देखन देउँ ॥ ५४ ॥

ललितासखी-वचन ।

दो०-राधाजू बड़ि भागिनी, कौन तपस्या कीन ।
तीनि लोक तारण तरण, सो तेरे आधीन ॥ ५५ ॥

विशाखासखी-वचन ।

दो०-शोभा युगल-किशोरकी, को कवि कहै बखान ।
मनमोहन शशि पावना, गोपिनको धन प्रान ॥ ५६ ॥

श्रीठाकुरजी-वचन ।

दो०-प्यारीजूके वदनपै, वसत चालिसौ चोर ।
दश शारद दश हंस हैं, दश चातक दश मोर ॥५७॥

श्रीप्रियाजी-वचन ।

दो०-प्यारे मेरे मोहना, मो मन गयो समाय ।
तेरे मुख देखे विना, मोहिं न कछू सुहाय ॥ ५८ ॥

ललितासखी-वचन ।

दो०-मोर मुकुट कटि काछनी, पीताम्बर वनमाल ।
यह मूरति मेरे मन वसी, सदा विहारीलाल ॥ ५९ ॥

विशाखासखी-वचन ।

दो०-वृन्दावनके वृक्षको, मर्म न जाने कोय ।
डार पात अरु फूलमें, राधे राधे होय ॥ ६० ॥

श्रीठाकुरजी-वचन ।

दो०-ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
इन्हे न नेक विसारिहों, नन्दरायकी आन ॥ ६१ ॥

श्रीप्रियाजी-वचन ।

दो०-मेरे प्यारे मोहना, वंशी नेक वजाय ।

तेरी वंशी मेरो मन हरयो, घर अँगना न सुहाय ॥ ६२ ॥

ललितासखी–वचन ।

दो०–वंशीवट यमुना-निकट, जहाँ सघन घन छाँह ।
प्यारी मुख बिहसत भई, डारि गले पिय बाँह ॥ ६३ ॥

विशाखासखी–वचन ।

दो०–वृन्दावन बानिक बन्यो, भ्रमर करत गुंजार ।
दुलहिन प्यारी राधिका, दूलह नन्दकुमार ॥ ६४ ॥

श्रीठाकुरजी–वचन ।

दो०–लट छूटी त्रिय शीशते, रही कपोलन छाय ।
मानौं छौना नागको, पी पी अमी अघाय ॥ ६५ ॥

श्रीप्रियाजी–वचन ।

दो०–लट छूटी मेरे शीशसों, काह पड़ो है तोय ।
मेरी लट नागिन भई, लपटत आवत सोय ॥ ६६ ॥

ललितासखी–वचन ।

दो०–व्रज चौरासी कोशमें, चार ग्राम निजधाम ।
वृन्दावन अरु मधुपुरी, बरसानों नँदग्राम ॥ ६७ ॥

विशाखासखी–वचन ।

दो०–ये रे छलिया नन्दके, ये तेरे छलछन्द ।
मन गहि नीके राखियो, भुजके बाजूबन्द ॥ ६८ ॥

श्रीठाकुरजी–वचन ।

दो०–व्रज तज अन्त न जाइहौं, मेरी है यह टेक ।
भूतलभार उतारिहौं, धरिहौं भेष अनेक ॥ ६९ ॥

श्रीप्रियाजी–वचन ।

दो०–प्रीतम मेरे दृग बसौ, ज्यों मेंहदीमें रंग ।

जैसे छाया जीवकी, तजत न नेकौ संग ॥ ७० ॥

ललितासखी–वचन ।

दो०–मानसरोवर प्रेमको, भरो रहै दिन रैन ।
जहँ पिय प्यारी पग धरैं, लाल धरत दोउ नैन ॥ ७१ ॥

विशाखासखी–वचन ।

दो०–वृन्दावनसों वन नहीं, नन्द ग्रामसों ग्राम ।
वंशीवटसों वट नहीं, कृष्ण नामसों नाम ॥ ७२ ॥

अन्य सखी–वचन ।

दो०–चलौ सखी तहँ जाइये, जहाँ वसैं व्रजराज ।
गोरस वेचन प्रेमरस, एक पंथ द्वै काज ॥ ७३ ॥
नँद नन्दीश्वर राजहीं, वरसाने वृषभान ।
दोनों कुलदीपक भये, गावत वेद पुरान ॥ ७४ ॥
उत उरझी कुंडल अलक, इत वेसर वनमाल ।
गौर श्याम उरझे दोऊ, मंडल रास रसाल ॥ ७५ ॥
मोर मुकुटकी निरखि छवि, लाजत मदन करोर ।
चन्द्रवदन सुखसदनपै, भावक नैन चकोर ॥ ७६ ॥
कमलनको रवि एक है, रविको कमल अनेक ।
हमसे तुमको वहुत हैं, तुमसे हमको एक ॥ ७७ ॥
वाँह छुड़ाये जात हो, निवल जानिकै मोहिं ।
हिरदेते जव जाउगे, तव मैं जानों तोहिं ॥ ७८ ॥
जलमें वसे कुमोदनी, चंदा वसे अकास ।
जो जाके मनमें वसै, वसै सो ताके पास ॥ ७९ ॥
पाग वनो पटुका वनो, वनो लालको भेख ।
राधावल्लभ लालकी, चलहु आरती देख ॥ ८० ॥

श्रीकृष्णजन्म।

दो०—माधव, मधुसूदन हरी, तजि वैकुंठविहार।
धर्म धेनु सुर धरणिहित, प्रगटे नन्दागार ॥ १ ॥

राग रामकली।

भयो जयकार जन्मे मुरारी।
शीश वसुदेव ले चले हैं कृष्णको शूपमें खेलत हैं विहारी ॥
लालके शीशपर मुकुट सिहरा बन्यो हार हम्मेल छवि ललित प्यारी।
सूरके प्रभु अवतार लियो भक्तहित बढ़यो आनन्द गोकुल मँझारी २

बाललीलाके पद।

राग भैरव।

वन्दौं श्रीहरि पद सुखदाई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, अँधरेको सब कछु दरशाई ॥
बहिरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय बारंबार नमो तिहि पाई ॥ ३ ॥

राग भैरव।

देखो रे अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धऱ्यो है।

तीन लोक जाके उदरभवनमें शूपके कोन पऱ्यो है ॥
जा मुख दरश काज सनकादिक चतुराई सब ठानी है ।
सो मुख चूमत मात यशोदा दूधधार लपटानी है ॥
जिन कानन गजकी विपदा सुनि गरुडासन विसरायो है ।
तिन काननके निकट यशोदा हुलरायो गुण गायो है ॥
जौन भुजा प्रहलाद उवाऱ्यो प्रगट होय खँभ फाऱ्यो है ।
सो भुज पकर ग्वाल अरु गोपी ठाढ़े होय दुलाऱ्यो है ॥
जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक कठिन योग व्रत साध्यो है ।
ताको पाय नन्दकी रानी ऊखलसों गहि बाँध्यो है ॥
जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं शंभु समाधि न टारी है ।
सो ठाकुर है सूरदासको गोकुल गोपविहारी है ॥ ४ ॥

राग भैरव ।

देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जाया है ॥
सुन्दर वरण कमलदललोचन देखत चन्द्र लजाया है ॥
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्दघर आया है ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै केसर तिलक लगाया है ॥
कानन कुंडल गलविच माला कोटि-भानु-छवि छाया है ।
शंख चक्र गदा पद्म विराजै चतुर्भुजरूप बनाया है ॥
परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमतिसुत कहलाया है ।
मच्छ कच्छ वाराह रु वामन रामरूप दरशाया है ॥
खंभ फारि प्रगटे नरहरिवपु जन प्रहलाद छुड़ाया है ।
परशुराम बुध निष्कलंक ह्वै भुविका भार मिटाया है ॥
कालीमर्दन कंसनिकन्दन गोपीनाथ कहाया है ।
मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवछल पद पाया है ॥
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस गुण गाया है ।

सो परब्रह्म प्रगट है ब्रजमें लूट लूट दधि खाया है ॥
परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरणकमल चित लाया है ॥५॥

राग बिलावल।

आदि सनातन हरि अविनासी । अलख निरंजन घटघटवासी ॥
पूरण ब्रह्म पुराण बखाने । चतुरानन शिव अंत न जाने ॥
महिमा अगम निगम जिहि गावै । ताहि यशोमति गोद खिलावै ॥
एक निरन्तर ध्यावे ज्ञानी । पुरुष पुरातन हैं निर्वानी ॥
शुक शारदको नाम अधारा । नारद शेष न पावै पारा ॥
जप तप संयम ध्यान न आवै । सोइ नन्दके आँगन धावै ॥
लोचन श्रवण न रसना नासा । विन पद पाणि करे परकासा ॥
अरुण असित सित बरणन धारे । मुनि मनसामें कहा विचारे ॥
विश्वम्भर निजनाम कहावे । घर घर गोरस जाय चुरावे ॥
जरा मरणते रहित अमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया ॥
आदि अनन्त रहे जलशाई । परमानन्द सदा सुखदाई ॥
ज्ञानरूप हिरदैमें बोलै । सो बछरनके पाछे डोलै ॥
जल थल अनल अनिल नभ छाया । पांच तत्त्वमें जग उपजाया ॥
लोक रचै पालै अरु मारै । चौदह भुवन पलकमें धारै ॥
काल डरै जाके डर भारी । सो ऊखल बाँध्यो महतारी ॥
माया प्रगट सकल जग मोहै । करन अकरन करै सोइ सोहै ॥
जाकी माया लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरे वपु दोई ॥
शिव सनकादिक अंत न पावै । सो गोपनकी गाय चरावै ॥
गुण अनन्त अविगतिहि जनावै । यश अपार श्रुति पार न पावै ॥
चरणकमल नित रमा पलोवै । चाहत नेक नयन भर जोवै ॥
अगम अगोचर लीलाधारी । सो राधावश कुंजविहारी ॥
जो रस ब्रह्मादिक नहिं पायो । सो रस गोकुल गलिन बहायो ॥

बड़भागी यह सब व्रजवासी । जिनके सँग खेलैं अविनासी ॥
सूर सुयश कहि कहा बखानै । गोविंदकी गति गोविंद जानै ॥ ६ ॥
साख मुनिजन भरें देव अस्तुति करें स्मृति पुराण गुण वेद गावें ।
तुम प्रभु एक अनेक ह्वै रमि रहे अमित जिय जन्तु नहिं अन्त पावें ॥
शेष महेश गन्धर्व किन्नर थके व्यास ब्रह्मादि नहिं पार पावें ।
चरण पाताल औ शीश आकाशमें चन्द सूरज दोऊ दृग सुहावें॥
यही परतीत तेरी चहुँ युगनमें भक्तके हेत धरि देह धावें ।
कहत मिहरदास निवास लियो नन्दगृह कान्ह सुत जान यशुमति खिलावे ॥ ७ ॥

राग रामकली ।

हौं इक नई बात सुनि आई ।
महरि यशोदा ढोटा जायो घरघर बजत बधाई ॥
द्वारे भीर गोप गोपिनकी महिमा बरणि न जाई ।
अति आनन्द होत गोकुलमें रत्न भूमि निधि छाई ॥
नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई ।
सूरदास स्वामी सुखसागर सुन्दर श्याम कन्हाई ॥ ८ ॥

दोहा—कृष्णजन्म सुनि हर्षि अति, यदुकुल ढाढ़ी आय ।
देत अशीश व्रजेश प्रति, वंशसुयश बहु गाय ॥ ९ ॥

राग भैरवी ।

नन्दजी ढाढ़ी तिहारो वंशयश गावें सदा ।
आपसे यजमान बल घर बैठि सुख पावें सदा ॥
चन्द्रवंश प्रशंस जगमें भूप सब भूषण भये ।
देवमीढ महीपसुत परिजन्य कहलावें सदा ॥
तस्य सुत महराज व्रजपति सर्वसुखदाता मही ।

तव तनय श्रीकृष्ण हरि दिक्पाल शिर नावें सदा ॥
सुनि व्रजेश अपत्य तेरो होय चिरजीवी प्रभू।
देवगण द्विजदेह धरि धरि दर्शहित आवें सदा ॥ १० ॥

राग वडहंस।

मोहिं नन्दघर ले चलौ ढाढ़िनिया मचल रही।
पुत्र भयो सब जगने जान्यो मोते क्यों न कही ॥
मोहिं मिलै नख शिखलों गहनो लाऊँ तो वात सही।
जरदोजीके वस्त्र मिलेंगे फरिया चोली नई ॥
कृष्णकृपा विन को या जगमें जिन मेरी बाँह गही ॥ ११ ॥

सवैया।

पूत सपूत जन्यो यशुदा इतनी सुनिकै वसुधा सब दौरी।
देवनको आनन्द भयो सुन धावत गावत मंगल गौरी ॥
नन्द कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुवेरहुकी मति वौरी।
मोहिं देखत व्रजहि लुटाय दियो न बची वछिया छछिया न पिछौरी॥

घनाक्षरी।

फूल गये गोपगृह गोपिकन भूल गये,
झूलसी मचाई माते प्रेम सरसाईमें।
कीच मची दधिकी अधिक गैल गैलनमें,
कीकन दै पगे आनंदकी बधाईमें ॥
छोटीसी चोटी कछोटी कटि मोटी भई,
फैल गई थौन वड़े लेदकी अवाईमें।
राजी दिल मोदन विनोदनको विहँसि नन्द,
नाचे आज आँगन कन्हाईकी वधाईमें ॥ १३ ॥

बधाई–राग झिंझौटी।

बजत बधाई नन्द दुआरे ॥
नँदरानी सुंदर सुत जायो घर घर आनँद भारे।
चारहु वेद भाट वनि आये गावत गुन कविता रे ॥
इन्द्रहु मधुर मृदंग बजावत रंभा निरत सम्हारे।
गोपी गोप करत दधिकाँदो बाजत गगन नगारे ॥
जय जय करत सकल सुर नर मुनि पारब्रह्म अवतारे।
यशुदा दान देत दीननको प्रियतम मनि मुक्ता रे ॥ १४ ॥

तथा च।

नवल बधायो नन्दघर आयो ॥
सुन्दर श्याम मोहनी मूरति नँदरानी सुत जायो।
यह सुख सुनत सकल देविनको दर्शन मन लुभि आयो ॥
वाणी रमा उमादिक हिलि मिलि गोपीवेषबनायो।
कर गहि थार आइ नँद आँगन मंजुल मंगल गायो ॥
टीको करि मुख निरखि लाल भो आनँद उर न समायो।
पति पहिचानि रमा शक त्यागी हँसि गहि कंठ लगायो॥
जानि गई यह भाव भवानी अंचल दै मुसक्यायो।
प्रियतम रमा लजानी निज उर दुरत न भाव दुरायो ॥१५॥

अथवा।

व्रजपतिके घर बजत बधाई ॥
जन्म लियो जगदीश जगतगुरु श्रीपति यदुराई।
भुवन चतुर्दशकी सब संपति गोकुलपुर चलि आई ॥
यह सुख सुनत गोप गोपिनके आनँद उर न समाई।
गुनि गंध्रव नारद यश गावत शारद बीन बजाई ॥

धरि धरि वेश देव ढाढ़िनको वर्णत नंदबड़ाई।
मंगल मोद होत सुरपुरमें जय जय परति सुनाई॥
याचक याचि भये धनपतिसम मणि माणिक धन पाई॥१६॥

दो०--जबते बाबा नन्दघर, प्रगटे गोकुलचन्द।
अस झुरमुट नितही रहै, सदा यहै आनन्द॥ १७॥

चौ०-याविधि गिरिजादिक सुरनारी। आवैं नंदभवन वपु धारी॥
दर्शन बालकृष्णके पावैं। गोद खिलाय भवन निज जावैं॥१८॥

गर्गवचन-राग आसावरी।

आज नन्दजू तुम्हरे घरमें पुत्रजन्म सुनि आयो।
लग्न शोधि ज्योतिषको गिनिकै चाहत तुम्हैं सुनायो॥
संवत सरस भाद्रपद मासे आठैं तिथि बुधवार।
कृष्णपक्ष रोहिणी अर्द्ध निशि हर्षण योग उदार॥
वृष है लग्न उच्चको निशिपति तनय बहुत सुख देहै।
चौथे सिंहराशिको दिनपति जीति सकलमें लैहै॥
पंचम बुध कन्याके जो हैं पुत्रन बहुत बढ़ै हैं।
छठे हैं शुक्र तुलाके बलयुत शत्रु रहन नहिं पैहैं॥
ऊँच नीच युवती बहु करिहैं सातैं राहु परे हैं।

भाग्यभवनमें मकर महीसुत[1] पूर्णैश्वर्य करै हैं ॥
कर्म-भवनको[2] ईश[3] शनीचर श्यामवर्ण तनु है है ।
लाभभवनमें मीन बृहस्पति नौनिधि घरमें ऐहैं ॥
आदि सनातन हरि अविनाशी घटघट अंतरयामी ।
सो तुम्हरे घर आय प्रगट भये सूरदासके स्वामी ॥ २९ ॥

दो०–यवन भाँड़ बहु दिननसे, बैठे सदन रिसाय ।
दूत ब्रजेश पठाय घर, लीन्हे सबै बुलाय ॥ २० ॥

राग अलैया ।

मँहफिले गुल्शन यही ब्रजमें सदा कायम रहे ।
भाँड़ ये घरके तुम्हारे मौजमें बेगम रहे ॥
क्या खुशी सुनकर हुई ब्रजराजके बेटा हुआ ।
यह फक्त अपनी दुआ दिनरातमें दमदम रहे ॥
हम जरा देखा चहैं अब सूरते माहे लका[12] ।
कुछ दिनोंमें वह सनैम दोनो जहाँ हाकिम रहे ॥
नन्द इस फरजैन्दकी हो रोशनी महिसैर तलक ।
औ रहै पामौल दुश्मन पासमें हमदम रहे ॥
सारी महफिलको हँसाकर नक्क गोपनकी करैं ।
क्या जर्शन उल्फत नशे सरसार सब आमद रहे ॥
बीस मौजे हार गौहैर दे हमैं रुखसत करो ।
आज महर सवाल मूजबसे नहीं कुछ कम रहे ॥
और एक मुराद खुशदिल दीजिये प्रभु हरिविलास ।
सामरी उल्फत फक्त जबतक कि दममें दम रहे ॥ २१ ॥

---

१ मंगल. २ दशवें. ३ घर. ४ स्वामी. ५ घर. ६ नन्दजी. ७ सभा. ८ फुलवाड़ी. ९ सुखी. १० असीस. ११ सदैव. १२ पुत्र. १३ प्यारा. १४ लड़का. १५ सूर्य. १६ दुःखी. १७ सदा. १८ आराम. १९ प्यार. २० लबालब. (भरपूर.) २१ मोती.

दो०--निजविहाररहित रमापति, दूजो तियतनु धारि।
प्रगट भये वृषभानवर, सौदामिनि-अनुहारि ॥ २२ ॥

शिव–आगमन।

दो०--नारायण-अवतार सुनि, व्रज आये गौरीश।
आय यशोदाते कहत, ग्वाल वाल दश वीश ॥ २३ ॥

राग भैरवी।

सुनौ मैया खड़ो इक द्वार योगी। तिलकचंदा जटा शिर धार योगी॥
लपेटें नागसित ग्रीवा त्रिलोचन। लिये कर शूल मुंडनहार योगी॥
लगाये भस्म तन निजपाणि डमरू। बजावै शृंग वृष असवार योगी॥
मृगादन छाल तन गोरो प्रकाशै। वदन अति भास जिमि तिमिरारि योगी॥
कहै अभिलाष दर्शन हरिविलासी। निवासी शैलको सुखसार योगी२४

महादेवलीला-शिववचन।

राग भैरव।

मैं योगी यश गाया रे वाला मैं योगी यश गाया।
तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशी तज धाया॥
पारब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जा माया।
अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिर आया॥
धनि तेरो भाग यशोदा रानी जिन ऐसा सुत जाया।
गुणन बड़े छोटे मत भूलौ अलख रूप धर आया॥

यशोदावचन।

जो भावै सो लीजै रावर करो आपनी दाया।

देउ असीस मेरे वालकको अविचल वाढ़े काया ॥

महादेववचन ।

ना चहिये तेरो पाट पटम्बर चहिय न कंचन माया ॥
सुख देखिहौं तेरे वालकको यह मेरे गुरुने लखाया ॥

यशोदावचन ।

कर जोरे विनवै नँदरानी सुन योगिनके राया ।
मुख देखन देहौं नहिं रावर वालक जात डराया ॥
काला पीला गौर रूप है वाघंवर ओढ़ाया ।
कहुँ डायनकी दृष्टि पड़ेगी वालक जात दिठाया ॥

महादेववचन ।

जाकी दृष्टि सकल जग उपजै सो क्यों जात दिठाया ॥
तीनि लोकका साहव मेरा सो तेरे भवन छिपाया ॥ २५ ॥

वार्ता–अरी मैया! तें अपने लालाके दर्शन कराय दे। ना, मैं अपने लालाके दर्शन नाँय कराऊँगी, मेरो लाल तुमको देखके डरप जायगो। अरी माता! वे नाँय डरपें। तें दर्शन कराय दे। नाँय दर्शन कराऊँगी। तो मैया! नाँय दर्शन करायगी? ना। सुन मैया! जो मेरे सांचे प्रभू होयँगे तो मुझे आपही दर्शन देयँगे ॥

महादेवका ध्यान करना–राग भैरव ।

दिलदाँ मेरा श्यामला यार दरश तो दिखाय जा ॥
जाँघनि काछनि कटि पीतांवर श्रवनन कुंडल शीश मुकुट घूँघरवाली अलकें झलकें मेरे नैनोंमें समाय जा ॥ वंशीवट इत यमुनातट नाचत गावत गोपिनसंग नन्दके किशोर मेरे हियेमें समाय जा ॥ जानकीदास भये उदास निकसत नाहीं पापी श्वास सपनेहूमें आयके मेरे सकल दुख मिटाय जा ॥ २६ ॥

राग भूपाली।

बोलता क्यों नहिं रे मिज़ाजी बोलता क्यों नहिं रे।
शिर तेरे ककरेली चीरा गल मोतियनकी माल रे॥
हाथमें तेरे दुधारा खाँड़ा मारता क्यों नहिं रे।
इश्कके दरियाव पास खड़ा मुझे लगी प्यास,
प्रेमका प्याला प्यारे तू पिलाता क्यों नहीं रे॥
इस तावमें व्याकुल शरीर दिलको नहीं आती धीर,
करुणा नदी कटाक्षमें डुबाता क्यों नहीं रे॥
ऐसा दिलगीर सो बेपीर हो चुप रहा,
दासनके निकट आता क्यों नहीं रे॥ २७॥

सखीवचन सखीसे–राग बिलावल।

देखो री यक बाला योगी द्वारे मेरे आया है री।
गढ़ कैलाससे चले सदाशिव गोकुल नगरी आया है री॥
नन्दद्वार योगी पूछत डोलै घर घर अलख जगाया है री।
अंग भभूत गले मृगछाला शेषनाग लपटाया है री॥
माथे वाके तिलक चन्द्रमा योगी जटा बढ़ाया है री।
देखत ही डर लागत ताको रूप अनोखो आया है री॥
परमानन्द मगन मन डोलत बोलत अतिहि सुहाया है री २८

यशोदावचन–राग बिलावल।

काहू योगियाकी लागी नजर मेरो बारो कन्हैया रोवै री।
मेरी गली जिन आउ रे योगिया अलख अलख कर बोलै री॥
घर घर हाथ दिखावै यशोदा बारबार सो जोवै री।
राई लोन उतारत छिन छिन सूरको प्रभु सुख सोवै री॥२९॥

समाजीवचन–राग धीमा।

नन्दद्वार यक योगी आयो शृंगीनाद बजायो।

शीश जटा शशि वदन सुहायो अरुण नयन छवि छायो
रोवत खींचत कृष्ण साँवरो रहत नहीं दुलरायो ।
लियो उठाय गोद नँदरानी द्वारे जाय दिखायो ॥ २

वार्ता–यशोदावचन ।

अरी ललिता विशाखा चम्पकलता रंगदेवी सुदेवी सखि नेक ह्याँ आनके देखो तो सही। मेरे लालाको कहा होय है? अरी मैया! जो वो योगी आयो वाहीने कछु टो कर गयो है। अम्बे वीर! साँची कहै वाको नेक टेर ले। वीर! जाऊँ हूँ।

राग भैरव।

चल रे योगी नन्दभवनमें यशुमति तोहिं बुलावे ।
लटकत लटकत शंकर आये मनमें मोद बढ़ावे ॥
नन्दभवनमें आयो योगी राई लोन कर लीन्हो ।
वार फेर लालाके ऊपर हत्थ शीशपे दीन्हो ॥
बिथा भई सब दूर वदनकी किलक उठे नँदलाला ।
सुखी भई नँदजूकी रानी दीन्ही मोतिन माला ॥
रहु रे योगी सदा भवनमें ब्रजमें वासो कीजै ।
जब जब मेरो लाला रोवै तब तब दर्शन दीजै ॥
बोले शिव तब सुन री मैया मानी बात तिहारी ।
अपने लालाको दर्शन मोहिं देहु कराय सुघारी ॥
कृष्णलालको ल्याई यशोदा कर अंचल मुख छाया ।
कर पसार चरणन रज लीन्हीं सिंगीनाद बजाया ॥
अलख अलख कर पाँव छुए हैं हँसि बालक किलकाया ।
पाँच बेर परिकरमा करिकै अति आनन्द बढ़ाया ॥

हरिकी लीला हरमन अटक्यो चित नहिं चलत चलाया।
अखिल लोकके नायक कहिये नंदघरहि प्रगटाया॥
इन्द्र चन्द्र सूरज सनकादिक शारद पार न पाया।
मंत्र सुनाय दीन्हू श्रवणन लगि हँसि बालक मुसक्याया॥
कौन देशके तुम योगी हो कौन नाम धरवाया।
कहाँ बास यह कहत यशोदा तुम योगिनके राया॥
चिरंजीव हो महरि तिहारो हौं योगी सुख पाया।
सूरदास रमि चला रावरो शंकर नाम बताया॥ २१॥

बालविहार—राग बिलावल।

कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत।
प्रभु पौढ़े पालने अकेले हर्षि हर्षि अपने रँग खेलत॥
शिव शोचत विधि बुद्धि विचारत बटु बाढ़यो सागर जल झेलत।
बिडरि चले युग प्रलय जानकर दिगपति दिन दंतौ न सकेलत॥
मुनिमन भीत भये भू कंपत शेष सकुच सहसौ फन पेलत।
सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह शकट पग ठेलत ३२

शोभित कर नवनीत लिये।
घुटुवन चलत रेणु जनु मंडित मुख दधिलेप किये॥
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचनतिलक दिये।
लटलटकन मनु मत्त मधुपगण मादक मधुहि पिये॥
कठुला कंठ वज्र केहरिनख राजत रुचिर दिये।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख का शत कल्प जिये॥ ३३॥

राग प्रभाती।

गिरिधर लो री लै मथुराके वासी।
चिरजीवो वसुदेवके नन्दन वालि वालि माता वोरी॥

भूपर भार भयो अति भारी सुरसमूह सब जाय पुकारी ।
जगतपिता जगनायक स्वामी धर्मकथा जग थोरी ॥
गगनगिरासों यों हरि भाखो असुर मारि संतन पति राखों ।
आदि पुरुष तेरो अंत न पायो धरहु भक्तहित खोरी ॥
वसुदेव देवकि अति हर्षाने पूरण ब्रह्म जान सन्माने ।
अस्तुति करत बहोर बहोरी कंसके भय चित चोरी ॥
नन्द यशोदा हर्ष निरख मन पायो निर्धन मनहु परम धन ।
आदि युगादि धरणिधर माधव लखि न जात गति तोरी ॥
ब्रजवधुआँ मिलि नंदगृह आई भाग भले हरि दर्शन पाई ।
हिलमिल पलना देत झुलाई हाथ गहे पट डोरी ॥
दैत्यानी इक कंस पठाई कर छल विष अस्तनपर लाई ।
बनि वरांगना अति छवि सुन्दर ब्रजवधुआँ चित चोरी ॥
पलनासों हरि जाय उठाये चूमि नयन अस्तन मुख लाये ।
ऐसी चूस करी मेरे ललना लीने प्राण निचोरी ॥
यमलार्जुनको दर्शन दीन्हो नारदवचन सकल कर लीनो ।
ऊखलसों प्रभु आप बँधाये विमल वृक्ष दोउ जाय गिराये
शब्द भयो घनघोरी ॥
तृणावर्त अघासुर मारे और दैत्य कइ कोटि सँहारे ।
कहा कहों अगणित गुण तोरे इक रसना प्रभु मोरी ॥ २४ ॥

प्रभाती–राग भैरव ।

जागिये ब्रजराज कुँवर कमलकोश फूले ।
कुमुदवृंद सकुच गये भृंग लता झूले ॥
तमचर खग शोर सुनो बोलत वन राई ।
राँभत गो क्षीर देन बछरा हित धाई ॥

विधु मलीन रविप्रकाश गावत व्रजनारी।
सूर श्याम प्रात उठे अंबुज कर धारी ॥ २५ ॥
जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई ॥
उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो,
खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥
उठो मेरे आनँदकंद किरण चन्द मंदमंद,
प्रगट्यो आकाश भानु कमलन सुखदाई ॥
संगी सब पुरत बेनु तुम विना न छुटै धेनु,
उठो लाल तजो सेज सुंदर वर राई ॥
मुखते पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो,
माखन दधि माँगि लियो विविध रस मिठाई ॥
जेंवत दोउ राम श्याम सकल मंगल गुणनिधान,
जूठनि रहि थारमें सो मानदास पाई ॥ २६ ॥
जागो हो मोरे जगत उज्यारे।
कोटि मदन मुसकनपर वारत कमलनयन अँखियनके तारे ॥
ग्वाल वच्छ सबरे सँग लेके यमुनातीर वन जाउ सवारे।
परमानंद कहत नँदरानी दूर जनि जाउ मेरे व्रजके रखवारे ॥२७॥
दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकैं।
शीश मुकुट लटा छुटी और छुटी अलकैं ॥
सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दरश कारण किलकैं।
नासिकाको मोती सोहै बीच लाल ललकैं ॥
कटि पीतांबर मुरली कर श्रवण कुंडल झलकैं।
सूरदास मदनमोहन दरश देहु भलकैं ॥ २८ ॥
जागो वंशीवारे ललना जागो मोरे प्यारे।
रजनी बीती भोर भयो है घर घर खुले किवारे ॥

गोपी दही मथत सुनियत हैं कँगनाके झनकारे।
उठो लालजी भोर भयो है सुर नर ठाढ़े द्वारे॥
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे।
माखनरोटी हाथमें लीन्ही गौअनके रखवारे॥
मीराके प्रभु गिरिधरनागर शरण आयेको तारे॥ ३९॥

राग ललित।

जागो जागो हो गोपाल।
प्यारे नाहिन अति सोइयत है प्रात परम शुचिकाल॥
फिर फिर जात निरखि मुख छिन छिन सब गोपनके बाल।
बिन विकसे मनो कमलकोशते ते मधुकरकी माल॥
जो तुम मोहिं पतियाउ न सूरप्रभु सुन्दर श्याम तमाल।
तो उठि आपन अवलोकिय तजि निद्रा नयन विशाल॥ ४०॥

राग रामकली।

मोहन जाग हौं बलि गई॥
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाढ़े बेर वनको भई।
पीतपट कर दूर मुखते छाँड़ दे अलसई॥
अति अनन्दित होत यशुमति देखि द्युति नित नई।
सूरके प्रभु दरश दीजे अरुण कीरण छई॥ ४१॥

राग विलावल।

नन्दनँदन वृन्दावनचन्द।
यह कहि जननि जगावत लालन जागो मोरे आनँदकन्द॥
आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमकत अति मन्द।
पोंछि वदन अंचलसों यशुमति उर लगाय उपज्यो आनन्द॥
सब व्रजयुवती आई देखनको दर्शन होत मिट्यो दुख दन्द।
व्रजपति श्रीगोपाल परिपूरण जाको यश गावत श्रुतिछन्द ४२॥

कौन परी नँदलालहि बानि।
प्रातसमय जागनकी विरिया सोवत है पीतांबर तानि॥
मात यशोदा कबकी ठाढ़ी दधि ओदन भोजन घृत सानि।
उठो श्याम कछु करौ कलेऊ सुन्दर वदन दिखावौ आनि॥
संग सखा सब द्वारे ठाढ़े मधुवन धेनु चरावन जानि।
सूरश्याम सुन्दर अलसाने सोवत हैं अजहूँ निशि मानि॥ ४३॥

बलि बलि जाउँ मधुर स्वर गावो।
अबकी बेर मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाच दिखावो॥
तारी दे दे अपने करकी परम प्रीति उपजावो।
आन जंतु धुनि सुनि डरपत कत मो भुज कंठ लगावो॥
जिन शंका जिय करौ लाल मेरे काहेको शरमावो।
बाँह उठाय कान्हकी नांई धौरी धेनु बुलावो॥
नाचो नेक जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावो।
रत्नजटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावो॥
कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो।
परम दयालु सूरके उरते टारे नेक न जावो॥ ४४॥

आउ गोपाल शृंगार बनाऊँ।
अति सुगंधको करूँ उबटनो उष्णोदक नहवाऊँ॥
अंग अँगौछि गुहों तेरी बेनी फूलन रचि रुचि माल बनाऊं।
सुरँग लाल जरतारी चीरा रत्नखचित शिर पेंच बनाऊँ॥
झागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण चरचाऊँ।
पटुका सरस बैंजनी रँगको हँसुली हेम हमेल धराऊँ॥
गज मोतिनके हार मनोहर बनमाला लै उर पहिराऊँ।
लै दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि छबि नैन सिराऊँ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लै तुम्हें खवाऊँ।

विष्णुदासको यही कृपाफल बालचरित्र हौं निशिदिन गाऊँ।४५।

बलि बलि जाउँ छबीले लालके।
घूसर धूर घुटुरुवन डोलन बोलन वचन रसालके॥
छिटक रहीं चहुँदिशि जो लटुरियाँ लटकनि लटकन भालके।
मोतिनसहित नासिका नथुनी कंठ कमलदल मालके॥
कछु इक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन विशालके।
सूरदास प्रभु प्रेममगन हुइ ढिग न तजत व्रजबालके॥ ४६॥

राग गौरी।

कहन लगे मोहन मैया मैया।
नन्दरायसों बाबा बाबा अरु हलधरसों भैया॥
खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया।
परमानन्ददासको ठाकुर व्रजजन केलि करैया॥ ४७॥

राग देस।

धूर भरे अँग खेलत मोहन आछी बनी शिर सुंदर चोटी।
देखो री कागके भाग भले हैं हाथसों ले गयो माखन रोटी॥
खात पियत कूदत भये अँगना पायन पायन पर्त कछोटी।
सूरदास प्रभु या छवि निरखत वार डारों शिर रवि शशि कोटी॥४८॥

राग रामकली।

हौं लालको मुख देखन आई।
कल्ह मुख देख गई दधि बेंचन जातहि गयो बिकाई॥
दिनसों दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई।
आई हौं धाय थमाय संगकी मोहन देहु जगाई॥
इतनी सुनत बिहँसि उठ बैठे नागरि निकट बुलाई।
सूरदास प्रभु चतुर ग्वालिनी सैन सँकेत बताई॥ ४९॥

मैया मेरी कब्र बाढ़ैगी चोटी।
किती बेर मोहि दूध पियत भई यह अजहूं है छोटी॥
तू जो कहत बलकी बेनी ज्यों होइहै लाँबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत्त जैहै नागिनसी भुइँ लोटी॥
काचो दूध पियावत मोहन देती माखन रोटी।
सूर मैया याही रस रिझयो हरि हलधरकी जोटी॥ ५०॥
अब मेरी खेलन जात बलैया।
जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया॥
मोको कहत तात वसुदेव है देवकी तेरी मैया।
मोल लियो कछु दे वसुदेवहि कर कर यतन बड़ैया॥
पाछे नंद सुनत हैं ठाढ़े तब हँस हँस उर लैया।
सूर नंद बलरामहिं हटक्यो सुन मन हर्ष कन्हैया॥ ५१॥
मानो बात लालन मोरी।
करौ भोजन रोस भूलो हौं जो मैया तोरी॥
दूध दधि नवनीत घृत पक परसि राख्यो थार।
कहा लोटत धरणिमें मेरे लाल होत अंबार॥
गोद बैठो हौं जिवाऊँ गाऊँ तेरे गीत।
खेलबेको तोहिं बोलत ग्वाल तेरे मीत॥
कहो जाको ताहि टेरूँ बैठे तेरे पास।
करौं दधिमंथान उदयो सूर कमलविकास॥
मायके सुनि वचन हँसि उर आय गये गुपाल।
कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नयन विशाल॥५२॥
हा हा लेहु एकौ कोर।
बहुत बेर भई है भूखे देख मेरी ओर॥
मेल मिश्री दूध औट्यो पीउ हुइ है जोर।

अवहिं खेलन टेरि हैं तुव ग्वाल भयो अति भोर ॥
जगे पक्षी द्रुम द्रुमनप्रति करन लागे शोर ।
खेलबे उठिकै भगोगे मान मोर निहोर ॥
लेहुँ ललन वलाय तेरी जोर अंचल ओर ।
वदनचंद्र विलोकि शीतल होत हृदयो मोर ॥
वैठ जननी गोद जेंवन लगे गोविंद थोर ।
रसिक बालक सहज लीला करत माखनचोर ॥ ५३ ॥

राग विलावल।

मैया मोहिं वड़ो कर लै री ॥
दूध दही घृत माखन मेवा जव माँगौं तव दै री ।
कछू हौंस राखे जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचै री ॥
होउँ सवल सवहिनमें जैसे सदा रहौं निर्भय री ।
सूर कंस गहि केश पछारों करिहौं मथुरा जय री ॥ ५४ ॥

नन्दभवनको भूषण माई ।
यशुदाको लाल बीर हलधरको राधारमण परम सुखदाई ॥
शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई ।
इन्द्रको इन्द्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥
कालको काल ईश ईशनको अतिहि अतुल तोल्यो नहिं जाई ।
नन्ददासको जीवन गिरधर गोकुलगामको कुँवर कन्हाई ॥ ५५ ॥

राग सोरठ।

इस नन्दके फरजन्दने वाँकी अदा धरी ॥
भौंहैं कमान झुक रहीं गोशेसे आ मिलीं ।
तिरछा मुकुट घर शीशपर मुरली अधर धरी ॥
कानोंमें कुंडल झलकते गल मोतियोंकी लरी ।

चितवन जो तेरी भाला जिन घायल मुझे करी ॥
शिर मुकुट सोहै मोरका और पाग जरकरी।
॥ इमि सूर कहै श्यामसों धनि आजकी घरी ॥ ५६ ॥

पाँडेलीला-राग धनाश्री।

महरानेते पाँड़े आयो ॥
व्रज घर घर बूझत नँद रावर पुत्र भयो सुनिकै उठि धायो।
पहुँच्यो आय नन्दके द्वारे यशुमति देखि अनन्द बढ़ायो ॥
पाँव धोय भीतर बैठारेउ भोजनको निजभवन लिपायो।
जो भावै सो भोजन कीजै विप्र मनहिं अति हर्ष बढ़ायो ॥
बड़ी बयस विधि भयो दाहिनो धन यशुदा ऐसो सुत जायो।
धेनु दुहाय दूध लै आई पाँड़े रुचि करि खीर चढ़ायो ॥
घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित करि परस कृष्णहित ध्यान लगायो।
नयन उंघार विप्र जो देखै खात कन्हैया देखत पायो ॥
देखौ धाय यशोदा सुतकृत सिद्ध पाक यह आनि जुठायो।
महरि विनय करि दोउ कर जोरयो घृत मधु पय फिर बहुत मँगायो ॥
सूर श्याम कत करत अचगरी बारबार ब्राह्मणहि खिझायो ॥ ५७ ॥

राग रामकली।

पाँड़े भोग न लावन पावै।
कर कर पाक जभी अर्पत है तभी ताहि छुइ आवै ॥
इच्छा कर मैं ब्राह्मण न्योत्यों ताको श्याम खिझावै।
यह अपने ठाकुरहि जिमावत तू तबहीं छुइ आवै ॥
जननी दोष देत कत मोको विधि विधान कर ध्यावै।
नयन मूँदि कर जोर नाम लै वारंवार बुलावै ॥
यह अन्तर नहिं होत भक्तसों क्यों मेरे मन भावै।
सूरदास बलि बलि विलासपर जन्म पाय यश गावै ॥ ५८ ॥

राग बिलावल ।

सुफल जन्म मेरो आज भयो ।
धनि गोकुल धनि नन्द यशोदा जिनके हरि अवतार लियो ॥
प्रगट भयो अव पुण्य सुकृत फल दीनबन्धु मोहिं दर्श दियो ।
वारंवार नन्दके आँगन लोटत द्विज आनन्द भयो ॥
मैं अपराध कियो बिन जाने को जाने किहि भेष जियो ।
सूरदास प्रभु भक्तहेतुवश यशुमतिके अवतार लियो ॥ ५९ ॥

चन्दखिलौनालीला ।

राग झँझौटी ।

चन्द खिलौना लेहौं मैया मेरी चन्द खिलौना लेहौं ॥
धौरीको पय पान न करिहौं वेणी शिर न गुँथैहौं ।
मोतिन माल न धरिहौं उरपर झँगुली कंठ न लैहौं ॥
जैहौं लोट अभी धरणीपर तेरी गोद न ऐहौं ।
लाल कहैहौं नन्दबबाको तेरो सुत न कहैहौं ॥
कान लाय कछु कहत यशोदा दाउहि नाहि सुनैहौं ।
चन्दाहूते अति सुन्दर तोहिं नवल दुलहिया ब्यैहौं ॥
तेरी सौंह मेरी सुन मैया अवहीं ब्याहन जैहौं ।
सूरदास सब सखा बराती नूतन मंगल गैहौं ॥ ६० ॥

राग बिलावल ।

बार बार यशुमति सुत बोधति आउ चन्द तोहिं लाल बुलावै ।
मधु मेवा पकवान मिठाई आपु खाय पुनि तोहि खवावै ॥
हाँथहि पर तोहिं लीन्हे खेलै नेकु नहीं धरणी बैठावै ।

जलभाजनमें करसे उठावें याहीमें तू तन धर आवे ॥
जलपुट आनि धरणिपर राखो गहि आन्यों वह चन्द दिखावे ।
सूरदास प्रभु हँसि मुसक्याने वारंवार दोऊ कर नावे ॥ ६१ ॥

राग झिंझोटी।

ल्योंगो री मैया चन्दहि ल्योंगो ।
कहा करों जलपुटभीतरको बाहर लपकि गहोंगो ॥
यह तो झलमलात झकझोरत कैसे कर जु गहोंगो ।
यह तो निकट निकटही दीखत वरजेहू न रहोंगो ॥
तुम्हरो प्रेम प्रगट मैं जान्यों बौराये न चहोंगो ।
सूर श्याम कहै कर गहि ल्याऊं शशि तनताप दहोंगो ॥ ६२ ॥

राग बिलावल।

तुव मुख देखि डरत शशि भारी ।
कर करिकै प्रभु देखोइ चाहत भागि पताल गयो अपहारी ॥
वह शशि तो कैसेहु नहिं आवत यह ऐसी कछु बुद्धि बिचारी ।
वदन लखे विधु विधु शंकित तन नयन कंज कुंडल उजियारी ॥
सुनहु श्याम तुहिं शशि डरपतु है कहत ये शरण तुम्हारी ।
सूर श्याम तातें नहिं आवत ऐसे समुझावति महतारी ॥ ६३ ॥

लावनी ।

विश्वपालक बालक नँदनन्द । खिलौना माँगे मोहनचन्द ॥
धन्य व्रज गोकुलके वासी । लखें प्रभुलीला सुखरासी ॥
कला पूरण पूरणमासी । चन्द्रछवि छाय रही खासी ॥
दो०—नन्दमहरिकी गोदमें, खेलत मदन गोपाल ।
निरखि नखतपति उदित नभ, मचलि गये प्रभु हाल ॥
रही समुझाय माय हरचन्द । खिलौना माँगे मोहनचन्द ॥

आय जा चन्द कहै मैया। बुलावै मेरो कान्हैया ॥
बालहठको को समुझैया। चलै एकौ नहिं चतुरैया ॥
दो०--गोद उठावै मा कहै, ले चकई सुत श्याम।
विविधभाँति तसवीर खिलौना, ले आई व्रजवाम ॥
कान्ह एकौ नहिं करत पसन्द। खिलौना माँगै गोकुलचन्द ॥
न भावै कुँवर कान्ह कनियाँ। विफर फारै डोरै तनियाँ ॥
जाय बलि बलि गोरी धनियाँ। बलैया लेय नन्दरनियाँ ॥
दो०--रोवत हरि लोटत मही, रहे नन्द समुझाय।
बालमुकुन्द कही नहिं मानत, करिये कौन उपाय ॥
विकट हठ कीन्हो परमानन्द। खिलौना माँगै मोहनचन्द ॥
यशोमति जब दर्पण लाई। पड़ो प्रतिबिंब चन्द आई ॥
निरखि ताकी सुन्दरताई। लगे प्रभु खेलन हरषाई ॥
दो०--करत बाललीला प्रभू, जन जननी सुखहेत।
कह गणेश दिनरैन बसौ मम, नैनन कृपानिकेत ॥
भक्तिवर दीजै आनँदकन्द। खिलौना माँगै मोहनचन्द ॥ ६४ ॥

पुरातनकथा—राग विलावल।

सुन सुत एक कथा कहुँ प्यारी।
कमलनयन मन आनँद उपज्यो रसिकशिरोमणि देत हुँकारी ॥
दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रगट भये सुत चारी।
तिनमें राम एक व्रतधारी जनकसुता ताकी बरनारी ॥
तातवचन सुनि राज्य तज्यो है भ्रातासहित भये वनचारी।
तहँ तिन जाय कनकमृग मार्‌यो राजिवलोचन गर्वप्रहारी ॥
रावण हरण सियाको कीन्हो सुनत श्याम घन नींद विसारी।
सूरश्याम प्रभु रटत चापको लक्ष्मण देहु जननि भ्रम भारी ॥ ६५ ॥

विनय कृष्णजीकी-लावनी।

रूपरसिक मोहन मनोजमनहरण सकल गुण गरबीले।
छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले॥
रत्नजटित शिर मुकुट लटक रहि सिमट श्याम लट घुँघुरारी।
बालविहारी कन्हैया लाल चतुर तेरी बलिहारी॥
लोलक मोती कान कपोलन झलक बनी निर्मल प्यारी।
ज्योति उज्यारी हमैं हर बार दर्श दे गिरिधारी॥
दंतछटासी विज्जु छटा मुख देख शरद शशि शरमीले। छैल०॥
मंद हँसन मृदु वचन तोतले वय किशोर भोली भाली।
करत चोचले अमोलिक अधर पीक रच रहि लाली॥
फूल गुलाब चिबुक सुन्दरता रुचिर कंठ छबि वनमाली।
करसरोजमें बुंद मेहँदी अमंद बहु प्रतिपाली॥
फूलछरीसी नरम कमर करधनी शब्द भये तुलसीले। छैल०॥
झँगुली झीन जरी पट कछनी श्यामल गात सुहात भले।
चाल निराली चरण कोमल पंकजके पात भले॥
पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमति ते तात भले।
व्रजयुवतिनके प्रेम भोर भये घर घर माखन गटकीले। छै०॥
गावैं वागविलासचरित हरि शरद रैनि रसरास करें।
मुनिजन मोहे कृष्ण कंसादिक खलदल नाश करें॥
गिरिधारी महाराज सदा श्रीव्रज वृन्दावन वास करें।
हरिचरितको श्रवण सुन सुनकर मन अभिलाष करें॥
हाथ जोरकर करें बीनती नारायण दिल दरदीले। छैल०॥६३॥

राग सारंग।

नन्द बुलावत हैं गोपाल॥
आवो बेगि बलैया लेहौं मोहन श्याम तमाल।

परस्यो थार धरयो मग जोवत क्यों न चलौ ततकाल ॥
हौं वारी इनप्रति पायँनपर दौर दिखावो चाल ।
छाँड़ देहु तुम लाल लटपटी यह गति मन्द मराल ॥
सो राजा जो पहले पहुँचै सूर सो भवन उताल ।
जो जैहै बलराम अगमने तो हँसिहैं सब ग्वाल ॥ ६७ ॥

माखनचोरीलीला ।

राग गौरी ।

मैया री मोहिं माखन भावे ।
जो मेवा पकवान कहत तूँ मोहिं नहीं रुचि आवे ॥
व्रजयुवती इक पाछे ठाढ़ी सुनति श्यामकी बात ।
मन मन कहत कबहुँ अपने घर देखौं माखन खात ॥
बैठे जाय मथनियाके ढिग में तब रहौं छिपानी ।
सूरदास प्रभु अन्तरयामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ ६८ ॥

दोहा–सकल विश्वपालन सदा, विदित विश्वंभर नाम ।
सो गोरसचोरी करत, व्रज गोपिनके धाम ॥ ६९ ॥

राग गौरी।

गये श्याम तिहिं ग्वालिनिके घर।
देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर॥
हरि आवत गोपी जब जान्यो आपुन रही छिपाय।
सूने भवन मथनियोंके ढिग बैठि गये हरपाय॥
माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खान।
चितै रहे मणिखंभ छाँह तन तासों कहत सयान॥
आजु प्रथम मैं चोरी आयो भलो बन्यो है संग।
आपु खात प्रतिबिम्ब खवावत गिरत कहत का रंग॥
जो चाहौ सब लेउ कमोरी अति मीठो कत डारत।
तुमहिं देखि मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा बिचारत॥
सुनि सुनि बात श्यामके मुखकी उमँगि हँसी सुकुमारी।
सूरदास प्रभु निरख ग्वालिमुख तब भजि चले मुरारी॥ ७०॥

राग भैरवी।

दोऊ भैया मैयासों माँगत दे मां माखन रोटी॥
बलदाऊ गही नासिका मोती कान्ह गही कर चोटी।
मानौं हंस मोर भख लीन्हो कविकृत उपमा छोटी॥
यह छबि निरखि नन्द आनन्दे प्रेममगन गये लोटी।
सूरदास धनि धन्य यशोदा भाग भले कर्मनकी मोटी॥७१॥

राग भैरव।

बिलँब तजि माखन दे री माई।
बछरे हमरे दूर निकसि गये दधि मथती देर लाई॥
जो न देय तोरे बछरे न चारूँ हौं नहिं बिपिनको जाई।
यह ले अपनी कारी कमरिया मुरली औ लकुटाई॥

इतनी कह हरि अतिहि रिसाने लोटत भूमि कन्हाई ।
धूरसहित सब अँग लिपटाने मैया लेत उठाई ॥
गोदीवीच विठाय यशोदा मुख चूमत दूध पिलाई ।
धनि धनि भाग सूर जननीके कृष्ण करत लरिकाई ॥ ७२ ॥

राग रामकली ।

माखन तनक दे री माय ।
तनक करपर तनक रोरी माँगत चरण चलाय ॥
कनकभूपर तनक रेखा करन पकऱ्यो धाय ।
कंपियो गिरि शेष शंक्यो उदधि अति अकुलाय ॥
मेरे मनके तनक मोहन लागे मोहिं वलाय ।
तनक मुखपर तनक बतियाँ बोलत है तुतराय ॥
यशोमतिके प्राण जीवनधन लिये उरमें लाय ।
नंदकुँवर गिरिधरनऊपर सूर बलि बलि जाय ॥ ७३ ॥

मोहिं दधि मथन दे बलि गई ।
जाउँ बलि बलि बदन ऊपर छाँड़ मथनी रई ॥
देहुँ त्वहिं नवनीत लोंदा आर कित यह ठई ।
सुत सनेह विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई ॥
लै उछंग लगाय उरसों प्राणजीवन जई ।
बालकेलि गुपालकी व्रज आश करि नित नई ॥ ७४ ॥

राग विलावल ।

नेक मेरे बारे कान्ह छाँड़ि दे मथनियाँ ॥
कंठमें बघनहा सोहे नाकमें नथुनियाँ ।
नयननते नीर मानो मोतिनकी मनियाँ ॥
नेक रहो देहों माखन मेरे प्राणधनियाँ ।

और जिन करो मेरे छगन मगनियाँ ॥
सुर नर मुनि काहूके ध्यान न अवनियाँ ।
सूर सुत देख सुख लेत नंदरनियाँ ॥ ७५ ॥

आज सखी मणिखंभनिकट वीर जहँ गोरसकी खोरी ।
निजप्रतिविम्ब सिखावत या शिशु प्रगट करै निज चोरी ॥
अर्द्ध विभाग आजते हम तुम भली बनी है जोरी ।
माखन खाउ कतहि डारत हो छाँड़ि देहु मति भोरी ॥
हिस्सा न लेहो सभी चाहत हो यही बात है थोरी ।
मीठो परम अधिक रुचि लागै देहों काढ़ि कमोरी ॥
प्रेम उमँग धीरज न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी ।
सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ७६ ॥

ग्वालिन घर गये श्याम साँझकी अबेरी ॥
मंदिरमें गये समाय श्यामल तनु लखि न जाय,
देह मेह रूप कहो को करै निबेरी ॥
दीपक ग्रह दान कर्यो भुजा चार प्रगट धर्यो,
देखत भइ चकित ग्वालि इत उतको हेरी ॥
श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि बिन्दुजाल,
मन मोह्यो नंदलाल बालकही बेरी ॥
युवती अति भइ निहाल भुजभर दे अंकमाल,
सूरदास प्रभु कृपालु डार्यो तनु फेरी ॥ ७७ ॥

राग रामकली ।

सखी मोहिं हरिदरशनको चाव ।
साँवरेसों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव ॥
श्याम सुंदर कमललोचन अंग अंग नित भाव ।
सूर हरिके रूप राची लाज रहो चाहै जाव ॥ ७८ ॥

माखनचोर री हौं पायो ।
जाय कहाँ जान कैसे पावत बहुत. दिननहीं खायो ॥
श्रीमुखते उघरी द्वै दतियाँ तब हँसि कंठ लगायो ।
परमानंद प्रभु प्राणजीवन धन वेद विमल यश गायो॥७९॥

राग पीलू ।

वंशीवारे तू मेरी गली आ जा रे ।
तेरे विन देखे कल ना परत है टुक मुखड़ा दिखला जा रे ॥
रैनि दिना मोहिं ध्यान तिहारो वंशीकी टेर सुना जा रे ।
चरणदास सुख देव पियारे मेरोहि माखन खाजा रे ॥ ८० ॥

कवित्त ।

चीराकी चटक औ लटक नव कुंडलकी,
भौंहकी मटक मोहिं आँखिन दिखाउ रे ।
जा दिना सुजान गुण रूपके निधान कान्ह,
बाँसुरी बजाय तनु तपन सिराउ रे ॥
ए हो वनवारी वलिहारी जाउँ तेरी आज,
मेरी कुंज आय नेक मीठी तान गाउ रे ।
नंदके किशोर चित चोर मोरपंखवारे,
वंशीवारे साँवरे पियारे इत आउ रे ॥ ८१ ॥

आया कर साँवरे गलिन इन झूम झूम,
साँझ औ सवेरे कभी दर्श तो दिखाया कर ।
जाय कर यमुनाके तट रोज रोज प्यारे,
बाँसुरी अनोखी इक लहजा सुनाया कर ॥
कादर कहत छाया कर नैनोंविच मेरे,
आय रूखा सूखा थार गरीबोंको पाया कर ।

खाया कर माखन मलाई दधि लूट लूट,
कर हावभाव मेरे हियमें समाया कर ॥ ८२ ॥
धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके,
नंदके ललैया मोरे अँगनामें आउ रे ।
दही दूध बहु प्याऊँ माखन घनोसो लाऊँ,
मीठी मीठी तान नेक गायके सुनाउ रे ॥
प्यारे नंदके किशोर मेरे चित्तहूके चोर,
नेक तो अधर धर बाँसुरी बजाउ रे ।
या छवि ऊपर कोटि काम वारि वारि डारौं,
दयासखी प्रेमवश हियमें समाउ रे ॥ ८३ ॥
दीनहूके बंधु ग्वाल मोचो दुःख ततकाल,
अविनाशी नंदलाल वेदनमें गाये हैं ।
गावत हैं नेति नेति नेति कहि चारौ वेद,
शेषके सहस्र मुख पार नहिं पाये हैं ॥
ब्रह्मा आदि सनकादि जाको धरैं ध्यान सदा,
शंकर समाधि लाय हीयमें बसाये हैं ।
कहै मयाराम देखौ भाग्य ब्रजग्वालिनिके,
ऐसे घनश्याम दै दै माखन नचाये हैं ॥ ८४ ॥
जाके पद परसको तरसत विश्व ब्रज,
ग्वालिनको खेलमाँझ कंधन चढ़ाये हैं ।
जाकी यह माया सुर नर मुनि बाँधि राखे,
सोई गर यशुदापै ऊखल बँधाये हैं ॥
जाको देव यज्ञमें बुलावें नाहिं आवैं सो तो,
नंद एक थार माँझ जेमके सिहाये हैं ।
जाने लै नचाये सब दारुमयी पूतरी ज्यों,

प्रेमवश गोपिनके हियमें समाये हैं ॥ ८५ ॥
ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवै कभू एक क्षण,
शंकर समाधि लाय ध्यान धरत गाढ़ो है ।
ऋषि औ मुनि जाको रैन दिन धरैं ध्यान,
ध्यानमें न आवै कभू तासों हेत वाढ़ो है ॥
सोई निरंजन जाकी मायाको न आवै अंत,
ध्यानी ध्यान लाय रहैं सहैं धूप जाड़ो है ।
देखो भाग्य व्रजवनितनकेरी आज आली,
ह्वैकैं हू अनंत नवनीत माँगै ठाढ़ो है ॥ ८६ ॥
व्रजकी अहीरनाके भाग भले देखो भैया,
देवनाके देव कैसी सेवना कर पायो है ।
शिव औ विरंचि जाको पार नहिं पावैं ताहि,
गोकुलाकी नारी कर तारी दै नचायो है ॥
नारद मुनीसे तुंवरूसे पढ़ि पचिहारे,
व्यासजूकी वीणासों विमल यश गायो है ।
कहैं रणधीर भाग्य भले हैं अहीरनीके,
प्रेमको पयोधि व्रजवीथिन वहायो है ॥ ८७ ॥
कोऊ कहैं मेरे आगे नेक तो नचहु लाला,
लोन मिली छाछ दूँगी आछीसी धुंगारके ।
भोर भयो वाके गयो वासों मरो वैर भयो,
धींगीसी गुजरियाने आन लियो धायके ॥
खिरकी सव तोर डारे वासन सव फोर डारे,
दूध ढरकाय दियो वंदरा वुलायके ।
नंदरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी,
सूर श्याम उलँभा लियो शीशपै चढ़ायके ॥ ८८ ॥

सवैया।

शंकरसे मुनि जाहि रटैं चतुरानन चारिहु आनन गावैं।
जो हिय नेक सु आवतही रसखान महाजन मूढ़ कहावैं॥
जापर देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन बार न लावैं।
ताहि अहीरकि छोहरियाँ छछिया भरि छाछपै नाच नचावैं॥ ८९॥
जोगिया ध्यान धरैं जिसको तपसी तनु गारके खाक रमावैं।
चारहु वेद न पावत भेद बड़े तिरवेदी नहीं गति पावैं॥
स्वर्ग रु मृत्यु पतालहुमें जाको नाम लियेते सभी शिर नावैं।
चरणदास कहै सब गोपसुता ताहि माखन दै दैके नाच नचावैं॥९०॥

दो०—देखि गोपिका कृष्णछवि, अधिक मोद सरसात।
प्रीति अधिक बाढ़ी हृदय, कहैं परस्पर बात॥ ९१॥

राग काफी।

माखन चोराय मेरो हरि चित्त लै गयो।
कासों कहूँ सखीरी इक व्याधि दै गयो॥
सब धाम काम भूलो निशि नींदहू तजी।
मोपर विशोधि मोहन पढ़ि मंत्र कै गयो॥
शृंगार सब बिसारो तनकी खबर नहीं।
वाके विना विलोके सिगरो विसर गयो॥
बोलन पियूषसानी मुसकानकी छटा।
खटकैं सदा कलेजे नित ध्यान ह्वै गयो॥
अब देखिये मिलै कब घनश्याम हरिविलास।
सब नेमको छुटाय प्रेम बीज दै गयो॥ ९२॥

उरहनोलीला ।

दो०--श्यामदर्शविन गोपिका, पल पल युगसम जाय ।
देन उरहने मिस चलीं, यशुमतिपहँ समुदाय ॥ ९३ ॥

राग देश ।

नई करतूति निजसुतकी सुनौ दै कान ब्रज़रानी ।
करै नवनीत नित चोरी प्रात उठि आनि ब्रजरानी ॥
अभीसे नेकसो वालक कहाँसे कर्म ये सीखो ।
लिये सँग ग्वालगण डोलै सवन अस्थान ब्रजरानी ॥
अँधेरी रैनि तुम जायो भयो फल सूनु तन कारो ।
चपल तन चोर उत्पाती अगुणकी खानि ब्रजरानी ॥
चरण धरि गोपसुत काँधे उतारै भाँड़ छींकेते ।
खवायो वाँदरन माखन करै नित हानि ब्रजरानी ॥
कहाँलौं हम कहैं सिगरे चरित ब्रज हरिविलासीके ।
हृदय निज लाय सुत बरजौ भली नहिं वात ब्रजरानी ॥ ९४ ॥

राग भैरवी ।

कहे गोपीनके यशुदा रिसानी ।
तुम्हारी बुद्धि भी सबकी हिरानी ॥
सब आईं देनको झूठो उरहनो ।
भयो आवेश तनु योवन जवानी ॥
अभी तो नेकसो लाला हमारो ।
कहा जाने करन चोरी विरानी ॥
अनेकन माठ गोरसके घरे घर ।
तिहारी छाछ क्या मधुमें मिठानी ॥

लजानीं गोपिका घरको सिधारीं।
दृगन भरि देखि हरि आभा अघानी ॥
इतै व्रजरानि लालनको सिखावै।
तनय कहुँ जाउ जनि सुनिवे कहानी ॥
मिल्यौ सौभाग्यसे सुत हरिविलासी।
सदा दिन पूजि रवि हरि हर भवानी ॥ ९५ ॥

दो०--योग ध्यान-आवै नहीं, यज्ञभाग ना लेय।
ताको व्रजकी गोपिका, हँसि हँसि माखन देयँ ॥ ९६ ॥

राग देवगंधार।

जो तुम सुनो यशोदा गोरी।
नंदनँदन मेरे मंदिरमें आज करत हैं चोरी ॥
हौं भइ आन अचानक ठाढ़ी कह्यो भवनमें को री।
रहे छिपाय सकुच रंचक है मनो भई मति भोरी ॥
मोहिं भयो माखन पछतावो रीती देख कमोरी।
जब गहि बाँह कुलाहल कीन्हो तब गहि चरण निहोरी ॥
लागे लेन नयन जल भरभर मैं हरिकानन तोरी।
सूरदास प्रभु देत निशादिन ऐसे अल्प सलोरी ॥ ९७ ॥

राग झँझौटी।

व्रजमें कैसे बसें री माई।
जहँ नितप्रति उत्पात करतु है तेरो कुँवर कन्हाई ॥
भोरहि मैं सोवत अँगनामें औचक कही जगाई।
उठ री सखी तोय द्वारपै टेरत कोऊ एक लुगाई ॥
मैं जो द्वारपै देखन निकसी को है कहाँते आई।
पाछेते इन घरभीतरसों साँकर तुरत लगाई ॥

हम बाहर ये भवनमाहिं मनमानी धूम मचाई ।
बासन फोरि तोरि सब छींके दधि गोरस ढरकाई ॥
यह कौतुक सुनिकै ब्रजवनिता निरखनको सब धाई ।
हँसि हँसिकै मिलि बूझत मोसों कहा लीला फैलाई ॥
भाँति भाँतिकी बोली बोलत जो जाके मन भाई ।
मैं अपने मन कहूँ नारायण यह कहा कुमति कमाई ॥ ९८ ॥

राग कलिंगडा ।

मोहन तू इतनी कही मान ।
बाहर मत उरझै काहूसों मेरे जीवन प्रान ॥
ब्रजवनिता तेरे गुण मोसों नितप्रति करत बखान ।
मेरो कह्यो जो साँच न मानै सुन ले अपने कान ॥
इन बातनसों निन्दा उपजे ठकुरायतमें हान ।
नारायण सुत बड़े बापके तजि दे ऐसी बान ॥ ९९ ॥

राग बिलावल ।

सुन मैया याके गुण गोसों इन मोहिं लियो बुलाई ।
दधिमें पड़ी सेतकी चींटी मोपै सबै कढ़ाई ॥
टहल करत मैं याके घरकी यह पति सँग लै सोई ।
सूर वचन सुनि हँसी यशोदा ग्वालि रहीं मुँह गोई ॥१००॥

राग जोगिया—आसावरी ।

हमारो न्याव करौ महतारी ।
या ब्रजमें प्रगट्यो उत्पाती तेरो छैल बिहारी ॥
जो तुम सुतकी ओर करोगी हमहूँ हैं ब्रजनारी ।
कबों हमारो दाँव लगैगो समझैंगी गिरिधारी ॥
तुम राजा अपने घरके हो हमें न कान तिहारी ।

एक गारि बदले नँदरानी लाखन देगो गारी ॥
तुम नहिं बरजत मनमोहनको हम कहतीं नित हारी ।
नारायण कछु जानि परतु है एक सलाह तिहारी ॥ १०१ ॥

राग-पीलू ।

अपनो गांव लेउ नँदरानी ।
बड़े बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढ़ावत बानी ॥
सखाभीर लै पैठत घरमें आपु खाय तो सहिये हानी ।
मैं जब चली सामुहें पकरन तबके गुण का कहौं बखानी ॥
आवत जानि भाजि गये मोहन मैं अपने घर पौढ़ी आनी ।
सूरश्याम बेनी धर बाँधी पाटीसौं मोहिं सोवत जानी ॥१०२॥

राग नट ।

यशुमति यह कहिकै रिसियावति ।
रोहिणी करति रसोई भीतर कहि कहि तिनहिं सुनावति ॥
गारी देत बहू बेटीको वे धाईं यहाँ आवति ।
हा हा करति सबनिसों मैं ही कैसेहू खूँट छुड़ावति ॥
जाति पाँति सों कहा अचगरी यह कहि सुतहि धिरावति ।
सूरश्यामको सिखवति हारी मारेहु लाज न आवति ॥१०३॥

राग झँझोटी-तीन ताल ।

मैया मोहिं झूठेहि दोष लगावै ।
बूझ ले मेरे सखा संगके जो तोहिं साँच न आवै ॥
भवन रहौं तौ तूही कहेगी गोचारन नहिं जावै ।
जो जाऊँ तो यह मग छेड़े फेर उरहनो लावै ॥
त्रियाचरित्र रचै ढिग तेरे तोरिकै हार दिखावै ।
तू जननी मेरी अति भोरी याके कहे पतियावै ॥

कित गजराज कहाँ मृगछौना अनघट मेल मिलावै ।
नारायण मोहनमुख बातैं सुनि यशुमति मुसकावै ॥१०४॥

राग खम्माच–तीन ताल ।

ग्वालिन रूपके मद इतरावै ।
तू अति तरुणि मेरो सुत बालक नाहक दोष लगावै ॥
तूही नई भई योवनवारी नेक लाज नहिं आवै ।
नारायण अब जा अपने घर क्यों तू बात बनावै ॥ १०५॥

राग धनाश्री ।

भाजि गयो मेरो भाजन फोरी ।
लरिका सहस एक सँग लीन्हे नाचत फिरत साँकरी खोरी ॥
मारग तो कहुँ चलन न पावै धावत गोरस लेत अजोरी ।
सकुच न करत फागुसी खेलत तारी देत हँसत मुख मोरी ॥
बात कहूं तेरे ढोटाकी सब व्रजको बाँध्यो प्रेमकी डोरी ।
टोनासो पढ़ि नावत शिरपर जो भावै सो लेत है छोरी ॥
आपु खाय तो हम सब मानैं औरनि देत सिकहरे टोरी ।
सूर सुतहि बरजो नँदरानी अब तोरत चोली बँद डोरी ॥ १०६॥

राग नट ।

अनत सुत गोरसको कत जात ।
घर सुरभी नव लाख दुधारी और गनी नहिं जात ॥
नितप्रति सब उरहनके मिसमें आवत हैं उठि प्रात ।
अन लहते अपराध लगावति विकट बनावति बात ॥
निपट निशंक विवादनि सन्मुख सुनि मोहिं नंद रिसात ।
मोसो कृपिणि कहत तेरे घर ढोटाऊ न अघात ॥
करि मनुहारि उठाय गोद ले बर्जत सुतको मात ।

सूर श्याम नित सुनत उरहनो दुख पावत तेरो तात॥१०७॥

राग सोरठ।

तोय वारवार समुझायो। नित नये उरहनो लायो॥
एक समय कालिन्दीके तट वकुल उदर बैठायो।
ग्वाल वाल गौवनके पाछे विधना तोहि वचायो॥
नौलख धेनु नंदवावाके चोर परायो खायो।
तनक दहीके कारण मोहन माखनचोर कहायो॥
एक समय कालिंदी कूद्यो विषधर अँग लपटायो।
पैठ पताल कालिया नाथ्यो फनपर नृत्य करायो॥
हाथ लकुटिया काँधे कमरिया नंदबबा गृह आयो।
सूरदास आशा चरणनकी यशुमति कंठ लगायो॥ १०८॥

राग रामकली।

मैया मैं नाहीं माखन खायो।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो॥
देखु तुही छींकेपर भाजन ऊँचे धरि लटकायो।
तुही देख नान्हे कर अपने मैं कैसे सो पायो॥
मुख दधि पोंछ बुद्धि यक कीन्हीं दोना पाछे दुरायो।
डारि साँटि मुख चूमि यशोदा श्यामहि कंठ लगायो॥
बालविनोदभाव करि मोहन माता मनहिं रिझायो।
सूरदास यह यशुमतिको सुख देवन दुर्लभ पायो॥१०९॥

राग कान्हरो।

करत कान्ह व्रजघरनि अचगरी।
खीझति महरि कान्हसों फिरि फिरि उरहन लै आवति हैं सगरी॥
बड़े बापको पूत कहावत हम्मै वास वसत एकही नगरी।

नन्दहुते ये बड़े कहे हैं फेरि बसे हैं यह ब्रजनगरी ॥
जननीके खीझत हरि रोये झूँठहि दोष लगावत धँगरी ।
सूरश्याम मुख पोंछि यशोदा कहति सबै युवती हैं लँगरी॥११०॥

राग मलार ।

देत उरहनो लाज न आई ।
मेरो लाल ब्रजभरमें भोरो नेक नहीं जानत चतुराई ॥
सुनि यशुमतिके वचन हँसीं सब निज२ भवन चलीं हरषाई ।
नारायण लखि चरित श्यामके ब्रह्मादिककी मति बौराई ॥१११॥

रेखता ।

मनमोहनी मनमोहना मन मोहिबो करौ ।
मुखचन्द्र चख चकोर सदा जोहिबो करौ ॥
घनश्याम रसिक नागर तुमहीं जू दामिनी ।
तजि मान अधर पान करो जात यामिनी ॥
अपराध नहीं पिया में कछु भूल तूँ गई ।
प्रतिबिंब देख आपनो सखी पीठ क्यों दई ॥
समुझाय कही भगवत जब लाग कानसों ।
सुखदान उठी आतुर भेंटी सुजानसों ॥ ११२ ॥

राग विहागरो ।

अचानक आय गये तहँ श्याम ।
कृष्णकथा सब कहति परस्पर राधा मिल ब्रजवाम ॥
मुरली अधर धरे नटवरवपु कटि काछनी पर वारों काम ।
सुभग मोर चन्द्रिका शीशपर आय गये पूरण सुखधाम ॥
तरु तमालतर तरुण कन्हाई दूरि करन युवतीतनकाम ।
सूरश्याम वंशीधुनि पूरत राधा ले ले नाम ॥ ११३ ॥

राग रामकली ।

राधासों माखन हरि माँगत ।
औरनकी मटुकिनको चाख्यो तुम्हरो कैसो लागत ॥
लै आई वृषभाननन्दिनी सद लोनी है मेरी ।
लै दीन्ही अपने कर हरिमुख खात अल्प हँसि हेरी ॥
सबहिनसों मीठो यह दधि है सो मधुरेसुर कहेउ सुनाई ।
सूरदास प्रभु सुख उपजायो व्रजललना मन भाई ॥ ११४ ॥

राग बिलावल ।

दधि कैसेकै विलोऊँ कान्हा गहि लीन्ही मथनियाँ ।
छोटे छोटे हाथ पैर छोटीसी अँगुरियाँ,
छोटे छोटे पग धरैं छोटीसी धुजरियाँ ।
छोटे छोटे बाल सोहैं छोटोसो मुखारविन्द,
नाकमें बुलाक सोहैं पैर पैजनियाँ ।
सूरदास हरिके गुण गावै ऐसे कहै नँदरनियाँ ॥ ११५ ॥

राग रामकली ।

यशोदा तू बड़ी कृपण री माई ।
दूध दही सबविधिको दीन्हो सुतडर धरत छिपाई ॥
बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई ।
सोऊ तो घरही घर डोलै माखन खात चुराई ॥
वृद्ध वयस पूरे पुण्यनते तैं बैठी निधि पाई ।
ताहूके खैवे पीवेको कहा इती चतुराई ॥
सुनो न वचन चतुर नागरके यशुमति नंद सुनाई ।
सूर श्यामको चोरीके मिस देखनको यहँ आई ॥ ११६ ॥

राग गूजरी ।

यशोदा कान्हहुँते दधि प्यारो ।
डार देहु कर मथत मथानी तरसत नन्ददुलारो ॥
दूध दही माखनसे वारैं जाहि करत तू गारो ।
कुम्हिलानो मुखचंद्र देखि छवि काहे न नेक निहारो ॥
ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रजगैयन चारो ।
सूरश्यामपर वलि वलि जैये जीवन प्राण हमारो ॥११७॥

माटीखानलीला ।

दोहा–बालसखा हरि संग लै, गे कालिन्दीकूल ।
करत विहार शृंगार तन, लाय सुगंधित फूल ॥ ११८ ॥

राग खम्माच ।

मुदित घनश्याम श्यामा तीर खेलैं ।
लिये निजसंग वालन भीर खेलैं ॥
धरे शिर मोरपख मुरली बजावैं ।
विहँसि नाचैं वजैं मंजीर खेलैं ॥
कवौं पिक कोकिलासम वैन वोलैं ।
कवौं महिपाल वनि धरि धीर खेलैं ॥
दृगन ढापन कवौं चकडोरक्रीडा ।
कवौं कंदुक लिये गंभीर खेलैं ॥
कवौं वनि वत्स माटी खात डोलैं ।
कवौं सरि हरिविलासी नीर खेलैं ॥ ११९ ॥

दोहा–नानाविधि वनकेलि करि, आय ग्वालगण धाम ।
कहत यशोदाते सवे, माटी खाई श्याम ॥ १२० ॥
सुनत हाथ साँटी लिये, धाय चली नँदबाम ।

रिस हुइ हरिसों यों कहत, माटी खाई श्याम ॥ १२१ ॥
क्यों माटी खाई तुमन, सकल पदारथ धाम ।
तीनि लोक चौदह भुवन, मुख दिखराये श्याम ॥ १२२ ॥

दावँरीबंधन।

दोहा–कृष्ण–उधुम–बश नँदवधू, बाँधे श्रीघनश्याम ।
वहु माया करि सो बँधे, यमलार्ज्जुनके काम ॥ १२३ ॥

राग ललित।

सँग बालवृन्द लीन्हे क्रीडा करैं कन्हाई ।
निजभक्तनेम राख्यो कटि दामते बँधाई ॥
अलकेशसूनु माते धनते मदांधलोचन।
मुनिशाप पाय दोऊ अर्जुन भये व्रजाई ॥
तिनमध्य जाय माधव ऊखल लगाय खैंच्यो ।
हरिपाद परसि प्रगटे निज पूर्वदेह पाई ॥
शिर नाय पाणि जोरे विनती अनेक कीन्ही ।
वर पायके सिधारे निजलोक दोउ भाई ॥
सुनि घोर घोप व्रजपति सुतदाम धाय खोली ।
प्रभु हरिविलास लीला यशुदा हृदय लगाई ॥ १२४ ॥

राग काफी ।

असमय निपात अर्जुन आश्चर्य आजको ।
चिंता विशेष व्यापी गोपन समाजको ॥
विन हेतु पुराचीन वृक्ष आपुते गिरे ।
भूकंप ना प्रभंजन ना लेश गाजको ॥
कटि दाम श्याम खेलि रहे सोइ तरुतले ।
गोविन्द राखि लीन्ही व्रजराज लाजको ॥
सब गोप आय गाथ गोपनाथसे कही ।
जहँ विघ्न हों अनेक ठौर कौन कामको ॥
वृंदाटवी निवास हर्ष नित्य हरिविलास ।
सम्मत विचार कीन्हो यह ग्राम त्याजको ॥ १२५ ॥

वृन्दावनयात्रा ।

दोहा–गोकुल विघ्न विलोकि वहु, गोपवृंद लै साथ ।
सहकुटुंब हर्षित चले, वृंदावन व्रजनाथ ॥ १२६ ॥

राग भैरवी ।

गोपगण सब संग व्रजपतिके चले वृंदाटवी ।
देवगणके मध्यमें अमरेशकी जैसे छवी ॥
धेनुयूथ चलाय आगे शकट आरोहन भये ।
तिलक चित्र विचित्र दीन्हे पाग अलबेली फवी ॥
पंथ सब लागें सुहावन वृक्ष सब फूले फले ।
ताल वेणु मृदंग बाजें हर्षि गावें भैरवी ॥
एक रथ आरूढ दोऊ सह यशोदा रोहिणी ।
अंक निज निज सूनु लीन्हे भास मानों द्वै रवी ॥
उतरि कालिंदी किनारे आय वृंदावन बसे ।
हरिविलास हुलास नित गुण गाय अहिपतिसे कवी॥१२७॥

मगरोकनलीला।

दोहा--धनि व्रजवासी नारि नर, धनि वृन्दावन धाम ।
नारायण सुरपति जिन्हें, निशदिन करत प्रणाम ॥१२८॥
प्रातसमय व्रजनागरी, सजि अपनो शृंगार ।
गोरस बेचनको चलीं, गजगामिनि सुकुमार ॥ १२९ ॥
मगमें ठाढ़ो साँवरो, रोकि सबनकी गैल ।
रूपसिंधु अरविन्द दृग, रसिकशिरोमणि छैल ॥ १३० ॥
जब पहुँचीं ढिग आयके, मृगनैनी बर बाम ।
तिनहिं देखि मुसक्यायके, बोले सुंदर श्याम ॥ १३१ ॥
कहाँ जात ठाढ़ी रहौ, तुम्हें रूप अभिमान ।
अब आगे पग जिन धरौ, विना दिये दधिदान ॥१३२॥
सुनत वचन नँदलालके, हँसी सकल व्रजबाल ।
देखो री अब साँवरो, नई चलत है चाल ॥ १३३ ॥
एक सखीकी भुज पकरि, हँसि बोले व्रजराज ।
प्यारी तू आई नई, दही बेचबे काज ॥ १३४ ॥

राग ठुमरी–खम्माचकी तर्ज ।

आज तू नवेली दधि बेचबेकूँ आई री ।
योवनकी उमंगिसों झूमत चलत गजमत्तहूकी गतिते लजाई री ॥
नैननके बान भौंह तानकै कमान कहो कौन पै यह करी है चढ़ाई री।
रूपकी निकाई सुघराई नारायण कहाँलगि करूं मैं बड़ाई री ॥१३५॥

राग कालिंगडा ।

लाल तुम काहेको इतरावो ।
मोरपंख उरसे पगियामें यापै बड़े कहावो ॥
जबते प्रगट भये तबहींते घर घर धूम मचावो ।

माखन छाछ चुराय हमारी मिलि गोपनसँग पावो ॥
फटी पुरानी कामरि ओढ़े वन वन धेनु चरावो ।
नारायण तुम कौन भरोसे एते गाल वजावो ॥ १३६ ॥

राग विलावल ।

यह कमरी कमरी कर जानत ।
जाके जितनी वुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानत ॥
या कमरीके एक रोमपर वारौं कोटिन अम्वर ।
सो कमरी तुम निन्दत गोपी तीन लोक आडम्वर ॥
कमरीके वल असुर सँहारे कमरीते सव भोग ।
जाति पाँति कम्मर है मेरी सूर सवहि यह योग ॥ १३७ ॥

राग दादरा ।

छाँड़ो लँगर मेरी वहियाँ गहोना ॥
मैं तो नारि पराये घरकी मेरे भरोसे गोपाल रहो ना ।
जो तुम मेरी वहियाँ गहतु हों नयना मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥
वृन्दावनकी कुंजगलिनमें रीति छोड़ि अनरीति चलो ना ।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित टारो टरो ना॥१३८॥

प्यारे जिन मेरी वाँह गहो ॥
मारगमें सव लोग देखत हैं दूरी क्यों न रहौ ।
मनमें तुम्हरे कौन वात है सोई क्यों न कहौ ॥
कहिहों जाय आज यशुमतिसे हमरी गैल रोकत हो ।
इतनेपे नहिं मानत आनँदघन लरिकाई तुम करत हो ॥ १३९ ॥

राग कालिंगडा ।

अपनी गैल चले जाउ व्रजवासी ।
मारगमें सव लोग देखत हैं देखेंगे लोग करेंगे मेरी हाँसी ॥

तुम ब्रजवासी अपनी गरजके नयना मिलाय गले डारत हौ फाँसी ।
पुरुषोत्तम हरिकी छवि निरखत तू मेरा ठाकुर मैं तेरी दासी ॥१४०॥

राग ईमन-कल्याण ।

मनमोहन मोसों मत अटको ।
झटको न चीर मटको न छैल दधिकी न गैल मटकी पटको ॥
जैसे कछू तुम हो सब जानूँ । तुम्हरे गुण अब कहा बखानूँ ॥
तनक तनक रसकाज राज तुम भवन भवन निशदिन भटको ॥
तुम कबते ब्रजमें भये दानी । रोकत हौ मग नारि बिरानी ॥
दधि गोरसकी लूट मचाई तुम्हें न काहूको खटको ॥
नारायण अबहूँ कही मानों । औरनकी सम मोहि न जानों ॥
निकसि जायगी सब लँगराई चलो हटो घरको सटको ॥१४१॥

राग मलार ।

छैल गैल मत रोकै तू हमारी रे ।
चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चा करैं सब पुरनरनारी रे ॥
हम सुकुमार ठाढ़ी काँपत हैं शिरपर दधिकी मटुकिया भारी रे ।
नारायण ब्रज कौन बसैगो ऐसी अनीति जो करनी विचारी रे।१४२॥

राग झिंझौटी ।

वड़ो खोटा ढोटा नंदको आली ॥
जाको नाम कहत बनमाली मिल्यो यमुनातट हँस हँस मटकत लपट झपट पटकी मटकी चट दधि गट नटखट कठिन हियो मोहिं देत चलो गयो गाली ॥ माथेपै मुकुट धरे कानमें कुंडल पहरे भालपर तिलक गोरोचनको करे गल बैजंती मुक्त माल आली मुख तमोलकी लाली ॥ कटि पीतवसन मानो घन दामिन नूपुर बजत वरणै छवि को कवि देखत ही मन हरयो युगल प्रभु तिरछी चितवनशाली ॥ १४३ ॥

राग विहाग ।

वरजो नहिं मानत वारवार ।
जव मैं जात सखी दधि वेंचन भाजत कंकर मार मार ॥
ले लकुटी मटुकी महि पटकत घूँघट देखत टार टार ।
हरवा तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार ॥
कपटी कुटिल कठोर श्यामघन देखत छवि तरु डार डार ।
हरिविलास व्रजराज हठीलो वैठगई मैं हार हार ॥ १४४ ॥

रेखता ।

यमुना न जान पावें भरने न देत पानी ।
ढोटा वड़ा अनोखा है नन्दको गुमानी ॥
लेकर जो गागर घरसे यमुनापै भरने आई ।
आगे जो ठाढ़ो मगमें वह साँवरो कन्हाई ॥
देखी सखी अकेली वहियाँ पकर मरोरी ।
छातीसों कर लगावे गल हीरहार तोरी ॥
निरखी अली नवेली या कुंजवाट पाई ।
हँस हँसके ललितकिशोरी उर कंठसों लगाई ॥ १४५ ॥

राग श्यामकल्याण ।

नटनागर चित चोर गेंद तक मारी सँवलिया ।
भयो निशंक अंक भर लीनी भ्रुकुटी नयन मरोर ॥
कहा करूं कछु वश ना मेरो ऐसो जालिम जोर ।
रसिक हठीलो जिया तरसावे मानत नाहिं निहोर ॥ १४६ ॥

राग छाया नट ।

अँगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधि लीना साँवरो ।
हों जो जात कुंजन दधि वेंचन वीच मिले गिरिधारी ॥

अगर सुने मोरी वगर सुनेगी सास सुने देवै गारी ।
चंद्रसखी भज वालकृष्णछवि हरिचरणन बलिहारी ॥१४७॥

राग सिंध ।

रोके मोरी गैलवा मैं कैसे जाऊं पनियाँ ।
शीश मुकुट कंचनको झलकै, मकर मनोहर कुंडल अलकै, माथे खौर चन्दनकी राजे, उर वैजंती माल विराजै, पीतांवर कटि कस्यो री चौतनियाँ ॥ अधरसुधारस वेणु वजावै, ग्वाल बाल लिये संग हि आवे, कहा न माने नन्दमहरको, माखन खात फिरत घरघरको, ऐसो री निडर झकझोरी मोरी वेनियाँ ॥ कर किंकिनियाँ नूपुर बाजैं, रुनुझुनात बहु मुनिमन राजैं पग पैंजनियाँ सुंदर साजैं, दर्श देख अघ दूरते भाजैं, अति चंचल अलवेली चितवनियाँ ॥ गागर फोर मोर मुख हँसके, करते गह निज उरते लचके, सूर श्याम प्रभु नागर नटको, वरज रही मानत नहिं हटको, काहे ना वरजोरी यशोदा महरनियाँ ॥ १४८ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोको गारियाँ दे दे जा री ।
यह लड़का छोकरा यह ढीठ लंगर री ॥
गारीकी गारी टोनेका टोना तुम जीते हम हारी हारी ।
आवत जावत प्यारा लगत है चलत चाल गति प्यारी प्यारी ॥
मोर मुकुट माथे तिलक विराजै कुंडलकी छवि न्यारी न्यारी ।
दोउ कर जोरे विनती करत हौं सूर शरणागत तिहारी तिहारी १४९

राग टोडी ।

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई ॥
हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई ।

घूँघट पट खोल खोल साँवरो कन्हाई ॥
यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई ।
अगर बगर झगर करत रार तो मचाई ॥
हौं तो वीर यमुनातीर नीर भरन धाई ।
गिरिधरके चरण ऊपर मीरा बलि जाई ॥ १५० ॥

राग भैरव ।

देखो री मथनियाँ कैसे तोरी नन्दलालने ॥
वनमें निवासी भयो री नन्दको करत फिरत बरजोरी । नंदलालने०॥ जित जाऊं तित आडोइ आवे ए री दैया मोते जोर जनावे री । यहि व्रज कैसे बसैं गोरी । सासुरे जाऊं तो सास लरे इत यह घर घाले री । आत्माराम नरसिंहके स्वामी कहा सुख ले घरजाऊँ हो कान्हा मोतिनकी लर तोरी ॥ १५१ ॥

ठुमरी ।

मोको डगर चलत दीन्ही गारी रे ।
ऐसोरी ढीठ बनवारी री गोइयाँ बिनती सकल कर हारी रे ॥
नीर भरन मै चली हूँ घामसों बीच मिले पनघटमें कान्ह रे।
वह तो जाने न दे पनघटको ललन पिया निरखत सगरी पनिहारी रे ॥१५२॥

रेखता ।

सुनिये यशोदा कान दै अरजी यही हमारी ।
हम छोंड़ जाँय व्रजको मरजी यही तुम्हारी ॥
नित घाट बाट नटखट जेहर झड़ाक पटकै ।
बैयाँ मरोर झटपट छातीसों हार झटकै ॥
पुनि कूदकर कन्हाई घूँघट सम्हार खोलै ।

ठोढ़ीसों कर लगाके रसकीसी बात बोलै ॥
निजदृष्टिबाण करके भौंहैं कमान ताने ।
चोरी सिवाय रसके वह और कछु न जाने ॥
चोरी करे सो चोरी घरमें डगरमें पावे ।
भाजनको देत फोरी माखन दही लुटावे ॥
कोई सखी अकेली घरमें बगरमें पावे ।
हँसके शरीर मसके वाको दया न आवे ॥
हम बार बार तुमपै करती पुकार हारी ।
तुमने दया हमारी कबहूँ नहीं विचारी ॥
कीजै कृपा सितावी हम गोपकी कुमारी ।
दीजै निकास देखूं कैसो रसिकविहारी ॥ १५२ ॥
सुन ले यशोदा रानी तू लालकी बड़ाई ।
सब लोक लाज वाने यमुनामें धो बहाई ॥
भोरहि मैं गई जो जल भरबे काज भैना ।
पीछेसों आ अचानक उन मूँदे मेरे नैना ॥
डरपी मैं हाय को है तब बोले टेढ़े बैना ।
हौं तो रही अकेली वा संग ग्वाल सैना ॥
तब सबने हो हो करके तारी मेरी बजाई । सुन ले० ॥
हँस हँसके छैल मोसों करबे लगो ठठोली ।
वह छवि तिहारे मुखकी अब कासों जावे तोली ॥
निरखे कबू वदनको कबहूं वो छूवै चोली ।
मैं तो सकुचकी मारी वासों कछू न बोली ॥
पुनि बहियाँ मेरी झटकी गागरि धरणि गिराई । सुन ले० ॥
कबहूँ कहे बता री, तू क्यों अकेली आई ।
कै घरमें तेरे पतिकी तोसों भई लराई ॥

तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्रताई।
विधनाने तेरी मेरी जोरी भली बनाई॥
नारायण वाकी बातें सुनके मैं अति लजाई।
सुन लें यशोदा रानी तू लालकी बड़ाई॥ १५४॥

राग श्यामकल्याण।

नयनोंकी मारी रे कटारी मेरे॥
सुनियो री मेरी पार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी।
यमुनाके तट भेंट भई मोसों ऐसो छैल विहारी,
सास बुरी घर ननँद हठीली देवर सुनै देय गारी।
मधुर अली घर जात बनै ना पीर उठी अति भारी॥१५५॥

राग झूलनाकी गति।

लिये फिरत सँग सँग सखियन का जाने मोहनी डारी है।
ढूँढत डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारी है॥
आप अमृतघट आपहि पीवै आपहि प्यावनहारी है।
आपहि दृष्ट अदृष्ट आप ही आपहि गोपकुमारी है॥
वंशी वजन दिशा अवलोकन घूँघट ओट निहारी है।
सब सखियनमें चतुर राधिका श्रीवृषभानदुलारी है॥
सुनो सखी जाके सँग डोलो सोइ त्रिया वपुधारी है।
लीजे पकर निकस कहुँ जाय न यही रसिक बनवारी है॥१५६॥

राग भूपाली।

लँगर मोरी गागर फोरि गयो।
सखी जाने कहाँसों औचक आय॥ लँगर०॥
नई चुनरिया चीर चीर कर निपट निडर पुनि आँख दिखावे।
देख वीर अति कोमल बहियाँ दोउ कर पकर मरोर गयो॥

मोसों कहे सुन ए री सुन्दरी तो समान व्रज सुघर न कोऊ,
नखशिखलों छबि परख निरख सुख सघन कुंजकी ओर गयो॥
कहँलग कहौं कुचाल ढीठको नाम लेत मेरो जिया काँपे,
नारायण मैं घनो बरज रही मोतियनकी लर तोर गयो ॥१५७॥

वत्सासुर व बकासुर-अघासुरवध ।
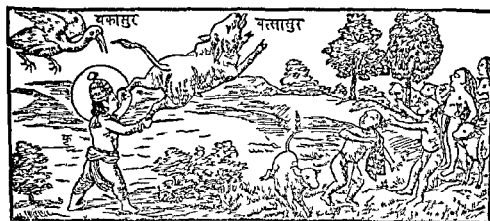
दो०—वृन्दावन व्रजपति बसे, सुनि सुधि कंस महीप ।
कोपि पठाये असुरगण, यदुकुलदीपसमीप ॥ १५८ ॥

राग अलैया ।

बालगण बलदेव हरि बछरा चरावनको चले ।
पाग पचरंगी सजे शिर माल गुंजनकी गले ॥
शीत मंद सुगंध मारुत विहँग कल बानी सुधा ।
जानि मन दोउ बंधुआगम वृक्ष सब फूले फले ॥
वेणु लै गावैं हँसावैं केलि वन नाना करैं ।
धात गिरि टीके लगाये चित्रतनु सोहैं भले ॥
वत्सगणके मध्य आयो वत्स मातुलको नयो ।
पकरि पायँ घुमाय माधव मारि पटक्यो भूतले ॥

हरिविलास हुलास वन वन भास मधुसूदन हली ।
जनु धरे द्वो रूप हिमकर गात गोरे शामले ॥ १५९ ॥

राग कालिंगडा ।

वन आये श्याम हरि वछरा चरावन ।
नखतगणमें यथा हिमकर सुहावन ॥
सवल मधु मंगलादिक लै सखा सँग ।
लगे वहु भांतिसे वंशी वजावन ॥
चकासुर आय सुखमें विघ्न कीन्हो ।
उदर ता पैठि हरि मारो सघन वन ॥
उरगतनु धरि अघासुर पंथ घेरो ।
गये सव ग्वाल ता उर जी नशावन ॥
वढ़ाकर श्याम तनु सो खल निधन करि ।
जियाये हरिविलासी मीत पावन ॥१६०॥

वत्सहरण ।

दोहा–प्रातकाल उठि ग्वालगण, जाय जगाये श्याम ।
निज निज वछरा संग ले, आये वन अभिराम ॥ १६१ ॥

राग काफी।

अभिराम राम श्यामसंग ग्वालमंडली।
नाना विनोद कानन फूले फले फली॥
विस्मित विरंचि आयो बछरा सबै हरे।
फिरि बालहू चुरायो माया प्रभू वली॥
दूजे रचे रमापति सब वत्स औ सखा।
तद्रूप देखि सोचै मनमें कमंडली॥
व्रजमें कबौं विधाता निजलोकमें कबौं।
इक वर्ष द्योस भटक्यो सब धी अजा छली॥
वहु आस्य देखि हरिके चतुरास्यमति गई।
प्रभु हरिविलासलीला नहिं जान कछु हली॥ १६२॥

दोहा–अति लजाय मन चतुरमुख, हाथ जोरि शिर नाय।
क्षमा माँगि निजलोक चलि, गयो वेगि सुरराय॥ १६३॥

गोचारनलीला।

सो०–जाके पदकी रेणु, योगीजन याचत सदा।
सो चारत नँदधेनु, कहत यशोदा कृष्णसन॥ १६४॥

राग भैरवी।

उठौ लालन सखा तोहि लेन आये, चरावन धेनु निजनिज संग लाये
बजावैं वेणु गुण गावैं तिहारे, सुभग तनु वेष काननको बनाये॥
पवन त्रिविधा बहै सुखदा सबनको, खिले सर कंज दर्शन भानु पाये॥
अमीसम बैन कल बोलैं विहंगम, समाधी त्यागि मन मुनिगण लुभाये।
जननि बलि जाय जागौ हरिविलासी, मुहूरत आजको द्विजगण
बताये॥ १६५॥

रागिणी भैरवी ।

कंजदलनैना उनींदे प्रात जागे साँवरे ।
वालगण आनन्दमें सेवानुरागे साँवरे ॥
करि सुखारी नीर झारी ले सखा कोई खड़े ।
व्यजनवर कोई करें रस प्रेमपागे साँवरे ॥
पाणि पान सुगंध वीरी गोपसुत लाये कोई ।
दर्शहित आदर्श लीन्हे ठाढ़ आवें साँवरे ॥
वेणु लकुट विषाण हरि वनमाल कुंडलको सजे ।
पाग शिर पट पीत कटि अति कांति लागे साँवरे ॥
ग्वालवेष वनाय मोहन हर्षि काननको चले ।
हरिविलास समूह गायन दाम त्यागे साँवरे ॥ १९६ ॥

राग सिंधु ।

लिये गोवृन्द वन गोविंद आये, सुभग गोपालकी आभा वनाये ॥
चरावें धेनु व्रजपतिकी रमापति,उमापतिजाहि नित धरि ध्यान ध्याये
करें क्रीडा सखागण संग लैके, विधाता जासु मायामें भुलाये ॥
अजा जाकी नचावे लोक तीनों, विपिन नाचें सोई वंशी वजाये ॥
कवों बोलें शिखीसम हरिविलासों,अगोचर जाहि श्रुति पौराण गाये

राग सारंग ।

व्रजवासिन पटतर कोउ नाहीं ।
ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत तिनकी जूंठन लै लै खाहीं ॥
धन्य नन्द धनि जननि यशोदा धन्य जहाँ अवतार कन्हाई ।
धन्य धन्य वृन्दावनके तरु जहँ विहरत प्रभु त्रिभुवनराई ॥
हलधर कहत छाक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई ।
सूरदास प्रभु विश्वंभर है ग्वालन कौर अघाई ॥ १९८ ॥

शीश मुकुट मणि विराज करण कुंडल अधिक साज,
अधर लाल चिबुक सुन्दर यशुमतिको प्यारो।
कमलनयन कुँवर लाल कुंकुमको तिलक भाल,
गुंजमाल कंठ धार कान्ह कमरीवारो॥
चारन वन धेनु जात मुखमें मुरली सुहात,
गोपिनको चित चुरात कहियत नँदवारो।
अति स्वरूप श्याम गात दरश देखे पाप जात,
मिहरदास प्रभु प्रवीन पतित तारनहारो॥ १६९॥

राग जंगला सिंध।

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयाँ।
नाहिन बनत लाल हम तुमसों कहा भयो दश गैयाँ अधिकैयाँ॥
ना हम चाकर नन्दबबाके ना तुम हमरे नाथ गुसैयाँ।
आपन रहत नींदको मातो हम चारत तेरी वन वन गैयाँ॥
कबहूँ जाय कदम चढ़ि बैठे हम गैयनसँग लगत पठैयाँ।
मानी हार सूरके प्रभुने अब नहिं जाऊँ मोहिं नंदकी दुहैयाँ॥१७०॥

राग हमीरकल्याण।

ठुमक गति चलत अनोखी चाल।
मोर मुकुट मकराकृति कुंडल केसर बेंदी भाल॥
आगे गैयाँ पाछे गैयाँ सँग सोहैं ब्रजबाल।
विष्णुदास मुरलीधरकी छबि देखत भई निहाल॥१७१॥

राग टोडी।

आज कौने धौं वन चरावत गाय कहा धौं भई बड़ी बेर।
बैठे कहँ सुधि लेहुँ कौन विधि ग्वालि करत अवसेर॥
वृंदावन आदि सकल वन ढूँढ़यो जहँ गायनकी टेर।
सूरदासप्रभु रसिकशिरोमणि कैसे दुराये दुरत डुँगरनकी ओट सुमेर।

राग विलावल ।

खेलनमें को काको गुसैयाँ ।
हरि हारे जीते श्रीदामा वरवसही कत करत रुसैयाँ ॥
जाति पाँति हमते वड़ नाहीं ना हम वसत तुम्हारी छैयाँ ।
अति अधिकार जनावत ताते जाते अधिक तुम्हारे गैयाँ ॥
रूठ करे तासों को खेलै हा हा खात परत तव पैयाँ ।
सूरदास प्रभु खेल्यो ही चाहें दाव दियो कर नंद दुहैया ॥१७३॥

राग केदार ।

वन आये वनवारी । शिर धार चन्दन खौरि मोतियनकी गल माला मोर मुकुट पीतांवर सोहे कुंडलकी छवि अति न्यारी ॥ वृन्दावनकी कुंजगलीमें चाल चलत गति अति प्यारी । चन्द्रसखी भज वालकृष्णछवि चरणकमलपर वलिहारी ॥ १७४ ॥

राग कान्हरो ।

पौढ़े श्याम जननि गुण गावत ।
आज गयो मेरो गाय चरावन यह कहि मन हुलसावत ॥
कौन पुण्य तपते में पायो ऐसो सुंदर वाल ।
हर्ष हर्षके देत सखनको सूर सुमनकी माल ॥ १७५ ॥

देखन दे मोरी वैरन पलकें ।
निरख स्वरूप मदनमोहनको वीच परत वज्रसी सलकें ॥
आगे आगे धेनु पाछे नँदनन्दन गोचरणनरज मंडित अलकें ।
कुंडल कर्ण कोटि रवि पसरे परत कपोलनमें कछु झलकें ॥
ऐसो स्वरूप निरख मोरी सजनी कहा री किये इस पूतकमलके ।
नन्ददास जननीकी यह गति तरफत मीन भाव बिन जलके ॥

राग गौरी ।

मैया मोरी कंमरी चोर लही ।
मैं वन जात चरावन गैयाँ सूनी देख गही ॥
एक कहै कान्हा तेरी कामर यमुनामें जात बही ।
एक कहै श्याम तेरी कामर सुरभी खाय गई ॥
एक कहत नाचो मेरे आगे ले देहों और नई ।
सूरदास यशुमतिके आगे अँसुवन डार दई ॥ १७७ ॥
लटकत चलत युवति सुखदानी ।
संध्यासमय सखामंडलमें शोभित तनु गोरज लपटानी ॥
मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदु बानी ।
चतुर्भुजप्रभु गिरिधारी आये वनते ले आरती वारत नँदरानी ॥

राग खम्माच ।

लटक लटक चलत चाल मोहन आवै ।
भावे मन अधर मुरली मधुर सुर बजावै ॥
चन्दन कुंडल चपल डोलन मोर मुकुट चन्द्रकलन,
मन्द हँसन जियाकी फँसन मोहनी मूरति राजै ॥
भ्रुकुटी कुटिल चपल नैन अरुण अधर मधुरे बैन,
गति गयन्द चारु तिलक भालपर विराजै ॥
लछनदास श्यामरूप नखशिख शोभा अनूप,
रसिक भूप निरखि वदन कोटि मदन लाजै ॥ १७९ ॥

राग जंगला ।

चले आते हैं मोहन वनसे धेनु चराये हुए ।
लिये वंशी अधरपर धर मधुर सुर गाये हुए ॥
उड़ी गोरज पड़ी मुखपै छबीले लालाहूके ।

लटकता नाकमें मोती कुंडल झलकाये हुए ॥
मुकुटकी लटकपै अटकी मोरी अँखियाँ यह लाला ।
ले गई जो मन मेरा जुल्फें नागिन वल खाये हुए ॥
नैननकी सेन दे मोही सकल व्रजहूकी वाला ।
परी वश प्रेमके ऐसी छूटती नहीं छुड़ाये हुए ॥
अपने कृष्णदासपै कीजिये कृपा नन्दजूके लाला ।
दीजिये दर्शन चरणसों रहूँ लिपटाये हुए ॥ १८० ॥

धेनुकासुरवध ।
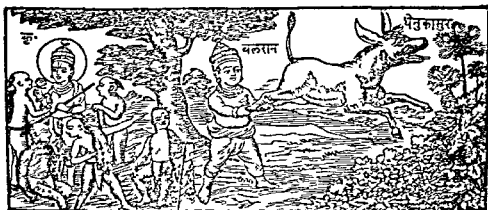
राग. खम्माच ।

चरावें धेनु वल हरि तालवनमें ।
करें वहु खेल लै सँग वाल वनमें ॥
मधुर सुख रागिनी निज निज अलापें ।
वजाकर वेणु लै स्वरताल वनमें ॥
असुर धेनुक लिये सँग सेन गर्दभ ।
चल्यो हरितीर प्रातक काल वनमें ॥
भयानक घोप रज पायँन उड़ावे ।

सखा भागे सबै बेहाल वनमें ॥
सवनके पैर पिछले लूम गहि गहि ।
विटपि पटके हली नँदलाल वनमें ॥
सहज दोउ बंधु सब रासभ निपाते ।
मुदित भेंटे सबै गोपाल वनमें ॥
सखन मिल तालफल लै हरिविलासी ॥
मुदित खाये सजीवन माल वनमें ॥ १८१ ॥

दोहा–साँझसमय वनते चले, बाल सखा लै साथ ।
गायन लै आये सदन, हलधर सह यदुनाथ ॥ १८२ ॥

कालियदमन ।

दोहा–गोचारन मिस श्यामघन, नन्दमहरहित लाग ।
यमुनातट आये हरपि, नाथन काली नाग ॥ १८३ ॥

राग भैरवी ।

करैं यमुनापुलिन गोविन्द लीला, लिये व्रजबाल सँग आनन्द लीला
सखागण यूथकरि यूथप मुरारी, रचैं बहुभाँति खेलैं कन्दुलीला ॥
सखाते छीनि कालिन्दी सलिलमें, चलाई गेंद करि नँदनंद लीला ॥

वसन गहि श्यामसे व्रजवाल वोले, हमन जानी तेरी छलछन्दलीला ॥
कस्यो कटि पीतपट चढ़ि नीप कूदे, गये जलमें करन नागेन्द्रलीला ॥
फनन फुंकारि कोपित धाय काली, तजे मुखते महाविष मंदलीला ॥
वढ़ाकर देह पन्नगदर्प नाश्यो, सदा व्रज हरिविलासन वृन्दलीला १८४

दोहा--पतिसंकट अवलोकि दृग, पत्नीगण घवराय ।
करि आगे सव वालगण, विनय करत शिर नाय ॥ १८५ ॥

राग विलावल ।

सुनौ महराज कछु विनती हमारी, हम आईं श्याम शरणागत तिहारी
सदा श्रुति दीनवंधू नाम गावै, करौ सो लाज वृन्दावनविहारी ॥
तनय यह वृन्द अव प्रभु जाय कितमों, कृपाअवकीजियेसवशोकहारी
हमन सौभाग अव हरि हाथ तोरे, मिलै जीदान करुणाकर मुरारी ॥
प्रभूप्रभुता नहीं हम नाथ जानी, क्षमो अपराध नँदनन्दन अघारी ॥
विहँसि घनश्याम कालीनाग त्यागो, हृदय हुलसानि कद्रूसूनुनारी॥
भुवन वैकुंठवासी हरिविलासी, करें लीला हरन भूभार भारी ॥ १८६ ॥

दोहा--हरि शासन काली कियो, रमणकदीप पयान ।
इतै श्याम सवते मिले, व्रजवासिनते आन ॥ १८७ ॥
देखत ही यदुनाथको, नन्दादिक हुलसात ।
गोपीगण मुदमें भरी, कहें परस्पर वात ॥ १८८ ॥

राग काफी ।

करौ हरिदर्श भरि भरि नैन आली । छटा पापै निछावर मैन आली ॥
ललित तिरभंगके सव अंग सुन्दर । किये नटवेप शोभा ऐन आली ॥
देखौ मुकुटकी छूट अलकें । श्रवण कुंडल चपल दृग सैन आली
कसे कटि पीतपट गल मुंडमाला । वजावैं वेणु कोमल वैन आली ॥
मधुर मुसक्यान आभा हरिविलासी। वसी अवतो हृदयदिनरैन आली

दोहा–ग्वालबालगण संग लै, करि आगे सब धेनु ।
सहकुटुंब हरि-घर चले, मधुर बजावत बेनु ॥ १९० ॥

तथा च–पद ।

गेंदके सँग कूदि बालक यमुनाजल पैठे धाइकै । टेक ॥
नाग नागिन करत क्रीडा हरि उतरे तहँ जाइकै ॥
कौन दिशासे आयो रे बालक कहँ तुम्हारो ग्राम है ।
कौन सखीके पुत्र जो कहिये कह तिहारो नाम है ॥
पूर्व दिशाते आये री नागिन गोकुल हमारो ग्राम है ।
मात यशोदा पिता नन्दजू कृष्ण हमारो नाम है ॥
प्रभुजीके सन्मुख कहत नागिन जा रे बालक भागके ।
तेरो रूप देखे दया उपजै नाग मारै जागके ॥
भागे कुलको दाग लागे अब भागे कैसे बनै ।
होनी हो सो होय री नागिन नाग तो नाथे बनै ॥
असुर राजा दुखी धरणी नृप चोर बनि आइयाँ ।
कंससेती द्वन्द्व कीन्हो नाग नाथन आइयाँ ॥
कै बालक तुम मग जो भूले कै घर नारि रिसाइयाँ ।
कै तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो बालक जूझन आइयाँ ॥
ना नागिन हम मग जो भूले ना घर नारि रिसाइयाँ ।
ना हमरे मन क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयाँ ॥
ले बालक गलहार माला सवा लाखकी बोरियाँ ।
सो तौ ले घर जाउ रे बालक नाग सो देउँ चोरियाँ ॥
कहा करौं गलहार माला सवा लाखकी बोरियाँ ।
वृन्दावनमें गड़ो हिंडोला नागकी करौं डोरियाँ ॥
चौंसठ चोप मरोर नागिन नाग जाय जगाइयाँ ।
जागो हो बलवन्त योधा बालक जूझन आइयाँ ॥

जब उठे हो जलके राजा इन्द्रजल घहराइयाँ ।
प्रभुके मुकुटको झपट कीन्हो शब्द ताल बजाइयाँ ॥
दोऊने मिलके द्वन्द्व कीनो राग भेद सुहाइयाँ ।
सहस फणप्रति नृत्य कीन्हो थेइ थेइ शब्द उचारियाँ ॥
कर जोरि अस्तुति करत नागिन कुटुमसहित उठि धाइयाँ ।
नाथ अब अपराध क्षमा कर कृपा हम पति पाइयाँ ॥
वामन बलिके द्वार हरिजू आप रूप बढ़ाइयाँ ।
मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह रामरूप दिखाइयाँ ॥
हम दासी प्रभुजू तिहारी मत मारो छोड़ो नागको ।
प्राणदान तुम देहु हमको राखो नाथ सुहागको ॥
नंदनँदन तब भये राजी दियो काली छोड़के ।
करि अनुग्रह दास कीन्हो ताके मदको तोड़के ॥
कालीदहमें नाग नाथ्यो मथुरा कंस पछारियाँ ।
प्रभु मदनमोहन रहस मंगल याहि विधिसों गाइयाँ ॥ १९१ ॥

राग काफी ।

तांडवगति मुंडनपर निर्तत वनमाली ॥
पं पं पं पग पटकत फं फं फं फनऊपर,
बिं बिं बिं बिनति करत नागवधू आली ॥
सं सं सं सनकादिक नं नं नं नारदादि,
गं गं गं गन्धरब सभी देत ताली ॥
सूरदास प्रभुकी बानी किं किं किं किनहूँ न जानी ।
चं चं चं चरण धरत अभय भयो काली ॥ १९२ ॥

कालीके फनन ऊपर निर्तत गोपाल लाल,
अद्भुत छबि कहि न जाय त्रिभुवन मन मोहें ।
तत्ता थेई थेई करत हरत सबके चित्त जात,

गात सुर नर मुनिजन चित्र लिखे सोहैं ॥
रुनक झुनक नूपुरधुनि उठत उठत पैंजनी पग,
ठुमक ठुमक किंकिणि कटि बाजत चित करखें ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्व जहां उघटत गत,
जय जय जय भाषत सुरवधू पुष्प बरखें ॥
ज्यों ज्यों फण ऊँचे करत त्यों त्यों कृष्ण मारें लात,
देत न अवकाश प्रभु नाचत गति धीमें ॥
तरुण वदन गरल वमन सरल किये या विधि कर,
लटक लटक पटकत फन ललित रंभ भीने ॥
नारदादि शिव विरंचि तज प्रपंच धरत ध्यान,
ताको पग दुर्लभ सोइ उरग शीश धारैं ॥
विद्याधर प्रभु दयाल तज विवाद भयो निहाल,
काली तेरे धन्य भाग बिसरत न बिसारैं ॥ १९३ ॥

राग कान्हरो।

जबहि श्याम तनु अति विस्तारयो।
पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकारयो॥
यह वाणी सुनतहि करुणामय तबहिं गये सकुचाये।
यही वचन सुन द्रुपदसुताके दीनों बसन बढ़ाये॥
यही बचन गजराज सुनायो गरुड छाँह तहँ धाये।
यही वचन सुन लाक्षागृहमें पांडव जरत बचाये॥
यह वाणी सहि जात न प्रभुपै ऐसे परम कृपाल।
सूरदास प्रभु अंग सकोरयो व्याकुल देख्यो व्याल॥ १९४॥

श्यामकमलपदनखकी शोभा।
जे नखचन्द्र इन्द्र सुर परशैं शिव विरंचि मन लोभा॥
जे नखचन्द्र सनक मुनि ध्यावें नहिं पावत मर्माहीं।

जे नखचन्द्र प्रगट ब्रजयुवती निरखि निरखि हरषाहीं ॥
जे नखचन्द्र फणीन्द्र हृदयते एकौ निमिष न टारत ।
जे नखचन्द्र महामुनि नारद पलक कहूँ न विसारत ॥
जे नखचन्द्र भजत खल तारत रमाहृदय नित पर्शत ।
सूर श्याम नखचन्द्र विमल छवि गोपीजन मिल दर्शत॥१९५॥

वन्दौं मैं चरणसरोज तिहारे ।
सुंदर श्याम कमलदललोचन ललित त्रिभंग प्राणपति प्यारे ॥
जे पदपद्म सदाशिवको धन सिन्धुसुता उतरे नहिं टारे ।
जे पदपद्म तातरिस त्रासित मन बच क्रम प्रहलाद सम्हारे ॥
जे पदपद्म फिरत वृन्दावन अहिशिर धरि अगणित रिपु मारे ।
जे पदपद्म परस ब्रजयुवती सर्वस दे सुत सदन विसारे ॥
जे पदपद्म लोकत्रयपावन सुरसरिदरश कटत अघभारे ।
जे पदपद्म परसि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित खल तारे॥
जे पदपद्म फिरत पांडवघर दूत भये सब काज सँवारे ।
ते पदपंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुखहरण हमारे ॥१९६॥

राग विहाग ।

अबकी राखि लेहु गोपाल ।
दशौ दिशाते दुसह दवागिनि उपजी है यहि काल ॥
पटकत बांस कास कुश चटकत लटकत ताल तमाल ।
उचटत अति अंगार फुरत फिर झपटत लपट कराल ॥
धूम धुंधि वाढ़ी धुर अम्बर चमकत विच विच ज्वाल ।
हिरन वराह मोर चातक पिक जरत जीव वेहाल ॥
जिन जिय डरो नयन सब मूँदौ हँसि बोले नँदलाल ।
सूर अनल सब वदन समानी अभय करे ब्रजवाल ॥१९७॥

गोवर्धनलीला ।

दो०–सुरपतिपूजाहेत ब्रज, व्यंजन बने विशेश ।
ब्रजपति निकट बुलाय हरि, करत ज्ञानउपदेश ॥ १९८॥

राग पर्ज ।

कछु बात आज मेरी करिये विचार तात ।
सब शास्त्र वेद बरनै जग कर्मसार तात ॥
वश कर्म भानु उडुपति विचरैं अकाशमें ।
वश कर्म शेष धारे सब भूमिभार तात ॥
वश कर्म सृष्टि सिरजै चतुरास्य त्रैभवन ।
वश कर्म विष्णु पालै नाशै पुरारि तात ॥
वश कर्म वायु वोलै दाहक कृशानुमें ।
वश कर्म दंडपाणी जीवन सँहार तात ॥
नर यक्ष रक्ष किन्नर गन्धर्व सुर मुनी ।
वश कर्म सर्व भोगै निजशीश धारि तात ॥
सब लोक देश जेते विरचे विरंचि जो ।
कोई मिटासकै ना जग होनहार तात ॥

व्रज देहु सर्व शासन मन हर्षि हरिविलास ।
व्यंजन बनाय कीजै पूजन पहार तात ॥ १९९ ॥
दोहा—व्रजपति आज्ञा मानि सब, करि करि तनु शृंगार ।
लै व्यंजन नर नारि सब, पूजन चले पहार ॥ २०० ॥
आय हर्षि पूजैं सबै, नर नारी मन लाय ।
निरखि कोप वासव कियो, दुखकर मेघ पठाय ॥ २०१ ॥
वर्षन लागे मेघगण, व्रजपर मूशलधार ।
व्याकुल ह्वैके कृष्णसन, गोपन करी पुकार ॥ २०२ ॥
देखि सबनकी विकलता, गे गोवर्धन पास ।
बाम हाथपर गिरि धरो, करि तपाय मुदरास ॥ २०३ ॥
मुदित भये सब नारि नर, शैलतले सब ठाढ़ ।
सकल विलोकत श्याममुख, विपति हरी जिन गाढ़ ॥ २०४ ॥
सात दिवस वरषे जलद, हारि मानि अमरेश ।
ऐरावत चढ़ि आय व्रज, विनती करत विशेश ॥ २०५ ॥

राग एमन ।

नमो कृष्ण वृंदाटवी भूविहारी, नमो विष्णु देवेश माधव मुरारी ॥
नमो वासुदेवं नमो चक्रपाणी, नमो दीनबंधू धराभारहारी ॥
नमो व्यक्त अव्यक्त वैकुण्ठवासी, नमो पद्मनाभं अमानी अघारी ॥
नमो ब्रह्म गोविन्द गोपालवेशं, नमो हंस नारायणं निर्विकारी ॥
नमो नन्दनन्दन सदा हरिविलासी, नमो श्रीजगन्नाथ लीला तुम्हारी
दोहा—करि अभिषेक रमेश तनु, सब शृंगार बनाय ।
शक्र गयो निजलोक पुनि, चरणकमल शिर नाय ॥ २०६ ॥

राग विलावल ।

राखि लेहु गोकुलके नायक ।
भीजत ग्वाल गाय गोसुत सब विषम बूँद लागत जनु सायक ॥

वर्षत मूशलधार सेनपति महामेघ मघवाके पायक ।
तुम बिन ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मेटिवे लायक ॥
अघमर्दन बकवदनविदारन बकीविनाशन सब सुखदायक ।
सूरदास तिनको काको डर जिनको तुमसे सदा सहायक॥२०७

राग मलार ।

देखो माई बादरकी बरिआई ।
मदनगोपाल धरयो कर गिरिवर इन्द्र ढीठ झरलाई ॥
जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको शमन बड़ाई ।
सेवक करे स्वामिसों सरवरि इन बातन पति जाई ॥
इन्द्र ढीठ वलि खात हमारी देखो अकिल गँवाई ।
सूरदास तिनको काको डर जिहि वन सिंह कन्हाई ॥२०८॥

लावनी ।

साँवरे शरणागत तेरी । इन्द्रने आय ब्रज घेरी ॥
देखो जी यह बादर मिल आये । दामिनी दमकत भर लाये ॥
मेघ भर लोका बरसावें । भाग अब कहो कितको जावें ॥
दो०--कहो जी अब कैसे बनै, परयो इन्द्रसों वैर ।
कोप्यो है पृथिवीको पालक, होगी किसविध ठैर ॥
जुगत हम बहुतेरी हेरी । साँवरे० ॥
कही हम तुम्हरी सब मानी । भेट गिरिवरकी मन ठानी ॥
इन्द्रकी झूठ सभी जानी । लखी हम तुम्हरी नादानी ॥
दो०--गोकुल राजा नन्दजू, जा घर कुँवर कन्हाय ।
वृथा वचन अब होत तिहारो, जनको करो सहाय ॥
जतनमें नहिं लाओ देरी । साँवरे० ॥
कहत हम तुम्हरे गुण भारी । पूतना बालकपन मारी ॥
दुष्टनी माया विस्तारी । बनी आप सुन्दर नारी ॥

दोहा--कुचमें जहर लगायके, दियो कृष्णमुखमाहिं।
एक मासको रूप तिहारो, जीवत छोड़ी नाहिं॥
मारकर मारगमें गेरी। साँवरे०॥
जो निर्मल जल यमुनाको कियो। तुरतही दावानल तैं पियो॥
अभय ब्रजवासिनको कर दियो। खैंचकर मन सबको हर लियो॥
दोहा--ब्रज तेरेको साँवरे, करै इन्द्र बेहाल।
अबके सहाय करौ नँदनन्दन, करुणासिंधु गोपाल॥
शरण यह ब्रजमंडल तेरी। साँवरे०॥
अधर हरि आपन मुसुकाये। वचन यह मुखते बतलाये॥
कहो तुम ह्याँ कैसे आये। सभी मिलि गिरिवर पै धाये॥
दोहा--नखपर गिरिवर धारके, कियो कृष्णने खेल।
गोवर्धनके शीशपर, दियो सुदर्शन मेल॥
अधर धर वंशीको टेरी। साँवरे०॥
सोहै शिर पचरंगी चीरा। लगे मुख पाननको बीरा॥
गले मोतिनकी माल हीरा। सोहै कटि पीतांबर पीरा॥
दोहा--सात कोसके बीचमें, गोवर्धन विस्तार।
सात वर्षको रूप हरीको, लियो पुष्पसम धार॥
अशीशाँ देरही ब्रज ढेरी। साँवरे०॥
इन्द्र कर कोप कोप गरजे। नहीं जल गिरिवरपर बरसे॥
दामिनी घनघनमें चमके। कि मूशलधार परी बरसे॥
दोहा--वर्ष वर्षके हारयो सुरपति, तब जान्यो जगदीश।
दोनौं हाथ पसारके, धरयो चरणमें शीश॥
मेरी बुधि मायाने फेरी। साँवरे०॥
अजंभव याको कछु नाहीं। इन्द्र तो लाख कोटिनाई॥
बनावत पल छिनके माहीं। बिगारत देर कछु नाहीं॥

दोहा—उतपति परलय जगतकी, गिरिधारीको खेल।
गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावैं, इन्द्र विचारो कौन ॥
नामते काटो यमवेरी। साँवरे शरणागत तेरी ॥ २१० ॥

प्रथमसनेहलीला।

राग विलावल।

दे मैया भँवरा चकडोरी।
जाय लेहु आरेपर राख्यो काल्हि मोल लै राख्यो कोरी ॥
लै आये हँसि श्याम तुरत ही देखि रहे रँग रँग बहु ठोरी।
मैया विना औरको ल्यावै वार वार हरि करत निहोरी ॥
बोलि लये सब सखा संगके खेलत कान्ह नन्दकी पौरी।
जैसेइ हरि तैसेइ ब्रजवालक कर भँवरा चकरिनकी जोरी ॥
देखति जननि यशोदा यह सुख विहँसति वारवार सुख मोरी।
सूरदास प्रभु हँसि हँसि खेलत ब्रजवनिता डारति तृण तोरी ॥२११॥

राग टोडी।

खेलत हरि निकसे ब्रज खोरि।
कटि काछनी पितांबर ओढ़े हाथ लिये भँवरा चकडोरि ॥
मोर मुकुट कुंडल श्रवणनि वर दशन दमक दामिनि छवि थोरि।
गये श्याम रवितनयाके तट अंग लसत चन्दनकी खोरि ॥
औचक ही देखी तहँ राधा नयन विशाल भाल दिये रोरि।
नील वसन फरिया कटि पहिरे बेणी पीठि रुरति झकझोरि ॥
संग लड़किनी चलीं इत आवति दिन थोरी अति छवि तन गोरि।
सूरश्याम देखत ही रीझे नयननि मिलि शिर परी ठगोरि ॥२१२॥

राग गौरी।

पूछत श्याम कौन तुम गोरी।
कहाँ रहत काकी हौ वेटी देखी नहीं कवहुँ व्रज खोरी॥
काहेको हम व्रजतन आवत खेलत रहत आपनी पौंरी।
सुनत रहत श्रवणनि नँदढोटा करत फिरत माखनकी चोरी॥
तुम्हरो कहा चोरि हम लेहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि वातन भुरै राधिका भोरी॥ २१३॥

राग धनाश्री।

प्रथम सनेह दुहुन मन मानो।
नैन सैन वातैं सव कीन्ही गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटानो॥
खेलन कवहुँ हमारे आवहु नंदसदन व्रजगाम।
द्वारे आय टेरि मोहिं लीजौ कान्हा है मम नाम॥
जो कहिये घर दूरि तुम्हारो वोलत सुनिये टेर।
तुमहिं सौंह वृपभानववाकी प्रात सांझ इक फेर॥
सूधी निपट देखियंत तुमको ताते करियत साथ।
सूरश्याम नागरि उत नागर राधा हरि दोऊ मिलि गाथ॥ २१४॥

राग सारंग।

गई वृपभानुसुता अपने घर।
संग सखिनसों कहत चली यह को जैहै खेलन इनके तर॥
वड़ी वार भइ यमुना आये खीझत है है मैया।
वचन कहति मुख हृदय प्रेम दुख मन हरि लियो कन्हैया॥
माता कहति कहाँ हुती प्यारी कहाँ अवेर लगाई।
सूरदास तव कहति राधिका खरिक देख मैं आई॥ २१५॥

राग पद।

खीझी कछुक कुँवरिपै जननी। घर नहिं रहत फिरत भइ हरनी॥
कितनो कहत तोहि मैं हारी। दूर कहूँ बाहर जनि जा री॥
यह सुनि हँसी मनहिं मन प्यारी। हृदय ध्यान धरि कुंजविहारी॥
कहति दूर अब कतहुँ न जैहौं। गाँव घरहि खेलत नित रैहौं॥
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा। प्रेम प्रीति दोउ अगम अगाधा॥
बसे श्याम श्यामा उरमाहीं। देखे विन भावत क्षण नाहीं॥ २१६॥

राग जोगिया।

पूँछत जननि कहाँ रहि प्यारी॥
को तेरे शीश बाल गुहि दीन्हे को प्यारी तेरी माँग सँवारी।
खेलत खेलत गइ नन्दमहरिघर उन यशुदा मोरी माँग सँवारी॥
खानको दीन्ही माखन मिसिरी औ ओढ़नको सुन्दर सारी।
तेरो नाम लै लीन पिताको दीन्ह महरि मैया तुमको गारी॥
मोहिं चितै पुनि चितै सुतहि तन कछु सवितासन गोद पसारी।
नारायण मन रसिकशिरोमणि बातन भरवै राधिका प्यारी॥२१७॥

आँखमिचौनीलीला।

राग गौरी।

हो प्यारी लागै व्रजकी डगर।
लुकि लुकि खेलत आँखमिचौनी चरण पहारी बगर॥
सात पाँच मिल खेलन निकसीं कोकिलावनकी डगर।
परमानन्द प्रभुकी छवि निरखत मोहि रह्यो व्रज सगर॥२१८॥

दधिलीला ।

दोहा–विन देखे घनश्यामछवि, गोपिन घर न सुहात ।
दधिबेंचन मिस करि सबै, नित उठि कानन जात ॥२

राग टोडी ।

आली चलो विलोकें छवि नन्दलालकी ।
सुनिबे पियूषबानी वंशी रसालकी ॥
नटवरस्वरूप कीन्हे लै धेनु वन गयो ।
शिर मोरपंख शोभा गल गुंजमालकी ॥
कानन किरीट कुंडल कटि पीतपट कसे ।
तिरभंग अंग आभा कैसी विशालकी ॥
हिलमिल सबै सखी री दधि बेंचबे चलीं ।
अब तो अधीन आकुल वश नेहजालकी ॥
गुजरिन सकोच त्याग्यो सब धाम कामको ।
मन हरिविलास मोह्यो लखि छवि गोपालकी ॥

दोहा–गोपसुन्दरिन देखि दृग, नंदनंदन मुसकान ।
निकट आय लायो गले, प्रीति रीति पहिचान ॥ २२१

राग जंगला ।

मानै न नंदढोटा बरजौं मैं बारबार ।
कारो शरीर आली गुण सर्व कार कार ॥
हम ग्राम ग्राम गोरस बेंचन हमेश जात ।
पट खेंच गैल भाजै कॉकरको मार मार ॥
लकुटी लगाय मटुकी पटकी कठोर भूमि ।
गहि कंचुकी विनाशी सब कीन्ह तार तार
बतियाँ करै रसीली छतियॉ लगा लगा ।

वंशीलीला ।

दोहा–मधुर सुधारस बाँसुरी, अधर धरी नँदलाल ।
ब्रजबाला सब वश भई, सुनि सुनि शब्द रसाल ॥२२७॥

राग झँझोटी ।

वंशी यमुनापे बाज रही रे लाल,छवि निरखन कैसें जाऊँ री आज ।
वंशीकी टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुध बिसरी रे लाल ॥
मोर मुकुट पीतांबर सोहै चन्दन खौर लगी रे भाल ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्णछवि चरणन चेरी भई रे लाल ॥२२८॥

राग गौरी ।

भई विधिहूँते परम प्रवीन जिन जगत कियो आधीन
लालकी बाँसुरिया ॥
चार वदन उपदेश विधाता थापी थिर चर नीत ।
आठ वदन गर्जत गरवीली क्यों चालि है यह रीत ॥
एकवेर श्रीपतिके सिखये पायो विधि उर ज्ञान ।
याके तो ब्रजराज लाड़िलो लगोई रहत नित कान ॥
अतुल विभूति रची चतुरानन एक कमलपर थान ।
हरिकरकमलयुगलपर राजत क्यों न बढ़े अभिमान ॥

एक मराल बैठ आरोहन विधि भयो महाप्रशंस।
इन तो सकल विमान किये गोपीजनमानसहंस ॥ लालकी० ॥
श्रीवैकुंठनाथपुरवासिन सेवत जा पद रैन।
याके तो मुख सुखसिंहासन कर बैठी निज ऐन ॥ लालकी० ॥
अधर सुधालग कुलव्रत टारे नहीं शिखा नहिं ताग।
तदपि नारायण नन्दनँदनको याहीते अनुराग ॥ ला०॥२२९॥

कवित्त।

जा दिनते वंशी अवतंसी या गोकुलमें,
ता दिनते कीन्ह्यो श्यामअधर निवासु री।
कुंज कुंज डोलैं याहि संगमों किलोलैं किये,
लीन्ह्यो सौति राग भाग सुखसों विलासु री॥
वंदीदीन दीन ह्वै रही हैं हम मोहन विन,
एक छिन पावत न बोलिवो सुपासु री॥
बाँसुरी सुनत नैन आँसु आय जात पीर,
पाँसुरी समात औ पिरात गाँसु गाँसु री ॥ २३० ॥
बाँसुरी वजे तो व्रज हम न वसेंगी वीर,
बाँसुरी वसावो लाल ह्यैं बिदा दीजिये।
जेते राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद,
जेतो शोर तेतो घोर रोम रोम छीजिये ॥
तानके तिरीछे वान लागत हैं मोहिं आन,
श्रवण न सुनें जायँ वनमें वसीजिये।
वंशीको छोड़ो श्याम विनय करत व्रजवाम,
ऐसी कीनी सूर प्रभु ऐसीहू न कीजिये ॥ २३१ ॥

राग दादरा।

मुरलिया काहे गुमान भरी ॥

जड़ तोरी जानों पेड़ पहिचानों मधुवनकी लकरी।
कबहूँ मुरलिया प्रभुकर सोहै कबहूँ अधर धरी॥
सुर नर मुनि सब मोहि गये हैं देवन ध्यान टरी।
सूरश्याम अस वश भइ ग्वालिन हरिपर ध्यान धरी॥
मुरलिया काहे गुमान भरी॥ २३२॥

राग परज।

बाँसुरी तू कवन गुमान भरी॥
सोनेकी नाहीं रूपेकी नाहीं नाहीं रतन जरी।
जाति सिफत तेरी सब कोइ जानै मधुवनकी लकरी॥
क्या री भयो जब हरिमुख लागी बाजत विरहभरी।
सूरश्याम प्रभु अब क्या करिये अधरन लागत री॥ २३३॥

राग देश।

श्याम तिहारी मदन मुरलिया तनकसीने मन मोह्यो।
यह सजीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सुर पोह्यो॥
धरणीते गोवर्धन धार्‍यो कोमल प्राण अधार।
अब हरि लटक रहत हैं टेढ़े तनक मुरलिया भार॥
हमैं छुड़ाय अधररस पीवे करे न रंचक कान।
सूरदास प्रभु निकस कुंजते चेरी सौत भइ आन॥ २३४॥

राग भूपाली—कल्याण।

री वंशी कौन तप तैं कियो।
रहत गिरिधरमुखहि लागी अधरको रस पियो॥
श्यामसुंदर कमलोचन तोहि तन मन दियो।
सूर श्रीगोपाल वश भये जगतमें यश लियो॥ २३५॥

दोहा—वंशी वंशी नाम है, काहू धर्‍यो प्रवीन।
तान तानकी डोरसों, खेंचत हैं मनमीन॥ १॥

अहो वाँसकी वँसुरिया, तैं तप कीन्हो कौन।
अधर सुधा पियको पियै, हम तर्सत चित्र भौन ॥ २ ॥
अरी क्षमा कर मुरलिया, परि हैं तेरे पायँ।
और सुखी सुन होत हैं, महादुखी हम हाय ॥ ३ ॥
ऐ अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन श्याम।
अरी चलाये सबनपै, भले चामके दाम ॥ ४ ॥
अहो वाँसकी वँसुरिया, निकसी पर्वत फोर।
जो मैं ऐसी जानती, डारत तोर मरोर ॥ ५ ॥
नयननके चल तीर तनु, रह्यो परत नहिं भौन।
तापर वंशी वाज मत, देत कटेपर लोन ॥ ६ ॥
तू है व्रजकी मुरलिया, हम हैं व्रजकी नार।
तीनि लोकमें गाइये, वंशी औ व्रजनार ॥ ७ ॥ २३६ ॥

राग देश।

सखी याकी वंशी लीजै चोर ॥
जिन गोपाल किये अपने वश प्रीति सबनसों तोर।
अधरनको रस लेत मुरलिया हम तरसत निशि भोर ॥
छिन इक घरभीतर निशिवासर धरत न कबहूँ छोर।
कबहुँक कर कबहूं अधरनपर कबहूं कटि उर मोर ॥
ना जानूँ कछु मेल मोहनी राखी सब अँग कोर।
सूरदास प्रभुको मन सजनी वँध्यो है नादकी डोर ॥२३७॥

राग दादरा।

चोरो सखी वंशी आज दावँ भलो पायो है। यह उपकार त्यारी सदा हम मानैंगी गौरी राग रसिक साँवरो रिझायो है ॥ बहुत अधरामृत चुवायो श्याम मुरलीवीच दिनदिनकी कसक

आज काढ़ पायो है। रसिक पीतम जो पे विनती करें हजार बार तौहू या बाँसुरीको भेद ना बतायो है॥ २३८॥

राग खम्माच।

किन लई देहु बताय मुरलिया राधा।
प्राणते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवन हों गुण गाय॥
सप्त सुरन सुर नर मुनि मोहे बँसुरी नेक बजाय।
यह विनती बलिहार सुनों क्या ना प्यारीजी होत सहाय॥

राग भूपाली।

वंशी मेरी प्यारी दीजौ प्रान प्रान प्रान।
यहि ठौर काल्हि भूल्यो री सुख दान दान दान॥
नहिं कामकी तिहारी दीजे आन आन आन।
जाते करूं मैं तेरो री गुण गान गान गान॥
बिनती सुनौ हमारी दै कान कान कान।
कीजे कृपा रसिक पै जन जान जान जान॥ २४०॥

राग काफी।

मुरलिया जो पाऊँ तो मैं तेरो ही गुण गाऊँ।
सुन हो कुँवरि किशोरी श्रीराधे राधे राधे गाय सुनाऊँ॥
चरण छुवाय कहत हों तुमसों तेरो हि ध्यान लगाऊँ।
यह बिनती बलिहार विहारन तेरेहि हाथ बिकाऊँ॥२४१॥

राग ऐमन।

काल्हि सखी यहि ठौर बाँसुरी भूल बिसारी।
ले जो गई तुम धाम बात हम सुनी है तुम्हारी॥
तुम्हरे काम न आवही वंशी हमरी देहु।
हम आतुर होय माँगते तुम नाहिं छ नाहिं करो॥

बाँसुरी दीजिये व्रजनारि ॥
वंशी कैसी होत नहीं हम नयनन देखी ।
पिता तुम्हारे साधु लाल तुम कपट बिशेखी ॥
इत उत खेलत तुम फिरौ वाहीं भूल रही ।
सांच शपथ बाबाकी सौं तेरी बँसुरी नाहिं लई ॥
बाँसुरी कैसी है व्रजनाथ ॥
वंशी हमरी देहु काहेको रारि बढ़ावो ।
समझ बूझ मनमाहिं काहेको लोग हँसावो ॥
लोग हँसैं चर्चा करैं प्यारी मनमें शोच विचार ।
यह वंशी मनमोहनी तुम देती क्यों न गँवार ॥वंशी दी०॥
हमको कहत गँवारि आपनी करत बड़ाई ।
मारूं गुलचा गाल तौ हूँ बाबाकी जाई ॥
तुमसे केते ग्वारिया माँगत हमपै आय ।
चतुराई तुम छाँड़िकै जाय चरावो गाय ॥ वंशी कै० ॥
या वंशीकी सार कहा ग्वालिन जानो ।
तीन लोक पटतर तासों मेरो मन मानो ॥
या वंशी खोजत फिरैं शिव विरंचि मुनिनाथ ।
परचावो परचे नहीं तुम कहा नचावत हाथ ॥ वंशी दी० ॥
नंदमहरिके कुँवर कान्ह तोहि कौन पतीजे ।
भूल गये कहुँ अनत दोप हमको नहिं दीजै ॥
लै लकरी मुखपै धरी वँसुरी याको नाम ।
जिन घर ऐसे पूत हैं उजरत तिनके गाम ॥ बाँसुरी कै० ॥
वसौ कि ऊजर जाउ तुम्हें क्या परी हमारी ।
तुमसी हैं लख चार नन्दघर गोबरहारी ॥
इक लख मेरे सँग चलें लख आवें लख जायँ ।

घनि यह भाग सुहाग धन्य यह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥
धनि यह मिलन धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचि थोरी।
धनि यह अरस परस छवि लटकनि महाचतुर मुख मोरे भोरी ॥
प्यारी अंग अंग अवलोकति प्रिय अवलोकत लगत ठगोरी ।
सूरदास प्रभु रीझि थकित भये नागरिपर डारत तृण तोरी ॥ २५० ॥

राग देवगंधार ।

व्रज नवतरुणि कदम्ब मुकुटमणि श्यामा आज बनी ।
नखशिखलौं अँग अंग माधुरी मोहे श्याम घनी ॥
यों राजत कबरी गूंथित कच कनक कंजवदनी ।
चिकुर चन्द्रकन बीच अधर विधु मानों ग्रसित फनी ॥
सौभग रस शिर स्रवत पनारी पिय सीमंत ठनी ।
भृकुटी कामकोदंड नयनशर कज्जल रेख अनी ॥
तरल तिलक ताटंक गंडपर नासाजलजमनी ।
दशनकुन्द सरिसाधर पल्लव प्रीतम मन समनी ॥
चिबुक मध्य अति चारु सहज सखी श्यामल बिन्दु कनी ।
प्रीतम प्राण रत्न संपुट कुच कंचुकी कसब तनी ॥
भुज मृणाल बलि हरत वलययुत परस सरस स्रवनी ।
श्याम शीश तरु मनो मिंड़वारी रची रुचिर रमनी ॥
नाभि गभीर मीन मोहन मन खेलनको ह्रदिनी ।
कृश कटि पृथु नितंब किंकिणियुत कदलीखंभ जघनी॥
पद अंबुज जावक युत भूपण प्रीतम उर अवनी ।
नव नव भाव विलोकि भाय इव विहरत वर करनी ॥
हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरति विशद घनी ।
गावत श्रवनन सुनत सुखाकर विश्वदुरितदमनी ॥ २५१ ॥

राग खेमटा।

तुव मुख चन्द्र री चकोर मेरे नैना।
अति आरति अनुरागी लम्पट भूल गई गति पलहु लगै ना॥
अरवरात मिलिबेको निशदिन मिलेई रहत मोसों कबहु मिले ना।
भगवत रसिक रसिककी बातें रसिक बिना कोउ समुझि सकै ना॥

प्रीतम तुम मो दृगन वसतु हौ।
कहा भोरेसे ह्वै पूछति हौ कै चतुराई कर जो हँसत हौ॥
लीजै परख स्वरूप आपनो पुतरिनमें तुमहीं जो लसतु हौ।
वृन्दावनहित रूप रसिक तुम कुंज लड़ावत हिय हुलसतु हौ॥

तुव मुख कमल प्यारी नैन अलि मेरे।
पलक न लगत पलक बिन देखे अरवरात अति फिरत न फेरे॥
पान करत मकरन्द रूपर भूलि नहीं फिरि इत उत हेरे।
भगवत रसिक भये मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे॥२५४॥

सवैया।

चैन नहीं दिन रैन परै जबते तुम नैनन नेक निहारे।
काज बिसार दिये घरके व्रजराज समाज सबै जु बिसारे॥
मो बिनती मनमोहन मानियो मोसों कहूँ जिन हूजियो न्यारे।
मोहिं सदा चितसों अति चाहियो नीकेकै नेह निवाहियो प्यारे॥

राग देश।

युगलछवि आज अनूप बनी।
गोरे श्याम साँवरी राधा नखशिख द्युतिकाकनी॥
खंजन नयन मयन मदगंजन अंजनरेख अनी।
ललितकिशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसुक्यान घनी॥२५६॥

आज इन दोउनपै वलि जैये।
रोमरोमसों छवि वरपत है निरखत नैन सिरैये॥

रूपरास मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये ।
नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज बसैये ॥ २५७ ॥

गोरे ग्वाललीला ।

दोहा--राधासंग विहार थल, राधा तन लखि श्याम ।
देन लगे उपमा कछुक, अति अनन्द तेहि याम ॥ २५८ ॥

ठुमरी ।

चन्दासों वदन जामें चन्दनको विन्दा दिये चन्दा तन चितवत चन्दाछवि छाई प्यारी । चन्दनकी सारी सोहै चन्दनको हार हिय चन्दनको लहँगा सोहै चन्दा मुख भाई प्यारी ॥ चन्दनकी कंचुकी चन्दनकी वन्दनी चन्दनकी वँगली चन्दा तनु भाई प्यारी । कहा कहूँ कछु कहन न आवे तिहारो मुख देखे चन्दा गयो है लजाई प्यारी ॥ २५९ ॥

दोहा–सुनि उपमा राधा प्रिया, बोली भौंह चलाय ।
चन्दामें इक श्यामता, समुझि कहत दुरियाय ॥ २६० ॥

राग विहाग ।

यह कहिके प्रिय धाम गई ।
चौंकि परे हरि जब यह जानी अब यह कहा भई ॥
दोष न होय सखी कछु मेरो उपमा चन्द दई ।
रिसन भरी नखशिखलों प्यारी यौवन गर्वमई ॥
लावो वेगि मनाय सखी री यामिनि जात वही ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत लावो वेगि सही ॥ २६१ ॥

राग खेमटा ।

देखी कहूँ गलिनमें मो प्राणजीवनी ॥
ए हो सुजान प्यारी मम चूक क्या विचारी,

क्यों दुरि गई लतनमें दे दर्श आनन्दनी।
जब चलत चाल छविसों तब हलत हार उरसों,
ठुमठुम चरन धरनपै तू गति गयन्दनी ॥
तेरी छटा चरणकी निन्दत रवी किरणको,
हा हा कुँवरि किशोरी तू है सुखसमूहनी।
यह सुनत वचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो,
हित रूप लाल चेरो ए हो दुखनिकन्दनी ॥ २६२ ॥

राग गौडमलार।

वृषभानुकुँवरि जब देखों। तब जन्म सफल करि लेखों ॥
मैं राधा राधा गाऊँ। राधाहित वेणु बजाऊँ ॥
मैं राधारमण कहाऊँ। काहे दूजा नाम धराऊँ ॥
जहँ राधाचर्चा कीजे। तहँ प्रथम जान मोहिं दीजे ॥
जहँ राधा राधा गावैं। तहँ सुनिबेको हम आवैं ॥
श्रीराधा मेरी सम्पति। श्रीराधा मेरी दम्पति ॥
श्रीराधा मेरी शोभा। श्रीराधाको चित लोभा ॥
मैं राधाके सँग नीको। राधा विन लागत फीको ॥ २६३ ॥

राग सोरठ।

श्रीराधा प्यारी देखी है चितकी चोर।
लागी काहू ठौर मैंने देखी है चितकी चोर ॥
चन्द्रवदनि मृगलोचनि राधे जैसे चन्द्र चकोर।
नई प्रीतिसों सर्वस बाढ़्यो जोवना करत ही जोर ॥
पाँयनमें नूपुरधुनि वाजे गजगति चलती तोर।
या छबि निरखिकै मगन भये गुण गावत दास किशोर ॥ २६४ ॥

राग देश ।

वाधा दे राधा कित गई ।
वृन्दा विपिन अछत प्यारी विन सव विपरीत भई ॥
मेरे मन्द भाग्यसों काहू पोच प्रकृति सिखई ।
व्यास स्वामिनी वेगि मिलै तो वाढ़े प्रीति नई ॥ २६५ ॥

राग विभास ।

मेरी तो जीवन राधा विन देखे नहिं चैन ।
मोसे तो कछु चूक परी ना कैसे रूठी सुखदैन ॥
पैयाँ परूँ मैं तोरे ललिता तोरे विशाखा तुम जैयो प्यारी लैन ।
धीरज प्यारीजूके देखे शीतल होंगे मेरे नैन ॥ २६६ ॥

राग विहाग ।

तुंम कहुँ देखी रे इत जात रूपगर्विनी प्यारी राधा ॥
चम्पकवरण गात मनरंजन, खंजन चख कुरंग मद गंजन,
अमल कमल मुख ज्योति विलोकत होत शरद शशि आधा ।
अहो सुगन्ध मृगशावक नैनी कहुँ देखी प्यारी पिकवैनी,
सुखमासिन्धु अगाधा ॥
अहो मराल मानसरवासिक अहो अलिन्द मकरन्दउपासक,
देहु वताय मोहिं दया करि होत अपत अपराधा ।
अहो कदम्ब अहो अम्ब निम्ब वट,सोहत सुखद छाँह यमुनातट,
हरत तापकी वाधा ॥
सन्तत देत गोप गोधन सुख, कवहूँ नहिं कहि सकत मेरो दुख,
उपकारी वपु वेद वखानत अवहिं मौन क्यों साधा ।
आरतवचन पुकारत लालन मन जो फँस्यो विरहीके हालन,
मदनजालसों वाधा ॥

अतिशय विकल देखि बनवारी, प्रगट भई वृषभानुदुलारी,
सूरदास प्रभुको लगाय उर पुरवत रसकी साधा ॥ २६७ ॥

राग काफी।

करि विचार वृषभानुदुलारी।
ग्वालरूप धरि छलन कृष्णको नन्दगाँवकी ओर सिधारी ॥
जहँ हरि अपनी गाय चरावैं तहाँ आप चलि आई।
देखि रूप मोहे मुरलीधर भूलि गये चतुराई ॥
अरे मित्र कह नाम तिहारो बास कहाँ है तेरो।
मैं तो तोहिं कभूँ नहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो ॥
गोरे ग्वाल भानुपुरके हम गोधनवृन्द चरावैं।
रसिकविहारी गाय हमारी आई भज कहँ पावैं ॥ २६८ ॥

राग देश।

गुन सुन वृषभानु-कुँवरिके। जाके लाल तुम रहो अधीन ॥ वह तो गृहसे सटक, वन रहत अटक, नहिं मानत हटक, इत उत ही फिरत ॥ ऐसी फिरे इतरात, नहीं काहूको सुहात, मन-माने जित जात, नहीं नेकहू डरत ॥ बेटी बड़ेकी कहावै, दधि बेंचिबेको जावै, ताहि लाजहू न आवै, सब नाम धरत ॥ इक मेरी सुन लीजै, ऐसी नार ना पतीजै, ब्याह कहूँ जासों कीजै, तेरो चित्त हरत ॥ जाकी मुख उजियारी, देख रीझोगे'विहारी, पियो रूपराशि वारी, जब प्रीति करत ॥ २६९ ॥

राग देश।

सखा तुम बोलो न बात विचारी।
कहो कौनसी बाल जगतमें जैसी है भानुदुलारी ॥
भानुनगरके वसनहार तुम प्यारीकी अनुहारी।

रविशशि कोटि मदनहूँकी छवि दीजै तुमपर वारी ॥
कहो कौनसे मैं व्याह कराऊँ रची कवन विधि नारी ।
करत वास हिरदै मेरेमें कीरतिकुँवरदुलारी ॥
प्रेमविवश कछु सुरति रही ना तनकी दशा बिसारी ।
लिये लगाय वेगि उर प्यारी तब हँसि रसिकविहारी ॥ २७० ॥

राग देश ।

सखी री मैं हूँ नन्दकिशोर ।
मैं दधिदान लेत वृन्दावन रोकत हूँ वरजोर ॥
यह जो माननी मान कर बैठत विनती करूं कर जोर ।
पुरुषोत्तम प्रभु मैं हूँ रसिकवर यह मेरी चितचोर ॥ २७१ ॥

रासलीला ।

दोहा–राका रजनी शरदकी, उदय देखि राकेश ।
अधर वेणु धरि हरि दियो, गोपिनको संदेश ॥ २७२ ॥

राग ललित ।

ब्रजराजके दुलारे वंशी मधुर वजाई ।
सुनि गोपिका किशोरी सुधि देहकी विहाई ॥

इक केश शिर सम्हारे आदर्श हाथ लीन्हे ।
सुनि वेणुतान तीक्षण अकुलाइ वेगि धाई ॥
दृग एक आँजि कोई सुनि वैन रैन भाजी ।
पद एक कोइ जावक नहिं दूसरे लगाई ॥
कोइ धारि पाद कंकन मंजीर वाहु कोई ।
सब अस्तव्यस्त शोभा हरिके समीप धाई ॥
सब धाम काम त्यागी ब्रजवाम श्यामकारन ।
लखि हरिविलास शोभा आनन्दमें अघाई ॥ २७३ ॥

कवित्त ।

एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी,
एक राखभर कौरी सुध रही नाहिं तनमें ।
एक खुले वार एक छतियां उघार,
एक भूषणको डार, चली दामिनी ज्यों घनमें ॥
एक उजियारी, गोपीनाथने निहारी,
बौरी एक भई वारी, डोलै मदन उमंगमें ॥
ऊधम भयो है घरी चार ब्रजमंडलमें,
बाँसुरी बजाई कान्ह जमी वृन्दावनमें ॥ २७४ ॥
बाजी घर आई बाजी देखिवेको धाई बाजी,
बाजी मुरझाई सुनि धुनि गिरिधरकी ।
बाजी हँसि बोलैं बाजी करत कलोलैं,
बाजी संग लाग डोलैं सुधि बिसरी सब घरकी ॥
बाजी ना धरैं धीर, बाजी ना सम्हारैं चीर,
बाजिनके उठी पीर दावानल भरकी ।
बाजी कहैं बाजी बाजी, बाजी कहैं कहाँ बा
बाजी कहै बाजी बंशी साँवरे सुघरकी

दोहा-गले किंकिणी हार कटि, कर पेंजनी विराज ।
माथे धरि पग पानके, बेंदा पगपे साज ॥ २७६ ॥
सोरठा-पहिरि चूनरी अंग, लहँगा ओढ़े शीशपे ।
वंशीधुनिके संग, जात चली ब्रजनागरी ॥ २७७ ॥

राग कल्याण ।

जब हरि मुरलीनाद प्रकाश्यो ।
जंगम जड़ थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥
स्वर्ग पताल दशौ दिशि पूरण धुनि आच्छादित कीन्हो ।
निशि हरि कल्पसमान बढ़ाई गोपिनको सुख दीन्हो ॥
भर्मत भये जीव जलथलके तनकी सुध न सम्हार ।
सूरश्याम मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार ॥ २७८ ॥

राग भैरव ।

बाँसुरी बजाई आज रंगसों मुरारी ।
शिव समाधि भूल गई मुनिजनकी तारी ॥
वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी ।
सुनत ही आनन्द भयो लगी है करारी ॥
रंभा सब ताल चूकी भूलि नृत्यकारी ।
यमुना जल उलट बह्यो सुध ना सम्हारी ॥
वृन्दावन वंशी बजी तीन लोक प्यारी ।
ग्वाल बाल मगन भये ब्रजकी सब नारी ॥
सुन्दर श्याम मोहनी मूरत नटवर वपु धारी ।
सूर किशोर मदनमोहनवर चरणन बलिहारी ॥ २७९ ॥
दोहा-नँदनन्दन ब्रजचन्दने, वंशी तान पठाय ।
पकरि बुलाई सबनको, पुनि बोले यदुराय ॥ २८० ॥

सोरठा–सुनिये सब ब्रजनारि, याहीमें कल्याण है।
निज निज घरहि पधारि, निज निज पतिसेवा करौ॥२८१॥

सवैया।

जो पतिसेवन नारिको धर्म कह्यो सति होयगो सोऊ गुसाँई।
पै हम वेद पुराण सुनै हित रावरेके ढिग नाहिं सिधाई॥
श्रीरघुराज सुनो मनभावन आवती केहूँ नहीं इत धाई।
पै दइ मारी तिहारी लला मुरली हठिकै हमको धरि ल्याई॥ २८२॥
नारिहि एक कह्यो पतिदेव सु वेद पुराणहु लोकहु गावत।
त्यों द्विज कृष्णजू आपही हौ सबके पति सो सब शास्त्र बतावत॥
सो अब कीन्ह्यो निराश हमैं रसिया ब्रजनायक कैसे कहावत।
नारिन सेवा बतावत औरकी लालन लाज तुम्हें नहिं आवत॥२८३॥
सोरठा–सुनिये श्रीब्रजराय, निठुराई मति ठानिये।
कीजै सोइ उपाय, पकरि बुलाई जौन हित॥ २८४॥
दोहा–यद्यपि मम माया प्रबल, मोहत सब संसार।
पै तुव प्रेमप्रवाहमें, बूड़त लहत न पार॥ २८५॥
हौं जीते सब कालमें, दानव दैत्य अनेक।
काहूसों हारयों नहीं, हारयों तुमसों एक॥ २८६॥
सोरठा–प्रेम दृढ़ावन काज, निठुर वचन तुमसों कह्यो।
सुमिरत आवत लाज, क्षमा करहु अपराध मम॥२८७॥
अब धरि हिये उछाह, प्रेमसिन्धुमें पैरिकै।
करि मम माफ गुनाह, रासकेलि लीला करौ॥ २८८॥

राग देश।

रच्यो श्रीवृन्दावन रास गोविन्द।
चलो सखी देखन चलिये नवल अनन्द॥

यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगन्ध ।
त्रिविध पवन डोलै अति गति मन्द ॥
खंजरी सरंगी बाजे ताल मृदंग ।
वीणा उपंग मुरली मोहर मुहचंग ॥
भालमें तिलक सोहै मृगमद रेख ।
मुरली मनोहर जीको नटवर भेख ॥
ब्रह्मा देखैं विष्णु देखैं नारी नरेश ।
देखन आये शंभुजी औ गौरी गणेश ॥
वृन्दावनमाहिं रच्यो रासविलास ।
गुण गावैं स्वामीजीके माधुरीदास ॥ २८९ ॥

राग ललित ।

वृषभानुकी दुलारी ब्रजराजके दुलारे ।
वन वन विहार शोभा दिनकरसुताकिनारे ॥
भूषण विचित्र अम्बर सब अंग अंग साजे ।
उपमाविहीन सुखमा दोऊ शरीर धारे ॥
स्वर मन्द मन्द वंशी दोऊ मधुर बजावैं ।
बहु रागिनी अलापैं लय तानहू सम्हारे ॥
ब्रज गोपिका किशोरी बहु वाद्य पाणि लीन्हे ।
सब एक एक करिकै नाना गती निकारैं ॥
केकी समूह नाचैं निजवाम संग लै लै ।
छवि हरिविलास देखैं पल पलक नाहिं टारैं ॥ २९० ॥

कवित्त ।

तालनपै तालपै तमालनपै मालनपै,
वृन्दावन वीथिन विहार वंशीवटपै ।

छितिपै छवाननपै छाजत छटाननपै,
ललित लताननपै लाड़िलीकी लटपै ॥
कहै पदमाकर अखंड रासमंडलपै,
मंडत उमंड महा कालिन्दीके तटपै ।
कैसी छवि छाई आज शरद जुन्हाई आली,
जैसी छवि छाई या कन्हाईके मुकुटपै ॥ २९१ ॥

सवैया ।

सोनजुहीकी वनी पगिया, रु चमेलीको गुच्छ रह्यो झुकि न्यारो ।
दो दल फूल कदम्बके कुंडल, सेवती जामाहु घूम घुमारो ॥
नौ तुलसी पटुका घनश्याम, गुलाव हजार चमेलीको न्यारो ।
फूलन आज विचित्र वन्यो,देखो कैसो शृंगाऱ्यो है प्यारीने प्यारो२९२
सारी सँवारी है सोनजुही, अरु जूहीकी तापै लगाई किनारी ।
पंकजके दलको लहँगा, अँगिया गुलवासकी शोभित न्यारी ॥
चमेलीको हार हमेल गुलावकी, मौरकी वेंदी दै भाल सँवारी ।
आज विचित्र सँवारिकै देखिये कैसी शृँगारी है प्यारेने प्यारी ॥ २९३ ॥

राग पीलू ।

भाग्यवान वृषभानुसुतासी को तिय त्रिभुवनमाहीं ।
जाको पति त्रिभुवनमनमोहन दिये रहत गल वाहीं ॥
ह्वै अधीन संगहि सँग डोलत जहाँ कुँवरि चल जाहीं ।
रसिक लख्यो जो सुख वृंदावन सो त्रिभुवनमें नाहीं ॥ २९४ ॥
संग चली व्रजवाल लाल करतालन लै लै जोरी ।
लाई गति मृदंग उपजाई झाई बन घनघोरी ॥
ततथेई धुमकिट ततथेई यह धुन सुन ले जोरी ।
व्रलभ रसिकविहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी ॥ २९५ ॥

कवित्त ।

माथेपै मुकुट देख, चन्द्रिका चटक देख,
छबिकी लटक देख, रूपरस पीजिये ।
लोचन विशाल देख, गरे गुंजमाल देख,
अधर सुलाल देख, चित्तचोर कीजिये ॥
कुंडल हलन देख, अलकें चलन देख,
पलकें चलन देख, सरवस दीजिये ।
पीताम्बर छोर देख, मुरलीकी घोर देख,
साँवरेकी ओर देख, देखवोही कीजिये ॥ २९६ ॥

भ्रुकुटी तनीको, नकवेसर वनीको लट,
नयन फनीको, लखि फूल्यो कुंज फीको है ।
मैनकी मनीको, नैनवानकी अनीको चोखे,
सैन रजनीको, होस हुलसन हीको है ॥
रूप रमनीको, कै धौं रमारमनीको, गज—
मत्तगमनीको कै धौं सिंधुसूरजीको है ।
वेनी वन्द नीको, मृदुहास फंद नीको,
मुख चन्दहूसे नीको, वृषभानुनन्दनीको है ॥ २९७ ॥

सवैया ।

मंडल रासविलास महारस, मंडल श्रीवृषभानुदुलारी ।
पंडित कोक सँगीतभरी, गुण कोटिन राजत गोपकुमारी ॥
प्रीतमके भुजदंडमें सोहत, संगमें अंग अनंगन वारी ।
तान तरंगन रंग वढ्यो ऐसे राधिका माधवकी वलिहारी॥२९८॥
जामा वन्यो जरीतासको सुन्दर लाल सु वंद रु जर्द किनारी ।
झालरदार वन्यो पटुका अरु मोतिनकी छवि जात कहारी ॥

जैसि कि चाल चलै गजराज कहैं बलिहारी है मौज तिहारी ।
देखत नैनन तारकही झुक झाँक झरोखन बाँके बिहारी ॥ २९९ ॥

छन्द ।

जैसी है मृदु पटकन चटकन कर तारनकी ।
त्रियतन मोर मुकुटकी लटकन कल कुंडल हारनकी ॥
साँवरे पियसंग निर्तत व्रजकी चंचल बाला ।
मानों घनमंडल मंजुल खेलत दामिनिसी बाला ॥ ३०० ॥

कवित्त ।

सुन्दर सुजान कान्ह, सुन्दर है पाग शीश,
सुन्दरसे नैन धर, सुन्दर बाँसुरिया ।
सुन्दरसी भ्रू कमान, सुन्दर पलक बान,
सुन्दर मुसक्यान, चितवन चितहरिया ॥
सुन्दर बाजूबन्द राजैं, सुन्दर वनमाल साजैं,
सुन्दर गलहार मोती, जामो जो केसरिया ।
सुन्दर कंकन अमोल, सुन्दर कुंडल कपोल,
सुन्दर नारायण बोल, दीन दर्द हरिया ॥ ३०१ ॥

वारि डारौं शरद इन्दु मुखछबि गोविंदपै,
दिनेशहुको वारि डारौं नखन छटानपर ।
कोटि काम वारि डारौं, अंग अंग श्याम लखि,
वारि डारौं अलि आलि कुंचित लटानपर ॥
नैननकी कोरनपै कंजहूको वारि डारौं,
वारि डारौं हंसहूको चाल लटकानपर ।
देख सखी आज व्रजराजछबि कहा कहूं,
कामधनु वारि डारौं भृकुटी मटानपर ॥ ३०२ ॥

नैनन चकोर मुखचन्द्रहूको वारि डारौं,
वारि डारौं चित्त मनमोहन चितचोरपै।
प्राणहूको वारि डारौं हँसन दशन लाल,
हेरन कुटिल वाके लोचनकी कोरपै॥
वारि डारौं मैनरंग अंग अंग श्याम श्याम,
हिलन मिलन रस रासकी झकोरपै।
अति ही सुघर वर सोहत त्रिभंगी लाल,
सर्वसहू वारि डारौं ग्रीवाकी मरोरपै॥ ३०३।
मुकुटके रंगनपै इन्द्रको धनुष वारौं,
अमल कमल वारौं लोचन विशालपर।
कुंडल प्रभापै कोटि प्रभाकर वारि डारौं,
कोटिक मदन वारौं वदन रसालपर॥
तनुकी तरुणपर नीरद सजल वारौं,
चपला चमक उर मोतिनकी मालपर।
चालपै मराल वारौं मनहूको वारि डारौं,
और कहा कहा वारौं छवि नन्दलालपर॥ ३०४॥

राग बिलावल।

आली री रासमंडल मध्य निरतत मदनमोहन अधिक प्यार लाड़िली रूपनिधान। चरण चारु हँसत भेद मिलवत गति भाँति भाँति भ्रूविलास मन्द हास लेत नैननहीमें मान॥ दोऊ मिलि राग अलापत गावत होड़ाहोड़ी उघटत देकर तारी तान। परमानन्द निरख गोपीजन वारत है निज प्रान॥ ३०५॥

राग जैजैवंती।

आवरी बावरी ऊजरी पागपै मेलके बाँध्यो है मंजर चोटा।

चंचल लोचन चाल मनोहर आन्यो अवे गहि खंजन जोटा॥
देखत रूप ठगोरीसी लागत ऐन मैन मानो कमलके जोटा।
नंददास रसरास कोटिन वारौं आज बन्यो व्रजराजको ढोटा॥३०६॥

राग झँझोटी।

गोपी गोपाल लाल रासमंडलमाहीं। तत्ता थेई ता सुधंग निरतत गहि वाहीं॥ द्रुम द्रुम द्रुग द्रुम मृदंग छननननन् रूप रंग दृग ता दृग ताल तंग उघटत रसनाई। बीच लाल बीच बाल प्रति प्रति अति द्युति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दृग सराही॥ राधामुख शरदचन्द पोंछत जल श्रम अनन्द श्रीव्रजचन्द लटक करत मुकुट छाहीं। तत्तत तत सुघर गात स रि ग म प ध नी ग ठाठ और पदहि प्रलाद दाँप दंपति अति सादहीं॥ गावत रस भरे अनन्द तान तान स्वर अभंग उमँगत छबि अति अनन्द रीझत हरि राधहीं। छाये देवन विमान देखत सुर शक्र भान देवांगन निधान रीझि प्राण वारहीं॥ चकित थकित यमुना नीर खगमृग जगमग शरीर धनि नन्दके कुमार बलि बलि जाय सूरदास रासमुख निहारहीं॥ ३०७॥

राग काफी।

देखो री या मुकुटकी लटकन।
निरतत रास लिये राधा सँग बैजन्ती वेसरकी अटकन॥
पीतांबर छुटि जात छिनैछिन नूपुरशब्द पगनकी पटकन।
सूरश्याम या छबिके ऊपर झूँठो ज्ञानयोगको भटकन॥३०८॥

राग देश।

लालको नाचत सिखवत प्यारी॥
जैसोइ सुभग बन्यो श्रीवृन्दावन तैसी शरद उजियारी।

मान गुमान लकुट लिये ठाढ़ी डरपत कुंजविहारी ॥
थेई थेई करत लाल मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी ।
वंशीवट यमुनातट कुंजन रहस रच्यो गिरिधारी ॥
कोऊ मृदंग कोऊ वीण बजावत कोई हँसत दे तारी ।
छविसों गावत खड़ी नचावत रोम रोम बलिहारी ॥
देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज शोच विचारी ।
व्यास स्वामिनी सो छवि निरखत रीझ देत करतारी ॥ ३०९॥

राग रेखता ।

नाचै छली छबीला नँदका कुमार है ।
गल बाँह दै प्रियाके सुन्दर शृंगार है ॥
इत मन्द मन्द झीनी नूपुर अवाज है ।
उत पायजेब पायल घनकीसी गाज है ॥
पगिया लसी कुँवरके शिर पेंच लाल है ।
भ्रुकुटी लगी ललोई प्यारीके भाल है ॥
कटि काछनी सुचोली पटुका किनारका ।
कानों जड़ाऊ झुमका गल हीरहार है ॥
दामिनि सुरंगी सेला कीरतिकुमारिका ।
मोतिनकी माल सुन्दर शोभा अपार है ॥
गुंजा गले गुनीके तर गुंजमाल है ।
छतियाँ लगी ललासों वंशी रसाल है ॥
नासा बुलाक वेसर माथेपै मुकुट सोहै ।
दोनों झुके परस्पर छवि बेशुमार है ॥
प्यारीकी नखछटापर रविचन्द्र कोटि मोहै ।
केशव खड़ा विलोके प्राणन अधार है ॥ ३१० ॥

दोहा–आयो दर्प व्रजांगना, भे अब वश घनश्याम।
समुझि सोइ कुंजन छिपे, लै हरिसँग इक वाम ॥ ३११ ॥
सब समाज तजि आन बन, दृग दुराय हरि आय।
प्रिया गात भूषण सजे, सुमन सुगंधित लाय ॥ ३१२ ॥

राग काफी।

व्रजराजके दुलारे वृषभानुनन्दनी।
आदर्श दर्श देखैं मुसक्यान मन्दनी ॥
भूषण प्रसून दोऊ सब अंगमें सजे।
उपमाविहीन सुखमा त्रैलोकवन्दनी ॥
दै कंठ बाहु राजैं अनुरागमें भरे।
बोलन हँसन अनूठी मन प्रेमफंदनी ॥
नभ सोम पूर्ण एकै निशि मासमो रहे।
व्रजमध्य नित्य पूरण युगचन्द्र चन्दनी ॥
शृंगार धारि बैठे शृंगार वटतले।
प्रभु हरिविलासलीला भवदुखनिकन्दनी ॥ ३१३ ॥

दोहा–बहु विहार करि श्यामघन, पुनि अभाव तेहि ठौर।
मान जानि सोऊ तजी, गुप्त भये वन और ॥ ३१४ ॥
उतै गोपिका वृन्दवन, नहिं देखे नँदलाल।
नीरहीन जिमि मीनगण, सुधि नहिं देह सम्हाल ॥ ३१५ ॥
खग मृगादि वनपशु चरत, वृन्द वृन्द समुदाय।
तिनसों पूँछत गोपिका, नैन नीर भरि लाय ॥ ३१६ ॥

राग सिन्धु।

तुमने देखा कहीं इक वंशी वजानेवाला।
संगदिल बेदरद हररोज सतानेवाला ॥

नाम लै लै हमारे वेणु वजाई ऐसी ।
शहर छुटवा हमें सैरामें नचानेवाला ॥
रागिनी राग औ स्वर ताल मिलाकर मोहन ।
क़ातिले बाँसुरी रस तान लगानेवाला ॥
वेष नटवर बनाये श्याम सलोना मुखरा ।
जाल मुसक्यानसे दिलमाहीं फँसानेवाला ॥
मार गेसू डसी रहि रहि लहर आवै वनमें ।
दिल चुरानेक सौका रंज दिखानेवाला ॥
पीतपट कटि कसे औ श्याम कलेवर वाको ।
तान अवरू कमान गहि तीर चलानेवाला ॥
हरिविलासी विना वेताव निहायत गोपी ।
देखिये कब मिलैं दिलदार हँसानेवाला ॥ ३१७ ॥

दोहा–संग लाड़िलीको लिये, यमुनाको सब आय ।
वारि नयन जल जात वहु, विलपत हरिगुण गाय ॥३१८॥
अति दारुण दुख देखि हरि, करुणानिधि दुख पाय ।
भये मुसक्यात मुख, रूप अनूप बनाय ॥ ३१९ ॥
सिन्धु जानी सबे, गोपिन मनकी आश ।
समाज सजि शरद निशि, करन लगे सुखरास ॥३२० ॥

राग जैजैवंती ।

विपिन महीतल शोभा महा बनी ।
राशि रास विरच्यौ त्रैलोकके धनी ॥
शरद शर्वरीमें उडुगण महा छटा ।
कला सुधाकर सुख देन चाँदनी ॥
रंग रंग शफरी विचरें तड़ागमें ।
चंचलासी चमकें फूली कुमोदनी ॥

गहि गहि सुपाणि मंडल कीन्हो व्रजांगना ।
तेहि मध्य मध्य राजै यदुकुलशिरोमनी ॥
वीणा मृदंग आनक करताल आदि लै ।
नाना गती बजावैं भामा हुलासनी ॥
गावैं समूह रागन लयदार तालसे ।
वंशी पियूषसानी बाजै मधुर धुनी ॥
बहुभाँति नृत्य क्रीडा लोचन कटाक्षसे ।
मंजीर मन्द बाजै जनु मैन ध्वनि अनी ॥
पिक बैनसी अलापैं बामा विधूमुखी ।
बैकुंठसी सलोनी व्रज धन्य मेदिनी ॥
प्रभु हरिविलासलीला कवि कौन कहि सकै ।
नित गाय गाय थाके निशदिन सहसफनी ॥ ३२१ ॥

राग परज तिताला।

निरतत हरि वृषभानुदुलारी । शरद रैनि निर्मल उजियारी ॥
हिलिमिलि सरस राग दोउ गावैं । रहसि परस्पर भाव बतावैं ॥
पकरि चरण पायल ठनकावैं । छुम छननन नूपुर झनकावैं ॥
कटि किंकिणि धुनि न्यारी ॥
ललिता ललित मृदंग बजावैं । धुमकट धिधकट गति उपजावैं॥
लालन ललित सुलभ गति कीन्ही। प्यारी तुरत दुरत कर लीन्ही॥
धुनि पंचम गान्धारी ॥
ललित कदम्ब लता द्रुम फूले । परशत धरनि परत जिमि झूले॥
विहरति युगल रविसुता कूले । लसत पीतपट नील दुकूले ॥
चलत पवन सुखकारी ॥
यहि विधि करत रास पिय प्यारी । पीतम तन मन धन बलिहारी॥

चतुरानन निरखत सुख पावें । शारद धरनीधर गुन गावें ॥
धरत ध्यान त्रिपुरारी ॥ ३२२ ॥

पद मारवाडी भाषामें ।

श्रीश्यामा नाचें ताल श्यामरी वंशी बाजैजी ॥
शरद सुहाई चाँदनी निर्मल जोति दिखावै ।
चन्द निरखि मुखचन्द दो न्यारो मेघांमाहिं छिपावै ॥
कामरति कोथ्यां लाजैजी ॥
जलतरंग मुहचंग मँजीरा बाजै ताल मृदंग ।
सारंगी सितार तंबूरा नूपुर धुनिरी संग ॥
पायली गतिपै गाजैजी ॥
नाचै गति संगीत ताल लै फिर फिर भाव बतावै ।
चटपट मुखपै लाइ घूँघटी प्रीतम मनहि चुरावै ॥
उपट फिरि गति लै भाजैजी ॥
यां बिनती द्विज कृष्णदासरी श्रीबन बेगि बुलावो ।
रास रसीले युगल छबीले माने भी रास दिखावो ॥
विरहज्वर जियरो दाजैजी ॥ ३२३

राग विहाग जलद तितालां ॥

निरतति कुमारि बनवारी । पदकमल चलन गति प्यारी ॥ लटकि मटकि पग पटकि धरनि नट थिरिकि फिरिकि लै गति न्यारी । उघटत चलत ततक्षण ताता थेई ताता थेई ताता थेई थेई थेई छुम छुम नूपुर झनकारी ॥ बजत मृदंग थोंग थुँग थुं थुं तकधुम कट धुधकारी । करत नाल्प दोउ लागि डास छबि लखि पीतम बलिहारी ॥ ३२४ ॥

ध्रुपद राग खम्माच-चौताला ।

कुंजभवन करत रास राधिका समेत श्याम शीतल सुगन्ध मंद पवन सुहाई री । नूपुरध्वनि चरन चलन कुंडलकी हलन ठलन लागि डाटि सुर समारि मधुर तान गाईरी ॥ तकिट धुमकिट धिलांग धिधिकट धुमकिट धिनांग तरल थोंग तरल थोंग मन्दिर सखि वजाई री । तैसी प्यारी लसत संग कनक वरन मृदुल अंग पीतम वलिहार निरखि रूपकी निकाई री ॥ ३२५ ॥

दोहा--मदन जीति प्रभु वश कियो, कीन्हो रासविलास ।
मनमोहन पूरन करी, ब्रजवनितनकी आस ॥ ३२६ ॥
वामवृन्दसँग रास करि, हर्षित नन्दकिशोर ।
त्रिभुवन मोहन हेत मुख, बंशी धरी वहोर ॥ ३२७ ॥

राग सोहनी ।

साँवरो वंशी वजावै मोदमें वृन्दाटवी ।
रूप नटनागर त्रिभंगी देखि छवि लाजै छवी ॥
शोधि सव वाजे मनोहर वाँसुरी अधरनं धरी ।
ब्रजकिशोरी संगमें तनुकांति चपलासी फवी ॥
मालकोश हिंडोल दीपक मेघ श्रीभैरव तथा ।
योगिया पट सिन्धु टोड़ी जंगला नट भैरवी ॥
ललित ऐमन गुणकली कल्यान औ जैजैवँती ।
परज केदारा अलैया भास काफी माधवी ॥
देश सोरठ कालिंगडा खम्माच पीलू सोहनी ।
गौड सारंग गूजरी वरवा धनाश्री पूरवी ॥
रामकलि गौरी झँझौटी कुमुद औ आसावरी ।
औ हमीर विहाग विलावल कान्हरे गाये सवी ॥

रांगिणी उपरागिणी सव श्याम गाई वेणुमें ।
हरिविलास हुलास गावें नित्य अहिपतिसे कवी ॥ ३२८ ॥

दोहा--प्रथम राग भैरव कहो, मालकोश पुनि जान ।
पुनि हिंडोल वखानिये, मेघराग पुनि मान ॥ ३२९ ॥
शिरीराग पंचम कहा, अथ पुनि दीपक नाम ।
अव इनके वर्णन करौं, भार्या सुत सुतवाम ॥ ३३० ॥
शिवसुत भैरव नाम है, मालकोश हरिपूत ।
ब्रह्मपुत्र हिंडोल है, मेघपिता पुरहूत ॥ ३३१ ॥
भूमिपुत्र श्रीराग है, दीपक भानुदुलार ।
पांच पांचही सवनुके, भार्या वन्धु कुमार ॥ ३३२ ॥

भैरवरागकी भार्या ।

दोहा--विभावरी अथ गूजरी, और भैरवी नाम ।
विलावली अथ गुनकली, ये भैरवकी वाम ॥ ३३३ ॥

भैरव रागके पुत्र ।

दोहा--गंधर और विभास है, और देवगन्धार ।
वेलावल देसाख पुनि, भैरव रागदुलार ॥ ३३४ ॥

भैरवरागकी पुत्रवधू ।

दोहा--सुघराई पुनि शोभनी, सूहा सूही नाम ।
वहुली ये पांचो कही, भैरवसुत प्रिय वाम ॥ ३३५ ॥

मालकोश रागकी भार्या ।

दोहा--भटयोरी अथ सरस्वती, पुनि कादम्बिनि नाम ।
रूपमुरारी कोशिकी, मालकोशकी वाम ॥ ३३६ ॥

मालकोशके पुत्र ।

दोहा--परज विहाग विहंग गो,--चरन नाम वैराग ।
इन पांचोंका है पिता, मालकोश मृदुराग ॥ ३३७ ॥

मालकोश रागकी पुत्रवधू ।

दोहा०--नागन्ती अथ अर्धटी, रायकली अस नाम ।
अथ ललिता अथ सोहिनी, मालकोशसुतवाम ॥ ३३८ ॥

हिंडोलरागकी भार्या ।

दोहा--टोडी श्री आसावरी, और सैंधवी जान ।
बंगाली हिंडोलकी, भार्या पंच प्रमान ॥ ३३९ ॥

हिंडोलरागके पुत्र ।

दोहा--षट वसन्त पंचम गनौ, और सुलंक वखार ॥
ये पांचौ हिंडोलसुन, जानहु राग उदार ॥ ३४० ॥

हिंडोलरागकी पुत्रवधू ।

दो०-रेवा भीमपलाशिनी, रूपमंजरी नाम ।
वासन्ती पटमंजरी, हिंडोलात्मजवाम ॥ ३४१ ॥

मेघरागकी भार्या ।

दो०-जैजैवंती धूरिया, अथ सारंगा नाम ।
गौणगिरी खंभावती, मेघरागकी वाम ॥ ३४२ ॥

मेघरागके पुत्र ।

दो०-गौड नाम सन्तापनट, अथ पुनि मोद मलार ।
ये चारौ मधुमाधयुन, पाँचौ मेघदुलार ॥ ३४३ ॥

मेघरागकी पुत्रवधू ।

दो०-देवगिरी मधुमाधवी, ककुभ संक्रमी तीय ।
गौणवती पाँचौनके, मेघतनय सब पीय ॥ ३४४ ॥

श्रीरागकी भार्या ।

दो०-गौरी विजया पूरिया, और विहंगी नारि ।
लीलावती समेत जे, शिरीरागकी प्यारि ॥ ३४५ ॥

श्रीरागके पुत्र ।

दो०–खेमनाट कल्यान अथ, और हेम नाराच ।
कवि पीतम श्रीरागके, येई हैं सुत पांच ॥ ३४६ ॥

श्रीरागकी पुत्रवधू ।

दो०–सौराष्ट्री महाराष्ट्री, रत्नविहंगी नाम ।
लाक्षा साखा हेरिणी, शिरीरागसुतवाम ॥ ३४७ ॥

दीपकरागकी भार्या ।

दो०–मारू और विहागरा, और अड़ाना तीय ।
केदारा अथ कान्हरा, इनको दीपक पीय ॥ ३४८ ।

दीपकरागके पुत्र ।

दो०--गार संक्रमन शंकरा,–भरण नाम गन्धार ।
और शंकरारुण गनौ, दीपकराग दुलार ॥ ३४९ ॥

दीपकरागकी पुत्रवधू ।

दो०--लंकदहनि पुनि पूरबी, सोरठ काफी नाम ।
पारबती पुनि जानिये, दीपकसुतप्रियवाम ॥ ३५० ॥
राग रागिनी जे कहे, भेद छयानवे जान ।
उनंचास कोटी कुटुम, भेद विदित भगवान ॥ ३५१ ॥

छेओ रागनकी पुत्री ।

दो०--नाम झँझौटी रागिनी, है हिंडोलकुमारि ।
अहिमणि श्रीकी दीपकी, जानु हमीर दुलारि ॥ ३५२ ॥
सिंदूरी भैरवसुता, मेघ सहाना जान ।
मालकोश मृदुरागकी, बरवा तनया मान ॥ ३५३ ॥
छहो राग सुत तीययुत, छत्तिस राग प्रमान ।
बधू भारजा कन्यका, छयासठि रागिनि जान ॥ ३५४ ॥

सवैया।

आपुते कोल्हू चलै सुनि भैरव, शैल द्रवै मालकोश अलापते।
आपु हिंडोल चलै हिंडोलते, मेघ परै झुकि मेघप्रतापते॥
श्रीसुनिकै हरियाहि झुरै द्रुम, दीपक दीपनु बारत आपते।
या विधि राग छहो कवि पीतम,चीन्हि परैं सुनिकै निजछापते॥

रागोंके विशेष गुण।

रागिनी महाराष्ट्री ताल लावनी।

चतुर जब भैरवको गावै।
सुनि भाजैं भूत पिशाच आपते कोल्हू चलि धावै॥
मालकोशके सुने छिनक इक पाथर पिघलाई।
अनऋतु फूलैं फूल व्यालविष निर्विष होजाई॥
आप हिंडोला चलै छिनक इक सुनिकै हिंडोलै।
प्रवल मेघ हटि जाय घरी इक गूँगा उठि बोलै॥
मेघराजके सुने मेघगण झुकि झुकि झरि लावैं।
लगी अग्नि बुझि जाय सिंह मृग वशमें होजावैं॥
शिरीरागके सुने तुरत तरु सूखे हरियाहीं।
मुरदा बातैं करै छिनक इक जिन्दाकी नाहीं॥
सुनिकै दीपकराग तुरत गृहदीपक बरिजावै।
प्रवल पवन थकि जाय घरी इक अंधा दृग पावै॥
कवि पीतम छे राग छहू ये जादूसे जानौ।
कोइ विरला जानै गाय विना वूझेइं पहिचानौ॥ ३५६॥

दोहा--राग रागिनीगण सकल, धरि नर नारी वेष।
प्रभु देखत नाचत सकल, बहुविधि नाट्य विशेष॥ ३५७॥

मानलीला ।

राग झँझौटी ।

रैन आयो नहीं घनश्याम पियारा मोहन ।
धाम काके रह्यो व्रजराज दुलारा मोहन ॥
चीर भूषण सकल तनु साजि सम्हारो आली ।
सर्व कीन्हो वृथा नहिं नयन निहारा मोहन ॥
सेज फूलन रची पर्यंक बनाई शोभा ।
आय देख्यो नहीं दृग आज हमारा मोहन ॥
रूप वाको सखी सब देखि लुभानी बाला ।
कोई सौतन कहेसे मोहिं बिसारा मोहन ॥
रात बीती सबै आकाशके तारे गिनगिन ।
हरिविलासी अबौ नहिं आय पधारा मोहन ॥ ३५८ ॥

राग कान्हरो ।

ए जी अब तो जान न दूँगी शकुन भलेजी ॥ बहुत दिनन मेरे घर आये कर राखों उरहार । श्यामसुंदर पिया अतिही रँगिलवा साँची तो कहो तुम काके बसोजी ॥ ३५९ ॥

लालन मेरेही आये आज सुहावनी रात । तन मन फूली अंग ना समावत कुंजन करत बधाये ॥ इक रसन गुण कहँल[illegible] बरणों नखशिख रूप मेरे हीयमे समाये । गिरिवरधर पिय [illegible] वश कर लीन्ही कृष्णदास बलि जाये ॥ ३६० ॥

राग सोरठ ।

चलो तो बताऊँ बिहारीजी म्हारे महलों फूली है केशरक्यारी
अतिसुन्दर बहुत अमोलक रंग रँगीली हैं छे वारी ॥

यों मत जानो झूँठ कहत है म्हाने सौंह तिहारी।
ब्रजनिधि तुमसों लगन लगी है प्रीति पुरातन यारी ॥३६१॥

राग कमोद।

वारियाँ वे लाल वारियाँ ॥
तुसां आमना फेरा पामनां कुंज हमारियाँ।
कौन सखीके तुम रँगराते हमसे अधिक प्यारियाँ ॥
ऊँची अटारियाँते लाल किवारियाँ तक रहियाँ वाट तिहारियाँ।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर या छविपर बलिहारियाँ ॥३६२॥

राग दादरा।

सखी नँदलाल आवन नहिं पावैं। भीतर चरन धरन जिन दीजो चाहे जिते ललचावैं ॥ ऐसेनको विश्वास कहाँ री कपटकी बात बनावैं। नारायण इक मेरे भवनबिन अन्त चाहे जहाँ जावैं३६३

सवैया।

द्वारके द्वैरिया पौरिके पौरिया पैहरुवा घरके घनश्याम हैं।
दासके दास सखीनके सेवक पास परोसिनके धन धाम हैं ॥
श्रीधर कान्ह कह्यो सुन भामिन मानभरी नहिं बोलत बाम हैं।
चूक अचूकहि माफ करौ वृषभानुललीके गलीके गुलाम हैं ३६४

राग झँझोटी।

मोहिं मत रोकै तू ए री ब्रज नागरी। रूपकी निधान है तू सभी गुणखान है तू मेरे सम कौन आज तेरो बड़ो भाग री ॥ कहे तो मैं नृत्य करूं बाँसुरीमें राग भरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ बिहाग री। तू तो सदा उपकारी हितहूकी करनहारी आज नारायण मोसों क्यों राखे लाग री ॥ ३६५ ॥

राग ठुमरी खम्माच ।

प्यारे तेरे जियाकी न जानी जात बात रे । कहूँ तो साँझ आधी रात रहत कहूँ पिछली रात कहूँ प्रात रे ॥ उनहींसों जाओ बतराओ सुख पाओ तुम जिन यह सिखाये दाँव घात रे। अब तोसों भूलके न बोलूं नारायण जहाँलग अपनी बसातरे॥३६६॥

राग पञ्चम ।

जागत जागत रैनि बिहानी । कहि गये साँझ आवन मेरे गृह बसे अनत अनतै रति मानी ॥ उरबिच नखक्षत प्रगट देखि- यत यह शोभा अति बानी । भाल महावर अधरन अंजन पीक कपोल निशानी ॥ निशि मग जोवत बीती मोको आये प्रात यह जानी । चतुर्भुजप्रभु गिरिधर सिधारो तहाँ जो तुम्हरे मन मानी॥

राग देश ।

अब आये प्रात क्यों मेरे धाम ॥ तुम जाओ जहाँ जाके जागे हो याम वश किये तुम्हें सो धन धन्य वाम । पग धरत धरनिपर डगमगात मुख वचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौन काम ॥ अंजन अधरनपर पीक गाल जावक है भाल दोउ नयन लाल विन गुनकी माल कहाँ पहरी श्याम । तुम्हरे जिया भावत है जो बाल मैं परखी रसिकविहारीलाल अब कीजै पिया वा घर आराम ॥ ३६८ ॥

राग रामकली ।

आज हरि रैनि उनींदे आये । अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाये ॥ शिथिलित वसन मरगजी माला कंकन पीठ सुहाये। लटपटी पाग अटपटे भूषण विन गुन हार बनाये ॥ शिथिल गात अरु चाल डगमगी भृकुटी चन्दन लाये । सूरदास प्रभु यही अचंभो तीन तिलक कहाँ पाये ॥ ३६९ ॥

राग भैरव।

साँची कहो रँगीले लाल। जावकमें कहाँ पाग रँगाई रँगरे- जिन कोई मिली है ग्वाल॥ बंदन रंग कपोलन दीये अरुण अधर भये श्याम तमाल। माला कहाँ मिली बिन गुनकी नखशिख देखत भई विहाल॥ जिन तुम्हरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पिया धन वे वाल। सूरश्याम छबि अद्भुत राजत यही देख मोको जंजाल॥ ३७०॥

भोर भये उठि आये मोहन कहा बनावत बांत। बिन गुन माल बिराजत उरपर सब अँग चिह्न लखात॥ बंदन रंग कपो- लन दीये सोहत चन्द्र दुरात। धोंदीके प्रभु वाहीं जाओ तुम जहँ जागे सारी रात॥ ३७१॥

राग प्रभाती।

लाल तुम कहाँसे आये जगे। सगरी रैनिके हमने पिछाने ारी नजर खुमार भरी आँखियाँ॥ नयन घुमावत लट लटकावत होंठन बिन बोलन लगे। अधरन अंजन भाल महावर चरण धरत डगमगे॥ आनँदघन पिया वांहीं जाओ तुम जहाँ तुम्हारे सगे॥

राग वरवा।

तुम जाओजी जाओ जाके रहे हो रात। म्हारे काहेको आये जब भयो प्रभात॥ लटपट पेंच उनींदेसे नयना डगमग डगमग डगमगात। कपटी कुटिल मैं तो तोहिंते कहत हौं मैं ना मानूँगी तोरी एक बात॥ हा हा करत हौं पैयां परत हौं अबकी चूक मेरी करो जी माफ। ज्ञुगरामदास पिया मैं ना मानूँगीतुम वाहीके जाओ जाके लगे हो गात॥ ३७२॥

राग केदार।

सीखे हो छल बल नटनागर॥ मदनमोहनकी माधुरी मूरत

सब गुणमें हो आगर । ऐसी निठुराई काहू ना वदीयन चतुराई गुणसागर ॥ ३७४ ॥

राग ठुमरी ।

राधाजी तिहारे बिन कल ना परत है । मंदिर अटारी चित्र-साड़ी औ-फुलवारी मोहिं कछु प्रिय ना लगत है ॥ घनो सम-झायो इत उत वहलायो पुनि तोहू मन धीरता न धरत है । एतो हठ आगे कब कीन्हो नारायण जेतो हठ आज तू करत है ॥३७५॥

ठुमरी खम्माच ।

प्यारे मेरे गरवामें जिन डारो बैयाँ । छुओ न लंगर मेरो पकरो ना कर तुम छोड़ो अब कपट बलैयाँ ॥ जाओ पिया वाही मनभाईके भवनमें जाके निशि परत हो पैयाँ । झूठी झूठी सोंहैं क्यों खाओ नारायण जानूँ मैं तिहारी चतुरैयाँ ॥ ३७६ ॥

राग मलार ।

राधाजूकी सहज अटपटी बोलन । अहो पिया कौन बसत त्रिया उर पाई कहाँ बिन मोलन ॥ मोहूँसों गुणरूप आगरी नीले अंगनिचोलन । बड़े बड़े नयन अरुण कजरारे सुन्दर अधर कपोलन ॥ उमँग उमँग पिया सन्मुख आवे मनभावत करत कलोलन । भगवत रसिक कहो क्यों ना साँची नाहिं करो अनबोलन ॥ ३७७ ॥

राग जोगिया ।

साँची कहो किधौं हाँसी करो जी । आज कहा कारण जो मोसों बेर बेर कहो यहाँसे टरो जी ॥ कौन सखी कितमें घर वाको तुम जाको मोहिं दोष धरो जी । नारायण यह अचरज मोको झूठ कहत नाहिं नेक डरो जी ॥ ३७८ ॥

राग पीलू।

राधा प्यारी बात सुनौ इक मेरी। मैं आयो चाहत हों तुमपै बीच लियो उन घेरी॥ जतन अनेक बिनती कर हारयों कैसे जात न फेरी। परवश परयो दास परमानँद काहि सुनावों टेरी॥३७९॥

राग जंगला।

राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो। जबते तू निकसी मन्दिरते मोहिं न कछू सुहायो॥ भीतर बाहर द्वार पौरि लौं राधा नाम न पायो। किशोरी गोपालकी यह इक बिनती हा हा करत हरायो॥३८०॥

राग भूपाली।

बिनती कुँवरि किशोरी मेरी मान मान मान। बिन चूक मोते मानकी मत ठान ठान ठान॥ काहेको बैठी श्यामा भौंहें तान तान तान। तूही तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान॥ मेरे हियाकी पीरको तू जान जान जान। जन जान रसिक लीजै दीजै दान दान दान॥ ३८१॥

राग पूरबी।

हमसे रूठ रहत क्यों प्यारी। कित मुख फेर फेर दृग बैठो कौन चूक वृषभानुदुलारी॥ गयो सखनसँग मैं यमुनातट जहँ जल भरत रहीं व्रजनारी। मोते कहन लगीं गागर भर लालन देहु उठाय हमारी॥ मैं न सुनी जब कही सबन मिलि लेंगी समझ तुम्हें बनवारी। देहैं मान कराय राधिका सो सब दई आय दरशारी॥ जो वे कहत करत हौ सोई तुम समझत नहिं भोरी भारी। एककी सात लगाय सुनावत झूँठी ग्वालन रसिकबिहारी॥ ३८२॥

राग विहाग ।

एतो श्रम नाहिंन तबहुँ भयो । सुन राधिका जेतो श्रम मोकों तैं यह मान दयो ॥ धरणीधर विधि वेद उधारे मधुसों शत्रु हयो । द्विज नृप किये दुसह दुख मेटे वलिको राज्य लियो ॥ तोऱ्यो धनुष स्वयंवर कीन्हो रावण अजित जयो । अघ वक वच्छ अरिष्ट केशि मथि दावानल अँचयो ॥ त्रियवपु धऱ्यो असुर, सुर मोहे को जग जो न दयो । गुरुसुत मृतक ज्यायवे काज़े सागर शोध लियो ॥ जानूं नहीं कहा या रिसमें सहजहि होत नयो । सूर सो वल अव तोहिं मनावत मोहिं सब विसर गयो॥

राग भूपाली ।

हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिवो करो । वृषभानुकी दुलारी चित चोरिवो करो ॥ कछु दोष नाहिं मेरो री क्यों मान कीजिये । रजनी विहात सजनी री रिस छांड़ि दीजिये ॥ मो तन निहार गोरी मैं तो हूं शरण तोरी । आनन है चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी ॥ कीजै कृपा किशोरी दीजै अधरसुधा री । लीजै लगाय अपने री हिरदे रसिकविहारी ॥ ३८४ ॥

राग धनाश्री ।

सांची कहो कै प्यारी हांसी । काहेको इतनी रिस पावत कत तुम होत उदासी ॥ पुनि पुनि कहत कहा तवहींते कहा ठगीसी ठाढ़ी । इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढ़ी॥ समझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे । सूरश्याम अति भये आतुरे भुजा गहन तव लागे ॥ ३८५ ॥

राग देश ।

तुम सुनो राधिका विनय कान । नहिं सोहत मान तजिये

सुजान ॥ अब करो कृपा जन अपनो जान । ऐसी काहेको रही हो मौन ठान ॥ मेरे तूही है जीवन अधार । अब वेगि मिलो नहिं जात प्रान ॥ तुम देहु वात मोको वताय । प्यारी जाते अब गइ रिसाय ॥ अपराध कौन कहो गुणनिधान । सुनि रसिक-विहारीजीकी वात ॥ मेरे आनँद उरमें नहिं समात । हँसि मिलिये कंठमें डारि पान ॥ ३८६ ॥

लावनी।

उठो अव मान तजो गोरी । रही है रैन वहुत थोरी ॥
सदासों तुम मनकी भोरी । कहूँ मैं शपथ खाय तोरी ॥
दोहा--औरनके वहँकावते, करि बैठति हो रोष ।
झूँठ साँच परखत नहीं, वृथा देत हौ दोष ॥
यही मोहिं अचरज है भारी । तनक हँसि चितवो सुकुमारी ॥
शशिमुखपै हौं वलिहारी । उठो अव मान तजो प्यारी ॥
दो०--अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान ।
क्षमा करो सव चूक अव, जो कछु भई अजान ॥
इतनी विनती मानो मोरी । उठो अव मान तजो गोरी॥
तिहारे गुण नितप्रति गाऊँ । विना आज्ञा न कहीं जाऊँ ॥
दो०--ताहूपै दृग अरुण कर, भ्रुकुटी लेत चढाय ।
जोरावरसों निवलकी, काहू विधि न वसाय ॥
समुझि लेहु मन अपने थोरी । उठो अव मान तजो गोरी॥
जिन्हें तुम समुझौ हितकारी । सोइ अति कपटी व्रजनारी ॥
दो०--हममें फूट करायके, आप अलग मुसक्यात ।
नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी वात ॥
मानि लेहु अव विनती मोरी । उठो अव मान तजो गोरी३८७

सवैया ।

एक समय ब्रज कुंजनमें री नाचत ग्वालि सभी दे तारी ।
नाचत चन्द्रभगा ललितादिक नैनकी सैनसों ताल विचारी ॥
वा रिस धार लियो जियमें उन रूठ परी वृषभानुदुलारी ।
मैं ना कह्यो कछु जान उन्हें तुम लावो मनायके प्यारी हमारी३८८

राग विहाग ।

तनक हँस हेरो मेरी ओर । हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भई हो कठोर ॥ निशिदिन तुम्हरोइ नाम रटत हौं चातक ज्यों वन घोर । कृष्ण पिया दर्शनके लोभी जैसे चंद्रचकोर॥३८९॥

राग देश सोरठ ।

ललिता राधा नेक मनाय दे । मैं वलि जाउँ नाम तेरे पै दुखमें सुख सरसाय दे ॥ तू सजनी अति चतुरशिरोमणि मेरे मनकी प्रीति जताय दे । व्यास स्वामिनी रति गुण गति ले सरवस प्रियाको रिझाय दे ॥ ३९० ॥

राग केदारा ।

जाके दरशको जग तरसत है ताहि दरश तू दे मेरी प्यारी ।
जाकी मुरलीकी धुनि सुर मोहे ता जन नेक चितै मेरी प्यारी ॥
शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे पग परसै री प्यारी ।
सूरदास वश तीन लोक जाके सो तेरे वश हैं मेरी प्यारी ॥ ३९१ ॥

राग वरवा ।

चलो री क्यों ना माननी कुंजकुटीर । तुम बिन कुँवर कोटि वनितायुत मथत मदनकी पीर ॥ गदगद स्वर विरहाकुल पुलकत स्रवत विलोचन नीर । क्वासि क्वासि वृषभानुनन्दिनी विलपत विपिन अधीर ॥ वंशी विशद व्यालमाला उर पंचानन पिक

कीर। मलयज गरल हुताशन मारुत शाखामृगरिपु चीर॥ हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पिय तीर। सुन भयभीत वज्रको पंजर सुरतसूर रणवीर॥ ३९२॥

मान तज चल सजनी व्रजचन्द बुलावें री। हा हा हठको काम नहीं है क्यों जीया तरसावै री॥ जो हमरे सँग चलो न मामिनि वह तो आपही आवे री। घनछायासम जोवन जानो पलछिनमें यह जावे री॥ यमुनानिकट कदमकी छैयां गोपी संग नचावे री। मुरलीधर तेरो ध्यान धरत है तेरो ही गुण गावे री॥ ३९३॥

राग विहाग।

अलबेली लख लटक मुकुटकी। मान छाँड़ वृषभानुनन्दनी न किये क्या नागर नटकी॥ है कछु सुरत तोहि वा दिनकी जब बनमालसों बेसर अटकी। कर गह कमल कमलमुख मोहन मुरझाई तब नेक न हटकी॥ सो मुख लियो छिपाय सुन्दरी नयन ओटकर घूँघट मटकी। नख भौं लिखै सिखै क्या सजनी कौन चहत कछु टोना टटकी॥ कर गह बाँह मनावत मोहन मानत नाहिं मानमद अटकी। युगल युगलको वदन विलोकत भुजभर भेंट भेट तप घटकी॥ ३९४॥

राग केदार।

छाँड़ दे मानिनी श्यामसँग रूठिबो। रहत तू अलीन जलमीन लौं सुन्दरी करो किन कृपा नवरंगपर टूटिबो॥ वेगि चल वेगि चल जात यामिनि घटत कुंजमें केलि कर अमीरस घूंटिबो। बालकृष्णदास नवनाथ नन्दनकुँवर सेज चढ़ ललनसँग मदनगढ़ लूटिबो॥ ३९५॥

कवित्त ।

हा हा री हठीली हठ छाँडि दे छबीली अली, भूलेहू न कान्ह आज पातहू न खात हे। तेरी चितवनको चाहत हे गोपाल लाल, तजे सब ख्याल प्राणा तोहीमें बसात हे ॥ मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तू अटारी, ठाढ़े बनवारी अब देर क्यों लगात हे। करके शृंगार तू उतारति हे वार वार तू तो इतरात उत रात बीती जात हे ॥ ३९६ ॥

राग देश ।

तू काहेको लाडिली मान करत। वाकी प्रकृति जैसी हे तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जियामें धरत ॥ ताहीसों कीजिये कोप कुँवरि विन कारण बेठत लर लर तुमसे तो पिया प्यारो नितही डरत। व्यासस्वामिनी चतुर नारि में तोहि मनावत गई जो हारि कब देखूँगी पियासे तोको अंक भरत ॥ ३९७ ॥

राग जिलामें ।

तोसी नहीं कोऊ देखी री हठीली। ज्यों ज्यों में अब तोहिं मनावत त्यों त्यों तू होवे अति गरबीली ॥ ऐसे समय वल रोष न कीजे भौंहें कमान तनक कर ढीली। नारायण उठ मिल प्रीतमसों तज दे मानकी वान छबीली ॥ ३९८ ॥

रैनि गई री प्यारी छाँड़ो हठेरी। सुन वृषभानकुँवरि हरि तोवश निशिदिन तेरोहि नाम रटे री ॥ मदनगुपाल निरख नयनन भर बेगि चलो अब काहे न टेरी। दास गोविन्द प्रभुकी छबि निरखे प्रीति करेसे तेरो कहा घटेरी ॥ ३९९ ॥

तोसी त्रिया नहिं भवन भट्ट री। रूपराशि रसराशि रसिकवर तोहि देखि नँदलाल लट्टू री ॥ लेकर गाँठ दई जो दृष्टिभर तेरी

सुरँग चुँदरी वाको पीत पटूरी । नन्ददास प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नागर नटूरी ॥ ४०० ॥

रेखता ।

इतनो न मान कीजै वृषभानुकी दुलारी । तेरे मनायवेमें मोहिं श्रम भयो है भारी ॥ इतनो० ॥ प्रीतमको आज तो विन पल छिन न चेन आवे । नहिं जी लगै भवनमें नहिं वनकी छवि सुहावै ॥ हँस बोलिवो कहाँको नहिं खानपान भावै । हाथनमें चित्र तेरो पुनि पुनि हिये लगावै ॥ अति विकल है रह्यो है वह साँवरो विहारी । इतनो० ॥ प्यारेके आगे अपने गुणकी मैं कर बड़ाई । तेरे मनायवेको बीरा उठाके आई ॥ वन बुद्धि मोमें जितनी तितनी मैं सब लगाई । पै नेकहू न मेरी चतुराई काम आई ॥ सब विधिसे राजनीति मैं कहके तोसों हारी । इतनो० ॥ तेरी तो नित बड़ाई सब सखीजन बखाने । प्यारी हियेकी कोमल सपनेहूँ रिस न जाने ॥ यह आज का भयो है बैठी हो भ्रुकुटी ताने । उन सखीजनको कहवो अब कौन साँच माने ॥ सब झूँठ ही बड़ाई भामिन करैं तिहारी । इतनो० ॥ लालनके साथ मिलके वन शोभा निरख प्यारी । कहुँ सघन ललित छाया कहुँ फूली फुलवारी ॥ जलसों भरे सरोवर झुकि रहिं द्रुमनकि डारी । बोलत अनेक पक्षी वर्णत हैं छवि तिहारी ॥ वल बेग ही सिधारो यह लालसा हमारी । इतनो० ॥ ए री सुघर सयानी मो बिनती मान लीजै । तजके ये मान मुद्रा प्यारेसों हेत कीजै ॥ नितही अधरसुधारस हँसहँसके दोउ पीजै । फिरकर न उनसों रूठो वरदान यही दीजै ॥ नारायण याही कारण निजगोद मैं पसारी । इतनो न मान कीजै वृषभानुकी दुलारी ॥ ४०१ ॥

राग कान्हरो ।

रह री मानिनी मान न कीजै । यह जोवन अंजलिको ज
है जो गोपाल मांगे तौ दीजै ॥ छिन छिन घटत वढ़त न
रजनी ज्यों ज्यों कला चन्द्रकी छीजै । पूरव पुण्य सुकृत फ
कीनो काहे न रूप नयन भर पीजै ॥ सौंह करत तेरे पाँयनक
ऐसे जीवन दशौ दिन जीजे । सूर सुजीवन सफल जगतक
वैरी वाँध विवश कर लीजे ॥ ४०२ ॥

राग कान्हरा ।

देख री आज नवनागरी वेपधर ललीके छलनहित लल
कैसे सजे । पहर भूपण वसन दृगन कजरा दियो निरखि शृंगा
सुरवधू मनमें लजे ॥ मन्द मुसक्यान मग चलत गति ठुमक
मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर वजे । रूप अभिराम नाराय
लख श्यामको कोनसी मानिनी मान जो ना तजे ॥ ४०३ ॥

तू है सखी वड़ भागभरी नँदलाल तेरे घर आवत हैं ।
निजकर गूँथ सुमनके गजरे हर्पि तोहिं पहिरावत हैं ॥ तू
अपनो शृंगार करत जव दर्पण तोहिं दिखावत हैं । आनँदकन्द
चन्दमुख तेरो निरख निरख सुख पावत हैं ॥ जाके गुण सव
जगत वखानत सो तेरे गुण गावत हैं । नारायण विन दाम
आज कल तेरेहि हाथ विकावत हैं ॥ ४०४ ॥

राग विहाग ।

कह्यो क्यों न मानत मेरो । मदनमोहन नवकुंज द्वार ठाढे
पंथ निहारत तेरो ॥ झगरो करत सव रैनि गँवाई छिन छिन
पल पल झेरो । साज शृंगार हार अपने लै प्राणदान दे तेरो ॥
अजहूं समझ शोच री आली और नहीं कुछ केरो । गोविंद
प्रभुके हृदयकी कौन मेटै जो विन विरह अँघेरो ॥ ४०५ ॥

राग विलावल ।

चलो री ऐसो मान न करिये मानिनी प्यारा आया तोरे घेरे । तूही मान तूही दान तूही रोम रोम रम रही ऐसे नयन भये हेरे ॥ झूँठी कहों मोहिं शपथ रामकी साँचकर वचन आली मान मेरे । छोड़ निठुराई अब मान मेरो कह्यो गुण अवगुण भय तेरे ॥ ४०६ ॥

राग कमोद ।

जयति नवनागरी सकल गुणसागरी कृष्णगुणआगरी दिनन भोरी । जयति हरिभामिनी कृष्णघनदामिनी मत्तगजगामिनी नवकिशोरी ॥ जयति सौभागमणि कृष्णअनुरागमणि सकलत्रियमुकुटमणि सुयश लीजै । दीजिये दान यह व्यासकी स्वामिनी कृष्णसों बहुरि नहिं मान कीजै ॥ ४०७ ॥

राग कान्हरा दोहासहित ।

मनावत हार परी मेरी माई ॥ राधे तू बड़भागिनी,कौन तपस्या कीन्ह । तीन लोकके नाथ हरि, सो तेरे आधीन ॥ शिव विरंचि नारद निगम, जाकी लहत न डीठ । ता हरिसों प्यारी राधिके, दे दे बैठत पीठ ॥ अहो लड़ैते दृग किये, परे लाल बेहाल । कहुँ मुरली कहुँ पीतपट, कहूँ मुकुट वनमाल ॥ विछुरो होय सो फिर मिलै, रूठे लेहि मनाय । मिल्यो रहै औ ना मिलै, तासों कहा बसाय ॥ तनक सुहागो डारके, जड़ कंचन पिघलाय । सदा सुहागिनि राधिका, क्यों न कृष्ण ललचाय॥ मान कियो तैं भल कियो, कैसो तेरो मान । जैसो मोती ओसको, तैसो तेरो मान ॥ तू चटते भट होत नहिं, राधे उन मोहिं लेन पठाई । राजकुमारी होय सो जानै कै गुरु सीख सिखाई ॥ नँदनन्दनको जान महातम

अपनी राख वड़ाई । ठोड़ी हाथ दे चली दूतिका तिरछी भौंह चढ़ाई ॥ परमानन्द प्रभु करूँगी दुल्हैया तो बावाकी जाई ॥४०८॥

राग विहाग ।

पहले तो देखौ आय माननीकी शोभा लाल पीछे तो मनाय लीजे प्यारे गोविन्द । करपर धर कपोल रही है नयनन मूँद कमल विछाय मानों सोयो है चन्द ॥ रिसभरी भौंहें मानो भौंरा वैठे अरवरात इन्दुतरे अरविन्द भर्यो मकरंद । नन्ददास प्रभु प्यारो ऐसी न रुठैये वल जाको मुख देखेते कटत दुखद्वन्द॥४०९॥

राग वसन्त ।

गूँजेंगे भ्रमरा विराग भरे वन वोलेंगे चातक वा पिक गायके । फूलेंगे केसू कुसुंभा जहाँलों मारेगो काम कमान चढ़ायके ॥ वहेगी सीरी सुगन्ध मारुत जवहिं लगैगी साख सो साख मिल आयके ॥ मेरे कहे न चले वावाकी सौंह ऋतु वसंत लेय जायँगे मनायके ॥ ४१० ॥

राग देश ।

कर नेह नैन लगायके फिर मान करना किन वदा । तज रोष दोष लगाय वो सज मोदमें मंगल मुदा ॥ अपराध विन अपराध धरवो सीख तोहे किन दई । धर ध्यान गह मुख मौन वैठी मनौ कोइ जोगिन नई ॥ रसरीति प्रीति प्रतीति विसरी कठिन कुच संगति किये । यह जान अब परसो नहीं लग जाय कहुँ मेरे हिये ॥ सुन वैन आतुर नैन फेरे रसिक भगवत यूँ कही । हँस कंचुकी वँद खोल लिपटी मनो घन-दामिनि गही ॥ ४११ ॥

राग भूपाली ।

मनमोहनी मनमोहना मन मोहिवो करो । मुखचन्द्र चख

चकोरि सदा जोहिवो करो ॥ घनश्याम रसिक नागर तू है जो दामिनी । तज मान अधरपान करो जात यामिनी ॥ कछु दोष ना पियाको तू भूल क्यों गई । प्रतिबिंब देख अपनो तैं पीठ क्यों दई ॥ समझाय कही भगवत जब लाग कामसों । सुखदान उठी आतुर भेंटी सुजानसों ॥ ४१२ ॥

राग देश ।

कुंजन पधारो राधे रंगभरी रैन । रंगभरी दुलहिन रंग भरे पिया श्यामसुन्दर सुख दैन ॥ रंगभरी सैनी बिछी सेजपर रंग भरयो उलहत मैन । रसिकविहारी पिय प्यारीजी दोऊ मिल करो सेज सुखशैन ॥ ४१३ ॥

राग पीलू ।

तू तो मोहिं प्राणनहूते प्यारी । भूले मान न कीजिये सुन्दरि हौं तो शरण तिहारी ॥ नेक चितै हँसि बोलिये सुन्दरि खोलिये घूँघट सारी । कृष्णदास हित प्रीति रीति वश भरलिये अंकन वारी ॥ ४१४ ॥

राग बिहाग ।

अब पौढ़नको समय भयो । इत दुर गई द्रुमनकी छैयाँ उत दुर चन्द गयो ॥ पौढ़रहे दोउ सुखद सेजपर बाढ़त रंग नयो । रसिकविहारी विहारन दोऊ पौढे यह सुख दृगन लयो ॥ ४१५ ॥

द्वितीय मानलीला ।

राग जैजैवन्ती ।

बनत बनाऊँ कछु बन नहिं आवे साँवरे सजन विन तलफत प्राण हमारे । शोच किये क्या होत री सजनी वे हरि

कठिन हृदय समझाऊँ कैसे कारे ॥ तपोंगी ताप चहुँ ओर अगन दे तनुको जराऊँ तो मैं पाऊँ पिया प्राणप्यारे । सूर सकल विधि कठिन भई है बीतत रैनि गिनत गई दर्दके तारे ॥ ४१६ ॥

राग कान्हरा ।

रैन मोहिं जागत विहानी मोहनसों मैं मान कियो ताते भई तनु अधिक तपन । सेज सुगन्ध मलय विष लागत पावकहूँते दाह सखीरी त्रिविध पवन उड़पत ॥ ऐसो अति व्याप्यो हो मन्मथ मेरोई जीया जाने मोहिं श्याम श्याम कह रैनि जपत । वेग मिलावो सूरके प्रभुको भूल अभिमान करूं कबहूँ नहिं मदन वाणते कंपत ॥ ४१७ ॥

राग काफी ।

सखी मोहिं मोहनलाल मिलावै । ज्यों चकोर चंदाका इकटक्क भृंगी ध्यान लगावै ॥ विन देखे मोहिं कल न परै री यह कहि स्रवन सुनावै । विन कारण मैं मान कियो री अपने हि मन दुख पावै॥ हा हा करि करि पायँन परि परि हरि हरि टेर लगावै ॥ सूरश्याम विन कोटि करो जो और नहीं जिय भावै ॥ ४१८ ॥

राग विभास ।

कित श्वास उसाँस भई सजनी । उत दौर गई इत दौरके आई । टीकी जो मिटी अलकैं जो छुटीं, प्यारी मैं तेरे लालके पायँन पर आई ॥ अरुणाई कहाँ गई होंठनकी प्यारी मैं व्रजनाथने वहुत चकाई । कहा पलट्यो पट प्रीतमको, प्यारी मैं तेरी प्रतीतिको लाई ॥ ४१९ ॥

राग रामकली ।

अव मेरे भागकी शुभ घरी । श्यामसुंदर मनमोहन भुजा ले

उर धरी ॥ जासु चरण-सरोज-गंगा शंभु ले शिर धरी । जासु चरणसरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥ जाके वदनसरोज निरखत आश सगरी सरी । सूर प्रभुको भेंटते मेरी सकल आपदा टरी ॥ ४२० ॥

राग विहाग ।

नींद तोहिं बेचूँगी आली जो कोई गाहक होय। आये मोहन फिर गये अँगना मैं बैरिन रही सोय ॥ कहा करूं कुछ वश ना मेरो आयो धन दियो खोय । लछीराम प्रभु अबके मिले तो राखौंगी नयनन समोय ॥ ४२१ ॥

आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारीको ख्याल चाँदनीमें पौढ़ी जाते चन्दाहू गयो लजाय । मंडप पुहुपहार बहु विधि नीलो पट नासिकाको मोती देख उडुगण सकुचाय ॥ आये हैं निकट लाल देख रीझे व्रजलाल वार वार मुखकी लेत बलाय । नन्ददास प्रभु प्यारे अधरन बीरी धरी झझक उठी अकुलाय॥४२२॥

मेरे कर मेंहदी लगी है लट उरझी सुरझाय जा । शिरकी सारी सरक गई है अपने हाथ उढ़ाय जा ॥ भालकी बेंदी मोरी गिर जो परी है हा हा करत लगाय जा । नीलांबर प्रभु गुण ना भूलूँ बीरी नेक खवाय जा ॥ ४२३ ॥

परस्पर मानलीला ।
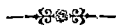
राग देश ।

युगल छवि आज अनूप बनी । गोरे श्याम साँवरी राधा नखशिख द्युति कमनी ॥ खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन

रेख अनी । ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुस-
क्यान धनी ॥ ४२४ ॥

राग कल्याण ।

श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊँ । जो तुम तान कहो मुर-
लीमें सोइ सोइ गाय सुनाऊँ ॥ हमरे भूषण तुम सब पहिरो हौं
तुम्हरे सब पाऊँ । हमरी बिंदरी तुमही लगावो हौं शिर मुकुट
धराऊँ ॥ तुम दधि बेंचन जाहु वृंदावन हौं मग रोकन आऊँ । तुम्हरे
शिर माखनकी मटुकिया हौं मिल ग्वाल लुटाऊँ ॥ माननी
होकर मान करौ तुम हौं गहि चरण मनाऊँ । सूरश्याम प्रभु तुम
जो राधिका हौं नँदलाल कहाऊँ ॥ ४२५ ॥

राग पीलू ।

श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई । पूँछत
फिरत अपनी सखियनते प्यारी कहाँ गई ॥ वृन्दावन वीथिन
यमुनातट श्रीराधे श्रीराधे । सखी संगकी यह छवि निरखत रहीं
सकल मौन साधे ॥ गरुवी प्रीति कहा न करावे क्यों न होय गति
ऐसी । कहै भगवान हित रामरायप्रभु लगन लगे जो जैसी ॥४२६॥

राग विहाग ।

तनक हरि चितवो मेरी ओर । मेरे तो मोहन तुमहीं इक हो
तुमको लाख करोर ॥ कबकी मैं ठाढ़ी अरज करत हों सुनिये
नन्दकिशोर । कृष्ण प्रियाके प्राण जीवन धन करुणानिधि
चित चोर ॥ ४२७ ॥

राग विलावल ।

नन्दलाल निठुर होय बैठ रहे । प्यारी हा हा करत न मानत
पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुखतन

धरणी नखन करोवत । आप हँसत पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत ॥ कहा करत यह बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावो । सूरश्याम मुखचन्द्र कोटि छवि हँसकर मोहिं दिखावो ॥

राग परज ।

मृदु मुसकान कीजै थोरी थोरी । हमसों कहा रूठनो हम तुम नेहकुंजके चन्द चकोरी ॥ तजिये मान तनैनी भ्रुकुटी ढीली करिये ललितकिशोरी । निठुराई सब छाँड़ छबीली वचनसुधा दीजै श्रुति ढोरी ॥ ४२९ ॥

कान्हरे बाँसुरियावारे रे तू ऐसे जिन बतराय । यों ना बोलिये ए रे घरवसे मैं लाजन दब गई हाय ॥ मैं हारी तेरे खेल-नहींते तू सहज चल्यो क्यों ना जाय । रसिकविहारीजीसो नाम पायके क्यों एतो इतराय ॥ ४३० ॥

इत मत निकसे तू चौथके चंदा देखेते कलंक मोहिं लग-जायगो रे । दूरते गुलाल मरो छूओ जिन छैला मोहिं तेरो श्याम रंग मोहिं लग जायगो रे ॥ हा हा खाऊँ पैयाँ परूँ नियरे न आओ छैला करन चवाव गाम लग जायगो रे । नागरिया लोभी फाग स्वार्थहीको मीत मो मन निगोरो भूल लग जायगो रे ॥ ४३१ ॥

राग देश ।

हमसे न बोलो साँवलिया तू मतवारो रे । हठ मोहन हटको नहिं मानैं, नटखट जात अहीर कहावै, जाय कहूँ यशुदासों हटको वारो रे ॥ कुबिजा सौत भली मन भावै हमें बघंबर योग पठावै छोड़ दियो हम नाहक जिया जारो रे ॥ ४३२ ॥

राग प्रभाती ।

मैं तो थाँपै वारी वारी हो विहारीजी मृदु मुसक्यानपर जावौं

वलिहारी जी। लोक लाज तज थारे लड़ लागी थें काई उर धारी गिरिधारी गिरिधारी जी ॥ और तराँ जिन जानो हो विहारीजी लाखाँ भाँति करो म्हाँसे प्यारी जी । व्रजानिधि अरजी सुनोजी हमारी अनमोली अनतोली करो म्हाँसे यारी जी ॥ ४३३ ॥

राग कालिंगडा ।

अपनी डगर चल्यो जा रे व्रजवासी । तू मेरे ढिग जिन ठाढ़ो रह देखेंगे लोग करेंगे हाँसी ॥ तुम व्रजवासी अपनी गर-जके नयना मिलाय गले डार गयो फाँसी । पुरुषोत्तम प्रभु नीके मिले हो तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी ॥ ४३४ ॥

दानलीला ।

राग भैरवी ।

दे जा गूजरि ये दधि माखन । गूजरी ये गुजरे टरी ये मेरे इतेक मारग आउ री ॥ मैं हूँ नन्दमहरको ढोटा भरला मटुकी मैं मारूं सोंटा तेरे विच विच धूम मचाऊँ । मैं वृपभानु गोपकी वेटी मत जानो कोई और सहेली कँसराजाकी फौजा लाऊँ तेरे नंदसमेत वँधाऊँ ॥ ४३५ ॥

राग विलावल ।

हमरे गोरस दान न होय मोहन लाड़ले हो । हमारे मग मग फिरत ग्वाल ग्वालन दान दे हो ॥ कवके तुम दानी भये लाल हम कव दीनो दान । गाय चरावौ वावा नंदकी तुम सुनौ अनोखे कान्ह ॥ हम दानी तिहुँ लोकके तुम चारों युगकी ग्वार । दान न छाँड़ों आपनो तेरो राखों गहनो हार ॥ रत्नजटितकी

ईंडुरी मेरी हीरा जड़ी हो हार । सो तुम राखन कहत हो कामरके ओढ़नहार ॥ ब्रह्मा तानो पूरियो हो बुनी हो बैठ महेश । सो हम ओढ़ी कामरी जाको पार न पायो शेश ॥ भौंहैं नचावत चातुरी ढोटा बोलत बड़े बड़े बोल । मेरो हार किरोरको तेरी सब गायनको मोल ॥ यह गायें तिहूँ लोकतारनी चारो युग पर मान । दूध दहीके कारने तेरो हार लेहों रस दान ॥ काहेको वाद वदत हो ढोटा काहे करत अति सोर । जैसी बाजै तेरी बाँसुरी मेरे नूपुरकी घनघोर ॥ या बंशीकी फूँकपै मैंने गिरिवर लियो है उठाय । ढीठ बहुत यह ग्वालिनी इनकी मटुकी लेहों छिड़ाय॥हम हैं सुता वृषभानुकी तुम नन्दमहरके कान्ह । प्रेमप्रीति रुचि मानके ढोटा अब जिन करो गुमान ॥ वृन्दावन क्रीडा करी हो कीनो रासविलास । सुर नर मुनि जय जय करत गुण गावैं माधुरीदास ॥ ४३६ ॥

श्रीवृन्दा विपिन सुहावनो जहँ बंशीवटकी छाँह हो । श्रीराधे दधि लै निकसी कन्हैया रोकत राह हो ॥ वृषमानु लड़ैती दान दे नंदराय लला घर जान दे । लाला सबही सयाने साथके अरु तुमहू सयाने लाल हो ॥ लाला लिखा दिखावो सांवरे कब दान लियो पंशुपाल हो ॥ नंदरायलला घर जान दे ॥ प्यारी लिया है सो लेहिंगे नई रीति न करते आज हो ॥ वृषभानु० ॥ लाला क्या लादे हम जात हो श्याम काह भरे हम बैल हो । लाला तुम टेढ़े ठाढ़े भये मोरी रोक महीकी गैल हो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी अँग अँग वसन सुहावने मानो भरे हैं रतन भूपाल हो ॥ राधे नीके रूप लड़ैती ये कोइ यौवन लादे जाय हो । वृषभानु० ॥ लाला याहीते कारे भये कोइ ले लै ऐसे दान हो । लाला कब छूटोगे भारसों सबरे तीरथ गंग नहाय हो ॥ नंदराय० ॥

प्यारी गोरज गंगा न्हात हों और जपत गौअनके नाम हो ।
प्यारी पावन पवित्र सदा रहों ऐसे दानते ना सकुचात हों ॥
वृषभानु० ॥ लाला देश हमारे बापको जाकी बाँह बसे नंदराय
हो । लाला घास जो राख्यो साँवरे याते सुखसों चरावो गाय हो॥
नंदराय० ॥ प्यारी देश तुम्हारे बापको सो मैंही दियो है बसाय
हो । प्यारी सब संकल्पो वा दिना जब पियरे कीने हाथ हो ।
वृषभानु० ॥ लाला दान ले दान ले दान ले मन फूल्यो अति
सुख पाय हो । लाला लै रे मोहन दान लै कछु गाय बजाय
रिझाय हो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी नट ज्यों नाचै साँवरो कोइ पढ़त
कबित्त जैसे भाट हो । श्रीवृन्दावनलीला रची यश गावत अलि
भगवान हो ॥ ४३७ ॥

राग भैरवी ।

मोहन में गूजर बरसानेकी मोते नाहक मांडी रार ॥ पाँच
टकाकी कामर ओढ़े तापर करत गुमान । गाय चरावत नन्दकी
मोपै माँगत दधिको दान ॥ रत्नजटित मेरी ईंडुरी हीरा लगे
करोर । एक हीरा गिरि जायगो तेरी सब गायनको मोल ॥ कृष्ण-
जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे मोरे नाहक माँडी रार । नेक चितै
बलि जाऊँ सांवरे मेरो विमल विमल दधि खाय ॥ ४३८ ॥

राग विलावल ।

याही मेरा प्यारा रे दान माँगे अरे हो हाथ लकुटिया काँधे
कमरिया अरे हो गौअन रखवारा ॥ मोर मुकुट माथे तिलक
विराजे अरे हो नयनों रतनारा । कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु
प्यारे जीवन प्राण हमारा ॥ ४३९ ॥

ग्वालिन दान हमारो दे । हम दानी या मालके ॥ देहो लेहो

तुम जात कहाँहो लेहो चुकाय नित हालको रे ॥ सघन कुंजवन वीथिन गहवर साँकरी खोर कुँआँ तालको रे ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत बार बार ब्रजवाल को रे ॥ ४४० ॥

राग दादरा।

हमरो दान देहु ब्रजनारी। मदमाती गजगामिनि डोलै तू दधि बेंचन हारी ॥ रूप तोहिं विधनाने दीयो ज्यों चन्दा उजियारी। मटुकी शीश कटीले नयना मोतिन माँग सँवारी ॥ हार हमेला गलेमें राजै अलकैं घूँघरवारी। या ब्रजमें जेती सुन्दर हैं सब हम देखी भारी॥नारायण तेरी या छबिपर नँदनंदन बलिहारी ॥ ४४१ ॥

राग मलार।

जोबनकी मदमाती डोलै री गुजरिया। अंग अंग जोवनकी उठत तरंग नई नयना कजरारे वाँके तिरछी नजरिया ॥ हाथनमें चूरी नकवेसर करनफूल मुँदरी ललित छवि देत अँगुरिया। अबलों तोसी नहीं देखी नारायण दधिकी बेंचनहारी नंदकी नगरिया ॥ ४४२ ॥

राग बरवा पीलूका जिला।

पहले मेरो दान चुकारी पीछे बतरायो प्यारी ॥ तोसमान तूही देत दिखाई, नव जोबन नव सुंदरताई, और कहांलौं करौं बड़ाई, मोहनको मनमोहन हारी ॥ अति बांके हैं नयन तिहारे,सान धरे पैने अनियारे, जिन हमसे घायल कर डारे, इन समान नहिं बान कटारी ॥ नारायण जिन भीर लगावो,देहु दान अपने घर जावो, क्यों मटुकी चौपट गिरवावो, देख हँसेंगे पुर नर नारी ॥ ४४३ ॥

राग सोरठ।

ठाढ़ी रह री गुजरी तू दे जा मेरो दान। ढिग नहीं आवत वगद जात तुम फोरूं तेरी मटुकी लकुटिया तान॥ कैसो दान माँगे लाला चतुर सुजान। या मारग हम नितप्रति आवत कबहुँ न दीनो दधिको दान॥ दानके काजहि हम व्रज आये छांड़ दियो वैकुंठसो धाम। या गहवरमें हमहीं वसत हैं ह्यां धों कहा तिहारो काम॥ क्या तुम ग्वालिन आँख दिखावो दावानलको कर गयो पान। सूरश्याम प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहनको राख्यो मान॥ ४४४॥

राग भैरव।

अटपटी पाय सूधे वावा कैसे रहो कान्ह कौने दान लायो जो दानको कहायो है। किधौं शनी मंगल किधौं राहु केतु चौथ आये किधौं संक्रान्ति किधौं ग्रहणहू लजायो है॥ अँचरा न गहो कहो कैसो दान माँगत हौ कहा जगजीवन तू ऊधम मचायो है। देखा सखी कैसे नयन खंजनसे नाचत हैं जाने तोय यशोदा मैया कहा खाय जायो है॥ ४४५॥

देखतकी मुख ऊजरी गूजरी शीश विराजत वासन कोरो। दान विना कहो कैसे के जान द्यों तू इत भोरी कि मैं इत भोरो॥ गोरसकी सौंह सो रस छाँड़ देऊँ तनक चखाय घनो है कि थोरो। जैसे तुम लाई हौ याहि निहोरो करि तैसे इक मान लेहु मेरो निहोरो॥ ४४६॥

राग जंगला।

द्वार पौरियाको रूप राधेको वनाय लाई गोपी मथुराते वृन्दावनकी लतानमें। कह्यो टेर कान्हसों बुलायो तोहि कंसजीने कौनके कहेते दधि लूटत हो दानमें॥ संगके सखा सब डगर भुलाय

गये कृष्णसों सयाने गये पकर भुजा पानमें। छूट गयो छल तो छबीली अवलोकनमें ढीली भई भौंह वा लजीली मुसकानमें ४४७

राग विलावल।

अब तुम साँची बात कही। एतेपर युवतिनको रोकत माँगत दान दही॥ जो हम तुमहिं कह्यो चाहत ही सो श्रीमुख प्रगटायो। नीके जात उघारी अपनी युवतिन भले हँसायो॥ तुम कमरीके ओढ़नहारे पीतांबर नहिं छाजत। सूरश्याम कारे तनु ऊपर कारी कामरि भ्राजत॥ ४४८॥

यह कमरी कमरी कर जानत। जाके जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानत॥ या कमरीके एक रोमपर वारों कोटिन् अंबर। सो कमरी तुम निन्दत गोपी तीन लोक आडम्बर॥ कमरीके बल असुर सँहारे कमरीते सब भोग। जात पाँत कमरी है मेरी सूर सबहि यह योग॥ ४४९॥

ए री यह को है री याहे दान देत गोवर्धनकेरी ग्वैंड़े। हारन खेतन गाम मड़ैया कान्हर ठाढ़ो ऐंड़े॥ बाप भरे कर कंस रजाको पूत जगाती पैड़े। या व्रजकी अब रीति नई है औलातीको नीर बरैंड़े॥ पराये बगर जिन देहु अडीठन कान्हर छैंड़ी छैंड़। कृष्णदास बरजो नहिं मानत तोरत लाजकी मैंड़े ४५०

यह जानत तुम नन्दमहरसुत। धेनु दुहत तुमको हम देखत जबहिं जात खरकहिं उत॥ चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूँढ़त भाँड़े। मारग रोक भये अब दानी वे ढँग कबते छाँड़े॥ और सुनौ यशुमति जब बाँधे तब हम करी सहाय। सूरदास प्रभु यह जानत हम तुम व्रज रहत कन्हाय॥ ४५१॥

राग गुर्जरी।

गिरिवर धरयो आपने करको। ताहीके बल दान लेत हो

रोक रहत हो हमको ॥ अपने ही मुख वड़े कहावत हमहूँ जानत तुमको। यह जानत पुनि गाय चरावत नितप्रति जात हो वनको॥ मोर मुकुट मुरली पीतांवर देखे आभूषनको । सूर काँध कमरी हू जानत हाथ लकुटिया करको ॥ ४५२ ॥

राग परज।

तुम टेढो म्हारी टेढ़ी गागरिया। टेढी टेढी चाल चलो त्रिभंगी काहेको दिखावे लाला टेढ़ी पगरिया॥टेढ़ी अलकमें क्या बाँधूँगी कछु न सुहावे मोहिं थारी सगरिया। टेढ़ो श्रीवृन्दावन गोकुल टेढ़ी वाहूसे टेढ़ी वृषभानुनगरिया ॥ टेढ़ो श्रीनंदवावा मात यशोदा और टेढ़ी वृषभानुदुलरिया । सूरदास टेढ़ेकी संगत टेढ़े होकर पार उतरिया ॥ ४५३ ॥

राग सोरठ।

काँकडली ना घालो म्हारी फूटे गागड़ली। तू तो ठानों घरमें ठाकड़ हों भी ठाकड़ली ॥ आकड़ आकड़ बोलो कान्हा में भी आकड़ली। मोढे थानो कारी कामर हाथमें लाकड़ली ॥ नौ लख धेनु नंदघर दुहिया एक न वाखड़ली। माखन माखन अपने खायो रहगई छाछड़ली ॥ जाय पुकारूं कंसके आगे मारे थापड़ली। वृंदावनमें रास रच्यो है मोरकी पांखड़ली ॥ नरसीके स्वामी सामलिया दूधमें साकड़ली ॥ ४५४ ॥

राग आसावरी।

को माता को पिता हमारे। कब जन्मत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि वात तुम्हारे॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बांधे महतारी। दुहत कौन गैयाको चारत वात कही तुम भारी ॥ तुम जानत मोहिं नंदढोना नंद कहाँते आये। मैं

पूरण अविगत अविनाशी माया सवन भुलाये॥ यह सुनि ग्वालि सभी मुसकानी ऐसे ही गुण जानत। सूरश्याम जो निदरयो सवही मात पिता नहिं मानत ॥ ४५५ ॥

भक्तहेत अवतार धरों मैं। धर्म कर्मके वश मैं नाहीं योग यज्ञ मनमें न करों मैं ॥ दीन गुहार सुनों श्रवणनभर गर्व वचन सुन हृदय जरों मैं। भावाधीन रहौं सवहीके और न काहूते नेक डरों मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलों व्यापक सवको सुख दे दुखहि हरों मैं। सूरश्याम तब कह्यो प्रगट ही जहाँ भाव तहँते न टरों मैं ॥ ४५६ ॥

राग सोरठ।

तुम का जाने री गूजर दधिकी वेंचनहार। कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्म रूप रँग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन मनुज अवतार। मेरी माया जगत भुलानो, मेरो कह्यो सत्य कर मानो, गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुति चार ॥ जो मेरो निजदास कहावे, रसिक प्रीतम निजभक्तिको पावे, ब्रह्मादिक सनकादिक नारद शेप न पावत पार ॥ ४५७ ॥

लावनी।

मैं ही तो हूँ नंदको लाला मात यशोदाको कन्हैया मैं ही तो हूँ ॥ धरधरके अवतार भूमिको भार हरैया मैं ही तो हूँ ॥ मथुरामें लियो जन्म व्रजमंडलको वसैया मैं ही तो हूँ। प्रथम पूतना तृणावर्त सकटाको हनैया मैं ही तो हूँ ॥ कागाको मारके चोंचको फार फरैया मैं ही तो हूँ। व्रजवासिनको प्रेम देख माखनको खवैया मैं ही तो हूँ ॥ यमलाअर्जुन हेत ऊखलसों हाथ वँधैया मैं ही तो हूँ। मोहे गोपी ग्वाल वाल गौवनको चरैया मैं ही तो हूँ ॥ वत्सासुरको पटक अघाके प्राण कढ़ैया

चहत सुखरासी । मंद मंद गर्जनसी सुनियत नाचत मोर समासी ॥ इन्द्रधनुपमें वग मिल डोलत बोलत हैं कोकिलासी । इन्द्रवधू छवि छाय रही है गिरिधर श्याम घटासी ॥ उमंग महीरुहसे महि कंपत फूलत मृग मालासी । रटत व्यास चातककी रसना रस पीवत हौं प्यासी ॥ ४६४ ॥

व्रजपर नीकी आज घटा । नान्ही नान्ही बूँद सुहावनी लागत चमकत विज्जुछटा ॥ गर्जत गगन मृदंग वजावत नाचत मोर नटा । गावत सुरहि देत चातक पिक प्रगट्यो मदन भटा ॥ सव मिल भेंट देत नँदलालहिं बैठे ऊँची अटा ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर-नलाल शिर कसूमी पीतपटा ॥ ४६५ ॥

आई वदरिया वरसनहारी । गरज गरज दामिन दमकावे ज्यों चूँदरमें झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल वन वोलै भवन भवन गावत व्रजनारी । चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत अति प्यारी ॥ ४६६ ॥

श्याम सुन नियरे ही आयो मेहु । भीजैगी मेरी सुरँग चुनरिया ओढ़ि पिताम्बर लेहु॥ दामिनिसों डरपत हौं मोहन निकट आपनें लेहु । कुम्भनदास लाल गिरिधरसों वाढ्यो अधिक सनेहु ॥४६७॥

देख युगलछवि सावन लाजै । उत घन इत घनश्याम लाड़लो उत दामिन इत प्रिय सँग राजै॥ उत वरसत वूँदनकी लरिया इत गल मोतियन हार विराजै । उत दादुर इत वजत वाँसुरी उत गर्जन इत नूपुर वाजै॥उत रँगके वादर इते वागे उते धनुप वनमाल इत साजै । उत घन घुमड़ इते दृग घूमत नारायण वरपासुख आजै ॥ ४६८ ॥

रेखता ।

आयो है मास सावन इक मान कह्यो प्यारी । चल झूलिये

हिंडोरे वृषभानुकी दुलारी॥ यमुनाके तीर बंशीवट कैसी छबि छाई। शीतल सुगन्ध मन्द पवन चलत अति सुहाई॥ करती है शोर यमुना उठते तरंग भारी॥ चल०॥ प्रति कुंज कुंज छाय रह्यो है पराग री। लागत परम सुहाई अवलोकि नागरी॥ फूली लता द्रुमनकी धरणी झुकी हैं डारी॥ चल०॥ जापै मलिंद घूमे मकरन्द हेत छाये। नाचत हैं मोर वनमें लागत परम सुहाये॥ माती कोयल पुकारे बैठी कदमकी डारी॥ चल०॥ कालिन्दियाके तटपै झूलत हैं सब सहेली। नवसत शृंगार साजे इक एकते नवेली॥ तुमहू प्रिया सिधारो कीजै न अब अवारी॥चल०॥झूलैं निकुंज अपनी अवहीं चलो पियारे। कीजै बिहार हमसों तुम नन्दके दुलारे॥ तब संग ले पियाको सुनि कुंजमें सिधारी॥चल०॥ बैठो कुँवर हिंडोरे अव मैं तुम्हें झुलाऊँ। गाऊँ तुम्हें रिझाऊँ छबि देख दृग सिराऊँ॥ बैठो सुरंग पटली डोरी गहो सँभारी॥ चल०॥ बाढ़ै न रमक मोहन टुक मन्द ही झुलाओ। डरपै हियो हमारो पिया पोंग ना बढ़ाओ॥ यह बात सुन पियाकी उरसों लई लगारी॥ चल०॥ भीजैगी लाल सारी कारी घटा जो आई। लीजै उढ़ाय मोको कामर कुँवर कन्हाई॥ तब हँस रसिकविहारी कामर उढ़ाई कारी। चल झूलिये हिंडोरे वृषभानुकी दुलारी॥ ४६९॥

राग देश।

झूलौ प्यारी आज निकुंज हिंडोरना। बोलत चातक मोर पवन झकझोरना॥ सघन लता निधि वनकी आज सुहाई हैं। श्यामघटनसों परत बूँद सुखदाई हैं॥ तैसी ही दामिनी चमक चमक छवि छाई हैं। मनो डरत तुव तेज लाज दरशाई हैं॥ हरित भूमि हुलसी तुव आगम जानके। मनो बिछौना कियो मदन मद भानके॥ ४७०॥

मैं ही तो हूँ । नौलख धेनु खिरक मेरेमें तिनको दुहैया मैं ही तो हूँ ॥ दावानलको कियो पान कालीको नथैया मैं ही तो हूँ । चीर चोर चढ़ गयो कदम युवतिनको रिझैया मैं ही तो हूँ ॥ गोवर्धन नख धऱ्यो इन्द्रको गर्व हरैया मैं ही तो हूँ । वंशीबटके तट अधरन धर वंशीको वजैया मैं ही तो हूँ ॥ श्यामाके सँग रासमें नीको तो नचैया मैं ही तो हूँ । पकरूं कंसके केश देख ऐसो तो लरैया मैं ही तो हूँ ॥ उग्रसेनको राज्य मथुराको दिवैया मैं ही तो हूँ । सव खेलनको खेल खेलनको खिलैया मैं ही तो हूँ ॥ भक्तनहितकारी वलदेवको भैया मैं ही तो हूँ । मँझधारके वीच टेर गजकी सुनवैया मैं ही तो हूँ ॥ कुंदनविप्र यों कहत नाम राधाको रटैया मैं ही तो हूँ ॥ ४५८ ॥

राग झँझौटी ।

चल परे हट रे काहेको इतरावे । भूषण वसन दधि माखन चुरैया अव कैसी कैसी वात वनावे ॥ जिनके वसाये तुम उनहींसों झगरत निलज न नेक लजावे ॥ नितप्रति धेनुको चरैया नारायण आज तू भूप कहावे ॥ ४५९ ॥

कवित्त ।

अंतते न आयो याही गांवरेका जायो माई वापरी जिवायो प्याय दूध दधि वारेको । सो तो रसखान तज वैठो पहचान जान लोचन नचावत नचैया द्वार द्वारेको ॥ भैयाकी सों सोच कछु मटकी उतारेको न गोरसके ढारेको न चीर चीर डारेको । याही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे ग्वार वगर हमारेको ॥ ४६० ॥

राग कल्याण ।

रजधानी तुम्हरे चित नीकी । मेरे दास दास दासनके

तिनको लागत है अति फीकी ॥ ऐसी काहे मोहिं सुनावत तुमको यही अगाध । कंस मार शिर छत्र फिराऊँ कहा तुच्छ यह साध ॥ तवहीं लग यह संग तिहारो जवलों जीवत कंस । सूरश्यामके मुख यह सुन तव मनमें कीनो शंस ॥ ४६१ ॥

राग कालिंगडा ।

अच्छा लेहु व्रजवासी कन्हैया अच्छा लेहु रे । वरसानेते चली रे गुजरिया आगे मिले महाराज रे ॥ कोरी कोरी मटुकीमें दही रे जमाया चाख लेहु महाराज रे । दही मेरो खायो मटुकिया रे फोरी ईंडुरी कहाँ डारी लाल रे ॥ हार शृंगार सभी मेरो तोऱ्यो दुलरी कहाँ डारी लाल रे । जाय पुकारूंगी कंसके आगे न्याव करो महाराज रे ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल वलिहार रे ॥ ४६२ ॥

राग रामकली ।

राधासों माखन हरि माँगत । औरनकी मटुकिनको चाख्यो तुम्हरो कैसो लागत ॥ ले आई वृषभानुनन्दनी सदलौनी है मेरो । लै दीनो अपने कर हरिमुख खात अलप हँस हेरो ॥ सवहिनते मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई । सूरदास प्रभु सुख उपजाये व्रजललना मन भाई ॥ ४६३ ॥

हिंडोराझूलनलीला ।
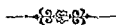
राग मलार ।

आज कछु कुंजनमें वरपासी । वादरगणमें देख सखी री चमकत है चपलासी ॥ नान्ही नान्ही वूँदन कछु धुरियासी पवन

आज वन्यो रसरंग हिंडोरो कदम तरें । सघन लता झुक सुमन सुगन्धन अलिगण गुंज करें ॥ वर्ण वर्ण तनु भूषण चुँदरी श्यामाजू पहरें । लाल लड़ाय चाय हित चितसों रूपसमुद्र भरें ४७१

चलो इकेले झूलें वनमें प्यारी मेरे प्रान । तुम नई नागर रूप उजागर सुखसागर छविखान ॥ वर्ण वर्णके बादर छाये मानो गगन वितान । वर्षत बूँद सोई मोतिनकी झालर शोभावान ॥ बोलत खग मृग डोलत इत उत सो नहिं जात वखान । रंगरंगके फूल खिले हैं भ्रमर करत रस पान ॥ ऐसे समय विपिन सुख विलसे ए री परम सुजान । नारायण उठ वेगि पधारो कुलदीपक वृषभान ॥ ४७२ ॥

चल झूलिये हिंडोरे वृषभानुकी लली । तिहारे काज आज इक मैंने विरची कुंज भली ॥ रत्नजडितको वन्यो हिंडोरो कैसी झला झली । व्रजवनिता झूलत अनेक तहँ एक एक नवली ॥ शब्द करत जहँ कीर कोकिला गुंजत मोर वली । रसिकविहारीकी सुन वाणी तुरतहि कुँवरि चली ॥ ४७३ ॥

राग खेमटा ।

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानुनन्दनी । सावनकी तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परें बूँद मन्दनी । सुन्दर कदमकी डारी झूला परयो है प्यारी देखो कुमर हहारी सब दुख-निकन्दनी ॥ पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुखचन्द्रकी उजारी मृदुहास फन्दनी ॥ मम मान सीख लीजै सुन्दरि न देर कीजै हम तो विलोक जीजै तू है गति गयन्दनी । शोभा लखो विपिनकी फूली लता द्रुमनकी सुन अरज रसिकजनकी करों चरणवन्दनी ॥ ४७४ ॥

हिंडोरे आज झूलत रंग रयो । अचल सुहाग सुभग श्यामाको दिनप्रति होत नयो ॥ हरित भूमि बंशीबट यमुना सो सुख द्दगन लयो। रसिक प्रीतम मिलगावत भावत व्रज सब रीझ रह्यो ४७५

राग सोरठ ।

धवल महल चढ़ रत्न बंगला झूलो सुरँग हिंडोर । नवकिशोर सुकुमार छबीली नेह नवल भुज जोर ॥ सुरँग कसूमी सारी प्यारी हरत झगाली कोर । हित अलिरूप लाल रुचि औरै पिया उठत हिलोर ॥ ४७६ ॥

झूलो मेरी राधा प्यारी रँगीलो हिंडोरना । डाँड़ी चार सुदेश बनाई, हीरा खम्भन झुलमक लाई, जगमग जगमग होय रवि शशि डोरना ॥ उमड़ी घटा घुमड़ घिर आई रिमझिम २ बूँद सुहाई, दमक दमक दामिनियाँ बोलें मोरना । गावत राग मलार अघाई सीतल मन्द सुगन्ध सुहाई, तान तरंगन ललित भान तृण तोरना ॥४७७॥

राग मलार ।

तेरी झमक झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रँगीली अति सोहै । तू गुणरूप यौवन रंगरसभरी तेरी उपमाको को है ॥ हाथन चूरी महावर मेंहदी चटक चौगुनी सोहै । रसिक गोविंद अभिराम श्याम घन तू दामिनि घन मोहै ॥ ४७८ ॥

हर्ष झुलाइये मनभावन । उधर परयो हित हेत गहगह्यो झूटा दियो चित चावन ॥ यह जो कल्पतरु यह रविजातट वह वन घन झुक आवन । वृन्दावनहित रूप बलि गई वह हरियाली सावन ॥ ४७९ ॥

राग रेखता ।

झूलन युगल किशोरकी दिलमें मेरे वसी। बैठे हैं रँग हिंडोरना

करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोरदार । शिरपै सुरंग सारी प्यारीके क्या लसी ॥ वेसर बुलाक वेनी वेंदी जो भालपै । हीरोंका हार उरपै कटि काछनी कसी ॥ जोवनके जोर शोरसों रमकें वढ़ावती । ललिताकिशोरी श्यामकी छवि देखके हँसी ॥ ४८० ॥

राग पीलू ।

चलो पिया वाही कदम तरे झूलैं । झुक रहीं लता अति सघन प्रफुल्लित कालिन्दीके कूलैं ॥ वोलत मोर चकोर कोकिला अलिगण गुंजत भूलैं । ललितकिशोरी मग बतरावैं कह कह वतियां फूलैं ॥ ४८१ ॥

राग मलार ।

आज हिंडोरे झूलें झूलन नवल कुँवर नव दुलहन दूलें । धादा किटता धादा किटता बजत मृदंग सखि सुघर तान गावें झननन नाचत मोर सघन वन प्रफुलित श्रीयमुनाजीके कूलें कूलें ॥ नवलकिशोरी वृषभानुकी कुँवरि भोरी भोरी सँग जोरी रस राचो उरझी माल लटक नकवेसर अंग अंग भुज भूलें फूलें ॥ ४८२ ॥

ए हो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे । काहेको इतनी रमक वढ़ावत द्रुम उरझत चीरे चीरे ॥ जो तुम झुकझुक झूटनके मिस आवत हो नीरे नीरे । नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे ॥ ४८३ ॥

कैसे झूलों हिंडोरे बतियाँ नाहिं हरी । वरजो न मानत यह काहूको लोककी लाज टरी ॥ हा हा खात यह तो पेयां परत है प्रेमके फंद परी । रसिक गोविन्द अभिराम श्यामने भुज-भर अंक भरी ॥ ४८४ ॥

युगलवर झूलत दे गल बाहीं। बादर बरसें चपला चमकें सघन कदमकी छाहीं ॥ इत उत पोंग बढावत सुन्दर मदन उमंगन माहीं। ललितकिशोरी हिंडोरा झूलैं बढ़ यमुनालौं जाहीं ॥ ४८५ ॥

आज दोउ झूलत रंगभरे। झूँटा खरे लेत कबहुंक सखि कबहूं हरे हरे ॥ कर्णफूल कुंडल मिल भेटत मनुशशि मीन लरे। चन्द्र-भाल हलकत उर राधे हरि बनमाल गरे ॥ विहँसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे। ललितकिशोरी टरत न लखि छबि दृग शिशु अरन अरे ॥ ४८६ ॥

रेखता।

प्यारी पीतमके संग झूलैं रंग हिंडोरना। दो खंभ हैं जड़ाऊ जड़े चितके चोरना। डाडी मरुवे लगन लगी बेलन अमोलना॥ पटली संदलकी सफ देखो खूब है बनी। लागे हैं उसके बीचमें हीरा चुनी मनी ॥ चुँदरी घूँघटकी ओटमें नयना विशाल हैं। खंजन भुलामनेके घेरनको जाल है ॥ मुझको रसिक गोविन्दकी छबिहीमें झूलना। प्यारी अनूप रूपको दिलसे न भूलना ॥ ४८७ ॥

राग देश।

बलि बलि जाइयाँ झूलनपर। प्यारी पहरे कुसुमल सारी प्यारेके मन भाइयाँ ॥ चहूँ ओर सब सखी झुलावैं झुक झुक झूटे खाँदिया॥पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तनमन नयन सराँ दियाँ॥

झूलत श्याम श्यामा संग। अति रंग शोभाके मानो लहत यमुना गंग ॥ झलक भूषण चित्त चोरत श्यामा गोरे अंग। ललितकिशोरी हिंडोरने पै आज बरसत रंग ॥ ४८९ ॥

मनभावन हर्षावन आवन सावन तीज सुहाई। चावन गावन रीझ रिझावन दंपति रति दरशाई ॥ चढे हिंडोरे नयनन जोरे

चित चोरे सुखदाई । युगल चन्द रसकन्द कोरनी नख रूप लाल वलि जाई ॥ ४९० ॥

कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत रहो जू । अंचल अलक पलक सुनिरन्तर इक संकोच सहो जू ॥ यह विनती मानिये जो श्रवण सुन नाहिंन वचन कहो जू । विहारनदास कहत रुख लीये यह सुख सहज लहो जू ॥ ४९१ ॥

राग वडहंस मलार ।

हिंडोलनामें कांई छै झूला राज । म्हारा झूलत हिया लरजे ॥ रत्नजडितके खंभ जड़ाये अगर चन्दनके पटा । रेशम डोरके पवन पुरवैया जुर आई सावनकी घटा ॥ श्यामा झूलें श्याम झुलावें कालिन्दीके तटा । उड़ उड़ अँचरा परत भुजनपर निरखत नागर नटा ॥ ४९२ ॥

राग यमन ।

झोंका दीजो सम्हारके मेरी सारी न लटके । सघन कुंज द्रुम डार कँटीली काहू छोर जिन अटके ॥ उन वातन अव भेंट नहीं कछु और धोखे जिन भटके । ललितकिशोरी लाल जाओ घर काहेको चटके मटके ॥ ४९३ ॥

झूलत को श्यामाके सँग सखी सामरी प्यारी है । कजरे नयन सैनसों वतियां अँखियन कोर कटारी है ॥ जीवन जोर मरोर भौंहकी ललितकिशोरी वारी है । ललिता करि परिहास कही यह नागर नन्ददुलारी है ॥ ४९४ ॥

राग सारंग ।

फूलनके बँगलेमें राजें पिया प्यारी हो । फूलनके भूषण विचित्र सोहै अंग अंग फूलनके वसन वदनछवि न्यारी हो ॥ फूलसों

मुखारविन्द वचन फूलन सम फूली सखी तन मन शोभा लख भारी हो। जैसो ही समाज साज आज नारायण मानो कुंज-भवनमें फूली फुलवारी हो ॥ ४९५ ॥

राग कान्हरा—ध्रुपद।

फूलनकी चन्द्रकला शीशफूल फूलनको फूलनके झुमका श्रवण सुकुमारीके। फूलनकी बन्दनी विशाल नथ फूलनकी फूलनको बेंदा भाल राजत दुलारीके॥ फूलनकी चम्पाकली हार गले फूलनके फूलनके गजरा ललित कर प्यारीके। फूलनकी पगमें पायल नारायण फूले फूले भाग सदा लाड़िली हमारीके॥४९६॥

कवित्त।

फूलनके खम्भा पाट पटरी सु फूलनकी फूलनके फुंदने फँदे हैं लाल डोरेमें। कहै पदमाकर वितान तने फूलनके फूलनकी झालरें सुझूलत झकोरेमें॥ फूल रही फूलन सुझूल फुलवारी तहाँ फूलके ही फरस फबे हैं कुंज कोरेमें। फूल झारी फल भरी फूल जरी फूलनमें फूलहीसी फूल रही फूलके हिंडोरेमें॥ ४९७॥

फूलनके चँदोआ तने फूलन फरश बिछे फूलनकी सेज औ फूलन छवि छै रही। फूलनकी गरे माल फूलन करनफूल फूल-नको टीको माँग फूलन भरे रही॥ फूलनके वस्त्र औ शृंगार सब फूलनके विक्रम मृगेश मन उपमा बनै रही। फूली फुलवारी जामें बैठी प्राणप्यारी आज देखत वसन्त या वसन्त ऋतु ह्वै रही॥

राग मलार।

या ऋतु रूठ रहनकी नाहीं। बरसत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हर्ष बढाहीं॥ जे बेली ग्रीषम ऋतु जरहीं ते तरुवर लप-टाहीं। उमड़ी नदी प्रेमरस माती सिंधु मिलनको जाहीं॥ यह

संपदा दिवस चारककी सोच समझ मनमाहीं । सूर सुनत उठ चली राधिका दै दूती गल बाहीं ॥ ४९९ ॥

दादरा ।

सुन सखी आज झूलन नहिं जैहों ॥ श्यामसुंदर पिया रसलंपट है अतिही ढीठयो देत । झूँठा तरल तरे पाछेते धाय भ्रुजन भर लेत ॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमें जनावत नेह । रसिक गोविंद अभिराम श्याम सँग क्यों न जाय रस लेह ५००

राग सोरठ ।

गाय चरायके गिरि धान्यो तुम्हें झूलन समझ कहा है ।
अतिसुकुमार प्रिया गोरांगी ता सँग झूलोहि चाहै ॥ हम जो सिखावें तैसेहि सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहै । वृन्दावन हित रूप वलि गई ह्याँ पायो कै वाँ है ॥ ५०१ ॥

कौन समय रूठनको प्यारी झूलो ललित हिंडोरे । रंग विरंग घटा नभ छाई, बिच विच चपला चमक सुहाई, परत परम सुखदाई चलत समीर झकोरे ॥ विविध भाँति पक्षी वन बोलैं मृगिनसहित मृग विहरत डोलैं, जीव जन्तु मिल करत कलोलैं यही अचरज मन मोरे । कुसुम चीर पहरे व्रजनारी साज समाज आज है भारी, नारायण वलि जाउँ तिहारी प्रीतम करत निहोरे॥

राग गौरी ।

झूलनहार नई कौन है । श्यामाके संग रंग भरी सोहत सखी नवेल ॥ अति सुंदर तनु सामरी मानो नील मणिनकी वेल ॥ स्वेद कंप रोमांच हो जान परत कछु और । झुक झुक झूटनमें मिले हँस कुँवर लजोई होत ॥ निरखो झूलन नेहकी सखी चतुरशिर मौर । हम जानी जानी सभी सखि यह झूलन कछु और ॥

सभी छकाई नागरी दृगन सुधारस प्याय। कपटरूप धरि मोहनी प्रगट भई ब्रज आय ॥५०३॥

राग पीलू।

मेरी छाँड़ दे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलोंगी। झूटन मिस मोहन लँगरैयाँ अजहुँ टहोकत ना भूलोंगी॥ ललिता संग रँगीले झूल झूल झूल मनहीं मन फूलोंगी। ललितकिशोरी तरल पैंग कर लालन तोसँग सम तूलोंगी ॥ ५०४॥

सो तू राख ले री झूटा तरल भये। इत नव कुंज कदमलौं परसत उत यमुनालौं गये॥ आवत जात लता निरवारत कुसुम-वितान छये। कल्याणके प्रभु रीझ विवश भये झूलत नये नये ५०५

कौन चढ़े पहले सुरंग हिंडोरे। सोई करत मनुहार हिये हित रमक देत जोरा जोरे॥ गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे। रसिक प्रीतम यह होड़ पिया परी रीझ देत तृण तोरे॥ ५०६॥

राग झँझौटी।

बाँकी छवि झूलत प्यारी। बाँकी आप बिहारी बाँके बाँकी संग सुकुमारी॥ बाँकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहूकी न्यारी। ललितकिशोरी बाँकी मुसकन बंक पैंग वर वारी॥५०७॥

राग वरवा सारंग।

तेरी झूलन अति रससानी सुखदानी श्रीराधावल्लभ लाड़ले। गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरंगन सब मिल आव रे॥ सब शृंगार हार फूलनके प्यारीको पहरावत मनमें चाव रे। राधे वर कृष्ण याही कृपा कर विपिन बसावो अनत न जाव रे॥ ५०८॥

राग मलार।

भीगत कब देखूं इन नयना। राधाजूकी सुरँग चूनरी मोहनको उपरैना॥ श्यामा श्याम कुंज तन चितयो यत्न कियो कछु मैं ना। श्रीभटके प्रभु नयनन निरखत जुर आई जलसैना ५०९

झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊँ। हरुवे वयार करूँ हित चित दे तन मन खम्भ बनाऊँ॥ सुध पटली बुध डांड़ी बेलन नेह विछौना विछाऊँ। अवसेर धरूं टुक कलसा प्रीतिध्वजा फहराऊँ॥ गर्जन कुहक मिलवेकी नेह नीर वरसाऊँ। श्रीविठ्ठल गिरिधरनलालको जो इकले करि पाऊँ॥ ५१०॥

भीगत कुंजनमें दोउ आवत। ज्यों ज्यों बूँद परत चुनरीपर त्यों त्यों हरि उर लावत॥ अधिक झकोर होत मेघनकी द्रुमतर छिन विलमावत। वे हँस ओट करत पीताम्बर वे चुनरी जु ओढ़ावत॥ तैसेहि मोर कोकिला बोलत पवन वीच घन धावत। ले मुरली कर मन्द घोर स्वर राग मलार बजावत॥ भीजे राग रागनी दोऊ भीजे तनु छवि पावत। सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत॥ ५११॥

होरीलीला।

राग सारंग।

श्यामा श्यामसों होरी खेलत आज नई। नंदनँदनको राधे कीनो माधव आप भई॥ सखा सखी भई सखी सखा भये यशुमति भवन गई। बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ नाचत थेइ थेई॥ गोरे श्याम साँवरी राधे या मूरति चितई। पलट्यो रूप देखि यशुमतिकी सुध बुध बिसर गई॥ सूर श्यामको वदन बिलोकत उधर गई कलई॥ ५१२॥

राग जंगला ।

प्यारी पिया दोऊ खेलत होरी । नंदनँदन ब्रजराज साँवरो श्रीवृषभानुकिशोरी ॥ परमानन्द प्रेमरस भीने लिये अबीर भर झोरी । करत मनमें चितचोरी ॥ भुजभर अंक सकुच तज गुरुजन बिचरत हैं मिल जोरी । छूटी अलकैं उरझीं कुंडलसों बेसर प्रीत फँस्यो री । चलो सुरझावो गोरी ॥ कर कंकन कंचन पिचकारी केसर भर लै दौरी । छिरकत फिरत हुलस लिये हरपत निरखत हँस मुख मोरी ॥ चलो क्यों होइयो बौरी ॥ धनि गोकुल धनि धनि वृंदावन जहँ यह फाग रच्यो री । श्रीरसरंग रीझ रहे ब्रजपर वारों वैकुंठ करोरी ॥ मुक्ति काशी जहँ थोरी॥५१३॥

या ब्रजमें कैसी धूम मचाई ॥ इतते आई कुँवरि राधिका उतते कुँवर कन्हाई । खेलत फाग परस्पर हिलमिल या छवि वरनि न जाई ॥ घरै घर वजत वधाई ॥ वाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ मंजीरा सहनाई । उड़त गुलाल लाल भये बादर केसर कीच मचाई ॥ मनौ मघवा झर लाई ॥ राधा सैन दई सब सखियन यूथ यूथ मिल धाई । पकरो री पकरो श्यामसुन्दरको गृह अव जान न पाई ॥ करौ अपने मन भाई ॥ छीन लियो मुख मुरली पितांवर शिरपर चुनरि उढ़ाई । वेंदी भाल नयनमें काजर नकवेसर पहराई ॥ मनौ नई नारि वनाई ॥ कहाँ गये तेरे पिता नंदजी कहाँ यशोमति माई । कहाँ गये तेरे सखा संगके कहाँ गये वल भाई ॥ तुझे अव लेत छुड़ाई ॥ फगुआ लिये विन जान न दूँगी करियो कोटि उपाई । लेहौं चुकाय कसर सव दिनकी तुम हो चोर चुराई ॥ छीनि दधि माखन खाई ॥ धनि गोकुल धनि श्रीवृन्दावन धनि यमुना यदु-

राई । राधाकृष्ण युगल जोरीपर नंददास बलि जाई ॥ प्रीति उर रही समाई ॥ ५१४ ॥

राग जंगला ।

थारे करूँगी कपोलन लालजी म्हारी अँगिया न छूओ ॥ यह अँगिया नहिं धनुष जनकको छुवत टुटो तत्काल । नहिं अँगिया गौतमकी नारी छुवत उड़ी नँदलाल ॥ कहा विलोकत भृकुटी कुटिल कर नहीं पूतनाखाल । यह अँगिया काली मत समझो जा नाथ्यो पाताल ॥ गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी लाला नहीं जानो ब्रजवाल । जाओजी खाओ सुदामाके तंदुल गौवनके रखवाल ॥ इतनी सुन मुसकाय साँवरे लीनो अबिर गुलाल । सूर श्याम प्रभु निरख छिरक अँग सखियन कियो निहाल ॥ ५१५ ॥

राग जंगला सिंध ।

श्याम मोसे खेलौ न होरी पा लागों कर जोरी ॥ गैयां चरावन मैं निकसी हूँ सास ननँदकी चोरी । सगरी चुनरिया रंग न भिजोवो इतनी सुनो बात मोरी ॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर जोरसे बहियाँ मरोरी । दिल धड़कत मेरो साँस चढ़त है देह कँपत गोरी गोरी ॥ अबिर गुलाल लिपट गयो सुखसे सारी रंगमें बोरी । सास हजारन गारी देवै अरु बालम जीती ना छोरी ॥ फाग खेलके तैंने रे मोहन क्या कीनी गति मोरी । सूरदास आनन्द भयो उर लाज रही कछु थोरी ॥ ५१६ ॥

राग भूपाली जंगला ।

डगर मोरी छाँड़ो श्याम बिंध जाओगे नयननमें ॥ भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारूंगी सैननमें । जो तेरे मनमें होरी खेलनकी तो ले चल कुंजनमें ॥ चोआ चन्दन और अर-

गजा छिरकूंगी फागनमें। चन्द्रसखी भज बालकृष्णछवि लागी है तन मनमें ॥ ५१७ ॥

राग सारंग।

रसियाको नारि बनाओ री। कटि लहँगा गलमाहिं कंचुकी चुँदरी शीश उढ़ाओरी ॥ गाल गुलाल दृगनमें अंजन वेंदी भाल लगावो री। नारायण तारी बजायके यशुमति निकट नचाओरी ॥ ५१८ ॥

राग जंगला।

जनि जाओजी आज कोई पनियाँ भरन ॥ ठाढ़ो मगमें मोहन इक इकको मारत पिचकारी तक तक। जिनको चाहत तिनको रँगमें भिगोय डारे गारियाँ देन लागो न्यारो बक बक ॥ उनको देखके उलटी दौर आई मुख अपनो इकबारी ढक ढक। शीश कँपन लागे पायँ थकन लागे छतियाँ करन लगीं न्यारी धक धक ॥ आई बसंत विरहोंकी मौजसों सब रंग रह्यो बनवारी छक छक। मौज हरी तिहारो यही रंग रहैगो संग चलनको मैं रही तक तक ॥ ५१९ ॥

या मोहना मोहिं आनि ठग्यो री ॥ सखीको रूप धरयो नँद-नन्दन आयो हमारी पौरी। मैं जान्यो कोई परम सुंदरी आई हमारी ओरी ॥ धायके मैं चरण गह्यो री ॥ चरण पखार मन्दिर ले आई हँस हँस कंठ लग्यो री। सुन्दर वर्ण मधुर स्वर सजनी तब मेरा जिया वश भयो री ॥ प्रेम तन होरही बोरी ॥ मोहिं लिवाय गई कुंजनमें कर छलबल बहुतेरी। निपट अकेली मोहिं जान मेरो तन मन आन गह्यो री ॥ ढीठ छलिया नंदको री ॥ ऐसो री यह कुंजविहारी याते कोउ न बच्यो री। सूरदास व्रजकी सखियनमें पारब्रह्म प्रगट्यो री ॥ जाने सबको री ॥५२०॥

गजल।

मची है आज वंशीवटपे होली। खड़ा नट गैलमें भर रँग कमोली॥ गई थी मैं अभी दधि वेंचवेको। झपट मोहन मली मुख मेरे रोली॥ पटक मटकी झपट अंचल झटक कर। लपट दरकाई चूनर और चोली॥ अजव नटखट है नँदका हँस मटक कर। लगा बातोंमें मेरी नीवी खोली॥ ये लख मैं ढ़ीठता उस नंदके की। कहा में क्यों जी यह क्या है ठठोली॥ अटकते हो जो हरदम हमसे मगमें। चलो अव माफ कीजे होली होली॥ नहीं हूँ दासी में कछु कृष्ण तेरी॥ वस अव हमसे न वोलो टेढ़ी वोली॥ ५२१॥

होरी।

रंगन भीगगई हो मोहन सारी सुरख नई। वर्जत ननँदी पर रत निकसी अवहीं मोल लई॥ नेक अनोखी गारी गावे या मति किनहूँ दई। दैया सखी या गोकुल वसके ऐसी कभू न भई॥ ५२२॥

छैल रँग डार गयो मोरी वीर। भीग गयो अति अतलस रोटा हरित कंचुकी चीर॥ घालत कुंकुम ताक कुचनपर ऐसो निपट वे पीर। ललितकिशोरी कर वरजोरी मुखसों मलत अवीर॥ ५२३॥

वरवा होरी।

मोको रंगमें वोर डारी रे इस नन्दके छैलविहारी। ले बूका मेरे सन्मुख आवे भर पिचकारी मेरे मुखपर डारे लेकर वा ऊपर ढरकावे ऐसो ढीठ विहारी॥ कहा करूं कहां जाउँ मोरी आली या वनमें अव भई कुचाली। चितवन हँसन फाँस गल

डारे ऐंचत है मोरी सारी ॥ जो कर पाऊँ पकरूँ वाको हौं भी कसर कछू ना राखों व्रजदास हियमें अभिलाषों मुख मीडों गिरिधारी ॥ ५२४ ॥

राग परज।

होरी रे मोहन होरी रंग होरी। काल्ह हमारे आँगन गारी दे आयो सो को री ॥ आय अचानक भुज भर पकरी गहि वैयाँ जो मरोरी। दैया सखी यह निठुर नन्दको कीनी मोसों जोराजोरी ॥ ५२५ ॥

अनुरागलीला।

राग सोरठ।

तोहिं डगर चलत कहा भयो री बीर ॥ कहूँ पगकी पायल कहूँ शिरको चीर। भई बावरी न कछु सुध बुध शरीर ॥ तेरे मतवारनसम झूमत नैन मुख भाषत है तू अति विरहके बैन ॥ मानो घायल काहूने करी दृगन तीर। मोसों नारायण जिन रख दुराव। जो तू कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाव॥जासों रोग हू घटे हटे सकल पीर ॥ ५२६ ॥

मैं देखी री आज मोहनकी हँसन। अधरनपै अद्भुत अरुणाई मोतियनकी कर पाँति दशन ॥ वा शोभाके दृग रहे प्यासे पीने लगे भरभरके पसन। नारायण तवसों मोहिं सजनी सुध न रही निज वदन वसन ॥ ५२७ ॥

राग खम्माच।

दर्शन देना प्राण प्यारे। नंदलला मेरे नयनोंके तारे ॥

दीनानाथ दयाल सकल गुण नवकिशोर सुन्दर सुखवारे ॥ हम मोहन मन रुकत न रोक्यो दर्शनकी चित चाह हमारे। रसिक खुशाल मिलनकी आशा निशदिन सुमिरन ध्यानलगारे ५२८

राग रामकली।

मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय। झूली ऊपर सेज पियाकी किसविध मिलना होय ॥ घायल घायलकी गति जाने जिस तनु लागी होय। मीराके प्रभु गिरिधर नागर बैद समलिया होय ॥ ५२९ ॥

राग पीलू ।

आली री तू क्यों रही मुरझाय। पनिघट गई यमुनाजल भरने आई है रोग लगाय ॥ केशो कारो चन्द्र उजारो टोना डार गयो। करो उपाय सखी अब मेरो व्रजनिधि बैद मँगाय ॥ ५३० ॥

लागी रे लगनियाँ मोहनासों। सुन्दर श्याम कमलदल लोचन नन्दजूको छैल छकनियाँ ॥ कछु टोनासा डार गयो री कैसे भरन जाऊँ पानियाँ । कृष्णदासकी प्यास मिटे जब निरखों कुंभनिकी धरनियाँ ॥ ५३१ ॥

राग देश।

नारीहू न जाने बैदा निपट अनारी रे। बूटी सब झार अट्ठी परी औषधि न कारी रे ॥ जाउ बैद घर अपनेको मोरे पीर भारी रे। यमुना किनारे ठाढ़ी ओढ़ कसूमी सारी रे ॥ नन्दजूके ढोटा मोहिं नयना भर मोरी रे। गोकुलमें बैद बसै साँवरो बिहारी रे ॥ वाहीको बुलायके दिखाओ मेरी नारी रे। पुरुषोत्तम प्रभु बैद हमारे वाही छबीलेते लगी है मेरी यारी रे ॥ ५३२ ॥

राग भैरवी।

लाग गई तब लाज कहाँ री। जे दृग लागे नंदनँदनसों और-

नसों फिर काज कहा री ॥ भर भर पियें प्रेमरस प्याले ओछे अमलको स्वाद कहा री । ब्रजनिधि ब्रजरस चाख्यो चाहै या सुख आगे राज कहा री ॥ ५३३ ॥

सवैया ।

काहेको बैद बुलावत हो मोहिं रोग लगाय न गारी गहो रे ।
वो मधुआ मधुरी मुसकान निहारे विना कहो कैसे जियो रे ॥
चन्दन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरो रे ।
और इलाज कछू न बने ब्रजराज मिले सो इलाज करो रे ॥५३४॥
मोरपखा मुरली बनमाल लगी हियमें हियरा उमग्यो री ।
ता दिनते निज बैदनको मैं तो बोल कुबोल सभी जो सह्यो री॥
अब तो रसखानसों नेह लग्यो कोऊ एक कहो कोऊ लाख कहो री ।
औरते रंग रहो न रहो इक रंग रंगीलेते रंग रहो री ॥ ५३५ ॥
सुन्दर मूरति दृष्टि परी तबते जिय चंचल होय रहो है ।
शोच सँकोच सभी जो मिटै अरु बोल कुबोल सभी जो सहा है ॥
रैन दिना मोहिं चैन न आवत नैननते जल जात वहा है ।
तापै कहै सखी लाज करौ अब लाग गई तब लाज कहाँ है॥५३६॥

कबित्त ।

जिन जानो वेद तेतो वादकी विदित होय, जिन जानो लोक लोक लीकनपै लर मरो । जिन जानो तप तीनों तापन सो तप तप पंच अग्नि संग ले समाधि धर धर मरो ॥ जिन जानो जोग तेतो जोगी जुग जुग जिये, जिन जानो जोत सोऊ जोत लै जर मरो । हौं तो देव नन्दके कुमार तेरी चेरी भई, मेरो उपहास कोऊ कोटिन कर कर मरो ॥ ५३७ ॥

घर तजों वन तजों नागर नगर तजों, वंशीवट तट तजों

काहूपै न लजिहौं। देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसो तजों, आज काज राज वीच ऐसे साज सजिहौं॥ वावरो भयो है लोक वावरी कहत मोको, वावरी कहेते मैं काहू ना वरजिहौं। कहैया सुनैया तजों वाप और भैया तजों, दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजिहौं॥ ५३८॥

कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ, कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूँ। कैसो देवलोक परलोक तिरलोक मैं तो,लीनो हौं अलोक लोकलीकनते न्यारी हूँ॥ तन जाओ धन जाओ देव गुरु जन जाओ, जीव क्यों न जाओ नेक टरत न टारी हूँ। वृन्दावनवारी गिरिधारीके मुकुट वारी, पीतपटवारी वाकी मूरतिपै वारी हूँ॥ ५३९॥

तौंक पहरावो पाँव वेरी ले भराओ गाढे, वंधन वँधावो ओ खिंचावो काची खालसों। विष ले पिलावो तापै मूठ भी चलावो, मॉझीधारमें वहावो वाँध पत्थर कमालसों। विच्छू लै विछावो तापै मोहिं लै सुलावो, फेर आग भी लगावो वाँध कापर दुशालसों। गिरिसे गिरावो काली नागसे डसावो, हा हा प्रीति ना छुडावो गिरिधारी नंदलालसों॥ ५४०॥

राग कान्हरो।

आज व्रजराजकी देख शोभा नई गई तनु भूल सुध भई हों वावरी। अधर रँग पान मुसक्यान जादू भरी ताहूपै चितहरन दृगनके भाव री॥ कुंडलनकी हलन छलन मन मदनकी चलत गजचाल वश करनके चाव री। निरखके रूप नारायण हर्यो हियो कौनसे भाग्यसों लग्यो है दाँव री॥ ५४१॥

राग खट।

मुकुट माथे धरे खोर चंदन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हरे।

पीतपट कटि कसे कर्ण कुंडल लसे निशदिना उर वसे प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक दोहनी खिरक नेरे । लाल लोचन वने ललित रसमें सने सैनसे अनगिने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनी काछनी देत शोभा घनी देख कौस्तुभमणी सुर छके रे । प्रभु छवीलो रँगीलो रसीलो आली लगनसे मगन मनमें वसेरे ॥ ५४२ ॥

राग विलावल ।

माई री आजको शृंगार सुभग साँवरे गोपालजीको कहत न वने कछु देखेही वन आवे । भूषण वसन भाँति अंग अंग अद्भुत कांति लटपटी सुदेश पाग चित्तको चुरावे ॥ मकर कुंडल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विशाल कोटि काम लजावे । कंठ श्रीवनमाल फेंटा कटि छोरन छवि हरष निरख त्रियनके धीरज मन न आवे ॥ मेरे संग चल निहार ठाढ़े हरि कुंजद्वार हितचितकी वात कहत जो तेरे जिया भावे । चतुर्भुज प्रभु गिरिधारीको स्वरूपसुधा पीवत नयनन पुट तृप्तिहूँ न आवे ॥ ५४३ ॥

माई री आज और काल्ह और दिनप्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरन । दिनप्रति नई छवि वरणे सो कौन कवि नितही शृंगार वागे वरन वरन ॥ शोभासिंधु श्याम अंग छविके उठत तरंग लाजत कोटिक अनंग विश्वको मनहरन । चतुर्भुज प्रभु गिरिधारीको स्वरूप सुधापान कीजिये जीजिये रहिये सदाही शरन ॥ ५४४ ॥

राग भैरवी ।

छवि आछी वनी वनवारीकी। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अलकें घूँघरवारीकी ॥ मृदु मुसक्यान आन नयननकी वरणे गिरिधारीकी । कृष्णदास युगल जोरीपर तन मन धन सव वारीकी ॥५४५॥

राग कालिंगडा ।

भवनते निकसे नन्दकुमार । पचरंगी चीरा शिर सोहै चित-वनपै बलिहारी ॥ कानोंमें मुतियनको चौलड़ा गल फूलनको हार । नारायण जे आपहि सुन्दर तिनको कहा शृँगार ॥ ५४६ ॥

राग सिन्दूरा ।

ए री मैं तो सहज स्वभाव गई नन्दजूके तहाँ देख्यो सुख और । इकले श्याम नईकी धजसों ठाढ़े भवनकी पौर ॥ रतन शृंगार वहार हँसनकी माथे केसर खौर । नारायण सो छवि दृग छाई रही न काजर ठौर ॥ ५४७ ॥

राग विहाग ।

सुपनेमें दरश दिखाय मोहन मन हर लीनो प्यारे । रैनि दिना मोहिं कल न परत है तलफत जिय अकुलाय ॥ ललित त्रिभंगी माधुरी मूरत नयननमें रही छाय । कृष्णप्रिया छवि देखि मनोहर बिन दामन गई हौं विकाय ॥ ५४८ ॥

राग खम्माच ।

सुन्दर मुख सुखसदन श्यामको निरख नयन मन थाक्यो । वारक होय विपिनसों निकस्यो उचक झरोखे झाक्यो ॥ लालने इक चतुराई कीन्ही गेंद उछाल गगनमिस ताक्यो । वहुरो लाज वैरन भई मोको में ग्वारन मुख ढाक्यो ॥ कछू करगये प्रेम चितवनसों ताते रहत प्राण मद छाक्यो । सूरदास प्रभु सर्वस लेगये हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥ ५४९ ॥

राग देश सोरठ ।

राधा नन्दकिशोर री सजनी जो मिले कुंजनमें दोऊ री । शीतल सुगन्ध तीर यमुनाके बोलत शुक पिक मोर ॥ ज्यों

तमालसे मिली है माधुरी ज्यों सावन घनघोर। रसिकविहारी विहारन दोऊ मिल नीर क्षीर इक ठौर ॥ ५५० ॥

राग देश।

अपने गृहमें निकसी अवलासी दूजको चाँद चढ़यो। कोऊ कहे काहूंकी सुन्दर कोऊ कहे काहूकी दासी ॥ आगे मिले नन्द-जूके नन्दन मारत गेंद मचावत हाँसी । घूंघटको पट छूट गयो री दूजकी हो गई पूरणमासी ॥ ५५१ ॥

राग अडाना।

हौं गई यमुनाजल लेन माई हौं साँवरेसे मोही । सुरंगा केशरी खौर कुसुमकी दाम अभिराम कंठ कनककी दुलरी दुलकत पीताम्बरकी खोही ॥ नान्हीं नान्हीं बूँदनमें ठाढ़ो री वँसुरिया बजावे गावे माला करी मीठी तानने तोलाकी छवि नेकहु न जोही। सूरश्याम मुर मुसक्यान छबि री अँखियनमें रही तन न जानों हों कोही ॥ ५५२ ॥

प्रभाती।

मोर मुकुट वंशीवारेने मन मेरा हर लीना। हौं जो गई यमुना जल भरने आगे मिले रसभीना ॥ मुझको देख मुसक्यात साँवरा चितवनमें कछु टोना । विवश भई जल भरन बिसर गयो घड़ा धरणि धर दीना ॥ लोकलाज कुलकान बिसर गई तन मन अर्पण कीना। कृपा सखी भई रूप दिवानी अधरसुधारस पीना ॥ श्रीगोपाल धार उर अपने जन्म सफल कर लीना ॥

रेखता।

सुन्दर अनूप जोड़ी अति मनकी भावती । देखी मैं आज मगमें कुंजनसों आवती ॥ अँग अंग देत शोभा भूपण जड़ाऊ

आली । नयननमें सोहै कजरा अधरनपै पान लाली ॥ प्रीतमके काँधे कर धर प्यारी अनन्दसों ॥ हँस हँसके करत बातें मुख ललितचन्दसों ॥ पग धरत हौरे हौरे गति देख हंस लाजै । नूपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजे ॥ यहि भाँतिसों मगन है क्रीडा करत हैं दोऊ । नारायण रसिकजन विन यह रस न जानै कोऊ ॥ ५५४ ॥

दिल ले गयो हमारो नँदलाल हँसते हँसते । बृन्दा विपिनकी कुंजों जाती थी रस्ते रस्ते ॥ वह आगयो अचानक जूरेको कस्ते कस्ते । चित छुट पड़ा बदनपर बालोंमें फँस्ते फँस्ते ॥ मुशकिलसे बची नागिन अलकोंसे डस्ते डस्ते ॥ दिल० ॥ प्यारीके सँग खड़ा था वह साँवरा विहारी । दृगकोर मोर मेरे सैनों जड़ी कटारी ॥ सुधबुध रही न तनकी सब भूल गई हमारी । यमुनाके तीर सुन्दर जहँ फूली फुलवारी ॥ कछनी कमरसे काछे सुन्दर सलोना ढोटा । कस पीतवसन आछे कटि बाँधे यह कछोटा ॥ गैया न केहू पाछे दृग देखनेमें छोटा । चितवनके बाण मारे सबभाँतिसे है खोटा ॥ गोकुलकी गैल मुझसे हँस पूँछे आ विहारी । थी संग उसके सुन्दर बृषभानुकी दुलारी ॥ क्या हंसकीसी जोड़ी आँखों लगी पियारी । मैं होगई दिवानी जबसे वह छवि निहारी ॥ बृन्दा विपिनकी गलियों दो चाँदसे खड़े थे । मुसकाके करत बातें नयनोंसे दृग लड़े थे ॥ मदरूप छवि छकेसे टलते नहीं अडे थे । सखियोंके यूथ केते बेहोशसे पड़े थे ॥ आई ललितकिशोरी व्रजबाल हँसते हँसते । कुंजोंमें ले गया छल गोपाल हँसते हँसते ॥ कछु जादूकीसी पुड़िया पढ़ डाल हँसते हँसते । वह कर गयो बेदरदी बेहाल हँसते हँसते ॥ ५५५ ॥

मन हर लियो है मेरो वा नन्दके दुलारे । मुसकायके अदासों

नयनोंके कर इशारे ॥ इक दृष्टिमेंही वाने जाने कहा कियो है । नहिं चैन रैन दिनमें वाके विना निहारे ॥ चीराके पेच वाके शिर मुकुट झुक रह्यो है । कटि किंकिणी रतनकी नूपुर बजत हैं प्यारे ॥ बेसर बुलाक सोहै गले मोतियोंकी माला । कंकन जड़ाऊ करमें नखचन्द्रसों उजारे ॥ छवि देत आरसीमें सुन्दर कपोल दोऊ । बरछीसमान लोचन नई सानपै सँवारे ॥ फूलोंके हाथ गजरे मुखपानकी ललाई । कानोंमें मोतीवाले कुंडलहू झलकें न्यारे ॥ लख श्यामकी निकाई सुध बुध सकल गँवाई । बौरी बनाय मोको कित गये बंशीवारे ॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तबीज टोना । स्याने तबीब पंडित कर कोटि यत्न हारे ॥ नारायण इन दृगनने जब सब स्वरूप देखा । तबसों भये हैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥

राग भैरवी ।

श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशिदिना री माई । माधुरी मूरत मोहनी सूरत चित्त लियो है चुराई ॥ लाल पाग लटक भाल चिबुक बेसर कंठमाल कर्णफूल मन्दहास लोचन सुखदाई । मोर-पंख शीश धरे मोतिनको हार गरे बाजूबन्द पहुँची कर मुद्रिका सुहाई ॥ छुद्रघंटिका जेहर नूपुर बिछिया सुदेश अंग अंग देखत उर आनन्द न समाई । मुरलीधर अधर श्याम ठाढ़े व्रजयुवति-माहिं सप्त सुरन तान गान गोवर्धन राई ॥ निरख रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान वल्लभपद किंकर दामोदर बलि जाई ॥ ५५७ ॥

भला रे रँगीले छैला तैं जादू मोपै डारा । रसभरी तान सुनाय मुरलीमें मोह लियो प्राण हमारा ॥ तांडी आन मेरे जियामें बस गई जानत है जग सारा । विट्ठल विपिन विनोद विहारन इक पल होत न न्यारा ॥ ५५८ ॥

राग जंगला ।

वटतर साँवरो ठाढ़ो । पीत दुकूल गले विच सेली चन्द्रचीर बाढ़ो ॥ मोर मुकुट पीतांवर सोहै फेटा कस गाढ़ो । पुरुषोत्तम प्रभु तुम्हरे मिलनको मोहित अति बाढ़ो ॥ ५५९ ॥

गजल ।

याद आता है वही वंशीका वजाना तेरा । छा गया दिलपर मेरे तानका लगाना तेरा ॥ जिस दिनसे दिलमें समाया क्यों नजर आता नहीं । मैं पता कैसे लगाऊँ चोरका ठिकाना तेरा॥ खुशनुमा आवाज शीरीं सुनके मायल दिल हुआ । अब कहीं लगता नहीं फिरता हूँ दिवाना तेरा ॥ कानोंमें कुंडल शिर मुकुट जुल्फैं तेरी क्या खूब हैं । यह अदा जीसे न भूले झलकें दिखाना तेरा ॥ दावमें ऐसे फँसे ग्वाल और गोपी सवही । यह बयाँ किससे करूं गौओंका चराना तेरा ॥ नागनाथन केशी मथन इन्द्रका तोड़ा गरूर । सात वरसके सिनमें गोवर्धनका उठाना तेरा ॥ हौं गुनहगार रोशन मुद्दतसे दरपै पड़ा । यह सिफ्त जाहिर जहांमें पार लगाना तेरा ॥ ५६० ॥

तैंने वंशीमें जो गाया मेरा जी जानता है । सैकड़ों वंशी सुनी और हजारों तानें, वह मजा फिर नहीं पाया मेरा जी जानता है॥ नाथने कूदके नाथ लिया कालीको, श्यामला श्याम कहाया मेरा जी जानता है ॥ ऐसे भारको कौन उठावे मोहन, डूबते व्रजको वचाया मेरा जी जानता है॥ जव द्रौपदीका चीर खींचा दुश्शासनने अंबरको ढेर लगाया मेरा जी जानता है । कहाँतक सिफ्त करूं करुणाकर तेरी, कृष्णदासके मन भाया मेरा जी जानता है५६१

राग टोडी ।

जवसे मोहिं नंदनँदन दृष्टि परो माई । कहा कहूँ वाकी छवि

वरणी नहिं जाई॥मोरनकी चंद्रकला शीश मुकुट सोहै । केसरको तिलक भाल तीन लोक मोहै ॥ कुंडलकी झलक कपोलनपर छाई । मनौ मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ॥ ललित भ्रुकुटि तिलक भाल चितवनमें टोना । खंजन औ मधुप मीन भूले मृगछौना ॥ सुन्दर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा । नटवर प्रभु वेप धरे रूप अति विशेखा ॥ हँसन दशन दाडिम द्युति मंद मंद हासी । दमक दमक दामिनि द्युति चमकी चपलासी ॥ छुद्र-घंटिका अनूप वरणी नहिं जाई । गिरिधर प्रभु चरणकमल मीरा वलि जाई ॥ ५६२ ॥

राग काफी ।

नयनो रे चितचोर वतावो । तुमहीं रहत भवन रखवारे वाँके वीर कहावो ॥ तिहारे बीच गयो मन मेरो चाहे जिती सौंहें खावो । अव क्यों रोवत हो दइ मारे कहुँ तो थांग लगावो ॥ घरके भेंदी वैठे द्वारपै दिनमें घर छुटवावो । नारायण मोहिं वस्तु न चहिये लेनेहार दिखावो ॥ ५६३ ॥

वेदरदी तोहिं दरद न आवे । चितवनमें चित वश कर मेरो अव काहेको आंख चुरावे ॥ कवसों परी तेरे द्वारेपै विन देखे जियरा घवरावै । नारायण महवूव साँवरे घायल कर फिर गैल वतावै ॥ ५६४ ॥

विन देखे मन मान न मेरो । श्याम वरन चितहरन लाड़िलो रूप सुधानिधि जगत उजेरो ॥ चाल मराल मनोहर वोलन चपल नयन मोतन हँसि हेरो । नारायण त्रिभुवनको स्वामी श्रीवृषभानुकुँवरिको चेरो ॥ ५६५ ॥

लावनी ।

सखि कैसे करूं मैं हाय न कछु वश मेरो । विन देखे साँवरो

चंद दृगनमें अँधेरो ॥ सखि ऐसो सुन्दर नहिं कहूँ मैं सब जग हेरो । वाकी जो लिखै तसवीर सो कौन.चितेरो ॥ सखि कठिन छैलको विरह आन मोहिं घेरो । सिगरी निशि तारे गिनतहि होत सवेरो ॥ सखि जो तू मिलावे आँजे वो रूप उजेरो । जबलों जीवोंगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखि नारायण जो नाहिं मिलैगो वह मनको लुटेरो । तौ नन्दद्वारपै आय करूंगी मैं डेरो ॥ ५६६ ॥

राग मलार ।

नहिं बिसरत सखी श्यामकी सुरतियाँ । हँसन दशन द्युति दामिनीसी दमकन चन्दसे वदनसों अति मृदु बतियाँ ॥ कुंडल झलक लख लगे ना पलक नकबेसरकी हलन चलन गजगतियाँ । नारायण जब निरखूँ लालको सफल नयन शीतल है छतियाँ५६७

राग बिलावल ।

लाल तेरे चपल नयन अनियारे । नन्दकुमार सुरतरसभीने प्रेमरंग रतनारे ॥ कछु अस रीझे चकित चहूँदिशि नववर जोवन वारे । मानो शरद कमलपर खंजन मधुर अलक घुँघरारे ॥ ए जो मीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेत झुलारे । गोवर्धनधर जान मुकुटमणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥ ५६८ ॥

राग देवगंधार ।

कमलसी अँखियाँ लाल तिहारी । तिनसों तक तक तीर चलावत वेधन छतियां हमारी ॥ इन्हें कहा कोउ दोष लगावत यह अजहूँ न सम्हारी । श्रीविट्ठल गिरिधरन कृपानिधि सूरतही सुखकारी ॥ ५६९ ॥

प्यारे तेरे नैन अमीरस बोरे । व्रजवनितन काननमें लग लग छिनमें मानहिं छोरे ॥ सुनत बनत है कहत बनत नहिं

प्रेमप्रीतिके डोरे । श्रीरघुराज सुनावो निशदिन माँगों यह कर जोरे ॥ ५७० ॥

राग खम्माच ।

तेरे जी नयना कारे अनियारे मतवारे प्यारे । रतनारे कजरारे मीन मृग छौना वारे अंजन सँवारे खंजन वारे डारे ॥ नन्दके दुलारे मोह लीनो वंशीवारे प्यारे ऐसे जी अनोखे नयना काहेसे सँवारे । कृष्णदास वलिहारे तन मन धन वारे विधना सँवारे टरत हूँ न टारे ॥ ५७१ ॥

राग भैरवी ।

जादूगर नयना बड़े विशाला । मोर मुकुट मकराकृति कुंडल गल वैजन्ती माला ॥ पीतांबर कटि कछनी काछे नन्द यशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटत हैं मेटत कालको ताला ॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत टेढ़ी विरहोंवाला ॥ ५७२ ॥

राग विभास ।

जादूगर रे थारे नैन । भवाँ कमान वान कर तने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजेमें बरछीसी घायल कीनी ऐन ॥ देखी अजव गजव तेरी चितवनमों नेक हु नाहिं रुकै न । युगल विहारीके विन देखे रंचक परत न चैन ॥ ५७३ ॥

राग कान्हरो ।

टेढ़े हू सुन्दर नैन, टेढ़े मुख कहै बैन, टेढ़ो हू मुकुट, वात टेढ़ी कछु कहि गयो । टेढ़े घुँघुरारे वाल, टेढ़ी गल फूलमाल, टेढ़ो वुलाक मेरे चित्तमें वसै गयो ॥ टेढ़े पगऊपर नूपुर झनकार करें, वाँसुरी वजाय मेरे चित्तको चुरै गयो । ऐसी तेरी टेढ़ीनको ध्यान धरैं मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लै गयो ॥ ५७४ ॥

टेढ़ी कला चन्द्रकी सकल जग वन्दित है, टेढ़ी तान मोहत है मन्मथके जालकी । टेढ़ी है कमान वाण लागत ही वेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढ़ी करवालकी ॥ टेढ़ी लकड़ीको कोऊ वनमें न काटि सकै, टेढ़ी काशीपुरी जामें शंका नहीं कालकी । टेढ़ी जरकस भाल टेढ़ी उर वनमाल मेरे मन वसी टेढ़ी मूरति गोपालकी ॥ ५७५ ॥

राग कालिंगडा ।

आँखियाँ लागीं सामलिया प्यारेसों । जब वरज्यो वरजी नहिं मानी अब क्या होत पुकारेसों ॥ मोर मुकुट मकराकृति कुंडल लग रही साँझ सवारेसों । मधुरअली दर्शन विन तरसत नेह लगा वंशीवारेसों ॥ ५७६ ॥

राग भैरव ।

देखो री यह नन्दका छोरा वरछी मारे जाता है । वरछीसी तिरछी चितवनकी सैनों छुरी चलाता है ॥ हमको घायल देख वेदरदी मन्द मन्द मुसकाता है । ललितकिशोरी जखम जिगर-पर नोन पुरी वुरकाता है ॥ ५७७ ॥

राग रामकली ।

नयना मान अपमान सह्यो । अति अकुलाय मिले री वर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी वान परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो । ज्यों मर्कट मूठी नहिं छाँडत नलिनि सुबास गह्यो ॥ जैसी नीर प्रवाह समुद्रहिं माँझ वह्यो सो वह्यो । सूरदास इन तैसेइ कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ५७८ ॥

लोचन भये श्यामके चेरे । एतेपर सुख पावत मोतन फेर न हेरे ॥ हा हा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उनहीं ।

उनको वदन विलोकत निशदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललित त्रिभंगी छविपर अटके पटके मोसों तोरी । सूरदास यह मेरी कीनी आपन हरिसों जोरी ॥ ५७९ ॥

राग विहार ।

ललित छवि निरखि अघात न नैन । रोम रोमप्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन ॥ हा हा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-निधि सुख ऐन । कृष्णप्रिया छिन विलम न कीजै कल न परै दिन रैन ॥ ५८० ॥

राग भैरव ।

आँखनमें दुराय प्यारी काह्न देखन दीजिये । हिये लगाय सुख पाय सब गुणनिधि पूर्ण जोई जोई मनइच्छा होय सोई सोई क्यों न कीजिये ॥ मधुर मधुर वचन कहत श्रवणन सुख दीजिये । निर्मल प्रभु नन्दनँदन निरख निरख जीजिये ॥ ५८१ ॥

राग विभास ।

आँखियन यह टेव परी । कहा करूँ वारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥ चितवत रहत चकोर चन्द्रलों नहिं बिसरत मोहिं एक घरी । यद्यपि हटकि हटकि हौं राखत त्यों त्यों होत खरी॥ चुक जो रही वा रूपजलधिमें प्रेमपियूषभरी । सूरदास गिरि-धर तनु परसत लूटत निशि सगरी ॥ ५८२ ॥

राग रेखता ।

चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चाँदसे मुखपर । छुटे निस्तरसे बालोंको सँभालोगे तो क्या होगा ॥ नहीं कछु हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसराई । जरा टुक नैन ऊँचे कर निहारोगे तो क्या होगा ॥ तुम्हारे होचुके वारी हमारे हो न हो प्यारे । भला

मुख पानका वीरा जो धारोगे तो क्या होगा ॥ ललितकिशोरी कर जोरी हा हा यह है विनय मोरी । तड़पते मुझ विचारेको पुकारोगे तो क्या होगा ॥ ५८३ ॥

राग देश ।

साँवरे दी भालन माये सानूँ प्रेम दी कटारियाँ । सखी पूँछे दोऊ चारे व्याकुल क्यों भैयाँ नारे रंगक रँगीले मोस दृगभर मारियाँ॥ व्याकुल वेहाल भैयाँ सुध वुध भूल गैयाँ अजहूँ न आये श्याम कुँजविहारियाँ । यमुनाकी घाटी वाटी असां तेरी चाल पछाती वँसिया वजावाँ कान्हा भैया मतवारियाँ ॥ मीरावाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया तू तो मेरो प्रभुजी प्यारा दासी हौं तिहारियाँ ॥ ५८४ ॥

मेरे नयनोंका तारा है मेरा गोविंद प्यारा है ॥ व सूरत उसकी भोलीसी व शिर पगिया मठोलीसी । व बोलीमें ठठोलीसी वोल दृग वाण मारा है ॥ व घूँघरवारियाँ अलकें व झोके वारियाँ पलकें । मेरे दिल वीचमें हलकें लुटा घरवार सारा है ॥ दरश सुख रैनदिन लूटे न छिनभर तार यह टूटे । लगी अब तो नहीं छूटे प्राण हरिचन्द वारा है ॥ ५८५ ॥

ठुमरी ।

इस साँवलियाकी लटक चाल जियमें मोरे वस गई रे ॥ मुकुट पितांवर अधिक सुहावे ले मुरली पढ़ फूँक वजावे, लटकारी नागिनिसी लपटे तन मन डस गई रे ॥ विन देखे नहिं परत चैन सव विरहन कैसे कटत रैन, कहा करूं मेरी, गोइयाँ विन दरश तरस गई रे ॥ लिखी ललाट मिटत नहिं मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण, अव आन फँसी मधुवन कुंजन परवश होय

फँस गई रे ॥ मधुसूदन पिया प्यारा आवै तिरछी बाँकी छवि दिखलावै, डार गले बैयाँ सजनी सब कसक निकस गई रे ॥५८६॥

राग जंगला झँझोटी।

गली वे हमारी क्यों नहीं आमदा बिहारी प्यारे। दर्श दिखाय निहाल करोगे सुन्दर रूप उजारे प्यारे॥ तेरी याद मेरे मनपर रहिंदी श्याम स्वरूप आँखनके तारे। पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तन मन धन सब वारे॥ ५८७॥

रेखता।

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आ जा। आँखें तरस रही हैं सूरत इन्हें दिखा जा॥ चेरी हूँ तेरी प्यारे इतना तू मत सता रे। लाखोंही दुख सहा रे टुक अब तो रहम खा जा॥ तेरेही हेत मोहन छानी है खाक वन वन। दुख झेले शिरपै अनगिन अब तो गले लगा जा॥ मनको रहूँ मैं मारे कबतक बतादे प्यारे। सूखे बिरहमें तारे पानी इन्हें पिला जा॥ सब लोकलाज खोई दिन रैन बैठ रोई। जिसका कहीं न कोई तिसका तू जी बचा जा॥ मुझको न यूँ भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ। अपनोंको मत सतावो ऐ प्राणप्यारे राजा॥ हरिचन्द नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी। मरती है वह विचारी आकर उसे जिला जा॥ ५८८॥

राग काफी।

मिलना वे दिलदार साँवरे। हुसन तुसारे चूर हुआ दिल लीना तैं न कबका दाव रे॥ बाँकी अदा चश्मों वस दी दीठा परे न दूजा ठाँव रे। ललितकिशोरी नूँ लख समझावो एक नहीं मेरे मन भाव रे॥ ५८९॥

मिलना वे महबूब विहारी । भोर भये वृन्दावन कुंजों जाना होकर गली हमारी ॥ मृदु मुसकान साग़ूँ दिलबीच भौंदी झमक चलन नूपुर धुन प्यारी । ललितकिशोरी साँवरी सूरत घुँघरी अलकोंपर वलिहारी ॥ ५९० ॥

या साँवरेसों मैं प्रीति लगाई । कुलकलंकते नाहिं डरोंगी अव तो करों अपने मन भाई ॥ वीच वजार पुकार कहूँ मैं चाहे करो तुम कोटि वुराई । लाज मरजाद मिली औरनको मृदु मुसकान मेरे वट आई ॥ विन देखे मनमोहनको मुख मोहिं लागत त्रिभुवन दुखदाई । नारायण तिनको सव फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई ॥ ५९१ ॥

राग रामकली ।

एक गामको वास धीरज कैसेकै धरौं । लोचन मधुप ... नहिं मानत यद्यपि यत्न करों ॥ वे या मग नितप्रति आवत हैं हों दधि लै निकरौं । पुलकत रोम रोम गदगद स्वर आनँद उमँग भरों ॥ पल अंतर चल जात कल्पभर विरहा अनल जरों । सूर सकुच कुलकान कहाँ लग आरज पन्थ डरों ॥ ५९२ ॥

मेरे जिया ऐसी आन वनी । विना गोपाल और नहिं जानूं सुन मोसों सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हीरा एक कनी । मन वच क्रम मोहिं और न भावे अव मेरे श्याम धनी ॥ सूरदास स्वामीके कारण तजा जात अपनी ॥ ५९३ ॥

राग गौरी ।

अव तो प्रगट भई जग जानी । वा मोहनसों प्रीति निरंतर क्यों न रहेगी छानी ॥ कहा करों सुन्दर मूरत इन नैननमाँझ समानी । निकसत नहीं वहुत पच हारी रोम रोम उरझानी ॥

अब कैसे निर्वार जात है मिले दूध ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अन्तरयामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ ५९४ ॥

राग सोरठ।

मेरे गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई । जाके शिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥ शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोही । तात मात भ्रात बन्धु आपनो न कोई ॥ छाँड़ दई कुलकी कान क्या करैगा कोई । सन्तन सँग बैठ बैठ लोकलाज खोई ॥ अब तो बात फैल गई जानै सब कोई । अँसुवन जल सींचि सींचि प्रेम-बेलि बोई ॥ मीरा प्रभु लगन लगी होनी हो सो होई ॥५९५ ॥

रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी । जबलग कंचन कसिये नाहीं होत न बारा पानी ॥ लोकलाज कुलकान जगतकी बहाय दीनी जैसे पानी। अपने घरको परदा कर ले मैं अबला बौरानी॥ तर्कश तीर लग्यो मेरे हियरे गरक गयो सनकानी । मीरा प्रभु-जीके आगे नाची चरणकमल लपटानी ॥ ५९६ ॥

राग बरवा।

मैं गिरिधर सँग राती ग्वैयाँ ॥ पँच रँग चोला रँगा दे सखी मैं झुरमुट खेलन जाती । ओही झुरमुट मेरो साईं मिलेगा खोल तनी गल गाती ॥ चन्दा जायगा सूरज जायगा जायगी धरनि अकाशी । पवन पानी दोनोंही जायँगे अटल रहै अविनाशी ॥ सुरत निरतका दीउड़ा सँजोले मनसाकी करले बाती । प्रेमहटीका तेल मँगा ले जग रह्या दिनते राती ॥ जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजैं पाती । मेरे पिया मेरे माहिं बसत हैं ना कहूँ आती न जाती ॥ पीहरे बसूँ न बसूँगी सासघर सद्गुरु शब्द सुनासी । ना घर तेरा ना घर मेरा कह गई मीरा दासी ॥५९७॥

राग जंगला

मैं नूँ वरज न भोलड़ी मा पीया नाल मैं रत्तीयाँ ॥ तकीया ना आसरा माएना कोई राह गली। मैं शौहर ढूँढ़ा आपना माए कर कर वाहिं खली ॥ साई फूल गुलाबदा मेरी झोलड़ी टूट पया। वेसर भोले सुँघया मेरे रोम रोम रच गया॥ शाह सरका महिंदी रंगुली माए लाई कुल जहान। इकना नूँ रंग चढ़ गया इक रह गये अभना मान ॥ ५९८ ॥

राग पहाडी।

मै नूँ हरदम रहिंदा चा सज्जन दे शोक नजारे दा ॥ जब तैं कीता असाँवल फेरा हार शृंगार पया भटभेरा सीने डरके साँग गुझड़ा इश्क प्यारे दा। रल मिल सैयां मारन वोली औंहि मेरा साहिब मैं ओहदी गोली रख दीहां जान पछान जामिन हशड़ दिहाड़े दा ॥ ना आदम ना हव्वा आई ताते जाती अपना माही आया साहव आप वनके रूप सतारे दा। मीरां शाह विभूति रमावाँ साँवरे देदर अलख जगावां ओही है शिर-ताज आज जनीच न कारे दा ॥ ५९९ ॥

राग विहाग।

मन अटक्या वे परवाडे नाल ॥ नयन फँसे दिल मिल या लोडे मूरख लोक असानूँ मोडे मेरा हरदम जाँदा आहे नाल ॥ मुल्लां काजी नमाज पढ़ावन हुकम शरादा भय दिखलावन साडे इशक नूँकी इस राहे नाल ॥ नदियों पार सजन दा ठाना कीते कौल जरूरी जाना कुछ करले सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोई जेहडा इश्क कमावे जित वल प्यारा उत्ते वल जावे बुल्ले साह जा मिल तू अलाहे नाल ॥ ६०० ॥

राग देवगंधार।

बसे मेरे नैननमें दोउ चन्द। गौर वर्ण वृषभानुनन्दनी श्याम वरण नँदनंद॥ गोलक रहे लुभाय रूपमें निरखत आनँदकन्द। जय श्रीभट्ट युगलरस वन्दों क्यों छूटे हढ़ फन्द॥ ६०१॥

बसे मेरे नैननमें नँदलाल। साँवरी सूरत माधुरी मूरत राजिवनयन विशाल॥ मोर मुकुट मकराकृति कुंडल अरुण तिलक दिये भाल। अधरन वंशी करमें लकुटी कौस्तुभमणि वन-माल॥ बाजूबन्द आभूषण सुन्दर नूपुर शब्द रसाल। दास गोपाल मदनमोहन पिय भक्तनके प्रतिपाल॥ ६०२॥

निरख सखि चार चन्द्र इक ठोर। बैठे निरखत पिया तिया दोउ सूरसुताकी ओर॥ द्वै विधु नील श्याम घन जैसे द्वै विधुकी गति गोर। ताके मध्य चार शुक राजत द्वै फल आठ चकोर॥ शशि शशिसंग प्रवाल कुन्द अलि तहँ उरझ्यो मन मोर। सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि बलि बलि युगल किशोर॥६०३॥

राग परज।

या ब्रजमें कछु देख्यो री टोना। ले मटुकी शिर चली गुज-रिया आगे मिले बाबा नन्दके छोना॥ दधिका नाम बिसर गयो प्यारी ले लेहुरी कोउ श्याम सलोना। वृन्दावनकी कुंज गलीमें आँख लगाय गयो मनमोहना॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर सुन्दर श्याम सुघर रस लोना॥ ६०४॥

राग भैरव।

नयननकी कोरें कोऊ लेहै। है कोइ ऐसी रसिक रँगीली प्राण निछावर देहै॥ नूतन मधु मैं मेल ले आई छुवत खुमारी ऐ-है। ललितकिशोरी ततछिन जियरा टूक टूक ह्वै जैहै॥६०५॥

राग मलार।

कोऊ माई लैहै री गोपालहिं। दधिको नाम श्यामसुन्दर घन सुख चढ़यो व्रजबालहिं॥ मटुकी शीश फिरत व्रजवीथिन बोलत वचन रसालहिं। उफनत तक्र चहूँदिशि चितवत चित लाग्यो नँदलालहिं॥ हँसत रिसात बुलावत वरजत देखो उलटी चालहिं। सूर श्याम विन और न भावत या विरहिन वेहालहिं॥ ६०६॥

राग बरवा।

हमींको प्यारे दरश दिखाय दे। लपट झपट कर मटुकी फोरी कर मोर मुकुटकी छैयां॥ मोहन प्यारे नन्ददुलारे तुम लीजो काँधे धर उनको। सुन यशुमति इक न्याउ सुन्यो प्रीतिहिं इन मोहनकी॥ हमींको०॥ हौं वृन्दावन जाति हती शिर धर मटुकी माखनकी। बैयाँ आन झकोरत मोहन सब सखियां मुसक्याय घरको सरकी। हमींको०॥ यह मटुकी अनवेध मोतिनकी मोल जो लागे नन्द यशोदा दोऊ विकैंगे। सूरदास कहा व्रजको वसिवो नित उठि माँगत दान॥ हमींको प्यारे०॥ ६०७॥

राग गौरी।

ग्वालिन क्यों ठाढ़ी नँद पौरी। बेर बेर इत उत फिर आवत विजया खाय भई बौरी॥ सुन्दर श्याम सलोनेसे ढोटा उन दधि लेन कह्यो री। हमको कह गयो नेक खड़ी रह आपुन बैठ रह्यो री॥ नौलख धेनु नंदबाबा घर तेरो ही लेन कह्यो री। जोवन माती फिरत ग्वालनी तैं मेरो लाल ठग्यो री॥ इतनी सुनत निकस आये मोहन दधिको मोल कहो री। परमानंद स्वामीरूप लुभाने यह दधि भलो विक्यो री॥ ६०८॥

राग विहाग।

तुम्हैं कोउ टेरत है रे कान्ह। गोरीसी भोरी थोरे दिननकी

वारीसी बैस उठान॥छूटी अलक लाल पट ओढ़े नागरि परम सुजान। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन धीर धरत नहिं प्रान ॥ ६०९ ॥

राग जिला।

श्रीवृन्दावन रज दरशावे सोई हितू हमारा है । राधा मोहन छवी छकावै सोई प्रीतम प्यारा है ॥ कालिन्दीजल पान करावे सो उपकारी सारा है । ललितकिशोरी युगल मिलावे सो अँखियोंका तारा है ॥ ६१० ॥

राग देश।

दम्पति दर्पण हाथ लिये । निरखत मुख अरविंद कपोलन मेल मुदित गल बाँह दिये ॥ ललितकिशोरी मदन तरंगें परश अंग सरसात हिये । छिनहूँ यह छबि जिन न बिलोकी कहा कोटि शत कल्प जिये ॥ ६११ ॥

नीको लगे राधावर प्यारो। मोर मुकुट पियरो पटरा है लकुटी कर मतवारो ॥ रोकत गैल छैल अलबेलो नटवर वेष सँवारो । ललितकिशोरी मोहन रसिया जीवन प्राण हमारो ॥ ६१२ ॥

राग खेमटा।

तू मेरा मन मोहा साम‌लिया । भौंह कमान तान कानन लौं नयन वान हँस मारे छलबलिया ॥ ठुमक चलन बोलन मुखपंकज मधुर हँसन कर डारे बेकलिया। जन रघुनाथ इतेपर मोहन अब न बजा प्यारे लाल मुरलिया ॥ ६१३ ॥

सखी राधावर कैसा सजीला । देखो री गोइयाँ नजर नहीं लागे कैसा खुला शिर चीरा छबीला ॥ वार फेर जल पियो मेरी सजनी मत देखो भर नयन रँगीला । हरीचंद मिल लेहौं बलैयां अँगुरिन कर चटकाय चुटीला ॥ ६१४ ॥

रेखता ।

लगा है इश्क तुमसेती निबाहोगे तो क्या होगा । मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुस्न चश्मोंके प्याले भर पिलाओगे तो क्या होगा । चमन बिच आनकर मुखड़ा दिखाओगे तो क्या होगा ॥ भरम धरता है कुल आलम हँसाओगे तो क्या होगा । सजन तुमबिन तड़पता जी जिलाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल दिवानेको सताओगे तो क्या होगा । अजब दीदार रोशन है छिपाओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल परायेको दिलाओगे तो क्या होगा । जिगरके दर्दकी दारू बताओगे तो क्या होगा ॥ रसिक गोविन्द सीनेसे लगाओगे तो क्या होगा ॥ ६१५ ॥

गजल ।

जहाँ ब्रजराज कल पाये चलो सखि आज वा वनमें । विना वा रूपके देखे विरहकी दौ लगी तनमें ॥ न कल पड़ती है वेकलको न जी लगता है बिन जानी । भई फिरती हूँ योगिनसी सरे बाजार गलियनमें ॥ करूं कुरवान जी उसपर जनमभर गुण न भूलूँगी । मेरा महबूब जो लाकर बिठा दे तेरे आँगनमें ॥ नहीं कुछ गर्ज दुनियाँसे न मतलब लाजसे मेरा । जो चाहो सो कहो कोई बसा अब तो वही मनमें ॥ तेरी यह बात साँची है नहीं शक इसमें नारायन । जो सूरतका है मस्ताना वह परचे कैसे बातनमें ॥ ६१६ ॥

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदाके हाथ क्या आया । तड़पता छोड़कर तेगे कजाके हाथ क्या आया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा । भला पूछे कोई उस

महलकाके हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुंचये दिलको कभी उसने न आ खोला । गई बालाई वाला उस सबाके हाथ क्या आया ॥ लगाना खूब दिल चाहा था मैंने उसके पाऊँसे । वले इस पेश कदमीसे हिनाके हाथ क्या आया ॥ फिरे शहरो बियावाँ तालिबे दीदार नारायन । बिठाया उसको परदेमें इयाके हाथ क्या आया ॥ ६१७ ॥

लावनी ।

हम तेरे इश्कमें श्याम बहुत दिन भटके । अब मिला हमैं तू सनम खुले पट घटके ॥ किये रंजो अलम मंजूर जरा नहिं भटके । सब दहशत दिलकी निकल गई छट छटके ॥ कई लाख बजाके सनम दिया तूने झटके । पर गिरे न हरगिज़ कदम पकड़ हट हटके ॥ कइ बार गया शिर तेरे इश्कमें कटके । फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ जब नाम बनाकर फाँद जानकर लटके । तब मिला हमैं तू सनम खुले पट घटके ॥६१८॥

राग नट ।

कान्हर कारो नन्ददुलारो मो नयननको तारो री । प्राणपियारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो री ॥ दृगमें राजत हियमें छाजत एक छिना नहिं न्यारो री । मुरली टेर सुनावत निशदिन रूप अनूपम वारो री ॥ चरणकमल मकरन्द लुब्ध है मन मधुकर गुंजारो री । रसरँगकेलि छबीले प्रभुसँग हितसों सदा बिहारो री ॥ ६१९ ॥

राग देश ।

मन मोह लिया श्यामने वंशीको बजाके । वेखुद किया दिलदारने जुल्फोंको दिखाके ॥ पट पीत मुकुट मोर मुकुट

लटपटी पगिया । चलते हैं लटक चालसे भ्रुकुटीको नचाके ॥ अलमस्त किया दममें व्रजनारिको मोहन । मुरलीके साथ किंकिणी नूपुरको वजाके ॥ कुर्बान सनम तुझपै दिलो दीन हमारा । राखो ललितकिशोरीको गरेसे लगाके ॥ ६२० ॥

साँवरेकी जिन निरखी मुसक्यान । सो तो भई घायल ताहीं छिन विन वरछी विन वान ॥ कल नहिं लेत धरत नहिं धीरज तलफत मीनसमान । नारायण भूली सुध तनुकी विसर गयो सव ज्ञान ॥ ६२१ ॥

गौर श्याम वदनारविन्दपर जिसको वीर मचलते देखा । नयन वान मुसक्यान संग फँस फिर नहिं नेक सम्हलते देखा ॥ ललितकिशोरी युगल इश्कमें वहुतोंका घर घलते देखा । डूवा प्रेमसिंधुका कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥ ६२२ ॥

राग भैरव ।

प्यारा नयना लगाय छिप जामदा । यादता रहिं दी हरदम तेरी मुखड़ा क्यों नहीं दिखलामदा मेरा जिया तर्सामदा ॥ जवते लगन लगी है मनमें गृह अँगना न सुहामदा । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मनविच क्यों ना मन जामदा ॥ ६२३ ॥

ठुमरी ।

कोई दिलवरकी डगर वताय दे रे । लोचन कंज कुटिल भ्रुकुटी कर कानन कथा सुनाय दे रे ॥ जाके रंग रँग्यो सव तन मन ताकी झलक दिखाय दे रे । ललितकिशोरी मेरी वाकी चितकी साँट मिला दे रे ॥ ६२४ ॥

राग सारंग ।

जाको मन लागो गोपालसों ताहि और नहिं भावे । लेकर

मीन दूधमें राख्यो जलबिन सचु नहिं पावै ॥ जैसे सूरमा घायल घूमत पीर न काहु जनावै । ज्यों गूँगो गुड खाय रहत है स्वाद न काहु बतावै ॥ जैसे सरिता मिली सिन्धुमें उलट प्रवाह न आवै । जैसे सूर कमलमुख निरखत चित इत उत न चलावै ॥ ६२५ ॥

राग कान्हरा ।

श्यामभुजाकी सुन्दरताई । चन्दन खौर अनूपम राजत सो छवि कही न जाई॥ अति विशाल जानूलों परशत इक उपमा मन आई। मनो भुवंग गगनसों उतरयो अधमुख रह्यो झुलाई ॥ रत्नजटित पहुँची कर राजत अँगुरी सुन्दर भारी । सूर मनो शिरमणि सोहत फण फणकी छबि न्यारी ॥ ६२६ ॥

राग धनाश्री ।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई । दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो शाक विदुर घर पाई ॥ जूँठे फल शबरीके खाये बहु विधि प्रेम लगाई । प्रेमके वश नृप सेवा कीनी आप बने हरि नाई ॥ राजसूय यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हो तामें जूँठ उठाई। प्रेमके वश अर्जुनरथ हाँक्यो भूल गये ठकुराई ॥ ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन गोपिन नाच नचाई । सूर कूर इस लायक नाहीं कहँलग करौं बड़ाई ॥ ६२७ ॥

राग काफी ।

राधारमण मनोहर सुन्दर तिनके सँग नित रहते हैं। छके रहत छवि ललित माधुरी और नहीं कछु चहते हैं ॥ चितवन हँसन चोट दशननकी निशदिन हियपर सहते हैं । ललितकिशोरी करै न ओटैं फरी नहीं कर गहते हैं ॥ ६२८ ॥

सवैया ।

चारहु वेद पुराण अठारहों चौसठ तंत्रके मंत्र विचारे ।
तीनसौ साठ महाव्रत संयम मंगल यज्ञपुरी पुर सारे ॥
योग वियोग प्रयोग उपासन मैं हरिदत्त सभी निरधारे ।
तीनोंहि लोकनके सिगरे फल मैं हरिनामके ऊपर वारे ॥६२९॥

कवित्त ।

चाहे तू योग कर भ्रुकुटी मध्य ध्यान धर, चाहे नाम रूप मिथ्य जानके निहार ले । निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रह्यो ऐसो तत्त्वज्ञान निज मनमें तू धार ले ॥ नारायण अपनेको आपही बखान कर, मोते वह भिन्न नहीं या विध पुकार ले । जौलौं तोहिं नन्दको कुमार, नाहिं दृष्टि परै, तौलौं तू भलेही बैठ ब्रह्मको विचार ले ॥ ६३० ॥

चढ़े गजराज चतुरंगिणी समाज यह, जीति छितिपाल सुर-पालसों सजत हैं ॥ विद्याहू अपार पढ़ तीरथ अनेक कर, 'यज्ञ और दान बहु भाँतिसों करत हैं । तीन कालमें नहाय इन्द्रियोंको वश लाय, करके संन्यास विषयवासना तजत हैं । योग और जप और तपको अनेक करें विना भगवन्तभक्ति भव ना तरत हैं ६३१

राग भैरव ।

कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलिमैं । ताके पदपंकजकी रेणु बालि मैं ॥ सोई सुकृती सोई पुनीत सोई कुलवन्ता । जाको निशि वासर रहै कृष्णनामचिन्ता॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्णनाम-माहीं ।विना कृष्णनाम कलि उद्धार और नाहीं॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहूँ न बिसरिये । कृष्णनाम ले ले भवसागरको तरिये ॥ श्रीगोवर्धनधरन प्रभु परम मंगलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ६३२ ॥

राग आसा ।

हर हर हर हर हर हर हरे । हर सुमिरत जन वहु निस्तरे ॥ हरिके नाम कबीर उजागर । जन्मजन्मके काटे कागर ॥ जन रमदास रामसँग राता । गुरूप्रसाद नरक नहिं जाता ॥ गोविंद गोविंद संग नामदेव मन लीना । आठ दामको छीपरो होयो लाखीना ॥ बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरा । नीच कुला जो लाहरा भयो गुणी गहीरा ॥ सैन नाई बुतकारिया ओह घर घर सुनिया । हिरदे वस्या पारब्रह्म भक्तनमें गिनिया ॥ रामदास अधमते वाल्मीकि तिम त्यागी माया । परघट होय साध संग हरीदर्शन पाया ॥ यह विध सुनके जा टरो उठ भक्ती लागा । मिले प्रत्यक्ष गुसाइयाँ धन्ना बड़भागा ॥ ६३३ ॥

राग माँझ ।

हर हर जिनके मुखसों निकसे वारे तिन्हाँ दे जाइये जी । धूड़ तिन्हादे चरणांदी लै मस्तक अपने लाइये जी ॥ दुर्मति दूर करे निहकेवल शिवघर वासा पाइये जी । दुनीदास हर साधु संगति मिल निर्मल महल समाइये जी ॥ ६३४ ॥

राग कान्हरा ।

माधव केवल प्रेम पियारा । गुण अवगुण कछु मानत नाहीं जानि लेहु जो जाननहारा ॥ व्याधाचरण अवस्था ध्रुवकी गजने शास्त्र कौन विचारा । भक्त विदुर दासीसुत कहिये उग्रसेन कछु बल नहिं धारा ॥ सुंदर रूप नहीं कुबजाको निर्धन मीत सुदामहुँ तारा । कहँलौं वरणि सकौं सबहिनको मोपै पायो जात न पारा ॥ सुन प्रभुसुयश शरण हौं आयो मोसे दीनको काहे बिसारा । भक्तरामपर वेग द्रवो क्यों ना कहिये दासन दास हमारा ॥ ६३५ ॥

राग मलार ।

प्रभुके ऊँच नीच नहिं कोई । प्रेमभक्तिकर जो जन ध्यावै उत्तम कहिये सोई ॥ कुलवन्ता राजा दुर्योधन तिस गृह पग ना धारयो । जाय विदुरके भाजी अरपी जात न जन्म विचारयो ॥ ब्राह्मण एक करत नित पूजा ताको भोग न लीना । धन्ना जाटके शौच न कोई होय प्रगट दुध पीना ॥ ऊँचे जन्म कर्मके तपसी ना किसे मन्दिर धावे । महाकुचील भीलदे करते ले जूठे फल खावे ॥ जाय पंडे सब आगे बैठे ना किसे देत दिखाई । नामदेवको देहरा फेरयो लीनो कंठ लगाई ॥ पारब्रह्म पूरण अविनाशी सब घटकी मति जाने । दुनीदास प्रभु भक्तवछल है कपट हेतु नहिं माने ॥ ६३६ ॥

राग जिला झँझौटी ।

गोपी प्रेमकी धुजा । जिनन गुपाल किये वश अपने उर धर श्यामभुजा ॥ शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीन्ही उद्धव सन्त सराहीं । भूरिभाग्य गोकुलकी वनिता अति पुनीत जगमाहीं ॥ कहा भयो जो विप्रकुल जन्म्यो सेवा सुमिरन नाहीं । श्वपच पुनीत दास परमानँद जो हरिसन्मुख जाहीं ॥ ६३७ ॥

राग जंगला काफी ।

मन मानेकी वात नहीं कछु जातिको कारन । कुब्जा कर्मा और भीलनी पूतना और निषाद । गति पाई जिन यशुमति जैसी भये भुवन विख्यात ॥ वाल्मीकि रैदास विदुर औ केशव कवीर किरात । सैन भक्त अरु सधन कसाई कहु इनकी क्या जात ॥ जप तप योग दान व्रत संयम नहिं इनसों हर्षात । रसिकनाथ प्रभु इकरस साँचो भावभक्ति पतियात ॥ ६३८ ॥

राग बिहाग।

प्यारो पैये केवल प्रेममें। नहीं ज्ञानमें नहीं ध्यानमें नहीं करम कुल नेममें॥ नहीं भारतमें नहीं रामायण नहीं मनुमें नहिं वेदमें। नहिं झगरेमें नहीं युक्तिमें नहीं मतनके भेदमें॥ नहिं मन्दिरमें नहिं पूजामें नहिं घंटाकी घोरमें। हरीचंद वह बांध्यो डोलै एक प्रेमकी डोरमें॥ ६३९॥

सुँदरीलीला।
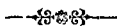
राग कान्हरा।

कहाँ करते मुँदरिया डारी। मैं बलि जाउँ बताय किशोरी तैं कबते न निहारी॥ आवत हैं भुज अंसन दीने ए हो छैल बिहारी। जो देखी तो कहिये मोते मुदित होत कह भारी॥ चोरी चपल लगावत मोको न्याव करो तुम प्यारी। वृन्दावनहित रूप दरश पड़ी लाल फेंट जब झारी॥ ६४०॥

ठुमरी।

दे मुँदरी मेरी छैलविहारी। वा मुँदरी है लाख टकाकी सो जानत हौ कृष्ण मुरारी॥ वा मुँदरीपर नाम हमारो तुम करिहौ क्या चोरि हमारी। नारायण आधीन तुम्हारे मोहिं मुंदरी दीजै गिरिधारी॥ ६४१॥

राग कान्हरो।

कौन रूप कौन रंग कौन शोभा कौन अंग, कौन काज महराज त्रियावेष कीयो है। नाकहूमें नत्थ हत्थ चूरन भरे हैं लाल, काननमें कर्णफूल वेंदी भाल दीयो है॥ चन्द्रहार उर राजै

चम्पकली कंठ साजै, मुकुट उतार ओढ़ चूनरीको लीयो है । नारायण स्वामी देख, चीन्हि गई प्यारी भेख, खिलखिल हँस राधे पट सुख दीयो है ॥ ६४२ ॥

ठुमरी ।

मायेपै मुकुट श्रुति कुंडल विशाल लाल अलक कुटिल सो अलिन मदगंजनी । काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीतपट अंग सो विराजे श्रुति वैजनी ॥ दिये गल वाहीं प्रिया प्रीतम विहार करें अति अनुराग भरे आईं नई द्वै जनी । कहै जैदयाल प्रभु मेरो मन मोहि लियो मन्द मन्द बाजत गोविंद पायँ पैंजनी ॥ ६४३ ॥

राग प्रभाती ।

गहनो तो चुरायो तैंने केशो यादोरायको ॥ हाथकी अँगूठी लीन्ही, तोरा लीनो पाँयको । माथेको शिरपेंच लीनो रत्न जरायको ॥ गाम तो बरसानो कहिये श्रीसुखधामको । लालजीको सासरो श्रीराधेजीको मायको॥लेके तो भाग आई फेर नहिं पायगो। सूर श्याम मदनमोहन नचो गढ़वायगो ॥ ६४४ ॥

राग दादरा।

तुम या ग्राम कहाँ रहो आली । हम कबहूँ देखी न सुनी है यह शोभा छवि रूप निराली ॥ नखशिखलों शृंगार मनोहर अधर रची पाननकी लाली । नारायण कहो प्रगट खोलके बात न राखो बीच बिचाली ॥ ६४५ ॥

राग आसावरी।

मोहनि रूप बनायो हरिने बाना । बाहँ बरा बाजूबँद सोहे छला छाप दस्ताना ॥ मुखभर पान सींक भर सुरमा ले दर्पण कान्हा मन

मुसकाना। माय यशोदा यों उठ बोली तू क्यों भयो जनाना॥ मोहिं छल गई वृषभानुकिशोरी ताहि छलबेको बरसाने मोहिं जाना ॥ बरसानेकी कुंजगलिनमें कान्हा फिरे दिवाना । भानरायकी पौर बूझके काहू गूजरियासों जाय बतराना ॥ ६४६ ॥

सवैया ।

मनमोहन लाल बड़ो छलिया सखि बारूकी भीत उठावत है ।
कर तोरत है नभकी तरियाँ चट चन्दमें फन्द लगावत हैं ॥
जहाँ पौन न जाय सकै मुरली धुनकी तहाँ दूती पठावत है ।
कहुँ चोर कहूँ दधिदानी बने कहुँ शाह लली बनि आवत है॥६४७॥

मालिनलीला।

राग कालिंगड़ा।

इक मालिन पौरी आई ॥ टेक ॥ नाना विधिके फूल बतावै तुम्हरे कारण लाई ॥ रंग साँवरो वा मालिनको नील मणिनकी झाई । हीरालाल जवाहर पहिरे बड़े गोपकी जाई ॥ तुम्हरी रुचि जो होय तो प्यारी अबहीं लाउँ बुलाई। सूरहि श्याम कहत सब मालिन ऐसी देखी नाई ॥ ६४८ ॥

अथवा ।

प्यारी इक मालिन पौर तिहारी ॥ टेक ॥ रंग साँवरो वा मालिनको नीलमणिन अनुहारी । ठाढ़ी है वृषभानुपौरिपै पूछत नाम दुलारी ॥ बेंदी भाल नैनबिच काजर बेसरकी छवि न्यारी । चलत चाल चपला ज्यों चमकत झूमत झूम घटारी ॥ यह सुनके वृषभानुनन्दनी बोली तब मुसकाई। ले आओ तुम वा मालि-

शोभा । नागिन नवल छवीली छवि देखि चित्त शोभा ॥ हँसि हँसिके ललितकिशोरी जव कंठसे लगाई । हरएक तरह चमनमें कैसी वहार छाई ॥ ६५२ ॥

मनिहारीलीला ।

राग कालिंगड़ा ।

कान्ह कुँवर धरि वेप चुरहलिन पहिर जनानो गहना । ओढ़ि डोरिया चुरियाँ लेकर छलन चले वरसाना ॥ कुसुम कसवको लहँगा पहिरो हरी कसवकी ताई । चुनरी चारु चपेटनवारी श्यामल तन परसाई ॥ अरु पहिरी अतलसकी चोली तोमें गेंद दुराई । कसि बाँधो वंधन दोउ भुजपर नवयौवन अधिकाई ॥ विछिया झमक पायँकी ठनकन चलत चाल मतवारी । जेहर खटकन कटिकी लचकन मोहत सुर नर नारी॥कर शोभित कंचनके कँगना मोतिन लगी रवारी । ताऊपर दुलरी अति राजै भुज वाजूवँद भारी ॥ सोहत सुघर नवइया यासों शोभा अधिक दई है । मानो श्यामघटाके ऊपर दामिन दमकि रही है ॥ सुन्दर हार हियेपै शोभित चम्पकली छवि न्यारी । सर वेसरपर वेंदीकी छवि मानो चन्द्र उज्यारी ॥ सोहत सरस लड़िलरी ग्रीवा मोतिन माँग सँवारी । मानो श्याम घटाके ऊपर वगुलन पाँति निहारी ॥ ढार सुढार वाँहकी डोलन खयेवरा अति भारे । कटिपर लटकि रह्यो है चुटवँद मानो निशिके तारे ॥ शीशफूल अरु वीज रीझकी कीजै महा वड़ाई । ज्यों रजनी छिटके तारागण शोभा वरनि न जाई ॥ सेंदुरकी सुरखी अति राजै भौंहें धनुप

सँवारे। तिरछी चितवन वाल चलावै दिये नयन कजरा रे॥ दोहा—नागरिरूप बनायके, यहि विधि नन्दकिशोर। छलन चले श्रीराधिका, बरसानेकी ओर॥ ठुमकि चलन मुसक्यान माधुरी बीरी पान चबाती। पूछत सखा श्यामके श्यामें कहँ रहती कहँ जाती॥ बासी हम गोकुल नगरीकी नन्दपुरामें रहती। सुघर सुनी वृषभानुसुता हम उनको देखन जाती॥ जाउ जाउ याही मग सूधे इत उत नेक न हेरो। इतै बसत हैं नन्दमहरसुत घर जैहो कर फेरो॥ जानत हैं हम नंदनँदनको यशुमति उनकी मैया। मैं देखो है सो यह बोले गायनको चरवैया॥ इत बाँको है नन्दकुँवर तू इतै करत है बातैं। बचि है आज भाग अपने-ते श्याम लताके नातें॥ जानत हैं उन संगके ठगिया तुम आये यों साजे। फिरत रहत गौवनके पाछे तनक छाछके काजे॥ गोकुलते चलि मथुरा आये फिर बरसाने जाने। जे वे सखा संग लग खेलत तिनहूँ नहिं पहिचाने॥ पहुँचे हैं वृषभानुपुरामें जुरि आईं सब नारी। नागरि यक आई है सजनी रूपपयोनिधि भारी॥ घुरहेलिन वृषभानुपुरामें ठौर ठौर फिरि आई। श्रीराधाजूके मन्दिरकी मग मोहिं देउ बताई॥ ६५२॥

राग गौरी।

मिठबोलनी नवल मनिहारी। भौंहें गोल गरूर हैं याके नयन चुटीले भारी॥ टेक॥ चूरी लख मुखते कहै, घूँघटमें मुसक्यान। शशि मनुवदनी ओटते, दुरि दुरि दर्शत आन॥ चूरी बड़े जु मोलकी, नगर न गाहक कोइ। मो फेरी खाली परी, सब घर आइ टटोइ॥ चुरी नीलमणि पहिरवे, लायक नाहिंन और। भागवान कोइ लै चलै, मोहिं दीखत एकहि ठौर॥

नको कैसी है वह आई ॥ लै आज्ञा प्यारीकी तबहीं सखी वेग उठ धाई । चल री मालिन याद करी तू दासचरण वलिजाई ॥६४९॥

मालिन मदभरे नयन रसीले ॥ टेक ॥ कहो कौन है तात तुम्हारो कौन तुम्हारी माई । क्या है सुन्दरि नाम तिहारो कौन गामते आई ॥ तुम्हरो रूप देख मन उमँग्यो सुन मालिनकी जाई । हम लेंगी सव वस्तु तिहारी क्या क्या सौदा लाई ॥ चम्पाकली हमेल चमेली फूलन हार बनाई । सेवती गुलाब सुमनके झुमका तिहारे कारण लाई ॥ कित मथुरा कित गोकुल नगरी कित वरसाने आई । कौन वताओ नाम हमारो किन यह ठौर वताई ॥ तीन भुवनमें सुयश प्रगट है अरु तुम्हरी ठकुराई । राधे नाम रूपकी आगरि श्रीवृषभानुकी जाई ॥ चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई । फूलन हार वने अति सुन्दर और कहो क्या लाई ॥ सुन्दर तेल फुलेल उवटनो अतर सुगन्ध मिलाई । जो रुचि होय सो ले मेरी प्यारी वेर भई मोहिं आई ॥ वेर वेर तू जनि कर मालिन देहौं माल अघाई । हीरे लाल रत्न मणि माणिक भूषण वसन मँगाई ॥ वड़े घरनकी मालिन हूँ मैं धनकी रुचि कछु नाईं । मैं सौदागर प्रेमरतनकी और न कछू सुहाई ॥ फूल फुलेलकी वेचनहारी कहा अधिक इतराई । लेहु लेहु फूल करत कुंजनमें हमपै करत वड़ाई ॥ सुकृत जन्मके फलते भामिन यह मेरे फूल सुहाई । पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल न पाई ॥ जिन फूलनको खोजि थकित भये सुर नरपति मुनिराई । ऐसे फूल कहो मृगनयनी कौन वागसों लाई ॥ त्रिभुवनपति जगदीश दयानिधि नन्दकुँवर यदुराई । वा मोहनके वागसों प्यारी नवल फूल चुन लाई ॥ यह सुनके वृषभानुनन्दनी तन मन सुख अधिकाई । आजकी रैन रहो घर हमरे भोर भये

उठ जाई ॥ साँची प्रीति देख प्यारेकी रैनकी शैन ठहराई । यह छवि निरख मगन भये सुर नर दास चरण बलि जाई ॥६५०॥

पद।

राधा तेरे अंगमें फूलनकी बहार ॥ टेक ॥ फूलनके बाजूबंद फूलनके गजरे फूलनके सोहैं तेरे हार ॥ दोना मरुआ रायचमेली सब फूलनमें गुलाब । सूरश्याम कहत यह मालिन सब गो[illegible] गुपाल ॥ ६५१ ॥

रेखता।

चल देखिये रँगीली गुलशनकी खुशनुमाई । हरएक तरह चमनमें कैसी बहार छाई ॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या मालती निवारी । फूलोंके भारसेती झुकती है भूमि डारी ॥ जाही जुही चमेली नरगिश भली सुहाई । हरएक तरह० ॥ क्या सोहनी सुहावन शीतल समीर डोलैं । बुलबुल चहक लहकसे करती फिरैं कलोलैं ॥ फूली वसन्ती बेली मधुकर रहे लुभाई ॥ हरएक तरह०॥ सुनकर सलोनी श्यामा सुन्दर शृंगार साजे । सारी सुरंग सोहै वर शीशफूल राजे ॥ फूलोंकी गूँथ बेनी सखियाँ भली बनाई। हरएक तरह० ॥ मृगमदकी आड़ सोहै बेसर अधिक झुकीली । भृकुटी कमान ताने अँखियाँ बनी निचूली ॥ मुसक्यान माधुरीने चितको लियो चुराई । हरएक तरह० ॥ मोतिनकी माल उरबिच कुच कंचुकी सुहावै । द्युति चन्द्रिकाकी शोभा चम्पाकली लजावै ॥ किंकिणिके ज्वाल जगमग नूपुर झनक सुहाई । हरएक तरह० ॥ पद पद्म चारु मंजुल शीतल सुभग सुहाई । रसिकनकी माधुरीमें रस माधुरी लुभाई ॥ बहु भाँतिसे छबीले खुशनमनुमा बनाई । हरएक तरह० ॥ सखियोंके साथ जाके देखी विपिनकी

जेहि नगरी रिझवार नहिं, सौदागर क्यों जाइ। वस्तु घनेरी गाँठमें, विन गाहक पछिताइ ॥ रंग साँवरी, गुणभरी, धनि मन्हारिकुल ओप। मुदित होत सव देखिकै, यहि पुर गोपी गोप॥ कहूँपै न ठगाइ है, तेरी बुद्धि विशाल। लाभ अधिक करि जायगी, वेंचि वड़े घर माल॥ मेरे मालहि लेइ सो, जो मुँह माँगो देय। ऐसी है भामिनि प्रगट, तासु नाम किन लेय॥ वेंचनहारी काँचकी, कहा अधिक इतराय। पौरि भूप वृपभानुके, जहँ लाखोंकी वस्तु विकाय॥ पुर वजार देखे नहीं, है जु नवेली नारि। व्यौपारिन अवहीं वनी, कछु वात न कहत विचारि॥ तोहिं लै चलिहों नृपति घर, तू जनि होय उदास। लेय लाड़िली राधिका, जो सौदा तेरे पास॥ यह सुनिकै ठोढ़ी गही, सुखित भई अँग अंग। भलो जु तेरो मान हों, लै चल अपने संग॥ लै गई पौरि वृपभानुकी, वात कही समुझाय। गुणन प्रगट करि साँवरी, तोहि लेहैं वेगि वुलाय॥ हों जु मन्हारी दूरकी, आई जु राजदुआर। वेचौं चूरी चूरिला, कोइ वोलि लेउ रिझवार॥ सुनि आई चित्रा चतुर, तू चलिये वलमाँझ॥ प्रात चुरी पहिराइये, अव वासर परिगइ साँझ॥ अलभ लाभ सो पाइकै, हिय जिय पायो चैन। रूखे मुखसों कहैगो, गरजिन रचि रचि वैन॥ परघर वसत जु वलि गई, रखिये सकल परिवार। वड़े भोरही आय हों, यह मन कियो विचार॥ एक वार भीतर जु चलि, प्यारीसों वतराय। भली लगै सो कीजियो, जो अति लड़ीके पाय॥ चली जु झूमति झुकतिसी, वेनी लटकत पीठ। घूँघट अमीकोसो भरो, जव मिली दीठसों दीठ॥ वहुत हँसी नवनागरी, देखी परम अनूप। कै वेंचत चूरी सखी, कै वेंचत है रूप॥ मोहिं खिलौना जनि करो, राजकुँवरि वलि जाउँ। तन थाक्यो वासर गयो, मोहिं

फिरत फिरत सब गाउँ ॥ मुख दीखत तेरो डहडहो, लगत चीकनो गात। थाकी कौन बतावही, कछु ऊपरकीसी बात ॥ हौं तो सूधे जीयकी, घटि वढ़ि समझत नाहिं। तुम्हें कछू दरशो कहा, प्यारी कपट मेरे हियमाहिं ॥ रँग पहिराऊँ चूरिला, चोखो वनिज कमाउँ। चोखी प्रीति जु आदरो, नहिं कपटी जन पतियाउँ ॥ मेरे जिय यह टेक है, कहे देत हौं साँच ॥ हौं भूखी सन्मानकी, नहिं सहौं झूठकी आँच ॥ आउ आउ री निकट तू, देखौं वदन निहारि। एक वात हियमें धरी, तू गुसा हियेते डारि ॥ शीतल हो व्यौपारिनी, तेरो ऐसो काम। तमक नई यह वैसकी, तज तोहिं फिरनो सब धाम ॥ हौं आई ताकि राजघर, करन प्रथम पहिचान। मन लीन्हो विन करी यह, हँसी हो हितकी हान ॥ कासों है तैं हित कियो, अवलग परी न दृष्टि। वात कहत उरझै सखी, तू रची कौन विधि सृष्टि ॥ अब अपनी करि हिय करौ, भूषण युवति समाज। सब विधि पूरण होहि तो, प्यारी मो मन वांछित काज ॥ मणिचौकी वैठी कुँवरि, दीन्ही भुजा पसारि। काढ़ि चुरी अति सोहनी, पहिराई सुघर मन्ह्यारि ॥ भुजा कढ़त मनिहारिहग, फूलो मनहुँ वसन्त। मन छुटि चलो जु हाथसों, धीर धरत गुणवन्त ॥ जवहीं करसों कर गहो, शिव अरि कियो प्रताप। तनगति वेपथु जानिकै, कछु मधुरे कियो अलाप ॥ तुम लायक चूरी कुँवरि, भूलि जु आई गेह। निरखि निरखि प्यारी कहो, तेरी क्यों कांपति है देह ॥ दरश्यो प्रेम हिये वली, उत्तर देहि जु कौन। रूप अमल तापै चढ़ो, क्यों न गहै मुख मौन ॥ ललिता कहे यह प्रेम है, कै केहुँ परस्यो रोग। यत्न करो तन देखिकें, सखि कौन दई संयोग ॥ परम गुनीलो नंदसुत, मैं देख्यो टकटोइ। अहो प्रिया प्रीतम विना, वलि ऐसो प्रेम न होइ ॥

सींचे नीर गुलाव जल, प्रिया चिबुक कर लाय। प्रेमगहरते काढ़िकै, सखी पुनि लेत बलाय ॥ यश दीन्हो सबही कुलनि, वनितारूप बनाय। कौन बड़ाई कीजिये, यशवर्द्धन गोकुलराय ॥ कौतुक-रूपी खेलमें, रजनी वाढ़ी शोभ। रसिकन हिये बढ़ावनी, यह नवल प्रेमकी गोभ ॥ युगल प्रीति गाँठी निरखि, सखी हूजिये अहलाद। वरणी लीला मोहनी, यह श्रीहरिवंशप्रसाद ॥ बलि-हित रूप चरित्र चलि, जो बिचारि है नित्त। वृन्दावनहित भीजि है, दम्पति रस वाको चित्त ॥ ६५४ ॥

रेखता।

मन हरि लियो है मेरो वा नन्दके दुलारे। मुसक्यायके अदासों नयनोंके कर इशारे ॥ मनहर० ॥ इक दृष्टिहीमें वाने जानै कहा कियो है। नहिं चैन रैन दिनमें वाके विना निहारे ॥ मनहर० ॥ चीरेके पेंच वांके शिर मुकुट झुकि रह्यो है। कटि किंकिणी रतनकी नूपुर वजत हैं प्यारे ॥ मनहर० ॥ वेसर बुलाक सोहै गल मोतियनकी माला। कंकन जड़ाऊ करमें नख चन्दसों उजारे ॥ मनहर० ॥ छवि देत आरसीसों सुन्दर कपोल दोऊ। वरछीसमान लोचन नई शानपै सँवारे ॥ मनहर० ॥ फूलोंके हाथ गजरे मुख पानकी ललाई। कानोंमें मोतीवाले कुंड-लहु झलकें न्यारे ॥ मनहर० ॥ लखि श्यामकी निकाई सुधि बुधि सकल गँवाई। वौरी बनाय मोको कित गयो वंशीवारे ॥ मनहर० ॥ यन्तर अनेक मन्तर गंडा तवीज टोना। स्याने तवीव पंडित करि कोटि यत्न हारे ॥ मनहर० ॥ नारायण इन दृगनने जवसों वह रूप देखा। तवसों भये हैं ध्यानी उघरे नहीं उघारे ॥ मन हरलियो है मेरो वा नन्दके दुलारे ॥ ६५५ ॥

बिसातिनलीला।
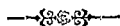
राग परज।

यों कहति बिसातिन आई। गलीगलीमें कहत फिरत कोई लालहिं लेहु मुल्याई॥ टेक॥ जबहिं गई वृषभानु पौर तब ऊँची टेर सुनाई। श्याम पोत अरु श्याम नगीना या घर लायक लाई॥ द्वारे उझक उझक फिर आवे आगे जात सकाई। तनु ढाँपे पुनि घूँघट मारे लाज जु भीजत जाई॥ भीतर खबरि भई तब प्यारी बोलि निकट बैठाई। कौन अपूरब बस्तु तोहिं पहँ कहु मोसों समुझाई॥ कौन नगर तू बसति बिसातिन अबहीं दई दिखाई। तोसी भट्ट बड़े घर चहिये धनि बिधि जिन जु बनाई॥ सबही भाँति ऊजरी तनकी किहि मुख करौं बड़ाई। तोहि बसाऊँ राजद्वारमें जो मन होय सचाई॥ कैसी चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई। है लघु बैस कौनपै सीखी पर्खनकी चतुराई॥ काँखमाहिंते गाँठ काढ़कर श्याम जु लरी गहाई। बड़े मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई॥ जो जो रुचै वस्तु सो राखो बड़े गोपकी जाई। औरो बात कहत सकुचत हौं प्रीति जु देख बिकाई॥ नाना बिधकी डबिया छला आरसी मणिन जड़ाई। श्रीराधाके आगे धरके बोली मैं भेट चढ़ाई॥ तुम नृपकी अतिही लाडिलि हौ जु बिसातिन देखत कृपा अघाई। हौं भूँखी याहीको चाहौं द्रव्य न बहुत कमाई॥ श्याम पोतको गुंजा सुन्दर मो घर धर्यो दुराई। मोसों प्रीति करै जो भामिनि ताहि देहुँ पहिराई॥ हौं हित करौं वचन मन क्रम कर रह मो पास सदाई। प्राणनहूंते प्यारी मोको भाग्य बड़ेते पाई॥ बटुवा

खोल दिखाई वेंदी नागरिके मन भाई । सुघर विसातिन अपने करलौं माथे कुँवरि लगाई ॥ पुनि झोरीते दर्पण काढ्यो सुखशोभा दरशाई । उदित भागपर मनु सुहाग मणि लखि श्यामा मुसक्याई ॥ हर्ष अंकभर ताही वैठी मन खोलि जवै वतराई । परशत अंग दशा वदली तव प्यारी मनमें धरी भुराई ॥ ६५६ ॥

दोहा--कौन कौन गृह जात तू, कौन कौनसे ग्राम ।
कौन कौनसे प्रीति है, प्रगट लेइ तू नाम ॥
नन्दग्राम हम जात हैं, नेक न राखौं ओट ।
नन्दरायके ढोटसों, मेरी लागी जोट ॥ ६५७ ॥

राग दादरा ।

वंशीवारो मचल गयो मेरे अँगना ॥ टेक ॥ वा वंशीवारेके तीन ठिकाना, गोकुल मथुरा वरसाना । लड़काईंसे वाकौ जानैं खीजत जात झुलत पलना ॥ पुरुषोत्तम हरिकी छवि निरखत, वा वंशीवारेसे लागी लगनां ॥ वूझत अरी डरी कै तोकों छाया आय दवाई । तवलग परि गई साँझ कहूँ मोहिं वासो देव वताई ॥ वेसर रमकति प्रीति अति वढ़ि गई व्यारू संग कराई । रजनी गुण उघरे जव शय्या अपने ढिग पौढ़ाई ॥ जवहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो जानि परी लँगराई । वृन्दावनहित रूप छद्म तजि सुखकी लब्धि मनाई ॥ ६५८ ॥

योगिनलीला ।

दोहा–देखियत गुणन गरूर तेरो, अति चटकीलो रूप । छकनि ओरहीसी लगति, काहू सुता वड़ेकी भूप ॥ सो चल री चल घर चलौं, तू कहि दे मनकी लाग । योग लिये क्यहि कारने,

दृग दर्शत हैं अनुराग ॥ श्रीराधा नृपलाड़िली, मन आवत भाषत सोइ। अंत लेत, तपसीनको, नहिं योग खिलौना होइ ॥ तन साधें मन वश करें, हम वनफल करैं अहार । क्यों गेहिनके घर वसैं, जिन तरक तज्यो संसार ॥ भोजन भूखी हौं नहीं, कछु मन वासना और। प्रीतिसहित आदर जहाँ, हम विलमैं ताही ठौर ॥ आदर देहौं अधिक तुम, इह गुण करौं प्रकास । गिरि गह्वर वन सेइये, वरसानो निकट निवास ॥ गाँव निकट गेही वसैं, योगी रचैं वनखंड । जिनके जप तपसे थमैं, सात द्वीप नौ खंड ॥ हम जु सुनी यह शेषशिर, तू कहत अनेती वात। सत्य बोल नहिं जानिये, विधि रचे जु साँवल गात ॥ प्रीति प्रतीति न वचनकी, करौ वैससुता पुनि राज । दुरि बैठो घर जायके, तुम्हें योगिनसे कहा काज ॥ गोपनके गोधन परख, तुम तिन गुण करौ बखान। योगिनके घर दूर हैं, अति दुर्लभ पद निर्वान ॥ राजसुता तुम करति हौ, योगिन संग विवाद । सेवा कीन्हे फल मिलै, चरचा उपजै विषाद ॥ हम सेवा बहु विधि करैं, जो तुम मन थिरता होय। यहि पुर बसे मन वड़भागिनी, व्रजसम लोक न कोय ॥ क्यों न बड़ाई कीजिये, लायक कुल वृषभान। अब हौं निश्चय चालि हौं, पायो मनवांच्छित सन्मान ॥ बाँह पकरिकै लै चली, वैठारी जाय निकेत। अब क्षण वास न छाँड़िहौं, समझौ उर अंतरको हेत ॥ पलँग देउ मोहिं वैठनो, मन मिलनी सजनी पास । यहि विधि मोहिं विलमाइये, मैं कवहुँ न होउँ उदास ॥ भूमि शयन योगी करैं, तू कहत वचन विपरीत । भूलि न आदर पाइये, तपमारगकी रीत ॥ तन मन मृदु कीरति लली, यह सजनीको हियो कठोर । तपसिनको शिक्षा करै, कछु आयो कलिकी ओर ॥ भुजभरि लीन्ही कुँवरिने, तू जिय जनि पावै खेद। वृन्दावनहित रूप छद्मको, समझि परयो है भेद ॥ ६५९ ॥

वीणाधारीकी लीला ।

राग गौरी ।

छवि आगरी कोविद राग । वीणा अंक विराजही वैठी बाबाके बाग ॥ टेक ॥ ऊँचो जामें बंगला, कमनी सरवर तीर । जाके अंग सुवासते, जहाँ ह्वै रही भँवरन भीर ॥ पक्षी हू कौतुक ठगे, ऐसी शोभा अंग । आभा नीलमणी मनो, अस तनुको दर्शत रंग ॥ जे देखत तरुणी गई, ते जो विलोई प्रेम । बीधगई रस नादमें, सब भूली नित कृत नेम ॥ तुम चलि लावो नगरमें, मिले अधिक सुख होय । भूँखी वह जो सनेहकी, प्यारी मैं देखी टकटोय ॥ गुणी न ऐसी देश यह, रीझोगी सुन गान । औरनको जो छकावही,वह आप छकै लै तान॥कोमल परमस्वभाव हो, जानत प्रीति विकाय। जो अब आदर देहुँगी तो फिर आवैगी धाय॥ सरिता जल थिर ह्वै रहै, जाको सुनत अलाप । शिवसमाधि टारे वली, विधिकी टरत है जाप ॥ ब्रजमंडल ऐसी नहीं, नहीं भरतके खंड । अति गुणवन्ती भामिनी, यह आई परचंड ॥ यह सुन अति अकुलायके, चली सखी लै संग । रूपसिन्धु उमँग्यो मनो, तामें नाना उठत तरंग ॥ उठ सन्मानत साँवरी, फूली सरवस पाय। दृगसों दृग मनसों जो लखि, उरझे सहज सुभाय ॥ अहो कुशलमति नागरी, तुम गुण भये प्रशंस । राग अलाप सुनाइये, सखी वीणाधरके अंस ॥ चपल करज नख द्युति वढ़ी, गौरी गाई वाल। रीझी अति लली भूपकी, दई ताहि आप हिय माल ॥ मान वड़ी तानन वड़ी, वढ़ी रूप लहि लाह। प्रगट करो सब चातुरी, जाके मनमें विपुल उमाह ॥ विद्या निपुण उजागरी,

धन तुम सिखवनहार। कोउ दिन बरसाने बसो, अब चलो हमारे लार॥ सुनत कछू मोर्यो वदन, चुप ह्वै रही सुजान। वीणा धर दियो कन्धते, रूखी ह्वै गई निदान॥ ललिता बूझत समझके, का कारण बलि जाउँ। तुम उदास अति ही भई, सुन धाम हमारे नाउँ॥ मेरे छक है गुणनकी, सुनो खोलके कान। पर घर गये जो को सहै, सखी जो होय अपमान॥ तुम्हें प्राणसम राख हैं, लाड़ नयो नित होय। अहो गुणीली भामिनी, यह संशय मनते खोय॥ गुणगाहक बिरचे नहीं, दूर करो सन्देह। जे गुणको समझैं नहीं, परिहरिये तिनके गेह॥ यह सुन भई जो डहडही, सखी साँवरी गात। चम्पकवरणी धन्य तू, कही निपट समझकी बात॥ अब हौं निश्चय चलोंगी, जान तुम्हारो हेत। तोमन थाह मिली भट्ट, नृपसुता न उत्तर देत॥ कहा न्याव सो करत हो, कहत अति लड़ी बौन। सुख पावो तो विरमियो, नहीं कर जैयो गौन॥ मसक उठी कर बीण लै, लगी कुँवरिके साथ। निपट मन्दगमनी भई, गहि प्यारीजूको हाथ॥ गोपनके मन्दिर जिते, सबको बूझत नाम। तनुश्रम अधिक जनावहीं, कहै कितक दूर तुम धाम॥ हम जो चढैं रथ पालकी, अतिही आदर योग। गुणी रीझ जानै कहाँ, ये ब्रजके भोरे लोग॥ कहौ मँगाऊँ अश्व रथ,कहौ पालकी रंग। आज्ञा पहले करी नहिं,योंही उठ लागी संग॥ हम जान्यो नियरे भुवन, यह तो निकस्यो दूर। याते खबर परी नहीं, तुम नेह रह्यो उर पूर॥ और सुनो मो बीणको, नीके धरियो साज। मेरो जीवन प्राण है, मेरो याहीसों रंग समाज॥ तुम मानत हो खेल सो, सुन मो मुख रसरीत। नारद सारदके सदा, अति या बाजेसों प्रीत॥ हौं सीखी उनकी कृपा, सो हियकी गाढ़ी लाग। ता प्रतापते करत हो,सखी तुम मोसों अनुराग॥ लाई।

न्यारे भवनमें, बहुत करत सन्मान । अब एकान्त सुनाइये, सखी सुघर साँवरी तान ॥ वीणाके सुर साधके, अंक लाय मुसकाय । गायो चितकी चोपसों, जिन लीन्हो सभन रिझाय ॥ जैसेहि रजनी ऊजरी, तैसोइ हिये हुलास । चपल करज तैसे चलैं, भयो तैसोइ हिये परकास ॥ अहो सहेली साँवरी, कर इहि नगर निवास । असन वसन कर हो सखी, चल रह नित मेरे पास ॥ मोहिं अंशा यह नगर घर, यामें शंक न कोय । आवत जात रहौं सदा, जो रावरहित होय ॥ सखिन और बाजे लिये, प्यारी लिये कर बीन । ग्रीव ढुराई साँवरी, अस गायो कुँवरि प्रवीन ॥ जब उघरी संगीत गति, प्यारी दे करताल । छद्म विसर गई साँवरी, लगी निरतन गति नँदलाल ॥ ह्वै त्रिभंगी ठाढ़ी भई, कर मुरलीको भाव ॥ फूँक चले अँगुरी चले, गई भूल कपटको दाव ॥ राधा राधा रट लगी, अधरनहीके माहिं । समझ समझ ललिता कही, प्यारी यह तो भामिन नाहिं ॥ भुजा अंसपर धरनको, झुकी प्रियाकी ओर । सावधान होय साँवरी, यह कौतुक रचन जु जोर ॥ राजभवनमें आयके, भूल न आदर पाय । स्यानी है के बावरी, तू अपनो रूप बताय ॥ यासों प्रीति न तोरिये, हौं लाई जु बुलाय । भेद हियेको बूझके, देहु सादर वेगि पठाय ॥ प्रीतमको देख्यो कहूँ, इन लीनी गति चोर । परम चातुरीसीव यह, गुण आछे लेत टटोर ॥ कान लाग चित्रा कह्यो, है यह नन्दकिशोर । मैं लक्षण नीके लखे, दृग चालत गोहीं कोर ॥ भट्ट बहुरि नीके परख, बात न भाँड़ो फोर । लायकसों समझे विना, अति गरुओ नेह न तोर ॥ भरी कटोरी अतरकी, लाई सखी सुजान । सबकी चोली लगायके, तिहिं चोली परसे पान ॥ वह अधरनहीमें हँसी, यह जो हँसी मुख खोल । है यह दूतशिरोमणि, कह्यो सब सखियनसों बोल ॥

मेरो ही भूलन सखी, तब तुम लियो विलोक । प्रेमसिन्धु उमँगन जहाँ, कह छद्म जो तिनको रोक ॥ कबहुँ दूर कबहूँ प्रगट, आवत भान निकेत । मधुप अनत बिरमै नहीं, दृढ़ कियो कमलसों हेत ॥ वरण्यो कौतुक प्रेमको, नेम नहीं मरयाद । लखी जु रसिकनकी गली, श्रीहरिवंश प्रसाद ॥ यह रस रसिक जो विलस है, जामें अतिही चोज । वृन्दावनहित वलि रुचै, दंपति केलि मनोज ॥ ६६० ॥

राग भैरव।

यह रसरीत प्रिया प्रीतमकी, दिव्यदृष्टि जल जैसे री । विषयी ज्ञानी भक्त उपासक, प्राप्त सबनको तैसे री ॥ कदलीखंभ पपीहा सीपी, स्वाति बूँद जल जैसे री । भगवत कछू विषमता नाहीं, भूमि भाग फल तैसे री ॥ ६६१ ॥

दोहा—जय व्रजचन्द मुकुन्द हरि, नारायण गोविन्द ।
चरण शरण आयो रसिक, सुखी करहु सुखकन्द ॥ ६६२ ॥

इति श्रीसनातनधर्मप्रेमी नारायणभक्त नारायणसंगृहीत समीचीनरागरत्नाकर प्रथम भाग समाप्त ॥ १ ॥

ग्वालनकी प्रभु, ता दिनते भोजन न पावत सकारे हैं ॥ भं
यदुवंश जोपै नेह नन्दवंशहूसों, वंसी ना विसारों जो पे वंश
विसारे हैं। ऊधो व्रज जैयो मेरी लैयो चौगान गेंद, मैयाते कहैयो
हम ऋणियां तिहारे हैं ॥ ८ ॥

कौने विधि पावें कर्म वलवान उदय भो, छाछ छछियाकी
व्रज भामिनको भात हैं। मुक्तिहू पदारथ सो दे चुके वकीको अव,
देहैं जननीको कहा याते पछतात हैं ॥ विधि जो वनाई आहि
कौन विधि मेटै ताहि, ऐसे कर शोचत रहत दिन रात हैं ॥
ऊधो व्रज जैयो मेरी कहो समुझाय मैया, जापै ऋण वाढ़ै सो
विदेश उठ जात हैं ॥ ९ ॥

परम पवित्र तुम मित्र हो हमारे ऊधो, अन्तर व्रिथाकी कथा
मेरी सुन लीजिये । व्रजकी वे वाला जपें मेरी जपमाला, वाढी
विरहकी ज्वाला तामें तन मन छीजिये ॥ मेरो विसवास मेरी
आस रसरास, मेरी मिलवेकी प्यास जास सावधास कीजिये ।
प्रीतिसों प्रतीतिसों लिखी है रसरीतिसों सो, पत्रिका हमारी
प्राणप्यारिनको दीजिये ॥ १० ॥

जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं, तैसे ही समाधि
साध ध्यान धरवावोगी । अलख अनाथ घट घटको निवास
मोहिं, जान अविनाशी जोग जुगत जगावोगी ॥ आसनके
प्राणायाम साधि ध्यान धारणाते, ब्रह्मको प्रकाश रसरास दरशा-
वोगी । ऐसे चित लावोगी तौ सुखमें समावोगी, औ मुक्तिपद
पावोगी हमारे पास आवोगी ॥ ११ ॥

भेजो तुम योग हम लीयो धर शीशपर, वड़ो है परेखो चेरी
कौनकी कहावेगी । अँसवन माला लेके जपें नित रामनाम,
लोचनके खप्पर लेके भिक्षाको हू धावेंगी ॥ पहरेंगी कन्था गलमें

हारेंगी सेली माल, मर्घटपै बैठके मशानहू जगावेंगी। ऊधोजी सो एती बात हरिजीसे कहो जाय, एती ब्रजवाला मृगछाला कहां पावेंगी ॥ १२ ॥

राग टोड़ी—पाती सखि मधुवनसे आई। ऊधो हाथ श्याम लिख पठई तुम सुनो हो मोरी माई ॥ अपनें अपने गृहसे दौरीं लै पाती उर लाई। नयनन नीर निर्खं नहिं खंडित प्रेमविथा बुझाई ॥ कहा करूं सूनो यह गोकुल हरि विन कछु न सुहाई। सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरति बिसराई ॥ १३ ॥

राग देश—श्यामका सँदेशा ऊधो पाती लैके आयो रे। पाती तो उठाय लीनी छातीसों लगाय लीनी, घूँघटकी ओट देके उद्धव समुझायो रे ॥ वसती उजाड़ दीनी उजड़ी बसाय लीनी, कुब्जा पटरानी कीनी मोहिं न सुहायो रे। सूरश्यामजूके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो, जीवत खसम किन भसम रमायो रे ॥ १४ ॥

राग जंगला होरी—साँवरेसों कहियो मोरी ॥ शीश नवाय चरण गह लीजो कर विनती कर जोरी। ऐसी चूक कहा परी मोसों प्रीति पाछली तोरी ॥ सुरति ना लीनी बहोरी ॥ भूषण वसन सभी तज दीने खान पान बिसरो री। विभूति रमाय योगिन होय बैठी तेरो ही ध्यान धरयो री ॥ अब मैं कैसे करों री॥ निशिदिन व्याकुल फिरत राधिका विरहव्यथा तनु घेरी। बार कलेजा जार दियो है अब मैं कैसे करों री ॥ बेग चल आवो किशोरी ॥ रोम रोम विष छाय रहो है मधु मेरे बैर परयो री। श्याम तुम्हैं ढूँढ़त कुंजनमें शीश लटा गह झोरी ॥ कहो हरि हो हरि होरी ॥ जा दिन गमन कियो मथुरामें गोपिन सुध

रागरत्नाकर ।

द्वितीय भाग ।

मथुरागमनलीला ।

राग सोरठ—यशुमति वार वार यह भाखे । है कोऊ ब्रज हितू हमारो चलत गोपालहिं राखें ॥ कहा काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलाये। सुफलकसुत मेरे प्राण हरणको कालरूप हो आये ॥ वरु यह गोधन कंस लेय सब मोहिं वंदी लै मेले। इतनो माँगत कमलनयन मेरि आँखन आगे खेलै ॥ को कर कमल मथानी गहि है को दधि माखन खैहै । वहुरो इंद्र वरसि है ब्रजपर को गिरि नखपर लैहै ॥ वासर रैनि विलोकत जीयों संग लागि दुलराऊँ। हरि विछुरत जो रहों कर्मवश तो किहि कंठ लगाऊँ ॥ टेर टेर घर परत यशोदा अधर वदन विलखानी । सूर सो दशा कहांलग वरणौं दुखित नंदकी रानी ॥१॥

राग विहाग—उठ चले ग्वाँढ़ों यार। ख्वाहुनकी करीये उठ चले हुनरहिं दे नाहीं होशा साथ त्यार ॥ चारों तरफ चलन दी चरचा केही पड़ी पुकार । डाढ कलेजे वल वल उठती विन देखे दीदार ॥ बुल्ला शाह प्यारे वाझो ना रहसां घर वार ॥ २ ॥

अव नँद गैयां लेहु सँभार । हौं जो तिहारे आन प्रगट्यो गैयां चराई दिन चार ॥ दूध दही तेरो वहुतही खायो वहुतहि कीनी रार। खायो वहुतहि मातु पितु तेरे चरित उर सों डारि हौं न विसार ॥ कोकिला सुत काग पाले अंत होत परार । तिहारे यशुमति आन विलमें दृग मत आंसू डार ॥ को पिता को पुत्र काको देखु मनहिं विचार । सूरको प्रभु चले ब्रज तजि कपट कागज फार ॥ ३ ॥

राग सोरठ—उलट पग कैसे दीनो नन्द। छांड़े कहां उभय सुत मोहन धृग जीवन मतिमन्द ॥ कै तुम धन जोवन मदमाते कै तुम छूटे वन्द। सुफलकसुत वैरी भयो मोको ले गयो आनँदकंद ॥ रामकृष्ण विन कैसे जीवों कठिन प्रीतिको फन्द। सूरदास अव भई अभागन तुम विन गोकुलनन्द ॥ ४ ॥

राग धनाश्री—ऊधो मोहिं व्रज विसरत नाहीं। हंससुताकी सुन्दर कलरव अरु कुञ्जनकी छाहीं ॥ वे सुरभी वे वच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं। ग्वाल वाल सव करत कुलाहल नाचत गहि गहि वाहीं ॥ यह मथुरा कंचनकी नगरी मणि मुक्ता जिहि माहीं। जवहिं सुरत आवत वा सुखकी जिय उमँगत सुधि नाहीं ॥ अनगिन भाँति करी वहु लीला यशुदा नन्द निवाहीं। सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह पछताहीं ॥ ५ ॥

राग वड़हंस—सांझ परी घर आये न कन्हैया ॥ गोपी पूछे ग्वालनसों कहां गये मोरे व्रजके वसैया। घर रहे वछरू वन रहीं गैयां यमुना किनारे ठाढ़ी यशुमति मैया ॥ जाय पताल कालीनाग नाथ्यो फण ऊपर प्रभु निरत करैया। लालदास प्रभु कह कर जोरे चरणकमलपर चितको धरैया ॥ ६ ॥

राग विहाग—ऊधो व्रजको गमन करो। मेरे विना विरहिनी गोपिका तिनके दुःख हरो ॥ योग ज्ञान परवोधि सवनको ज्यों सुख पावें नारि। पूरण ब्रह्म अलख परचो करि डारें मोहिं विसारि ॥ सखा प्रवीन हमारे हो तुम याते थापि महंत। सूर श्याम कारण यहि पठवत है आवेगो संत ॥ ७ ॥

कबित्त—कामरी लकुट मोहिं भूलत न एक पल, घुँघुची ना विसारों जाकी माल उर धारे हैं। जा दिनते छाकें छूट गई

बिसरयो री। हमको योग भोग कुब्जाको कहा तकसीर है मोरी॥ कहा कछु कीनी चोरी॥ सूरदास प्रभुसों जाय कहियो आय अवधि रही थोरी। प्राणदान दीजो नँदनन्दन गावत कीरति तोरी॥ प्रीति अब कीजै बहोरी॥ १५॥

सवैया–जो मथुरा हरि जाय बसे हमरे जिय प्रीति बनी रही सोऊ। ऊधो बड़ो सुख ये हू हमैं अरु नीके रहैं वह मूरति दोऊ॥ हमारेहु नामकी छाप परी अरु अन्तरबीच अहै नहिं कोऊ। राधाकृष्ण सभी तो कहैं पर कूबरीकृष्ण कहै नहिं कोऊ १६

कवित्त–आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रज मण्डलमें, रांगमें कुराय योग रीतको सुनायो है। झोली झंडा गूदड़ी औ भस्म मुद्रा काननमें, हाथनमें खप्पर ये स्वाँग लै दिखायो है॥ संयम नियम ध्यान धारणा दृढासन हो, ब्रह्मको प्रकाश रसरास दरशायो है। कूबरीपै पढ़ आयो वेदको भुलाय आयो, रथ चढ़ आयो अनरथ गढ़ लायो है॥ १७॥

जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो, धायकर मारी नारी निठुर मुरारि हैं। जेती ब्रजनारी तेती मिल मिल मारी, अनमिल हू तो मारी जो मिलि हैं ताहि मारि हैं॥ सुन री ए चेरी तेरी सौंह मैं कहत वे तो हरि, सरस नयन आँसुहू न ढारि हैं। बड़े हैं शिकारी पर इन्हें न सँभारी नारी, मारबेको नवल कन्हैया तलवारि है॥ १८॥

याही कुञ्जतर वह गुंजत भँवर भीर, याही कुंजतर अब शिरन धुनत हैं। याही रसनाते करी रसकी रसीली बातें, याही रसनाते अब गुणन गनत हैं॥ आलम बिहारी बिन हृदय अचेत भये, ए हो

दई हित कहे कैसे कै बनत हैं। जेही कान्ह नयनके तारे हुते निशिदिन, तेही कान्ह-कानन कहानीसी सुनत हैं ॥ १९ ॥

जोगी तजे जग हम जग जोग दोऊ तजे, जोगी लावें छार हम छारहूके मटि हैं। जोगी वेधें कान हम हीये अरु प्रान वेधें, जोगी कहैं नाथ हम नाथ नाथ रटि हैं ॥ जोगी कानमुद्रा हम भूपण वनाय राखे, म्हारे शिर केश वहु जोगी शिर जटि हैं। ज्ञानके अजान आज ये कहा भये ऊधोजी, जोगीकी जुगतसों वियोगी कहा घटि हैं ॥ २० ॥

श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन, आठौ याम ऊधो हमैं श्यामहीसों काम है। श्याम हीये श्याम जीये श्याम विन नाहिं तीये, आंधेकीसी लाकरी अधार श्याम नाम है ॥ श्याम गति श्याम मति श्यामही हैं प्राणपति,श्याम सुखदाई सो भलाई शोभा धाम है। ऊधो तुम भये बौरे पाती लैकै आये दौरे, योग कहाँ राखैं यहाँ रोम रोम श्याम है ॥ २१ ॥

राग देश—कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री। निशिदिन चलत रहत नहिं राखे इन नयनन जलधारा री ॥ अब यह प्राण कैसे हम राखैं विछुरे प्राण अधारा री। ऊधो तबते कल न परत है जबते श्याम सिधारा री॥ अब तो मधुबन जाय ले आवो सुन्दर नन्ददुलारा री। सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सब वारा री ॥ २२ ॥

राग मलार—जित देखों तित श्याममई है।श्याम कुंजवन यमुना श्यामा श्याम गगन घन घटा छई है ॥ सब रंगनमें श्याम भरो है लोग कहत यह वात नई है। मैं बौरन कै लोगनहीकी श्याम पुतरिया वदल गई है ॥ चन्द्रसार रविसार श्याम है मृगमद श्याम काम विजई है। नीलकण्ठको कण्ठ श्याम है मनो

श्यामता वेलि वई है ॥ श्रुतिको अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा-पर श्याम तई है । नरदेवनकी मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छबि श्याम भई है ॥ २३ ॥

राग नट—ऊधो धनि तुमरो व्यवहार । धनि वे ठाकुर धनि तुम सेवक धनि धनि परसनहार ॥ आमको काटि बचूर लगावत चन्दन झोकत भार । शाहको पकर चोरको छोरत चुगलनको अधिकार ॥ हमको योग भोग कुब्जाको ऐसी समझ तिहार । हंस मयूर शुका पिक त्यागत कागनको इतवार ॥ तुम हरि पढ़े चातुरी विद्या निपट कपट चटसार । सूर श्याम कैसे निबहैगी अन्धधुन्ध सरकार ॥ २४ ॥

बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे । यह मथुरा काजरकी कोठी जे आवें ते कारे ॥ कारे भँवर सुफलकसुत कारे कारे रत्न पत्रारे । यहाँ ज्ञानकी कौन चलावे सूर श्याम गुण न्यारे ॥ २५ ॥

राग रामकली—ऊधो कर्मनकी गति न्यारी । सब नदिया जल भर भर रहियाँ सागर किस विधि खारी ॥ उज्ज्वल पंख दिये बगुलाको कोयल कित गुण कारी । सुन्दर नैन मृगाको दीने वन वन फिरत उजारी ॥ मूरख मूरख राजे कीने पंडित फिरत भिखारी ॥ सूर श्याम मिलबेकी आशा छिन छिन बीतत भारी ॥ २६ ॥

राग देश—ऊधो कारे सब बुरे ॥ कारोंकी परतीत न करिये कारे विषके भरे । कारो अंजन देत दृगनमें तीखी सान धरे ॥ नागनाथ हरि बाहर आये फणफण निरत करे । कोयलके सुत कागा पाले अपनो हि ज्ञान धरे ॥ पंख लगे जब उड़ने लागे जाय कुटुम्ब रले ॥ सूरश्याम कारो मतवारो कारेसे काले डरे ॥ २७ ॥

राग आसा—ऊधो सो मूरत हम देखी । शिव सनकादि सकल मुनि दुर्लभ ब्रह्म इन्द्र नहिं पेखी ॥ खोजत फिरत युगो-युग योगी योग युगतते नारी । सिद्ध समाधि स्वप्न नहिं दरशी मोहनी मूरत प्यारी ॥ निगम अगम विमला यश गावें रहत सदा दरबारी । तिलभर पारवार नहिं पायो कहि कहि नेति पुरारी ॥ नाथ यती अरु योगी जंगम ढूँढ़ रहे वनमाहीं । वेश धरे घरती भ्रमि हारे तिनहूँ दरशी नाहीं ॥ सो हम गृह गृह नाच नचाई तनक तनक दधि देके । रामदास हम रँगीं श्याम रँग जाहु योग घर लेके ॥ २८ ॥

राग बड़हंस—हो गये श्याम दूजके चन्दा ॥ मधुवन जाय भये मधुवनियां हम पर डारो प्रेमको फन्दा । मीराके प्रभु गिरिधर नागर अब तो नेह परयो कछु मन्दा ॥ २९ ॥

राग वसंत—ऊधो माधोसों कहियो जाय । जाकी चपल बुद्धि तासों क्या बसाय ॥ उड़ियो रे भ्रमरा जइयो वा देश, मेरे पियासे कहियो सुख सँदेश, सखी फागुनके दिन वीते जात, मेरी अँगिया तड़क गई योवन भार । इक तो सतावे मोहिं ऋतु वसन्त, दूसरा सतावें मोहिं बाला कन्त, तीजी कोयल बोले अम्बकी डार, चौथा पपीहा पिया पिया करे पुकार ॥ इक वन फूल सकल वन फूले, जैसे चन्द्र चकोरन हूले, ताया तरन तेज मोपै सह्यो न जाय, जब मैं तजूंगी प्राण फिर क्या करोगे आय ॥ ३० ॥

राग जिला—चले गये दिलके दामनगीर । जब सुधि आई प्यारे तेरे दरशकी उठत कलेजे पीर ॥ नटवर वेप नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर । आपन जाय द्वारका छाये खारी नदके तीर ॥ ब्रज गोपिनको प्रेम बिसारयो ऐसे भये बेपीर । नन्दा-

वन वंशीवट त्याग्यो निर्मल यमुना नीर ॥ सूरश्याम ललिता तब बोली अखिर जात अहीर ॥ ३१ ॥

राग धनाश्री–हरिके संग मैं क्यों ना गई । हरिसंग जाती कंचन बन आती अब माटीके मोल भई ॥ वर जो न कोई इन दूतिनको जाती बेर मोहिं रोक लई । हरि बिछुरन इक मरन हमारा नई दासीसंग प्रीति भई ॥ छल गयो काल बहुरि नहि आवे अपने हाथसे मैं बिदा दई । सूरदास प्रभु तुम्हारे दरशको पिछली प्रीति अब नई भई ॥ ३२ ॥

राग बिहाग–मधुकर श्याम हमारे चोर । मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयनकी कोर ॥ पकरे हुते आन उर अन्तर प्रेम प्रीतिके जोर । गये छुड़ाय तोर सब बन्धन दे गये हँसन अकोर ॥ उचक परों जागत निशि बीते तारे गिनत भई भोर सूरदास प्रभु हरि मन मेरो सरवस लै गयो नन्दकिशोर ॥ ३३ ।

राग वसन्त–जा जारे भँवरा दूर दूर । तेरोसो अंग रंग है उनको जिन मेरो चित कियो चूर चूर ॥ जवलग तरुन फूल महकत है तवलग रहत हजूर जूर । सूरश्याम हरि मतलब मधुकर लेत कली रस घूर घूर ॥ ३४ ॥

राग केदार–नाहिंन रह्यो मनमें ठौर । नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये उर और ॥ चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात । हृदयते वह श्याम मूरत छिन न इत उत जात ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास । सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥ ३५ ॥

राग देश–नाथ अनाथनकी सुध लीजे । तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी बेगहि दर्शन दीजे ॥ नयनन जल भर आये

हरि बिन ऊधोको पतियाँ लिख दीजै। सूरदास प्रभु आस मिलनकी अबकी बेर हरि आवन कीजे ॥ ३६ ॥

राग सारंग–बिन गोपाल वैरन भईं कुंजैं। तब ये लता लगत अति शीतल अब भईं विषम ज्वालकी पुंजैं ॥ वृथा बहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलि गुंजैं। सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियां भईं अरुण ज्यों गुंजैं ॥ ३७ ॥

राग मलार–निशिदिन बरसत नयन हमारे। सदा रहत पावस ऋतु हमपर जबसों श्याम सिधारे ॥ अंजन थिर न रहत अँखियनमें कर कपोल भये कारे। कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे ॥ आंसू सलिल भये पग थाके बहे जात सित तारे। सूरदास अब डूबत है ब्रज काहे न लेत उबारे॥३८॥

हरि परदेश बहुत दिन लाये। कारी घटा देख बादरकी नयन नीर भर आये ॥ पा लागों तुम बीर बटाऊ कौन देशते धाये। इतनी पतियाँ मोरी दीजो जहाँ श्याम घन छाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोलैं सोवत मदन जगाये। सूरदास स्वामीके बिछुरे प्रीतम भये पराये ॥ ३९ ॥

राग बिहाग–पिया बिन नागिन कालड़ी रात। कबहूँ यामिन होत जुन्हैया डस उलटी ह्वै जात। सूर श्याम बिन विकल विरहिनी मुर मुर लहरी खात ॥ ४० ॥

राग भैरव–अँखियाँ हरिदर्शनकी प्यासी। देख्यो चाहत कमलनयनको निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक मोतिनकी माला वृंदावनके वासी। नेह लगाय त्याग गये तृणसम डार गये गल फाँसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हाँसी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन लेहौं करवट काँसी ॥ ४१ ॥

राग आसावरी–कहीं देखे री घनश्यामा ॥ मोर मुकुट पीतांवर सोहै कुण्डल झलके काना । सांवरी सूरतपर तिलक विराजै तिससों लगे मोरे प्राना ॥ वरसानेसों चली गुजरिया नन्दगामको जाना । आगे केशो धेनु चरावें लगे प्रेमके वाना ॥ सागर सूख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना । भौंरा रहगये प्रीतिके धोखे फेर मिलनको जाना ॥ वृन्दावनकी कुञ्ज गलीमें नूपुर रुनझुन लाना । मीरावाईको दरशन दीजो व्रज तज अनत न जाना ॥ ४२ ॥

ठुमरी खम्माच–बतादे सखी कौन गली गये श्याम ॥ रैनि दिवस मोहिं तलफत वीती विसर गये धन धाम । गोकुल ढूँढ वृन्दावन ढूंढ्यो मथुरामें होगई शाम ॥ ४३ ॥

राग आसावरी–कृपा कर दरशन दीजो हरी । नितप्रति ठाढ़ी अपने द्वारे निरखों पंथ खरी ॥ छिन छिन अन्तर बाहर आवों शांत न होत घरी । विरहा अगिन रची प्रति रोमन हा हा दग्ध करी ॥ तेरी लगन लगी मोरे अन्तर नाहिंन जात जरी । दुनीदास प्रभु तुम्हरे दरश विन लोटत धरणि परी ॥ ४४ ॥

सुन्दर श्याम देखन दी आशा नयनन वान परी । चार याम मोहिं तलफत वीते रहगइ एक घरी ॥ भूषण वसन भवन नहिं भावे विरह वियोग भरी । दया सखी अव वेग मिलो क्यों ना हौं अकुलात खरी ॥ ४५ ॥

ऐसी है कोई सखी हमारी मेरे हरिजीको आन मिलावे री । तन मन धन मैं तिसपर वारूं जो इक पल नजरी आवे री ॥ कर शृङ्गार मैं सेज विछावों सो मोहिं कछु न सुहावे री । अहनिशि या तनु संकट उपजे तलफत रैनि विहावे री । क्या करूं मन कहूं

न लागत मैं फिरती हूं प्रेमप्यासी री। इनीदास धीरज ना होवे विन देखे अविनाशी री ॥ ४६ ॥

ठुमरी—छतियाँ लेहु लगाय सजन अव मत तरसावो रे। तुम विन तलफत प्राण हमारे नयननसों वहे जलकी धारे बाढ़ी है तनु बिरह पीर सूरत दिखलावो रे ॥ हरीचन्द पिया गिरिवरधारी पैयां परूं जाऊं वलिहारी अव जिया नहिं धरत धीर जलदी उठ धावो री ॥ ४७ ॥

राग खम्भाच—सजन मुखड़ा दिखला जा रे। तेरे दरशनको तरसे हैं नयन वालेपनकी लागी लगन छूटत नाहीं करों कोटि यतन दिखला जा सूरत मोहन जरा वँसिया वजा जा रे ॥ ढूँढ़ फिरी सारा वन वन मैं तऊ न पाय नन्दके नन्दन विरमाय राखे काहू सौतन रसिया महाराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई वदन सव छाँड़ उतारे भूषण वसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तज लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हमपै अव माफ करो नँदके नन्दन श्रीधर पिया आ जा जलदीसे मोहिं गरवा लगा जा रे ॥ ४८ ॥

राग परज—कवलग तरसाये रहिये पलक ॥ नंदनन्दन व्रजराज साँवरो दरशन दीजे तनक तनक। बिन दरशन मोहिं नींद न आवे जवते सुनी मुरलीकी भनक ॥ श्यामसुन्दर बांकी माधुरी मूरत आउ मोरे अँगना छनक छनक। जानकीदास बसो जो दृगनमें कर राखों उर नयन पलक ॥ ४९ ॥

राग बिहाग—मिल जाना हो प्यारे नन्दकिशोर। देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर ॥ तेरे दरश विन फिरों दिवानी ढूँढ़ती चहुँ ओर। जानकीदास तुसीं देख हर्षां जैसे चन्द-चकोर ॥ ५० ॥

राग वड़हंस—विरहोंने नोकां झोकां वेलाइयां कौन असां-वल रोके । सो गल मेरी झोली पैंदी जो मैं कहिं दी लोके ॥ आ जानी गल लावे असानूं तिखीयां नोक चभोके । वंज वेराही वंज माही वलखडी उडीकां वाटां । मैं जातासी इशक सुखाला मुस-कल इस दीयां घाता । सुख देखननूं फिरां दिवानी दरदर देनी हां होके । आंखीमाही गल वांहि तुमाडे अरज करां मैं खलोके । इशक तुसाडेने घायल कीती एह गल आंखीं रांके सूरत सोहनी दशके ॥ मेराली तोई मन मोहके । अपे टुंव जगायाई मैनूं हँसके सुख दिखलाके ॥ जां मैं मोही तां तूं छिप्पा विरहौनूं मोड भुवाके। इस विरहौं में वलवल कुट्टी हसदा हैं पास खलोके । कैदर कूं कां कूक सुनावां लाया नेह मैं आपे । जां मैं जगविच रोशन होइयाँ रहन न देदे मापे । दुःखा सू लांदा हार मैं हत्थीं आप परोके । मैं दरमांदी दरस तेरे दी मुख दिखला इक वारी । तैं मुख डिठियाँ सभ दुख जांदे तूं तवी तवीव हैं भारी ॥ मुख देखननूं फिरा दिवानी तैंडी सुहागन होके । वखश रख्खोव मैं औगुणहारी तूंही वखश अलाहीं ॥ एको नजर तुसाडी काफी दुःख न रहिंदा काई । वरकत नाल साहिव दे वुल्लिया देई दीदार खलोके ५१

राग खेमटा—रे निरमोही छवि दरशाय जा । कान चातकी श्याम विरह घन मुरली मधुर सुनाय जा ॥ ललितकिशोरी नयन चकोरन द्युति मुखचन्द दिखाय जा । भयो चहत यह प्राण वटोही रूसे पथिक मनाय जा ॥ ५२ ॥

राग पीलू—सुरतिया रे लागि रही हरिसों । आवन कहि गये आजहूं न आये वीत गैयाँ वरसों । यह तो जोवन चार दिहाड़े आज कल्ह परसों । अँवुआ मौले केसू फूले और फूली है सरसों ॥ ५३ ॥

राग खम्माच—बहुत दिननमें विदेश है आये मेरे प्यारे मनमोहन बधाये सब गावो री। नाचो रस राचो नीकी नीकी गति गति लै लै कर नीकी नीकी भाँतिनसों भावन बतावो री॥ ताल कठताल औ तमूर मुरचंगनसों घुँघुरू बजायकै मृदंगसों मिलावो री। नन्दके कुमार रिझवारको रिझावो आज सकल समाज कर रंग सरसावो री॥ ५४॥

योग देन गयो हौं वियोग वारि वारिधिमें डूबत बच्यो हौं नाथ नारी नैन यूँ बहे। गंगाहू सहस्र धारा अधिक सुधारा जान बरषा न होय जो रहोगे गिरि हू गहे॥ एतो जल भूमि न समाये कहूँ वारिधिमें मुनीपै न अच्यो जात कान खोल हौं कहे। कवि प्रहलाद जो मिलाप पाल बाँधो नाहिं, बटके बटूके पात साँवले भले रहे॥ ५५॥

राग कालिंगड़ा—जयति जय केशव निरंजन ईश नारायण हरी। वासुदेव सुरेश प्रभु जगदीश माधव मध्वरी॥ दीनबन्धु हृषीकपति अरविन्दलोचन कुंडली। धरणिधर भगवन्त विभु जनहेत बहु काया धरी॥ कमठ झष वाराह तन धरि जगतकी रक्षा करी। देखि दुख प्रहलादको खंभ फारि भे नरकेहरी॥ इन्द्रहेत उपेन्द्र है असुरेन्द्र दानीको छल्यो। राम राम अगाध गुण सुरवृन्दपै करुणा करी॥ अति कृपा मोहिं दर्श दीन्हे आश इक मन हरिविलास। नित्य नैननमें बसै तिरभंग मूरति शामरी॥ ५६॥

विनयके पद।

दोहा—कब हौं सेवाकुंजमें, हुइ हौं श्याम तमाल। लतिका कर गहि विरमि हैं, ललित लड़ैती लाल॥ कदम कुंज हुइहौं कबै, श्रीवृन्दावनमाँह। ललितकिशोरी लाड़िले, विहरेंगे तिहि छाँह॥ कालीदह कब कूलकी, हुइहौं त्रिविध समीर। युगल अंग अँग लागि हौं, उड़ि हैं नूतन चीर॥ सुमन वाटिका विपिनमें, हुइ हौं कब हौं फूल। कोमल कर दोउ भावते, धरि हैं वीन दुकूल॥ मिलि है कब अँग छार ह्वै, श्रीवनवीथिन धूर। परिहै पदपंकज युगल, मेरी जीवन मूर॥ कब कालिन्दी कूलकी, ह्वै हौं तरुवर डार। ललितकिशोरी लाड़िले, झूलें झूला डार॥ कब गहवरकी गलिनमें, फिरिहौं होय चकोर। युगल चन्दमुख निरखिहौं, नागरि नवलकिशोर॥ श्यामापद दृढ गह सखी, मिलिहैं निश्चय श्याम। ना माने दृग देख ले, श्यामापदविच श्याम॥५७॥

कवित्त—गिरि कीजे गोधन मयूर नव कुंजनको, पशु कीजै महाराज नन्दके वगरको। नर कीजै तौन जौन राधे राधे नाम रटै तट कीजै वर कूल कालिन्दी कगरको॥ इतनेपै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह, राखिये न आन फेर हठीके झगरको। गोपीपदपंकजपराग कीजे महाराज, तृण कीजे रावरेई गोकुल नगरको॥ ५८॥

दीनवन्धु दीनानाथ व्रजनाथ रमानाथ, राधानाथ मो अनाथकी सहाय कीजिये। तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी, नातो तुमहीसों मो विनय सुन लीजिये॥ रीझिये निहाल देर कीजिये न झीनी कहूँ, दीन जान दास मोहिं अपनाय लीजिये।

कीजिये कृपा कृपाल साँवले विहारीलाल, मेट दुखजाल वास वृन्दावन दीजिये ॥ ५९ ॥

सवैया—मानुप होहुँ वहीं रसखानि बसौं मिलि गोकुल गाँवके ग्वारन। जो पशु होउँ कहा वश मेरो चरौं पुनि नन्दकि धेनु मँझारन॥ पाहन होउँ वही गिरिको जो कियो व्रज छत्र पुरन्दर धारन। जो खग होउँ बसेरो करौं वहि कूल कलिन्दी कदम्बकि डारन ॥ ६० ॥

राग देश—अब विलंब जिन करो लाड़िली कृपादृष्टि टुक हेरो। यमुनापुलिन गलिन गहवरकी विचरूँ साँझ सवेरो॥ निशिदिन निरखौं युगल माधुरी रसिकनते भटभेरो। ललितकिशोरी तन मन अकुलत श्रीवन चहत बसेरो ॥ ६१ ॥

राग चैती गौरी—यमुना पुलिन कुंज गहवरकी कोकिल हुइ द्रुम कूक मचाऊँ। पदपंकज प्रिय लाल मधुप ह्वै मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊँ॥ कूकर हुइ वन बीथिन डोलौं बचे सीथ रसिकनके पाऊँ। ललितकिशोरी आश यही मम व्रजरज तज छिन अनत न जाऊँ॥ ६२॥

राग यमन—प्यारी मोतनहूँ टुक हेरो। श्रीवनद्रुमन लतनके नीचे रसमय चहूं गान गुण तेरो॥ आनन जानों अन्य न मानों तूही कृपापद साधन मेरो। ललित माधुरी आश पुरावो अब जिन करो हहा अवसेरो ॥ ६३ ॥

राग झिंझोटी—जो कोउ वृंदावनरस चाखैं। भवन चतुर्दश तिहूँलोकलौं सुपनेहुँ नहिं अभिलाखै॥ ललितकिशोरी परे कोनमें श्याम राधिका भाखै। युगलरूप विन पलक न खोलै लोभ दिखावो लाखै॥ ६४ ॥

कवित्त—एक रज रेणुकापै चिंतामणि वारि डारों, वारि डारों विश्व सेवाकुञ्जके विहारपै । लतनके पत्तनपै कोटि कल्प वारि डारों, रंभाहूको वारि डारों गोपिनके द्वारपै ॥ व्रजकी पनिहारनपै शची रची वारि डारों, वैकुण्ठहू वारि डारों कालिंदीकी धारपै । कहै अभैराम एक राधाजूको जानत हों, देवनको वारि डारों नन्दके कुमारपै ॥ ६५ ॥

राग धनाश्री—हमारे श्रीवृंदावन उर ओर । माया काल तहां नहिं व्यापै जहां रसिक शिरमौर ॥ छूट जात सत असत वासना मनकी दौरादौर । भगवत रसिक वतायो श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर ॥ ६६ ॥

ऐसे वसिये व्रजकी वीथन । साधुनके पनवारे चुन चुन उदर जो भरिये सीथन ॥ पैंड़ेके सब वृक्ष बिराजत छाया परम पुनीतन । कुंज कुंजप्रति लोट लोट कर रज लागे रँगरीतन । निशिदिन निरख यशोदानन्दन अरु यमुनाजल पीतन । परशत सूर होत तनु पावन दर्शन करत अतीतन ॥ ६६ ॥

राग गौरी—व्रजरज मोहनी हम जानी । मोहन कुंज मोहन वृंदावन मोहन यमुना पानी ॥ मोहनी नारि सकल गोकुलकी वोलत अमृत वानी । श्रीभटके प्रभु मोहन नागर मोहनी राधा रानी ॥ ६७ ॥

राग बिलावल—कहा करूँ वैकुण्ठहि जाय । जहँ नहिं नन्द जहां न यशोदा जहाँ न गोपी ग्वाल न गाय ॥ जहाँ न यमुनाको निर्मल जल और नहीं कदमनकी छाय । परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी व्रजरज तज मेरी जाय वलाय ॥ ६८ ॥

राग शहानो—धनि धनि श्रीवृन्दावन धाम । जाकी महिमा

वेद बखानत सब विधि पूरण काम ॥ आश करत है जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुरग्राम । लाड़िली लाल जहां नित विहरत रतिपतिछवि अभिराम ॥ रसिकनको जीवन धन कहियत मंगल आठो याम । नारायण विन कृपा युगलवर छिन न मिलै विश्राम ॥ ६९ ॥

राग परज—भजो मन वृन्दावन सुखदाई । अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी कनक सुरङ्ग चित्र छवि कालिंदी मणि कूलें । लतन रहे भर पाय सखी यह कंचनके द्रुम मूलें ॥ जलज थलज रहैं विकस जहाँ तहँ बरण बरण छवि छाई । सहज रैन सुख-दैन विराजत वृन्दावन सुखदाई ॥ भजो० ॥ राजत नवल निकुं-जहि लालन निरख होत सुखपुंजहि । निरख होत सुखपुंज कमलदल रचि है सुंदर सैन ॥ वहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षत मन मैन । डोलत केकि कीर पिक बोलत जित तित मधुपन गुंजहिं ॥ रत्नखचित फूलनसों फूली राजत नवल निकुं-जहिं ॥ भजो० ॥ करत निकुंज विहार सखियन प्राण अधार रसिकवर नवलकिशोरकिशोरी । हँस मुर चित चोरत प्यारेको सब अँग नागर गौरी ॥ अति विलास नव नव रुचि उपजत बल किंकिणि झंकार । अति प्रवीन रति कोक कलनमें करत निकुंज विहार ॥ भजो० ॥ निरखे निरखे वल जाई । श्रमजलकण झलकाई । श्रमजलकण रहे झलक वदनबिच कहुँ कहुँ पीक जु सोहै । हँस मुर चित चोरत प्यारेको ऐसीको जु न मोहै ॥ चितहिं चिह्न रजनीके सजनी नयननमें मुसकाई । जैश्रीहित ध्रुव सखी सरस रँग भीनी निरख निरख वल जाई ॥भजो०॥७०॥

राग दादरा—ऐसो कब करि है मन मेरो । कर करवा

गुंजनके हरवा कुंजनमाहिं वसेरो ॥ ब्रजवासिनके टूक जूँठ अरु घर घर छाँछ महेरो। भूख लगे तव माँग खाय हों गिनों न साँझ सवेरो ॥ इतनी आश व्यासकी पुजिये मेरो गाँव न खेरो ॥ ७१ ॥

राग धनाश्री—नमो नमो वृन्दावनचन्द। आदि अनन्त अनादि एक रस पिय प्यारी स्वच्छन्द ॥ सत चित आनँदरूप घन खग मृग द्रुम वेली और वृन्द। भगवत रसिक निरन्तर सेवत मधुप भये पीवत मकरन्द ॥ ७२ ॥

राग विहार—वृन्दावन विपिन सघन वंशीवट पुलिन रमन निधि वन कोकिला वन मोहन मन भावै। सेवाकुंज सुखको पुंज जहाँ राजत पिया प्यारी ललितादिक संग लिये उमँग गावै ॥ यमुनाजल अति गँभीर कदमनकी जहाँ भीर ललित लता कुसुम भार अपने वरसावै। हंस मोर कोकिला पपीहा जहाँ शब्द करैं पशु पक्षी दास कान्हर राधाकृष्ण राधाकृष्ण राधाकृष्ण गावै ॥ ७३ ॥

सवैया—दीनदयालु सुने जवते तवते मनमें कछु ऐसी वसी है। तेरो कहायके जाऊँ कहाँ तुम्हरे हितकी पट खेंचि कसी है ॥ तेरो ही आसरो एक मलूक नहीं प्रभुसों कोउ दूजो यसी है। ए हो मुरार पुकार कहों अव मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है॥७४॥

कवित्त—जानके पतित तारो आनके विरद धारो, काढ़ो भुजा तानके कहाँ सो देर डारी है। तारयो है सुदामा यार उंचारयो है प्रहलाद, द्रौपदीकी लाज राखी सभा देखे सारी है ॥ गज नेक ध्यायो प्रभु छोड़ धायो गरुडहू, ब्रजको वचायो ताते नाम गिरिधारी है। दास तो पुकारे प्रभु काटि कष्ट कोटि भारे, अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है ॥ ७५ ॥

नन्दके आनन्द हो मुकुन्द परमानन्द हरि, काटौ यमफन्द मोहिं भयसों बचाइये । नहीं जानो ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नाहिं कियो, भर्‍यो मान अहंकार कैसे तोहिं ध्याइये ॥ सुनो कृष्ण हरी जैसी करी सो करी दयालु,तैसे दीन जान मेरी पीरको मिटाइये । सुखके निधान दान दीजै प्रेम भक्तिहूको,चरणनमें चित्त मयारामको लगाइये ॥ ७६ ॥

दीनानाथ दयासिन्धु आरतहरण भारी, द्रौपदी उबारी तैसे मोहूको उबार ल्यो । गणिका उबारी गज संकट निवारी, प्रहलाद हितकारी दुख दारुण निवार ल्यो ॥ गौतमकी तिय तारी चरणन रज धारी, गऊ हितकारी भवसागर उबार ल्यो । टेरे प्रभु नन्दलाल दीनबन्धु भक्तपाल, करुणा कृपाल लाल बिरद सम्हार ल्यो ॥ ७७ ॥

आप सब नेरे और दूरकी पछानत हो, छिपी नाहिं कूरकी रु साहिब शऊरकी । निकुता निवाजी कर राजी छिनहींमें होत, कर इतराजी नाहिं सुनिके कसूरकी ॥ तुमसो न दूसरो दयालु श्रीबिहारीलाल, जाहि लाज आवे निजजनके जरूरकी । गरजी बिचारे को तो अरजी किये ही बनै, माननी न माननी सो मरजी हुजूरकी ॥ ७८ ॥

श्यामघन तनपर बिज्जुसे दशनपर, माधुरी हँसनपर खिलत खगी रहै । खौरवारे भालपर लोचन विशालपर, उर वनमालपर जुगत जगी रहै ॥ जंघयुग जानुपर मंजु मुरवानपर, श्रीपति सुजान मति प्रेमसों पगी रहै । नूपुर नगनपर कंजसे पगनपर, आनँद मगन मेरी लगन लगी रहै ॥ ७९ ॥

मैं तो हूँ पतित आप पावन पतित नाथ, पावन पतित हो तो पातक हरोइंगे । मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीननाथ, दीनबंधु

फन्द गलेमें डारयो जग भरमायो वे काज ॥ भवसागरके पार जानको पायो नाम जहाज । बलिहारीका बेड़ा पार उतारो अपनो जान व्रजराज ॥ ८८ ॥

जे जन शरण गये ते तारे । दीनदयालु प्रगटे पुरुषोत्तम सुनिये नंददुलारे ॥ माला कंठ तिलक माथे दे शंख चक्र वपु धारे । जितने रविछायाके कनका तितने दोष हमारे ॥ तुम्हरे दरश प्रताप तेजते तत्क्षण ते सब टारे । मानिकचन्द्र प्रभुके गुण ऐसे महापतित निस्तारे ॥ ८९ ॥

राग धनाश्री—अब हों नाच्यो बहुत गुपाल। काम क्रोधको पहिर चोलना कंठ विषयकी माल ॥ महामोहके नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल । तृष्णा नाद करत घटभीतर नाना विधकी ताल ॥ मायाको कटि फेंटा बाँध्यो लोभतिलक दियो भाल। कोटिक कला नाच दिखराई जल थल सुध नहिं काल ॥ सूरदासकी सभी अविद्या दूर करो नँदलाल ॥ ९० ॥

कबहूँ नाहिंन गहर कियो । सदा स्वभाव सुलभ सुमिरणवश भक्तन अभय दियो ॥ गाय गोप गोपीजन कारण गिरि करकमल लियो । अघ अरिष्ट केशी काली मथ दावाअनल पियो ॥ कंसवंश वधि जरासन्ध हति गुरुसुत आन दियो । कर्पत सभा द्रुपदतनयाको अम्बर आन छियो ॥ काकी शरण जाउँ यदुनन्दन नाहिंन और बियो । सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो ॥ ९१ ॥

राग कल्याण—तुम्हारे हों आगे बहुत नच्यो । सुनिये दीनदयालु देवमणि बहु बड़ रूप रच्यो ॥ कियो स्वाँग जलहू थलहूमें एकौ तौ न बच्यो । शोध सबै गुण गूढ़ दिखाये अन्तर होउ

सच्यो ॥ रीझत नाहिं गोविंद गुसाईं कह कछु जाय जच्यो । इतनी तो कहो सूर पुरोदै काहे मरत पच्यो ॥ ९२ ॥

राग टोड़ी—दीनन दुख हरन देव सन्तन हितकारी ॥ अजामील गीध व्याध, इनमें कहो कौन साध, पक्षीहुँ पद पढ़ात गणिकासी तारी । ध्रुवके शिर छत्र देत, प्रहलादको उबार लेत, भक्तहेत बाँध्यो सत लंकपुरी जारी ॥ तन्दुल देत रीझ जात, साग पातसों अघात, गिनत नाहीं जूँठे फल खाटे मीठे खारी । गजको जब ग्राह ग्रस्यो, दुःशासन चीर खस्यो, सभाबीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी ॥ इतने हरि आय गये, वचनन आरूढ भये, सूरदास द्वारे ठाढ़ो आँधरो भिखारी ॥ ९३ ॥

राग झिंझोटी--मोसम कौन अधम जगमाहीं । भ्रमत रहत नित विषयवासना तज निधि बन द्रुम बेलिन छाहीं ॥ चिंतन करत न ललितकिशोरी युगल लाल दीने गर बाहीं । निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुटपर छाहीं ॥९४॥

राग टोड़ी--मोसम कौन कुटिल खल कामी । जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमकहरामी ॥ भर भर उदर विषयको धावों जैसे शूकर ग्रामी । हरिजन छांड़ हरीविमुखनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन बड़ो है मोते सब पतितनमें नामी । सूर पतितको ठौर कहाँ है सुनिये श्रीपति स्वामी ॥९५॥

राग धनाश्री--मेरी सुध लीजो श्रीनन्दकुमार । अधम उधारन नाम हितारो मैं अधमन सरदार ॥ अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार । शोमन जनकी तारन बिरियां लाई एती बार ॥ ९६ ॥

मेरी सुध लीजो श्रीब्रजराज । और नहीं जगमें कोउ मेरो

हो तो दया जीयमें धरोईगे ॥ मैं तो हूँ गरीब आप तारक गरी- बनके, तारक गरीब हो तो विरद बरोईगे । मेरी करणीपै कछु सुकर न काज कान्ह, करुणानिधान हो तो करुणा करोईगे ॥८०॥

जौन हाथ वामन हो वलिद्वारे दान माँग्यो, जौन हाथ कूबरी मिलाई गह गातसों । जौन हाथ प्रहलाद तातसों उबार लीनो, जौन हाथ कंस मार्यो वलभद्र साथसों ॥ जौन हाथ गोपिनको गिरिवर ओट कीनो, जौन हाथ कालीनाग नाथ्यो परजातसों । हौं तो कहूँ वार वार सुनो नाथ एक वार, वही हाथ गहो मोको हाथीवाले हाथसों ॥ ८१ ॥

देव दृग तारे तोहिं गावैं वेद चारे तारे, पतित अनेक जे नभमें न तारे हैं । रतनारे नैननते नेकहू निहारे नाथ, को कोटि दीननके दारिद विदारे हैं ॥ श्रीपति पुकारे कहे नीर वरन वारे, राधाजूके प्राणप्यारे यशुदाके वारे हैं । नन्दके दुल धराधरके धरनहारे, मोरपच्छवारे सो हमारे रखवारे हैं ॥ ८२ ॥

मोरके मुकुटवारो धरे वेश नटवारो, छुटी लोल लटवा जगत उज्यारो है । साँवरे वरनवारो मुरली धरनवारो, संक हरनवारो नन्दजूको प्यारो है ॥ दानव दलनवारो छविको छलन वारो, मन्दसी चलनवारो पोसी उर धारो है । कंजसे चखनवार भृगुलता लखवारो, मोरपच्छवारो सो हमारो रखवारो है ॥८३।

राग जंगला—श्यामसुन्दर मनमोहनी मूरत सुन्दर रू उजारी रे । चरणकमल पिंडुरी जंघनपर सोहत कटि लचकार रे ॥ नाभि गँभीर हृदय अति कोमल कृपासिंधु वनवारी रे भुज आजानु करनविच वंशी लकुट लिये गिरिधारी रे ॥ ग्रीव चिबुक मृदु हँसन मनोहर हौं लखि छवि बलिहारी रे । नासा नयन भौंह अति बाँकी जिन मोही व्रजनारी रे ॥ श्रवण कपो-

लनपर छूटी वे नागिन लट बलहारी रे । भाल विशाल पेच शिर जूटा मुकुट झुलन् सुखकारी रे ॥ युगल किशोर मोरपख- धारी अब क्या सुरत विसारी रे ॥ ८४ ॥

राग बिलावल—माधोजू जो जनते विगरै । सुन कृपाल करुणामय कबहूँ प्रभु नहिं चित्त धरै ॥ ज्यों शिशु जननि जठर अन्तरगत शत अपराध करै । तऊ तनय तनु तोष पोष चित विहँसत अंक भरै ॥ यदपि विटप जर हतन हेत कर कर कुठार पकरै । तदपि स्वभाव सुशील सुशीतल रिपु तनुताप हरै ॥ कारन करन अनन्त अजित कह किहि विधि चरण परै । यह कलिकाल चलत नहिं मोपै सूर शरण उबरै ॥ ८५ ॥

अबके माधो मोहिं उधार । मगन होत भवसिंधुमें कृपासिंधु मुरार ॥ नीर अति गंभीर माया मोह लहर तरंग । लिये जात अगाधको वर गहे ग्राह अनग ॥ मीन इन्द्रिय अतिहि काटत पेट अघ शिर भार । भूमि पाइ न जात जित कित उरझ मोह सिवार ॥ क्रोध दंभ भयानक तृष्णा पवन अति झकझोर । नाहिं चितवत देत सुत त्रिय नाम नौका ओर ॥ परयो बीच बिहाल विह्वल सुनहु करुणामूल । श्याम भुज गहि काढ़ि डारहु सूर जन ब्रजमूल ॥ ८६ ॥

राग बरवा—शरण गये प्रभु कौन उबारे । जित जित भीर परी भक्तनको चक्र सुदर्शन तहाँ सम्हारे ॥ महाप्रसाद बैठ अम्ब- रीषहिं दुर्वासाको कोप निवारे । ग्राह ग्रसत गजको जल डूबत नाम लेत वाको दुख टारे ॥ सूरश्याम विन करै और को रंगभूमिमें कंस पछारे ॥ ८७ ॥

राग भैरवी—मेरी तो बिहारीजी प्यारे तोहिं लाज । माया-

तुमहि सुधारन काज ॥ गणिका गीध अजामिल तारे औ शवरी गजराज । सूर पतित तुम पतित उधारन बांह गहेकी लाज ॥९७॥

राग पीलू--टुक नजर मिहर दी देख असांवल सांवरो गिरिधारी । चरण सपरश अहल्या तारी द्रुपदसुताकी लज्जा राखी पाप करंती गणिका तारी सोच कहा मेरी वारी ॥ भक्त सुदामाके दरिद विदारे जल डूबत गजराज उबारे अजामीलसे पापी तारे हमरी कहा विचारी । सकल धरणिको भार उतारे लंकापति रावण तैं मारे हरणाकुश नख उदर विदारे महादुष्ट बलकारी ॥ भीर समय प्रभु लेत बचाई वाहन तजि पायँन उठ धाई निजभक्तनके सदा सहाई सुध लेहु वेग हमारी । नाम सुजान तेरो कहिये निशिदिन चरण शरण तेरी रहिये मनकी व्यथा सब तुमहिं सुनैये सूरदास बलिहारी ॥ ९८ ॥

राग बिलावल--तुम गोपाल मोसों वहुत करी । नरदेह सुमिरणको दीनी मो पापीसे कछु न सरी ॥ गर्भवास अति त्रा[illegible] अधोमुख ताहि न मेरी सुधि बिसरी । पावक जठर जरन न[illegible] दीनो कंचनसी मेरी देह करी ॥ जगमें जन्मि पाप बहु कीने आ[illegible] अंतलौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने विर दकि लाज धरी ॥ ९९ ॥

राग देश सोरठ--हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो । समदरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥ इक नदिया इक नाले कहावत मैलो नीर भरो । जब मिल करके एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो ॥ इक लोहा पूजामें राख्यो इक गृह वधिक परो । पारस गुण अवगुण नहिं चितवे कंचन करत खरो ॥ यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो । अबकी वेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण जात टरो ॥ १०० ॥

सुन लीजे विनती मोरी। मैं शरण गही प्रभु तोरी॥ तैं पतित अनेक उधारे। भवसागर पार उतारे॥ मैं सवका नाम न जानूँ। मैं कोइ कोइ भक्त वखानूँ॥ अम्बरीप सुदामा नामा। पहुँचाये हैं निज धामा॥ ध्रुव पाँच वरसका वाला। तैं दर्श दियो नँदलाला॥ धन्नेका खेत जमाया। कवीर घर वैल ल्याया॥ शवरीके तैं फल खाये। सव काज किये मनभाये॥ सदनाते सैना नाई। तैं बहुत करी अपनाई॥ कर्माकी खिचड़ी खाई। तैं गणिका पार लगाई॥ मीरा तुम्हरे रँग राती। यह जानत हौं सब भाँती॥ चरणदास तेरो यश गावै। फिर जन्म मरण नहिं पावै॥१०१॥

राग बड़हंस—कहोजी कैसे तारोगे मेरो औगुण भरयो शरीर॥ रंका तारयो बंका तारयो तारयो सदन कसाई। सुआ पढ़ावत गणिका तारी तारी मीरावाई॥ धन्ने भक्तका खेत जमाया नामैं छान छवाई। सैन भक्तकी विपति निवारी आप भये प्रभु नाई॥ वृंदावनकी कुंजगलिनमें लगी श्यामसे डोर। अवकी वेर उवारो प्यारे लीनी कवीराने ओट॥ १०२॥

राग सोरठ—म्हाने पार उतारो जी थाने निजभक्तनकी आन। हमरे अवगुण नेक न चितवो अपनो ही कर जान॥ काम क्रोध मद लोभ मोहवश भूल्यो पद निर्वान। अब तो शरण गही चरणनकी मत दीजो मोहिं जान॥ लख चौरासी भरमत भरमत नेक न परी पछान। भवसागरमें वह्यो जात हौं रखिये श्याम सुजान। हौं तो कुटिल अधम अपराधी नहिं सुमिरयो तेरो नाम। नरसीके प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुरान॥ १०३॥

राग कान्हरो—ऐसी कव करिहो गोपाल। मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल॥ चित चरणन जु निरन्तर

अनुरत रसना चरित रसाल । लोचन सजल प्रेम पुलकित तन कर कंचन दल माल॥ ऐसी रहत लिखत छिनछिन यम आपनो भायो भाल ।सूर सुयश रागी न डरत मन सुन यातना कराल १०४

राग सारंग—आनन्दकन्द सुखनिधान दीनानाथ भक्तपाल शोभासिन्धु राखो मान अनेक विघन टारिये जी । जहँ जहँ परी भीर तहँ तहँ धरो धीर गरुड़ छोड़ वेग धाये ऐसी कृपा धारिये जी ॥ द्रौपदीको दिये चीर काटत प्रभु जनकी पीर भक्तहेतु रूप धार अपनो जन तारिये जी । कहत हैं महीधरदास चाहत प्रभुपद निवास जन्म जन्म शरण तेरी भवसिंधुमें उबारिये जी॥

राग झँझौटी—राधारमण चरण जो पाऊँ। शुक समान दृढ़ कर गह राखों नलिनीसम दुलराऊँ ॥ सौरभयुत मकरन्द कमलवर शीतल हीय लगाऊँ । विरहजनित दृग तपन किशोरी सहजै निरख नशाऊँ ॥ १०६ ॥

राग प्रभाती—नामकी पैज राखो धनी। संकट काट निवाजे केते गिनत न जाय गिनी ॥ खंभाते प्रहलाद छुड़ाये द्रौपदीके पुनि चीर वढ़ाये गजके फंदन काट निकाले सुनतहि टेर कनी। नामदेवकी गऊ जिवाई धन्नेके दुध पीया जाई सुदामाके मन्दिर ऊँचे साजे सुरत सो सुरत वनी ॥ कवीर राख गेयरसे लीने सूर भक्तको दर्शन दीने पाया वीच सभा कर साँचा दियो मिलाय जनी । जयदेवकी अष्टपदी विचारी मीरावाईकी जहर निवारी रामदासको कनक जनेऊ दीना ऐसे दयालु मनी ॥ भीलनीते ले वनफल खाये त्रिलोचनके त्रतिया हो धाये अंबरीष भक्तको वरत रखायो चक्रकी फेर अनी । कर्माबाईकी खिचड़ी लीनी सेनेकी जाय प्रतिज्ञा दीनी ध्रुरू राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति घनी ॥

सुवा पढ़ावत गनिका तारी अहल्या चरणन लाय उधारी नानक वेदी कियो हजूरी राख्यो लाय तनी । दुनीदास प्रभु सन्त सहाई असुर सँहारत बेगहि आई ताको नाम हृदयमें राखो सुमिरो एक मनी ॥ १०७ ॥

राग विहाग—दीन भयो गजराज हीन भयो वलहूँते टूट गयो मान टेर्यो हरी हरी करके ॥ पौढ़े प्रभु रमासंग पीतपट राते रंग सोये उठ धाये नाथ नयन आये भरके ॥ आधी रात धाये नाथ चक्र सुदर्शन लिये हाथ तोड़ दीने तंदुवाको जरी जरी करके । तुलसीदास त्रिलोकीनाथ भक्तनके सदा साथ गरुड छोड़ धाये नाथ करी करी करके ॥ १०८ ॥

राग भूपाली जंगला—गजकी वाणी सुनके सिंहासन तजि उठ धाये महाराज । श्रीश्रीश्री चकित भई सुनके खगपति पार न पाये महाराज ॥ कटिको पीताम्बर कहूँ गिरो है तनुकी सुध बिसराये महाराज । ग्राह मार गजराज उबार्यो सुरन सुमन झर लाये महाराज ॥ रत्न हरी शरण तिहारी नाम तिहारो नित गाये महाराज ॥ १०९ ॥

चौपाई छन्द—द्रौपदि धार्यो ध्यान जवहिं मन आतुर होई । तुमविन श्रीनन्दलाल और मेरो नहिं कोई ॥ बूड़त हौं दुखसिंधुमें, शरण द्वारकानाथ । त्राहि त्राहि सुधि लीजिये, अब मैं भई अनाथ ॥ हाय हाय यदुनाथ हाय गोवर्धनधारी । हाय हाय वलवीर हाय श्रीकुंजविहारी ॥ हाय हाय राधारमण, हा श्रीकृष्ण मुरार । हाय हाय रक्षा करो, श्रीव्रजराज दुलार ॥ शरन शरन सुखधाम शरन दुखभंजन स्वामी । शरन शरन रक्षपाल शरन प्रभु अन्तरयामी ॥ शरण परी मैं हारके, शरणागत

प्रतिपाल। लज्जा राखो दासकी, दीनानाथ दयाल ॥ भीर परी प्रहलाद रूप नरसिंह बनायो । गजने करी पुकार पायँ प्यादे उठ धायो ॥ दुर्वासा अम्बरीपहित, जिन जन करी सहाय । कौन अवज्ञा दासकी, विलम करी यदुराय ॥ युग युग भक्तसहाय पैज तिनकी तुम राखी । सवही कहत पुराण वेद स्मृति मुनि साखी॥ मैं तो दासी चरणकी,जानत सब संसार । बिरद आपनो जानके, लज्जा राख मुरार ॥ अन्तर्यामी श्याम बेर इतनी क्यों लाई । कापै करूं पुकार ताहि तुम देहु बताई ॥ तुम माता तुम पिता तुम, बान्धव सुहृद सुवीर । तुमबिन मेरो कौन है, जाहि सुनाऊँ पीर ॥ नगर द्वारकामाहिं सार खेलत गिरिधारी । जानी श्रीबलवीर दीन होय दासि पुकारी ॥ नयन रहे जल पूरके, पासा डार अनन्त । पचहारी सेना सकल, चीर न आयो अन्त ॥ नग्न न होई द्रौपदी, रक्षा करी मुरार । देव पुष्प वर्षा करी, जय जय शब्द उचार ॥ ११० ॥

राग भैरवी—पति राखो मोरी श्याम बिहारी । बनवारी गिरिधारी श्रीकृष्ण मुरारी ॥ शूर समूह भूप सब बैठे भीपम द्रोण कर्ण व्रतधारी । कहि न सकै कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत विचारी॥बलविहीन पांडवसुत डोलैं भीम गदा महिसों कर डारी । रही न पैज प्रबल भारतकी जबसे धरणि धर्मसुत हारी ॥ लाक्षागृहते जरत उबार्‍यो नाथ तुम्हें छोड़ कहिहों पुकारी । अबलग नाथ नहीं कछु बिगर्‍यो उघरत माथ अनाथ पुकारी ॥ छूटत लाज आज दासीकी फिरि का करिहो आय मुरारी । सूरके स्वामी वेगि दर्श देउ फिरि पछितैहो देखि उघारी ॥ १११ ॥

राग धनाश्री—लज्जा मेरी राखो श्याम हरी । कीनी कठिन दुशासन मोसे गह केशों पकरी ॥ आगे सभा दुर्योधन चाहत नग्न करी । पाँचौ पांडव सब बल हारे तिनसों कछु न सरी ॥ भीषम द्रौण विदुर भये विस्मय तिन सब मौन धरी । अब नहिं मात पिता सुत बान्धव एक टेक तुम्हरी ॥ वसन प्रवाह किये करुणा-निधि सेना हार परी । सूर श्याम जब सिंह शरण लई स्यालोंको काहि डरी ॥ ११२ ॥

कबित्त—दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीनबन्धु, दीन ह्वैके द्रुपददुलारी यों पुकारी है । आपनो सबल छाँड़ ठाढ़े पति पार-थसे, भीम महाभीम ग्रीवा नीचे कर डारी है ॥ अंबरलौं अंबर प्रहाड़ कीनो शेष कवि, भीषम करण द्रोण सभी यों बिचारी हैं । सारी मध्य नारी है कि नारीमध्य सारी है कि, सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है ॥ ११३ ॥

भजन—जब पट गह्यो दुशासन करसों । इत उत चितै सकुच कमठी जिमि करत पुकार राधिकाबरसों ॥ हो यदुनाथ अनाथ होत हौं कुल परिवार सभापति घरसों । बूड़त बेग बाँह गह राखो दीनानाथ दुःखके सरसों ॥ हो भगवन्त अन्त पछितैहो बहुरि मिलोगे आय नरहरिसों । युगल करि मानों वसन पूतरी लई लपेट शीश पद करसों ॥ ११४ ॥

राग देश—मेरे माधोजी आयो हौं सरे । तेरा बार बार यश गाऊँ साँवरे आयो हौं सरे ॥ करुणा करे लिखे गुणवन्ती यह मनमें उचरे । लिखि पतिया द्विजहाथ पठाऊँ द्वारका गमन करे ॥ लगन लिखाय चँदेरीको भेजा कागज मेल धरे । रुक्मैया जब मानत नाहीं कूड़े बचन करे ॥ दल जोड़े शिशुपाल जो आये लंगर घेर खड़े । पदमके स्वामी बेग पधारो रुक्मिणि याद करे ॥ ११५ ॥

राग आसावरी–सन्तन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी। पिता कहे में व्याहूँ द्वारका भैया कहत चन्देरी ॥ लिख लिख पतियाँ रुक्मिणि भेजे दासी तड़प रही तेरी । इत दल जोड़ शिशुपाल आयो व्याहनको यहँ घेरी ॥ जब शिशुपाल वेदीपर बैठे जल बल हो जाऊँ ढेरी । सिंहका शिकार स्यार लिये जात हैं यह गति भई अब मेरी ॥ जो मेरेको वर ले जावे क्या पति रह जाय तेरी । कुंडिनपुरमें अंबिका देवी पूजन जात सवेरी ॥ पदमके स्वामी अन्तर्यामी वेगि खबर लीजे मेरी ॥ ११६ ॥

राग धनाश्री–म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवनधनी । क्षोणी दल शिशुपाल ले आयो तुम अजहूँ न सुनी ॥ कुंडिनपुरको घेर लियो है गाढ़ी विपति बनी । हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूंगी कनी ॥ ताके संग जीवत नहिं जेहौं यह निश्चय मति ठनी । थोरीसे बहुती कर जानो और कहाँको धनी । विष्णुदासपर कृपा कीजिये रख लीजे रुकमनी ॥ ११७ ॥

राग सोरठ–सुन अलकांवाले कृष्णजी मोरे मनमें आन बसो ॥ जरद बाना पहरके शिर मुकुटको कसो । चलते हो टेढ़ी चाल मत घायल मुझे करो ॥ शिवगिरिकी अरज मानिये दीनानाथ हरे । महाराज तेरी कृपासे कई कोटि पतित तरे ॥ ११८॥

राग आसावरी–बन्धन काट मुरारी हमरे बन्धन काट मुरारी । ग्राह गजराज लड़े जलभीतर ले गयो अंबु मँझारी । गजकी टेर सुनी यदुनन्दन तजी गरुड असवारी ॥ पांचाली कारण प्रभु मोरे पग धारयो गिरिधारी । पट शठ खेंचत निकसत नाहीं सकल सभा पच हारी ॥ चरण सपर्श परमपद पायो गौतम ऋषिकी नारी । गणिका शबरी इन गति पाई बेठि विमान सिधारी ॥

सुनि सुन सुयश सदा भक्तनको सुखसों भज्यो इक वारी । विधी-चन्द दर्शनको प्यासो लीजिये सुरत हमारी ॥ ११९ ॥

संकट काट मुरारी, हमरे संकट काट मुरारी । संकटमें इक संकट उपज्यो अरज करे मृगनारी ॥ इक ढिग वावर जाय गड-रिया इकढिग श्वान बिहारी । इकढिग जा अग साड़ी इकढिग जा बैठ्यो फन्द कारी ॥ उलटी पवन वावरको लागी श्वान गयो ससकारी । बरनीसे भुवंग जो निकस्यो तिन डस्यो फन्द-कारी ॥ नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चरणकमल बलिहारी ॥ १२० ॥

राग झपताल—मो मन बसो श्यामा श्याम । श्याम तन मन श्याम कामर मालकी मणि श्याम ॥ श्याम अंगन श्याम भूषण वसन हैं अति श्याम । श्यामा श्यामके प्रेम भीने गोविंद जन भये श्याम ॥ १२१ ॥

राग कान्हरा—दीजे दरश मोहिं चतुर भुजन कर । शंख चक्र गदा पद्म धारिये पीतांबर ओढंबर साजे गल मोतियनकी माल मनोहर ॥ १२२ ॥

आये आये जी महाराज अपने भक्तके काज सारे । तज वैकुंठ तज्यो गरुडासन पवन वेग उठ धाये ॥ जबके दृष्टि परे नँदनन्दन भक्तहेतु रूप धारे । मीराके प्रभु गिरिधरनागर चरण-कमल चित लाये ॥ १२३ ॥

राग टोड़ी—तुमविन श्रीकृष्णदेव और कौन मेरो । कई अनेक ऐरावत ऐसो वल मेरो ॥ मैं तो अभिमानी नाम जान्यो नहिं तेरो । भ्रमत भ्रमत प्यास लगी चाह्यो चित मेरो ॥ सभी कुटुंब छोड़ नाथ सागर पद गेरो । जलमें पग बोरत ही, आन

ग्राह घेरो ॥ मैं तो बलहीन नाथ वाहि बल घनेरो । मात पिता भाई बंधु कुटुंब तो घनेरो ॥ दशौं दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो । केते गज ग्राह फंद अतुलित बल श्रीमुकुन्द काटो भवफंद प्रभु जरा नजर फेरो ॥ डूबत गजराज जान टेरत श्रीकृष्ण नाम दीनबन्धु दीनानाथ बिरद जात तेरो । लड़त लड़त देर भई आयो अन्त मेरो ॥ जबलग मैं जीवों नाथ जपों नाम तेरो । गोपीनाथ मदनमोहन करुणाकर हेरो ॥ सूरदास गरुड़ छोड़ कर- दियो निवेरो ॥ १२४ ॥

राग देश सोरठ—पाती मेरी द्वारका लेजाय । विप्र तुम बेग धायो जाय ॥ लिख लिख भेजूँ चीठियाँ जी मैं लिखाँ दुराय दुराय । है कोई हितकारी हमको सुनत ही उठ धाय ॥ कुंडिनपुरमें आश्चर्य देखो सिंह घेरी गाय । भाग राख्यो हंसकारण काग पहुँचे आय ॥ लग्न जोर बरात आई दिये खंभ गड़ाय । रुक्मैया शिशुपाल आये जरासन्ध सहाय ॥ अम्बिकापूजन चली है रुक्मिणि संग सहेलियाँ जाय । जे अंबे वर देत हैं श्रीकृष्ण देहु मिलाय ॥ अंबिका पूजके आई है रुक्मिणि श्रीकृष्ण पहुँचे आय । अपने बिरदकी लाज राखी सूर बलि बलि जाय ॥ १२५ ॥

राग देश—म्हारो काँई बिगरेगो थारोई विरद लजेगो । रुक्मैया बन्धू जो बैरी कूड़ी साख भरेगो ॥ जरासन्ध शिशुपाल जो आये भूपमे भूप अड़ेगो । पदमके स्वामी अन्तर्यामी करता कौन कहेगो ॥ १२६ ॥

कवित्त—कैसे तुम गणिकाके औगुण न गिने नाथ, कैसे तुम भीलनीके जूठे बेर खाये हो । कैसे तुम द्वारकामें द्रौपदीकी टेर सुनी, कैसे तुम गजकाज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदा-

माके छिनमें दरिद्र हरे, कैसे तुम उग्रसेन बन्दीते छुड़ाये हो। मेरी वेर एती देर कान मूँद रहे नाथ, दीनबंधु दीनानाथ काहेको पठाये हो ॥ १२७ ॥

राग धनाश्री—पतित पावन हरि नाम तिहारो कौनेहूँ धरचो। हौं तो दीन दुखित संसृतिरत द्वारे रटत परचो ॥ गज गणिका नृग गीध व्याधते मैं घट कहा करचो। ना जानों यह सूर महाशठ कौन दोष बिसरचो ॥ १२८ ॥

राग बिहाग—किन तेरो गोविंद नाम धरचो। लेन देनके तुम हितकारी मोते कछु न सरचो॥ विप्र सुदामा कियो अयाची तन्दुल भेट धर्‌यो। द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अम्बर दान कर्‌यो ॥ सन्दीपनके तुम सुत लाये विद्या पाठ पढ़्यो। सूरकी बिरियाँ निठुर हुइ बैठे कानन मूँद धर्‌यो ॥ १२९ ॥

राग धनाश्री—नाथ मोहिं अबकी वेर उवारो। तुम नाथनके नाथ स्वामी दाता नाम तिहारो ॥ करमहीन जन्मको अन्धो मोते कौन नकारो। तीन लोकके तुम प्रतिपालक मैं तो दास तिहारो ॥ तारी जात कुजात प्रभूजी मोपर किरपा धारो। पतितनमें इक नायक कहिये नीचनमें सरदारो ॥ कोटि पाप इक पासँग मेरे अजामिल कौन बिचारो। नाठो धरम नाम सुन मेरो नरक कियो हठ तारो ॥ मोको ठौर नहीं अव कोऊ अपनो विरद सम्हारो। क्षुद्र पतित तुम तारे रमापति अव न करो जिय गारो। सूरदास साँचो तव माने जो होय मम निस्तारो ॥ १३० ॥

राग देश सोरठ—हरि हौं वड़ी बेरको ठाढ़ो। जैसे और पतित तुम तारे तिनहींमें लिख काढ़ो ॥ युग युग बिरद यही चल आयो टेर कहत हौं ताते। मरियत लाज पंच पतितनमें

हीं घट कहो कहाँते ॥ कै अब हार मानकर बैठो कै कर विरद सही। सूर पतित जो झूठ कहत है देखो खोल बही ॥ १३१ ॥

गजल—जहाँ देखो वहाँ मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है। उसीका सब है जलवा जो जहाँमें आशिकारा है ॥ भला मखलूक खालिककी सिफत समझे कहाँ मुमकिन। उसीसे नेत नेत ऐ यार वेदोंने पुकारा है॥ न कुछ चारा चला लाचार लाखों हार कर बैठे। बेचारे वेदने प्यारे बहुत तुझको विचारा है ॥ जो कुछ कहते हैं हम यह भी तेरा परकाश है वरना। किसे ताकत जो मुँह खोले यहाँ हर शख्स हारा है ॥ तेरा है तेज हरशैमें काहसे कोह तक प्यारे। उसीसे कहके हर हर तुझको सब जगने उचारा है ॥ कोई तुझको पुकारे ब्रह्म कर्ता एक कहते हैं। कहें निर्लेप इक ज्ञानी ध्यानी ध्यान धारा है ॥ करो किरपा रसाई दो सजन अपने ही चरणोंमें। भला है या बुरा है जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥ बहुत दुस्तर है भवसागर न पारावार कुछ सूझै। कहै कर जोर राधानाथ इक तूही सहारा है ॥ १३२ ॥

अफसोस भरी नाथ सुनो मेरी भी हालत। पापी हूँ मुझे अरजसे आती है खिजालत ॥ कैदीकी तरह उम्र कटी मोहके वशमें। पाबन्द किया लोभने वेदाना कफसमें ॥ हरएक घड़ी गुजरी है दुनियाँकी हवसमें। इक दिन भी नहीं कामका हर माह बरसमें ॥ इक वक्तका तोसा नहीं औ गिरपे सफर है। पापोंका बहुत बोझ है शिकस्ता कमर है ॥ हूँ आपके चरणोंसे लगा जान लो इतना। कुछ और नहीं चाहता पर मानलो इतना ॥ जिसदम मेरी उम्मेदसे घरवालोंको हो यास। सब दूर हो सरकारही सरकार हों इक पास ॥ फैली हुई शृंगारके फूलोंकी हो बू बास। मुरलीकी सदा कानमें आती हो चपा रास ॥ होजाऊँ फना पाऊँ

जो इतना मैं सहारा । जब बन्द हों आँख तो मुकुटका हो नजारा ॥ दम लबपै सीनेमें तसव्वुर हो तुम्हारा । मिटकर भी जुदाई न हो चरणोंकी गवारा ॥ जो ब्रजकी रज है वही खाके कफेवा है । मिट्टी यहीं रहजाय तो वैकुंठमें क्या है ॥ रोशन है कि यह शिजदह गहे अहले यकीं है । जो जर्रा है याँ खातमें कुदरतका नगीं है ॥ उठा है यहीं आके निकावे रुखे तौहीद । हर वक्त नजर आता है याँ जलवए जावीद ॥ जो खाकमें याँ मिल गये मिसमत है उन्हींकी । जो मिटगये याँ आके हकीकत है उन्हींकी॥ गलियोंमें जो याँ घिसटे हैं जिन्नत है उन्हींकी। जो भीखको याँ खाते हैं दौलत है उन्हींकी ॥ वह ताज शाहीपर भी कभी हाथ न मारैं। दुनियाँका मिलै तख्त तो इक लात न मारैं॥ कह सकता हूँ क्या ब्रजकी खूबी व लताफत । वह आँख नहीं जिसमें हो नज्जारेकी ताकत ॥ मैं यह भी नहीं चाहता तकलीफ उठाओ । मैं यह भी नहीं चाहता बिगड़ीको बनाओ ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदबीर बताओ । इतना भी नहीं हूँ जिसे चरणोंसे लगाओ ॥ नक्शे कफे पाफूँक निकलनेको तो मिलजाय । दो हाथ जमीं ब्रजमें जलनेको तो मिल जाय ॥ देखो तो खुदाईकी करामात बिगड़ी जाय । ऐसा न हो शेलकी कहीं बात बिगड़ जाय ॥ १२३ ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हें याद हो न कि याद हो । वो जो कौल भक्तोंसे था किया तुम्हें याद हो न कि याद हो ॥ सुनि गजकी ज्यूँही आपदा न विलम्ब छिनका सहा गया । वहीं दौड़ उठके पियादे पा तुम्हें याद हो न कि याद हो॥यह जो चाहा दुष्टोंने द्रौपदीसे कि शर्म उसकी सभामें लें । बढ़ाया वस्तरको आप जा तुम्हें याद हो न कि याद हो॥अजामील एक जो पापी था लिया नाम

मरनेपै बेटेका। वह नरकमे जो बचा दिया तुम्हैं याद हो न कि याद हो॥ जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था। उन्हें तुमने ऊँचोंका पद दिया तुम्हैं याद हो न कि याद हो॥ खाना भीलनीके वो जूँठे फल कहीं साग दासके घरपै चल। यूँही लाखों किस्से कहूँ मैं क्या तुम्हैं याद हो न कि याद हो॥ जिन वानरोंमें न रूप था न तो गुण ही था न तो जात थी। तिन्हैं भाइयोंकासा मानना तुम्हैं याद हो न कि याद हो॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रजके सब उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूँ। रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हैं याद हो न कि याद हो॥ कहो गोपियोंसे कहा था क्या करो यादगी ताकी जरा। बैदा भक्तके उद्धारका तुम्हैं याद हो न कि याद हो॥ यह तुम्हारा ही हरीचन्द है गो फमादमें जगके बंद है। है दास जन्मसे आपका तुम्हैं याद हो न कि याद हो॥१३४॥

राग वड़हंस—अपने संग रलाई वे मैनूं अपने संग रलाई। राह ग्वांतां धाड़ी वेलें लखाँ वलाई॥ चीते बाघे कौड़लहारे भखँर करन अदाई। भार तेरे जागत्तर चढ्या वेड़ा पार लंघाई॥ पहला नेह लगायासी ऐवें आपे चाईं चाईं। मैं लायाके तुध-लायासी अपनी ओर निभाई॥ जेकर आगे है लड़लाया तीवें गले लगाईं। बुल्ला शाह शहाना मुखड़ा घूँघट खोल दिखाई॥१३५॥

राग परज—मैनूं तारी वे रब्बा बंदी औगुणहारी। सभ सैयाँ गुन वालड़ियां वे मैं औगुणहारी॥ जिस कारण शोह भेज्या लाल वे मैनूं तारी वे रब्बा सोईयो गल्ल विसारी। पकड़ तुला में तर पैयाँ लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा आईया साडही वारी। हुकम साईं दे पर्वत तरदे ल ल वेरे मैनूं तारीं वे रब्बा बंदी रही है कुआँरी। कहैं शाह हुसैन सुनो सहेलीयो मेरीयो मैनूं तारीं वे रब्बा अमलां वाझ खुआरी॥ १३६॥

राग सोरठ—मालक कुल आलमके हो तुम साँचे श्रीभगवान । स्थावर जंगम पवनी पावक धरतीबीच समान ॥ सभामें जलवा तेरा देखा कुदरतके कुरवान । सुदामाके दरिद्र खोये पाँड़ेकी पहिंचान ॥ दो मूठी तंदुलकी चाबी वखशे दो जहान । भारतमें अर्जुनकी खातिर आप भये रथवान ॥ उसने अपने कुलको देखा छुटगये तीर कमान । ना कोई मारे ना कोई मरता तेरो ही अज्ञान ॥ यह तो चेतन अजर अमर है यह गीताको ज्ञान । मुझ आजिजपर किरपा कीजै बंदा अपना जान ॥ मीर माधो मैं शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥ १३७ ॥

राग कान्हरा—दे पूतना विषरे अमृत पायो । जो कछु दैयत सो फल पैयत्त नाहक वेदन गायो ॥ शत यज्ञ राजा वलि कीन्हे बाँध पताल पठायो । लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगिट रूप करायो ॥ रंक जन्मके मित्र सुदामा कंचन धाम वनायो । सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेति कह गायो ॥ १३८ ॥

राग कालिंगड़ा—माधव गति तुमरी ना जानी ॥ मारन कारन चली पूतना अस्तन विप लपटानी । ताको गति यशुमतिकी दीनी सो वैकुंठ सिधानी ॥ लख गौअनको दान करत है राजा नृगसो दानी । ताको मुख किरलेका दीना पाछे कूप पठानी ॥ वलि राजा स्वर्ग धामकी खातर रचे यज्ञ वहु दानी । सो राजा पाताल पठायो चौकी ताकी मानी ॥ वड़े वड़े राजभूपनकी वेटी तिनको योग दृढ़ानी । कुब्जा मालन कंसकी चेरी सो कीनी पटरानी ॥ पाँचौ पांडव अधिक सनेही सो हिम अचल गिरानी । दुर्योधन राजा वड़ा अभिमानी ताकी मुक्ति निशानी ॥ शेपनागको नेता कीनो पर्वत कियो मथानी । चौदा रतन मथन

कर काढ़े तव लक्ष्मी घर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना तैसी कर दिखलानी। सूरदास आनन्द मगन भयो प्रेमभक्ति मन मानी ॥ १३९ ॥

राग धनाश्री—अविगति गति जानी न परै। मन बच अगम अगाध अगोचर किहि विधि बुधि सँचरै ॥ अति प्रचंड पौरुषसों मातो केहरि भूँख मरै। तज उद्यम अकाश कर वैठयो अजगर उदर भरै ॥ कवहुँक तृण बूडत पानीमें कवहुँक शिला तरै। वागरसे सागर कर राखे चहुँदिशि नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल विकसाहीं जलमें अगिन जरै। राजा रंक रंकते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ सूर पतित तर जाय छिनकमें जा प्रभु टेक करै ॥

राग कान्हरा—ज्यों भावे त्यों राख गुसाईं। हमरे संकट काटो जी साँवरे कृपा करो प्रहलादकी नाईं ॥ तोहिं त्याग और जो सुमिरे सो नर पैंदे नरकनमाहीं। नन्ददासको दीजे अभयपद चरणकमल राख्यो मनमाहीं ॥ १४१ ॥

राग सोरठ—हरिकी गति नहिं कोऊ जानै। योगी यती तपी पचहारे अस वहु लोग सयाने ॥ छिनमें राव रंकको करहीं राव रंक कर डारे। रीती भरे भरी ढरकावै यह ताको व्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारे आपै देखनहारा। नाना रूप धरै वहु रंगी सवसे रहत नियारा ॥ अमित अपार अलक्ष निरंजन जिन सव जग भरमाया। सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥ १४२ ॥

दरमाँ दे ठाढ़े दरवार। तुम विन सुरत करे को मेरी दर्शन दीजे खोल किवार ॥ तुम धन धनी उदार रु त्यागी श्रवणन सुनियत सुयश तुम्हार। माँगों कौन रंक सव देखों तुमहींते

मेरो निस्तार ॥ जयदेव नामा विप्र सुदामा तिनपर कृपा भई है अपार। कह कबीर तुम सम रथ दाते चार पदारथ देत न वार॥

राग अड़ाना—अपने विरदकी लाज विचारो। सब घटके तुम अन्तर्यामी भवसागरते पार उतारो ॥ गुण औगुण यह कछु न मानो ज्यों जानो त्यों पतित उधारो । जानकीदास प्रभु शरण तुम्हारी आवागमनका दोष निवारो ॥ १४४ ॥

राग झंझौटी—हरि अब बनि है नाहिं बिसारे। दीनदयालु कृपानिधि हे प्रभु गिनिये न दोष हमारे ॥ गीध अजामिल गणिका आदिक जा पनपै तुम तारे। मोहनलाल आपनो पन सोइ बनि है नाथ सम्हारे ॥ १४५॥

राग परज—भरोसो कृष्णको भारी। ग्राहने गजराज घरयो बल कियो भारी। हारके जब टेर कीनी धाये गिरिधारी ॥ प्रहलाद गिरिसों डार दीनो कीनी रखवारी। अगिनहूँसों राख लीनो दूसरी वारी ॥ द्रौपदीकी लाज राखी कुबरी तारी। ध्रुवको दीनी अटल पदवी कियो घरवारी ॥ विभीषणको लंक दीनी रावणा मारी। आगे पतित अनेक तारे सूरकी वारी ॥१४६॥

राग बिहाग—हमरी आँखिनके दोउ तारे। राधामोहन मोहनराधा यह दोउ रूप उजारे ॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर ब्रज बरसानेवारे। शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे ॥ १४७ ॥

राग विभास—और कोई समझो तो समझो हमको एती समझ भली है। ठाकुर नन्दकिशोर हमारे ठकुराइन वृषभानुलली है ॥ सुबल आदि ले सखा श्यामके राधासँग ललिता जो अली है। नितको लाड़ चाव सेवासुख भाग बेलि बढ़ सुफल फली है॥

वृन्दावनवीथिन यमुनातट विहरन व्रजरज रंग रली है । कहै भगवानहित रामराय प्रभु सबते इनकी कृपा वली है ॥ १४८ ॥

राग धनाश्री–हैं हम रसिक अनन्य प्रिया प्रिय कुंज महलके वासी । नइ नइ केलि विलोकत छिन छिन रति विपरीत उपासी ॥ वीरी वसन सुगन्ध आरसी रुचि ले करत खवासी । देत प्रसाद प्रेमसों हँस हँस कह कह भगवत दासी ॥ १४९ ॥

कुंडलिया–आचारज ललिता सखी, रसिक हमारी छाप । नित्त किशोर उपासना, युगल मंत्रको जाप ॥ युगल मंत्रको जाप वेद रसिकनकी बानी । वृन्दावन निजधाम इष्ट श्यामा महरानी ॥ प्रेम देवता मिले विना सिधि होय न कारज । भगवत सब सुख देन प्रगट भये रसिकाचारज ॥ १५० ॥

दोहा–चार बीस अवतार धर, जनकी करी सहाय ।
रामकृष्ण पूरण भये, महिमा कही न जाय ॥

चौ०–नेति नेति कह वेद पुकारै । सो अधरन धर मुरली धारै ॥
जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावहिं । ताहि पूत कहि नंद बुलावहिं ॥
शिव सनकादिक अंत न पावैं । सो सखियन सँग रास रचावैं ॥
सकल लोकमें आप पुजावैं । सो मोहन व्रजराज कहावैं ॥
निराकार निर्भय निर्वाना । कारण संत धरे वपु जाना ॥
निर्गुण सगुण भेद ना कोई । आदि अंत मधि एकै सोई ॥

दोहा–योगी पावैं योगसों, ज्ञानी लहैं विचार ॥
नानक पावै भक्तिसों, जाको प्रेम अधार ॥ १५१ ॥

राग जंगला–साँवरो जग तारन आयो । निशिदिन जाको वेद रटत हैं सुर नर पार न पायो ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुल जाय बसायो । लाल यशुमतिको कहायो ॥ भानुसुतामें

कूदि परे हैं, विषधर जाय जगायो । फणिपति लै पाताल पठायो तीन लोक यश गायो ॥ मनो मेघुला झुक आयो ॥ भारतमें प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथमें वहायो । गीताज्ञान दया कर दीनो रूप विराट दिखायो ॥ भरम मनको जो मिटायो ॥ वृन्दा-वनमें रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो । सूरदास यह प्रेमको झगरो हरष निरख कर गायो ॥ वहुरि इतना सुख पायो ॥ १५२ ॥

राग कालिंगड़ा--हम नँदनन्दन मोल लिये । यमकी फाँस काट मुकराये अभय अजात किये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामके गुणत सिरात हिये । सूरदास प्रभुजीके चेरे जूठन खाय जिये ॥१५३॥

राग धनाश्री--हरि सन्तनकी पैज राखत आय निरंकार भाषत खंभसे प्रभु निकसे आय नरसिंह रूप होय रिसाय असुरको उदर छेद प्रहलाद तिलक थापत ॥ गहरे गंभीर ग्रस्यो कालवश ले व्याल धस्यो गजकी जब टेर सुनी फंदन काटत । बीच सभा आन खड़ी द्रौपदीको भीर पड़ी उचरत हरि शरण तेरी अनेक चीर बाढ़त ॥ दौड़के हरि आन खड़े अपने जन काज करे बिलम न लायो नेक दुनीदास आखत ॥ १५४ ॥

राग पूरबी—जय मनमोहन श्याम मुरारी । जय· व्रजनाथ मुकुंद विहारी ॥ जय नखपर श्रीगिरिवरधारी । जय श्रीकृष्णचन्द्र वनवारी ॥ मोसे नाथ कछु लखी न जाई । कहँलग चरणों तोरि बड़ाई । महिमा तुम्हरी अपार कन्हाई । थकित भये वर्णत श्रुति चारी ॥ है अपार अलख तव माया । ब्रह्मादिकने भेद न पाया ॥ कोटिन मुनिने ध्यान लगाया । पर कछु समझ परी न तिहारी ॥ कहाँतलक गुण तुम्हारे गाऊं । कौन हृदयमें ध्यान लगाऊं ॥ कहा समझ प्रभु तोहिं मनाऊं । शोच भयो जन उर

यह भारी ॥ सुध लीजै अब तो प्रभु मेरी । निज जन समझ करो मत देरी ॥ दीनदयालु शरण हूं तेरी । कृपा करो भक्तन सुखकारी ॥ १५५ ॥

राग सोरठ—जानत प्रीति रीति यदुराई । को अस जग मतिमन्द मनुज जो भजत न सकल विहाई ॥ कनकभवनमें रुक्मिणिके सँग राजत सब सुख छाई । रंक दीन लखि मीत सुदामहिं धाय लियो उर लाई ॥ यदुकुल कौरवकुल पांडवकुल जहँ जहँ भई सगाई । तहँ तहँ व्रजवासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई ॥ छप्पन विधि व्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई । सो तजि विदुर सागभोजन किये बहुत सराह मिठाई ॥ सुरदुर्लभ यदुकुल विलासवर प्रभुता प्रभु बिसराई । श्रीरघुराज भली भारतमें पारथ सारथि आई ॥ १५६ ॥

राग जंगला—जय नारायण ब्रह्मपरायण श्रीपति कमलाकंतं । नाम अनंत कहाँलग वरणों शेष न पावत अंतं ॥ नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरंतं । मच्छ कच्छ शूकर नरहरि प्रभु वामनरूप धरंतं ॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जगलीला कोटि करंतं । जन्म लियो वसुदेव देवि ग्रह नाम धरयो नँदनंद ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण फण निरत करंतं । बलभद्र होकर असुर सँहारे कंसके केश गहंतं ॥ जगन्नाथ जगपति चिन्तामणि होय बैठे निश्चिन्तं । कलियुग अन्त अनन्तत होकर कल्कीरूप धरंतं ॥ दश अवतार हरिजूके गाये सूर शरण भगवंतं ॥ १५७ ॥

राग देश—हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनास । हे पूरण हे सर्बमें दुखभंजन गुणतास ॥ हे संमी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक । हे गोविन्द हे गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥

हे अपरम्पार हर हरे हैं भी होवनहार । हे संतनके सदा संग निराधार आधार ॥ हे ठाकुर हौं दासरो मैं निर्गुण गुण नहिं कोय । नानक दीजे नाम दान राखों हिये परोय ॥ १५८ ॥

लावनी–नाथ तुम दीनन हितकारी । पतितपावन कलि-मलहारी ॥ प्रथम नरसिंहरूप धारयो । नखनसों हिरणाकुश माऱ्यो ॥ ब्रह्मादिक थर थर करें, लक्ष्मी ढिग नहिं जात । जन अपने प्रहलादके, धऱ्यो शीशपर हात ॥ भक्तकी विपति कटी सारी । नाथ तुम दीनन हितकारी॥जुड़े दल दोउ ओर भारी। करी जब भारतकी त्यारी ॥ भुरुही दीन हो पुकारी । खबरि मेरी लीजो गिरिधारी ॥ ऐसे को या जगतमें, मेरो राखनहार। इतनी सुनत तब तुरत ही, गज घंटा दियो डार॥ करी अंडनकी रख-वारी ।.नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ सभामें द्रुपदसुता नारी। करन जो लगे जवाब भारी ॥ देखते सकल धर्मधारी । कर्ण भीषम द्रोणाचारी ॥ दो०–कहा भयो वैरी प्रबल, जो सहाय यदुवीर । दश हजार गजबल घट्यो, घट्यो न दश गज चीर ॥ दुशासन बैठ गयो हारी । नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ ग्राहने गजको गह लीनो । परस्पर युद्ध बहुत कीनो ॥ भयो गजराजको बल हीनो । याद तब गोविंदको कीनो ॥ सुनतहि टेर गजेंद्रकी, उठ धाये ब्रजराज । सुध ना रही शरीरकी, किये भक्तको काज ॥ जना-र्दन सन्तन दुखहारी । नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ १५९ ॥

छन्द–प्रथम गुरुके चरण वन्दों जासों ज्ञान प्रकाशतं । आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवते शिवशंकरं ॥ श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव केशवं । श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवं ॥ राम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्रीवामनं । मच्छ

कच्छ वाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं ॥ मथुरामें केशौराय विराजे गोकुल मुकुंदजी । श्रीवृन्दावनमें,मदनमोहन गोपीनाथ गोविन्दजी ॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहाँ श्रीपति अवतरे । धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल वाल सखा वने ॥ ग्वाल वाल संग सखा विराजे संग राधा भामिनी । वंशीवट तट निकट यमुना मुरलीकी टेर सुहामिनी ॥ कृष्ण कलिमलहरन सवके जो भजे हरिचरनको ॥ भक्ति अपनी देहु माधौ भवसागरके तरनको ॥ जगन्नाथ जगदीश स्वामी वदरीनाथ विश्वंभरं । द्वारकाके नाथ श्रीपति केशवं करुणाकरं । कृष्ण अष्टपदीकी धुन सुन कृष्णलोक सगच्छतं । गुरू रामानन्द नीमानन्द स्वामी छवि दत्तदास समापतं ॥ १६० ॥

श्रीकृष्णजीके कमलनेत्र कटिपीतांवर अधर मुरली गिरिधरं । मुकुट कुंडल कर लकुटिया साँवरे राधेवरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपिन मनहरं । पीतवस्त्र गरुडवाहन चरण नित सुखसागरं ॥ करत केलि कलोल निशदिन कुंज भवन उजागरं । अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गोपीनाथ गुपाल गिरिधर कंस हरनाकुश हरं । गल फूलमाल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवं ॥ वंशीधर वसुदेव छैया वलि छल्यो हरि वामनं । जल डूवते गज राख लीनो लंक छेद्यो रावनं ॥ सप्त द्वीप नौ खंड चौदा भुवन कीने इक फलं । द्रौपदीकी लाज राखी कहाँलों उपमा करं ॥ दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं । कवि दत्तदास विलास निशदिन नाम जप नित नागरं

राग रामकली--आरती कीजै सुन्दर वरकी । नन्दकिशोर यशोदानन्दन नागर नवल ताप तमहरकी ॥ वनविलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुखमोहन करकी । विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया भुजधरकी ॥ १६२ ॥

आरति कीजै श्यामसुन्दरकी ॥ नन्दकुमार राधिकावरकी ॥ भक्तिकर दीप प्रेमकर बाती । साधु संगति कर अनुदिन राती ॥ आरति ब्रजयुवती मन भावे । श्यामलीला हित हरिवंश गावे॥१६३॥

राग भैरव–मंगल आरती गोपालकी । नित उठ मंगल होत निरख मुख चितवन नयन विशालकी ॥ मंगलरूप श्यामसुन्दरको मंगल छवि भ्रुकुटी भालकी । चतुर्भुजदास सदा मंगलनिधि वानिक गिरिधर लालकी ॥ १६४ ॥

राग कालिंगड़ा–आरती लीजो श्रीनन्दके लाला मदनगुपाला । टेरत हैं कवके जन ठाढ़े होउ वेग दयाला॥कोटि शशि तेरे नखकी शोभा कहांलौं दीपक वाला ॥ धुनि मिरदंग अनाहद वाजे क्या रंका मेरी ताला ॥ नाचत लक्ष्मी सदा तेरे आगे नाना विधि बहु बाला । खंड ब्रह्मंड त्रैलोक नाचे हौं क्या कीट कंगाला ॥ आछी तेरी आरती आछी तेरी शोभा आछी तेरी भक्ति रसाला। भगवानदासपर किरपा कीजै मेटिय जी यमजाला ॥ १६५ ॥

राग बरवा–कंचन सिंहासन रतनजड़ित प्रकाश रविसम सोहई। तापर विराजत श्यामसुन्दर रूप मुनिजन मोहई ॥ सुखकमलपर अलिमालसम अलकैं कुंडल छवि पावई । हरिनासिका गर रुचिर मोती भाल तिलक सुहावई ॥ शिर मुकुट हीरा जड़ित कानन स्वर्णकुंडल छाजई । पट पीत गजमणि माल भूषण अंग धाम विराजई ॥ शुभ कंठ कंठी मणिमयी उर माल वैजंती लसै। भृगुरेख कौस्तुभमणि जनेऊ देव मुनिजन मन बसै ॥ कंकण जड़ाऊ सहित पहुँची श्रीकृष्ण हाथनमें बने । प्रति अंगुरी मुँदरी विराजत रत्ननग लागे घने ॥ हरि वामअँग सुवरण वरण अनूप अति राजत रमा । जग करन पालक हरन सेवत चरण नित शारद

उमा ॥ प्रभु चार करमें शंख चक्र गदा पद्म अति राजई । कटि पीत धोती किंकिणी दोउ चरण नूपुर बाजई ॥ श्रीसहित विष्णु-स्वरूप ऐसो प्रेमसे जो ध्यावई । तत्काल पावन होत है चारों पदारथ पावई ॥ १६६ ॥

राग श्याम कल्याण—आरति युगलकिशोरकी कीजै । तन मन प्राण निछावर कीजै ॥ गौर श्याम मुख निरखन कीजै । हरिको रूप नयनभर पीजै ॥ रवि शशि कोटि वदन जाकी शोभा। ताहि देख मेरो मन लोभा ॥ फूलनकी सेज फूलन गलमाला । रत्न-सिंहासन बैठे नँदलाला ॥ मोर मुकुट कर मुरली सोहै । नटवर वेष निरख मन मोहै ॥ ओढ़े नील पीत पट सारी । कुंजन ललना लाल विहारी ॥ श्रीपुरुषोत्तम गिरिवरधारी । आरति करत सकल ब्रजनारी ॥ नँदनन्दन वृषभानुकिशोरी । परमानँद स्वामी अवि-चल जोरी ॥ १६७ ॥

राग गुर्जरी—श्रितकमलाकुचमंडल धृतकुंडल ए । कलित ललित वनमाल जय जय देव हरे ॥ दिनमणिमंडलमंडन भव-खंडन ए । मुनिजनमानसहंस जय जय० ॥ कालियविषधरगंजन जनरंजन ए । यदुकुलनलिनदिनेश जय जय० ॥ मधुमुरनरक-विनाशन गरुडासन ए । सुरकुलकेलिनिधान जय जय० ॥ अमल कमलदललोचन भवमोचन ए । त्रिभुवनभवननिधान जय जय० ॥ जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए । समरशमितदशकंठ जय जय देव० ॥ अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए । श्रीमुख-चन्द्रचकोर जय जय० ॥ तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए । कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय० ॥ श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्ज्वलगीतं जय जय देव हरे ॥ १६८ ॥

राग सोरठ—टेर सुनो ब्रजराज दुलारे। दीन मलीन हीन शुभ गुणसों आय पर्यो हूँ द्वार तिहारे ॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने निज प्रीतम प्यारे। भ्रमत रह्यो इन सँग विषयनमें तो पदकमल न मैं उर धारे ॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गये भूल सो लिये उधारे। यहाँलों खेप भरी रच पचके चकित रहे लखिके वनजारे ॥ अव तो एक वार कहो हँसके आजहिसों तुम भये हमारे। याही कृपाते नारायणकी वेगि लगेगा नाव किनारे ॥ १६९॥

राग धनाश्री—परम पुनीत प्रीति नँदनन्दन यही विचार विचार। कहो शुक श्रीभागवतविचार ॥ हरिजीकी भक्ति करौ निशिवासर अल्प जीवन दिन चार। चिंता तजो परीक्षित राजा सुन शिख सीख हमार ॥ कमलनयनकी लीला गावो मिटि गये कोटि विकार। भजन करो विश्वास तजो नृप चिन्ता शोक निवार ॥ खट्वांग दिलीप मुहूरत उधरे तुम्हरे हैं शतबार। तुम तो राजा परम भक्त हो मानो वचन हमार ॥ हरिजीकी भक्ति युगोंयुग बरणों आन धर्म दिन चार। एक समय दुर्वासा पठये आये समय विचार ॥ कै राजा मोहिं भोजन दीजै कै जावो व्रतहार। राजा कहै मोहिं का संकट दीजो नाहिंन और उपाय॥ द्रुपदसुता कहै कृष्ण सुमिर लेहु तुम्हरे सदा सहाय। तव पांडव-सुत सुमिरण कीनो प्रगटे कृष्ण मुरार ॥ चक्र सुदर्शनकी सुधि आई ऋषी चले व्रतहार। अष्टादश षट तीन चार मिल करते यही विचार॥ एको ब्रह्म सकल घट पूरण केवल नाम अधार। सतयुग सत त्रेता तप संयम द्वापर पूजा चार। सूर भजन कलि केवल कीर्तन लज्जा कान निवार ॥ १७०॥

राग मलार—हरिभक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन परतिज्ञा मोरी यह व्रत टरत न टारे ॥ भक्तन काज लाज हिय धरके पायँ पियादे धाये । जहँ जहँ भीर परी भक्तनको तहँ तहँ होत सहाये ॥ जो भक्तनसों वैर करत है सो निज वैरी मेरो । देख विचार भक्तहित कारण हाँकत हों रथ तेरो ॥ जीतो जीत भक्त अपनेकी हारे हार विचारो । सूरश्याम जो भक्तविरोधी चक्र सुदर्शन मारों ॥ १७१ ॥

राग विभास—ऊधो हों दासनको दास । जो जन मेरो नाम जपत हैं मैं तिनहीके घट परकाश ॥ धन्नेकी मैं गऊ चराई नामेको देहरा फेरिया । त्रिलोचनके मैं भयो व्रतीया सुदामेको दरिद्र हरिया ॥ कवीरके मैं रह्यो वनिजारा सैनेकी बिरती धाया । गजके जाय चरण गहे मैं काढ जलो थल ल्याया ॥ जो जन कहत करों मैं सोई सन्त मेरी रह रास । हित चित प्राण भक्त हैं मेरे गावत है दुनीदास ॥ १७२ ॥

राग सारंग—दास अनन्य मेरो निजरूप । दर्शन निमिष तापत्रयमोचन परसत मुकत करत गृह कूप ॥ मेरी बाँधी भक्त छुड़ावै बाँधे भक्त न छूटै मोहिं । एक वेर मोको गहि बाँधे तो पुनि मोपै जुवाव न होहि ॥ मैं गुणवन्ध सकलको जीवन मेरो जीवन मेरे दास । नामदेव जाके जिय जैसी तैसो ताको प्रेमप्रकास ॥

राग काफी—जो जन ऊधो मोहिं न विसारे ताहि न विसारों छिन एक घरी । जो मोहिं भजे भजूँ मैं वाको कल न परत मोहिं एक घरी ॥ काटूँ जन्म जन्म मैं फंदन राखों सुख आनन्द करी । चतुर सुजान सभामें बैठे दुःशासन अनरीत करी ॥ सुमिरण कियो द्रौपदी जबहीं खैंचत चीर उवार धरी । ध्रुव प्रहलाद रैन-

दिन ध्यावै प्रगट भये वैकुंठपुरी ॥ भारतमें भुरुहीके अंडा तापर गजको घट दुरी। अम्बरीष गृह आये दुर्वासा चक्र सुदर्शन छाँह करी॥सूरके स्वामी गजराज उबारे कृपा करी जगदीश हरी॥

दोहा–निज असुरन वध कंस सुनि, तब पठयो अक्रूर।
करत मनोरथ पंथ सो, अहो भाग मम भूर ॥ १७५ ॥

राग पिलू–करूँ क्या भाग अपनेकी बड़ाई। दृगन भरि देखिहौं सुन्दर कन्हाई ॥ ललित तिरभंग मन्मथ दर्पमोचन। कथा जाकी सबै तिरलोक छाई ॥ रमा जाके सदा पदकंज चापै। चरण धोवन सलिल शिव शीश लाई ॥ समाधी लाय योगी जाहि ध्यावैं। तिन्हैं मैं कंठ लैहौं आज जाई ॥ कृपा विधि कीन्ह नृप मोहिं व्रज पठायो। बुलाये कौन कारन दोउ भाई ॥ समुझि मन भूपगति सन्देह रहि रहि। बिचारत ग्रामकी सीमा नियराई ॥ विपिन रजचिह्न चरणन हरिविलासी। उतरि रथ क्रूर रज शिरपै चढ़ाई ॥ १७६ ॥

राग काफी–जयति कमलेश वृन्दावनविहारी। धरणि द्विज देवहित नरदेह धारी ॥ कमठ वाराह झष नरसिंह वामन। राम रघुनाथ श्रीयादव मुरारी ॥ बौध कल्कीसहित बहु रूप धारे। रमापति देव केशव तापहारी ॥ निगम पौरान गुण गावैं तिहारे। न पावैं अंत विधि अहिपति पुरारी ॥ हृदय अभिलाष माँगों हरिविलासी। सदा तव भक्ति मति लागै हमारी ॥ १७७॥

राग बिहाग–छवि नारिवृन्द देखैं घनश्याम श्यामकी। मन मोद धाय आईं पुर ग्रामग्रामकी ॥ पँच रंग पाग शिरपै आभा किरीटकी। कुंडल छटा करन गल बहु दामदामकी ॥ दृग कंज खंज चंचल मानौ सुधा भरे। मुखचन्द्र देखि आशा मन काम-

कामकी ॥ घूँघट कटाक्ष कीन्हे मुसक्यान मन्दसे । चितवन विनोद भ्रुकुटी शुभ वामवामकी ॥ हैं धन्य भाग उनके अनुराग हरिविलास । भरि नयन जिनन देखी छवि यामयामकी ॥ १७८ ॥

भ्रमरगीत ।
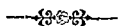
दोहा–प्रातकाल यदुनाथ उठि, श्रीउद्धवकहँ बोलि ।
कहन लगे ब्रजकी कथा, बैन सुधारस घोलि ॥

राग भैरवी–घोस बहु बीते सखा ब्रजकी खबरि पाई नहीं । मन महा घबरा रहा पाती तलक आई नहीं ॥ नन्द बावासो पिता ब्रज ना कोई जगमें पिता । मात ब्रजरानी सरिस ऐसी मही माई नहीं ॥ प्रेम ब्रजवनितन अनोखो कानकुल जगकी तजी । बहु उपाधिनको सह्यो पै प्रीति बिसराई नहीं ॥ बुद्धि अपनीसे सखा तुम शोक जा ब्रजके हरौ । पत्र गोपिन हरि लिखत मति एक ठहराई नहीं ॥ मुकुट कुंडल माल अंबर गात सजि ऊधौ चले । हरिविलास अगाध कृत विस्तारसे गाई नहीं ॥

दोहा–जबसे हरि मथुरा गये, यशुमति दुख दिन रैन । घाम अटा चढ़ि देखि ध्वज, पतिसों बोली बैन ॥ यक रथ आवत आज ब्रज, मथुराते फहरात । सुधि लीन्ही घनश्याम घों, जानि दुखित पितु मात ॥ ऊधौ आगम जानि नँद, द्वार भेटि गृह लाय । दै भोजन पूछत कुशल, ब्रजरानी बिलखाय ॥

राग भैरवी–कहो ऊधौ कुशल हलधर बिहारी । यशोदा रोय पूँछे नयन वारी ॥ लगायो नेह अति दिनरात दोनों । महा-अपराध सुधि ब्रजकी बिसारी ॥ महाकोमल हृदय घनश्याम दाऊ । बसे मथुरा निठुरता जाय धारी ॥ चरितके चिह्न बहु

अद्यापि व्रजमें । तिन्हैं अवलोकि प्रगटै शोक भारी ॥ कृपा करि देहिं दर्शन हरिविलासी, समुझि मन धायको नातो मुरारी ॥१७९॥

दोहा—दंपतिको सन्ताप लखि, ऊधौ कहत बुझाय ।
सुतसनेह तजि जानि हरि, प्रीति करौ मन लाय ॥
यद्यपि ऊधौ ज्ञान बहु, कह्यो दोउन समुझाय ।
होत तथापि न बोध मन, पुनि बोली हरि माय ॥

राग टोड़ी—श्यामघन दर्शन बिना अब धीर मन कैसे लहै । अति विकल भाखै यशोदा नयन जलधारा बहै ॥ धारि गिरि व्रजको बचायो दर्प कालीको दह्यो । ध्यान करि ताके चरित सब शोकवश छाती दहै ॥ लाय अंक मयंक आनन रंक धन पालै यथा । सो गये ताजि मोहिं अब जो नित्य दृग आगे रहै ॥ देवदेव रमेश गिरिधर सत्य तो ऊधौ गिरा । ताहि ऊखल दाम बाँध्यो वेद प्रभु जाको कहै ॥ हरिविलास हुलास व्रज अक्रूर मधुपुर लै गयो । क्या चलै अपनी चतुरता होय सो विधि जो चहै ॥

दोहा—प्रेममगन सब गोपिका, यदुपतिविरह पयोध । रथ ठाढ़ो नँदद्वार लखि, भयो कछुक मन बोध ॥ उद्धवको आगमन लखि, हर्ष शोकवश नारि । करि दर्शन पूछत भई, लै इकान्त बैठारि ॥ कहो कुशल घनश्यामकी, तिन दीन्हो बिसराय । अब कब ऐहैं प्राणप्रिय, सो तुम कहो बुझाय ॥ गोपवधुनको प्रेम लखि, ऊधौ धरि मन धीर । लाग सुनावन पत्र हरि, ब्रह्मज्ञान गंभीर ॥

राग आसावरी—सुनौ मन लाय पातीको लिखी तुमको मुरारी । अगोचर ब्रह्मको ध्यावौ सबै मिलि गोपनारी ॥ सबै व्यापक रहित सबते बिना आकार निर्गुण । नहीं कछु नाम

श्रुति गावैं जगतकारण अधारी ॥ विना श्रुति नयन मुख नासा विना पद पाणि ज्योती । भुवन चौदह प्रकाशे तेज जाको निर्विकारी ॥ अविद्या त्यागि योगाभ्यास करि भजिये निरन्तर । करौ संयम इसी विधिसे वनै शुभगति तुम्हारी ॥ पिता माता तनय भ्रातादि सवको मोह दुखदायी । वचन यह हरिविलासीके हृदय सव लेहु धारी ॥ १८१ ॥

दोहा—नानाविधि ऊधो कह्यो, ब्रह्मज्ञान कछु शोध ।
कृष्णउपासक गोपिका, वोलीं हृदय प्रवोध ॥

राग कालिंगड़ा—ज्ञानपर है धूरि ऊधो जो नहीं हरिसे लगन । योग तप जाने कहा जो प्रेमरस वाके मगन ॥ मेघतन साकार इन्द्री मोरपख शिरपै मुकुट । कीर नाक वुलाक कुंडल कर्ण पंकजसे द्दगन ॥ चन्द्रमुख विद्रुम अधर मुसक्यान त्रिभुवनमोहनी । वेणु वैन पियूप सुनि सुनि देवगण छाये गगन ॥ करकमल धारो गोवर्धन राखि गोकुलको लियो । शरद निशि करि रास नाच्यो मन्द धुनि नूपुर पगन ॥ विन अकार स्वरूप विन गुन ध्यान मन कैसे लगै । हरिविलास त्रिभंग नटवर मयन मद कीन्हो भगन ॥ १८२ ॥

राग काफी—ऊधो सम्हारि राखौ इस ज्ञानयोगको । अवला कहा करें ले ऐसे कुरोगको ॥ तुम ब्रह्मके उपासक ज्ञानी जहानमें । हम रात द्योस रोवें हरिके वियोगको ॥ यह आपकी कृपाते वैराग हरि लिख्यो । गुण दोप आय प्रगटे कारन संयोगको ॥ हम मुक्तिहू न चाहें सुरलोक तो कहा । हरिरूपमें दिवानी तजि विश्वलोगको ॥ रसप्रेमपै निछावर साधन सबै किये । नित हरिविलास चाहें आनन्द भोगको ॥ १८३ ॥

राग सिन्धु—कंसकी चेरी सुना घनश्यामपटरानी भई। राज मथुराको मिल्यो • अभिलाष मनमानी भई ॥ जासु मुख पद्मा विलोकैं कंजपद चापैं सदा। देखि सो कूबर लुभानो बात जगमानी भई ॥ कनक कूवरको वनाकर पीठ हम धरतीं सबै। ये नहीं मालूम था अब एक नादानी भई ॥ नीत औ अनरीत माधौ जो चहैं अब सो करैं। मधुपुरी नृपके मरे अब श्याम रज-धानी भई ॥ हरिविलास निहारि मारग लाज तजि अँखियानकी। चंद्र विन कौमोदनी जिमि कांति कुम्हिलानी भई ॥ १८४ ॥

दोहा—ता औसर गुंजन लग्यो, चंचरीक इक आय। तासों बोली गोपिका, यदुपति सखहि सुनाय ॥ श्यामवर्ण कपटी कुटिल, लेत गंध तरु फूल। गन्धहीन ताको तजत, बहुरि जात तेहि भूल॥

राग पीलू—कंत बिन आयो अली व्रजभूमि दुखदाई बसंत। गुल्म तरु फूले विपिन बहु फूल समुदाई बसंत ॥ शीत मन्द सुगन्ध मारुत लोकमें सुखदा सबै। नन्दनन्दन विरहमें जनु श्वास अहि छाई बसंत ॥ रंग रंग विहंग बोलैं मनहरन बानी सुधा। बाणसम लागै हृदय विन कान्ह यदुराई बसन्त ॥ कूक कोयलकी सुनेते हूक अति छाती उठै। रैनदिन दुख मैन दीन्हो सैन चढ़ि आई बसन्त ॥ करि विनय समुझाय मधुकर जाय कहियो हरिबिलास। कौन कारन गोपिका सुधि नाथ बिसराई बसन्त ॥ १८५ ॥

दोहा—भ्रमर वेगि करि उड़ि गयो, पुनि बोली व्रजवाम।
ऊधो करौ विचार मन, कैसी कीन्ही श्याम ॥

राग सहाना—बिना घनश्याम गरजै मेघ घन घन। करै बहु नृत्य बोलै मोर बन वन ॥ सुखद जलविन्दु नान्हिन विन्दु बरसै।

हमें दुखंदा चलै पुर वायु सनसन ॥ गगन सौदामिनी रहि रहि डरावै । गिरा कोयल रटन झींगुरकी झन झन ॥ रहीं मन मारि हम हरि विन विरहिनी । विपिन झूलै हिंडोले मोद जन जन ॥ उठै उर पीर नहिं मन धीर आवै । भये कुवजाके अव सौभाग घनै घन ॥ मदन सन्धान सायक चाप आयो । कियो घायल सबै व्रजवाम तन तन ॥ कबै धौं देहि दर्शन हरिविलासी । वरस वीते अवधिके द्योस गिन गिन ॥ १८६ ॥

राग काफी–घनश्यामहीन गरजै घनश्याम वार वार । चारौ दिशान छाये नभ घेरि कार कार ॥ विन साँवरे सलोने कोयल करै कलेश । आधीन दीन सोचै मनमीन वार वार ॥ व्रजमें हिंडोल झूलै नर नारि करि विनोद । विन श्याम वाम तरसें अभिलाष मार मार ॥ वन वन विहार दंपति नैनन रहे विलोकि । वहु रागिनी अलापैं गल वाहु डार डार ॥ ऊधौ मिलेंगे जा दिन सुखराशि हरिविलास । ता दिन करैं निछावर धन प्राण वार वार ॥ १८७ ॥

वारहमासा ।

राग भैरवी–श्यामसे संदेश ऊधो पायँ परि कहियो सही । आश वारह मास गन गन श्वास उर वाकी रही ॥ प्रथम श्रावण मेघ छाये मोरगण नाचन लगे । वहुरि पिक पी पी पुकारे वैन सुनि छाती दही ॥ विपिन भादों भू सुहावन गुल्मतरु फूले घने । हाथ मल पछताय हम व्रज त्यागि हरि चेरी चही ॥ क्वाँर गहि गहि पाणि मोहन शरद निशि क्रीडा करी । सो पुलिन अब देखि

हरि बिन नयन जलधारा चही ॥ न्हाय कातिक कूल यमुना पूजि शिव विश्वेश्वरी । दर्श हरि वरदान माँगैं कामना कछु औ नहीं ॥ दुखद अगहन मास ऊधो देखि कालिन्दी तटे । ध्यान करि मन चीरलीला हीनमणि जैसे अही ॥ पूस शीत शरीर काँपै श्याम मधुपुरको गये । रैन दिन दुख पाय तरसैं नेहको बदलो यही ॥ माघ अन्त वसन्त आयो कंत बिन कैसे बनै । प्राण दुविधामें परे नहिं जात सुख बानी कही ॥ लाग फागुन योग फगुआ आय ऊधो तुम दियो । संग कुब्जा रंग खेलै भस्म व्रजवालन लही ॥ चैत बन भूरूह फूले वायु अति सुखदा बहै । बिन गुपाल विहाल सुधि करि दान मिस लीन्हो दही ॥ श्याम बिन बैशाख ऊधो आधि मन कासों कहैं । सोच वा दिनको करैं जा द्योस हरि बहियाँ गही ॥ जेठ ज्वाल प्रचंड ग्रीषम काम दाहै देहको । धीर मन आवै जबै यदुवीरछबि देखैं वही ॥ पाय अब आषाढ चहुँ-दिशि उमड़ि घन गर्जन लगे । हरिविलास हुलास कीजै आय वृंदावन मही ॥ १८८ ॥

दोहा—गोपिन प्रेम अगाध लखि, ऊधो ज्ञान भुलाय । करि बहु अस्तुति जोरि कर, चरणन शीश नवाय ॥ गोपवधुन पद वन्दि पुनि, नंदगोप गृह आय । माँगि विदा मथुरा चले, आये जहँ यदुराय ॥ बोले उद्धव विकल सब, व्रजवासी घनश्याम । सुनत शोचवश स्रवत जल, नयनन हरि बलराम ॥ १८९ ॥

फुटकर पद ।

राग रामकली—धनि यह राधिकाके चरण । सुभग शीतल अति सुकोमल कमलकेसे वरण ॥ रसिकलाल मन मोदकारी विर-

हसागर तरण । विवश परमानन्द छिन छिन श्यामाजीके शरण १९०
जयति श्रीराधिके सकल सुखसाधिके तरुणि मणि नित्त नव तनु किशोरी । कृष्णतनु लीन घन रूपकी चातकी कृष्णमुख हिमकरनकी चकोरी ॥ कृष्णदृगभृंगविश्रामहित पद्मिनी कृष्ण-दृग मृगज बन्धन सुडोरी । कृष्णअनुराग मकरन्दकी मधुकरी कृष्णगुणगान रससिन्धु बोरी ॥ और आश्चर्य कहुँ मैं न देख्यों सुन्यो चतुर चौंसठ कला तदपि भोरी । विमुख परचित्तते चित्त जाको सदा करत निजनाहकी चित्त चोरी ॥ प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥ १९१ ॥

मेरी मति राधिका चरणरजमें रहो । यही निश्चय करयो अपने मनमें धरयो भूलके कोऊ कछु औरहू फल कहो ॥ करम कोऊ करौ ज्ञान अभ्यास हू मुक्तिके यत्न कर वृथा देहो दहो । रसिकवल्लभ चरणकमलयुग शरणपर आश धर यह महा पुष्टपथ फल कहो ॥१९२॥

राग परज—हम श्रीश्यामाजूके बल अभिमानी । टेढ़े रहैं मोहन रसियासों बोलें अटपटी बानी । पड़े रहैं अलमस्त झकोरा शिरपर राधा रानी । किशोरी अलीके प्राण-जीवन धन वृंदावन रजधानी ॥१९३॥

राग मलार—हमारे माई श्यामाजीको राज । जाके अधीन सदाही साँवरो या ब्रजको शिरताज ॥ यह जोरी अविचल वृन्दावन नहीं औरसे काज । विट्ठल विपुल विनोद विहारन ज्यों जलधरसो गाज ॥ १९४ ॥

राग कल्याण—राधाजी सुहागन राधे रानी । श्यामसुंदर ब्रजराज लाडिली ताके वश अभिमानी ॥ शोभाको शिर छत्र

विराजै वृंदावन रजधानी । जीत लियो व्रजराज पपिहरा आनँ-दघन रसदानी ॥ १९५ ॥

सवैया—ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुराणन वेदन भेद सुन्यो चित चौगुने चायन । देख्यो सुन्यो न कहूँ कबहूँ वह कैसो स्वरूप औ कैसे सुभायन ॥ ढूँढ़त ढूँढ़त ढूँढ़ि फिर्‌यौ रस खानि बतायो न लोग लुगायन । देख्यो कहाँ वह कुंजकुटीनमें बैठे पलोटत राधिका पायन ॥ १९६ ॥

राग विहाग—राजत निकुंज धाम ठकुरानी । कुसुम सेज-पर पौढ़ी प्यारी राग सुनत मृदु बानी ॥ बैठी ललिता चरण पलोटत लालदृष्टि ललचानी । पायँ परत सजनीके मोहन हित-सों हा हा खानी ॥ भई कृपालु लालपर ललिता दे आज्ञा मुसु-कानी । आवो मोहन चरण पलोटो जैसे कुँवरि न जानी ॥ आज्ञा दई सखीको प्यारी मुखऊपर पट तानी । बीण बजाय गाय कछु तानन ज्यौं उपजै सुखसानी ॥ गावन लगे रसिक मनमोहन तब जानी महरानी । उठ बैठी व्यासकी स्वामिनी श्रीवृंदावनरानी ॥

राग गौरी—वृन्दावनके राजा हैं दोउ श्याम राधिका रानी । चार पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरै जहँ पानी ॥ धर्म कर्म दोउ बटत जेवरी घर छाये ब्रह्मज्ञानी । योगी जती तपी सन्यासी तिनहूँ नेक न जानी ॥ पचिहारे वेद पुराण लगनिया गावत सगुणिया बानी । घर घर प्रेमभक्तिकी महिमा सहचरि व्यास बखानी ॥ १९८ ॥

राग रामकली—नवकुँवर चक्रचूडा नृपति साँवरो राधिके तरुणिमणि पट्टरानी । शेष गृह आदि वैकुंठ पर्यंतलौं लोक थानैत व्रजराजधानी ॥ मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहाँ मुक्ति

चारौ जहाँ भरत पानी । सूर शशि पहरुआ पवन जल इन्द्र हू वरुण दासी भाट निगमवानी ॥ धर्म कुतवाल शुक सूत नारद जहाँ करत चरचादि सनकादि ज्ञानी । सत्वगुण पौरिया काल बँधुआ जहाँ डांडीपति कामरति सुखनिसानी ॥ कनक मरकत धरनि कुंज कुसुमित महल मध्य कमनीय सैनीय ठानी । पल न विछुरत दोऊ तहँ न पहुँचत कोऊ व्यास महलिन लिये पीकदानी ॥

राग परज—आज उज्यारी भई लो रात ॥ आप उज्यारी भई तेरी सेज उज्यारी चमक सुन्दर पिया प्यारी । कान्हके शिर मुकुट विराजै राधाशिर जरद किनारी ॥ २०० ॥

राग कान्हरा—आज नीकी वनी राधिका नागरी । ब्रजयुवतियूथमें रूप औ चतुरई शील शृंगार गुण सवनमें आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंश सखि गावती सरस मिल मधुर सुर राग री । सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित मिलत नवकुंजमें श्याम वड़भाग री ॥ २०१ ॥

राग देवगन्धार—ब्रज नव तरुणि कदंव मुकुटमणि श्यामा आज वनी । नखशिखलौं अँग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥ यों राजत कवरी गूँथत कच कनककंजवदनी । चिकुर चंद्रिकन वीच अधर विधु मानो ग्रसत फनी ॥ सौभग रस शिर स्रवत पनारी पिय सीमंत ठनी । भ्रुकुटी काम कोदंड नयन शर कज्जलरेख अनी ॥ तरल तिलक ताटंक गंडपर नासा जलज मनी । दशन कुन्द सरसाधर पल्लव प्रीतम मनशमनी ॥ चिवुकमध्य अति चारु सहज सखि श्यामल विंदुकनी । प्रीतम प्राणरतन संपुट कुच कंचुकि कसव तनी ॥ भुज मृणाल वल हरत वलययुत परस सरस श्रवनी । श्याम शीशतरु मनो मिंडवारी रची रुचिर

रमनी ॥ नाभि गँभीर मीन मोहन मन खेलनको हदनी । कृश कटि पृथु नितंब किंक्रिणिभृत कदलिखंभ जघनी ॥ पद अंबुज जावकयुत भूषण प्रीतम उर अवनी। नव नव भाव विलोक भाम इव बिहरत बर करनी ॥ हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरति विशद घनी । गावत श्रवणन सुनत सुखाकर विश्वदुरितदमनी ॥

आज बन राजत युगलकिशोर। नँदनन्दन वृषभानुनन्दनी उठे उनींदे भोर ॥ डगमगात पग परत शिथिल गति परसत नखशशि छोर । दशन वसन खंडित मुखमंडित गंडतिलक कछु थोर ॥ हित हरिवंश सम्हार न तन मन सुरतसुमुद्र झकोर ॥ २०३ ॥

आज अति राजत दंपति भोर। सुरत रंगके रसमें भीने नागरी नन्दकिशोर ॥ अंसनपर भुज दिये विलोकत इन्दुवदन विवओर। करत पानरस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥ छूटी लटन लाल मन कष्यों ये बाँके चितचोर । परिरंभन चुंबन आलिंगन सुरमन्दिर कल घोर ॥ पग डगमगत चलत बन विहरत नव निकुंज घन घोर । हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥ २०४ ॥

राग रामकली–उरझ्यो नीलांवर पीतांवरमहियाँ। कुंडलसों लर लट वेसरसों पीतपट हारनसों वनमाल वहियाँसों वहियाँ ॥ हंसगति अति छवि अंग अंग रही फवि उपमा विलोकिवेको पटतर नहियाँ । कामके कलोल छूटे सेजहूँके सुख लूटे सूर प्रभु विलसत कदमकी छहियाँ ॥ २०५ ॥

लटकत आवत कुंजभवनते। डुर डुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथिल गवनते ॥ चौंक परत कबहूँ मारग चित्र चलत सुगन्ध पवनते । भर उसाँस राधावियोगभय सकुचे दिवसर

वनते ॥ आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहूँ प्यारीतनते । रसिक टरो जिन दशा श्यामकी कवहूँ मेरे मनते ॥ २०६ ॥

राग बिलावल—आज इन दोउअनपै वलि जैये । रोमरोमसों छवि वरसत है निरखत नयन सिरैये ॥ रूप रास मृदु हास ललितमुख उपमा देत लजैये । नारायण या गौरश्यामको हिये निकुंज वसैये ॥ २०७ ॥

राग प्रभाती—छाँड़ो कृष्ण युगल वैयाँ भोर भई अँगना ॥ दीपककी ज्योति फीकी चन्द्रहूको चांदना । मुखको तँवोल फीको नयनहूको आँजना ॥ पनिघट पनिहारी जात हौं भी जाउँ यमुना । गैयाँ सव वनको जात पक्षी जात चुगना ॥ घर घर दधिमथन होत छनकत हैं कंगना । ग्वाल वाल द्वारे ठाढे उठो नन्दनंदना ॥ सूरश्याम मदनमोहन ऐसो नयन ठगना । श्रीराधाजूके कुंडल सोहैं कृष्णजूके वँगना ॥ २०८ ॥

राग भैरव—भोर भयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्राणपियारी । वोलत तमचर मुखर सुहावन निशितम विगत भई उजियारी ॥ दधि मथि माखन तुमपै ल्याई मिश्रित मिश्री मधुर सुधारी । ललितादिक सखियाँ सव ठाढ़ीं मेवा पान लिये जल झारी ॥ सुन प्रिय वानी सुखरससानी नयनकमल खोले गिरिधारी । दरश परश नयनन फल पायो वारि अपनपौ भई सुखारी ॥ आदि सनातन राधेमोहन विलसत हुलसत सँग सुकुमारी । दंपति लीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन वलिहारी ॥ २०९ ॥

राग कालिंगड़ा—प्रीतम नूपुर मति न उतारो । इनकी धुनि सुनि पास परोसिन कहा करेगो हमारो ॥ भले करो जग चर्चा मेरी तुम निज पण नहिं टारो । नारायण जे शरण चरणकी तिन्हें न कीजे न्यारो ॥ २१० ॥

राग कान्हरा—प्रीतिकि रीति रँगीलोइ जानै। यद्यपि सकल लोकचूडामणि दीन अपनपौ मानै॥ यमुना पुलिन निकुंज भवनमें मान माननी ठानै। निकट नवीन कोटि कामिनि कुल धीरज मनहिं न आनै॥ नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यों आन आनसे वानै। जय श्रीहित हरिवंश चतुर सोइ लालहिं छाँड मेंड़ पहिचानैं॥ २११॥

राग रेखता—कीजै गमन भवनमें वृषभानुकी दुलारी। देखो वहार कैसी वड़ गोपकी कुमारी॥ फूले गुलाब चंपा केसरकी फूली क्यारी। सुन्दर खिली चमेली गेंदा खिले हजारी॥ चहुँ ओर मोर बोलैं कोयलकी कूक प्यारी। पहरो सम्हार भूषण ओढ़ो सुरंग सारी॥ जलदी चलो किशोरी अरजी यही हमारी। माखनको चोर ठाढो विनती करै तिहारी॥ २१२॥

हरइक तरफ चमनमें कैसी वहार छाई। चल देखिये छबीली गुल्शनकी खुशनुमाई॥ गेंदा गुलाव तुर्रा क्या मालती निवारी। फूलोंके भारसेती क्या झुकरही हैं डारी॥ सखियोंके संग जाके देखी विपिनकी शोभा। नागर नवल छबीली छवि देखके मन लोभा॥ फूलनकी गूँध वेनी सखियन भली बनाई। हँस हँस ललितकिशोरी उर कंठसों लगाई॥ २१३॥

दादरा—महलन चलो नवल अलबेली। रंगमहलमें सेज विछी है चुनचुन कुसुम चमेली॥ चम्पा मरुवा और केवड़ा विच विच फूल रवेली। चित्रकारी मेरे देखोजी मन्दिरमें सुन्दर गर्व गहेली॥ पुरुषोत्तम प्रभु रसिकशिरोमणि थारे चरणकी मैं चेली॥ २१४॥

प्यारी तेरे अंगमें फूलनकी वहार है। फूलनके वाजूबन्द फूलनके गजरे फूलनके सोहैं गलहार॥ चम्पा मरुवा रायचमेली

सब फूलनमें गुलाब । चन्द्रसखी भज बालकृष्णछवि सब गोपि-नमें गुपाल ॥ २१५ ॥

राग वसन्त—देखो सखि आज बन्यो श्रीवृन्दाविपिन समाज । आनंदित सब लोक ओक सुख सदा श्यामको राज ॥ राधारमण वसन्त मचायो पंचम धुनि सुनि कान । धरणि गिरत सुर किन्नर कन्या विथकित गगन विमान ॥ किलकत कोकिल कुंजन ऊपर गुंजत मधुकरपुंज । बजत महारव वेणु झाँझ ढफ ताल पखावज रुंज ॥ केशर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहि धाई । छिरक कुँवर वूका भर चोवा लिये कंठ लिपटाई ॥ बरसत सुमन विबुधकुलऊपर पावन परम पराग । तन मन धन न्यौछावर कीनो निरखि व्यास बड़भाग ॥ २१६ ॥

नई वहार आई मन भाई । व्रजकी नारि सब वन वन मिल मिल फुलवा वीननको धाई ॥ डारि डारि रस लेत भँवरवा कोय-लिया वोल रही । अँवुआ मौल रहे सब शीतल मन्द सुगन्ध मारुत वहे ललितलता द्रुम छाई । वोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सुनाई । चलो न वेग कुँवरि कुंजनमें फूल रही फुलवारी प्यारी ॥ तोहिं श्याम बुलावत लेहु प्रेमरस कृष्णदास मन भाई ॥ २१७ ॥

कोयलिया वोलन लागी रे । फूल रही फुलवारी पिय प्यारी ऋतु वसन्त आई मदन जागे केसू फूले अँवुआ मौले भ्रमर करत गुंजार । पिया विन मेरो मन भयो विरागी ॥ अवधि वीती अजहूँ नहिं आये कुब्जा सौति विरमाये । रैनि दिवस रसना रटत उनहीं संग लागी ॥ प्रीत रीत श्याम जाने दर्शन देहु सुखनिधान । कृष्णदास मिटे प्यास आनँद उर बाढ़े ॥ २१८ ॥

ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे । मधुकरनिकरकरंवितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरसवसन्ते । नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरंते ॥ उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे । अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे ॥ मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले । युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ॥ मदनमहीपतिकनकदण्डरुचिकेसरकुसुमविकासे । मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे ॥ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे । विरहिनिकृन्तनकुंतमुखाकृति केतकि दन्तुरिताशे ॥ माधविकापरिमलललिते नवमालतिजातिसुगन्धौ मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबन्धौ ॥ स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते ॥ वृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ॥ श्रीजयदेवभणितमिदमुदयतु हरिचरणस्मृतिसारम् । सरसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम् ॥ २१९ ॥

राग विभास—प्यारी तुम कौन हो री फुलवा बीननहारी ॥ नेह लगनको बन्यो बगीचा फूल रही फुलवारी । नन्दलाल वनमालीसों तुम बोलो क्यों नहिं प्यारी ॥ हँस ललिता तब कहीं श्यामसों यह वृषभानुदुलारी । तिहारो कहा लागे या वनमें रोके गैल हमारी ॥ राधेजू फल फूल लिये हैं विविध सुगन्ध सँवारी । सूरश्याम राधे तन चितवत इकटक रहे निहारी ॥ २२० ॥

राग कालिंगड़ा—कोई फुलवा लेहु री फुलवा । नील श्वेत पीरे पँचरंगी वरण वरणके हरवा ॥ चुन चुन कली चमेली चटकी

टटकी दोना मरुवा । ललितकिशोरी विवश होय चट पहराये पिया गरवा ॥ २२१ ॥

राग गौरी—मुरलीकी टेर सुनावे री माईको । मोरे आंगनमें ऐंडोई डोलै मोर मुकुट छवि भावे ॥ श्रवण सुनत रस मीठी बतियाँ रहस रहस कर गरे लगावे । सूर घूँघटवाहनसुत देखत लाज रिपु छूटत जावे ॥ २२२ ॥

द्वारे मेरे वंशी कौन बजावे । नई नई तान लेत वंशीमें ठाढ़ो गौरी गावे ॥ चलो सखी वाको मुख देखें नन्दकि धेनु चरावे । सांवरी सखी सोई बड़भागन जो हँस कंठ लगावे ॥ २२३ ॥

राग जंगला दादरा—प्यारी मैं तो तिहारी मालिनियाँ ॥ मेरी फुलवगियामें चलोगे कैना । विविध रंग फूली फुलवारी अलवेली मनभामिनियां ॥ बहुत दिनाकी आशा लागी सींच सींचकर कामिनियाँ । सफल करो पदतल अंकित कर ललितकिशोरी दामिनियाँ ॥ २२४ ॥

राग देश—अकेली मत जैयो राधे यमुनातीर । वंशीवटमें ठग लागत है सुन्दर श्याम शरीर ॥ विन फाँसी विन भुजवेल मारत विन गाँसी विन तीर । वाके रूपजालमें फँसिके को बचि है ऐसो वीर ॥ घर बैठो भर देउँ गगरिया मनमें राखो धीर । वीरन पान करन हम त्याग्यो कालिन्दीको नीर ॥ धन सुत धाम गये नहिं चिंता प्राण गये नहिं पीर । सूरदास कुलकान गयेते धिक धिक जन्म शरीर ॥ २२५ ॥

राग रामकली—श्रीयमुना तिहारो दरश मोहिं भावे । श्रीगोकुलके निकट बहति है लहरनकी छवि आवे ॥ सुखकरनी दुखहरनी यमुना जो जन प्रात नहावे । मदनमोहनको अति ही

प्यारी पटरानी जो कहावै ॥ वृन्दावनमें रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद विमल यश गावै ॥ २२६ ॥

राग बिहाग—मेरे गिरिधारीजीसों कवन लरी । गिरिधारीजीके चरणकमलपर वार डारों सगरी ॥ चल री यशोदा मैया तोहिं बताऊँ जो हमसे झगरी । गोर बदनपर नीलपट ओढ़े चंचल चपल खरी ॥ तू तरुणी मेरो गिरिधर बालक कैसे भुज पकरी । गिरिधर मेरो आँसू भर रोवे तू मुसकात खरी ॥ तू तो यशोदा मेरो न्याव न कीनो सुतकी ओर करी । सूरदास बनमें जब पाऊँ तो बातें हमरी ॥ २२७ ॥

राग कालिंगड़ा—सखी स्वप्नमें घबरानी तुझपर जादू किन डारा रे । स्वप्नमें देख्यो वाहीको मिलाऊँ तनु तेरेकी तपन मिटाऊँ तीन लोक मूरत लिख ल्याऊँ चित्ररेखा तब नाम धराऊँ पहले लिखों स्वर्गकी रचना तामें ना कोऊ न्यारा रे ॥ दूजे लिखों पतालके बसैया तामें ना कोउ स्वप्न दिखैया बार बार मोहिं लेत बलैया आन मिलाओ मेरे चितको चुरैया क्या करों कछु वश ना मेरो होत न घटसे न्यारा रे । तीजे लिखों मध्यके वासी श्रीवृन्दावन लिख लइ काशी द्वारावतीके हो तुम वासी श्रीकृष्ण ठाकुर अविनाशी तब सकुचाय रही कछु मनमें घूँघट बहुरि सम्हारा रे ॥ प्रद्युमनकी मूरत दिखलाई तब वाके कछु हाँसी आई अनिरुद्धको जब दियो दिखाई प्रेमसहित अँखियाँ भर आई पिया पिया कर रोवन लागी स्वप्नमें मोहिं मारा रे । तभी द्वारका पहुँची जाई पलंगसहित वाको लै आई ऊषाको जब दियो मिलाई तब वाने कछु दछिना पाई विष्णुदास मथुराको वासी जीवन प्राण हमारा रे ॥

पद–भजनभावला हीय न परसी प्रेम नहीं उर कपटी । कुआँ पर्‍यो आकाश उड़त खग ताको करत जो झपटी ॥ रसिक कहावें वेई जिनके युगल मिलन चटपटी । वृन्दावनहित रूप कहाँलग बरणों सृष्टि अटपटी ॥ २२९ ॥

कवित्त–कामिनी निहार्‍यो काम सन्तन विचार्‍यो राम, योगी योग ध्यान सिद्ध सिद्धन विशेषिये । दुर्जनको शार्दूल मल्लनको वजतूल, शत्रुनको सूर प्रजा प्रजापति पेखिये ॥ घन घटा मोरनको चन्द्रमा चकोरनको, भ्रमरको कंज मंजु मकरन्द लेखिये । कंस जाने काल ग्वाल वाल सब जाने सखा, एक नंदलाल ही अनेक रूप देखिये ॥ २३० ॥

छन्द–देखादेखी रसिक न होइ है रसमारग है वंका । काहु सिंहकी सरवर करिहै गीदर फिरे जो रंका ॥ असहन निन्द करत पराई कभूँ न मानी शंका । वृन्दावनहित रूप रसिक जिन दियो अनन्य पथ डंका ॥ २३१ ॥

सबसों न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये । स्तुति अरु निन्दा छोड़ पराई युगल जीभ यश गहिये ॥ दुखसुख हानि लाभ मम वर्तन आनि परे सो सहिये । भगवत चरण शरण गह गोविंद मनवांछित सुख लहिये ॥ २३२ ॥

राग विहाग–ऊधौ चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके कहा काज जहँ आदरभाव न पैये ॥ गुरुमुख नहीं महा अभिमानी कापर सेवक रहिये । टूटी छत्त मेघ जल बरषे टूटो पलँग बिछैये ॥ चरण धोय चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐये । सकुचत वदन फिरत छिपाये भोजन काह मँगैये ॥ तुम तो तीन लोकके ठाकुर तुमसे कहा दुरैये ॥ हम तो प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी साग चखैये। सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढ़ैये ॥ २३३ ॥

राग जंगला—जो मैं पारथ नाम कहाऊँ। हठ कर इन्द्र-चाप शोणित शर सज्जन वेग कराऊँ ॥ गीध कवन्ध कन्ध बैठाऊँ काग कराल उड़ाऊँ। दे भगदत्त द्रोण दुःशासन इक इक वाण लगाऊँ ॥ प्रलय करूँ कौरवदल ऊपर जंबुककुलहि अघाऊँ। भीष्म कर्ण राजा दुर्योधन शरकी सेज सुलाऊँ॥ इतनी न करौं शपथ मोहिं कृष्णकी क्षत्रियगति ना पाऊँ। सूरदास पारथ परतिज्ञा इकछत राज कराऊँ ॥ २३४ ॥

जो मैं हरिहि न शस्त्र गहाऊं। तो लाजों गंगा जननीको शंतनुसुत न कहाऊँ ॥ शर धनु तोड़ महारथ मारूँ कपिध्वजस-हित गिराऊँ। पांडव सेनसमेत सारथी शोणितसिन्धु वहाऊँ ॥ जीवों तो यश लेउँ जगतमें जीत निशान फिराऊँ। मरौं तो मंडल भेदि भानुको सुरपुर जाय वसाऊँ ॥ इतनी शपथ करौं प्रभु तुम्हरी क्षत्रियगति ना पाऊँ। सूरश्याम रण विजयसखाको जियत न पीठ दिखाऊँ ॥ २३५ ॥

राग सोरठ—वा पट पीतकी फहरानि! कर गह चक्र चर-णकी धावन नहिं विसरत वह वानि ॥ रथसों उतर वेगि पग धावन कचरजकी लपटानि। मानो सिंह शैलसे उतर्यो महामत्त गज जानि ॥ जन गोपाल मेरो पण राख्यो मेट वेदकी आन। सोई सूर सहायक हमरे गावत बेद पुरान ॥ २३६ ॥

राग श्याम कल्याण—सुन लेहु वात हमारी नगर सव। पढ़ने जाओ प्रहलाद संग सव रामनाम उर धारी ॥ हरणाकुशके नाश करनको होंगे नरसिंह अवतारी। माखनचोर दास यों भाषे यह कह भवन सिधारी ॥ २३७ ॥

सुन लेहु राजकुमार। अरज मेरी याके पुत्र चढ़े अगनीमें

राम बचावनहार ॥ राम नाम है सत्य कुँवरजी झूँठो सब संसार ।
माखनचोर दास यों भाषे जाके हरि आधार ॥ २३८ ॥

मत ले रामको नाम मौत जिन घेरी कुम्हारी । काल जो तेरे शिरपर आगई दशा तिहारी ॥ रामनामको वाद न कीजै लीजै शोच विचारी। माखनचोर दास यूँ भाषे मेरो पिता बलधारी॥२३९॥

छन्द—मत ले तू रामको नाम झूँठ मत बोले वृथा कुमारी । मेरो जो सुन पावेगो पिता खाल कढ़ लेगा भुस भरवा री ॥ अरी यह तो अगिन चढ़े बचे नहीं इनको अपराध हमारी । यह तो विल्ली करत विलाप दोष भयो भारी ॥ २४० ॥

कुम्हरी मनमें अति शोच चली प्रहलाद बुलावन आई । ड्योढ़ीपर ठाढ़ी भई अरज दासीने जाय सुनाई ॥ तुम सुन हो राजकुमार मेरो आँवा उतऱ्यो आज तुम चालो वेगि महराज बेर भई भारी ॥ २४१ ॥

माताजी दूँगा द्रव्य अघाय कहूँ मैं सत्यकि बानी । गुण भूलेंगे नाहिं पढ़ाई तैंने राम कहानी ॥ माताजी भलो दियो उपदेश मैंने हिरदेमें जानी । विष प्याले छुड़वाय प्याय दियो अमृत पानी ॥ २४१ ॥

पाँच बरसके भये कुँवरजी राजा निकट बुलाये जी । ले प्रहलाद गोद बैठाये मनमें मोद बढाये जी ॥ शंडामर्का ब्राह्मण दोनों राजा निकट बुलायेजी । ले जाओ चटसार कुँवरको अस कछु रीति पढ़ाओजी ॥ यह है कुलकी रीति हमारे कठिन कठोर कुचालीजी । धर्मका खंडन पापका मंडन हत्या हृदय बसाओजी ॥ २४३ ॥

लावनी—विद्या पढ़ने गये गुरूकी चटशाला । तिन भर भर पट्टी रामनाम लिख डाला ॥ प्रहलादकाज भगवान भक्तहित-कारी । भये संतनके हितकाज आप गिरिधारी ॥ निरखी प्रभुकी

प्रहलाद प्रथम प्रभुताई। बिल्लीने बच्चे धरे अँवामें लाई ॥ विन जाने आँच कुम्हारि जो दई है लगाई। कीनी प्रभु आय सहाय बचे सुख पाई ॥ जिन जाना रामप्रभाव परम सुखकारी। भये संतनके हितकाज आप गिरिधारी ॥ इतनेमें पाँड़े आय निहारी पाटी। पढ़ रहा रामका नाम चलाई साँटी ॥ क्या तुझे रामसे काम कह्यो ललकारी। भये संतनके हितकाज आप गिरिधारी ॥ भूपति बोला ललकार कहाँ हरि तेरो। तू है मूरख नादान मौतने घेरो ॥ अव छोडूँगो नाहिं गयो मैं हारी। भये संतनके हित-काज आप गिरिधारी ॥ २४४ ॥

राग श्याम कल्याण–पाँडेजी मोहिं रामनाम लिख देह। गंगाजल तजि पियत कूपजल अमृत छाँड़ विष देह ॥ और पढ़नसे कहा काज है वृथा त्रास क्यों देह। युगलदास प्रभुके चरणनमें वार वार शिर देह ॥ २४५ ॥

कड़ा–प्यारेजी गिनती कई हजार पढ़े हम बिकट पहारे। पट्टी लिखी अनेक लगे हरिनाम पियारे ॥ प्यारेजी रामनामके हरफ मैंने हिरदैमें धारे। औ सब झूठा ख्याल जगतमें धुंध पसारे ॥

पाँडेजी मैं नहिं रखता कुँवरकी शामत आई। पूत नहीं यमदूत करैं मेरी लोग हँसाई ॥ पाँडेजी जाको ले यह नाम सोई मेरो दुखदाई। मार उडाऊँ खाल करैगा कौन सहाई ॥ २४७ ॥

प्यारेजी फूलोंकीसी सेज कुँवर हरिके गुण गावै। धन मेरो महराज पार जिनका नहिं पावै ॥ प्यारेजी निश्चय करके रटै बिपतिके फन्द छुड़ावै। दर्शनते गति होय मुक्तके धाम वसावै ॥

राग देश–जननी विप मोहिं दे पिलाय। अब और कछू तो नाहिं उपाय ॥ मेरो आप हरी कर ले सहाय। इक बाँह

पकरके खैंच लाय ॥ मोहिं गिरि पर्वतसे दियो गिराय । तहाँ आप हरीने मोहिं लियो उठाय ॥ इक जलती अगिनमें दियो बिठाय । तहँ कूदि परे हरि आप धाय ॥ मोहिं अमृत हृदयसे लियो लगाय । हरिकी गति मोपै लखी न जाय ॥ मोरे रोम रोममें रह्यो समाय । कहै युगल चरणमें चित लगाय ॥ २४९ ॥

राग वसन्त—नहिं छोड़ूँ रे बावा रामनाम । मोहिं और पढ़नसों नहीं काम ॥ प्रहलाद पठाये पढ़न शाल । संग सखा वहु लिये बाल ॥ मोको कहा पढ़ावत आल जाल । मेरी पट्टियापै लिख देउ श्रीगोपाल ॥ यह शंडामर्का कह्यो जाय । प्रहलाद बुलाये वेग धाय ॥ तू राम कहनकी छोड़ बान । तुझे तुरत छुडाऊँ कह्यो मान ॥ मोको कहा सतावो बार बार । प्रभु जल थल नभ कीने पहार ॥ इक राम न छोड़ूँ गुरुहिं गार । मोहिं घाले जार चाहे मार डार ॥ काढ खड्ग कोप्यो पितु रिसाय । तुझे राखनहारो मोहिं बताय ॥ प्रभु खंभसे निकसे हो विस्तार । हिरणाकुश छेद्यो नख विदार ॥ श्रीपरमपुरुष देवादिदेव । भक्तहेतु नरसिंह भेव ॥ कहै कबीर कोउ लखे न पार । प्रहलाद उधारे अमित वार ॥ २५० ॥

कवित्त—आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो रह्यो, जाके हित राम नरसिंहरूप धार्यो है । जाको यश परम पुनीत व्यास भागौतमें, गायो सो भयो है भक्त प्रभुजीको प्यारो है ॥ तेसोई सपूत भयो वैरोचन ताके आप, छायो यश जगकुल ऐसो सो तिहारो है । पूजो मनकाम मेरी सुनिये हो राजा बलि, यातें आशीर्वाद दानी तुमको हमारो है ॥ २५१ ॥

राग भैरव—मंगलरूप यशोदानन्द । मंगल मुकुट कानमधि कुंडल मंगल तिलक बिराजत चन्द ॥ मंगल भूषण सब अँग

सोहत मंगल मूरत आनँदकन्द । मंगल लकुट काँखमें चापे मंगल मुरली वजावत मन्द ॥ मंगल चाल मनोहर मंगल दर्शन होत मिट्यो दुखद्वंद। मंगल व्रजपति मंगल मधुवन मंगल यश गावत श्रुतिछंद ॥ २५२ ॥

राग देश—आदिमणि ब्रह्म अवतारमणि कृष्ण युगमणि सतयुग दिशन पूर्व सवघट रमण रमैया । दिवसमणि भास्कर निशामणि चन्द्रमा उडुगणमणि ध्रुव द्वीपनमणि जंबूद्वीप खंडनमणि भरतखंड चतुर महैया ॥ स्वर्गमणि वैकुंठ राजनमणि इन्द्र गुरुनमणि बृहस्पति वेदमणि ब्रह्मा सब जग रचैया । हस्तिनमणि ऐरावत विहंगनमणि वैनतेय पुराणमणि श्रीभागवत परमहंसमणि शुकदेव कहैया ॥ ज्ञानिनमणि महादेव ध्यानिनमणि लोमशऋषि आयुर्वलमणि मार्कण्डेय गिरिमणि सुमेरु थिरैया । तरुनमणि कल्पवृक्ष वीरनमणि महावीर सागरमणि पयसमुद्र सरितमणि विष्णुपद तीरथमणि व्रजस्थान हरि प्रगटैया ॥ भक्तनमणि प्रहलाद यतियनमणि लक्ष्मण नारिन मणि उर्वशी तुरँगन उच्चैःश्रवा इन्द्रधाम रहैया । रागमणि भैरव ऋतुनमणि वसन्तऋतु शास्त्रमणि वेदान्त रंजनमणि संगीत पार ना लहैया ॥ताननमणि तानसेन गायनमणि नारद गन्धर्वमणि हाहा हूहू वीणनमणि सरस्वतीवीन प्रातही नाम लैया । स्वरनमणि खरज स्वर सुतनमणि तैव्यरा मूर्छनामणि आनन्दी तिथिनमणि एकादशी उत्तममणि गोविंद नाम लै कृष्णानन्द भवसागर पार पैया ॥ २५३ ॥

राग भूपाली कल्याण—मुकुटपर वारी जाऊँ नागरनन्दा। सब देवनमें कृष्ण बड़े हैं ज्यों तारोंमें चन्दा ॥ सब सखियनमें राधा बड़ी हैं ज्यों नदियोंमें गंगा । चन्द्रसखी भज बालकृष्णछवि काटो यमके फन्दा ॥ २५४ ॥

राग बिलावल—धर्ममणि मीन मर्यादमणि रामचन्द्र रसिकमणि कृष्ण औ तेजमणि नरहरी । कठिनमणि कमठ बलविपुलमणि वाराह छलनमणि वामन देह विक्रम धरी ॥ गिरिनमणि कनकगिरि उदधिमणि क्षीरनिधि सरनमणि मानसर नदिनमणि सुरसरी । खगनमणि गरुड द्रुमनमणि कल्पतरु कपिनमणि हनूमान पुरिनमणि अवधपुरी ॥ सुभटमणि परशुधर क्रान्तमणि चक्रवर शक्तिमणि पार्वती जान शंकर वरी । भक्तमणि प्रहलाद प्रेममणि राधिका मणिनकी माल गुह कंठ कान्हर धरी ॥ २५५ ॥

राग सारंग—हरि हरि हरि सुमिरण करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ हरिकी कथा होत है जहाँ । गंगाहू चलि आवे तहाँ ॥ यमुना सिन्धु सरस्वति आवे । गोदावरी विलंब न लावे ॥ सर्व् तीर्थको वासो तहाँ । सूर हरिकथा होत है जहाँ ॥ २५६ ॥

राग भैरव—मदनगुपाल हमारे राम । धनुष बाण धर विमल वेणु कर पीतवसन अरु तन घनश्याम ॥ अपनी भुज जिन जलनिधि बाँध्यो रास नचाये कोटिक काम । दशशिर हति सब असुर सँहारे गोवर्धन धार्‍यो कर वाम ॥ तब रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्त विमल बहु नाम । परमानंद प्रभु भेदरहित हरि निजजन मिल गावत गुणग्राम ॥ २५७ ॥

राग बिलावल—नन्दरायके नवनिधि आई । माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीतवसन भुज चारु सुहाई ॥ बाजत ताल मृदंग यंत्रगति चरचि अरगजा अंग चढ़ाई । अक्षत दूब लिये शिर वन्दत घर घर वन्दनवार बँधाई । छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंकभर लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नन्द अघाई ॥ २५८ ॥

राग कान्हरा—अनोखा लड़ला खेलत माँगत चन्द । हँसन खेलनको रारि करत है मनमें भयो री अनन्द ॥ २५९ ॥

राग रामकली—किहि मिस यशोमति जाऊँ । सकलसुखनिधि सुख निरखके नयनतृपा बुझाऊँ ॥ द्वारे आरजसभा जुरि रही निकसवे नहिं पाऊँ । विन गये पतिबर्त छूटे हँसे गोकुल गाऊँ ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित लै लै नाऊँ । सूर लगन कठिन मनकी कहो काहि सुनाऊँ ॥ २६० ॥

राग जैतश्री—दूर खेलन जिन जाउ ललन मेरे हाऊ आये हैं । तब हँस वोले कान्हर मैया इनको किन्हो पठाये हैं ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत जहाँ सघन वन झाऊँ । पैठ पताल व्याल गहि नाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ ॥ अब डरपत सुन सुन यह बातैं कहत हँसत बलदाऊ । सप्त रसातल शेषासन रहि तबकी सुरत भुलाऊँ ॥ चार वेद लै गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊँ । मीनरूप धरके जब मार्‍यो तबहि रहे कहँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मन्दर जलहि खिसाऊँ । कमठरूप धरि धरणि पीठपर सुख पायो सुरराऊँ ॥ जब हरिणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरवाऊँ । धरि वाराहरूप रिपु मारयो लै क्षिति दन्त अगाऊँ ॥ विकटरूप अवतार धरयो जब जन प्रहलाद वचाऊँ । होय नरसिंह जब असुर विदार्‍यो तहाँ न देख्यो हाऊ ॥ वामनरूप धरयो वलि छलकर तीन पैग वसुधाऊ । श्रम जल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरश चरण परसाऊं ॥ मार्‍यो मुनि विनहीं अपराधहिं कामधेनु लै आऊं । इकइस वेर करी निक्षत्र क्षिति तहाँ न देख्यों हाऊ ॥ रामरूप रावण जब मारयो दश शिर बीस भुजाऊ । लंकजराय तार जब

कीनो तहाँ रहे कहँ हाऊ ॥ माटीके मिस वदन विकास्यो जव जननी डरपाऊँ । मुखभीतर त्रैलोक दिखायो तवहुँ प्रतीत न आऊ ॥ नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तेहि कर भाव वताऊँ । तुरत चीर द्वै टूक कियो घर ऐसे त्रिभुवनराऊ ॥ भक्तहेतु अवतार धरयो सव असुरन मार वहाऊं । सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाऊं ॥ २६१ ॥

राग दादरा–जगमें देखत हूँ सव चोर । जोर इंद्रिन वश महालुब्ध मन मोर ॥ पाँच चोर सवके उरभीतर चोरी करैं करावैं । चोर चोर सव जगको खावें कोऊ पार न पावे ॥ हाकिम चोर चोर मुतसद्दी चोर शहर व्यापारी । तैसेई चोर जानिये सवको कहा पुरुष कह नारी ॥ ब्रह्मा चोर वदत वृंदावन वालक वत्स चुरायक । साधुचोर हरिहृदय चुरायो जो त्रिभुवनके नायक ॥ पाँच सात मिल चोरी कीनो जो जासों वन आई । सूरदास गुण कहँलग वरणै माखनचोर कन्हाई ॥ २६२ ॥

राग धनाश्री–कवके वाँधे ऊखल दाम । कमलनयन वाहर कर राखे तू वैठी सुखधाम ॥ हो निर्दयी दया कछु नाहीं लाग रही घरकाम । देख क्षुधाते मुख कुम्हलानो अति कोमल तनुश्याम ॥ छोरो वेग वड़ी विरिया भई वीति गये युग याम । तेरी त्रास निकट नहिं आवत वोल सकत नहिं राम ॥ जन कारण भुज आप वँधाई वचन कियो ऋषिकाम । ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर भो नाम ॥ २६३ ॥

राग सारंग–हलधरसों कह ग्वालि सुनायो । प्रातहिते तुम्हरो लघु भैया यशुमति ऊखल वाँधि लगायो ॥ काहूके लरिकहि हरि मारयो भोरहि आन रोवत गोहरायो । तवहीते वाँधे हरि

बैठे सो हम तुमको आन जनायो ॥ हम बरजी बरज्यो नहिं मानत सुनतहि वल आतुर है धायो । सूर श्याम बैठे ऊखल लग माता तनु अतिही त्रसायो ॥ २६४ ॥

निरख श्याम हलधर मुसकाने । को बाँधे को छोरे इनको यह महिमा येही पै जाने ॥ उत्पति प्रलय करत हैं येई शेष सहसमुख सुयश बखाने । यमलार्जुन तरु उधरन कारण करत आप मनमाने ॥ असुरसँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत बाने। सूरदास प्रभु भक्तिभावके अति मति यशुमति हाथ बिकाने॥

छन्द—पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन चतुर्दश नाथ हरी। जब जब भीर परी सन्तनपै प्रगट होय प्रतिपाल करी ॥ आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी । कृष्ण, नमामि नमामि नमामि दयासिंधु अन्तर्यामी॥जाको ध्यान धरत योगीजन शेष जपत नित नाम नये । सो भवतारण दुष्टनिवारण सन्तन कारण प्रगट भये ॥ जाको नाम सुनत यम डरपत हर हर कांपत काल हियो । ताको पकर नन्दकी रानी ऊखलसों ले बाँध दियो ॥ जै दुखमोचन पंकजलोचन उपमा जायं न कहत बनी । जै सुखसागर सबगुणआगर शोभा अंग अनंग घनी ॥ नारदको हम अति गुण माने शाप नहीं वरदान दियो । जा कारणते प्रभू आपने दर्शन दियो सनाथ कियो ॥ जो हरहूके ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे । सो हरि प्रगट नन्दके आँगन ऊखल संग बँधे देखे ॥ जिनकी पदरजको सुर तरसें अगम अगोचर दनुजारी । त्राहि त्राहि प्रणतारतिभंजन जनमनरंजन सुखकारी ॥ तुम्हरी माया जीव भुलानो किहि विधि नाथ तुम्हें जाने। तुमहीं कृपा करौ जब स्वामी तबहीं तुमको पहिचाने ॥ हे मुकुन्द मधुसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजे । इन चरणनमें सदा

रहै मन यह वरदान हमैं दीजै ॥ जै केशव जै अधमउधारन दया-सिंधु हरि नित्य मगन । जै सुंदर व्रजराज शशीमुख सदा वसौ मम हृदयगगन ॥ रसना नित तुम्हरे गुण गावै श्रवण कथा सुन मोद भरें । कर नित करे तुम्हारी सेवा नयन संतजन दरश करें॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग यज्ञ आचार करें । नारायण विन भक्ति न रीझो वेद संत सब साख भरें ॥ २६६ ॥

अनुसार अस्तुति युगल प्रेमानन्द मन सन्मुख खरे । जै जै भगतहित सगुण सुन्दर देह धर धावत हरे ॥ जो रूप निगम नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे । सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उर धरे ॥ धन्य व्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही । धन्य गोविंद वाललीला करत माखन चोरही ॥ धन धन उरहनो देत नित उठि धन्य अनख बढ़ावहीं । धन्य जननी बाँधि राखत जाहि वेद न पावहीं ॥ धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजनगढ़ लाइयो । धन्य सो तृण जासुकी रज्जु श्याम भुजन बँधाइयो ॥ धन्य ऋषि धनि शाप दीन्हो अति अनुग्रह सो कियो । जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो ॥ अव कृपा कर देहु वर प्रभु चरणपंकज मति रहै । जहाँ जन्महि कर्मवश तहँ एक तुम्हरी रति रहै ॥ दीनवन्धु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीव्रजनाथजू । राखिये निजशरण अव प्रभु करिय हमहिं सनाथजू ॥ २६७ ॥

राग वसन्त–वरज यशोदे तू अपनो वाल । रसिया गोपाल नित उठ हमसे करत रार ॥ स्नान करन गई यमुनातीर । लहि भूषण वस्त्र धरे हैं तीर ॥ जलप्रवाह मोरी दीठ । तेरा कृष्ण कुँवर झूले पलना ओर ॥ ना खावे अन्न ना पीवे नीर । वह कौन समय गयो यमुनातीर ॥ घर आवे जब वाल सार । आँगन

आये जब ढोटा सार ॥ देखो सूर प्रभुके यह ख्याल । उठ चली है ग्वार मुखो भई है लाल ॥ २६८ ॥

राग सुघराई—बजावै मुरलीकी तान सुनावै यहि विधि कान्ह रिझावै । नटवर वेष बनाय चटकसों ठाढ़ो रहे यमुनाके तीर नित वनमृग निकट बुलावै ॥ ऐसो को जो जाय यमुनाते जल भर घरहि लै आवै । मोर मुकुट कुंडल वनमाला पीतांवर फहरावै ॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचन जल भर आवै । सूरश्यामके अंग अंग प्रति कोटि काम छवि छावै ॥ २६९ ॥

राग पीलू—हे प्यारी नाहिं फोरी गगरिया हे री छबिहार नई पनिहार । तू तोरी मोरी चकियाँकी डोरी तापै देती है गार ॥ तू जोवन अलमस्ता ग्वारन चलत न आप सँभार । झूमझूम पग धरत भूमिपर मैं तोहिं दीन सँभार ॥ २७० ॥

राग बरवा—माई नित उठ कुंजन रोकत ब्रज बनवारी । कल न परत मोरी मटकी फोरी और भीजी पँचरंग सारी ॥ जाय कहूँजी मैं नन्दजूके आगे कबके छैलविहारी । हम रँग प्यारा देख मुसकत हैं और देत रस गारी ॥ २७१ ॥

राग गौरी—छबीले बंशी नेक बजावो । बलि बलि जात सखा यह कह कह अधर सुधारस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दावन दुर्लभ प्रेमतरंग । ना जानिये बहुरि कब ह्वैहैं श्याम तुम्हारे संग ॥ बिनती करत सुबल श्रीदामा सुनो श्याम दै कान । या यशको सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान॥ कब पुनि गोपवेष ब्रज धरिहौ फिरिहौ सुरभिन साथ ॥ कब तुम छाक छीनके खैहो श्रीगोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी काँध कमरिया ग्वालन दई डसाई । सोंह दिवाय

नन्दबाबाकी रहे सकल गहि पाई ॥ सुन सुन दीन गिर मुरलीधर चितये मुख मुसकाई । गुणगंभीर गुपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धरकर वेणु अधर मनमोहन कियो मधुर धुन गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुन वारें तन प्रान ॥ चपल नयन भ्रुकुटी नासापुट सुन सुन्दर मुखवैन । मानो निर्तत भा दिखलावत गति लिय नायक मैन ॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानो कमलकोशरस चाखन उड़ आये अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानो सुधासिंधुमें क्रीड़त मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुन्दर अनाघातके ताल । रस सब दियो मदनमोहनका प्रेमहर्ष सब ग्वाल ॥ लोलित वैजन्ती चरणनपर श्वास पवन झकोर । मानो सुधा पियन अहि आयो ब्रह्मकमंडलु फोर ॥ डोलत लता मन्द मारुतगति सुन सुन्दर मुखवैन । खग मृग मीन अधीन भये सब कियो यमुनजल सैन ॥ झलमलात भ्रुकुटी पदरेखा सुभग साँवरे गात । मनु पट वधू एक रथ बैठी उदय कियो अधरात ॥ बाँके चरणकमल भुज बाँके अवलोकन जु अनूप । मानो कल्पतरोवर विरवा आन रच्यो सुरभूप ॥ अति सुख दियो गोपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज माँगत निरखत रूपनिधान ॥ २७२ ॥

राग वसन्त—घर घरते वनिता जो वन निकसीं आज कंचन थार भर निछावर मोहनलालकी । सप्त सुर गावत कंठ शब्द कोकिला गत उपगत अति रसालकी ॥ साज समाज गोपाल झुंडन मिल चलत चाल अति मरालकी । तानसेनके प्रभु रसवश कर लीनी टेढ़ी मूरत चितवन गोपालकी ॥ २७३ ॥

राग पूरबी–धरें टेढ़ी पाग टेढ़ी चंद्रिका टेढ़ी त्रिभंगी लाल । कुंडलोंकी छवि देख कोटि रवि उदय होत और सोहे बनमाल ॥ साँवरे वदनपर पीतपट ओढ़न मुख मुरली बाजे मधुर रसाल । श्रीमतवल्लभ वनते आये संग लिये व्रजबाल ॥

राग कल्याण–मोहन जानी तिहारी बात । ब्यारू परघर कर आवत यहाँ कछू नहीं खात ॥ यही स्वभाव तिहारो जनमको चोरी बिन न अघात । नन्ददास कहत नँदरानी प्रेमलपेटी बात ॥ २७५ ॥

अपने लालको जिमावत मैया । कर कर कौर मुखारविन्दमें मधु मेवा पकवान मिठैया ॥ व्यंजन खाटे मीठे खारी अति ही खारी स्वाद बन्यो अधिकैया । चतुरभुज प्रभु गिरिधरनलालको ब्यारू करावत लेत बलैया ॥ २७६ ॥

राग नट–हरिकी लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छिनहिंमें नाशै छिनहींमें उपजावै ॥ बालक बच्छ ब्रह्म हर लै गयो ताको गर्व नशावै । ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीजत पुनि समझावै ॥ शिव सनकादिक अन्त न पावे भक्तबछल कहवावै । सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर-घर गाय चरावै ॥ २७७ ॥

राग टोड़ी–खोलो जी किवार को है एती बार हरी नाम है हमार बसो कन्दरा वहारमें । हौं तो आली माधव कोकिलाके माथे भाग मोहन हौं प्यारी फिरो मंत्रके विचारमें ॥ रागी हौं रँगीली जावो क्यों न दातापास भोगी हौं छबीली जाय घसो जी पतारमें । नायक हौं नागरी तो टाँडो क्यों न लादो जाय हौं तो घनश्याम प्यारी बरसो जी वहारमें ॥ २७८ ॥

राग वसन्त–श्रीराधे दे डारो ना बाँसुरी मोरी। जिन बंशीमें मोरें प्राण बसत हें सो बंशी गई चोरी ॥ सोनेकी नाहीं कान्हा रूपेकी नाहीं हरे हरे बाँसकी पोरी। काहेसे गाऊँ राधे काहेसे बजाऊँ काहेसे लाऊँ गउआँ घेरी ॥ मुखसे गाओ प्यारे तालसे बजाओ लकुटीसे लाओ गैयाँ घेरी। चन्द्रसखी भज बालकृष्ण-छवि हरिचरणनकी चेरी ॥ २७९ ॥

दोहा–नारायण हरिगुणसहित, गान करै नित भक्त।
मोक्षपदारथ पावही, होय परम अनुरक्त ॥ २८० ॥

इति श्रीरागरत्नाकर द्वितीय भाग समाप्त ॥

रागरत्नाकर।

तृतीय भाग।

श्रीरघुनाथलीला।

दोहा–रामवामदिशि जानकी, लखण दाहिनी ओर। ध्यान सकल कल्याणमय, तुलसी सुरतरु तोर॥ तुलसी कौशलराज भज, मत चितवे कहुँ ओर। सीतारामसयंकमुख, तू कर नयन-चकोर॥ मुरली मुकुट दुरायके, नाथ भये रघुनाथ। तुलसी रुचि लखि दासकी, धनुष बाण लियो हाथ॥ सीतापति रघुनाथजू, तुमलग मेरी दौर। जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर॥ नहिं विद्या नहिं वाहुबल, नहीं गाँठमें दाम। तुलसी ऐसे पतितकी, तुम पति राखो राम॥ वार वार वर माँग हों, हर्षि देहु श्रीरंग। पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥ कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम॥ ऐसे हो कबलागि हौं, तुलसीके मन राम॥ दीजै दीनदयालु मोहिं, बड़ो दीनजन जानि। चरणकमलको आसरो, सत्संगतिकी बानि॥ १॥

राग भूपाली–गाइये गणपति जगवन्दन। शंकरसुवन भवानीनन्दन॥ सिद्धिसदन गजवदनविनायक। कृपासिंधु सुन्दर सबलायक॥ मोदकप्रिय मुद मंगलदाता। विद्यावारिधि बुद्धिविधाता॥ माँगत तुलसिदास कर जोरे। बसैं राम सिय मानस मोरे॥ १॥

राग काफी–धनि धनि धनि मात गंग चाहत मुनिजन प्रसंग प्रगटी रघुनाथचरन करन सुखविहारी। दीनी विधि बूँद डार अरि अनंग शीश धार आई मृतमध्यलोक सन्तनको प्यारी॥ पर्वत द्रुम लता तोर स्वर्ग औ पताल फोर भगीरथ करनधार

सगरतनय तारी । अमित वारि अति उतंग चाहत अति रूप रंग दरश परश मज्जन कर पापपुंजहारी ॥ माता मैं याचौं तोहिं रामभक्ति देहु मोहिं शरण गही तुलसिदास दीन हो पुकारी ॥ २॥

राग विभास–जै भगीरथ नन्दनी मुनिचितचकोरचन्दनी नर नाग विबुध वन्दनी जै जहुबालिका । विष्णुपदसरोजजासि ईशशीशपर विभासि त्रिपथगासि पुण्यराशि पापछालिका ॥ विमल विपुल वहसि वारि शीतल त्रयतापहारि भँवर वर विभंगतर तरगमालिका । पुरजन पूजोपहार शोभित शशि धौलधार भंजन भवभार भक्त कल्पथालिका ॥ निजतटवासी विहंग जलथलचर पशु पतंग कीट जटिल तापस सब सरिस पालिका । तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंश वीर विचरत मति देह मोह महिप कालिका ॥ ३ ॥

राग काफी–आनँदवन गिरिजापतिनगरी मन क्यों ना वास लगावत । काशीसमान नहीं द्वितियापुर ब्रह्मादिक गुण गावत ॥ वेद पुराण बखानत महिमा शारद पार न पावत । निकट प्रवाह वहत जहँ गंगा सुर नर मुनि हर्षावत ॥ जाके दरश परश अरु मज्जन कोटिक पाप नशावत । कीट पतंग जीव नानाविध सबकी मुक्ति करावत ॥ अन्तकाल सदाशिव शंकर तारकमंत्र सुनावत । अगम अपार अनूपम उपमा शेष सहसमुख गावत ॥ रामसियापदहेत प्रेम प्रभु तुलसिदास गुण गावत ॥ ४॥

राग भैरव–सूरजवंशी नमो गुरु इष्ट हमारो दशरथसुत राजाराम । जानकीके नायक नाथ त्रिभुवनके धनुपधारी सुन्दर श्याम ॥ लक्ष्मण हनूमान भरत शत्रुहन तिनके सँवारे कोटिकाम । धीरज प्रवीन रघुकुलतिलक विदित प्रगटे अयोध्या धाम ॥ ५ ॥

राग आसावरी–आज सुदिन शुभघरी सुहाई । रूपशील गुणधाम राम नृपभवन प्रगट भयें आई ॥ अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह वार योग समुदाई । हर्षवन्त चर अचर भूमिसुर तनुरुह पुलक जनाई ॥ वर्षहिं विबुधनिकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई । कौशल्यादि मात सब हर्षत यह सुख बरणि न जाई ॥ सुन दशरथसुत जन्म लिये सब गुरुजन विप्र बुलाई । वेदविहित करि क्रिया परम शुचि आनँद उर न समाई ॥ सदन वेदधुनि करत मधुर मुनि बहुविध बाज बधाई । पुरबासिन प्रियनाथहेतु निज निज सम्पदा लुटाई ॥ माणि तोरण बहु केतु पताकन पुरी रुचिर कर छाई । मागध सूत द्वार बन्दीजन जहँ तहँ करत बड़ाई ॥ सहज शृंगार किये वनिता चलि मंगल विपुल बनाई । गावहिं देहिं अशीस मुदित चिर जियो तनय सुखदाई ॥ वीथिन कुमकुम कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई । नाचहिं पुरनरनारि प्रेमभरि देहदशा बिसराई ॥ अमित धेनु गज तुरँग वसन माणि जातरूप अधिकाई । देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि ग्रह आई ॥ सुखी भये सुर संत भूमिसुर खलगण मन मलिनाई । सबहिं सुमन बिकसत रवि निकसत विपिन कुमुद बिलखाई ॥ जो सुखसिंधु सुकृतसीकरते शिव विरंचि प्रभुताई । सो सुख उमँगि अवध रह्यो दशदिशि कवन जतन कहो गाई ॥ जै रघुवीरचरणचिन्तक तिनकी गति प्रगट दिखाई । अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ़ तुलसिदास तव पाई ॥ ६ ॥

राग तैलंग–हौं तो रघुबंशिनको ढाढ़ी । सुन दशरथसुत जन्म दूरते आयो आशा बाढ़ी ॥ तुम्हरोइ यश गाऊँ जहँ जाऊँ पूछो दुनिया ठाढ़ी । रतनहरी मेरो नाम रामकी लेहुँ बलैया गाढ़ी ॥ ७ ॥

ढाढ़िन चल दशरथ घर जाइये । ढाढ़ी कहै सुनो मेरी प्यारी जहाँ सकल सिधि पाइये ॥ कंचन, वसन रतन भूषण धन अनगिन अशन अघाइये । रतनहरी प्रभु रामजनमकी विमल वधाई गाइये ॥ ८ ॥

कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना । राजसमाज सकल सुख सम्पति अधिक अधिक नित होना ॥ मुनिजन ध्यान धरत निश वासर अधिक जन्म धर मौना । रतनहरी प्रभु त्रिभुवन-नायक तैं करलियो खिलौना ॥ ९ ॥

राग कान्हरो–ठुमकि चलत रामचन्द्र वाजत पैजनियाँ । किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथकी रनियाँ ॥ अंचल रज अंग झार विविध भाँतिसों दुलार तन मन धन वारि देत कहत मृदु वचनियाँ । मोदक मेवा रसाल मनभावत लेउ लाल और लेउ रुचिर पान कंचन रुनझुनियाँ ॥ आनँद सज कंवुकंठ ग्रीवा अति रुचिर रेख कच कुटिल चन्द वदन मन्दसों हँसनियाँ । विद्रुमसों अधर ललित वोलत प्रिय मधुर वचन नासा अति सुभगवीच लटकत लटक-नियाँ ॥ अद्भुत छवि अति अपार को कवि नहिं वरणै पार कहि न सकै शेष जिहि सहस्र तो रसनियाँ । तुलसिदास रूप रंग पटतरको दिये कहा रघुवरकी छविसमान रघुवरछवि वनियाँ ॥ १० ॥

सवैया–दन्तकी पंगति कुन्दकली अधराधर पल्लव खोलनकी। चपला चमकै धन विज्जु जगै छवि मोतिनमाल अमोलनकी ॥ घुँघुवारी लटैं लटकैं मुखऊपर कुंडल लोल कपोलनकी । निवछा-वर प्राण करै तुलसी वलि जाउँ लाल इन वोलनकी ॥ ११ ॥

राग प्रभाती—प्रातसमय रघुवरहि जगावै कौशल्या महतारी। उठो लालजी भोर भयो है सुरनरमुनिहितकारी॥ ब्रह्मादिक इन्द्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी। वाणी वेद विमल यश गावैं रघुकुलयश विस्तारी॥ बन्दीजन गन्ध्रब गुण गावैं नाचत दे दे तारी। उमासहित शिव द्वारे ठाढे होत कुलाहल भारी॥ कर अस्नान दान प्रभु दीनो गो गज कंचनझारी। जयजयकार करत जन माधो तन मन धन वलिहारी॥ १२॥

जागियो कृपानिधान जानराय रामचन्द्र जननी कहै वार वार भोर भयो प्यारे। राजिवलोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमलवदनऊपर मदनकोटि वारे॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरनहीन दीन दीपज्योति मलिन द्युतिसमूह तारे। मनो ज्ञानघनप्रकाश वीते सब भवविलास आश त्रास तिमिर तोष तरनितेज जारे॥ बोलत खग निकरमुखर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे। मनो वेद वन्दी मुनिवृन्द सूत मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे॥ विकसत कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजन कल कोमल धुनि त्याग कंज न्यारे। मनो विराग पाय सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेममत्त फिरत गुणत गुण तिहारे॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुखकदम्ब टारे। तुलसिदास अति अनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रमफंद परम मन्द द्वन्द भारे॥ १३॥

राग विभास—भोर भयो जागो रघुनन्दन। गत व्यलीक भक्तन उर चन्दन॥ शशिकर हीन छीन द्युति तारे। तमचर मुखर सुनो मेरे प्यारे॥ विकसत कंज कुमुद विलखाने। लै

परागरस मधुप उड़ाने ॥ अनुजसखा सब बोलन आये । वन्दिन अति पुनीत गुण गायें ॥ मनभावतो कलेऊ कीजै । तुलसिदासको जूठन दीजै ॥ १४ ॥

बोलत अवनिपकुमार ठाढ़े नृपभवनद्वार रूप शील गुण उदार जागो मेरे प्यारे । बिलखत कुमुदिन चकोर चक्रवाक हर्ष मोर करत शोर तमचर खग गूँजत अलि न्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन कर भूषण सज सकल अंग संग अनुज बालक सब विविध विधि सँवारे । करतल गहि ललित चाप भंजन रिपुनिकर दाप कटितट पटपीत तूण शायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारन गवने कृपाल जननी मुख निरख पुण्यपुंज निज विचारे । तुलसिदास संग लीजै जानि दीन अभय कीजै दीजै मति विमल गावै चरितवर तिहारे ॥ १५ ॥

राग विलावल—आज तो निहार रामचन्द्रको मुखारविन्द चन्द्रहूसे अधिक छवि लागत सुहाई री । केसरको तिलक भाल गरे सोहै मुक्तमाल घूँघरवारी अलकनपर कुंडलछवि छाई री । अनियारे अरुण नैन बोलत अति ललित बैन माधुरी मुसकानपर मदनहूँ लजाई री । ऐसे आनन्दकन्द निरखत मिटि जात द्वन्द छविपर बनमाल कान्हर गई हों बिकाई री ॥ १६ ॥

राग जंगला खमाची—पगिया शिर लाल हरी कलँगी उरचन्दन केशर खौर दिये । मनमोहन रामकुमार सखी अनुहार नहीं जब जन्म लिये ॥ पग नूपुर पीत कसे कछनी वर मालतीकी बनमाल हिये । विहरै सरयूतट कुंजनमें तहाँ राम सखे चित चोर लिये ॥ १७ ॥

राग ललित—छोटीसी धनुहियाँ पन्हैयाँ पगन छोटी छोटीसी कछोटी कटि छोटीसी तरकसी । लसत अंगुली झीनी दामिनीकी

छबि छीनी सुन्दर वदन शिर पगिया जरकसी ॥ चय अनुहरत विभूषण विचित्र अंग जोहे जिया आवत सनेहकी सरकसी। मूरतकी सूरत कही न परै तुलसीपै जाने सोई जाके उर करकै करकसी ॥ १८ ॥

राग आसावरी—सखी री मुनिसँग बालक काके। रतनारे नयना जाके ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा श्याम गौर तनु जाके। राम लखण कौशल्या जाये दशरथ नाम पिताके ॥ ऋषिको यज्ञ सँपूरण करके अब आये राजाके। आपदा सबकी हरी रामने कारज करन सियाके ॥ क्रीट मुकुट मकराकृति कुंडल धनुष बाण कर जाके। गौतम ऋषिकी नारि अहल्या तारी चरण छुवाके ॥ सब सखियाँ मिल सियाके स्वयंवर पूजा करत उमाके। तुलसिदास सेवक रघुनन्दन लेखे लिख विधनाके ॥ १९ ॥

राग कान्हरा—ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनन्दनी। मधुर वचन तोतरे त्रयतापमोचनी ॥ सोहत नवनीलवसन मन्दहास रुचिर दशन झलकत उर माल सकल देववंदनी। नूपुर पग वजत मानो सामवेद करत गान क्षुद्रघंट रुचिर नाद उर आनंदनी ॥ जगतमात सखिन संग विहरत बहु करत रंग, अग्रदास निरखत छवि भवनिकंदनी ॥ २० ॥

राग मलार—विहरत बागबामें देखे कुलभानवा। क्रीट मुकुट कंचनको झलकें मकर मनोहर कुंडल अलकें भाल तिलक केशरको राजे गल बैजन्ती माल बिराजै मधुर वचन कर लीने धनुष बानवा ॥ पीतांबर कटिपर कस काछे मन मुसकात फिरत घन आछे काकपक्ष शिर सुन्दर सोहें देखत राम लखन मन मोहे विधि शंकर इनहीको धरें ध्यानवा। कही सखी जब ऐसी

वानी अखिल लोकपति जीवन जानी शोभा सकल लोककी जगमें तारी शिला चरणकी रजने दर्शन लीजो तजो गृह मानवा ॥ कुसुमसमेत वामकर दोना छोटा कुँवर सखी अतिलोना या देखत सब भई सुखारी तुलसी मुदित विदेहकुमारी बहुरि चलीं गिरिजाके भवनवा ॥ २१ ॥

राग देश—मैया मोको बैरन धनुष भयो री । जन्मजन्मको परा शरासन सड़ घुन क्यों न गयो री ॥ देशदेशके भूपति आये तिलभर कछु न टरयो री । कहा कहौं मैं माइ बापको होते ही विष क्यों न दियो री ॥ उठे राम गुरुआज्ञा पाई सुमनसमान लियो री । तुलसिदास प्रभुके कर परशे खण्डोखण्ड भयो री ॥२२॥

राग परज—सखी रँगभीने दोउ राजकुमार । निरख सखी नैनन भर नीके शोभा अमित अपार ॥ भुजदण्डन चंदन मण्डन पर चमक चाँदनी चार । ललित कंठ रेखा विचित्र सखि उर कमलनके हार ॥ रंगभूति मणिजटित मंचपर बैठे सभामँझार । मानो रवि उदयाचलगिरिते निकस्यो तिमिर विदार ॥ खण्ड खण्ड ब्रह्मण्ड खण्डके भूपति जुरे अपार । कैसे धनुष उठायो तोरयो किनहु न पायो पार ॥ कटि निषंग कर धनुष बाण लिये हरन चले महिभार । लाला रामचन्द्रछवि ऊपर दास कान्हर बलिहार ॥ २३ ॥

राग केदार—मनमें मंजु मनोरथ होरी । सो हर गौरि प्रसाद एकते कौशिककृपा चौगुनी भोरी ॥ प्रणपरिताप चाप चिंता निशि शोच सकोच तिमिर नहिं थोरी । रविकुलरवि अवलोकि सभासर हितचित वारिजवन विकस्यो री ॥ कुँवर कुँवरि सब मंगलमूरति दोउ धरमधुरंधर धोरी । राजसमाज भूरिभागी जिन

लोचनलाहु लह्यो इकठोरी ॥ ब्याह उछाह रामसीताको सुकृत सकेल विरंचि रच्यो री । तुलसिदास जाने सो यह सुख जा उर वसत मनोहर जोरी ॥ २४ ॥

राग केदारो–लेहु री लोचनको लाहु । कुँवर सुन्दर साँवरो सखि सुमुखि सुन्दर चाहु ॥ खण्ड हरकोदंड ठाढ़े जानु लंबित वाहु । रुचिर उर जयमाल राजत देत सुख सब काहु ॥ चितै चित-हित सहित नखशिख अंग अंग निवाहु । सुकृत निज सियराम-रूप विरंचि मतिहिं सराहु ॥ मुदित मन वरवदन शोभा उदित अधिक उछाहु । मनो दूर कलंक कर शशि समर सूध्यो राहु ॥ तनय सुखमा अयन हाथ सरोज सुन्दर ताहु । बसत तुलसीदास उरपुर जानकीको नाहु ॥ २५ ॥

राग भूपाली–बन्यो सिय प्यारीको वनरा । कि वरवश मोह लेत मनरा ॥ मौर शिर सोनेको धारी । विविधमणि चित्र चमत्कारी । करन छवि मेहँदीकी भारी । महावर पगन चित्रकारी ॥ कंकनकी कमनीयता, कही कौनपै जाय । अलक झलक लख खलक ललक, आली पलक न परत 'सुहाय ॥ गले गज-मोतियनको गजरा । चलन चितवनगति चित चोरी ॥ बचनकी चरन लाज तोरी । गरव तज विवश भई गोरी ॥ धामके काम दाम छोरी । हँसन असी मुखम्यानते, सुधामुखी सितधार । काढ़ कामनी कतल करी इस दशरथराजकुमार ॥ रँगीली अँखियनमें कजरा ॥ २६ ॥

राग दादरा–आली सियावर कैसा सलोना । चितवनमें चित आन फँस्यो है देख सखी चल राजढटोना ॥ जनकशहरमें कहर मच्यो है भूल्यो खान पान सब सोना । श्रीरघुराज मौरवारे पर अब तो मोहिं फकीरिन होना ॥ २७ ॥

राग परज—बन्यो सखि दूलह अजब रँगीलो । दशरथकुँवर साँवरो अद्भुत सोहत परम छबीलो ॥ अनब्याही ब्याही सब ब्याही देखत रूप ठगीलो । रामसखे अब लगत प्राणसम पियरो अवध नवीलो ॥ २८ ॥

राग भूपाली कल्याण—देख सखी शिर पाग रामके कैसी सोही है ॥ मरकत गिरिपै चन्द्र चाह चपला जनु मोही है ॥ बड़ि बड़ि भुजा विशाल विभूषण लख तृण तोरी है । सुन्दर नयन विशाल वदनपर हाँसी थोरी है ॥ उर मोतियनकी माल कान कल कुंडल जोरी है । नाभि गँभीर उदर त्रिवली लख शारद बोरी है ॥ पीताम्बरकी कछनी काछे पीत पिछौरी है । रामगुलाम अनूप रूप लख मति मेरी थोरी ॥ २९ ॥

राग कान्हरा—देखो री छवि रामवदनकी । कोटि कोटि दामिन दर्पण द्युति निंदत कांति कपोलरदनकी ॥ नासा मृदु मुसकान माधुरी मन्द करी अति घुमड़ मदनकी । फब रह्यो क्रीट मुकुट अलकनपर मनो फांस दृग मीन फँसनकी ॥ चोरत चित भृकुटी दृग शोभा कुंडल झलक खौर चन्दनकी । रामसखे छवि कहि न जात जब सुधि न रहत लख वदन बसनकी ॥ ३० ॥

राग परज—तेरे रतनारे नयन लगे कोशलराजकिशोर । मिथिलापुरमें आय सबनके वरवश प्राण ठगे ॥ कछुक श्यामता लिये सिताई सुधा शृँगार पगे । रामसखे लखि जनु रतिपतिके सायकसे उर डगे ॥ ३१ ॥

राग खम्माच—चंचल दृग रतनारे चोट लगे सोई जाने । सुन दशरथके कुँवर लाड़िले कासों कहूँ को माने ॥ चितवत ही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने । रामलला यह प्रीति अलौकिक रामसखे पहिचाने ॥ ३२ ॥

राग कालिंगड़ा—तेरी नजरोंकी सैफली धार । सुनिये हो अवधछैल दशरथके, घायल किये तैं हजार ॥ तेरी चितवनमें मन आन फँस्यो है मिथिलापुरके बजार । मधुरअली पिया साँची कह देउ कब आओगे दिलदार ॥ ३३ ॥

पिया तोरी नजरिया जादूभरी । जिहिं चितवत तिहिं वश कर राखत सुन्दर श्याम राम धनुधरिया ॥ जुलफनयुत मुखचन्द प्रकाशे नासा मणि लटकत मनहरिया । युगलप्रिया मिथिलापुरबासिन फँसी जाल मनो रूप मछरिया ॥ ३४ ॥

राग भैरवी—जालम नयन मेरे नहिं रहिंदे । लालच लगे रूप रघुवरके कर आराम नहिं वाहिंदे ॥ बरज बरज रहीं अरज न मनदे हरज मरज सब सहिंदे । कर कर यत्न रत्न हरि हारे जाय जोरावरी खहिंदे ॥ ३५ ॥

राग बिलावल—कीट मुकुट शीश धरे मोतियनकी माल गरे, कानन कुंडल कर धनुष बाण सोहै री । अरुणनयन अनियारे अति ही लगत प्यारे दशरथदुलारे सबहीके मन मोहे री ॥ सुन्दर नासा कपोल अलक झलक मधुर बोल भालतिलक राजत बाँकी भौंहै री । लंबित भुज अति विशाल भूषण जड़ित जाल अंग अंग छवि तरंग कोटि मदन मोहै री ॥ पीताम्बर सोहै गात मन्द मन्द मुसकरात जनकभवन चले जात गति गयन्दको है री । कान्हर करुणानिधान मेरे सखि जिवनप्राण जानकी झरोखे बैठी रामको मुख जोहै री ॥ ३६ ॥

राग श्यामकल्याण—कुँवर दशरथके रंगभरे । कोटिकाम सुन्दर सुखमन्दर अंदर आन अरे ॥ रँगीली पगिया पेच धरे । रत्नजड़ित शिरपेंच पेच मोरे मनके बीच परे ॥ श्रवण

शुभ कुंडल सुघर धरे। अलकैं झलक कपोल लोल मन मोह लिये हमरे॥ बनी मोतियनकी माल गरे। कमलनैन सुखदैन रैनदिन मनते नाहिं टरे॥ करन कंकन रत्न जरे। श्यामवरण मनहरन रत्न हरी चरणशरण उबरे॥ ३७॥

राग खम्माच–राजकुमार लाल दशरथके या गलियन अबहीं जो गयो री। पहरे तनु भूषण फूलनके अँग अँग अद्भुत रूप छयो री॥ ठाढ़ी देख अटापर मोको खेलन मिस छिन एक ठयो री। गेंद उछाल तक्यो हरि मोतन घूँघटपट तब खोल दयो री॥ तब अपनाय लई मैं वा पिया हियमें प्रेम अँकूर भयो री। रामसखे भूली सुध बुध सब अँखियनमें अब राम रयो री॥

राग जंगला–लैव्यो री लोचनभर लाहू॥ पुष्पन वर्षत मुनिजन हर्षत सियारामको अजब विवाहू। मिथिलापुरकी सखी सयानी समझ समझ शिख देव सबकाहू॥ फिर कब राम जनकपुर ऐहैं हम नहिं नगर अयोध्या जाहू। तुलसीदास परस्पर दोउ मिल नृप दशरथ मिथिलापुरनाहू॥ ३९॥

राग देश–हँसि पूँछैं जनकपुरकी नारी नाथ कैसे गजके फंद छुड़ाये॥ गज और ग्राह लड़े जलभीतर दारुण द्वन्द मचाये। गजकी टेर सुनी रघुनन्दन गरुड़ छोड़ उठ धाये॥ शिवरीके बेर सुदामाके तंदुल रुचि रुचि भोग लगाये। दुर्योधनकी मेवा त्यागी साग विदुरघर खाये॥ इन्द्रने कोप कियो ब्रजऊपर छिनमें वारि वहाये। गोवर्धन नखपर धरि लीन्हों इन्द्रको मान घटाये॥ अर्जुनके स्वारथ रथ हाँक्यो महभारतमें गाये। भारतमें सुरहीके अंडा घंटा तोर बचाये॥ ले प्रहलाद खंभसे बाँध्यो राजन त्रास दिखाये। जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंहरूप

सुनाये ॥ छोरे न छूटै सियाजीको कँगना कैसे चाप चढ़ाये। कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाये ॥ जहँ जहँ भीर परी सन्तनपर तहँ तहँ होत सहाये। तुलसिदास सेवक रघुनन्दन आनँद मंगल गाये ॥ ४० ॥

राग दादरा—सखि लखन चलो नृपकुँवर भलो मिथिलापति-सदन सिया बनरो। शिर क्रीट मुकुट कटिमें पियरो हँसि हेरि हरत हमरो हियरो ॥ गल साजत है मोतियन गजरो अनियारी अँखियन सोहत कजरो। चित चाहत है उड़ जाय मिलूँ रघुराज छाँड सगरो झगरो ॥ ४१ ॥

राग जंगला—देखो री यह नयनन भर भर होत बरात बिदा दशरथकी ॥ गलिन गलिन गृह महल अटापर अरुणभाल कामिनि गावें री। याविध सियजीको ब्याहन आये कब रघुनाथ बहुरि आवें री ॥ धन्य अयोध्या धनि मिथिलापुर धन्य सिया जिन राम वरयो री। धन्य धन्य बालक दोउ बाँके धनि रानी दशरथपतनी री॥ खान पान बिसराय सभी झिलि बार बार सिय रामहिं देखें। इत लक्ष्मण उत भरत शत्रुहन भाग चले राजा दशरथके ॥ मणि बिन सर्प चकोर चन्द्र बिन जल बिन मीन कहु कैसे जिये री। तुलसिदास छवि बरण कहत है यह मूरति मेरे मनमें बसी री ॥ ४२ ॥

राग कालिंगड़ा—निरखत रूप सियारघुवरको छवि नहिं जात बखानी। आरति करत कौशल्या रानी कनकथार गजमा-णिक मुक्ता भरयो वेदविधि आनी ॥ मारयो मान सकल भूपनको महिमा वेद बखानी। तोरन धनुष जनकप्रण पूरण तीन लोक में जानी ॥ जनकरायकी लज्जा राखी परशुरामहित मानी।

सुरपुरनारि अवधपुरवासी करत विमल यश गानी ॥ नचत नवल अप्सरा मुदित मन वरष सुमन हरपानी । रत्नमंदिरमें रत्नसिंहासन बैठे सारँगपानी ॥ मात कौशल्या करत आरती हर्ष निरख मुसकानी । दशरथसहित अवधपुरवासी उचरत जै जै बानी ॥ तुलसिदास अविचल जोरी यह भक्त अभयपददानी ॥४३॥

राग कान्हरो–भुजनपर जननी वार फेर डारी । क्यों तोऱ्यो कोमल कर कमलन शंभुशरासन भारी ॥ क्यों मारीच सुवाहु महावल प्रवल ताड़का मारी । मुनिप्रसाद मेरे राम लखणकी विधि सब करवर टारी ॥ चरणरेणु लै नैनन लावत क्यों मुनिवधू उधारी । कहों धों तात क्यों जीत सकल नृप वरी विदेहकुमारी ॥ दुसह रोष मूरति भृगुपति अति नृपति-निकर छै कारी । क्यों सौंप्यो सारंग हार हिय करत बहुत मनुहारी ॥ उमँग उमँग आनंद विलोकत वधुनसहित सुत चारी । तुलसिदास आरती उतारत प्रेममगन महतारी ॥ ४४ ॥

राग ललित–रघुवर आज रहो प्यारे । जो तुमको वनवास दियो है करियो गमन सकारे ॥ रघुवर कहैं सुनौ मेरी जननी यह व्रत नेम हमारे । अव न रहूँ घर मात कौशला दशरथ वाचा हारे ॥ सीतासहित सुमित्रानंदन भये कुटुँवते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो चलत नयन जल डारे ॥ ४५ ॥

राग देश–विना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है । हमारी मातुकी करनी सकल दुनियाँसे न्यारी है ॥ विमुख जिन रामसों कीना ऐसी जननी हमारी है । लगी रघुवंशमें अगनी अवध सगरी उजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणीपै यही करता पुकारी है । सुना जव तातका मरना मनो वरछीसी मारी है॥परा

व्याकुल हुआ वेसुध दृगनसे नीर जारी है। धरूँ मैं ध्यान सूरतका मुझे तृष्णा जो भारी है॥ परूँ रघुनाथके पाऊँ यही तुलसी विचारी है॥ ४६॥

राग पीलू—मेरी सुध आन लियो रघुराया॥ चौदा वरस मोहिं कबलग वीतें मोहिं पल इक न रहाया। भरत शत्रुहन प्रजाके वासी रो रो हाल वजाया॥ राम लखण सिया वनको सिधारे भरत फिरे वौराया। तुलसिदास जिन हरि नहिं सुमिरे विरथा जन्म गँवाया॥ ४७॥

राग कालिंगड़ा—मैं कौन वन ढूँढ़ों री माई मेरे दोनों बालकवा॥ आगे आगे राम चलत हैं पाछे लक्ष्मण भाई। बीच जानकी अधिक बिराजे राजा जनककी जाई॥ अन्तर रोवे मात कौशल्या बाहर भारत भाई। राजा दशरथने प्राण तजे हैं कैकेयी मनमें पछताई॥ इन्द्र गरजे भादों वरसे पवन चलै पुरवाई। कौन वृक्षतले भीगत होंगे सिया लखण रघुराई॥ रावण मार राम घर आये घर घर वजत बधाई। मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलि जाई॥ ४८॥

राग विहाग—मिल जाना राम प्यारे नयना तरसें तेरे देखनको। वन प्रमोद मैं खड़ी पुकारूँ सुनियो रूपउजारे॥ सुन्दर श्याम कमलदललोचन मो नयननके तारे। रामसखे ज्यों जल विन मछली तलफत प्राण हमारे॥ ४९॥

राग विलावल—नृपतिकुँवर राजत मग जात। सुंदर वदन सरोरुहलोचन मरकत कनकवरण मृदु गात॥ अंसन चाप तूण कटि मुनिपट जटा मुकुट विच नूतन पात। फेरत पाणि सरोजनसायक चोरत चितहि सहज मुसकात॥ संग नारि

सुकुमारि सुभग शुठि राजत विनु भूषण नव सात । सुखमा निरख ग्राम वनितनके नलिन नयन विकसत मनु प्रात ॥ अंग अंग अगणित अनंग छबि उपमा कहत सुकवि सकुचात । सिय-समेत नित तुलसिदास चित वसत किशोर पथिक दोउ भ्रात॥५०॥

फिर फिर रामसिया तन हेरत । तृपित जान जल लेन लखण गये भुज उठाय ऊँचे चढ़ टेरत ॥ अवनि कुरंग विहँग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत । मगन न डरत निरख कर कमलन सुभग शरासन सायक फेरत ॥ अवलोकत मग लोक चहूँदिशि मनो चकोर चन्द्रमहि घेरत । तेजन भूरिभाग्य भूतल पर तुलसीराम पथिक पद जे रत ॥ ५१ ॥

राग कल्याण—पूछत ग्रामवधू मृदु वानी । गौर-श्याम अभिराम सुभग तनु यह तुम्हरे को लगत सयानी ॥ शील-स्वभाव लखण लघु देवर कर शर धनुष समंचल पानी । पियतन त्रितै दृष्टि नीचे कर सखिन विलोकि सिया मुसकानी ॥ को तुम कौन देशते आये जिहि पुर वसो सुमंगलखानी । चलत पियादे पायँ त्रान विन राजकुँवरि किन करो वखानी ॥ यह दोउ कुँवर अवधपतिके सुत मैं विदेहतनया जग जानी । ठान कुमति उर वसी सवतिपन राजसमय वन दीनो रानी ॥ सियके वचन सुनि सखी दुखित भई पल छिन मानो विरह गलानी । एक कहैं भल भूप न कीनो वन नहिं दीनो कीनो हानी ॥ रामलखणसिय-पंथकथा सुनि जाके हृदय वसी छिन आनी । सो भवसिंधु तरैं गोपद जिमि जन तुलसी यह करत वखानी ॥ ५२ ॥

राग पीलू—मेरी सुध आन लियो सिय प्यारी । मात केकयी वनवास दियो है प्राणोंसों अधिक पियारी ॥ कपटी मृगके पाछे

धायो लक्ष्मण कियो रखवारी । मैं तोहिं सिया बहुत समुझायो तैं एक न मानी हमारी ॥ रामचंद्र जब गिरे धरणिपर लक्ष्मण रोय पुकारी । तुलसिदास प्रभु वन वन ढूँढ़त विधनाकी गति न्यारी ॥ ५३ ॥

राग केदार—दीनहित बिरद पुराणन गायो । आरत बंधु कृपालु मृदुल चित जान शरण हौं आयो ॥ तुम्हरे रिपुको अनुज विभीषण बंश निशाचर जायो । सुन गुण शील स्वभाव नाथको मैं चरणन चित लायो ॥ जानत प्रभु दुख सुख द्रासनके ताते कहि न सुनायो । करि करुणा भरि नयन विलोकौ तव जानौं अपनायो ॥ बचन विनीत सुनत रघुनायक हँसकर निकट बुलायो । भेंट्यो हरि भरि अंक भरत जिमि लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिर परश अभय कियो जनपर हेतु दिखायो । तुलसिदास रघुवीरभजन कर कौन अभय पद पायो ॥

राग गौरी—कुटुम्ब तज शरण राम तेरी आयो । तज गढ़ लंक महल औ मन्दिर नाम सुनत उठ धायो ॥ भरी सभामें रावण बैठ्यो चरणप्रहार चलायो । मूरख अंध कह्यो नहिं मानै बार बार समुझायो ॥ आवत ही लंकापति कीनो हरि हँसि कंठ लगायो । जन्म जन्मके मिटे पराभव रामदरश जब पायो ॥ हे रघुनाथ अनाथके बंधू दीन जानि अपनायो । तुलसिदास रघुबरकी शरणा भक्ति अभयपद पायो ॥ ५५ ॥

राग धनाश्री—सत्य कहौं मेरो सहज स्वभाउ । सुनो सखा कपिपति लंकापति तुमसों कहा दुराउ ॥ सब विधि दीन हीन अति जड़मति जाको कतहुँ न ठाँउ । आये शरण भजौं न तजौं तिहि यह जानत ऋषिराउ ॥ जिनको हौं हित सब प्रकार चित

नाहिंन और उपाउ । तिनहितलगि धरि देह करों सब डरों न सुयश नशाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाय. कहत हौं सकल सभा पतियाउ । नाहिंन कोउ प्रिय मोहिं दाससम कपट प्रीति बहि जाउ ॥ सुनि रघुनाथके वचन विभीषण प्रेममगन मन चाउ । तुलसिदास तज आश त्रास सब ऐसे प्रभुको गाउ ॥ ५६ ॥

राग बिहाग—शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतु जल बन्ध रघुवीर आये । अष्टादश पदम योधा जुरे अति बली उड़त पग धूर रवि गगन छाये ॥ कोटि योधा जुरे जनकके नगरमें धनुष ना सक्यो उठाय कोई । तोर्यो धनुष गज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजाराम सोई ॥ बालिसो शूरमा योधा अतुलित बली ताहि सामर्थ्य ना जगतमाहीं । लग्यो जब बाण रघुनाथके हाथको गिरि पर्यो धरणि फिर उठ्यो नाहीं ॥ लै मिलो जानकी बात आसानकी वेग धावो नहीं विमल कीजै । सूरस्वामी रंग लाल लय लाय लै आयो है काल बचाय लीजै ॥५७॥

राग कालिंगड़ा—जय जय जय रघुवंशदुलारे । सुखसागर रविवंशउजागर लीला ललित मनोहर प्यारे ॥ यज्ञ सुधारन असुर सँहारन गौतमनारी उधारनहारे । जनक स्वयंवर पावन कीनो भृगुपतिगर्व निवारनहारे ॥ पितावचन सुनि राजकाज तजि अनुजसहित वनको पगु धारे । बालिबधन वैदेहीशोधन लंकापतिभुजभंजनहारे ॥ जगनायक प्रभु सन्तसहायक गावत वेद पुराण पुकारे । रामसखे रघुनाथरूप लखि युगयुग येही बिरद तिहारे ॥ ५८ ॥

राग गौरी—अब देखो रामध्वजा फहरानी ॥ हलकत ढाल फरकत नेजा गरद उठी असमानी । लक्ष्मण वीर बालिसुत

अंगद हनूमान अगवानी ॥ कहत मन्दोदरि सुन पिय रावण कौन कुमति सिय आनी । जिस सागरका मान करत है तापर शिला तरानी ॥ तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनकी करत बड़ाई । ध्रुवमंडलसे पकरि मँगाऊँ वह तपसी दोउ भाई ॥ हनूमानसम पायक उनके लक्ष्मण उनके भाई । जरत अग्निमें कूदि परत हैं शोच कभू नहिं पाई ॥ मेघनादसे पुत्र हमारे कुंभकर्णसे भाई । एक वेर सन्मुख होय लड़ेंगे युग युग होत बड़ाई ॥ इक लख पूत सवा लख नाती मौत आपनी आई । अग्रके स्वामी गढ़ लंका घेरी अजहुँ समझ अभिमानी ॥ ५९ ॥

राग श्याम कल्याण–सखी वह देखो रघुराई । गगन मगन पुष्पक विमानपर हैं बैठे सुखदाई ॥ संगमें फबी जनक-जाई । ज्यों सावन घनमाहिं दामिनी दमकत छवि छाई ॥ कपिनकी भीर संग भारी । हनूमान सुग्रीव विभीषण अंगद युवराई ॥ मात कौशल्या हरषाई । कंचनथार सुधार आरती करै सुमन भाई ॥ देवगण फूलन झर लाई । अटल राज सम्पति रघुवरकी सुर नर मुनि गाई ॥ याचकन मनमाँगी पाई । दत्त अशीश अघाय रतनहरि बलि बलि बलि जाई ॥ ६० ॥

राग पीलू–भरत कपिसे उऋण हम नाहीं । सौ योजन मर्याद सिंधुकी कूद गये छिनमाहीं ॥ लंका जार सियासुधि लाये गरब नहीं मनमाहीं । शक्ती बाण लग्यो लक्ष्मणके शोर भयो दलमाहीं ॥ द्रोणागिरि पर्वत लै आये भोर होन नहिं पाई । अहिरावणकी ध्वजा उखारी बैठ रह्यो मठमाहीं ॥ जो पै भरत हनुमत नहिं होते को लावे जगमाहीं । आज्ञाभंग कभू नहिं कीनी जहँ पठयो तहँ जाई ॥ तुलसिदास मारुतसुतमहिमा प्रभु अपने मुख गाई ॥ ६१ ॥

राग गौरी–अवध आनन्द भये घर आये हैं लक्ष्मण राम ॥ पहले मिले भरतजी भैया पाछे कैकेयी माय । घर घर मिले अयोध्यावासी पाछे कौशल्या हरिकी माय ॥ जवहीं राम सिंहासन बैठे कहो लंककी वात । मात कौशल्या पूछन लागीं कैसे तोड़े गढ़ लंक ॥ वाट वाट लक्ष्मणने रोक्यो अवघट रोक्यो राम। दरवाजा अंगदने रोक्यो कूदि पड़े हनुमान ॥ रावण मारि अहिरावण मारयो दियो विभीपण राज । गाय वजाय जानकी ल्याये गावत तुलसीदास ॥ ६२ ॥

राग प्रभाती–प्रातसमय उठि जनकनन्दनी त्रिभुवननाथ जगावे । उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावे ॥ उरझी माल गले मोतियनकी कर कंकन सुरझावे । घूँघरवारी अलकें झलकें पागके पेंच सँवारे ॥ कमलनयन मुख निरख रामको आनँद उर न समावे । कान्हरदास आश रघुवरकी हरप निरख गुण गावे ॥ ६३ ॥

राग पहाड़–दृगन वसी रघुवरकी छवि हो । शोभा सरस रही मोरी आली विहरत सरयूके तीर ॥ शीतल मन्द सुगंध झकोरा वहत है त्रिविध समीर । जानकीदास छवि देखि मगन भये शोभा श्यामशरीर ॥ ६४ ॥

छवि रघुवीरकी चितचोरन ॥ जरकसी पाग तिलक मृगमदको तापर कलँगी हीर । उर मणिमाल पीतपट राजत चलत मत्त गज धीर ॥ कृपानिवासके प्राणजीवन धन सुघहू न भूपण चीर ॥

राग कल्याण–देख सखि आज रघुनाथशोभा वनी । नील नीरद वरण वपुप भुवनाभरण पीत अम्बर धरन हरन द्युति दामनी ॥ सरयू मज्जन किये संग सज्जन लिये हेतु जनपर हिये

कृपा कोमल घनी। सजनी आवत भवन मत्त गजवर गवन लंक मृगपति ठवन कुँवर कौशल धनी॥ सघन चिक्कन कुटिल चिकुर विललित मृदुल करत विवरत चतुर सरस सुखमाजनी। ललित अहि शिशुनिकर मनो शशिसन समर लरत धरहर करत रुचिर जनु युग फनी॥ भाल भ्राजत तिलक जलजलोचन पलक चारु भ्रूनासिका सुभग शुक आननी। चिबुक सुन्दर अधर अरुण द्विज द्युति सुघर वचन गंभीर मृदुहास भवभाननी॥ श्रवण कुंडल विमल गंड मंडल चपल कलित कल कांति अति भाँति कछु तिन तनी। युगल कंचन मकर मनो विधुकर मधुर पियत पहचान कर सिंधुकीरति भनी॥ उरसि राजत पदिक ज्योति-रचना अधिक भाल सुविशाल चहुँ पास बनी गजमनी। श्याम नव जलदपर निरख दिनकर कला कौतुकी मनो रही घेर उड़गन अनी॥ मन्दरनपर खरी नारि आँनदभरी निरख वर्षहिं विपुल कुसुम कुंकुम कनी। दास तुलसीराम परम कल्याणधाम काम शतकोटि मद हरत छवि आपनी॥ ६६॥

राग सोरठ—अँखियाँ रामरूप रसभीनी। कोटि काम अभि-राम श्यामघन निरख भई लै लीनी॥ लोकलाज कुलकान न मानत नूतन नेह रँगीनी। रत्नहरी कैसे अब निकसे होगइ ज्यों जल मीनी॥ ६७॥

अँखियाँ रामरूप अनुरागी। श्यामवरन मनहरन माधुरी रति अति प्रिय लागी॥ सुन्दर वदन मदन शत शोभा निरख नेरख रस पागी। रत्नहरी पल टरत न टारी मरम प्रेमरँग रागी॥

राग पहाड़—अँखियाँ लगीं थारे रूपरँगीले॥ रामा क्या करूँ कछु वश ना मेरो बूड़ गैयाँ रसकूप। चेटक लाय लुभाय-

लियो मन चतुराईमें अनूप ॥ कृपानिवासी लगन ना छूटे सुनियो अवधके भूप ॥ ६९ ॥

राग कालिंगड़ा—बाँको हमारो यार सँवलिया । बाँकी लटपटी पीत लपेटे बाँकी बाँधे तलवार सँवलिया ॥ बाँके शीश जरतकी पगिया बाँके घोड़े असवार सँवलिया । रामसखेको मन हर लीनो दशरथसुत सरदार सँवलिया ॥ ७० ॥

राग खट—मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा रूप तिहारो । वन प्रमोदकी कुंजगलीमें चोऱ्यो चित्त हमारो ॥ मृदु मुसकान विलोचनसे कछु टोना मोपै डारो । रामसखे अव विन पिया देखे सव सुख लागत खारो ॥ ७१ ॥

राग जंगला—जय श्रीजानकीवल्लभलालहिं । मणिमन्दिर श्रीकनकमहलमें विपुल रँगीली वालहिं ॥ कोउ गावत कोउ वेणु वजावत कोउ मृदंग डफ तालहिं । युगलविहारी भावन दोऊ लालन लखि छवि भई निहालहिं ॥ ७२ ॥

यह दोउ चन्द वसैं उर मेरे । दशरथसुत औ जनकनन्दनी अरुण कमलकर कमलन फेरे ॥ चन्द्रवती शिर चमर ढुरावत आसपास ललनागण घेरे । वैठे सघन कुंज सरयूतट चंद्रकला तन हँसि हँसि हेरे ॥ ललित भुजा दिये अंस परस्पर झुकरहे केश कपोलन नेरे । रामसखे छवि कहि न परत जव पान पीकमुख झुक झुक गेरे ॥ ७३ ॥

क्या वुलाक अधरनपर हलकें । जवते दृष्टि परी है मेरी तवते छिन पल परत न पलकें ॥ किधों असमसर शर संधाने क्या सुखमापर सरवर झलकें । सियाराम पियामुख मयंकपर मनो अमीकी मूरत झलकें ॥ ७४ ॥

काहेको बाँधे तीर कमनियाँ। भौंहैं कमान वनी जो तिहारी नयन पलक दोउ शरकी अनियाँ॥ सन्तहृदय बन मनमृग ढूँढ़त चुन चुन मारत शब्द रसनियाँ। रामसखेको घायल कीनो वन आवे लै जाउ घर कनियां॥ ७५॥

राग बड़हंस मलार—तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथराज़दुलारे। नवल दुल्हैया अति सुकुमारी तुम योवन मतवारे॥ झूले देत डरत अति सुन्दर चोरत चित्त हमारे। सुन सखि वचन मधुर मुसकाने प्रियारूप मतवारे॥ मधुर प्रियाके गरे लाग अंव मिलो जानकीप्यारे॥ ७६॥

राग पीलू—झूलत सीताराम अवधपुर रंगमहलमें। मणि-कंचनको रच्यो है हिंडोरा झूलत पिया प्यारी परम सहिलमें॥ विमलादिक सखी रसिक झुलावें अतर लगावें परम चहिलमें। सरयू सखी दंपति अनुरागे पान लिये ठाढ़ी परम टहिलमें॥ ७७॥

राग मलार—सावन घन गरजै घूम घूम। वर्षत शीतल जल झूम झूम॥ कोयल कीर कोकिला बोलें हंस चकोर चहूँ-दिशि डोलें नाचत वन अति करत कलोलें मोर मोरनी चूम चूम। कंचनको हिंडोला झलके रेशमपाट मढ़े मखमलके चुन चुन कली बिछौना हलके कली कलीदल तूम तूम॥ चलत समीर त्रिविध पुरवाई मन्द सुगंध महाछबि छाई,झूलैं जनकसुता रघु-राई बहु बाल झुलावै ऊम ऊम। गावें राग रागिनी भामिन दमकि रही मानो छवि दामिन झोंका देत नारि गजगामिन पायल बाजै छम छम छम॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत इन्द्र निशान बजावत हर्षत दास गणेश युगलछवि निरखत छाय रह्यो सुख रूम रूम॥ ७८॥

राग वसन्त—खेलत वसंत राजाधिराज। देखत नभ कौतुक सुरसमाज॥ सोहैं अनुज सखा रघुनाथ साथ। झोरिन अवीर पिचकारी हाथ॥ बाजैं मृदंग डफ ताल वेनु। छिरके सुगन्ध भरे मलै रेनु॥ वरसत प्रसून वर विवुधवृन्द। जय जय दिनकरकुल कुमुदचन्द॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास। गावत फल कीरति तुलसिदास॥ ७९॥

नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतुकंत वसंत आई। नवल कुसुमावली फूल चहुँदिशि रही नवल मारुत नवल सुगन्ध छाई॥ नवल भूषण वसन पहन दोउ रँगमगे नवल पिया सखी निरखै सुहाई। नवल गुणरूप जोवन जडत नित नयो रतनहरि देत आशिष वधाई॥ ८०॥

गावो वसंत वसंतपंचमी मंगल दिन रघुराजकुँवरको। आवो सब मिल गंधर्व गुणीजन तान तरंग उमंग रंग भरको॥ वाजत ताल मृदंग झाँझ डफ प्रेमरंगी सारंगी करको। गाय गाय रघुनायक गुणगण रतनहरी हिये रामही हरषो॥ ८१॥

राग होरी दादरा—खेलत रघुराज आज रंगभरी होरी। राम लखण भरत शत्रुहन सुन्दर वरजोरी॥ कंचन पिचकारी करन केसर रँग बोरी। गह गह भर रँग भरत कह कह हो होरी॥ उडत रंग वर गुलाल भर भर भर झोरी। गारी दे दे अबीर डारत वरजोरी॥ रंगसों मृदंग बाजत डफकी घनघोरी। गाय गाय धाय धाय मींडत मुख रोरी॥ अवध नगर रंग वढ्यो सजनी निरखो री। रतनहरी रामराज युग युग न टरोरी॥ ८२॥

राग टोड़ी—अवध नगर सुंदर समाज लिये खेलत रामलखण होरी। बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ केशर रंग करी घन-

घोरी ॥ इतते भरत शत्रुहन आये उड़त गुलाल लाल भई खोरी। रतनहरी श्रीअवधबिहारी चिर जीवो सुंदर दोउ जोरी ॥ ८३ ॥

राग होरी–दशरथरा जछबीलो छैल होरी खेलत आवै री। राजकुमार हजार संग लिये रंग मचावै री ॥ कंचनकी पिचकारी करन लिये अति छवि पावै री। उड़त गुलाल लाल रँगभीने मन सो भावै री ॥ डफ मृदंगकी धुनि मिलि अद्भुत राग सुहावै री। रतनहरी श्रीअवधविहारी वलि वलि जावै री ॥ ८४ ॥

तेरी होरीकी झलक दशरथके लाल मेरे मनमें बसी निकसे न पलक। गाल गुलाल लाल रँग भीनी तेरी प्रेमभरी अँखियनकी ललक ॥ नयन विशाल ललित मतवारे तेरी अजब फँसी कुंडलमें अलक। रतनहरी जो सुनो तो कहूँ इक अरज हमारी है तुम्हरे तलक ॥ ८५ ॥

राग परज–लाल गुलाल जिन डारो। वरजोरी न करौ रघुनंदन छोड़ोजी हाथ हमारो ॥ झकझोरो न मुरक जाय वैयाँ छूटे जाय कचवारो। रामसखे थारे पैयां परत मेरो घूँघट पट न उघारो ॥ ८६ ॥

राग देश–रघुवर तुमको मेरी लाज। सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम बड़े गरीबनिवाज ॥ पतितउधारन विरद तिहारो श्रवणन सुनी अवाज। हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥ अघखंडन दुखभंजन जनके यही तिहारो काज। तुलसिदासपर किरपा करिये भक्तिदान देहु आज ॥ ८७ ॥

राग वसन्त–वन्दौं रघुपति करुणानिधान। जाते छूटे भवभेद ज्ञान ॥ रघुवंशकुमुदसुखप्रद निशेश। सेवत पदपंकज अज महेश॥ निजभक्तहृदय पाथोज भृंग। लावण्य वपुप अगणित

अनंग ॥ अति प्रबल मोहतम मारतंड । अज्ञान गहन पावक प्रचंड ॥ अभिमानसिंधु कुंभज उदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादि सर्पगण पन्नगारि । कन्दर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ भवजलधि पोत चरणारविन्द । जानकीरमण आनन्दकन्द ॥ हनुमंत प्रेमवापी मराल । निष्काम कामधुक गोदयाल ॥ त्रैलोकतिलक गुणगहन राम । कह तुलसिदास विश्रामधाम ॥ ८८ ॥

राग जंगला—चितहिं राम दीन ओर कोरकी कटाक्षहिं । चितहि दीन ओर कोर वार वार करि निहोर जान दीन विपति छीन साहिवी विचार लीन लाय लीन पाछहिं॥ गुला रोटि महीन मोटि खरा खोटि बड़ा छोटि तुससे नहिं कछू ओट हाथ है तिहारे। ना तिहाई रोजगार पेटहीसे ऐहे काज सुनिये गरीवनिवाज रामरदन उदर भरन मेरे राम राखो शरन यथा धेनु वाछहिं ॥ दासी दास खाय पाय श्वान औ मंजार जाय वारिउ कहार जहाँ आसन कर डासहिं । बचै जूठनको प्रसाद तोरा कुँवर सरा कुरा तो फिर सुधि लीजो मोरी इनके सब पाछहिं ॥ कौलते वेकौल हों तो सुनिये रघुवंशकेतु तो निकेतते निकार तुमको नहिं खोर राम खेद देव आछहिं । माँगो वलि चरण सेई वार वार हेई हेई नाहिं कछु लेहों देहों राखिये किनारे । ताते कर चरण जोर मोको नहिं और ठोर तुम तजि और जाऊँ कहाँ अवधके दुलारे॥ दास तुलसी टुकरखोर लाग रहों तुमरी ओर चोखट नहीं छूटे नाथ जो कोई झिझकारे । शीश झगर नाक रगर कल न परे तुम्हरे विगर छूटे नहीं नामनगर डगर श्याम प्यारे ॥ ८९ ॥

राग नट—हौं हरि पतितपावन सुने । हों पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल

साख निगमन भने । और पतित अनेक तारे जात कापै गने ॥ जौन नाम अजान लीने जान यमपुर मने । दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने ॥ ९० ॥

राग देश—करुणानिधान सुनियो जी कछु मेरो काज है भारी । प्रहलादके हितकारी खंभ फोर देह धारी नरसिंह नाम पाये सब सन्तनके मन भाये ॥ द्रौपदी जो भक्त तेरी जो आन सभामें घेरी चीरोंकी लाई ढेरी अब आई वार मेरी । तुम हो विपतिके साथी जल डूबत राख्यो हाथी अब मेरी वेर माधो कहिं सोये हो तो जागो ॥ गजकी जो अरज मानी यह विदित वेदबानी अब मेरी ओर देखो मोहिं अपनो कर लेखो । भक्तनके फंद काटे अघकोट कोट नाटे जी मैं वार वार टेरूं टुक नाट तेरी हेरूं ॥ कई कोटि पतित तारे जी मैं गिनत गिनत हारे महाराज अवधविहारी भज रामसखे बलि हारी ॥ ९१ ॥

जड़ यवन कवन सुरतारे ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब मायाविवश विचारे । तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥ ९३ ॥

राग झँझौटी—मैं किहि कहौं विपति अति भारी । श्रीरघुवीर दीनहितकारी ॥ मम हृदयभवन प्रभु तोरा । तहँ वसे आय वहु चोरा ॥ अति कठिन करें वरजोरा । माने नहिं विनय निहोरा ॥ तुम मोह लोभ हंकारा । मद क्रोध बोधरिपु मारा ॥ अति करैं उपद्रव नाथा । मरदैं मोहिं जानि अनाथा ॥ मैं एक अमित वटपारा । कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥ भागेहु नाहिं उवारा । रघुनायक करो सँभारा ॥ कह तुलसिदास सुन रामा । लूटैं तस्कर तव धामा ॥ चिंता यह मोहिं अपारा । अपयश ना होय तिहारा ॥ ९४ ॥

राग कालिंगड़ा—मैं तो पतित उधारो श्रीरामा । मेरे दुःख निवारो श्रीरामा ॥ मैं तो वावलदे घर नंढडी । गलहार हमेल सोहे कंढड़ी ॥ प्यारे वाझों नहीं जीया मैं ठंढड़ी । मैं तो वावलदे घर भोलड़ी ॥ आगे जंज पिछे मेरी डोलड़ी । वाझों नहिं मैं सोंहदड़ी ॥ हत्थी छल्ले छापां वाहीं हो चूडीयां । प्यारे वाझों सभी गल्लां हो कूडीयां ॥ लालन मिले तों सभी गल्लां पूरीयां । शाहु सैन फिरै जी उतावला ॥ पहली चोट न थीं दे त्रिट्टेहो चावला ॥ कोई ढंग मिलें साई हो रावला ॥ ९५ ॥

हम रघुनाथ गुणनके गवैया । ताना रीरी ताना रीरी तानुम तन नाना नाना नहिं जाने ताता थैया ॥ भैरूँ ध्रुपद कवित्त तिलाना नाहिंन स्याल सिलैया । गीत संगीत प्रबंध त्रिवत जित इनके नाहिं गढ़ैया ॥ छूम अथाई काल कलाउँत नाहिंन भांड भवैया । रतनहरी रघुनाथभजन विन काहूसों राम रमैया ॥

राग आसावरी–लाज न लागत दास कहावत। सो आचरण विसार शोच तज जो हरि तुमको भावत॥ सकल संग तज भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मोसम मन्द महाखल पामर कौन जतन तिहिं पावत॥ हरि निर्मल मलग्रसित हृदय असमंजस मोहिं जनावत। जिहिं सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत॥ जाकी शरण जाय कोविद दारुण त्रयताप बुझावत। तहौं गये मद मोह लोभ अति स्वर्गहु मिटत नशावत॥ भवसरिताको नाव सन्त यह कह औरन समुझावत। हौं तिनसों हरि परम वैर कर तुमसों भलो मनावत॥ नाहिंन और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत। राख शरण उदारचूडामणि तुलसिदास गुण गावत॥ ९७॥

कौन जतन विनती करिये। निजआचरण विचार हार हिय मान जान डरिये॥ जिहिं साधन हरि द्रवो जान जन सो हठ परिहरिये। जाते विपतिजाल निशिदिन दुख तिहिं पथ अनुसरिये॥ जानत हूँ मन कर्म वचन परहित कीने तरिये। सो विपरीत देख परसुख विन कारण ही जरिये॥ श्रुति पुराण सबको मत एही सतसंग सुदृढ धरिये। निज अभिमान मोह ईर्षावश तिसे न आदरिये॥ सन्तत सो प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि तरिये। कहो अव नाथ कौन वलते संसार शोक हरिये॥ जब कब निज करुणा स्वभावते द्रवो तो निस्तरिये। तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पच पच मरिये॥ ९८॥

राग भैरवी–कब ढुरिहौ रघुनाथ हमारे। जैसे ढुरे भक्त प्रह्लादहिं खंभ फारि हिरणाक्ष सँहारे॥ जैसे ढुरे हौ राजा वलिके देत दरश नितप्रति द्वारे। जैसे ढरे हौ भक्त विभीषण लंका जाय

सो रावण मारे ॥ जैसे ढुरे हौ द्रुपदसुतापै खैंचत चीर दुशासन हारे । ऐसे ढुरिहो दास तुलसीपर हमसे पतित अनेकन तारे ॥९९॥

कबित्त—जाहि हाथ धनुप चढ़ायो जाय सीतापति,जाही हाथ रावण सँहारी लंक जारी है । जाही हाथ तार्‌यो औ उबार्‌यो हाथ हाथी गहि, जाही हाथ सिंधु मथि लक्ष्मी निकारी है ॥ जाही हाथ गिरिको उठाय गिरिधारी भयो, जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नागकारी है । हौं तो हूँ अनाथ हाथ जोर कहों दीना-नाथ, वाही हाथ मेरो हाथ गहवेकी वारी है ॥ १०० ॥

सवैया—आगम वेद पुराण वखानत कोटिक मारग-जायँ न जाने । जे मुनि ते पुनि आपुही आपको ईश कहावत सिद्ध सयाने । धर्म सभी कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने । को करि शोच मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ विकाने ॥१०१॥

राग धनाश्री—हरिजू मेरो मन हठ न तजै । निशिदि नाथ देउँ शिख वहु विधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजै । होय अनुकूल विसा शूल सव पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशिवासर हरि पदत्राण बजै । तदपि अधम विचरत तिहिं मारग अजहुँ न मूढ लजै ॥ हौं हार्यो वहु यत्न विविध कर अतिशय प्रवल अजै । तुलसिदास वश होत तवै जव प्रेरक प्रभु वरजै ॥ १०२ ॥

राग सोरठ—जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सव हाते कर राखत रामसनेह सगाई ॥ नेह निवाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई । ऐसेहु पितुते अधिक गीधपर ममता गुरु गरुवाई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया विसराई । रण पर्‌यो वंधु विभीपणहीको शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु-

गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहँ पहुनाई । तव तहँ कही शवरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥ सहजस्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिर नाई । केवट मीत कहत सुख मानत वानर बन्धु बड़ाई ॥ प्रेम कनौड़ो रामसों प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई । तेरो ऋणी हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानि है को सेवकाई॥तुलसीराम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई। तौं तोहि जन्मि जाय जननी जड़ तनुतरुणता गँवाई ॥ १०३ ॥

ऐसी मूढता या मनकी । परिहरि रामभक्ति सुरसरिता आश करत ओसकनकी ॥ धूमसमूह निरख चातक ज्यों तृषित जान गति बनकी । नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचनकी ॥ ज्यों गज काँच विलोकि शेर जड़ छाँह आपने तनकी । टूटत अति आतुर अहारवश क्षति बिसार आननकी ॥ कहँलग कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हो गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निजपनकी ॥ १०४ ॥

राग जैजैवन्ती—प्रीतिकी रीति रघुनाथ जाने । जाति कुल वरणको नाहिं माने ॥ प्रीति प्रहलादकी जान करुणानिधी खंभसों प्रगट नख उदर भाने । दौड़ गजराजके फंदको काटने गरुडको छोड़ आये उलाने ॥ अधम कुल भीलनी वेर दिये रामको पाय मन मगन अतिही सराने । गीधपक्षी महा अधम आमिषभखी ताहि तनु परश सुरपुर पठाने ॥ जानकी कारणे जोरि कपिभालुदल कोटिसी लंक गढ़ कोट हाने । वैरको भाव उत्साह हरिमिलनको अन्तकी वेर अँगमें समाने ॥ भक्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं यही तो निगम आगम बखाने । दास कान्हर यही रीति रघुनाथकी आपसे भक्तको सरस माने ॥ १०५ ॥

राग टोड़ी—और कौन माँगिये को माँगवो निवारिहै । तुम विना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै ॥ धर्म धाम राम काम-कोटि रूप रूरो । साहव सब विधि सुजान दान खड्ग सूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सबके द्वार वाजै । कुसमय दशरथके दानि तू गरीब निवाजै ॥ सेवा विन गुणविहीन दीनता सुनाये । जे जे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसिदास याचक रुचि जान दान दीजिये । रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजिये ॥

राग प्रभाती—साँचे मनके मीता रघुवर साँचे मनके मीता । कब शवरी काशीको धाई कब पढ़ि आई गीता ॥ जूँठे फल ताके प्रभु खाये नेक लाज नहिं कीता । लंकापतिको गर्व हन्यो है राज्य विभीषण दीता ॥ सुग्रीवहि सखा कियो रघुनन्दन वानर किये पुनीता ॥ सफल यज्ञ मुनिजनके कीने सब भूपन वल जीता ॥ भसम रमाई कहाँ अहल्या गणिका योग न लीता । तुलसिदास प्रभु शुद्ध चित्त लख सबहिं मोक्षपद दीता ॥ १०७ ॥

राग भैरव—ऐसी हरि करत दासपर प्रीति । निजप्रभुता विसार जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन वाँधे सुर असुर नाग नर प्रवल कर्मकी डोरी । सो परब्रह्म यशोमति वाँध्यो सकत नहीं तनु छोरी ॥ जाकी मायावश विरंचि शिव नाचत पार न पायो । करतल ताल वजाय ग्वाल युवतिनसों नाच नचायो ॥ विश्वंभर श्रीपति त्रिभुवनपति वेदविदित यह लीख । वलिसों कछु न चली प्रभुता वरु हो द्विज माँगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्ममरण दुखभार । अंवरीष हित लाग कृपानिधि सो जन्म्यो दश वार ॥ योग विराग ध्यान जप तप कर जिहिं खोजत मुनि ज्ञानी । वानर भालु चपल पशु पामर

नाथ तहाँ रति मानी ॥ लोकपाल यमकाल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी। तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार बेंत कर धारी ॥१०८॥

राग जैतश्री—श्रीरघुवीरकी यह बानि। नीचहूँसों करत नेहसों प्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कानि। लियो सो उर लाय सुत ज्यों प्रेमको पहिचानि ॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि। जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल निजपानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुणखानि। खात ताके दिये फल अति रुचि बखान बखानि ॥ रजनिचर अरु रिपु बिभीषण शरण आयो जानि। भरत ज्यों उठि ताहि भेंटत देहदशा भुलानि ॥ कौन सौम्य सुशील वानर जिनहिं सुमिरत हानि। किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥ राम सहज कृपालु कोमल दीनहित दिनदानि। भजहिं ऐसे प्रभुहिं तुलसी कुटिल कपट न ठानि॥१०९॥

ऐसी कौन प्रभुकी रीति। बिरदहेतु पुनीत परिहरि पामरनपर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाय। मातकी गति दियो ताहि कृपालु यादवराय ॥ काममोहित गोपिकन पर कृपा अतुलित कीन। जगतपिता विरंचि जिनके चरणकी रज लीन ॥ नेमते शिशुपाल दिनप्रति देत गिन गिन गार। कियो लीन सो आपमें हरि राजसभामँझार ॥ व्याधचरणहिं बाण मारयो मूढमति मृग जानि। सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट कर निजबानि ॥ कौन तिनकी कहै जिनके सुकृत औ अघ दोय। प्रगट पातकरूप तुलसी शरण राखे सोय ॥ ११० ॥

राग सोरठ—ऐसे राम दीनहितकारी। अति कोमल करुणानिधान बिन कारण परउपकारी ॥ साधनहीन दीन निजअघ-

वश शिला भई मुनिनारी । गृहते गवनि परशि पद पावन घोर शापते तारी ॥ हिंसारत निषाद तामसवपु पशुसमान वनचारी । भेट्यो हृदय लगाय प्रेमवश नहिं कुल जाति विचारी ॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपतिसुत कहि न जाय अति भारी । सकल लोक अवलोकि शोकहत शरण गये भय टारी ॥ विहँगयोनि आमिष अहारपर गीध कवन व्रतधारी । जनकसमान क्रिया ताकी निज-कर सब भाँति सँवारी ॥ अधम जाति शवरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी । जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥ कपि सुग्रीव बंधुभय व्याकुल आयो शरण पुकारी । सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो वालि सहि गारी ॥ रिपुको बंधु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी । शरण गये आगे होय लीनो भेट्यो भुजा पसारी ॥ अशुभ होय जिनके सुमिरणते वानर रीछ विकारी । वेदविदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहँलग कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी । कलिमलग्रसित दास तुलसीपर काहे कृपा विसारी ॥१११॥

ऐसो को उदार जगमाहीं । विन सेवा जो द्रवे दीनपर रामस-रिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग जतन कर नहिं पावत मुनि ज्ञानी । सो गति देत गीध शवरीको प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो सम्पति दशशीश अर्पकर रावण शिवपै लीनी । सो सम्पदा विभीषणको अतिसकुचसहित हरि दीनी ॥ तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहत मन मेरो । तो भज राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो ॥ ११२ ॥

राग जंगला—रे मन राम भरोसो भारी । पानीपर जिन पाहन तारे और अहल्या तारी ॥ यमके बाँधे पतित छुड़ाये ऐसे परउप-

कारी । सबकी खबर लेत दुखसुखकी अर्जुनके हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु वेद पुकारें महिमा सुनी तिहारी । मिहरतदास प्रभु शरण गहेकी राखो लाज हमारी ॥ ११३ ॥

ऐसो श्रीरघुवीरभरोसो । वारि न बोरि सको प्रहलादहिं पावक नाहिं जरोसो ॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश बहुभाँति सतायो हठकर वैर करोसो । मार्‍यो चहै दास नरहरिको आपै दुष्ट मरोसो ॥ ॥ ऐसो० ॥ मीराके मारनके कारन पठयो जहर खरोसो । रामनाम अमृत भयो ताको हँस हँस पान करोसो ॥ ऐसो० ॥ द्रुपदसुताको चीर दुशासन मध्यसभा पकरोसो । ऐंचत ऐंचत भुजबल हारे नेक न अँग उघरोसो ॥ ऐसो० ॥ भारतमें भुरुहीके अंडा कोटिन दल बिखरोसो । रामनाम जब पक्षी टेर्‍यो घंटा टूट परोसो ॥ ऐसो० ॥ ऐसो जार्‍यो लंक पवनसुत देखत पुर सगरोसो । ताके मध्य विभीषणको गृह रामकृपा उबरोसो ॥ ऐसो० ॥ रावणसभा कठिन प्रण अंगद हठ करि हरि सुमिरोसो । मेघनादसम कोटिन योधा टारे पग न टरोसो ॥ ऐसो० ॥ तुलसिदास विश्वास रामको का कर नारि नरोसो । और प्रभाव कहाँलग बरणौं ज्यहि यमराज डरोसो ॥ ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो ॥ ११४ ॥

राग काफी—जानकीनाथ सहाय करैं जब कौन बिगार करै नर तेरो । सूरज मंगल सोम भृगूसुत बुध अरु गुरु बरदायक तेरो ॥ राहु केतुकी नहीं गम्यता शनीचर होत उचेरो । दुष्ट दुशासन निबल द्रौपदी चीर उतार कुमन्तर प्रेरो ॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ़गये चीरके भार घनेरो । गर्भमें राख्यो परीक्षित राजा अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ॥ भारतमें भुरुहीके अंडा तापर गजको घंटा गेरो । जाकी सहाय करी करुणानिधि

ताके जगतमें भाग बड़ेरो ॥ रघुवंशी सन्तन सुखदाई तुलसिदास चरणनको चेरो ॥ ११५ ॥

राग झँझोटी—हे हरि कस न हरो भ्रम भारी । यद्यपि मृषा सत्य भासे जबलग नहिं कृपा तुम्हारी ॥ अरथ अविद्यमान जानिय संसृति नहिं जाय गुसाईं । विन बाँधे निजहठ शठ परवश परयो कीरकी नाईं ॥ सुपने व्याध विविध बाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई । वैद्य अनेक उपाय करैं जागे विन पीर न जाई ॥ श्रुति गुरु साधु स्मृति सम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी । तिहि विन तजे भजे विन रघुपति विपति सकै को टारी ॥ बहु उपाय संसार तरनको विमल गिरा श्रुति गावै । तुलसिदास मैं मोर गये विन जिय सुख कभू न पावै ॥ ११६ ॥

अस कछु समुझि परै रघुराया । विन तव कृपा दयालु दास-हित मोह न छूटै माया ॥ वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण भव पार न पावै कोई । निशि गृहमध्य दीपकी बातन तम निविरत नहिं होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखित अति अशनहीन दुख पावै । चित्र कलपतरु कामधेनु गृह लिखे न विपति नशावै ॥ षटरस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि वखानै । विन बोले संतोषजनित सुख खाय सोई पै जानै ॥ जबलग नहिं निज-हृदय प्रकाश रु विषयआश मनमाहीं । तुलसिदास तबलग जग भरमत सुपनेहू सुख नाहीं ॥ ११७ ॥

राग बड़हंस—जगके रुसेते क्या भयो जाके राम हें रखवार हो । अब देख प्यारे खंभमें नरसिंह होकर अवतरे ॥ हिरण्याकशिपुको मारके प्रह्लाद रक्षा करे हो । अब देख प्यारे सभामें जहँ कपटके पाँसे परे ॥ द्रौपदीको चीर बढ़ायके खैंचत दुशासन हरे हो । अब देख प्यारे समरमें तैयार दोऊ दल खरे ॥ चिगना

बचे भरदूलके गजघंट वापर परे हो। अब देख प्यारे लंकामें संकट विभीषणको परे॥ तुलसीदास सराहत रामको जिनको अवध मंगल भरे हो॥ ११८॥

राग बिलावल—केशव कहि न जाय क्या कहिये। देखत तव रचना विचित्र हरि समझ मनहिं मन रहिये॥ शून्य भीतपर चित्र रंग नहिं बिन तनु लिखा चितेरे। धोये मिटै न मरिय भीत दुख पाइय यह तनु हेरे॥ रविकर नीर बसै अति दारुण मकररूप तिहिमाहीं। वदनहीन सो ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं॥ कोउ कह सत्य झूँठ कह कोऊ युगल प्रबल कर मानै। तुलसिदास परिहरे तीन भ्रम सो आपन पहिचानै॥ ११९॥

राग भैरव—रामनाम जप जिय सदा सानुराग रे। कलि न विराग योग याग तप त्याग रे॥ रामनाम सुमिरण सब विधिहीको राज रे। रामको विसारिवो निषेध शिरताज रे॥ रामनाम महामणि फणि जग जाल रे। मणि लिये फणि जिये व्याकुल बिहाल रे॥ रामनाम कामतरु देत फल चार रे। कहत पुराण वेद पंडित पुकार रे॥ रामनाम प्रेम परमारथको सार रे। रामनाम तुलसीको जीवन अधार रे॥ १२०॥

राम जप राम जप राम जप बावरे। घोर भव नीरानिधि नाम निज नाव रे॥ एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साध रे। ग्रसे कलि रोग योग संयम समाध रे॥ भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे। रामनामहीसे अंत सबहीको काम रे॥ जग नभ वाटिका रही है फैल फूल रे। धुआँकेसे धौरहर देखि तू न भूल रे॥ रामनाम छाँड जो भरोसो करै और रे। तुलसी परोसो त्याग माँगे कूर कौर रे॥ १२१॥

सुमिर सनेहसों तू नाम रामरायको । संवर निसंवरको सखा असहायको॥भाग है अभागेहूँको गुण गुणहीनको । गाहक गरीबको दयालु दानि दीनको ॥ कुल अकुलीनको सुन्यो जो वेद साख है । पाँगुरेको हाथ पाँव आँधरेको आँख है ॥ माई वाप भूँखेको अधार निराधारको । सेतु भवसागरको हेतु सुखसारको ॥ पतितपावन राम नामसों न दूसरो । सुमिरि सुभूमि भयो तुलसीसो ऊसरो ॥ १२२ ॥

रामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज विराजै । शंकरहृदय भक्तिभूतलपर प्रेम अक्षैवट छाजै ॥ श्यामचरण पदपीठ अरुण तल लसत विशद नख श्रेनी । जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिल चालि ललित त्रिवेनी ॥ अंकुश कुलिश कमल धुंज सुंदर भँवर तरंग विलासा । मज्जहिं सुर सज्जन मुनिजनमन मुदित मनोहर वासा ॥ विन विराग जप योग यागव्रत विन तीरथ तनु त्यागे । सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागे ॥ १२३ ॥

राग जैजैवंती–राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है। मायाको संग त्याग हरिजूकी शरण लाग जगत सुसमान मिथ्या झूँठो सब साज है ॥ सुपने ज्यों धन पछान काहेपर करत मान बारूकी भीत तैसे वसुधाको राज है । नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरो गात छिनछिन कर गयो काल जैसे जात आज है ॥ १२४ ॥

राग कालिंगड़ा–राम सुमिर ले सुमिरन कर ले को जानै कलकी । खबर ना या जगमें पलकी ॥ रैनि अँधेरी निर्मल चन्दा ज्योति जगे झलकी । धीरे धीरे पाप कटत हैं होत मुक्ति तनकी॥

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर वातैं छलकी। शिरपै गठरी धरी पापकी कौन करै हलक्की ॥ भवसागरके त्रास कठिन हैं थाह नहीं जलकी। धर्मी धर्मी पार उतरि गये डूबे अधम जनकी ॥ कहत कबीर सुनौ भाई साधौ काया मंडलकी । भज भगवान आन नहिं कोई आशा रघुवरकी ॥ १२५ ॥

राग पहाड़—सब मतको मत यह उपदेशू । मूलमंत्र यह उचित सिखावन भज मन सुत अवधेशू ॥ अहिपुर नरपुर देवलोकपुर रंक फकीर नरेशू । जो जापक सियरामको सो भवसिंधु तरेसू ॥ जप तप संयम दान नेम मख तीरथ अमित करेसू। तुलहिं न सीताराम नामसम वेद पुराण कहेसू ॥ गावत शंभु आदि नारद मुनि व्यास विरंचि गणेशू । यह सब गावत नाममहातम कागभुसुंडि खगेशू ॥ नाम प्रतीत राख हिरदैमें उमासों कह्यो महेशू। तुलसिदास यह नामकि महिमा कलिमल सकल हरेसू ॥ १२६ ॥

राग धनाश्री—राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई। रामनाम सुमिरन विन बूड़त अधिकाई ॥ वनिता सुत देह गेह सम्पति सुखदाई। इनमें कछु नाहिं तेरो काल अवधि आई ॥ अजामील गणिका गज पतित कर्म कीने। तेऊ उतर पार परे रामनाम लीने ॥ शूकर कूकर योनि भ्रम्यो तऊ लाज न आई। रामनाम छाँड अमृत काहे विष खाई ॥ तज भर्म कर्म विधिनिषेध रामनाम लेही। गुरुप्रसाद जन कबीर रामकर सनेही ॥ १२७ ॥

राग विभास—भज मन रामचरण सुखदाई। जिहि चरणनसे निकसी सुरसरी शंकरजटा समाई ॥ जटाशंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई। जिहिं चरणनकी चरणपादुका

भरत रह्यो लवलाई ॥ सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि-नाव चलाई । सोई चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ सोई चरण गौतम ऋषिनारी परश परमपद पाई । दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई ॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगासँग धाई । कपि सुग्रीव वन्धुभय व्याकुल तिन जयछत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई ॥ तुलसिदास मारुत सुतकी प्रभु निजमुख करत वड़ाई ॥ १२८ ॥

राग परज—रे मन क्यों न भजौ रघुवीर । जाहि भजत ब्रह्मादिक सुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्यामवर्ण मृदु गात मनोहर भंजन जनकी पीर । लक्ष्मणसहित सखा सँग लीने विचरत सरयूतीर ॥ ठुमक ठुमक पग धरत धरणिपर चंचल चित हो वीर । मन्द मन्द मुसकात सखनसों वोलत वचन गँभीर ॥ पीतवसन दामिनि द्युति निन्दत करकमलन धनु तीर । रामदास रघुनाथ भजन विन धिक् धिक् जन्म शरीर ॥ १२९ ॥

भज मन रामचरण दिनराती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशिदिन भजन करत अलसाती ॥ विरथा जन्म गँवायो मूरख सोहत रह्यो दिनराती । रामसियाको नाम अमीरस सो काहे नहिं खाती ॥ संवत् सोरहसौ इकतीसा जेठ मास छठि स्वाती । तुलसिदास यह विनय करत है प्रथम अरजकी पाती ॥ १३० ॥

राग सोरठ—रे मन रामसों कर प्रीत । श्रवण गोविंद गुण सुनो अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधुसंगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत । कालव्यालज्यों परयो डोलै मुख पसारे मीत ॥

आजकल पुनि तोहिं असिहै समझ राखो चीत । कहै नानक राम भज ले जात औसर बीत ॥ १३१ ॥

जाको प्रिय न राम वैदेही । सो छाँडिये कोटि बैरीसम यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भरत महतारी । बलि गुरु व्रजवनितन पति त्यागे भईं जगमंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँलौ । आंजन कहा आँख जिहिं फूटे बहुतो कहों कहांलौ ॥ तुलसी सो सबभांति परमहित पूज्य प्राणते प्यारो । जासों होय सनेह रामपद सोइ है हितू हमारो ॥१३२॥

राग धनाश्री—सुन मन मूढ सिखावन मेरो । हरिपदविमुख काहू न लह्यो सुख शठ यह समझ सबेरो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो । भ्रमत श्रमत निशि दिवस गगनमें तहँ रिपु राहु बड़ेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश घनेरो । तजे चरण अजहूँ न मिटत नित बहिबो ताहू केरो॥तुलसिदास सब आश छाँडकर होउ रामको चेरो॥१३३॥

मेरी प्रीति गोविंदसों ना घटे । मैं तो मोल महँगे लीया जीसटें ॥ चित्त सुमिरण करूं नयन अवलोकनो श्रवण वाणी सुयश पूर राखूं । मन सु मधुकर करूं चरण हिरदे धरूं रसने अमृत रामनाम भाखूं ॥ साधुसंगति विना भाव नहिं ऊपजे भाव विन भक्ति नहिं होय तेरी । कहत रामदास इक विनती प्रभुसों पैंज राखो राजाराम मेरी ॥ १३४ ॥

राग भैरव—जाग जाग जीव जड़ जोहै जग यामिनी । देह गेह खेह जान जैसे घनदामिनी ॥ सोवत सुपने सहै संसृति संताप रे । बूड्यो मृगवारि खायो जेवरीके साँप रे ॥ कहै वेद बुध तू तो बूझ मनमाहिं रे । दोष दुख सुपनेके जागेही पै जाहिं

रे ॥ तुलसी जागेते जाय ताप तिहूँ ताय रे । रामनाम शुचि रुचि सहज स्वभाय रे ॥ १३५ ॥

मोहजनित मल लाग विविधविध कोटिन जतन न जाई । जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥ नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषयसँग लागे । हृदय मलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे ॥ परनिन्दा सुन श्रवण मलिन भये वचन दोषपर गाये । सब प्रकार मल भार लाग निज नाथ चरण बिसराये ॥ तुलसिदास व्रतदान ज्ञान तप शुद्धिहेतु श्रुति गावै । रामचरण अनुराग नीर बिन मल अति नाश न पावै ॥ १३६ ॥

रामकृष्ण कहिये उठि भोर । इत अवधेश उतै व्रजजीवन इत धनुधर उत माखनचोर ॥ इनके चमर छत्र शिर सोहैं उनके लकुट मुकुट कर जोर । इनसँग भरत शत्रुहन लक्ष्मण बलदाऊ सँग नन्दकिशोर ॥ इनसँग जनकलली अति सोहै उत राधासँग करत कलोर । इन सागरमें शिला तरायो उन गोवर्धन नखकी कोर ॥ इन मारयो लंकापति रावण उन मारयो कंसा वरजोर । तुलसीके यह दोऊ जीवन दशरथसुत नन्दकिशोर ॥ १३७ ॥

राग ललित—गा ले रे गोविंद गुना रे । ऐसो समय बहुरि नहिं पावे फिर पछतावेगा मूढ़ मना रे ॥ पानीकी बूँदसे पिंड प्रगट कियो नयन नासिका मुख रसना रे । ताको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिरयो एक छिना रे ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई भर ज्वानी बहु रूप बना रे । वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोहके फंद घना रे ॥ अधम तरे अपराधी तारे जो जो आये हरिशरना रे । ना माने तो साख बताऊं अजामील गणिका

सधना रे ॥ धन यौवन अंजलिको जलज्यों घटत जात है छिना-छिना रे। जो सुख चहै भजै रघुनन्दन नामदेव आयो हरिशरना रे॥

क्यों सोया गफलतका माता जागो रे नर जाग रे ॥ या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे। या जागे कोई संत पियारा लगी रामसों डोर रे ॥ ऐसी जागन जाग पियारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे। ध्रुवको दीनी अटल पदवी दिया प्रहलादको राज रे ॥ हरि सुमिरै सोई हंस कहावै कामी क्रोधी काग रे। तनुका चोला भया पुराना लगा दागपर दाग रे ॥ मन है मुसाफिर तनुकी सरायँ विच तू कीता अनुराग रे। रैनि बसेरा करले डेरा उठ चलना परभात रे ॥ साधुसँगति सतगुरुकी सेवा पावै अचल सुहाग रे। निजानन्द भज राम गुमानी जागन पूरण भाग रे ॥ १३९ ॥

राग पूरबी—अपनी ओर निबाहिये वाकी वाहू जाने। भली बुरी कछु जानत नाहीं कर्म लिख्यो सो पाइयो ॥ १४० ॥

राग देश—राम ज्यों राखै त्यों रहिये ॥ जो प्रभु करै भलो कर मानो मुखते बुरो न कहिये। हरि होनी अनहोनी कर दे सो सब शिरपर सहिये ॥ करै कृपा हरिनाम जपावै सो अंतर ले गहिये। मिहरदास हरि हुकुम मानिये यह सेवकको चहिये॥४१॥

राग केदारो—ऐसे जन्मसमूह सिराने। प्राणनाथ रघुनाथसे प्रभु तज सेवत चरण बिराने ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने। सूखत वदन प्रशंसत तिनको हरिसे अधिक कर माने ॥ सुखहित कोटि उपाय निरन्तर करत न पायँ पिराने। सदा मलीन पंथके जल ज्यों कबूँ न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूर करवेको अमित जतन उर आने। तुलसी चित चिन्ता न मिटै बिन चिंतामणि पहिचाने ॥ १४२ ॥

राग मलार—जाकी लगन रामसे नाहीं। सो नर खर कूकर शूकरसम वृथा जियत जगमाहीं॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूँख प्यास सवहीके । मनुजदेह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके॥ सूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गुरुवाई। विन हरि-भजन इँद्रायनके फल तजत नहीं करुवाई॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शीलस्वरूप सलोने। तुलसी प्रभु अनुरागरहित जिमि सालन साग अलोने॥ १४३॥

राग पीलो—सियाराम विना वीते जात दिना। धन जोवन और सुख सम्पदा रैनिका सुपना॥ भाई वन्धु कुटुम्ब घनेरो कोउ नहीं अपना। कहत कवीर सुनो भाई साधो झूँठे मित्र घना॥१४४॥

छन्द—नमामि भक्तवत्सलं कृपालुशीलकोमलं। भजामि ते पदांवुजं अकामिनां स्वधामदं॥ निकामश्यामसुंदरं भवांवुनाथमंदरं। प्रफुल्लकंजलोचनं मदादिदोपमोचनं॥ प्रलंववाहुविक्रमं प्रभो प्रमेयवैभवं। निपंगचापसायकं धरं त्रिलोकनायकं॥ दिनेशवंशमंडनं महेशचापखंडनं। मुनींद्रसंतरंजनं सुरारिवृन्दभंजनं॥ मनोजवैरिवन्दितं अजादिदेवसेवितं। विशुद्धवोधविग्रहं समस्तदूपणापहं॥ नमामि इन्दिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं। भजे सशक्तिसानुजं शचीपतिप्रियानुजं॥ त्वदंघ्रिमूल ये नरा भजंति हीनमत्सरा। पतंति नो भवार्णवे वितर्कवीचिसंकुले॥ विविक्तवासिनो यदा भजंति मुक्तिदं मुदा। निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकां॥ त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं। जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलं॥ भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं। स्वभक्तकल्पपादपं समस्तसेव्यमन्वहं॥ अनूपरूपभूपतिं नतोहमुर्विजापतिं। प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे॥ पठन्ति

ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं । व्रजंति नात्र संशयः त्वदीयभक्तिसंयुताः ॥ १४५ ॥

राग गौरी—श्रीरामचन्द्रकृपालु भज मन हरण भवभयदारुणं । नवकंजलोचन कंजमुख करकंजपदकंजारुणं ॥ कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनीलनीरजसुन्दरं । पट पीत मानो तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ भज दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनं । रघुनन्द आनँदकन्द कौशलचन्द दशरथनन्दनं ॥ शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंगविभूषणं । आजानुभुज शर चापधर संग्रामजित खरदूषणं ॥ इमि वदत तुलसीदास शंकर शेष मुनिमनरंजनं । मम हृदयकंज निवासकर कामादिखलदलगंजनम् ॥ १४६ ॥

सामयिक चेतावनी ।

कवित्त—काहूसों न रोष तोष काहूसों न राग दोष, काहूसों न वैरभाव काहूकी न घात है । काहूसों न वकवाद काहूसों नहीं विषाद, काहूसों न संग नातो कोऊ पक्षपात है ॥ काहूसों न दुष्ट बैन काहूसों न लेन देन, ब्रह्मको विचार कछु और न सुहात है । सुन्दर कहत सोई ईशनको महा ईश, सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बात है ॥ १४७ ॥

सवैया—पूरणब्रह्म बताय दियो जिन एक अखंड है व्यापक सारे । राग रु द्वेष करै अब कौन सो जोई है मूल सोई सब डारे ॥ संशय शोक मिथ्यो मनको सब तत्त्वविचार कहो निरधारे । सुन्दर शुद्ध किये मलधोयक वा गुरुको उर ध्यान हमारे ॥ १४८ ॥

कवित्त—गुरु विन ज्ञान नाहिं गुरु विन ध्यान नाहिं, गुरु बिन आतमविचार न लहत है । गुरु विन प्रेम नाहिं गुरु विन प्रीति नाहिं, गुरु विन शीलहू संतोष न गहत है ॥ गुरु बिन वास नाहिं बुद्धिको प्रकाश नाहिं, भ्रमहूँको नाश नाहिं संशय रहत है । गुरु बिन वाट नाहिं कौड़ी विन हाट नाहिं, सुन्दर प्रगट लोक वेद यों कहत है ॥ १४९ ॥

लोहकूँ ज्यों पारस पषाण हूँ पलट देत, कंचन छुवत होय जगमें प्रमानिये । द्रुमको ज्यों चन्दनहू पलटै लगाय वास, आपके समान ताको शीतलता आनिये ॥ कीटको ज्यों भृंगहु पलटके करत भृंग, सोऊ उड़जाय ताको अचरज न मानिये । सुंदर कहत यह सगरे प्रसिद्ध वात, शुद्ध शीख पलटै सो सतगुरु जानिये ॥१५०॥

भूमिहूकी रेणुकी तो संख्या कोऊ कहत हैं, भारहूँ अठारह द्रुमनके जो पात हैं । मेघनकी संख्या सोऊ ऋषिन विचार कही, बूंदनकी संख्या तेऊ आयके विलात हैं ॥ तारनकी संख्या कोऊ कही है पुराणमाहिं, रोमनकी संख्या पुनि जितनेक गात हैं । सुन्दर जहाँलों जन्तु सवहीको आवै अन्त, गुरुके अनन्त गुण कापै कहे जात हैं ॥ १५१ ॥

कोऊ देत पुत्रधन कोऊ देत बलधन, कोऊ देत राजसाज देव ऋषि सुन्यो है । कोऊ देत यश मान कोऊ देत रस आन, कोऊ देत विद्या ज्ञान जगतमें गुन्यो है ॥ कोऊ देत ऋद्धिसिद्धि कोऊ देत नवनिद्धि, कोऊ देत और कछु ताते शीश धुन्यो है । सुन्दर कहत एक दियो जिन रामनाम, गुरुसों उदार कोऊ देख्यो है न सुन्यो है ॥ १५२ ॥

गोविंदके किये जीव जात हैं रसातलको, गुरुउपदेश सो तो छूटें यमफंदते । गोविन्दके किये जीव वश परें कर्मनके, गुरुके

निवाजसूं तो फिरत स्वच्छंदते॥ गोविंदके क्रिये जीव बूडें भवसागरमें, सुन्दर कहत गुरु काढे दुखद्वंदते। औरहू कहाँलों कछु मुखते कहूँ वनाय, गुरुकी तो महिमा है अधिक गोविन्दते ॥१५३॥

जोई कछु देखिये सो सकल विनाशवंत, बुद्धिमें विचार कर वहु अभिलाषिये। चिन्तामणि पारसहू कलपतरु कामधेनु, औरहू अनेक निधि वारि वारि नाखिये॥ ताते मन वच कर्म करि कर जोर कहूँ, सुन्दर चरण शीश मेल दीन भाषिये। बहुत प्रकार तीनों लोक सब शोधे हम, ऐसी कौन भेंट गुरुदेव आगे राखिये॥ १५४॥

वार वार कह्यो तोहिं सावधान क्यों न होय, ममताकी पोट शिर काहेको धरत है। मेरो धन मेरो धाम मेरे सुत मेरी वाम, मेरे पशु मेरो ग्राम भूल्यो यों फिरत है॥ तू तो भयो वावरो विकाय गई बुद्धि तेरी, ऐसो अंधकूप गृह तामें तू परत है। सुन्दर कहत तोहिं नेक हूँ न आवे लाज, काजको बिगारके अकाज क्यों करत है॥ १५५॥

कानके गयेते कहाँ कान ऐसे होत मूढ, नैनके गयेते कहाँ नैन ऐसे पाइये। नासिका गयेते कहाँ नासिका सुगंध लेत, मुखके गयेते ऐसे मुख कहाँ गाइये॥ हाथके गयेते कहाँ हाथ ऐसो काम होत, पाँवके गयेते ऐसे पाँव कित धाइये। याहीते विचार देख सुन्दर कहत तोहिं, देहके गयेते ऐसी देह कित पाइये॥ १५६॥

वैरी घरमाहिं तेरे जानत सनेही मेरे, दारा सुत वित्त तेरो खोसि खोसि खायँगे। औरहू कुटुंब लोग लूटें चहुँ ओरहीसे, मीठी मीठी वात कर तोसों लपटायँगे। संकट परैगो जब कोऊ

नहिं तेरो तव, अंतही कठिन वाकी वेर उठ जायँगे। सुंदर कहत ताते झूठोही प्रपंच सब, सुपनेकी नाईं सब देखत विलायँगे ॥१५७॥

जवते जनम लेत तवहींते आयु घटै, माय तो कहत मेरो बड़ो होत जात है। आज और काल्हि और दिनदिन होत और, दौरयो दौरयो फिरत खेलत अरु खात है॥ वालपन वीत्यो जव यौवन लग्यो है आय, यौवनहू वीते वूढ़ो डोकरा दिखात है। सुन्दर कहत ऐसो देखतही वूझि गयो, तेल घटि गये जैसे दीपक वूझात है ॥ १५८ ॥

घरी घरी घटत छीजत जात छिन छिन, भीगतही गर जात माटीको सो ढेल है। मुक्तिके दुआरे आय सावधान क्यों न होय, वार वार चढ़त न त्रियाको सो तेल है॥ करले सुकृत हरीभजन अखंड नर, याहीमें अंतर परै यामें ब्रह्ममेल है। मनुषजनम यह जीत भावै हार अव, सुन्दर कहत यामें जुवाँको सो खेल है ॥१५९॥

सवैया—देखतके नर दीखत हैं पर लक्षण तो पशुके सवही हैं। वोलत चालत पीवत खात सु वे घर वे वन जात सही हैं॥ प्रात गये रजनी फिर आवत सुंदर यों नित भार वही हैं। और तो लक्षण आय मिले सव एक कमी शिर शृंग नहीं हैं॥१६०॥

इन्द्रिनको सुख मानत है शठ याहिते तू वहुतै दुख पावै। ज्यों जलमें झप मांस है लीलत स्वाद वँध्यो जलवाहर आवै॥ ज्यों कपि मूठ न छाँडत है रसनावश वंध परयो विललावै। सुंदर क्यों पहले न सम्हारत जो गुड़ खाय सो कान छिदावै ॥१६१॥

पेटके वाहर होतहि वालक आयके मात पयोधर पीनो। मोह वँध्यो दिनहीं दिन ऐसे औ तरुण भयो त्रियके रसभीनो॥ पुत्र प्रपौत्र वँध्यो परिवारसों ऐसेही भाँति गये पन तीनो। सुन्दर रामको नाम बिसारके आपहि आपको वंधन कीन्हों ॥ १६२ ॥

ये मेरे देश विलायत हैं गज ये मेरे मंदिर ये मेरे थाती। ये मेरे मात पिता पुनि बांधव ये मेरे पूत सो ये मेरे नाती। ये मेरे कामिनी केलि करैं नित ये मेरे सेवक हैं दिनराती। सुन्दर वैसेहि छाँड़ि गयो सब तेल जरयो सो बुझी जब बाती ॥ १६३ ॥

तू कछु और विचारत है नर तेरो विचार धन्योही रहैगो। कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिख्यो तितनोहि लहैगो। भोरकि साँझ घरी पलमाँझ सो काल अचानक आय गहैगो। राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुन्दर यों पछिताय रहैगो ॥१६४॥

कै यह देह जरायके छार किया कि किया कि किया कि किया है। कै यह देह जमीनमें खोद दिया कि दिया कि दिया कि दिया है॥ कै यह देह रहै दिन चार जिया कि जिया कि जिया कि जिया है। सुन्दर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया, कि लिया है ॥ १६५ ॥

बीत गये पिछली सबही दिन आवत हैं अगले दिन नेरे। काल महाबलवंत बड़ो रिपु साधि रह्यो शिर ऊपर तेरे। एक घरीमहँ मारि गिरावत लागत ताहि कछू नहिं बेरे। सुंदर संत पुकार कहैं सबहीं पुनि तोहि कहौं अब टेरे ॥ १६६ ॥

मात पिता युवती सुत बांधव आय मिल्यो इनसे सन बंधा। स्वारथके अपने अपने सब सो यह जानत नाहिंन अंधा ॥ कर्म अकर्म करै तिनके हित भार धरे नित आपने कंधा। अंत बिछोह भयो सबसों पुनि याहीते सुन्दर है जगधंधा ॥ १६७ ॥

सोय रह्यो कहा गाफिल ह्वैकर तो शिर ऊपर काल दहारै। धामस धूनस लाग रह्यो शठ आय अचानक तोहिं पछारै ॥ ज्यो बनमें मृग कूदत फाँदत चित्र गले नखसों उर फारै। सुंदर काल डरै जिहिके डर ता प्रभुको कहि क्यों न सम्हारै ॥ १६८ ॥

नैननकी पलही पलमें छिन आध घरी घटिका जु गई है। याम गयो युग याम गयो पुनि साँझ गई, तब रात भई है॥ आज गई अरु काल गई परसों तरसों कछु और ठई है। सुंदर ऐसेहिं आयु गई तृष्णा दिनही दिन होत नई है॥ १६९॥

काहेको दौरत है दशहूँ दिशि तू नर देख कियो हरिजूको। बैठ रहे दुरके मुख मूँद उघारके दंत खवाय है टूको॥ गर्भ थके प्रतिपाल करी जिन होय रह्यो तब तू जड मूको। सुंदर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदे विशवास प्रभूको॥ १७०॥

जो दस बीस पचास भये शत होयँ हजारन लाख मँगेगी। कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य पृथीपति होनकि चाह जगेगी॥ स्वर्ग पतालको राज्य करा तृपणा अधिकी अति आग लगेगी। सुंदर एक सँतोप विना शठ तेरी तो भूख कभी न भगेगी॥ १७१॥

भाजन आप गढ्यो जिनने भरिहै भरिहै भरिहै भरिहै जू। गावत है जिनके गुणको ढरिहै ढरिहै ढरिहै ढरिहै जू॥ आदिहु अन्तहु मध्य सदा हरिहै हरिहै हरिहै हरिहै जू। सुंदर दास सहाय यही करिहै करिहै करिहै करिहै जू॥ १७२॥

सर्प डसे, सु नहीं कछु तालुक बीछू लगे सुभलो कर मानो। सिंहहुँ खाय तो नाहिं कछू डर जो गज मारत तो नहिं हानो॥ आग जरो जल बूड़ मरो गिरि जाय गिरो कछु भय मत आनो। सुंदर और भले सबही दुख दुर्जनसंग भलो जिन जानो॥१७३॥

जो मन नारीकी ओर निहारत तो मन होत है ताहीको रूपा। जो मन काहूसों क्रोध करै तब क्रोधमयी होय जाय तद्रूपा॥ जो मन मायाही माया रटे नित तो मन बूड़त मायाके कूपा। सुंदर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होत है ब्रह्मस्वरूपा॥१७४॥

कवित—दुनियाँको दौरता है औरतको लोरता है, औजूदको मोरता है वटोई सरायका । मुरगीको मोसता है वकरीको रोसता है, गरीवको खोंसता है वेमहर गायका ॥ जुलमको करता है मालकसों न डरता है, दोजखको खजाना वलायका । होयगा हिसाव तव आवेगा न ज्वाव कछू, सुन्दर कहत गुनहगार है खुदायका ॥ १७५ ॥

देह तो सुरूप तौलों जौलों है अरूपमाहिं, सब कोऊ आदर करत सनमान है । टेढ़ी पाग बाँध बार बारही मरोर मूँछ, बाहूँ उसकारे अति धरत गुमान है ॥ देशदेशहींके लोग आयके हजूर होय, बैठकर तखत कहावे सुलतान है । सुन्दर कहत जब चेतना शकति गई, यही देह ताकी कोऊ मानत न आन है ॥ १७६ ॥

या शरीरमाहिं तू अनेक सुखमान रह्यो, ताहि तू विचार यामें कौन बात भली है । मेद मांस मज्जा रगरगनमें रक्त भर्यो, पेटहूँ पिटारीसीमें ठौर ठौर मली है ॥ हाड़नसों मुख भर्यो हाड़नके नैन नाक, हाथ पाँव सोऊ सब हाड़नकी नली है । सुन्दर कहत याहि देख जिन भूलै कोय, भीतर भँगार भरी ऊपरते कलि है ॥ १७७ ॥

कामिनीको अंग अति मलिन महा अशुद्ध, रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार हैं । हाड मांस मज्जा मेद चामसों लपेट राखे, ठौर ठौर रुधिरके भरेही भँडार हैं ॥ मूत्रहू पुरीष आँत एकमेक मिलरही, औरहू उदरमाहिं विविध विकार हैं । सुन्दर कहत नारी नखशिख निन्दारूप, ताहि जो सराहैं सो तो बड़ेही गँवार हैं ॥१७८॥

अपने न दोष देखै परके औगुण पेखै, दुष्टको स्वभाव उठि निन्दाही करत है । जैसे कोई महल सँवार राख्यो नीके कर,

नैननकी पलही पलमें छिन आध घरी घटिका जु गई है। याम गयो युग याम गयो पुनि साँझ गई, तब रात भई है॥ आज गई अरु काल गई परसों तरसों कछु और ठई है। सुंदर ऐसेंहिं आयु गई तृष्णा दिनही दिन होत नई है॥ १६९॥

काहेको दौरत है दशहूँ दिशि तू नर देख कियो हरिजूको। बैठ रहे दुरके सुख मूँद उघारके दंत खवाय है टूको॥ गर्भ थके प्रतिपाल करी जिन होय रह्यो तब तू जड मूको। सुंदर क्यों बिललात फिरे अब राख हृदे विशवास प्रभूको॥ १७०॥

जो दस वीस पचास भये शत होयँ हजारन लाख मँगैगी। कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य पृथीपति होनकि चाह जगैगी॥ स्वर्ग पतालको राज्य करा तृषणा अधिकी अति आग लगैगी। सुंदर एक सँतोष विना शठ तेरी तो भूख कभी न भगैगी॥ १७१॥

भाजन आप गढ्यो जिनने भरिहै भरिहै भरिहै भरिहै जू। गावत है जिनके गुणको ढरिहै ढरिहै ढरिहै ढरिहै जू॥ आदिहु अन्तहु मध्य सदा हरिहै हरिहै हरिहै हरिहै जू। सुंदर दास सहाय यही करिहै करिहै करिहै करिहै जू॥ १७२॥

सर्प डसे सु नहीं कछु तालुक बीछू लगे सुभलो कर मानो। सिंहहुँ खाय तो नाहिं कछू डर जो गज मारत तो नहिं हानो॥ आग जरो जल बूड़ मरो गिरि जाय गिरो कछु भय मत आनो। [सु]ंदर और भले सबही दुख दुर्जनसंग भलो जिन जानो॥१७३॥

जो मन नारीकी ओर निहारत तो मन होत है ताहीको रूपा। [ज]ो मन काहूसों क्रोध करै तब क्रोधमयी होय जाय तद्रूपा॥ [ज]ो मन मायाही माया रटै नित तो मन बूड़त मायाके कूपा। [सु]ंदर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होत है ब्रह्मस्वरूपा॥१७४॥

कवित–दुनियाँको दौरता है औरतको लोरता है, औजूदको मोरता है बटोई सरायका। मुरगीको मोसता है बकरीको रोसता है, गरीबको खोंसता है बेमहर गायका॥ जुलमको करता है मालकसों न डरता है, दोजखको खजाना बलायका। होयगा हिसाब तब आवेगा न ज्वाब कछू, सुन्दर कहत गुनहगार है खुदायका॥ १७५॥

देह तो सुरूप तौलौं जौलौं है अरूपमाहिं, सब कोऊ आदर करत सनमान है। टेढ़ी पाग बाँध बार बारही मरोर मूँछ, बाहू उसकारे अति धरत गुमान है॥ देशदेशहीके लोग आयके हजूर होय, बैठकर तखत कहावै सुलतान है। सुन्दर कहत जब चेतना शकति गई, यही देह ताकी कोऊ मानत न आन है॥ १७६॥

या शरीरमाहिं तू अनेक सुखमान रह्यो, ताहि तू विचार यामें कौन बात भली है। मेद मांस मज्जा रगरगनमें रक्त भर्यो, पेटहूँ पिटारीसीमें ठौर ठौर मली है॥ हाड़नसों मुख भर्यो हाड़नके नैन नाक, हाथ पाँव सोऊ सब हाड़नकी नली है। सुन्दर कहत याहि देख जिन भूलै कोय, भीतर भँगार भरी ऊपरते कलि है॥ १७७॥

कामिनीको अंग अति मलिन महा अशुद्ध, रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार हैं। हाड मांस मज्जा मेद चामसों लपेट राखे, ठौर ठौर रुधिरके भरेही भँडार हैं॥ मूत्रहू पुरीष आँत एकमेक मिलरही, औरहू उदरमाहिं विविध विकार हैं। सुन्दर कहत नारी नखशिख निन्दारूप, ताहि जो सराहैं सो तो बड़ेही गँवार हैं॥१७८॥

अपने न दोष देखै परके औगुण पेखै, दुष्टको स्वभाव उठि निन्दाही करत है। जैसे कोई महल सँवार राख्यो नीके कर,

कीरी तहाँ जाय छिद्र ढूँढत फिरत है ॥ भोरहीते साँझलग साँझहींते भोरलग, सुन्दर कहत दिन ऐसेही भरत है। पाँवके तरेकी नहीं सूझै आग मूरखको, औरसों कहत शिर ऊपर वरत है ॥१७९॥

देखवेको दौरे तो अटक जाय वाही ओर, सुनवेको दौरे तो रसिक शिरताज है। सूंघवेको दौरे तो अघाय न सुगन्ध कर, खायवेको दौरे तो धापै महाराज है ॥ भोगहीको दौरे तो नृपतिहू न क्योंही होय, सुन्दर कहत याहि नेकहू न लाज है। काहूको न कह्यो करै आपनीही टेक धरै, मनसो न कोऊ हम देख्यो दगावाज है ॥ १८० ॥

मनहीके भ्रमते जगत यह देखियत, मनहीको भ्रम गयो जगत विलात है। मनहीके भ्रमते जेवरीमें उपजत सांप, करके विचारे साँप जेवरी समात है ॥ मनहींके भ्रमते मरीचिकाको जल कहै, मनहीके भ्रम सीप रूपासा दिखात है। सुन्दर सकल यह दीखै मनहीको मन,हीके भ्रम भ्रम गये ब्रह्म होय जात है ॥ १८१ ॥

काक अरु रासभ उलूक जव वोलत हैं, तिनके तो वचन सुहात कहि कौनको। कोकिला सारिका पुनि सूवा जव बोलत हैं, सब कोऊ कान दै सुनत रव धौनको ॥ ताहि तैसो वचन विवेक कर वोलियत, योहीं आकवाक वक तोरिये न पौनको। सुन्दर समझकर वचन उचार करो, नहीं तो समझकर बैठो गहि मौनको ॥ १८२ ॥

इन्द्राणी शृंगार कर चन्दन लगायो अंग,ताहि देख इन्द्र अति कामवश भयो है। शूकरीहू कर्दमके चहितमें लोटकर, आगे जाय शूकरको मन हरलियो है ॥ तैसो सुख शूकरको तैसो सुख मघवाको, तैसो सुख नर पशु पक्षीहूको दियो है। सुन्दर कहत जाके भयो ब्रह्मानंद सुख, सोई साधु जगतमें जीतकर गयो है ॥ १८३ ॥

देवहू भयेते कहा इन्द्रहू भयेते कहा, विधिहूके लोकते वहुरि आइयत है । मानुप भयेते कहा भूपति भयेते कहा, द्विजहू भयेते कहा पार जाइयत है ॥ पशुहू भयेते कहा पक्षीहू भयेते कहा, पन्नग भयेते कहा क्यों अघाइयत है । छूटिबेको सुंदर उपाय एक साधुसंग, जिनकी कृपाते अति सुख पाइयत है ॥ १८४ ॥

सोम नाम विप्रवर गिरिजाके वर कर, लीनो सुधाफल कर दीनो नरनाहके । भूपति स्वपत्नीको रानी निजमीतहीको, ताने दीनों गीतकीको नीको फल चाहके ॥ आगे गणिका सरागे धरापति आगे धरा, धरानाथ माथ धुना सुना धुना ताहिके । हा हा कामिनीके हित हते काम नीके अव, ताहि तजों ताहि भजों शीश शशी जाहिके ॥ १८५ ॥

ग्रन्थनके ज्ञाते माते मत्सरकी कीचवीच, धरानाथ मदसाथ भरे दरशात हैं । दूषण चमोर मोरे भूषणसे भाषणको, पंडित भूपाल तो न सुनैं मेरी वात हैं ॥ पुनि आन जंतु जेते दुखी दीन मूढ़ तेते, मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं । पात्र विना भाषे राखे हवनको राखे तैसे, जीरण भो गातमें सुवात होत जात हैं ॥ १८६ ॥

भूमिसेज मूलफल मेघ नव वलकल, करने न परें देव आगे रच धरे हैं । करो इन्हें साथ रति प्यारी प्रेमवारी मति, उठो उठा तामें अव जामें विंव ठरे हैं ॥ तुच्छ अविवेकी शठ मूढ मन बोल कटु, जाके चित चिंता आगकर सदा जरे हैं । ऐसे धनवाननके नाम मात्र काननमें, जाहि महा काननमें क्यों नाहिं परे हैं ॥१८७॥

इन्द्रियोंके भोग सारे भारे रोग देनवारे, ताको कीजै हेयमत श्रेयपथ तज रे । पापअद्रि नाशनको व्रजपाकशासनको, दाहै दोष घासनको मोक्षशिखी सज रे॥हूजो शांत भज भववीच प्रापत

कदापि नीच, आपनी कलोलल्लोल गतते न लज रे । क्षणभंग भवराग ताको मन करो त्याग, मोक्षको वैराग सहकारी तास भज रे॥

दीपमें पतंग परे जरे न प्रताप जाने, मीन सु अज्ञाने भखे कुंडी मिले मासको । गज गर्जीहेत परो खात खात अंकुशको, रागमें कुरंग राग करे निज नाशको ॥ पंकजकी गंधवीच नीच भृंग मीच गहे, इत्यादि अज्ञानी नाश करें निजसासको । अहो हा सघन महामोहको प्रताप लहा, शुभाशुभ जानो पै न हानो भोग आसको ॥ १८९ ॥

प्रवल सनेहको निवार देह मनवीच, वीची बुदबुदे रेखा दामिनी समानिये । पुन दीप्त अगनमें नागनमें नदीवेगमाहिं, जैसे सुख नाहिं तैसे ताहि जानिये ॥ देवनदी तीरकी पवित्र धरापर बैठ, नीलकंठमाहिं नील उत्कंठा ठानिये । अव ऐसी रीत करो भोगनकी प्रीत हरो, गुरु वेदवाक्य धरो तीन ताप हानिये ॥ १९० ॥

सवैया—मूयेते मोक्ष कहैं सव पंडित मूयेते मोक्ष कहैं पुनि जैना। मूयेते मोक्ष कहैं ऋषि तापस मूयेते मोक्ष कहैं शिवसैना ॥ मूयेते मोक्ष मलेक्ष. कहै तेहू मूयेते धोखे चखानत वैना । सुन्दर आतमको अनुभौ सोइ जीवत मोक्ष सदा सुख चैना ॥१९१॥

कोउक निंदत कोउक वंदत कोउक देत है आयके भक्षण । कोउक आय लगावत चन्दन कोउक डारत धूरि ततक्षण ॥ कोउ कहै यह मूरख दीसत कोउ कहै यह आय विलक्षण । सुन्दर काहूसों राग न द्वेष सो ये सव जानहु साधुके लक्षण॥१९२॥

तात मिलै पुनि मात मिलै सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई॥ राज मिलै गज बाजि मिलै सब साज मिलै मनवाञ्छित पाई ॥ लोक मिलै सुरलोक मिलै विधि लोक मिलै रु वैकुंठहुँ जाई । सुन्दर और मिलै,सवही सुख सन्त समागम दुर्लभ भाई ॥ १९३ ॥

जिनको नित मैं चितमों चितमें नितकी रतिमों बनमाहिं रतीना । वह आन पुमानके संग रती पुनि ता मनमें गणिका गृह कीना ॥ धिक है अबला भूत कंद्रपही अरु मोहिं धिकार जो मार अधीना । इस रीति समूहकी प्रीति तजी नृप होय योगीश्वर ईश्वर चीना ॥ १९४ ॥

भावीके भाव अभाव यथा न रमो तिनमों नभके सुमना । भोगके मध्य रमो गत, राग भ्रमो अंन उत्तर ना ॥ ब्रह्म नपुंसक यो मन तूँ विनता तव दंपतिमों सुखना । टेरत मैं प्रतिफेर तुमैं तुम मो मतिको मत फेर बना ॥ १९५ ॥

शांत निजांतर क्यों न गहे कत डोलै वृथा भवमों सघना । होय यथा सु तथा निज है तुमते अनथा वह होवत ना ॥ प्रीति लै साथ वितीत भली, कछु हाथ विली ना यथा स्वपना । मौन गहो अब मौन गहो तुम मोर गिरा जिन मोर मना ॥ १९६ ॥

यह श्रुति ज्ञान सुजाननके अभिमान मदादि विकार निवारे । केचित मोसम नीचनके चितमों बहु मान मदादिक धारे ॥ शून्य यथा मठसाधनको अति मूपको साधन दोष प्रहारे । सो हमसे मदनातुरको अति कामको कारण वाण सम्हारे ॥ १९७ ॥

कवित्त–जाहि मातपिताते मैं भयो उतपति तेतो, कालवश भये चिरकाल वीत गयो है । सम वैसवारे द्वारे सुमिरत सिधारे सारे, रहे हम शेष देह वृद्ध वेप लयो है ॥ नदीरेत तीरपर तरुयों शरीर भयो, प्रतिदिन मृत तीर तीर अब आयो है । गिले काल व्यालसम मेंढकके अजे हम, भये भोग मच्छरको मोसों मूढ जायो है ॥ १९८ ॥

पुण्यनके वशते सुभोग चिर वशते, न मित्रन नशते मर्याद आदि दिनमें । कौन भेद भोगनके भेदमें न तजै जन, एकको

वियोग तो अवश्य होत तिनमें ॥ स्वते जब जावें तब मनको तपावें भारी, मोपै तिन्है आप ताप मोपे तिन्हें छिनमें। ऐसे मोप प्रतिवन्धी विषे लखे मैं संबंधीको कुभागि बिना मैं जो रागी होत इनमें ॥ १९९ ॥

गंगतीरपर हिमगिरि शिलापर हम, बाँधे पदमासनको मन इन्द्रि जीतके । ब्रह्मजूके ध्यानकी अभ्यास विधसो निवास, योगनिद्रा-माहिं करो हरो ताप चीतके ॥ जठर कुरंग करे शृंगीसंग कंडू मोहिं, सुखसों अभीतमोको जाने समभीतके । पार्वतीनाथ मैं अनाथके अभीतवारे, उत्तम दिहारे कब आवें ऐसी रीतके॥२००॥

काशी गंगाके किनारे भवते किनारे होय, कभू वसों वसन कौपीन एक धारके । दोऊ हाथ जोरे कर नाय हाथ नमो करों, मृदुवाणी साथररों, नामसमरारके ॥ भो प्रभो भवानीवर शंकर त्रिनेत्र हर, त्रिपुरारी चन्द्रधर भवभयहारके । क्षणसम दिन सब मोरे बीत जावें जब, ऐसे यह आवें कब कहो कृपा धारके॥२०१॥

कभी भूमि आसन सिंहासनपै वास कभी, कभी भिक्षा ग्रास कभी व्यजन अहार है । कभी शतखंडवती गोदडीको ओढै यती, कम्बरको कबहूँ दिगम्बरको धार है ॥ कभी भानकर तपै कभी शीश छत्र दिपै, कहूँ सत्कार होत कहूँ तिरस्कार है । तदपि न सन्तजन सुखी दुखी होत मन, आतमा असंग लख देहको विहार है ॥ २०२ ॥

हिंसा नाहिं करें परद्रव्यको न हरें सत्य, वचन उचारें पुण्य-समय पुण्य कर हैं । कथा वितकथा परनारीकी न सुनें भन, ताने गुंग बोला बने भोलासम चर हैं ॥ तृष्णाको प्रवाह भंग गुरोविषे नम्र अंग, मित्रभाव सब संग करें हरहर हैं । गायो सर्व ग्रन्थनमें सन्त ऐसे पंथनमें, राग दोष मोष चरें जैसे दिनकर हैं॥

तुंग भोग इन्द्रलोक सत्तलोकलग जेते, तेते ही तरंग समभंग पहिचानो रे। जीवनके जीवनेकी रास एक सांस सोऊ, दामिनी समान क्षणमाहिं हानि जानो रे ॥ जोबनको सुख थोरे दिनमें विमुख हो रे, मीतनकी प्रीति पुनि नीत न पछानो रे। सकल संसारको विचारके असार तजो, बोधहेत बुद्धिवानों मेरी बुद्धि मानो रे ॥ २०४ ॥

तनु वृद्ध भयेते न वृद्ध भई भोग आश, मनमें तो भोगनकी कोटि मन रत है। शनैशनै उच्चस्थान लोचनकी द्युतिहान, मानवको बहु मान हान भयो अत है ॥ सखासम वैसवारे प्राणोंवत जौन प्यारे, कवके पधारे नाक देख ऐसी गत है। अहो अजय नीच निजमीच बीज हासी भजे, जीव ना चहत मृत जीवना चहत है ॥ २०५ ॥

हरिमें सनेहतर जनममरन डर, उरमाहिं कीन्हों वर वंधुमें न राग है। मनोभव जो विकार मंद संस्कार डार, संग दोष दुख टार बसे कांत बाग है ॥ या वैराग्य भये कहा होत त्याग योग रहा, हती सब चाह जो वैरागते वैराग है। हेतु परमारथको उत्तम वैराग्य ऐसो, भाग बड़े भागको अभाग ताते भाग है ॥ २०६ ॥

शुभ शत संवत नारानकी प्रमाण आयु, तास आधभाग नाश होय रैन सोय है। बालवृद्धमाहिं ताहि आधो भाग वाधो जाहि, जड़ता अशक्य ताकी खाण वैस दोय है ॥ शेषकी अवधि जोऊ आधि व्याधि संग सोऊ, भ्रमणो विदेश होऊँ सेवकादि खोय है। जीवनकी आयुमाहिं सुखको तो नाउँ नाहिं, तोयके तरंगके समान भंग होय है ॥ २०७ ॥

भोगनमें रोगभय सुखोंविषे क्षयभय, धनमध्य भय भूप चोरको रहत है। दासमाहिं स्वामिभय जयमाहिं रिपुभय, भय कुल-

वीच नीच नारीको महत है ॥ मानमें महान् भय गुणीमें खलान भय, कायमें कृतांत भय भय सर्वगत है । निर्भय वैराग एक घरो नरो सविवेक, गायो मैं अनेक वार थांकी मोरी मत है ॥

अंत तो मलीन दीनहीन पुरुपारथसों, कर्मन विहीन पीन पापको कहा कहों । विपया अधीन और कहाँलौ कहै प्रवीन काम क्रोध लोभ मोह मदके धका सहों ॥ रावरे समर्थ है सो मोसे खल तारवेको, अधम उधारन हो औरते नदा चहों । सरल सुजान संत प्यारेकी निछार मोहि, दीजै शरणागत सतसंगमों परो रहों ॥ २०९ ॥

सवैया–शुचि गंगतरंगकी बूँदकनी कर शीतल चारु हिमंचल कीमिल । जिहिं फूलफलान उपान धरे शिवको नित सेवत देववधू मिल ॥ परभोजनमें निज जो जन दे दिल ता गिरिको कत काल लयो गिल । अपमान सही अपमान सही विदधीरसही नृपधाम अही विल ॥ २१० ॥

प्रति कानन वृक्षनते मनवांछत लाभ सुखेन फलादि अपारा । सरिताके सुथान सुथान विषे शुचि शीतल मिष्ट मिले बहु वारा ॥ जलपत्रवती मृदु सापर शीतल पादके होवत भूपन द्वारा । सदके मतिमान महा भटके मतिमान तहाँ कत होत सुवारा ॥ २११ ॥

तीर्थनमाहिं सनान समान करै बहु दान महान मनीके । समशान मठान तरून तरे असथान करै उत तीर नदीके ॥ मुख मौन धरे तज मौन चरे अरु वेद ररे सुपढ़ावत नीके । गुण येतत वृन्द वरात जना वर एक वैराग विना सब फीके ॥ २१२ ॥

आपनो रूप पिछानसी लाभ न भूलसी हान बड़ी नहिं जीको । नाहिं बडो सुख भक्तिते दूसरो दुःख न जानिवो राधिका-

पीको ॥ चारिहु नीक न जानि परैं बिन साधुके संग कहो नर नीको । वेद कहै अरु लोक लखे सतसंगतसे व्यसही सबहीको॥

चाह जितो चित चाहै अनेकन होत तितो दुखही जु विचारै। है इन इन्द्रिनको सुख हेर सु तेरो न हेत जो नीके निहारै॥ पेट लफाये फिरै जु कहा अति दीन दुवारन दाँत निकारै। लै हरिकी किन भक्ति सदा जु चहै सुखसों अपनी निसतारै॥ २१४॥

दैनेदई फल फूल अनेक औ मूल जिते तित तोहि अहारै। डासनको कुश लै परी भूमि चहै जितही तित पायँ पसारै॥ ताल तरंगिनि ताप हरै अरु सूरज पावक शीत निवारै। याके लिये हठकै शठ तू कह पाँवर पौरिन हाथ पसारै॥ २१५॥

आये कहाँते कहो तुम आप है आये कहाँते तुम्हारे ये नात है। जात भये कितको सिगरो अरु तू मरके कितको कहँ जात है॥ नाचत पूतरी पेखनो लो जगडोर नचावन हारके हात है। तेरो कहा जो तू मेरी कहै हठ हेरो विचार कहा विललात है॥२१६॥

कबित्त—मूठी एक माटीको धरौं दासो शरीर मन, ताकों कहै मेरो वपु अति अभिराम है। आगे पाछें भाव नाहिं मध्य दुःख भोग यामें, जाने जाको खेहविट कृमि परिनाम है॥ विषयको भोग जैसे दादको खुजाये सुख, अंत दुःखराशि तामें मानत विश्राम है। इन्द्रिनके संग लाग्यो आपनो स्वरूप त्याग्यो, कुसंग अनुराग्यो यामें याको कहा काम है॥ २१७॥

स्वपनेमें सती जाती मुनि राव रंक सब, स्वपनेमें चार दश लोकन फिरत है। स्वपनेमें मेरो तात मात भ्रात नारी सुत, मेरो यह ग्रामधाम नाम यों कहत है॥ स्वपनेमें भवके समुद्रमाँझ बह्यो फिरै, पैरत थकत पुनि बूड़त तरत है। जागे विन जाने नाहिं आपही सकल भयो, आपही तो निरखत आपही निरत है॥

रविको प्रकाश जैसे देखिये मुकुरमध्य, मुकुर प्रकाश जैसे जलको अभास है । जलके प्रकाशहूते होत जो प्रकाश, ताते, देख्यो परै मन्दिरके भीतर उजास है ॥ तैसे परमात्माते आतमा विचार लीजे, आतमाते मन ताते जगत विलास है। साक्षी परमातमा अखंडित सभीके माहिं, सबहीते न्यारो सदा आनंदकी रास है ॥ २१९ ॥

अंगी अरधंगी हितबंध सनबन्धी ताके, हेत मतिबंधी मन पाछे पछताय है । अंगहीलों अंग छिनभंगी जब होय गयो, नाश भे अनंगी तब अंगी कहा पाय है ॥ घरहीलों कोई कोई आँगन डगरहीलों, चिताके समीप कोऊ जाय है तो जाय है । जेतो है हुतंगी दिना चारहीके रंगी सब, अंतके समयको तेरो संगी राम राय है ॥ २२० ॥

जाको जाकोचाहे सो तो जात है चला है सब, कौनसी निबाहैं नेह देहहू तो छीजिये । रवि शशि तारागण सुरासुर सातौं सिन्धु, भूमिहू अकाशको विनाशही पतीजिये ॥ ब्रह्मा अरु कीटलौं विनाशवन्त दीखें सब, आपा मान रह्यो सो तो आपहूं न जीजिये । कासों मानों नातो कासों करत हिताहित सो, देख जो परत शोच काको काको कीजिये ॥ २२१ ॥

मान लियो तात भ्रात मान लियो पिता मात, मान लियो अरि मित्र जाति अरु पांति है। मान लियो आपा परमान लियो नारि नर, मान लियो दुःख सुख दिन अरु रात है ॥ मान लियो नरक स्वर्ग पाप पुण्य मान लियो, मान लियो हानि लाभ भांतिहू विभीत है । जग सब झूंठ है मरीचिकाकी ज्योति जैसे, जान लियो साँच मान लियो एक बात है ॥ २२२ ॥

चले गये छाँडि हिरण्याक्ष हिरणकश्यपसे, बलि जैसे बाँधे सो पातालमें चले गये। चले गये रावण रु कुंभकर्ण महायोधा, केते नरेश मारे घरमें रले गये॥ रले गये जरासन्ध कंस शिशुपाल जैसे, दुर्योधन आदि बीच गर्वके गले गये। गले गये केते येते असुर महान दुष्ट, आयके जमीनपर हो होके चले गये॥ २२३॥

दाताऊ महीप मान्धाताऊ दिलीप जैसे, जाके यश अजहूँलौं द्वीप द्वीप छाये हैं। वलि ऐसो बलवान् को भयो जहानवीच, रावणसमान को प्रतापी जग जाये हैं॥ बानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे, जाके गुण दीनद्याल भारतमें गाये हैं। कैसे कैसे सूर रचे चातुरी विरंचिजूने, फेर चकचूर कर धूरमें मिलाये हैं॥ २२४॥

श्वासके भरोसे गढ़ मासमें निवास लियो, आशा मनमाहिं राखी मान न शरीरकी। बड़े बड़े शूरवीर देख छोड़ गये मूर्ख, रही नाहीं निशानी शाहां अरु वजीराकी॥ भज निरंजन दुख-भंजन रे आलमकी, नित्य रोज खबर लेत पाहनमें कीराकी। कहै कवि थारामल स्मरनेको यही फल, एक एक घडी जात लाख लाख हीराकी॥२२५॥

सन्तकी गहो रीत त्यागो जगकी प्रतीत, औसर है यही मीत विमल चुकाइये। निशदिन सन्तसंग जगप्रीति करो भंग,रामजूसों लाय रंग आन नहिं जाइये॥ आन गयां सुख नाहिं बूझ देख हृदयमाहिं, भलो दाव बन्यो आय वाद ना गँवाइये। प्रभुध्यान हिये धार सर्व आशको विसार,संत मिलि गहो सार बेगि मुक्ति पाइये॥

सवैया–परिपूरण पापके कारणते भगवन्तकथा न रुचै जिनको। तिन एक कुनारि बुलाय लई नचवावत हैं दिनको दिनको॥ मिरदंग कहै धिग है धिग है रु मँजीर कहै किनको किनको।

तव हाथ उठायके नारि कहै इनको इनको इनको इनको ॥२२७॥

मातपिताहित बंधु सगे सुत नारि सबै अरु चाकर चेरे। तू हित मान रह्यो इनसों निशि द्योस भ्रमैं जिमि भौंरके वेरे ॥ इनके दुखते दुख पावत है, सो तो है सब ये हित स्वारथकेरे। जीवत जारत हैं तोहिं तात मुये पुनि जारनहार हैं तेते ॥२२८॥

हे मन भूलि रह्यो है कहाँ विषयारसमें निशि द्योस वहै। है जग झूँठ धुवाँको सो धाम मृगाजल सोहत प्यास चहै ॥ धावत धावत धाय मरो श्रमही इक केवल हाथ रहै। चेत अजौं ममता तजिके समता सुख आनँदसिंधु लहै ॥ २२९ ॥

छोड़के आश सभी जगकी हियमें सुख शांतिको वास करो। यह जीवनहूकी तजो शरधा जग जीवतही बिन मीच मरो। अबलौं जु भई सुभई अबहूँ चित चेत विवेककी ओर ढरो। तुम काके हो को हो कहाँ हो कछू अपनी सुधि आपन आप धरो ॥२३०॥

तू ममता मदमाहिं पग्यो रचके पचके बहु धाम सँवारे। लोभ अधीन जो पापको मूल रह्यो चित भूल न आप सँभारे ॥ काल रह्यो ढिग श्वास गिनै छिनमाँझलवा जिमि बाज पछारे। नंदके नंदहिं क्यों न भजै जो सदा अपने जनको प्रतिपारै ॥२३१॥

काल निहारत काल सदा सब लोग विचारतही पच हारें। कोऊ बच्यो न कहूँ कितहूँ जलहूँ थल व्योम पताल विचारें ॥ है छिन एकको पेखनो सो तू तहाँ कहँ कौनकी आश निहारें। यामें कहा तोहि अर्थ मिलै यों विनर्थहिं मानुषजन्म निवारें ॥२३२॥

संत सदा उपदेश बतावत केश सभी शिर श्वेत भये हैं। तू ममता अजहूँ नहिं छाँड़त मौतने आय सँदेश दये हैं ॥ आज कै काल्हि चले उठ मूरख तेरेही देखत केते गये हैं। सुंदर क्यों नहिं राम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहे हैं ॥ २३३ ॥

पद चेतावनी।

झूलना—इन्द्रिय जीत करे वश अपने, तजै जगतकी आसा है। जोडै प्रेम नेम साईंसों, रहै दरशरस प्यासा है॥ आपा मेट गर्द कर डारे शिरदे लखै तमासा है। यहि विधि गहै संत तब होवै, यों क्या दूध बतासा है॥ २३४॥

समता गहै सत्यको जानै दुःखसुःख सम आड़ा है। मेटै मान मोह मगरूरी कामक्रोध सो खाड़ा है॥ छोड़ कुसंग संगसम साधै सुरतशब्द मन गाड़ा है। यों शिरके पद चलै संग ढिग ---ानु हलुवा माडा है॥ २३५॥

ाग जंगला—सतगुरु पूरा पाया भला मैं साहब पूरा पाया ाढ़ कंचनके महले त्यागे त्यागी सगरी माया है॥ दारा ानों मैं त्यागे गोविंद हिरदैमें समाया है। जन्म जन्मका दुखिया छिनमें दुःख गँवाया है॥ खुदी गई आनंद संग गोविंदका गुण गाया है। मन महलां मैं सेज बिछावा जाय समाया है॥ जाग्रत स्वपना दोनों त्यागे तुरियां-जमाया है। पवनदा घोडा सुरत लगामां भयदा चाबुक है॥ प्यादेते असवार बनाया बिन पंखा जु उडाया है। अपनेदी रेणी रंगसां गूढा रंग रँगाया है॥ कहत विचारा ुख प्यारा प्याला प्रेम पिलाया है॥ २३६॥

ारा राम बसता है तेरेही मनमें मूरख काहेको भटकत । दूध दहीकी मटिया जमाई तामें माखन वस्तु लभाई मथन बिना कछु हाथ न आवे जैसे चन्दा छिप जात घनमें॥ पथरीमें आग जाने सब कोई चकमक झाड़के। धूनी रमाई गुरु

अपनेसे आज्ञा पाई जैसे मुख देखत दर्पनमें मेंहदीके पातमें लाली रहत है, विन घोटे रंग चढ़ै न हाथपै ऐसी खोजना करो मन अपने निश्चयकर चितला साधनमें ॥ गजके कुंभसों निकस्यो मोती अँधरेसे क्या कीमत होती हेमदास कोई विरला जाने ज्ञानी समझत हैं सैननमें ॥ २३७ ॥

कोई मोड़ो दिलांदियां वागांनूं ॥ मन समझाया समझे नाहीं रातदिने उठ पैंदा राहीं ढूँढन जाय स्वादांनूं । यह मन मेरा कौआ कहिये बिना हंस क्यों मोती लहिये मिल हंसा तज कागांनूं ॥ और किसीको दोष न दीजे जो कछु वीजिया सो लुन लीजै दोष है अपन्यॉं भागांनूं । कहै हुसेन सुनो भाई साधो मन मजबूत पकड़ जब बांधो फेरकी करो कितावानूं ॥ २३८ ॥

कुंडलिया—भेड़िनमें जिमि सिंहको, शावक रह्यो भुलाय । तिनके सँग भे भे करै, निज पौरुष विसराय ॥ निज पौरुष विसराय तिनहिंके धारे लक्षण । यों नहिं समुझै नेक सकल ये मेरे भक्षण ॥ तैसे गोगण संग फिरत मन पगभ्रम वेड़ी । आप अपनपौ खोय भयो भेड़िनमें भेड़ी ॥ २३९ ॥

राग भैरवी—याद करेगा इस जीवननू भला मुसाफिर वंदे ! आयासी कछु लाहे कारन रँझगिया केहडे धंधे ॥ भवसागर तैनू तरना पौसी पापपुण्यकर कंधे । भाई वंधु कुटुंब घनेरा जन्म जन्मके अंधे ॥ कहत कबीर सोई पार उतरि गये हरिहर नाम जपंदे ॥ २४० ॥

राग प्रभाती—तू खुशभर नींद क्यों सोया । नगारा कूचका होया ॥ नगारा मौतका बाजे । ज्यों सावन मेघुला गाजे ॥ जिन्होंसँग नेहसी तेरा । किया उन खाकमें डेरा ॥ न

पाया फेर मुड़ फेरा । नगारा० ॥ कहाँ गये मुल्कके वाली । जो चलते हंसकी चाली । गये दरबार कर खाली । नगारा० ॥ बालपन खेलकर खोया । जवानी नींद भर सोया ॥ बुढ़ापा देखके रोया । नगारा० ॥ जिन्हों शिर रेशमी चीरे । चबावें पानके बीरे ॥ तिन्होंको खागये कीरे । नगारा० ॥ कहाँ गये मीर अरु काजी । जो चढ़ते तुर्कियाँ ताजी ॥ गये वैरान कर बाजी । नगारा० ॥ जो टूटी अंबकी डाली । जो सोता बागका माली ॥ बड़ेही शौकसे पाली । नगारा० ॥ जिन्हों शिर केश थे काले । मलाइयाँ दूधसे पाले ॥ कि आखर अगनमें जाले । नगारा० ॥ जिन्होंके लाख थे पल्ले । वो खाली हाथ कर चल्ले ॥ उन्होंने जंगले मल्ले । नगारा०॥ जिन्हों घर रेशमी वस्ते । तिन्हों-पर बैठकर हँसते॥ सो देखे खाकमें धसते । नगारा० ॥ जिन्हों घर पालकी घोड़े । सोहैं तन मखमली जोड़े ॥ सोई मुख मौतने तोड़े । नगारा०॥ जिन्हों घर झूलते हाथी । हजारों लोग थे साथी॥ तिन्होंको खागई माटी । नगारा० ॥ जो तन धन गर्व नहिं करना । कि आखर खाकमें रलना ॥ वली कहे फिर नहीं मिलना । नगारा मौतका बाजे ॥ २४१ ॥

राग धनाश्री—मेरी आँख दिया हो लाज मूलन आइया यार ॥ मेरी मेरी रावण कर गये शाह सिकन्दर दारा । बाजी-गरदी बाजी वांगूँ रच्या कूड़ पसारा ॥ मेरी मेरी कैरो कर गये दुर्योधनके भाई । सोलां योजन छत्र झुलतसी देही गिर्झन खाई ॥ मेरे पुत्र मेरी या धीयां मेरा कुटुंब मेरे भाई । जिन्हादी खातर पाप कमावें तिन्हा ठौर न काई ॥ यह दुनिया है चार दिहाड़े नाकर मनदा भाणा । कहै हुसेन फकीर साईं दानंगी पैरीं जाणा ॥ २४२ ॥

राग जंगला—राम रंग लागा हरी रंग लागा । मेरे मनका संसा भागा ॥ जब मैं होती थी अहिल दिवानी तब पिया मुखों न बोले । जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर खोले ॥ साहब बोले तो अंतर खोले सेजाडेयां सुख दीजे । रोम रोम प्यारे रंग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके ॥ साँचे मनते साहबनेड़े झूँठे मनते भागा । हरिजन हरिजीको ऐसे मिलत जैसे कंचनसंग सुहागा ॥ लोकलाज कुलकी मरजादा तोड़दियो जैसे धागा । कहत कबीर सुनो भाइ साधो भाग हमारा जागा ॥ २४३ ॥

पीलेरे अवधू हो मतवारा प्याला प्रेमहरीरसका रे ॥ पाप-पुण्य दोउ भुगतन आये कौन तेरा है तू किसका रे । जो दम जीवे हरिके गुण गा ले धन योवन स्वपना निशिका रे ॥ वाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारीवशका रे । वृद्ध भयो कफ-वाईने घेरयो खाट पड़ा नहिं जाय मसका रे ॥ नाभिकमलमें है कस्तूरी कैसे भरम मिटे पशुका रे । बिन सतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा फिरे वनका रे ॥ लाख चुरासी उबरयो चाहे छोड़ कामिनीका चसका रे । प्रेममगन चरणदास कहत हैं नख-शिख रूप भइयो विसका रे ॥ २४४ ॥

राग भैरवी—माटी खुदी करें दायार । माटी जोड़ा माटी घोड़ा माटीदा असवार ॥ माटी माटीनूं मारन लागी माटी दे हथियार । जिस माटीपर बहुती माटी तिस माटी हंकार ॥ माटी बागबगीचा माटी माटी दी गुलजार । माटी माटीनूं देखन आई माटीदी बहार ॥ हँस खेल फिर माटी होई पोंदी पांव पसार । वुल्ला शाह वुझारत वुज्झी लाह सिरोंभों मार ॥ २४५ ॥

वार वार समझाय रहो मैं मान लेरे मन मेरी कहीको । दुख

सुख सो वीती सो वीती याद न कर बरवाद वहीको ॥ एक ब्रह्म पूरण सब जगमें छोड़ कपटकी गाँठ गहीको । जानकीदास सुमिरु श्रीरघुवर गई सो गई अब राख रहीको ॥ २४६ ॥

गजल—जिन प्रेमरस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुवा। जिन इश्कमें शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुवा ॥ मशहूर हुआ पंथमें साबित न कीया आपको । आलिम और फाजिल बना दाना बना तो क्या हुवा ॥ देखी गुलिस्ताँ बोस्ताँ मतलब न पाया शेखका । सारी किताबाँ यादकर हाफिज हुवा तो क्या हुवा ॥ जबलग प्याला प्रेमका पीकरके मतवाला नहीं। रागतार मंडल बाजते जाहिर सुना तो क्या हुवा ॥ जोगी व जंगम वेषकर कपड़े रँगाकर पहिनते । वाकिफ़ नहीं उस हालके कपड़े रँगे तो क्या हुवा ॥ दिलमें दरद नहिं दियाको वैठा मुशाइख होयके । दिलका हरट फिरता नहीं तसवी फिरी तो क्या हुवा ॥ औरां नसीहत तू करे आप अमल करता नहीं । दिलका कुफर टूटा नहीं हाजी हुवा तो क्या हुवा ॥ जब इश्कके दरियावमें गर्काव तू होता नहीं । गंगा यमुन गोदावरी न्हाता नहीं तो क्या हुवा ॥ वलीराम पुकारत है यही पी पी जो करते जीदिया। मतलब हासिल ना हुवा रो रो मुआ तो क्या हुवा॥२४७॥

राग काफी—ना जानूँ मेरा राम कैसा है । मुल्ला होके बाँग जो देवै क्या तेरा साहब बहरा है ॥ कीड़ीके पग नेवर वाजे सोभी साहब सुनता है । माला पहरी तिलक लगाया लंबियाँ जटा बढ़ाता है ॥ अंतर तेरे कुफर कटारी यूँ नहिं साहब मिलता है । कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी जोड़ जमींपर धरता है॥ चलनेकी जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है॥ हीरा

होवे परख दिखायाँ कौड़ी परख न कैसा है ॥ कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसेको तैसा है ॥ २४८ ॥

राग धनाश्री–प्रीतम जानि लेहु मनमाहीं । अपने सुखसे सब जग बाँध्यो को काहूको नाहीं ॥ सुखमें आय सभी मिल बैठत रहत चहूँदिशि घेरे । विपति परी सबही सँग छाँडत कोउ न आवत नेरे ॥ घरकी नारि बहुत हित जासों सदा रहत सँग लागी । जबहीं हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कर भागी ॥ या विधिको व्यौहार बन्यो है जासों नेह लगायो । अन्तकाल नानक बिन हरिजी कोऊ काम न आयो ॥ २४९ ॥

राग होरी–तन मन रंग बनाय पिया सँग खेलिये होरी ॥ तार बनाऊँ जियाकी तनका करूँजी तँबूरा । खेलूँ अपने श्यामसों सब कारज पूरा ॥ शीशी भरी गुलाबकी हत्थ लेहों पिचकारी । छिरकूँ अपने श्यामपै सब देखनहारी ॥ चोआ चंदन मेलके हत्थ लीयोजी अबीरा । सब संतन मिलि खेल्यो सँग दास कबीरा ॥ २५० ॥

राग सोरठ–उपजे निपजे निपज समाई । नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा । अंतकी बार नहीं कछु तेरा ॥ अनेक जतन कर काया पाली । मरती बेर अगिन सँग जाली ॥ चोवा चन्दन मर्दन अंगा । सो तनु जलै काठके संगा ॥ कहत कबीर सुनो रे गुनिया । विनशेगो रूप देखेगी दुनिया ॥ २५१ ॥

या जग मीत न देख्यो कोई । सकल जगत अपने सुख लाग्यो दुखमें संग न होई ॥ दारा मीत पूत संबंधी सगरे धनसों लागे । जबहीं निर्धन देख्यो नरको संग छाँड सब भागे ॥ कहा कहूँ या मन बौरेको इनसों नेह लगाया । दीनानाथ सकल भय-

भंजन यश ताको विसरांया ॥ श्वान पूँछ ज्यों भयो न सूधो बहुत जतन मैं कीनो। नानक लाज विरदकी राखो नाम तिहारो लीनो ॥ २५२ ॥

मन रे प्रभुकी शरण विचारो । जिहि सुमिरन गणिकासी उधरी ताको यश उर धारो ॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमिरन अरु निर्भय पद पाया । दुखहर्ता या विधिको स्वामी तैं काहे बिसराया ॥ जबहीं शरण गही किरपानिधि गज ग्राहते छूटा । महिमा नाम कहाँलग बरणौं राम कहत बन्धन तिहिं टूटा ॥ अजामील पापी जग जाने निमिषमाहिं निस्तारा । नानक कहत चेत चिन्तामणि तैं भी उतर सपारा ॥ २५३ ॥

राग परज—मन पछितैहौ औसर बीते । दुर्लभ देह पाय हरिपद भज कर्म वचन मनहीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न कालवलीते । हम हम कर धन धाम सँवारे अंत चले उठ रीते ॥ सुत वनितादि जान स्वारथ ना कर नेह इन्हींते । अंतौ तोहिं तजैंगे पामर तू न तजै अवहीते ॥ अब नाथहिं अनुराग जाग जड त्याग दुराशा जीते । बुझै न काम अगिन तुलसी जिमि विषयभोग बहु वीते ॥ २५४ ॥

राग कान्हरा—सुमिरन कर श्रीरामनाम दिन नीके वीते जाते हैं ॥ तज विषय भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते हैं सो पाते हैं। कौन तुम्हारा कुटुंब परिवारा किसके हो याँ कौन तुम्हारा किसके बल हरिनाम विसारा सब जीतेजीके नाते हैं ॥ लाख चुरासी भ्रमके आया वड़े भाग्य मानुप तन पाया तापर भी नहिं करी कमाई फिरि पीछे पछताते हैं। जो तू लागे विषयविलासा मूरख फँसे मौजकी फाँसा क्या देखे श्वासनकी आसा गये फेर नहिं आते हैं ॥ २५५ ॥

राग कालिंगड़ा—क्या देख दिवाना हुआ रे ॥ माया वनी सारकी सूली नारि नरकका कूआ रे । हाड़ चाम नाड़ीको पिंजर तामें मनुआँ सूआ रे ॥ भाई वन्धु कुटुम्ब घनेरा तिनमें पच-पच मूआ रे । कहत कवीर सुनो भाई साधो हार चल्यो जग जूआ रे ॥ २५६ ॥

राग तिलंग—यह जग दर्शन मेला है । जो तू आया है ईहांपै कछु देखभाल मिलजुल चल फिर हँस वोल वतादे लेखाभी किस कारनते सवको इक ठौर इकेला है ॥ दिल भरके देख सकुच मत रे जिस जागे जो जो माया है । ईहाँ तेरी जिनस जमा है और कोई नहीं पराया है ॥ पर इतना कहना मान मेरा जो करना है सो जलदी कर । टुक देर तोहिं कोइ दमकी है और ज्यादा नहीं झमेला है ॥ इस मन्दिर वीच निरख तू क्या रंग विरंगी मूरत है । हिरदैसे तनक परख तू इस मूरतमें क्या सूरत है ॥ धनि उस कारीगरको कहिये जिन अपने हाथ वनाई है । गुन ज्ञान जोवन छवि रूप रंगमें एकही एक नवेला है ॥ यह जो तू देखे आपसमें इहाँ एकसे एकका है नाता । कोई वाप वना कोई वेटा कोई चाचा भतीजा कहलाता ॥ कोइ मीयाँ आपको जाने है कोई दास आपको माने है । कोई पीर मुरीद कहाता है कोई गुरू कोई चेला है ॥ अवलों तव ईहाँ है सवको सेरे हैं वाग वहारें हैं।मन आनंद और चैनै हैं करते हैं लहरे मारे हैं ॥ पर सुखके समय यह हैं सगरे यह देखनहारे हैं । आजहीके कल आप आपको चल जायेगा एक इकेला है ॥ जिसदम यह अपना अपना है इहाँसे रस्ता गह जावेंगे ॥ यह दोस्ती निसवत नाते सव इहाँके इहाँ रह जावेंगे ॥ यह वूँदें जिस दरियाकी हैं

सब मौजहीसे मिल जावेंगी। फिर कछु टंटा है न बखेड़ा है झगड़ा है ना झमेला है ॥ २५७ ॥

राग सोरठ—रे मन समझ ऐसी बात। नदीके परवाह ज्यों सब जगत चल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अरु पिता वनिता बन्यो आय सँघात। बसे संग सरायके परभातको उठि जात ॥ आकाश धरती पौन पानी चंद सूरज रात। काल सबको खायगा मन लाय बैठो घात ॥ भजन कर गोविंदका सतगुरु बताई बात। नँदलाल प्रभुजी सुमिर रे मन उतर भौ जलजात॥

राग झँझौटी—आरती सदाही होत संतन घटमाहीं। ब्रह्म-जोत प्रगट भई विकसत दरशाई ॥ वेदके वजंत्र बाजें ज्ञानधूप धुखन लागे समता चित छाय रही जिह्वा गुण गाई। प्रेमकी जो बाती लागी सकल ब्रह्मजोत जागी अनुभवसों झूमत भाग इकसंग मिल जाई ॥ सोहं धुन शंखपूर भेद भरम किये चूर इत उत सब चिद्स्वरूप आतम दरशाई ॥ कहै कवि लोकदास आश्चर्य गुरु कियो प्रकाश अति हुलास होत जहाँ जन्ममरण नाहीं ॥२५९॥

राग विहाग—काहेको बिसारी रे जपाकर माला। रामभज-नको तुलसीकी माला ओढ़नको मृगछाला ॥ खानपानको बासी जो टुकड़ा रहनेको कुंज तमाला। धन योवन मदमें मत भूलै जम करिहै बेहाला ॥ निशिदिन रट हरि नाम छिनंहि छिन रहो प्रेममतवाला। कृष्णप्रियाबिन हितू न जगमें सब झूँठा जंजाला॥

राग धनाश्री—सब दिन गये विषयके हेत। तीनौंपन ऐसेही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ रूँधो श्वाँस मुख बैन न आवत चन्द्र ग्रस्यो जिमि केत। तजि गंगोदक विषयकूप जल हरि तजि पूजत प्रेत ॥ कर प्रमाद गोविंद बिसारयो बूड़यो कुटुँब समेत ॥ सूरदास कछु खरच न लागत रामनाम मुख लेत ॥ २६१ ॥

केते दिन हरिसुमिरन विन खोये । परनिंदा रसनाके रससे अपने करम विगोये ॥ तेल लगाय कियो तनु मर्दन वस्तर मल मल धोये । तिलक लगाय चले वन स्वामी विपयनके सँग जोये॥ काल वलीते सब जग काँप्यो ब्रह्मादिक मुनि रोये । सूर अधमकी कौन गती है उदर भरे भर सोये ॥ २६२ ॥

राग सारंग—तजौ मन हरिविमुखनको संग । जिनके संग कुबुद्धि ऊपजे परत भजनमें भंग ॥ काम क्रोध मद लोभ मोहमें निशिदिन रहत उमंग । कहा भयो पयपान कराये विष नहिं तजत भुवंग ॥ कागहिं कहा कपूर खवाये श्वान न्हवाये गंग । खरको कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ॥ पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतो करत निपंग । सूरदास खल कारी कामर चढ़त न दूजो रंग ॥ २६३ ॥

राग विभास—गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मंडलीमें जायके । धायो न धमक वृन्दा विपिनकी कुंजनमें रह्यो न शरण जाय विट्ठलेशरायके ॥ नाथजू न देख छक्यो छिनहूँ छबीली छवि सिंह पौंरि परयो नाहिं शीशहू नवायके । कहै हरिदास तोहिं लाजहू न आवै नेक जनम गँवायो ना कमायो कछु आयके ॥ २६४ ॥

राग देश—राधेकृष्ण क्यों नहिं वोलो पीछे पछताओगे ॥ जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लियो यह तो मानुषदेही बंदे फेर नहिं पावोगे । त्रिया और कुटुंबकी खातर पच पचके कमावोगे ॥ माया तेरे संग न चाले जगमें भरम गमावोगे । आवेंगे वे यमके दूत तव पकड संगमें जावोगे ॥ तुमसे माँगेंगे हिसाब प्यारे क्या बतावोगे ॥ सूर प्रभुकी शरण आओ आवागमन मिटावोगे।श्रीठाकुरजीको ध्यान धरेसे पार लग जावोगे॥

ऐसी चतुरता पर छार ॥ करत वादविवाद जित तित हित न नन्दकुमार । रूप कुल गुण कूप मंडित बढ्यो गर्व अपार ॥ और हमसम नाहिं कोऊ दूसरो संसार । मात पित सुत भ्रात मर गये औ सकल परिवार ॥ जानत हैं हमहूँ मरेंगे तऊ न तजत विकार । लेत नाहिं प्रसाद सादर करत लोकाचार ॥ नारि मुखपै जाय पीवत अधर लिपटी लार । सन्तजनसों द्रोह मानत सुहृद साहूकार ॥ काम क्रोध और लोभ व्याप्यो मोह मद हंकार । सूर विमुखन परिहरहु सतसंग वारंवार ॥ २६६ ॥

राग सिंधु काफी—रटत रटत राधा मनमोहन रसना ना फलका झलकाई । लिखत लिखत लीलारस द्वन्दज अँगुरिन पोर जो ना घिस जाई ॥ ललितकिशोरी धिग यह देही ऐसो जीवन जन्म वृथाई । युगलविहारीको मग जोवत जो न भई नयनमें झाई ॥ २६७ ॥

राग जैजैवन्ती—रचके सँवारे नाहिं अंग अंग श्यामाश्याम, एरी धिकार और नानाकर्म कीवेपै । पाँयनको धोय निज करते न पान कियो, आली अँगार परे शीतल पय पीवेपै ॥ विचरे ना वृन्दावन कुंजन लतान तरे, गाज गिरे अन्य फुलवारी सुख लीवेपै । ललितकिशोरी बीते वरष अनेक हग, देखे नाहिं प्राण-प्यारे छार ऐसे जीवेपै ॥ २६८ ॥

राग कालिंगड़ा—सब दिन होत न एकसमान ॥ इकदिन राजा हरीचंदगृह सम्पति मेरुसमान । इकदिन जाय श्वपचगृह सेवत अंबर हरत मशान ॥ इकदिन दूलह बनत बराती चहुँ-दिशि गड़त निशान । इकदिन डेरा होत जंगलमें कर सूधे पग तान ॥ इकदिन सीता रुदन करत हैं महा विपिन उद्यान । इक-

दिन रामचन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्पसमान ॥ इकदिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्रीभगवान । इकदिन द्रौपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ प्रगटत है पूरबकी करनी तज मनशोच अजान । सूरदास गुण कहँलग बरणौं विधिके अंक प्रमान ॥२६९॥

मूरख छाँड वृथा अभिमान । औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिनको महिमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवीपर रूप तेज बलवान । कोन बच्यो या काल व्यालते मिटगये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना नारी चंद्रसमान । अंतसमय सबहीको तजकर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयनमें जा विधि मर्कट श्वान । छिनभर बैठ न सुमिरन कीनो जासों होय कल्यान ॥ रे मन मूढ अन्त जिन भटके मेरो कह्यो अब मान । नारायण व्रजराज कुँवरसों वेगहिं कर पहिचान ॥ २७० ॥

भज मन श्रीराधा गोपाल । गोल कपोल अधर बिंवाफल लोचन परम विशाल ॥ मुकुट चन्द्रिका शीश लसत है घुँघुवारे वरवाल । रतनजडित कुंडल कर कंकण गल मोतियनकी माल॥ पग नूपुर मणिखचित बजत जब चलत हंसगति चाल । गोर श्याम तनु वसन अमोलक कर मेंहदीसों लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बोलन अधिक रसाल ॥ कुंजभवनमें बैठे दोउ जन गावत अद्भुत ख्याल ॥ नारायण या छविको निरखत पुनि पुनि होत निहाल ॥ २७१ ॥

अथ रागमाला ।

दोहा–प्रथम सुमिरिये गुरुचरन, जिन दीन्हों गुणदान ।
ज्ञानी गुण गावे सदा, ध्यानी धरे जु ध्यान ॥ १ ॥
हरिसम तीनों लोकमें, दूजा नाहीं कोय ।

प्रगट कियो रस जगतमें, नाद कहावत सोय ॥ २ ॥
आदि नाद अनहद भयो, ताते उपज्यो वेद।
पुनि पायो वा वेदते, सकल सृष्टिको भेद ॥ ३ ॥
प्राण खरे षटराग सुनि, तव उपज्यो वैराग।
बाल तरुण अरु वृद्धको, ताते भावत राग ॥ ४ ॥
जगको धीरज राग है, राग संगकी खान।
मन भंजन इह राग है, राग प्रेमके प्रान ॥ ५ ॥
राग अभूषण रूपको, रूप रागको भोग।
याहीते सब कहत हैं, राग रंग संयोग ॥ ६ ॥
राग हरै सब रोगको, राग चहै रसभोग।
विरही बूझै रागको, उपजै विरह वियोग ॥ ७ ॥

सरस्वतीचूर्ण।

दोहा–शतावरी अजमोद अरु, भँगरा जीरा लाय।
ब्राह्मी वासा मुलहटी, हरड कूट मँगवाय ॥ ८ ॥
शंखाहुलि वच बावची, सेंधा ले समभाग।
पीसै छानै प्रेमयुत, सेवै सह अनुराग ॥ ९ ॥
एक हथेली भरि सदा, सेवै दिन चालीश।
होय रसीलो तबहि, वढे बुद्धि वागीश ॥ १० ॥

[१]षट्रागनामवर्णन।

दोहा–प्रथम राग भैरव कह्यो, मालकोश पुनि जान।
मेघराग श्रीराग पुनि, दीपक राग वखान ॥ ११ ॥
वहुरि राग हिंडोल है, पंचम वेद प्रमान।
षट् रागनके नाम ये, भाषत सकल सुजान ॥ १२ ॥

---

१ रागरागिनियोंके नाम हम प्रथम भागमें लिख चुके हैं।

षटरागगुणवर्णन ।

दोहा–भैरव स्वर सुरताग है, कोल्हू चले जु धाय ।
मालकोश जब जानिये, पाहन पिघल बहाय ॥ १३ ॥
बरपै घन जलधार अति, मेघरागके बोल ।
चले हिंडोला आपुते, सुनत राग हिंडोल ॥ १४ ॥
स्वर सुनते श्रीरागकर, सूखो वृक्ष हराय ।
दीपकते दीपक बरै, जो कोउ जानै गाय ॥ १५ ॥

षटरागसमयवर्णन ।

दोहा–निशिके अंतिम प्रहरमें, भैरव राग बखान ।
मालकोश तब गाइये, जब सब निकसै भान ॥ १६ ॥
एक प्रहर जब दिन चढ़े, कहे राग हिंडोल ।
ठीक दुपहरीरे समय, दीपकके स्वर बोल ॥ १७ ॥
मेघराज तबहीं भलो, जबहिं मेघ बरसाय ।
श्रीराग चौथे प्रहर, जबलों दिन अथवाय ॥ १८ ॥
फाल्गुनमें ये राग सब, जागत आठो याम ।
ऋतु वसन्तमें निशिसमय, एक याम विश्राम ॥ १९ ॥
भैरव शरद कुशक शिशिर, अरु हिंडोल वसन्त ।
दीपक ग्रीषम हेमश्री, मेघसु पावस अन्त ॥ २० ॥

रागिनीनामवर्णन ।

दोहा–भैरवका ध्वनि भैरवी, बंगाली बैरारि ।
मधुमाधव अरु सिंधवी, पांचो विरहिनि नारि ॥ २१ ॥
टोड़ी गोरी गुणकली, खंभायत पहिचान ।
और कुकविको कहत हैं, मालकोशकी जान ॥ २२ ॥
रामकली पटमंजरी, और कहैं देवसाखि ।
ये नारी हिंडोलकी, ललित विलावल राखि ॥ २३ ॥

देशी नट अरु कान्हरो, केदारो कामोद ।
दीपककी प्यारी सबै, महाप्रेमपरमोद ॥ २४ ॥
धनाशरी आसावरी, मारू बहुरि बसन्त ।
श्रीरागकी रागिनी, मालशिरी है अन्त ॥ २५ ॥
भोपाली अरु गूजरी, देशकार मल्लार ।
बंकवियोगिनि कामिनी, मेघरागकी नार ॥ २६ ॥

वाद्य (बाजोंके) भेदवर्णन ।

दोहा—जगमें सब सुरता कहैं, बाजे साढ़ेतीन ।
खाल तार अरु फूँकि पुनि, अरधताल स्वरहीन ॥ २७ ॥
खाल नगारे ढोल डफ, और पखावज जान ।
तार तँबूरा बीन है, बहुरि रबाब बखान ॥ २८ ॥
फूँक नफीरी बाँसुरी, सुरनाई करनाय ॥
ताल मँजीरा झाँझ सब, बाजे दिये बताय ॥ २९ ॥
आधा बाजा कहत हैं, कठतारी स्वरहीन ।
भेद कहे बाजानके, गुणिजन जे परवीन ॥ ३० ॥

तथा ७० बाजोंके नाम ।

दोहा—डमरू डफ ढोलक गवर, बसुरी चंग मृदंग ।
सारंगी अथ डिमडिमी, घुँघरू अथ मुँहचंग ॥ ३१ ॥
घढा मँजीरा कींगरी, अलगोजा कठताल ।
झाँझ दाइरा ठीकरी, चुटकी पुनि घडियाल ॥ ३२ ॥
घंटा पघारु वंकिया, अथ कानून सितार ।
बीना और रबाब है, जलतरंग जंतार ॥ ३३ ॥
तबल तँबूरा तोरई, भेरी अथ करनाल ।
मौहर नाम सरोद पुनि, हुड़क शंख मुहनाल ॥ ३४ ॥

तासे मरफा खंजरी, पुंगी काहल जान ।
नरसिंहा ताहूस पुनि, सहनाई करि मान ॥ ३५ ॥
झालरि मारू ढोल अथ, पपिहा और नगाढ़ ।
अर्गन पैना जानिये, सब बाजनके गाढ़ ॥ ३६ ॥
ताली अथ सीठी गनी, और तमूर बखान ।
पुनि इकतारा नाम है, और नफीरी जान ॥ ३७ ॥
थाली और चिकायरा, और उपंग दमाम ।
ये चौसठ बाजे कहे, परम घोर अभिराम ॥ ३८ ॥
शृंगी दंमल तुरम पुनि, गुफली सारंदाह ।
ढफलीयुत सत्तरि गिनौ, घट मिलि चौंसठमाँह ॥ ३९ ॥
पीट घसीटन फूकनो, चौथो छेड़न जान ।
सब बाजनके चारि ये, भापत भेद सुजान ॥ ४० ॥

शुद्ध अलापकरन ।

दोहा–बैठे आसन उँटके, तौ शुध होय अलाप ।
चलते टेढ़े स्वर भरै, जानौ महा कलाप ॥ ४१ ॥

भैरवरागस्वरूप ।

दोहा–भैरव शिव छबि शिर जटा, श्वेत वसन त्रय नैन ।
मुण्डनकी माला गरे, सिंहरूप सुख दैन ॥ ४२ ॥

सवैया–शिवमूरति भैरवको भाव बन्यो त्रय नैन सुमुण्डकि माल गरे । पट श्वेत सबै तनुमें पहिरे हिरदै भगवानको ध्यान धरे ॥ तिरशूल विराजत है करमें सब भामिनिकी मति लेत हरे। मुख छार लगी द्युति दूनी भई चित चाहनमें छबि जात छरे ॥४३॥

मालकोश रागस्वरूप ।

दोहा–मालकोश नीले वसन, श्वेत छरी लिये हाथ ।
मोतियनकी माला गरे, सकल सखी हैं साथ ॥ ४४ ॥

सवैया—कौशकको उन मान भलो तनु गौर बिराजत है पट नीले। माल गरे तनु श्वेत छरी रसप्रेम छक्यो छवि छैल-छवीले ॥ कामिनिके मन मोहत है सबके मनभावत रूप रसीले। भोर भये उठि बैठ्योही भावत नागर नायक रंग रँगीले ॥ ४५ ॥

हिंडोलारागस्वरूप।

दोहा--पीतवसन हिंडोलके, है जु हिंडोलेमाहिं।
सखी झुलावैं चावसों, गाय गाय मुसकाहिं ॥ ४६ ॥

सवैया—कीन्हे वनाव महा छवि सुन्दर भावते बैठो हिंडोलहिं डोलै। झूल झुलावत औरिनहूँ सब गावत है सखियाँ मुख खोलै ॥ गोरे जो गात दिपात भरी द्युति दामिनिसी मनु पीत पटोलै। केलि करै अवला अलबेली अलौल सबै रस काम कलोलै ॥ ४७ ॥

मेघरागस्वरूप।

दोहा—श्याम वसन है मेघको, गहै हाथ तरवारि।
अति आतुर चातुर खरो, गावत सुरति विचारि ॥ ४८ ॥

सवैया—मेघ मलार महाद्युति सुन्दर इंद्रहिकी छवि आप वनो। पहरे पट श्याम गहे तरवारि जु ग्रंथनमें इहभाँति भनो ॥ जैसो जहाँ चहिये सोइ अंग सु तैसिय भाँतिते ठीक ठनो। कामको आतुर है अतिही तियके रतिको चितचाव घनो ॥४९॥

श्रीरागस्वरूप।

दोहा—श्रीयरागके करकमल, पुहुपरूप पट लाल।
वर्ष अठारहको तरुण, गावत कंठ रसाल ॥ ५० ॥

सवैया—वर्ष अठारहको तरुनो सुख देखतही सबके मन भावै। वाम सबै वश की अपने गुण गायके भावते भेद बतावै ॥

रातो जो वागो विराजत है कर वारिज फूल लिये मुसकावै ।
पुष्पके रूप स्वरूप वन्यो सवहीमें भलो श्रीराग कहावै ॥ ५१ ॥

दीपकरागस्वरूप ।

दोहा--दीपक गजकी पीठपर, वैठ्यो वागे लाल ।
मुक्तमाल पहिरे गरे, चहूँ ओर रसवाल ॥ ५२ ॥

सवैया—दीपकको परताप वड़ो चढ़ि वैठ्यो गयंदकी पीठ विराजे । अंवर रातो शरीर सवै मुक्तानकी माल गरे छवि छाजे॥ संग सखी सव सोहत हैं तिनमाहिं जो आय गयंद सो गाजे। साँवरो रूप अनूप महाद्युति देखत दुःख दिगंतर भाजे ॥ ५३ ॥

भैरवकी रागिनी भैरवीस्वरूप ।

दोहा--शिव पूजत कैलाशपर, दोउ करनमें ताल ।
श्वेत चीर अँगिया अरुण, रूप भैरवी वाल ॥ ५४ ॥

वंगाली रागिनीस्वरूप ।

दोहा--भसपिटारी कर गहे, हाथ लिये तिरशूल ।
वंगाली व्याकुल भई, गई सवे सुधि भूल ॥ ५५ ॥

वैरारिरागिनीस्वरूप ।

दोहा--कदमपुष्प कानन धरे, कर कंचन शृंगार ।
शीश केश सोहत छुटे, श्वेत वसन वैरार ॥ ५६ ॥

मधुमाधवीस्वरूप ।

दोहा--कंचनतनु लोचन कमल, नागरि महा अनूप ।
पिय पैठेही हँसत है, मधुमाधवीस्वरूप ॥ ५७ ॥

सिंधवीरागिनीस्वरूप ।

दोहा--कान फूल दुपहारिया, पहरे वस्तर लाल ।
क्रोधवंत तिरशूल कर, रूप सिंधवी वाल ॥ ५८ ॥

मालकोशकी रागिनी टोड़ीस्वरूप।

दोहा--टोड़ी कर वेणी गहे, गावत पियके हेत।
चंचल छवि मृगमोहनी, पहिरे वस्तर श्वेत ॥ ५९ ॥

गौरीरागिनीस्वरूप।

दोहा--गौरी छवि अति साँवरी, अंधकूप धरि कान।
तृपावन्त नित कामकी, गावत मीठी तान ॥ ६० ॥

गुणकली रागिनीस्वरूप।

दोहा--छुटे केश शिर गुणकली, बैठी पियके पास।
नीची ग्रीवा करि रही, अतिही चित्त उदास ॥ ६१ ॥

खंभायत रागिनीस्वरूप।

दोहा--खंभायत गोरे वदन, गावत कोकिल बैन।
अति आतुर चातुर खरी, कामवती दिन रैन ॥ ६२ ॥

कँकुवि रागिनीस्वरूप।

दोहा:-कँकुवि नायिका निशिसमय, जागी पियके संग।
रतिमाने कै चह्रन अति, अंग अंग भे रंग ॥ ६३ ॥

हिंडोलकी रागिनी रामकलीस्वरूप।

दोहा--रामकली नीले वसन, कंचनसी सब देह।
प्रियवाणी गावत उठी, पियके परम सनेह ॥ ६४ ॥

पटमंजरीरागिनीस्वरूप।

दोहा--विरहभरी पटमंजरी, मनमैली तनु छीन।
सखी सीख अति देत है, भई प्रेमआधीन ॥ ६५ ॥

देवसाखिरागिनीस्वरूप।

दोहा--पियके करपर कर धरे, अति व्याकुल मन काम।
देवसाखि दुर्बल वदन, महाविरहिनी नाम ॥ ६६ ॥

ललितरागिनीस्वरूप ।

दोहा--ललित गरे माला पुहुप, सुंदर तरुणी जानि ।
गोरी छबि बस्तर अरुण, वदन मदनकी खानि ॥ ६७ ॥

बिलावलरागिनीस्वरूप ।

दोहा--कामदेवको ध्यान धरि, पटते पट संगीत ।
करत शृँगार बिलावली, नीले वस्तर प्रीत ॥ ६८ ॥

मेघकी रागिनी भोपालीस्वरूप ।

दोहा--भोपाली विरहिन बड़ी, केशरि गेरे चीर ।
भयो विरहकी ज्वालते, पियरो सबै शरीर ॥ ६९ ॥

गूजरी रागिनीस्वरूप ।

दोहा--विरह सताई गूजरी, रोवत छूटे केश ।
कामदेव कानन लग्यो, दियो इहै उपदेश ॥ ७० ॥

देशकाररागिनीस्वरूप ।

दोहा--देशकार कंचनवरन, खेलत पियके संग ।
हिय हुलास जो कामकी, चढ्यो चौगुनो रंग ॥ ७१ ॥

मलाररागिनीस्वरूप ।

दोहा--बीन गहे गावत बहुत, रोवत है जलधार ।
तनु दुर्बल विरहा दही, विरहिनि नारि मलार ॥ ७२ ॥

टंकरागिनीस्वरूप ।

दोहा--सेज बिछाई कमलदल, लेटि रही मन मारि ।
लेत उसास ज्यु सीयसे, टंक वियोगिनि नारि ॥ ७३ ॥

श्रीरागकी रागिनी धनाश्रीस्वरूप ।

दोहा--धनाशरी रोवत खरी, हिरदे विरह अपार ।
सब तनु पीरो ह्वै रहो, निपट विरहिनी नार ॥ ७४ ॥

आसावरीरागिनीस्वरूप।

दोहा--चन्दनटीको भालपर, गरे नागको हार।
छवि अति सुंदर साँवरी, आसावरी कुँवारि ॥ ७५ ॥

मारूरागिनीस्वरूप।

दोहा--मारूके माला गरे, पिये प्रेम मधुमात।
तरुणी सुन्दर साँवरी, बैठी अति अलसात ॥ ७६ ॥

वसन्तरागिनीस्वरूप।

दोहा--मोरपंख शिरपर धरे, बसन जु पीत वसंत।
कानन मौर जु अंबके, चहुँदिशि भौंर भ्रमंत ॥ ७७ ॥

मालसरी रागिनीस्वरूप।

दोहा--मालसरी दुर्बल वदन, सखी हाथ पर हाथ।
अंबतरे बैठी रहत, बिछुरे पियको साथ ॥ ७८ ॥

दीपककी रागिनी देशीस्वरूप।

दोहा--देशीके वस्तर हरे, काम सताई नार।
पतिको टेर जगावती, मिस करि वारंवार ॥ ७९ ॥

नटरागिनीस्वरूप।

दोहा—अरुण वरण सिगरे बसन, नटवासी नरनारि।
ग्रीवा पकरे करनसों, प्रियतनु रही निहारि ॥ ८० ॥

कान्हरोरागिनीस्वरूप।

दोहा--शीशपत्र गजदन्तको, कर नंगी तरवारि।
मोरकंठके बरन है, रूप कान्हरो नारि ॥ ८१ ॥

केदारोरागिनीस्वरूप।

दोहा--शीश जटा सब तनु लटा, गरे जनेऊ नाग।
केदारो इह रूप है, धरै ध्यान वैराग ॥ ८२ ॥

कामोदरागिनीस्वरूप ।

दोहा--कामवन्त कामोदनी, पीतवसन वनदास ।
चहूँ ओर पियको तकत, अतिही चित्त उदास ॥ ८३ ॥

मिश्रित रागभेद ।

दोहा--गौडतिलक कामोद ये, मिले मिश्रिता मान ।
इनके किये अलापको, जानौ शुध कल्यान ॥ ८४ ॥
प्रथम राग केदारमें, मिलै विलावल आनि ।
इनके मिले अलापसों, शंकरभरनि सुजानि ॥ ८५ ॥
केदारो ईमन मिले, मिलै शुद्ध कल्यान ।
इनके मिले अलापसों, राग हमीरह जान ॥ ८६ ॥
केदारो कल्याणसम, तनक विलावल भास ।
इनके किये अलापसों, ईमन होत उजास ॥ ८७ ॥
जैत श्रीशंकरभरन, नट नारायण तुल्य ।
इनके मिले विभागसों, राग सरस्वति तुल्य ॥ ८८ ॥
सारँग मारूके मिले, केदारो सम आनि ।
मिश्रित करि आलापिये, इहै विहंगम जानि ॥ ८९ ॥
तीनि राग तो ये मिलैं, वहुरि मलार मिलाय ।
इनकी समतासों नहीं, सो साँवंत कहाय ॥ ९० ॥
वहुला आसावरि मिले, अरु मलार समभाग ।
कछुक मेलि गन्धारको, षड्ज जानियो राग ॥ ९१ ॥
रामकली पुनि गूजरी, गुणकली ज्यु गंधार ।
पूरवि रागिनि मिश्रिता, शक्तिवल्लभा सार ॥ ९२ ॥
भैरव शुध आसावरी, अरु गौरीको मानि ।
देवगिरी संभाव ले, यों गंधारहि जानि ॥ ९३ ॥

मिलि धनाश्री कान्हरो, सभागिनि आलाप ।
स्वर उचारसों जानियो, वागेश्वरी जु छाप ॥ ९४ ॥
आसावरी अहीरि मिलि, समभागिनि उच्चार ।
तौल करौ आलापको, सिंधुराग गुनकार ॥ ९५ ॥
भैरव पंचम गूजरी, बंगाली गन्धार ।
संभागिनि उच्चारसों, सोरठ सबसो सार ॥ ९६ ॥
देशकारि अरु गूजरी, स्वल्परूप आरंभ ।
तान मिलावै युक्तिसों, राज अहीरी थंभ ॥ ९७ ॥
जैतश्री करनाटकी, केदारो कल्यान ।
सम करि तान मिलाइये, मंगल अष्ट प्रमान ॥ ९८ ॥
प्रथम पूरवी सारँगहि, जैतश्रीको जान ।
ये समभाग अलापिये, देवगिरी पहिचान ॥ ९९ ॥
सिंधु और बड़हंसको, नून अधिक संभाव ।
इनके दुहूँ प्रतापते, शिवरी रागहि गाव ॥ १०० ॥
कामोदक षडजा गयो, सम करि करै अलाप ।
तिलक रागको जानिये, मिटत सकल संताप ॥ १०१ ॥
धनाश्री शिवरी गिरा, सम अलापको कीन ।
कहत कुमारी रागिनी, तान तरल परवीन ॥ १०२ ॥
नट नारायण शुद्ध नट, और मलार मिलाय ।
इनके मिले अलापसों, राग माधवी गाय ॥ १०३ ॥
चतुर विहारी सम मिलै, धनाश्री सम जानि ।
चैती मारू चारि ये, बड़हंसहि पहिचानि ॥ १०४ ॥
मधुमाधव लकधैन लै, शुद्ध बिलावल आनि ।
चौथे शंकरभरनसों, नट नारायण जानि ॥ १०५ ॥
केदारो कल्यान है, और बिलावल बाम ।
इनके सम आलापते, तीक्षण राग सुनाम ॥ १०६ ॥

रामकली अरु गूजरी, देशकरी बंगाल ।
पंचम सम भागन मिलै, वहुली राग विशाल ॥ १०७ ॥
धनाश्री टोड़ी मिलै, समकरि तान मिलाव ।
राग अनूपम नाम है, तानस्वरनते गाव ॥ १०८ ॥
सोरठ और धनाशरी, विलावलीसम कीन ।
इनके मिश्रित गानते, जैजैवंति प्रवीन ॥ १०९ ॥
साराँगमें टोड़ी मिलै, मिश्रित उभय प्रमान ।
सम अलापसों गाइये, साराँग गोड़ निधान ॥ ११० ॥
नट संभाग कल्याण करि, मिश्रित उभय वताय ।
न्यून अधिक सम जानिके, यही शुद्ध नट गाय ॥१११॥
नट जो मिलै हमीरसों, वह है नाट हमीर ।
नट केदारो सम करै, नट केदार हमीर ॥ ११२ ॥
प्रथम धनाश्री पूरवी, दाऊ सुर संयोग ।
इह धनाशरी पूरवी, गुणिजन गावो लाग ॥ ११३ ॥
साराँगके स्वरसों मिलै, करौ गौड़को ज्ञान ।
तामें पूरो पूरवी, राग वूरिया जान ॥ ११४ ॥
गौरी साराँग सम करौ, स्वल्प ललितकी भास ।
सो चैती गौरी कही, समुझौ वुद्धिप्रकास ॥ ११५ ॥
राग रागिनी भेद सव, कहे स्वल्प करि गाय ।
नारदादि गावत सुयश, निज कर वीन वजाय ॥ ११६ ॥
वशीकरण हैं राग सव, मोहत नर संसार ।
जे गावत हरि सुयश वर, पावत सुख विस्तार ॥ ११७ ॥
लिख्यो रागरत्नाकरे, भाग तृतीय प्रमान ।
आगे लिखत चतुर्थ अव, सुमिरि विष्णु भगवान ॥ ११८ ॥

इति श्रीरागरत्नाकर तृतीय भाग समाप्त ।

रागरत्नाकर ।

चतुर्थ भाग ।

श्रीरामकवितावली ।

कवित्त—ईशनके ईश महाराजनके महाराज, देवनके देवदेव प्राणहूके प्राण हौ । कालहूके काल महाभूतनके महाभूत, कर्महूके करम निदानके निदान हौ ॥ निगमके अगम सुगम तुलसीहूसे कोऊ,एते महा शीलसिंधु करुणानिधान हौ । महिमा अपार काहु बोलको न वार पार, बड़ी साहिबीमें नाथ बड़े सावधान हौ ॥ १ ॥

नाहीं मेरे जाति पाँति नाहीं मेरे मायबाप, नाहीं मेरे कोऊ काम हौं न काहू कामको । लोक परलोक रघुनाथहीके हाथ सब, भारी है भरोसो तुलसीके एक नामको ॥ अतिही सयानो उपखानो नहिं बूझे लोग, साहबके गोत गोत होत है गुलामको । साधुके असाधुके भलोंके पोच शोच कहा, काहूके द्वार पर्‌यो जो हौं सो हौं रामको ॥ २ ॥

जागै योगी जंगम जती समाधि ध्यान धरैं, डरैं उर भारी लोभ मोह कोह कामके । जागै राजा राजकाज सेवक समाज साज, सोचै सुन समाचार बड़े वैरी वामके ॥ जागे बुध विद्याहित पंडित चकित चित,जागै लोभी लालच धरनि धन धामके । जागै भोगी भोगही वियोगी रोगी रोगवश, सोवै सुख तुलसी भरोसे एक रामके ॥ ३ ॥

वरन धरम गयो आश्रम निवास तज्यो, त्रासन चकृतसों पराना परोसो है । करम उपासना कुवासना विनाश्यो ज्ञान, वचन विराग वेष जगत हरोसो है ॥ गोरख जगायो योग भगति भगायो लोग, निगम नियोगते सो कलिते छरोसो है । काय

मन वचन सुभाय तुलसी है जाहि, रामनामको भरोसो ताहिको भरोसो है ॥ ४ ॥

जागिये न सोइये बिगोइये न जन्म जाय, दिन दुःख रोइये कलेशको है कामको । राजा रंक रागी औ विरागी भूरिभागी ये, अभागी जीव जरत प्रभाव कलिवामको ॥ तुलसी कवन्ध कैसो धायवो विचार अन्ध, धन्ध देखियत जग शोत्र परिनामको। सोइवो जो रामके सनेहकी समाधि सुख, जागिवो जो जीह जपै नीके रामनामको ॥ ५ ॥

सवैया ।

वेद पुराण विहाय सुपन्थ कुमारग कोटि कुचालि चली है ।
काल कराल नृपाल कृपाल, न राजसमाज वड़ोही छली है ॥
वर्ण विभाग न आश्रमधर्म, दुनी दुख दोष दरिद्र दली है ।
स्वारथको परमारथको, कलि रामको नाम प्रताप वली है ॥ ६ ॥
जप योग विराग महामख साधन, दान दया दम कोटि करै ।
मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेशसे, सेवत जन्म अनेक मरै ॥
निगमागम ज्ञान पुरान पढे, तपसानलमें ज्ञुग पुंज जरै ।
मनसो पन रोपि कहै तुलसी, रघुनाथ विना दुख कौन हरै ॥ ७ ॥
कानन भूधर वारि वयारि, महाविष व्याधि दवा अरि घेरे ।
संकट कोटि जहाँ तुलसी, सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥
राखि है राम कृपाल तहाँ, हनुमानसे सेवक हैं जेहि केरे ।
नाक रसातल भूतलमें, रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ ८ ॥
व्याल कराल महाविष पावक, मत्त गयन्दनके रद तोरे ।
सा सतसंग चली डरपै हुती, किंकरते करनी मुख मोरे ॥
नेक विषाद नहीं प्रहलादहिं, कारन केहरिके वल हो रे ।
कौनकी त्रास करै तुलसी, जो पै राखि है राम तो मारि है को रे ॥९॥

जहाँ यमयातन घोर नदी भट, कोटि जलच्चर दंत टेवैया ।
जहाँ धार भयंकर वार.न पार, न वोहित नाव न मीत खेवैया ॥
तुलसी जहाँ मात पिता न सखा, नहिं कोऊ कहूँ अवलंब देवैया ।
तहाँ बिन कारन राम कृपाल, विशाल भुजा गहि काढ़ि लेवैया ॥१०॥

कवित्त–काहूको अधार एक भैरवको भ्राजत है, काहूको अधार एक अम्बा अभिरामको । काहूको अधार एक सूर्यको सुहात सदा, काहूको अधार एक सिद्धि बुद्धि स्वामको ॥ काहूको अधार एक केसरी कुमारजूको, काहूको अधार एक शंकर ललामको । गोविंद लसत ऐसे सर्वको अधारपर, मेरे तो अधार एक सीतापति रामको ॥ ११ ॥

कोऊ तो अराधे उर गिरिजा गणेश सदा, कोऊ तो अराधे उर सिद्धि सुखधामको । कोऊ तो अराधे उर भूत प्रेत भैरवको, कोऊ तो अराधे उर कामरति स्वामको । कोऊ तो अराधे उर पावक पवन अति, कोऊ तो अराधे नवग्रहनके ग्रामको । गोविंद अनेक ऐसे उरमें अराधे पर, हम तो अराधे एक सीतापति रामको ॥ १२ ॥

दाता नाहिं होते तो दारतको दीन दुख, वारिद ना होते तो तृप्त कौन करते । महिला न होती तो मोहको मनात कौन, लोभिया न होते तो धन कौन धरते ॥ शूर नहिं होते तो रणमें लड़त कौन, हेरंब न होते तो विघन कौन हरते । गोविंद कहत तैसे राम जो न होते तो, हमसे अधम अति क्यों करि उधरते ॥१३॥

अहल्या उधारवेको तापसके तारिबेको, मारिचके मारिबेको वास वन धार्यो है । लंकपूर जारिवेको दानव विदारिबेको, रावण सँहारिवेको गर्वसिन्धु गार्यो है ॥ देवदुख टारिबेको पापके

पँजारिवेको, महिमा सुढारिवेको पाथरको तारयो है । गोविंद अनेक ऐसे काज सव सारिवेको, अधम उधारिवेको राम जन्म धार्यो है ॥ १४ ॥

दारिद दरन और पापके हरन महा, चापके धरन शुभ कुंडल करन है । सुमन सरन सम वोलत वरन सुख, घनसें बरन अशरनके शरन है ॥ भक्त उद्धरन और भवके भरन महा, कृत सुमिरन ताकी हूकके हरन है । गोविंद कहत ऐसे सियके वरन वर, रामके चरन सेये मेटत मरन है ॥ १५ ॥

सवैया ।

श्रीसुखदायक पूर्णप्रभायक, रामहिको इक नाम सुहावे ।
गोविंद सो इक वेर जपै नर, सो छिनमें सवही फल पावे ॥
आलमकी सव आधि उपाधिक, व्याधि मिटायके मोक्ष मिलावे ।
ऐसो महातम रामके नामको, ताते सदा हियमें नित ध्यावे ॥१६॥
जो फल ना उपरागनमें, द्विजराजनको शुचि दांन दियेते ।
जो फल ना सव सन्तनको, अति भोजनते भल तुष्ट कियेते ॥
जो फल ना दुखदीननको, अति दाम अराम रु धाम दियेते ।
सो फल गोविंद सत्त्वर पावत, रामहिको इक नाम लियेते ॥१७॥
जो फल ना जगदीश लखे, अरु चावलका परसाद लियेते ।
जो फल ना नर और नरायन, मन्दिरमें तहँ दर्श कियेते ॥
जो फल नाहिं द्वारका और, रमेश्वर धामके ध्यान हियेते ।
सो फल गोविंद सत्त्वर पावत, रामहिको इक नाम लियेते ॥१८॥
जो फल ना वर विप्रनको, सन्मान किये गउ दान दियेते ।
जो फल ना वहु जाप जपे, अरु जो फल ना उपवास कियेते ॥
जो फल ना पशु पक्षिन आदिक, जीव सवैको संतोषि हियेते ।
सो फल गोविंद सत्त्वर पावत, रामहिको इक नाम लियेते ॥१९॥

जो फल पाय न तीरथमें, पुनि जो फल पाय न मौन लियेते।
जो फल पाय न साधु वने, पुनि जो फल पाय न दान दियेते॥
जो फल पाय न ताप तपे, पुनि जो फल पाय न यज्ञ कियेते।
सो फल गोविंद सत्वर पावत, रामहिके इक नाम लियेते॥२०॥

कवित्त–पापनते पीन अति विपय लवलीन निशि, दिवस मलीन फँसो जगतके जालमें। निजकृत भोग किधौं संसृत कुरोग किधौं, लिख्यो ना विरंचिही भलाई कछु भालमें॥ आतु मन धीर भजु सिय रघुवीर जाते, मिटै भव पीर न तो जरा दुःख ज्वालामें। मुनिन विचार कीन्ह्यो वेद अनुसार कह्यो, नामही अधार अमरेश कलिकालमें॥ २१॥

काहूको है धनवल काहूको धरणिवल, काहू निजवल वल काहे वारवार है। काहूको है गुणवल काहूको है पुण्यवल, काहूको है कुनवल सुन्दर विचार है॥ काहू वल भूप सुन्दर स्वरूप अति, जानत अनूप रूप शशिकर सार है। कहै अमरेश मोहिं देशहू विदेशहूमें,जानौं सत्य भाव एक नामके अधार है॥२२॥

नामको प्रताप कलिदाप नहिं व्याप हिय, छूटत है पाप तेज बढ़त है तनको। नाम जपै आनन जो गुण सुनै काननते, मानत हैं बात सुख वासव सदनको॥ तज्यो निज धाम जप्यो नाम आठौ याम ध्रुव, पायो ध्रुव धाम फल नामके रटनको। छोड़ि झूँठो नेह कर रामते सनेह ताते, यहै शिष देत अमरेश निज मनको॥ २३॥

नामहीके वल सहसानन धरा धरत, नामवल रचै चतुरानन जगतको। नामहीके वल शिवशिवको प्रभाव सव, नामही अधार एक केवल भगतको॥ नामहीके आश जन मेटै भवत्रास सव,

नामवल होत्यो न तो रूपको लखत को । नामकी रटन निशि-दिन अमरेश करु, नामको विसारि कत धावत अनतको ॥ २४ ॥

नामके प्रभाव वाल्मीकिकी सुधरि गई, मरा मरा कहे गति पायो भलीभाँतिसों । नामहीके ओट शवरीको सव खोट गयो, कीन्हो ना विचार कछु ऊँची नीची जातिसों ॥ नाम लेत अघ गणिकाको सव दूरि भयो, पायो शुभ मुनिगति खग समपातिसों । नामके जपत अमरेश है अनन्द बड़ा, जग सुख दुख होत जात दिन रातिसों ॥ २५ ॥

रामनाम जपत महेश शेश औ गणेश, नाम जपि उमा आवागमन मिटाव है । रामनाम जपत अनन्त सन्त सनकादि, नाम जपि ध्रुव धाम अचल सो पाव है ॥ रामनाम जपि मुनि वाल्मीकि ब्रह्म भये, बड़ोई प्रभाव वेद नेति कहि गाव है । कहै रघुनाथ सोई रामनाम भल मध्य, ताहि जो विदूषै सो तो मूढ़-नको राव है ॥ २६ ॥

गजकी चलनि कहा जानै खर कूकर औ, भोगी कहा जानै योग रंक सुख रावको । गोमलको जीव कहा जानै वास पंकजको, को लखत दासी पतिव्रताकेरे भावको ॥ कूपकेरो दादुर सो जानै कहा सागरको, नरकी सोरग काक हंसके स्वभा-वको । कहै रघुनाथ ऐसे कूर नर मूढ़ जौन, तौन कहा जानै रामनामके प्रभावको ॥ २७ ॥

सम्पति सुमति नीकी विपति सुधीरनीकी, गंगा तीर मुक्ति नीकी नीकी टेक रामकी । पतिव्रता नारि नीकी परहित वात नीकी, चाँदनीकी राति नीकी नीकी जीति कामकी ॥ वेदकेर वानी नीकी भूसुरकी भक्ति नीकी, सवसे नीकी है रहनि हरि-

धामकी। अगनकी हानि नीकी तातकी मिलनि नीकी,स्वर मिली तान नीकी नीकी प्रीति रामकी ॥ २८ ॥

रामगुण गावै निज हिये हुलसावै, मनभावै फल पावै राम-नामके प्रतापको। पापको शरीर मन आवत न धीर हिये, व्यापी भव पीर तातें भूलिगयो आपको ॥ कहत दिवानो कोउ कहत सयानो, अति मोहिं सनमानो प्रभु मेटि तिहूँ तापको। विनय अमरेशकी हमेशहि गणेशपहँ,रहिये दयालु भूलि मेरे सब पापको॥

भूप दशरत्थको नवेलो अलबेलो रण, रेलो रूप झेलो दल राकस निकरको। मान कवि कीरति उमंडी खलखंडी चंडी, प्रतिसो घमंडी कुल कंडी दिनकरको ॥ इन्द्र गज भंजनको भंजन प्रभंज तनै, ताको मनरंजन निरंजन भरणको। राम गुणज्ञाता मनवाञ्छितको दाता, हरिदासनको त्राता धन्य भ्राता रघुवरको॥

ध्रुवकी धरनि जैसी जैसी कीन्ही प्रहलाद, तैसी करै कौन तहाँ बुद्धिहू धसाई कै। तारी मुनिनारी पतिरूप जो विगारी, शक्र गीध उपकारी तरयो रावणै खँसाई कै ॥ तारिबे गदाधर तिहारो तहाँ जेते नाहीं, तेते तरे निजपुण्य रावरी कसाई कै। मोहूँ आवै भाई भाई आपुकी दसाई देखि, पुरुष दसाई तारे सदन कसाई कै ॥ ३१ ॥

हंसनके छौना स्वच्छ सोहत विछौना बीच, होत गति मोतिनकी ज्योति जोन्ह यामिनी। सत्य कैसी ताग सीता पूरण सोहाग-भरी, चली जाय माल लै मराल मन्दगामिनी ॥ जोई उर वसी सोई मूरति प्रत्यक्ष लसी, चिन्तामणि देखि हँसी शंकरकी स्वामिनी। मानों शरद चन्द्र चन्द्रमध्य अरविन्द अर, विन्दमध्य विद्रुमविदारि कढ़ी दामिनी ॥ ३२ ॥

जटाके जमाले कहा नदी नद न्हाये कहा, कन्दमल खाये

कहा वनोवासके किये । मूड़के मुड़ाये कहा द्वारकाके जाये कहा छायके लगाये कहा तुलसी किये गये ॥ तिलक चढ़ाये कहा मालाके फिराये कहा, तीरथके न्हाये कहा दान दत्तके दिये । एतो सब किये कहा कोटि नाम लिये कहा, जानकीको जीवन जोपै केवल नहीं किये ॥ ३३ ॥

तव ना विचारयो पाप गीधको सुगति दीन्ही, तव ना विचारयो पाप गणिका उधारी है । तव ना विचारयो पाप शवरीके फल खायो, तव ना विचारयो पाप शाप तिय हारी है ॥ कहैं कवि मान पुनि तव ना विचारयो पाप, वानर निशाचर बनाये अधिकारी है । भई जेरवारी सो भरोसो मोहिं भारी अव, अवधविहारी सुधि लीजिये हमारी है ॥ ३४ ॥

प्रफुल्लित भये हैं सब अवधपुरीके लोग, प्रफुलित सरयूकी शोभा सरसाई है । नाचैं नर नारी अति आनन्द अपार भये, घूरत निशान मुरलीधर सुखदाई है ॥ देवता विमाननते फूलनकी वृष्टि करें, वंदी सूत मागध अनेक निधि पाई है । चलि क्यों न देखौ आली रामको जनम भयो, दशरथके द्वार बाजै आनँद वधाई है ॥ ३५ ॥

रामहीके नामको अनेक जन पुकार रहे, मसजिदमें मन्दिरमें गिरिजामें टेर टेर । रामहीको रूप अनेक जन निहार रहे, दृगनमें हृदयमें त्रिकुटीमें हेर हेर ॥ रामही है सर्व ठौर दूसरा न कोऊ और, निश्चय कर मानों कछू यामें नहीं हेर फेर । जैसी जाकी भावना हो तैसे ताको दीख पड़े, रामको हेरत हैं आरत जन वेर वेर ॥३६॥

सवैया ।

रामके नामकै अक्षर द्वै, महिमा कहि शेश सकैं न करोरी ।
जासु प्रसाद सुरासुरमें हर, हर्पि हलाहल पान करोरी ॥

जन रघुनाथके माथ स्वई, जो सजीवनसार सुधारस को री।
रकार श्रीराजकुमार उदार, मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी॥३७॥

सत्य रकार रहे जो सदा, अरु चित्त अकार सचेतन जोरी।
आनँदरूप मकारमिदं, हरिनाम सच्चिदानन्द बहोरी॥
जन रघुनाथके माथ स्वई, शिववक्य महारामायणको री।
रकार श्रीराजकुमार उदार, मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी॥३८॥

नामप्रभाव गुनै न सुनै, फुर फेरि न देखिये ता मुख ओरी।
और विलोकत खोरि लगै, इमि ब्रह्म पुराणके माहिं लखोरी॥
जन रघुनाथके माथ स्वई, जो करै शुचि शीघ्र सुलम्पटकोरी।
रकार श्रीराजकुमार उदार, मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी॥३९॥

ब्रह्ममें रेफ रमी पुनि धर्ममें, कर्ममें रेफ प्रसिद्ध न चोरी।
राधाके नाममें आदि रकार, नारायणमध्य रकार लसोरी॥
जन रघुनाथके माथ स्वई, सब नामनको कृत पूरण जोरी।
रकार श्रीराजकुमार उदार, मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी॥४०॥

जो फल ना कुरुक्षेत्रमें विप्रन, कांचनको बहु दान दियेते।
जो फल योग औ यज्ञ किये नहिं, जो फल धूमहूँ पान कियेते॥
जो फल दामहि दान दिये, सब तीरथहू परिकर्म कियेते।
जो फल वंशी सो कोटि उपायसे,सो फल रामको नाम लियेते॥४१॥

कवित्त–आई है बरात कोशलेशकी विदेहपुर, बसतीके बालक तुरन्त उठि धाये हैं। देखि आये साजकी समाजकी विभूति भूति, सेना चतुरंग रंग रंगसे सोहाये हैं॥ पूछैं पितु मातु आयो भूपकुँवर काहेपै, क्षेमकर सोई बात बंदिकै बताये हैं। माते मतंगज महि दारिद दबाय जात वापै दशरत्थके दुलारे चढ़ि आये हैं॥ ४२॥

हरितमणि हीरा औ पद्मराग हाटकके, हौदनमें कोरि कोरि कुसुम बनाये हैं । तैसही विचित्र जीव विरचे सजीव मानो, ताके बीच बीचन सुभाव छवि छाये हैं ॥ झूल झाँपै झलझलात झालरि औ झब्बोंसे, मुक्ता मखतूल समतूलसे सजाये हैं । क्षेमकर घंटनके राव सुने राव होत, राव दशरथके दँतारे द्विप आये हैं ॥ ४३ ॥

दंत द्युति देखतही दारिद दबाय जात, दानी होत दान देखि दीनता दुराये हैं । फाल फैलावत फकीरिनि फिकिरि होत, तुंडकी सकेत शोच शत्रुन पठाये हैं । क्षेमकर छोहसे भरे छवीले छाँटे छके, क्षोणीपति महाराज कोशलेश लाये हैं । कुंजर करारी भारी घटासे अभारी दार, मानों पादचारी धराधारी धरि आये हैं ॥४४॥

झूमत झवाऊ झाल झटकैं जँजीर जाल, मत्तमद वहत वनै सवै सवी लसे । चिक्करैं सगरद उड़ाय शुण्ड मुण्डपर, फटकत श्रवण उड़ाय भृंग ही लसे ॥ क्षेमकर अमर ईश दन्ती दुराय देत, धसकत धरणि धरत पाँव ढीलसे । ऐसे अवधेशके असील पीलखाने पील पेखत अपर पील लागत पिपीलसे ॥ ४५ ॥

वीररसकवितावली ।

सवैया--रामशरासनते चले तीर, रहे न शरीर हड़ा वड फूटी
रावण धीर न पीर गली, लखि लेकर खप्पर योगिनि जूटी ॥
शोणित छीट छटान परी, तुलसी प्रभु सोहै महाछवि छूटी ।
मानहुँ मर्कत शैल विशालमें, फैलि रही जनु वीर बहूटी ॥ ४६ ॥
गहि मन्दर वन्दर भालु चले, सो मनो उमड़े घन सावनके ।
तुलसी उत झुंड प्रचंड झुके, झपटे भट जे सुरदानवके ॥

विरुझे विरदैत जे खेत अरे, न टरे हठि वैर वढ़ावनके ।
रण मारु मची उपरी उपरा, भले वीर रघूपति रावनके ॥ ४७ ॥
कीजे न कोप कृपानिधि राम जो, तौ गढ़ लंक उठाय मैं लाऊं।
कोउको भय अरु शंक न मानिके, रावणरानिपै पानि भराऊं ॥
लच्छ कहै कविराज समच्छ, विपच्छज सो नित सिद्धि चलाऊं।
माथे मरोरि धरौं दशकन्धके, नाथके हाथका पान जो पाऊं ॥ ४८ ॥
कुंभकरण्ण हन्यो रण राम, दल्यो दशकंधर कंधर तोरे ।
भूपण वंशविभूषण भूषण, तेजप्रताप गरे अरि ओरे ॥
देव निशान वजावत गावत, धावत गे मनभावत मोरे।
नाचत वानर भालु सवै, तुलसी कहि हारे हहा भै होरे ॥ ४९ ॥
हनुमान हठीलो रँगीलो वली, ज्यहि मान मथ्यो गढ लंकपतीको।
लैकर मुन्दर कूदि समुन्दर, शोक हरो जाय सीय सतीको ॥
उखारि पहार सकेलि संजीवन, तेज गयो क्षणमें शकतीको ।
तुलसी जन संकट क्यों न कटै, जब ध्यान धरो हनुमान यतीको ५०
वालि बँध्यो वलि राव बँध्यो, कर शूलीको शूल कपाल थली है।
काम रच्यो जरकाल परयो, बंधसेतु धरयो, विष हालहली है ॥
सिंधु मथ्यो कल काली नथ्यो, कहि केशवचंद्र कुचालि चली है।
रामहूँकी हरी रावण वाम, चहूँदिशि एक अदृष्ट वली है ॥ ५१ ॥
कोशलराजके काज हौं आज, त्रिकूट उपारिके वारिधि वोरौं ।
द्वौ भुजदंड दै अंडकटाह, चपेटके चोट चटाकके फोरौं ॥
आयसु भंगको जो न डरौं, तो मींजि सभासद शोणित वोरौं ।
वालिको वालक तौ तुलसी दशहू मुखके रणमें रद तोरौं ॥५२॥
तीर कमान गही वलमंडक, मार मची घमसान मचायो ।
योगिनी रज्जके भारी भई, शिवशंकर मुंडके माल लै आयो ॥
भीमसमानको युद्ध कियो, कवि जैत कहैं जगमें यश पायो ।

शाहके काजपै शूर लड्यो,शिर टूटि परयो धड़ धारुके धायो॥५३॥
अंजनी तात दई जब लात, गिरयो हहरात न गात सँभारो ।
फेरि सचेत उठ्यो रणधीर, भई अति पीर शरीर न टारो ॥
कहैं कृष्ण प्रशंसि कह्यो मनुजात,इजाद है पौरुष कीश तिहारो।
देखि हृदय सकुचे हनुमान,न प्रान गयो धिक् मान हमारो॥५४॥
मंडित जे रविरूप किरीटन, माणिक मोतिनसों झलकारे ।
पूजित फूल सुगन्धनसों, नभ बालनके तनमें महकारे ॥
काहू लचे न लचावत और, न चंदन ऐसे महा अहकारे ।
ते शिर रावणके रणमें, हनुमान वली चढ़ि लातन मारे ॥ ५५ ॥
इन्द्रके वज्रसे जे न डरे, न टरे हैं जलेशके फाँस प्रहारे ।
शंभु त्रिशूल गह्यो नहिं नेक, न विष्णुके चक्रसों वक्रनहारे ॥
ब्रह्मकी शक्ति न शाले हिये, रण आयते रावणके ललकारे ।
काल दपेटन जे न टरे, हनुमान वलीते चपेटन मारे ॥ ५६ ॥
अति कोपसों रोप्यो है पाँव सभा, सब लंक सशंकित शोर मचा।
तमके घननादसे वीर प्रचारिकै, हारि निशाचर सैन पचा ॥
न टरै पग मेरुहसों गरुओ भो, सो मनो मंहिसंग विरंचि रचा ।
तुलसी सब शूर सराहत हैं, जगमें बलशालि है बालि बचा ॥ ५७ ॥
तोसों कहौं दशकन्धर रे, रघुवीर विरोध न कीजिये बौरे ।
वालि वली खर दूषण और, अनेक गिरे जेते भीतमें दौरे ॥
ऐसिय हाल भई त्वहिं कौन, तो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे ।
रामके रोप न राखि सकै, तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे ॥ ५८ ॥

कवित्त–गोपीनाथ नंदन प्रभंजनको लंकाबीच, कूदो देखि साहस सरा सरके सरके । ताल देत जाके काल कालको कराल भयो छूटिगे हथ्यार जे करा करके करके ॥ खलमल लंक हीय

खलनके हलहल, दहल कमलके वरावरके वरके। डरि डरि ढरि गये अडर डराय ढह ढर ढर ढरके धरा धरके धरके ॥ ५९ ॥

वारि टारि डारौं कुंभकर्णहि बिदारि डारौं, मारौं मेघनादे आजु यों बल अनन्त हौं। कहै पदमाकर त्रिकूटहीको ढाहि डारौं, डारत करेई यातुधाननको अन्त हौं ॥ जारि डारौं लंकहि उजारि डारौं उपवन, फारि डारौं रावणको तौ मैं हनुमन्त हौं ॥ ६० ॥

सोहैं अत्र ओढ़े जे न छोड़े शीश संगरके, लंगर लंगूर उच्च ओजके अतंकामैं। कहै पदमाकर त्योंहूँ करत फुंकरत, फैलत फुलत फाल बाँधत फलंकामैं ॥ आगे रघुवीरके समीरके तनयके संग, तारी दै तड़ातड़के तड़के तमंकामैं। शंका दै दशाननको हंका दै सवंका वीर, डंका दै विजयको कपि कूदि परयो लंकामैं॥६१॥

देखि चंड मुंडको प्रचंड उग्र बोली शिवा, अवल अरक्षणकी रक्ष पक्ष पाली हौं। कहैं काली दीन देव कौतुक विलोको नभ, चारौ दिग दन्तिवेको आजु दुराताली हौं ॥ फोरि डारौं वसुधा मरोरि डारौं मेरु गिरि, कालचक्र तोरि डारौं आजु मैं वहाली हौं। काली करौं अतिदल सव विकराली करौं, जंगभूमि लाली करौं तौ मैं महाकाली हौं ॥ ६२ ॥

हनुमंतकी लपेट दै लँगूरकी झपेट दल, दुष्टको दपेट चरपेट चाखलान। बजै नख चटाचट्ट दन्त होत कटाकट्ट, गिरै सैन घटा घट्ट फूटि फूटि पार जान ॥ कपि कूह किलकार खलजूह छिलकार, परी पट पिलकार कटै राकस निदान। तहँ तेजको कुमार करि कोप वेशुमार, वीर लक्षण कुँवर झुकि झारी किरवान ॥ ६३ ॥

लगीसों लगाई लंक खेहनि खराव करौं, मारि करौं मोरनि अहार मार जारेको। सो कविनिधान कान आँगुरी न मूँदि दहौं, सुनिहौं न घोर शोर झिल्ली झनकारेको ॥ भेकनकी भीड़

सहसानन मिटाय डारौं, मेटि डारौं गरव गरूर धनकारेको । पाऊं जो पकरि कहूँ जलसों जकरि तन फीहा फीहा करौं या पपीहा दै मारेको ॥ ६४ ॥

गरदके झुंड ढक्यो मार्तण्ड मण्डल लै, वाने फहराने जब ढिग आनि अरिके । तमकि तमकि तव राजे कर जिलै वीर, विरझाने खरुझाने जैसे वाघ थरिके ॥ मंडन विरचि लीनी घोरनकी वाग दीनी, दौरिके दरेरे जैसे भादवकी लरिके । जित तित विजली सलोह लगे लहकन, वरसन वाण लगे जैसे बूँद झरिके ६५

अभय कठोर वाणी सुनि लक्ष्मणजूको, मारिवेको चाही जो सुधारी खल तलवारि । यार हनुमन्त तेहि गराजि हहास करि, डपटि पकरि ग्रीव भूमि लै परे पछारि ॥ पुच्छन लपेटि दन्तन दरदराय नखनवकोटि चोथि देत महि डारि डारि । उदर विदारि मारि लुत्थन लुटारि वीर, जैसे मृगराज गजराज डारै फारि फारि ॥ ६६ ॥

नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि किलकि कपि, उछरि उछरि राह लेत आसमानकी । वलकि बलकि वल्लु करि करि छरि दरि, छरत छरेद भेद कृत गति भानकी ॥ रुंडनसों रुंड अरु मुंडनसों मुंड करि, भारी भट झुंडन घुमण्ड मारु घानकी । शावस कहत राम हिये हरपात जात, देखौ वीर लखण लड़नि हनुमानकी ॥ ६७ ॥

आयो आयो आयो सोई वानर बहोरि भयो, शोर चहुँ ओर लंका आये युवराजके । एक काढ़े सोंज एक धोंज करे कहा ह्वैहै, पोच भई महाशोच सुभट समाजके ॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथ करि, मूँदे कान यातुधान मानों गाजे गाजके । सहमि सुखाति वात जातकी सुरति करि, लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेट वाजके ॥ ६८ ॥

लोथिनसे लोहूके प्रवाह चले जहाँ तहाँ, मानहुँ गिरिन मेरु झरना झरत हैं । शोणित सहत घोर कुंजर करारे भारे, कूलते समूह वाजि विटप परत हैं ॥ सुभट शरीर नीर चारी भारी भारी तहाँ, शूरन उछाह कूर कादर डरत हैं । फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात, काक कंक बालक कोलाहल करत हैं ॥ ६९ ॥

जाकी बाँकी वीरता सुनत सहमत शूर, जाकी आँच अबहूँ लसत लंका लाहसी । सोई हनुमान बलवान बाँको बनाइत, जो है यातुधान सेना चले लेत थाहसी । कम्पत अकम्पन सुखाय अति कांप कांप, कुम्भऊकरण आइ रह्यो लेत आहसी । देखे गजराज मृग-राज ज्यों गरज धायो, वीर रघुवीरको समीर सूनु साहसी ॥७०॥

दिग्गज दबकि जात शेश शीश अलसात, हहलात वारिधि घटत द्युति भानुकी । मेरु धसकत कसकत उर रावणको, चलत अवनि छवि छपत कृशानुकी । सुभट सकात दैत्य देखिके परात मन, राम मुसकात अति पाय निज जानुकी । गर्भ गिरि जात शोक सुर वितताता, वन नाक अररात सुनि हाँक हनुमानुकी ॥७१॥

श्रीरामभजनावली ।

राग भैरव—राम राम रम राम राम रट राम राम जप जीहा । रामनाम नव नेह मेहको मन हठ होहि पपीहा ॥ सब साधन फल कूप सरित सर सागर सलिल निरासा । रामनाम-रति स्वाति सुधा शुभ सीकर प्रेम पिपासा ॥ गरज तरज पापान बरष पवि प्रीति परख जिय जानै । अधिक अधिक अनुराग उमँग उर पर परमित पहचानै ॥ रामनाम गति रामनाम मति रामनाम अनुरागी । ह्वै गये हैं जे होइँगे तेई गनियत त्रिभुवन

बड़भागी ॥ एक अंग मग अगम गवन कर विलँब न छिन छिन छाहैं। तुलसी हित अपनी अपनी दिशि निरुपाधि नेम निबाहैं॥७२॥

राग वसन्त—सब शोचविमोचन चित्रकूट । कलिहरन करन कल्याणकूट ॥ शुचि अवनि सुहावति आल वाल । कानन विचित्र वारी विशाल ॥ मन्दाकिनि मालिनि सदा सींच । वर-वारि विषम नर नारि नीच ॥ शाखा सुशृंग भूरुह सुपात । निरझर मधुवर मृदु मलय वात ॥ शुक पिक मधुकर मुनिवर-विहार । साधन प्रसून फल चारु चार ॥ भवघोर घाम हर सुखद छाँह । थप्यो थिर प्रभाव जानकीनाह ॥ साधक सुपथिक बड़-भाग पाइ । पावत अनेक अभिमत अघाइ ॥ रस एक रहत गुण-कर्म काल । सिय राम लखण पालक कृपाल ॥ तुलसी जो रामपद चहिय प्रेम । सेइय गिरिकर निरुपाधि नेम ॥ ७३ ॥

राग गौरी—मंगलमूरति मारुतनंदन । सकल अमंगलमूल निकन्दन ॥ पवनतनय सन्तनहितकारी । हृदय विराजत अवध-विहारी ॥ मात पिता गुरु गणपति शारद । शिवासमेत शंभु शुक नारद ॥ चरण वन्दि विनवौं सबकाहू । देहु रामपद-नेह निवाहू ॥ वन्दों राम लखण वैदेही । जो तुलसीके परम सनेही ॥ ७४ ॥

राग रामकली—हरत सब आरति आरती रामकी । दहन दुख दोष निर्मूल नीकामकी ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वरमालिका । उड़त अघ विहँग सुन ताल करतालिका ॥ भक्तहृदिभवन अज्ञान-तमहारिणी । विमल विज्ञानमय तेज विस्तारिणी ॥ मोह मद कोह कलि कंजहिमयामिनी । मुक्तिकी दूतिका देह द्युति दामिनी ॥ प्रणत जन कुमुद वन इंदु करजालिका । तुलसि अभिमान महि-षेश बहु कालिका ॥ ७५ ॥

राग बिलावल—आज महा मंगल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भये। सदन सदन सोहिलो सुहावन नभ अरु नगर निशान हये॥ सज संज यान अमर किन्नर मुनि जान समय सम गान ठये। नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन चये॥ अति सुखवेग बोल गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गये। जातकर्म कर नेक वसनमणिभूषित सुरभिसमूह दये॥ दलरोचन फल फूल दूब दधि युवतिन भर भर थार लये। गावत चलीं भीर भइ वीथिन बन्दिन वाँकुर विरद वये॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज जहँ तहँ बन्दनवार नये। भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक तिहुँ देत सबन मन्दिर रितये॥ तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत रामकृपा चितवन चितये॥ ७६॥

सुभग सेज सोहात कौसल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये। बारबार विधु वदन विलोकत लोचन चारु चकोर किये॥ कबहूँ पौढ़ि पयपान करावत कबहुँकि राखत लाय हिये। बालकेलि गावत हलरावत पुलकित प्रेमापियूष पिये॥ विधि महेश मुनि सुर सिहात सब अम्बुद ओट दिये। तुलसिदास ऐसो सुख रघुपतिपै काहू तो पायो न बिये॥ ७७॥

राग केदार—राम शिशु गोद महामोद भरे दशरथ कौसिलहु ललक लखणलाल लिये हैं। भरत सुमित्रा लिये केकयी शत्रुशमन तन प्रेम पुलक मगन मन भये हैं॥ मेढी लटकनमणि कनकरचित बाल भूषण बनाय आछे अंग अंग ठये हैं। चाहि चुचुकारि चूमि लालन लावत उर तैसे फल पावत जैसे सुबीज बये हैं॥ घन ओट विबुध विलोकि बरसत फूल अनुकूल वचन कहत नेह नये हैं। ऐसे पितु मातु पूत पुर परिजन विधि

जानियत आयुभर एई निरमये हैं । अजर अमर होहु करो हरिहर छोह जरठ जठेरिन आशिरवाद दिये हैं । तुलसी सराहैं भाग तिनके जिनके हिये डिंभ रामरूप अनुराग रंग रये हैं ॥ ७८॥

राग कान्हरा—बड़ी है रामनामकी ओट । शरण गये प्रभु काटि देत हैं करत कृपाके कोट ॥ बैठत सभी सभा हरिजूकी कौन बड़ो को छोट । सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट ॥७९॥

राग सारंग—कह्यो शुक श्रीभागवतविचार । जाति पाँति कोउ पूछत नाहीं श्रीपतिके दरबार ॥ श्रीभागवत सुमिरे जो हितकर तरै सो भौजलपार । सूर श्याम गुण निशवासर राम-नाम निजसार ॥ ८० ॥

भजन—कोई पीवै रामरस प्यासा रे । गगनमँडलमें अमृत वरसै, उन्मनिके घरवासा रे ॥ सीस उतार धरै धरतीपर, करै न तनकी आशा रे । ऐसा महँगा अमी विकावै, छः ऋतु बारह मासा रे ॥ मोल करै सो छकै दूरतै, तोलत छूटै वासा रे । जो पीवै सो जुग जुग जीवै, कबहुँ न होय विनाशा रे ॥ सेज सिंहासन बैठे रहिते, भसम लगाइ उदासा रे । गोरखनाथ भर-थरी रसिया, सोइ कबीर अभ्यासा रे ॥ गुरु दादूप्रसाद कुछ इनके, पायो सुंदरदासा रे ॥ ८१ ॥

कैसे राम मिलै मोहिं संतो, यह मन थिर न रहाई रे । निह-चल निमिष होत नहिं कबहूँ, चहुँदिश भागा जाई रे ॥ कौन उपाय करूँ या मनको, कैसी विधि अटकाऊँ रे । ऐसे छूटि जाय या तनते, कितहूँ खोज न पाऊँ रे ॥ सो ये स्वर्ग पताल निहारै, जागे जात न दीसै रे । खेलत फिरै विषय वनमाहीं, लिये पाँच पचीसों रे ॥ मैं जान्यो मन अब थिर होई, दिन दिन परसन

लागा रे । नाना चीज धरौं ले आगे, तज करंक पर कागा रे ॥ ऐसे मनका कौन भरोसा, छिन छिन रंग अपारा रे । सुन्दर कहै नहीं वश मेरा राखै सिरजनहारा रे ॥ ८२ ॥

जलपर शिला तिरावनहार, अब मोहिं पार उतारो जी ॥ टेक ॥ लंकपती रावण गर्वाओ, सभी पाप प्रगट हुइ छाओ । वैदेहीजीको हरि लाओ, छिनमें कर दियो छार ॥ वारिध रावण-ढिगहि बसायो, ओछी संगतिको फल पायो । अपने ऊपर सेत बँधायो, महिमा घटि गई सार ॥ गर्वप्रहारी नाम तुम्हारो, सबका गर्व छीनकर डारो । बिभीषण चरणन चित लायो, कियो लंक सरदार ॥ दुश्शासनको गर्व घटायो, द्रोपदि चीर अनंत बढ़ायो । गजके काज पियादा धायो, बूड़त लियो उबार ॥ पतित उधारन नाम तुम्हारो, अजामेल इक छिनमें तारो । मैं पापी मुझे क्यों नहिं तारो, अब तुलसीकी बार ॥ ८३ ॥

राग काफी—रामा रामा जी साईं ॥ टेक ॥ अलख निरंजन रूपा । तूही एक अनेक स्वरूपा ॥ तेरी ज्योति सकल जग छाई । तू घट घट रह्यो समाई ॥ तुही आदि अनादि कहावै । ब्रह्मादिक पार न पावै ॥ अविगत अविनाशी जाना । निर्गुण सरगुण पहिचाना ॥ बहु विधिके भेष बनावै । सिरजै पालै बिनशावै ॥ अचरज कौतुक विस्तारा । जन कारण ले औतारा ॥ तुही है देवनको देवा । सनकादिक लहैं सब भेवा ॥ चाहै सो करै पलमाहीं । तुही व्यापक है सब ठाहीं ॥ तुही ज्ञानी गुणी अपारा । पूरण परमातम प्यारा ॥ गुण बहुत कहाँलौं गाऊँ । विनती करि शीश नवाऊँ ॥ शुकदेव गुरू बतलाया । चरणदास शरण तेरी आया ॥ ८४ ॥

भजन—रघुवर चरण शरण सुखदायक, क्यों न गहो मन

मेरे । टेक ॥ कोटि जन्मके संचित सिगरे, पाप विनाशैं तेरे ॥ जिन चरणनकी शरण गहेतें, उधरे पतित घनेरे । अजामील गणिका गज गीधन, हरिपुर किये वसेरे ॥ जिन चरणनकी रेणु परस मुनि,पतनी तरी सबेरे । भाल भील रजनीचर वानर काट गये भव फेरे ॥ कोटि कलंक मिटे कुमतिनके, जिन चरणनके हेरे । रत्नहरी हम जानि भये हैं इन चरणनके चेरे ॥ ८५ ॥

मेरे मन रामको नाम अधारा । टेक ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, निशदिन करत विचारा ॥ जाके जपे कटत दुख दारुण, उतर जात भवपारा । शवरी गीध अजामिलसे खल, तिनहूँको प्रभु तारा ॥ जिन जिन शरण लीन संकटमें, तिनको आप सुधारा । नाम महातमको वरणौ सव, पाप कटनको आरा ॥ प्रेम लाय जो ध्यान लगावे, सो पावे सुख सारा । आयो तव पद शरण नाथ मैं, औगुण अमित अपारा ॥ ८६ ॥

मन राम सुमिर पछतायगा ॥ टेक ॥ पापी जियरा लोभ करत है, आज कल्ह उठ जायगा । लालच लागे जन्म गँवायो, मायाभरम भुलायगा ॥ धन योवनका गर्व न करिये, कागजसा गल जायगा । सुमिरण भजन दया नहिं कीनी, ता मुख चोटा खायगा ॥ धर्मराय जव लेखा माँगे, क्या मुख लेकर जायगा । कहत कवीर सुनो भाई साधो, साध संग तर जायगा ॥ ८७ ॥

सर्व सुख रामनाम लौ लाई । राम विना सुख सकल वृथाई ॥ ना सुख होवत मूँड मुँडाये । ना सुख घरघर अलख जगाये ॥ ना सुख है अपने घरमाहीं । ना सुख भगवे भेप बनाहीं ॥ ना सुख वनमें ना सुख धनमें । ना सुख चिन्ता ना हरषाई ॥ ना सुख योग यज्ञ तप पूजा । ना सुख झूठि समाधि लगाई ॥ ना सुख राजे ना सुख रानी । ना सुख हासविलास कहानी ॥ ८८ ॥

सब दिन गये विषयके हेत । टेक ॥ तीनों पन ऐसेही बीते, केश भये शिर श्वेत ॥ रूँधो श्वास मुख बैन न आवत, चंद्र ग्रस्यो जिमि केत । तजि गंगोदक पियत कूपजल, हरि तज पूजत प्रेत ॥ कर प्रमाद गोविन्द बिसारयो, बूड्यो कुटुंबसमेत । सूरदास कछु खर्च न लागत, रामनाम सुख लेत ॥ ८९ ॥

साधो राम शरण विश्रामा । टेक ॥ वेद पुराण पढ़ेको यह गुन, सुमिरै हरिको नामा ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि, अरु विषयनकी सेवा । हर्ष शोक परसे जेहि नाहिन, सो मूरति है देवा ॥ स्वर्ग नरक अमृत विष यह सब, त्यों कंचन और पैसा । अस्तुति निन्दा यह सम जाके, लोभ मोह पुनि तैसा ॥ दुख सुख यह बाँधे जिहिं नाहिंन, तेहि तुम जानो ज्ञानी । नानक तेहि तुम मानो येही, विदहीको जो प्रानी ॥ ९० ॥

मन तुम रामसनेही होना ॥ टेक ॥ बड़े भाग्य मानुषतन पायो, वृथा श्वाँस मत खोना । ज्ञानरूप साबुनसे निशदिन, अंतसके मल धोना ॥ या नगरीमें चोर बहुत हैं, हरदम चौकस रहना ॥ निर्भय व्याहका रस चाखो तो, बेग करालो गौना ॥ ९१ ॥

नर राम भजन कर लीजिये । टेक ॥ साधुसंग मिल हरिगुण गाइये, प्रेमसहित रस पीजिये ॥ भ्रमत भ्रमत जगमें दुख पायो, अब काहेको छीजिये । मानुषजन्म जानि अति दुर्लभ, कारज अपनो कीजिये ॥ सहज समाधि सदा लौ लागे, यह विधि जुग जुग जीजिये । सुन्दरदास मिले अविनाशी, दंड काल शिर दीजिये ॥ ९२ ॥

राग सोरठ—भक्तजन सो हरिके मन भावै । टेक ॥ निष्कामी अरु प्रेम हियेमें, अनन्य भक्ति चित लावै ॥ आन देव जो मोती बरषैं, तौ नाहीं पतियावै । प्रभुके चरणकमलके ऊपर,

भँवर भयो लिपटावै ॥ सिद्धि न चाहै ऋद्धि न माँगै, दर्शनको ललचावै । मुक्ति आदि दे चाह न कोई, आशा सकल गँवावै ॥ रोमहि रोम पुलकि सब देही, गोविंदके गुण गावै । गद्गद वाणी कंठ उसासै, नैनन नीर ढरावै ॥ परमेश्वर मिलनेकी लहरैं, इक आवै इक जावै । कहैं शुकदेव चरणहीं दासा, हरिहू कंठ लगावै ॥

राग नट व विलावल सारंग–हमारे रामभक्ति धन भारी । राज न डाँडै चोर न चोरै, लूटि सकै नहिं धारी ॥ प्रभु ऐसे अरु रामर पैये, मुहर मुहब्बत हरिकी । हीरा ज्ञान युक्तिके मोती, कहा कमी है जरकी ॥ सोना शील भँडार भरे हैं, रूपा-रूप अपारा । ऐसी दौलत सतगुरु दीन्ही, जाका सकल पसारा ॥ बाँटो बहुत घटै नहिं कबहूँ, दिन दिन ब्योढी ड्योढी । चोखा माल द्रव्य अति नीका, बट्टा लगै न कौड़ी ॥ साह गुरू शुकदेव विराजै, चरणदास बन जोटा । मिलि मिलि रंक भूप हो बैठे, कबहुँ न आवै टोटा ॥ ९४ ॥

भजन–रे मन रामभरोसो भारी । टेक ॥ पानीपर जिन पाहन तारो, और अहल्या नारी ॥ यमके बाँधे पतित छुड़ाये, ऐसे परउपकारी । सबकी खबर लेत दुखसुखकी, अर्जुनके हित-कारी॥ तू दयाल प्रभु वेद पुकारें महिमा सुनी तिहारी । महरदास प्रभु शरण गहेकी, राखो लाज हमारी ॥ ९५ ॥

जानकीनाथ सहाय करें जब, कौन विगाड करै नर तेरो ॥ टेक ॥ सूरज मंगल सोम भृगूसुत, बुध अरु गुरु वरदायक तेरो । राहु केतुकी नाहिं गमयता, सिंह शनीचर होत उचेरो ॥ दुष्ट दुशासन निबल द्रोपदी, चीर उतार कुमंत्र परेरो । जाकी सहाय करी करुणानिधि, बढ़गये चीरके भार घनेरो ॥ गर्भमें

राख्यो परीक्षित राजा, अश्वत्थामा जब अस्त्र परेरो । भारतमें भरुहीके अंडा, तापर गजको घंटा गेरो ॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि, ताके जगतमें भाग बड़ेरो । रघुवंशी सन्तन सुख-दाई, तुलसिदास चरणनको चेरो ॥ ९६ ॥

राम सुमिर ले राम सुमिर ले यह ही तेरो काज है। टेक ॥ मायाको संग त्याग हरिजूकी शरण लाग, जगतसुख मान मिथ्या झूँठो सब साज है ॥ सुपने ज्यों धन पिछान काहेपर करत मान, वारूकी भीत तैसे वसुधाको राज है । नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरो गात, छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आज है ॥ ९७ ॥

कृपा करो रघुनाथ गुसाईं, राखो चरणनमाईं। टेक ॥ तुमको छोड़ कहाँ अब जाऊँ, दीखत नहिं कहुँ ठाईं ॥ तुम पावन हो पतित उवारो, बन्धन काटो अब मेरा साईं । कोटिन पापी तुम प्रभु तारे, मेरी बार क्यों देर लगाई ॥ मैं मतिहीन अधीन भिखारी, माँगूं दान येही तेहि पाई । नितप्रति प्रीति लगे तेरे चरणन, शोक ताप सब होय नशाई ॥ पूरण ब्रह्म अखँड अविनाशी, विराजे हो हर घटघटमाईं । पूरन कीजे आश दासकी, घासीराम चरणों बलि जाई ॥ ९८ ॥

मेरे राम तेरी गति जानी नहिं जाई ॥ टेक ॥ पृथ्वीपर जब भार पड़ा था, रामचन्द्र बनि आये । मुनिका यज्ञ सम्पूरण कीना, लंका करी चढ़ाई ॥ रावण मारि असुर सब मारे, राज्य विभी-षण दीना । चढ़ि सिंहासन चले अयोध्या, नगरी दर्शनको धाई॥ भक्त प्रहलादको कष्ट जब दीना, याद तेरी उन कीनी । खंभ फारि हिरणाकुश मारो, भक्तकी करी सहाई ॥ कंसने दुःख दिया जब भारी, कृष्णरूप बनि आये । केश पकड़ वाको मार

गिराया, वर्षा फूलन सुर वरसाई ॥ वालपने गोपियनसँग खेले, कुब्जा प्रीति वढ़ाई । और अनन्त हैं खेल तुम्हारे, कहाँतक करूँ वड़ाई ॥ गजको ग्राहसे तुमहिं छुड़ाया, द्रोपदी चीर अनंत वढ़ाया । गणिका अजामील सव तारे, क्यों मेरी वार देर लगाई ॥ सुर नर मुनि सव ध्यान लगावैं, अंत कोई नहिं पावै । घासीरामको पार उतारो, तव जानूँ तुम्हरी प्रभुताई ॥ ९९ ॥

राम ज्यूँ राखै त्यूँ रहिये ॥ टेक ॥ जो प्रभु करे भलो कर मानो, मुखते बुरो न कहिये । हरि होनी अनहोनी कर दे, सो सव शिरपर सहिये ॥ करे कृपा हरिनाम जपावै, सो अंतर ले गहिये । महरदास हरि हुकम मानिये,यह सेवकको चहिये ॥१००॥

रघुनाथ नाथ मेरे, मैं वर्णन कर सकूँ गुण तेरे ॥ टेक ॥ प्रथम मीनरूप प्रभु धारयो, शंखासुर गर्व निवार्यो । ब्रह्माको वेद जो दीने, सव काज सुरनके कीने ॥ प्रभु कच्छप रूप वनायो, मन्द्राचल पीठ धरायो । शूकर नरहरि प्रभु धारा, प्रहलाद भक्त उवारा ॥ तुम हो वलि वावनस्वामी, तुम परशुराम अभिमानी । तुम हो रघुवंशउजागर, भये कृष्ण नन्दजूके नागर ॥ वुध लंकस्वरूप तुम्हारा, सव संतनके रखवारा । अद्भुत गति नाथ तुम्हारी, भज रामसखे वलिहारी ॥ १०१ ॥

श्रीरामचन्द्र दशरथसुत नंदन, यह पद भज मन मोरा रे ॥ टेक ॥ वालपनमें खेल गँवाई, ज्वानी योवन जोरा रे । पाँचों चोर समझकर पकड़ो, चढ़ो प्रेमरस घोड़ा रे ॥ ज्ञान खड्गसे मारि गिराओ, यह भुजरा नर तोरारे । भूला भूला कहाँ फिरत है, जगमें जीवन थोड़ा रे ॥ भवसागरकी धार कठिन है, कहाँ तेरा नहिं मोरारे । कहत कवीर सुनो भाई साधो, समझ देख मन भोरा रे ॥ १०२ ॥

रथको निरखत जात जटाई ॥ टेक ॥ कौन बड़े कुलकी तुम नारी, कौन हरे लिये जाई । किसकी हो तुम बालसुन्दरी, हमको देउ बताई ॥ सूर्यवंश राजा नृप दशरथ, जिनके सुत रघुराई । तिनकी तिरिया नाम जानकी, हरे निशाचर जाई ॥ इतनी सुनि खगपति उठि धायो, घेरो रथ घबराई । जाने न दूँगो असुर निशाचर, जब शिव होत सहाई ॥ चोंचन मारि महा युध कीन्हो, छीनी जानकी माई । अग्निबाण जब मारा निशाचर, गिरे पंख मुरझाई ॥ देत अशीश जानकी माता, प्राण रखो घटमाई । तुलसिदास जब हरि आवेंगे, दीजो कथा सुनाई ॥१०३॥

रघुवर आज रहो मेरे प्यारे । टेक ॥ जो तुमको बनवास दियो है, करियो गमन सकारे ॥ रघुवर कहैं सुनो मेरि जननी, यह व्रत नेम हमारे । अब न रहूँ घर मात कौशल्या, दशरथ वाचा हारे ॥ सीतासहित सुमित्रानंदन, भये कुटुंबसे न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो, चलत नैन जल डारे ॥१०४॥

बिना रघुनाथके देखे, नहीं दिलको करारी है ॥ टेक ॥ हमारी मातकी करनी, सकल दुनियांसे न्यारी है । विमुख जिन रामसों कीना, जननि ऐसी हमारी है ॥ लगी रघुवंशमें अग्नी, अवध सगरी पजारी है । सुना जब तातका मरना, मनो बरछीसी मारी है ॥ भरत लोटें धरणि ऊपर, यही कहते पुकारी है । पड़े व्याकुल हुये बेसुध, दृगनसे नीर जारी है ॥ मुनीश्वर आय दे शिक्षा, करो तुम राज भारी है । नहीं मैं राजका भूखा, नहीं अब नींद प्यारी है ॥ जैसे जलबिन हुई मछली, सोई भइ गति हमारी है । पड़ूँ रघुनाथके चरणों, यही तुलसी विचारी है ॥१०५॥

सच कहो राम कहाँ मेरी माता । टेक ॥ ना घर राम तो ना घर लक्ष्मण, ना घर दशरथ ताता ॥ मैं उनका घर देखत

जीवां, ज्यों चकोर शशि राता । जो मेरे रामको भूख लगेगी, वनफल कौन खिलाता ॥ धिक् तेरो जन्म पिता धिक् तेरो, करी है कुटिल मुख वाता । सेवक रांज राम वनवासी, यह क्या लिखी विधाता ॥ रथ गयो दूर भरत भये व्याकुल, नजर न आवत जाता । तुलसिदास कौशल्याके नंदन, कहाँ गये अयोध्याके नाथा ॥ १०६ ॥

रतनारे नैना जाके ॥ टेक ॥ राजा पूँछे सुनो मुनीजी, ये दोउ बालक काके । कौन नगरमें जन्म लियो है, क्या है नाम पिताके ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा, श्याम गोर रँग ताके । राम लक्ष्मण कौशल्याके जाये, दशरथ नाम पिताके ॥ मुनिको यज्ञ सम्पूरण कीन्हा, घर आये राजाके । सबकी विपदा हरी है रामने, कारज किये हैं सियाके ॥ सब सखियाँ सियसों वरै मागें, पूजत जात उमाके । पीतवसन वैजन्ती माला, क्रीट मुकुट शिर जाके ॥ तुम तारी ऋपिनारि अहल्या, तारी चरण छुआके । तुलसिदास विधना आज वनी है, वेद लिखे विधनाके ॥ १०७ ॥

जननी अब न जियूं बिन रामा ॥ टेक ॥ सूनो भवन सूनो सिंहासन,उन बिन कछु न सुहाना । राम लखण सिय वनको सिधारे, दशरथ तजे हैं प्राना ॥ चित्रकोटको चलो री माता, वहीं जो मिलें दोउ भ्राता । तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिके चरण धर ध्याना ॥ १०८ ॥

मेरी सुधि आन लेओ सिया प्यारी । टेक॥ मात केकई वनोबास दियो है, प्राणोंसों अधिक पियारी ॥ कपटी मृगके पाछे धायो, लक्ष्मण कियो रखवारी । मैं तोहिं सिया बहुत समुझायो, तें एकै न मानी हमारी॥ रामचन्द्र जब गिरे धरणिपर,लक्ष्मण रोये पुकारी । तुलसिदास प्रभु बन बन ढूँढ़त, विधनाकी गति न्यारी ॥ १०९ ॥

अँखियाँ रामरूप अनुरागी । टेक ॥ श्यामबरन बनहरन माधुरी, मूरति अति प्रिय लागी ॥ सुन्दर वदन मदन शत शोभा, निरख निरख रस पागी । रतनहरी पल टरत न टारी, परम प्रेमरँग रागी ॥ ११० ॥

बसोजी म्हारे नैननमें सियाराम ॥ टेक ॥ जनकनन्दनी जगतवन्दनी, रघुनायक घनश्याम । कनकमँडपतले रत्नसिंहासन, युगल मूर्ति अभिराम ॥ सरयूके तीर अयोध्या नगरी, चित्रकूट निजधाम । तुलसिदास प्रभुकी छवि निरखत, लजत कोटि शत काम ॥ १११ ॥

श्रीकृष्णकवितावली ।

कवित्त—कहा भयो जोपै काव्यभेद भाव छन्द बिना, हरि-यश जामें सोई कथनि सुहाई है । सन्तजन गावैं सुनैं कहैं जोपै ताहिको री, कविता बनाई देखि गिरा पछिताई है ॥ रामरस बिना जैसे फीको लगै स्वाद तिमि, रामरस बिना स्वाद गन्धहू न आई है । सन्तमनभाई सुखदाई है सुहाई जामें, कृष्णकेलि गाई सोई साँची कविताई है ॥ ११२ ॥

मोरके पखौवनके माथेपर मुकुट सोहै, कुंडलकी झलक मानो गिरिके घरैयाकी । काँधेपर कामरी कसी है फेंट फाँवरी, सूरति है साँवरी यशोमतिके छैयाकी ॥ दत्तकवि जनपर कोटिकाम वारि डारौं, कैसी छवि बनी है बलभद्रजूके भैयाकी । आगे ग्वाल गैया पीछे पापा पैयाँ सब गोपी, लेत बलैया प्यारे नट-वर कन्हैयाकी ॥ ११३ ॥

सोहत है मुकुट शीश कुंडल श्रवण सोहै, मुरली अधर ध्वनि

मोहे त्रिभुवनको । लोचन रसाल वंक भ्रुकुटी विशाल सोहै, सोहै वनमाल गरे हरे लेत मनको ॥ रूप मनमोहन न चित्तते विसारौ मन, सुन्दर वदनपर कोटि मदननको । जगत निवास कीजै सुमति प्रकाश मेरे, उरमें हुलास है विलास वरणनको ॥ ११४ ॥

वारि डारौं शरद इन्दु मुखछबि गुविन्दपर, दिनेशहूँको वारि डारौं नखन छटानपर । कोटि काम वारि डारौं अंग अंग श्याम लखि, वारि डारौं अलि अलि कुंचित लटानपर ॥ नैननकी कोरनपै कंजहूको वारि डारौं, वारि डारौं हंसहूको चाल लटकानपर । देख सखी आज व्रजराज छबि कहा कहौं, कामधनु वारि डारौं भ्रुकुटी मटानपर ॥ ११५ ॥

सेवती चमेली वेली मालती निवारी कुन्द, खिलरहे फूल खिली चाँदनीमें चन्दकी । नूपुर सितार वेणु बाँसुरी मृदंग बाजै, नाचत गुपाल तीर तनया कलिन्दकी ॥ नाचरहे मोर चारौ ओरसों प्रताप देखो, फूलनपै नाच रही अवली मलिन्दकी । आगे गति नाचरही नारि कुंज केसरमें, बेसरमें नाचरही मूरति गोविन्दकी ॥ ११६ ॥

कवि कमलेश है अधीन गुण राजनके, क्षितिके अधीन गुणाधीन लेखियतु हैं । क्षितिके अधीन धान धानके अधीन प्राण, प्राणके अधीन देह सोई पेखियतु हैं ॥ देहके अधीन नेह नेहके अधीन गेह, गेहके अधीन नारि सो विशेपियतु हैं । नारिके अधीन भाव भावके अधीन भक्ति, भक्तिके अधीन कृष्णचन्द्र देखियतु हैं ॥ ११७ ॥

छेल मनमोहनकी छबिमें छकी हौं छीन, एकहू न भूलत लगाई प्रेमडोरी है । भनत व्रजेश साँची सरल सुभाय भरी, चाय भरी वृन्दावनचन्दकी चकोरी है ॥ गोकुलमें वसत न गोकुलेश

काम कछु, गोकुलेशहीके वश गोपीकी किशोरी है । गोरी देह देखि कोऊ गोरी न कहोगे मोहिं, हौं तो सरावोर श्याम रंगहीमें वोरी है ॥ ११८ ॥

घुँघुरारे वार वारो मोतिन विहार वारो, मुरली वजाय कछु टोनो करि दै गयो । यमुनाके कूल कालिह मिल्यो हो अचानकही, जानि न परत कछु वात मोसूँ कै गयो ॥ जवंते विहाल भई डोलै वन वीथिनमें, कहै वलदेव यह मैनवीज वैगयो । सखियाँ निगोड़ी हकनाहक वकावती हैं, नन्दको कुमार हाय मेरो मन लै गयो ॥ ११९ ॥

मुकुटके रंगनपै इन्द्रको धनुष वारौं, अमल कमल वारौं लोचन विशालपर । कुंडल प्रभापै कोटि प्रभाकर वारि डारौं, कोटिक मदन वारौं वदन रसालपर ॥ तनुके तरणपर नीरद सजल वारौं, चपला चमक मनमोहनकी मालपर । चालपै मराल वारौं मनपर मन वारौं, और कहा कहा वारि डारौं नन्दलालपर ॥

काहूको करोरि सुख सम्पति समाज वसी, काहूको वसी वेष मोहन कलवालकी । काहूको कपट दम्भ द्रोह अरु कोह वसी, काहूको वसी त्रास वासर निश कालकी ॥ काहूको यंत्र मंत्र जप तप विशेष वसी, काहूको वसी भाव भेषों वैतालकी । भनत प्रताप मन केतिक कितीक वसी, मेरे मन वसी टेढ़ी मूरति गोपालकी ॥ १२१ ॥

गिरिको उठायो व्रज गोपको बचाय लियो, अनलसे उभारो पुनि वालक मँजारीको । गजकी अर्ज सुनि ग्राहसे छुटाय लियो, राखो व्रत नेम धर्म पांडवकी नारीको ॥ राखो गजघंटतर वालक विहंगमको, राखो मन भारतमें भीष्म ब्रह्मचारीको । त्रिविध तापहारी निज सन्तन सुखकारी, मोहिं तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारीको ॥ १२२ ॥

कमलानिवास निजदासनकी पूरो आश, ताको विश्वास विष खायो मीरावाई है । केशव कमलनयन सन्तन करन चैन, सैन-हित भये भूप मन जनको नाई है ॥ इन्द्रजूको हर्यो मान सुदामा दियो दान, भक्त जान छान नामदेवजीकी छाई है । नन्दके कन्हाई निजसन्तन सुखदाई, बलदेवजूके भाई सो हमारेहू सहाई है ॥ १२३ ॥

ब्रह्मा रु महेश शेष नारद गणेश कहैं, भक्तनके काज हरि आप देह धारी है । मंगलकरण दुखद्वन्दके हरण पुनि, पोषण भरण ऐसे रटैं नर नारी है ॥ विरद भक्तवत्सल वेदहू पुराण कहैं, जानत हों जाके अब खोवेकी विचारी है । द्वारकाके वासी भये जायके मेवासी अब, मेरी होत हाँसी यामें हाँसी तो तिहारी है ॥

वसी रहै शशिछवि ज्यों मन चकोरनके, अति मति मालती सुमनमें वसी रहै । वसी रहै गज मन रेवाकीच अरु रेणु, मोरनकी रुचि घनाघनमें वसी रहै ॥ वसी रहै श्रीपतिसदन कमलाजू जैसे. लोभी मन रुचि चित्त धनमें वसी रहै । वसी रहै त्योंही तेरे छविकी लगन कृष्ण, मूरति तिहारी मेरे मनमें वसी रहै॥

गुंजनकी माला गल धारत विशाला, और कुंडल कमाला कान राखत रसाला है । पीतपटवाला सोई परम कृपाला, लखो विरजकी वाला संग विहरे विशाला है ॥ गायके गुपाला सोइ दीन प्रतिपाला. सदा रागके रसाला महामोद मत्तवाला है । गोविंद कहत ऐसे देवकीके लाला, रम्य मोरपक्षवाला सोई मोर पक्षवाला है ॥ १२६ ॥

दानव दरैया मोरपुच्छके धरैया, शुभ व्रज विहरैया चीर गोपिके हरैया हो । भावके भरैया तीन तापके टरैया, अरु करुणा करैया गुंजमालके धरैया हो ॥ गायके चरैया चारो फलके

फरैया, पुनि शैलके धरैया मद इन्द्रके हरैया हौ । गोविंद कहत ऐसे दुःखके दरैया, कान्ह संपति भरैया सर्व सिद्धिके करैया हौ ॥

मिष्टमुख बोलनमें कुंडलके डोलनमें, लोचन विलोलनमें चाह उपजावनी । गीतनके गावनमें वंशिके बजावनमें, हाथके हिलावनमें चित्तको चुरावनो ॥ प्रेमसरसावनमें नेमके निभावनमें, मनके मिलावनमें भूरि मनभावनो । गोविंद कहत ऐसे आनँद उपावनको, ध्याइये सदाय चित्त श्यामल सुहावनो ॥ १२८ ॥

सुन्दर सुपट शीश मुकुट लसत पुनि, कुंडल करन आभा ओपत अमानकी । गुंजनकी माल मंजु राजत रसाल पुनि, बाँसुरी विभाय वीच युग्म अधरानकी ॥ अंगपै प्रभाव पीत वसन विशाल पुनि, चित्तको चुराय शोभा मन्द मुसक्यानकी । गोविंद कहत ऐसी मेरे मनमाहिं छवि रहियो सदाय श्यामसुन्दर सुजानकी ॥ १२९ ॥

झूँठतें उठाइ मुझे सत्यमें ले जाओ सदा, तमते उठाइ धरो ज्योति अभिराममें । मृत्युतें उठाइ धरो अमृत अनूपमाहिं, पापतें उठाइ धरो धर्म शुभधाममें ॥ दुःखते उठाइ धरो सुखमें सदाय और, श्रमतें गठाइ धरो विमल विश्राममें । गोविंद कहत मेरी गोविंद गुहार सुनि, इतते उठाइ धरो नीके निज धाममें ॥ १३० ॥

माथेपै मुकुट देखि चन्द्रिका चटक देखि, छबिकी लटक देखि रूपरस पीजिये । लोचन विशाल देखि गरे गुंजमाल देखि, अधरको लाल देखि चित्तचोप कीजिये ॥ कुंडल डुलनि देखि अलकैं हिलनि देखि, पलकैं चलनि देखि सर्वस दीजिये । पीतपट छोर देखि मुरलीकी घोर देखि, साँवरेकी ओर देखि देखिबोई कीजिये ॥ १३१ ॥

सुन्दर सुजानपर मन्द मुसक्यानपर, बाँसुरीकी तानपर ठौर

न ठगी रहै । मूरति विशालपर कंचनसी मालपर, हंसन चालपर खौरन खगी रहै ॥ भौंहैं धनु मैनपर लोने युग नैनपर, शुद्धरस बैनपर वाहिद पगी रहै । चंचलसे तनपर साँवरे वदनपर, नन्दके नँदनपर लगन लगी रहै ॥ १३२ ॥

श्यामतन घनपर विज्जुसे वसनपर, मोहनि हँसनिपर शोभा उमगी रहै । खौरवारे मालपर लोचन विशालपर, उर वनमालपर खेलत खगी रहै ॥ जंघ जुग जानुपर मंजु मोर वानपर, श्रीपति सुजान मति प्रेमसों पगी रहै । नूपुर नगनपर कंजसे पगनपर, आनँद मगन मेरी लगनि लगी रहै ॥ १३३ ॥

रंग लाल रूप लाल अधर अधिक लाल, दृगनके डोरे लाल कोरें लाल पलकैं । चीर लाल चोली लाल लाल डोरे गुहे वाल, वेसरकी वेंदी लाल हियेमाँझ झलकैं ॥ कहै मृगलोचनी सोहाग भाग तेरे आज, सोहै लाल भाल वेंदी और सोहैं अलकैं । पान लाल पीक लाल पीकहूकी लीक लाल, एते लाल पाय प्यारी लालहूको ललकैं ॥ १३४ ॥

मुकुटकी चटक लटक विविकुंडलकी, भौंहकी मटक नेकु आँखिन दिखाउ रे । ये हो वनवारी वलिहारी जाउँ तेरी मेरी, गैल किन आइ मेरी गाइन चराउ रे ॥ गोविंद सुजान रूप गुणके निधान कान्ह, बाँसुरी वजाइ ताप तपनि बुझाउ रे । नन्दके किशोर चित चोर मोरपंखवारे, वंशीवारे साँवरे पियारे इत आउरे ॥ १३५ ॥

फूलनकी चन्द्रकला शीशफूल फूलनको, फूलनके झूमका हैं श्रवण सुकुमारीके । फूलनकी वन्दिनी विशाल नथ फूलनकी, फूलनको वेंदा भाल राजत दुलारीके ॥ फूलनकी चम्पाकली हार गले फूलनके, फूलनके गजरा हैं ललित नव प्यारीके । फूलनके

पगमें हैं पायल नारायणजू, फूले भाग सदा लाल लाड़िली हमारीके ॥ १३६ ॥

सवैया ।

छविसों फवि शीश किरीट वन्यो, रुचिसों हियमें वनमाल लसै ।
करकंजहि मंजुरली मुरली, कछनी कटि चारु प्रभा बरसै ॥
कवि कृष्ण कहै लखि सुन्दर मूरति, यों अभिलाष हिये सरसै ।
वह नन्दकिशोर विहारी सदा, यह वानिक मो मनमाँझ वसै ॥१३७॥

चलि देखुरी वानिकसों वानिके, व्रजराजको डिलो गावतु है ।
मुखचन्द्रकी चारु मरीचनसों, वलि नैनचकोर सिरावतु है ।
जब डीठिको ओठनको पटको मुसक्यानको रंग मिलावतु है ।
तव बाँसुरी बाँस हरेकी लला, सुरचापके रंग दिखावतु है ॥१३८॥

व्यापक ब्रह्म सवै थल पूरण, हैं हमहूँ पहिचानती हैं । पैविना नँदलाल विहाल सदा, हरिचन्दन ज्ञानहिं ठानती हैं ॥ तुम ऊधो यही कहियो उनसों, हम और कछू नहिं जानती हैं । पिय प्यारे तिहारे निहारे विना, अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं ॥१३९॥

लै मन फेरिवो जानो नहीं, वलि नेह निबाह कियो नहिं आवत । हेरिके फेरि मुखै हरिचन्दजू, देखनहूँको हमें तरसावत ॥ प्रीति पपीहनकी घन साँवरे, पानिपरूप कवौं न पियावत । जानो न नेक विथा परकी, वलिहारी तऊ हौ सुजान कहावत॥१४०॥

रूप दिखायके मोल लियो, मन बाल गुडी बहु रंगन जोरी । चाहत माँझो दियो हरिचन्दजू, लै अपनो गुनकी रसडोरी ॥ फेरिकै नैन परे तनुपै, वदनामीकी तापै लगाई पुँछोरी । प्रीतिकी चंग उमंग चढ़ायके सो हरि हाय वढ़ायके तोरी ॥ १४१ ॥

मुरिके मुसुकानि लख्यो जबते, ममतो तवते कुलकानि नसी । कछु भावत है नहिं ताही विना, वह रैनिदिना द्युति आनि

वसी ॥ गति प्रीतिकी जानत कोउ नहीं, सब लोग करैं उत्पात हँसी । वह लालन कुन्तल जालनमें मति मो हरिनी अब जाय फँसी ॥ १४२ ॥

सुन्दर गोल कपोलनपै, अनमोल सो कुंडल डोलनि प्यारी । ही हलकैं द्युति मोहनकी, छलकैं सुथरी अलकैं घुँघवारी ॥ वा मुसक्यानि विलोकतही, कुलकानि सबै तजि होत विदारी । लागि जो जाहिं तो कीजै कहा, सखि ये अँखियाँ रिझवारि हमारी ॥ १४३ ॥

भोर भये जल लेन चली, वह गोकुल गाँवकी गैलमें गोरी । औचक भेंट भई नँदराय, परी उरमें लखि प्रेम ठगोरी ॥ आहट पाइके ओरन कौन, भई मनकी वहि साँकरी खोरी । मोहि गई न चलै न हलै, तनमान तजै वृपभानुकिशोरी ॥ १४४ ॥

लखि मोहनै मोहिं मिलापके शोच, घने घने घायन घूटि गई । अब और विचार विचारत ना, मन मैनमहन्तसों मूढ़ि गई ॥ नँदरामजु आपु गई सुखसिंधु, हमैं उपचारन छाँडि गई । तुम कौनको आली पुकारती हो, वह साँवरे रंगमें डूबि गई ॥ १४५ ॥

अलि इन्दु सुधा अरविन्द रमा, जलविन्दुलौं बीच विचारियेना । घनश्यामको रूप निहारि अरी, घनश्यामको रूप निहारियेना ॥ नँदरायजू अन्तरवीच निरन्तर, भूलिहू अन्तर डारियेना । चित चाहत मेरो सदा सजनी, हरिके मुखसों दृग टारियेना ॥ १४६ ॥

जाकी प्रभा अवलोकतही, तिहुँलोककी सुंदरता गहि वारी । कृष्ण कहैं सरसीरुहलोचन, नाम महामुद मंगलकारी ॥ जा तनकी झलकैं झलकैं, हरिता द्युति श्यामल होति निहारी । श्रीवृषभानुकुमारि कृपा करि, राधा हरौ भवबाधा हमारी ॥ १४७ ॥

आवत हौ रसके चसके तुम, जानत हौ रस होत कहा हौ।
नेक अबै रस भीनन देहु, दिना दशके अलबेले लला हौ ॥
अन्त वही दिन आवहिंगे, जब ग्वालनके तुम संग सखा हौ।
लेहु कहा इन बातनमें, घर जाहु लला अबही लरिका हौ ॥१४८॥

वह सुन्दर रूप विलोकि सखी, मन हाथसों मेरो भग्यो सो भग्यो। चित माधुरी मूरति देखतही, हरिचन्द जू नाथ पग्यो सो पग्यो ॥ मोहिं औरनसे कछु काम नहीं, अब तो ये कलंक लग्यो सो लग्यो। रँग दूसरो और चढ़ैगो नहीं, अली साँवलो रंग रँग्यो सो रँग्यो ॥ १४९ ॥

यमुनातट जाते सवेरे लला, कल बाँकी अदासे निहारा हमें। फिर वंशी बजाके लुभाके जिया, चश्मोंसे किया क्यों इशारा हमें ॥ अपने मतलबके हमेशाके हौ, करि काम नजरसे उतारा हमें। बाज आई तुम्हारी मुहब्बतसे मैं, दिल फेरौ गोविंद हमारा हमें ॥ १५० ॥

पहले तो अदा दिखा कत्ल किया, फिर देतेहो पीछे पुचारा हमें। कल शबको गलेसे लगा जब लिया; तब चल चल कहा हट दुवारा हमें ॥ मतलबका यहाँ है जमाना सभी, बस करना है तुमसे किनारा हमें। हटौ प्रीतिकी रीति न जानौ कछू, दिल फेर दो श्याम हमारा हमें ॥ १५१ ॥

तुम हौ सब भाँति प्रवीन लला, तनि तौ हमरे घर आया करौ।
कछु और न काम अहै तुमसों, हितसों दधि माखन खाया करौ ॥
मनिलाल यही विनती इतनी, चितसों नहिं मोहिं भुलाया करौ।
लगि ध्यान रह्यो पदपंकजमें, व्रजमें नित रास दिखाया करौ॥१५२॥

कवित्त–जाको नाम नेक कहुँ धोखेहु कढ़त अन्त, आवत न यमदूत स्वपने निकट रे। पावत सो मुक्ति जाहि याचत

नित योगीजन, छूटि जात बेगि भवशृंखला विकट रे ॥ सोई यें अनकन्द नन्दके कुमार प्यारे, ताहिके हमेश चारु चरणन लिपट रे । येरे परताप कोटि भ्रमको किवार टारि, बारबार कृष्ण कृष्ण राधाकृष्ण रट रे ॥ १५३ ॥

अवली तमाल अवतालकी विशाल सोहै,शाखा हैं सघन छबि छाये ये उतंग हैं । श्रेणिन अनेक द्रुम दाडिम कदम्ब फूल फैलत सुगन्धवर दर्शत सुरंग हैं । वृन्दावन वास अति अद्भुत विलास छायो, चहूँदिशि प्रताप कुल कूजत कुरंग हैं । यमुनाके कूल औ कदम्बनकी डारनपै, राधाकृष्ण राधाकृष्ण टेरत विहंग हैं ॥१५४॥

तीर तीर नूतन कदम्बनकी महा भीर, झूमि झूमि शाखा रहे यमुनाके संग हैं । वल्लरी नवेली फल झूल रही झालरसी, भृंग पतवारेनपै गुंजत उमंग हैं ॥ भनत प्रताप चहुँ नृत्यत मुदित मोर, त्रिविध समीर डोलैं तरल तरंग हैं । यमुनाके कूल औ कदंबनकी डारनपै, राधाकृष्ण राधाकृष्ण टेरत विहंग हैं ॥१५५॥

कुंडल विलोल कुल कानन कनक राजै, केसरिको तिलक भाल भ्रुकुटी विशालकी । कुंदन किरीट तामें मोरके पखानखोंसे, झूमत चलत मन्दगतिसों मरालकी ॥ चितवनि तिरछी तीर तीक्षण अनंगकेसे, विहँसतमें आली जात लाली है गुलालकी । कैसेहूँ विसारे नाहिं विसरत प्रताप नेक, मेरे मन वसी टेढ़ी मूरति गोपालकी ॥ १५६ ॥

ध्यावत महेशहू गणेशहू धनेशहू, दिनेशहू फणेश त्यों मुनीश मनमानी है । तीनों लोक जपत त्रितापकी हरणहार, नवौ निद्धि सिद्धि मुक्ति भई दरवानीके ॥ कीरतिदुलारी सेवैं चरण विहारी धन्य, जाकी कीर्ति नित्य विधि वेदन बखानी है । साधा काज पलमें अराधा क्षण आधा हठी, वाधा हरिवेको एक राधा महारानी है ॥ १५७ ॥

सवैया।

जाकी कृपा शुक ज्ञानी भये, अति दानी औ ध्यानी भये त्रिपुरारी। जाकी कृपा विधि वेद रचे, भये व्यास पुराणनके अधिकारी॥ जाकी कृपाते त्रिलोक धनी सो, कहावत श्रीव्रजचंदविहारी। लोकघटीते हठीको बचाउ, कृपा करि श्रीवृषभानुदुलारी॥

दास सुदामाको संपति दै, चुटकी भरि चावल पहलेहि लीने। सागके पात पँचालीके खाय, तवै ऋषिभोजन दीने नवीने॥ कंसकी दासीपै चंदन ले, पटरानी करी कहों मान करीने। कारज जो जगमें यदुराय, अकोर लिये विन कौनके कीने॥ १५९॥

शेश महेश गणेश दिनेश, सुरेशहु जाहि निरंतर गावैं। जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सु वेय बतावैं॥ नारद लै शुक व्यास रटैं, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं। ताहि अहीरकी छोहरियाँ, छछियाभर छाछपै नाच नचावैं॥ १६०॥

गुंज गरे शिर मोरपखा, अरु चाल गयन्दकी मो मन भावैं। साँवरो नन्दकुमार सबै, व्रजमंडलमें व्रजराज कहावैं॥ साजैं समाज सबै शिरताजकी, लाजकी बात कंही नहिं आवैं। ताहि अहीरकी छोहरियाँ, छछियाभर छाछपै नाच नचावैं॥ १६१॥

धूर भरे अति शोभित श्यामजु, तैसी बनी शिर सुंदर चोटी। खेलत खात फिरैं अँगना पग, पैंजनियाँ कटि पीरी कछोटी॥ वा छबिको रसखानि विलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी। कागके भाग कहा कहिये, हरिहाथते लैगयो माखन रोटी॥ १६२॥

लोककी लाज तजी तबहीं, जब देख्यो सखी व्रजचंद सलोनो। खंजन मीन सरोजनकी, छवि गंजन नैनलला दिन होनो॥ रसखानि निहार सकै जु सम्हारके, को तिय है वह रूप सु टोनो। भौंह कमानसु जोहनको, शर वेधत प्राणन नन्दको छौनो॥ १६३॥

सोहत है चँदवा शिर मोरके, तेसिय सुंदर पाग कसी है। तैसिय गोरज भाल विराजत, तैसी हिये वनमाल लसी है॥ रसखानि विलोकत बौरी भई, दृग मूँदके ग्वालि पुकार हँसी है। खोलरी घूँघट खोलों कहा, वह मूरति नैननमाँझ बसी है॥ १६४॥

बाँकी विलोकन रंगभरी, रसखानि खरी मुसकान सुहाई। बोलत बैन अमीरस दैन, महारस ऐन सुने सुखदाई॥ कुंजनमें पुरवीथिनमें, पिय गोहन लागि फिरों मेरी माई। बाँसुरी टेर सुनाय अरी, अपनाय लई व्रजराज कन्हाई॥ १६५॥

आज सखी नँदनन्दनरी, तकि ठाढ़ो है कुंजनकी परछाहीं। नैन विशालकी जोहनको, शर बेध गयो हियरा जियमाहीं॥ घायल घूम खुमार गिरी, रसखानि सम्हार रह्यो तनु नाहीं। तापर वा मुसकानकी डौंडी, बजी व्रजमें अबला कित जाहीं॥१६६॥

कौनको लाल सलोनो सखी, वह जाकी बड़ी अँखियाँ अनियारी। जोहनि बंक विशालके बानन, बेधत है हिय तीक्षन भारी॥ रसखानि सम्हार परै नहिं चोटसु, कोटि उपाय करो सुखकारी। भाल लिख्यो विधि नेहको बंधन, खोल सकै अस को हितकारी॥ १६७॥

नैन लख्यो जब कुंजनते, बनिके निकस्यो मटक्यो मटक्यो री। सोहत कैसो हरा टटको शिर, तैसे किरीट लसै लटक्यो री॥ को रसखानि रहै अटक्यो, हटक्यो व्रज लोग फिरे भटक्यो री। रूप अनूपम वा नटको, हियरे अटक्यो अटक्यो अटक्यो री॥१६८॥

मकराकृति कुंडल गुंजकि माल, सुलाल लसैं पग पाँवरियाँ। बछरान चरावनके मिस भावतो, दै गयो भावती भाँवरियाँ॥ रसखानि विलोकत ही सिगरी, भई बावरियाँ व्रजडावरियाँ। सजनी सब गोकुलमें विष सो, बगरायो है नंदके साँवरियाँ॥१६९॥

ऐ सजनी वह नन्दको साँवरो, या वन धेनु चराय गयो है।
मोहनी तानन गोधन गायके, बेणु बजाय रिझाय गयो है॥
ताहि घरी कछु टोनोसो कै, रसखानि हियेमें समाय गयो है।
कोऊ न काहूकी कान करै, सिगरो व्रज वीर बिकाय गयो है॥१७०॥

मोहनकी मुरली सुनिके, वह बौरी ह्वै आन अटा चढ़ि झाँकी।
गोप बड़ेनकी दीठ बचायके, दीठसों दीठ जुरी दुहु घांकी॥
देखत मोल भयो अँखियानमें, को करै लाज औ कान कहाँकी।
कैसे छुटाई छुटै अटकी, रसखानि दुहूँकी विलोकन बाँकी॥१७१॥

मोरकी चंद्रिका मोर लसैं दिन, दूलह है अलि नंदको नंदन।
श्रीवृषभानुसुता दुलही लही, जोरी बनी विधिना सुखकंदन॥
रसखान न आवत मोपै कह्यो, कछु दोऊ फँदे छबि प्रेमके फंदन।
जाहि विलोके सभी सुख पावत, ये व्रजजीवन दुःखनिकंदन॥१७२॥

एक समय यमुनाजलमें सब, मज्जनहेत धसीं व्रजगोरी। त्यों रसखान गयो मनमोहन, लैकर चीर कदंबकी छोरी॥ न्हाय जबै निकसीं वनिता, चहुँओर चितै चित रोष करयोरी। हार हियो भर भावनसों पट, दीने लला वचनामृत बोरी॥ १७३॥

दानी भये नये माँगत दान, सुनेजुपै कंस तो बाँधेन जैहो। रोकत हो मगमें रसखान, पसारत हाथ कछू नहिं पैहो॥ टूटै छरा बछरा अरु गोधन, जो धन है सु सबै धर देहो। जैहै अभूषण काहू सखीको, तौ मोल छलाके लला न बिकैहो॥१७४॥

लोग कहैं व्रजके रसखान, अनन्दित नन्द यशोमतिजूपर। छोहरा आज नयो जनम्यो, तुमसों कोउ भाग भरयो नहीं भूपर॥ वारकदाम सँवार करौ घन, पानी पियो सु उतार ललूपर। नाचत रावरो लाल गुपाल हो, कालसे व्याल कपालके ऊपर॥ १७५॥

द्रौपदी औ गणिका गज गीध, अजामिलसों कियो सो न

निहारो । गौतम गेहनी कैसी तरी, प्रहलादको कैसो हरयो दुख भारो ॥ काहेको शोच करै रसखान, कहा करि है यमराज विचारो। कौनकी शंक परी है जु माखन, चाखनहारो है राखनहारो ॥१७६॥

देशविदेशके देखे नरेश, न रीझको कोऊ न बूझ करैगो । ताते तिन्हैं तजि जाऊँ गिरौं, गुणको गुण औगुण गाँठ परैगो॥ बाँसुरीवारो बड़ो रिझवार है, जो कहूँ नेसुक ढार ढरैगो । सुंदर साँवरो छैल अहीरको, पीर हमारे हियेकी हरैगो ॥ १७७ ॥

जो रसना रसना विलसै, तेहि देहु सदा निज नाम उचारन । मो करनी कर नीकी करैं जुपै, कुंज कुटीरन देहु बुहारन ॥ सिद्धि समृद्धि सबै रसखान, लहौं ब्रजरेणुका अंग सँवारन । खान निवास मिले तो सही वहि, कालिंदिकूल कदंबकि डारन ॥ १७८ ॥

वा लकुटी अरु कामरियापर, राज तिहूँपुरको तजि डारौं । आठहु सिद्धि नवौ निधिको सुख, नंदकि गाय चराय बिसारौं ॥ रसखान कबै इन नैननसों, ब्रजके वन बाग तडाग निहारौं । कोटिनहूँ कलधौतके धाम, करीलकी कुंजनऊपर वारौं ॥ १७९ ॥

शेश सुरेश दिनेश गणेश, ब्रजेश धनेश महेश मनाओ । कोउ भवानी भजो मनकी सब, आश सबै विधि जाय पुराओ ॥ कोउ रमा भजि लेहु महाधन, कोउ कहूँ मनवांछित पाओ । है रसखान मेरे वही साधन, और त्रिलोक रहौंकि नशाओ ॥१८०॥

कवित्त–फूल फूल फूलनके फूल फूल लिये तोड़, रंग रंग रंगीनकी रंगत निहारी है । सूत सूत सूत डोर रेशम रसान भरे, गहक गहक गूंध गूंध ना निहारी है ॥ ग्वाल कवि सौरभ समुद्रते निकाली मानो, ललित ललाई कोमलाई वेकरारी है । वानक विशाल वारों मोतिनकी माल जापै, ऐसी वनमाला नँद-लाल हिये धारी है ॥ १८१ ॥

पीरे बन बाग अनुराग भरे भाग भरे, अंग अंग रंगकी उमंग मन पैठे हैं। पीरे पीरे हिये पर पीरेही वसन सने, पीरेही रतन तन अतन अमैठे हैं॥ ग्वाल कवि पीरे गोले गेंदुवा पलंग पीरे, पीरे पान चावें पीरे हार हार ऐंठे हैं। है नई वसंत है वसंत रही राधिकाके, दोऊ पाँ वसंतमें वसन्त बन बैठे हैं॥ १८२॥

लालची लजीले लोल ललित रसीले लखे,लोगन ललकि लै लै लूट लँगराके हैं। छिनमें छलीन चित्त छैलनको छोभैं छौरें, छोरें छरकीले सो छबीले छबि छाके हैं॥ मनसा कहत डेरा न डाड़े डांका, डारत डगर डग डारतमें डाँके हैं डौड़ीके ऐसे और काके मैनकाके अबलाके मैन,वाननते बाँके नैन बाँके राधिकाके हैं॥१८३

सोरह शृंगार।

कबित्त–मंजन सुनेह शील बोलन चितौन चाल, मृदु मुसकान चारु गुंधन सुवैनीकी। सेंदुर सु माँग भाल तिलक दृगंजनहूँ, बीरी मुख चिबुक मसीकनके दैनीकी॥ भनै रघुनाथ अंगराग वर केसरको, कर मेंहदीकी दैन सब सुखदैनीकी। जावक समेत सोला लसैं कंजपद कैसे, देखत बनै है कान्ति वोहि मृगनैनीकी॥ १८४॥

बारह आभूषण।

कबित्त–बेंदी भाल नासा बेस बेसर तरौना कान, कंठसिरी कंठ हार हीरा माणिसंगमें। बाजूबन्द कंकन अँगूठी छला छापयुक्त,नीवीबन्द किंकिणी सुहाई रसरंगमें॥ भनै रघुनाथ पायँ नूपुर मंजीर मंजु, राजत रँगीली भरी योवन तरंगमें। लीन्हे प्रतिबिंब चन्द्रबिंबकी निकाई लखै, बारहू अभूषण बिराजे बाल अंगमें॥ १८५॥

सवैया ।

-रास कियो औ विलास कियो, रहे पास हुलासकी रास लैलूटी जा दिनते अक्रूर लेवायगो, ता दिनते गति औरही जूटी ॥ त्यों कवि ग्वाल कलंकिनी कूवरी, कान लगेते सबै मति फूटी वाहरें वाह गोविंद छली, भली योगकी भेजि दई विषबूटी॥१८६॥

·शारद मासमें रास रचो, यमुनातट पुंजविलासकी छावों । बीन मृदंग पखावज वेनु, बजाय बताय प्रताप हों गावों ॥ ऊधौ सुभौंह कटाक्षके कोर, करोरके प्रीतिकी रीति रिझावों ·। रीझे गोपाल जो कूवरीपै, तो कूवर आज मैं कौनपै पावों ॥१८७॥

श्रीकृष्णगीतावली ।

राग विहाग—कर मन नन्दनँदनको ध्यान । यह अवसर तोहिं फिर न मिलैगो मेरो कह्यो अब मान ॥ घूँघरवारी अलकैं मुखपर कुंडल झलकत कान । नारायण अलसाने नयना झूमत रूपनिधान ॥ १८८ ॥

छन्द—जन्मे श्रीकृष्ण मुरारि भगतहित कारने । मथुरा लियो अवतार गोकुल झूले पालने ॥ तिथि आठैं बुधवार भाद्रपदकी करी । रोहिणी नक्षत्र आधीरातको जन्मे हरी ॥ धनि धनि वसुदेव देवकी जहाँ प्रभु अवतरे । धनि धनि गोपी ग्वालकी जिन प्रभु वश करे ॥ धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करें । दुंदुभि बजत अकाश सुमन वर्षा करें ॥ व्रजवासी गोरस भर भर कर लावहीं । दधि काँदो वावा नंदसु कीच मचावहीं ॥ वाजत ताल मृदंग बीण अरु बाँसुरी । निरखें गोपी

ग्वाल चलौं चित चावरी ॥ यशुमति चीरं पहराय नौरँग भई ग्वालनी । सुंदर वदन निहार चकित भई भामिनी ॥ श्रीबलदेवजूके वीर असुरदल खंडना । भगतवछल महाराजसु यदुकुलमंडना ॥ शंकर धरत हैं ध्यान सु गोद खिलावहीं । सो मुख चूमत माय सु पलन झुलावहीं ॥ श्रीनंददासजु नेह चरण चित लावहीं । हरिगुण मंगल गाय जन्मफल पावहीं ॥ १८९ ॥

राग जंगला—आज महरि घर देउ री वधाई। शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो वड़भागिनि है यशुमति माई ॥ वृद्ध वधू सव जुर मिल आई यथायोग कुलरीति कराई । दान मान विप्रनको दीनो मणिमुक्ता पटभूषणताई ॥ मृगनयनी कल कोकिलवयनी कर शृँगार वैठीं अँगनाई । लै लै नाम नन्दयशुमतिको गावत गारी परम सुहाई ॥ ध्वज पताक तोरण मणिजाला द्वारन वन्दनवार वँधाई । नारायण व्रज आनँद छायो प्रगट भये वर कुँवर कन्हाई ॥ १९० ॥

राग परज—अव नन्दभवनमें चलो री वीर । साँवरे कन्हाई विन कल न परत घरी पलछिन मन न धरत है धीर ॥ दृग अति अकुलावें नहिं पलक लगावें पुनि उतहीको धावें परी इनपै भीर । तनु सुरत विसारी लगी चटपटी भारी नारायण हमारी को जानत पीर ॥ १९१ ॥

राग काफी—लाल तेरे जादूभरे दोउ नैन । चितवनमें चित वश कर लेवें मोहनी मंत्र हैं सैन ॥ अति वाँके सुन्दर मतवारे अनियारे छवि ऐन । नारायण इनके विन देखे पलछिन परत न चैन ॥ १९२ ॥

राग खट—एक सखी उठ वड़े भोरही नन्दरायके भवन गई । ताही समय जगे मनमोहन आलसवश मुखकांति नई ॥

नैन उनींदे झूमत पलकें शिथिल वचन अति मोद भई । नारा-
यण यह छवि लख ग्वालिन मानो भीतको चित्र भई ॥ १९३ ॥

राग सोरठ—मनमोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होत है
और और। न सुहात भवन तन अशन वसन वनहीको धावत
दौर दौर ॥ नहिं धरत धीर हिय विरह पीर व्याकुल भई भटकत
ठौर ठौर । कब अँसुवन भर नारायण मग झाँकत डोलत
पौर पौर ॥ १९४ ॥

राग मलार—सखी री यह सावन मनभावन । चातक मोर
चकोर कोकिला बोलत वचन सुहावन ॥ गरजत घन घन घन-
नन घननन लगे मेह बरसावन । नारायण भीजत मेरे गृह
श्यामसुंदरको आवन ॥ १९५ ॥

सघन वन झूलें दोउ सुकुमार । हिय हर्षत छवि निरख पर-
स्पर छिन छिन बाढ़त प्यार ॥ कबहुँ मुदित मन तान लेत
मिल होत सखी बलिहार । नारायण द्रुम वेलि सुहावन हरी
कियो शृंगार ॥ १९६ ॥

मनमोहनसम सुंदर को है । मैं अपने अनुमान कहूँ अब
उनकी पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारो
जाको मुख नित चंदहूँ जोहै । नारायण जो एक दृष्टिमें सुर नर
नाग सकलको मोहै ॥ १९७ ॥

राग काफी—पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुनातीर ।
हँस हँस वदन अरगजा डारत मारत मूठ अबीर ॥ चलत कुंकुमा
रंग पिचकारी भीज रहे तनु चीर । जनु घनदामिनि रूप धरे
हैं गोरे श्याम शरीर ॥ बजत अनेक भाँति मृदु बाजे होय रही
अति भीर । नारायण या सुख निरखे बिन कौन धरै मन धीर ॥

राग कान्हरो—आज वंशीवट वरसत रंग । यमुनातीर समीर सुहावत बोलत विविध विहंग ॥ कीरतकुँवर लाल नन्दजीको झूल रहे इक संग । रूपसिंधुके अंग अंगते छविकी उठत तरंग ॥ बजत वीन ताऊस सरंगी वंशी झाँझ मृदंग । नारायण गावत मिल सजनी हियमें बढ़त उमंग ॥ १९९ ॥

राग झँझौटी--आज श्याम मग धूम मचाई । धूम मचाई करत ढिठाई ॥ विन रँग डारे देत नहिं निकसन मैं तेरी सों देखके आई । तू कहूँ भूलके मत उत जैयो जानै कहा वह करे लँगराई ॥ नारायण होरीके दिननमें, अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई ॥ २०० ॥

राग काफी—देख सखी वृषभानुकिशोरी । निज प्रीतमको रूप निहारत जा विध चंद चकोरी ॥ भलो फाग खेलनको निकसी बीच भई चितचोरी । नारायण अटके दृग छविमें भूल गई सुधि होरी ॥ २०१ ॥

राग होरी काफी—होरी हो ब्रजराजदुलारे । अब क्यों जाय छिपे जननीढिग रे द्वै बापनवारे ॥ कै तो निकसके होरी खेलो कै मुखसों कहो हारे । जोरि कर आगे हमारे ॥ बहुत दिननसों तुम मनमोहन फागहिं फाग पुकारे । आज देखियो सैल फागकी पिचकारिनके फुहारे । चलें जव कुमकुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने रोकत गैल गिरारे । नारायण सब खबर परेगी नेक तो आयके द्वारे । सुरति अपनी तू दिखारे ॥

राग जोगिया—आज सखी सुपनों मैं देखो रैन । जबहीं-सों जिय भई अति व्याकुल पलछिन परत न चैन ॥ श्यामबरन इक पुरुष मनोहर नवजोवन छबि ऐन । शीश मुकुट कुंडल गल

माला सुन्दर वाँके नैन ॥ मैं उनसों कछु कहन न-पाई सुने न उनके वैन । नारायण तव आँख उघर गई ना कछु लैन न दैन ॥ २०३ ॥

राग कान्हरो—नन्दनँदनके ऐसे नैन । अति छविभरे नागके छौना तुरत डसें कर सैंन ॥ इनसम साँवरि मंत्र न होई जादू यंत्र तंत्र नहिं कोई एक दृष्टिमें मन हर लेवें कर देवें वेचैन ॥ चितवनमें घायल कर डारें इनपे कोटि वाण लै वारें अति पैने तिरछे हिय कसकें श्वास न देवें लैन । चंचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावनहारे नारायण सुंदर मतवारे अनियारे सुख दैन ॥ २०४ ॥

राग भैरव—वंशीवट यमुनातट निरतत वनवारी । अति सुगंध मंद मंद पवन चलत प्यारी ॥ चन्द्रवदन श्याम रसिक मुकुटचन्द शीश लसत चन्द्रमुखी प्रिया शरद चाँदकी उजारी । वाजे वाजत विशाल गति मति स्वर अधिक ताल रागरंग त्रिविध भाँति नूपुरधुनि न्यारी ॥ नारायण शिव सुजान गोपिकाको वेप ठान निरख निरख नृत्यगान भये चित्रकारी ॥२०५॥

राग नायकी कान्हरा—आज रचो रसरास विहारी । जैसोइ वृन्दा विपिन सुहावन तैसिहि शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनकी शोभा फूलिरही चहुँदिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद वढ़ावन शीतल मन्द सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लालसहित व्रजवाला चपल चतुर गति लै लै न्यारी । वजत अनेक भाँति मृदु वाजे परम प्रवीन वजावत वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगुन अलापत करत वड़ाइ लाल गिरिधारी । नाचत सुमन झरत हैं शीशतें मुख श्रमविंदु देत छवि न्यारी ॥ कवहूँ श्याम

विलम है नाचत ताल देत मिल गोपकुमारी । नारायण नभते सुर निरखत वर्षत फूल सहित निज नारी ॥ २०६ ॥

राग आसावरी—श्याम बलराम गुण सदा गाऊँ । श्याम बलराम विन दूसरे देवको सुपनहूँ माहिं नहिं हृदय ल्याऊँ॥ यहै जप यहै तप यहै यम नेम व्रत यहै मम प्रेमफल यहै पाऊँ। यहै मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु मैं यहै पाऊँ ॥ २०७ ॥

भजन—आदिपुरुष अविगत अविनाशी, नाना कौतुक लावै री ॥ टेक ॥ आपहि आप और नहिं कोई, बहुत स्वरूप दिखावै री । आपहि मोहन लाल ग्वालनी, मुरली आप बजावै री ॥ आपहि व्रजकी वनिता बनकर, बनको दौड़ा जावै री । आपहि गोपी कान्ह विराजे, आपहि रास रचावै री ॥ आपहि व्याकुल हो खेलनको, लीला प्रेम बनावै री । प्रगट होय सबहिनको सुख दै, आपहि रंग बढ़ावै री ॥ भोर भया जब खेल मिटावै, आपहि आप रहावै री । कबहूँ एक अनेक भयो विध, नाना हर्ष बढ़ावै री ॥ सत् चित रूप कहूँ आनँदहित, औरनको समझावै री । चरणदास कहुँ समझ समझ कर, आपहि अनँद बढ़ावैं री ॥२०८॥

यह ही घडी यह वेला साधो ॥ टेक ॥ लाख खरच फिर हाथ न आवै, मानुषजन्म सुहेला । ना कोइ संगी ना कोइ साथी, जाता भोर अकेला ॥ क्यों सोया उठ जाग सवेरे, काल मरंदा सेला । कहत कबीर गोविन्द गुण गाओ, झूँठा है सब मेला ॥ २०९ ॥

प्रभु मेरी नाव उतारो पार, बलिहारी नन्दकुमार ॥ टेक ॥ भवसागर संसार अगम है, तिरछी जाकी धार । पार उतरना कठिन भयो है,सूझत वार न पार॥लोभ मोहके बादल उमड़े,भयो

महा धुँधकार । काम क्रोध पवन संग लीन्हे, वरसत है अहंकार॥ डोलत है यह नाव पुकारी, भवसागर मँझधार । विजली चमकत वादल गरजत, लरजत जिया हमार ॥ दीनदयाल भरोसे तेरे, चढ़ाया सब परिवार । इस वेड़ेको पार उतारो, हे दयालु करतार॥ महामलीन मैं कपटी कामी, तुम हो वखशनहार । रूपचन्द निज ठौर नहीं कोउ, नाम तेरा आधार ॥२१० ॥

प्रभु तेरी लीला अपरम्पार, अगम अपार ॥ टेक ॥ खंड ब्रह्मंड रचे सव तेरे, कोउ न पावत पार । सुर नर मुनि जन खोजत हारे, पढ़ पढ़ वेद विचार ॥ अगम निगम सव तोहिं पुकारैं, हे प्रभु सिरजनहार । चन्द्र सूर्य दोउ दीपक कीने, अगम ज्योति निरंकार ॥ अनहद शब्द वजै झनकारा, संतन प्राण अधार । नानारूप धरयो सब अंतर, निर्गुण सगुण अकार ॥ दश अवतार धरे या जगमें, हैं सव मुक्तिदुआर । रूपचन्द सुमिरो हितचितकर, निशदिन कृष्ण मुरार ॥ २११ ॥

राखो लाज हरी तुम मेरी । टेक ॥ तुम जानत सब अंतर्यामी, करणी कछु न करी ॥ अवगुण मोसों विसरत नाहीं, पलछिन घरी घरी । सव प्रपंचकी पोट बाँधकर, अपने शीश धरी ॥ दारा सुत धन मोह लियो है, सुधि बुधि सव विसरी । सूर पतितको वेगि उवारो, अव मेरी नाव भरी ॥ २१२ ॥

रे मन समझ सोच विचार । टेक ॥ डार पाँसा साध संगत, फेर रसना सार ॥ राख सतरहँ सुन अठारहँ, नई पाँचों मार । डार दे तू तीन काने, चतुर चौक निहार ॥ मानुषा यह देह फिर नहिं, आवै बारंवार । सूरदास गोविन्द भजन विन, चले दोउ कर झार ॥ २१३ ॥

जन्म तेरा वातोंमें वीत गयो, तैंने कवहुँ न कृष्ण कह्यो ॥

॥ टेक ॥ पाँच वर्षका बालाभोला, अब तो वीस भयो । मकर पचीसी माया कारन, देश विदेश गयो ॥ तीस वर्षकी अब गति उपजी, लोभ बढ़ै नित नयो । माया जोडी लाख करोडी, अजहुँ न तृप्त भयो ॥ वृद्ध भयो तब आलस उपजी, कफ पित कंठ रह्यो । साधुकि संगति कबहुँ न कीनी, वृथा जन्म गयो ॥ यह संसार मतलबका लोभी, झूँठा ठाठ रच्यो । कहत कबीर समझ मन मूरख, तू क्यों भूल गयो ॥ २१४ ॥

राग रेखता—फरजन्द नन्दजीका दिलबीच भावँदा । वर पाय खूब नूपुर सुन्दर सुहावँदा ॥ वह साँवला सलोना महबूब यार मन । आहिस्त लटक चाल मटक मेरे आवँदा ॥ टीका सिंदूर खैंचिके माथेपै अदासों । वर सर विराजै अफसर हीरे जरावँदा ॥ कुंडल झलकते कानमें दुर हरदो गोशमें । आवाज बाँसुरीकी शीरीं बजावँदा ॥ नीमा जरीका गलमें कटि काछनी बनी । पीरे दुपट्टेवाला बीरे चबावँदा ॥ करता है नृत्य नादर घुँघुरूकी झनकसों । तत्तत्त तातथेई थेई गति लगावँदा ॥ नैनोंकी आन तानिके अबरू कमानसूँ । पलकोंके प्रेम तीर कलेजे चुभावँदा ॥ घायल किया है मेरे तईं उसके इश्कने । शुकदेव चरणदासके जियमें समावँदा ॥ २१५ ॥

राग सोरठ—हमारे घर आये हो सुन्दर श्याम । तनकी तपन मिटी देखतही नैनन भयो आराम ॥ अँगन लिपाऊँ चौक पुराऊँ फूल बिछाऊँ धाम । आनँद मंगलचार गँवाऊँ हूये पूरण काम ॥ अब जागे सखि भाग हमारे मन पायो विश्राम । चरणदास शुकदेव पियाकूँ हितसों करूं प्रणाम ॥ २१६ ॥

सो अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥ लखो अचानक अज

अविनाशी, उघरि गये दृगतारा । झूम रहो मेरे आँगनमें, टरत नहीं कहुँ टारा ॥ रोम रोम हियमाहीं देखो, होत नहीं छिन न्यारा । भयो अचरज चरणदास न पइये, खोज कियो वहु वारा ॥

भजन्—ऊधौ हम वैरागिन श्यामकी । टेक ॥ घर अँगना मोहिं कछु न सुहावै, रही न काहू कामकी ॥ दिन नहिं चैन रैन नहिं निंद्रा, रटन लगी हरिनामकी । सेली न डारी जटा न रखाई, सुरत नहीं परम धामकी ॥ पिय प्यारेको जो आन मिलावै, न्यौछावर करूँ प्राणकी । सूर श्याम प्रभु वेग मिलोजी, हूँ चेरी विन दामकी ॥ २१८ ॥

श्यामका सँदेशा ऊधो पाती लेके आयो रे ॥ टेक ॥ पाती जो उठाय लीनी छातीसों लगाय लीनी घूँघटकी ओट देके ऊधो समझायो रे । वस्ती उजाड़ दीनी उजड़ी वसाय लीनी, कुबजा पटरानी कीनी मोहिं न सुहायो रे ॥ सूर श्यामजूके आगे ऐसे जाय कहिये, जीवन खसम किन भसम रमायो रे ॥ २१९ ॥

तुम बिन कौन सहाय करैगो, हे दीननके पीर हरैया ॥ टेक ॥ मैं अति दीन मीन ज्यों जल विन, पड़ी भँवरविच मेरी नैया । सूझत ना कोइ खेवनहारा, तुम विन कौन है पार लगैया ॥ सुखसम्पतिके सब कोइ साथी, सुत दारा मैया और भैया । समय पड़े कोइ काम न आवे, ना कोइ जगमें धीर धरैया ॥ लियो उवार ब्रज डूबतसों, हे इन्दरके मान घटैया । कंस मारि वसुदेव छुड़ाये, उग्रसेनको राज दिवैया ॥ सबकी वार सहाय करी प्रभु, मेरी वार क्यों देर लगैया । नारायण नर फंद फँस्यो है, वेग छुड़ैयो कृष्ण कन्हैया ॥ २२० ॥

लावनी ख्याल—इस तनमें आतम कृष्ण है, और गोपी

ग्वालोंका दल। सुनो कान दे बना है तनमें, मेरे रहसमंडल ॥ टेक ॥ विश्वकर्माने आज्ञा पाकर, शीश महल तैयार किया। अनहद बाजोंका उसमें, सम्पूरण विस्तार किया ॥ चारौ खम्भे लगाये उसमें, ऐसा सुन्दर कार किया। खुशी हुये हम तब तो मैंने, वही रहसका विचार किया ॥ सबको साथ ले आया मैं, दिखलाया उन्हें भवन उज्ज्वल। सुनो कान दे बना है तनमें, मेरे रहस मंडल ॥ मन उधोजी मित्र हमारे, सदासे हैं आज्ञाकारी। बुद्धि राधिका सो मेरे, प्राणोंको है अति प्यारी ॥ नेत्र कर्ण मुख दंत कंठ सब, सखा हमारे हितकारी। लगन है ललिता बहुत सुन्दर, शोभा सबसे न्यारी ॥ बल है सो बलभद्र हमारे भ्राता, जिनका अटूटत बल। सुनो कान दे बना है तनमें, मेरे रहस मंडल ॥ इकीस सहस्र छैसै श्वासा, सो सब सखियाँ संग आईं। वह तो समझीं हमैं, यह कृष्ण हमारे हैं साईं ॥ गलेसें मेरे लिपट लिपट, क्या क्या ही तान सुंदर गाईं। बजाई बंशी जो मैंने अनहद, तो सब बिलमाईं ॥ प्रेममें मग्न भईं ब्रजवनिता, कामने किया बहुत व्याकुल। सुनो कान दे बना है तनमें, मेरे रहस मंडल ॥ नौ नारी जो पतिव्रता हैं, सो भी आईं सब पास मेरे। रोमरोमको सखा समझो, या समझो दास मेरे ॥ मेरी लीला देख देख, नहिं होते मित्र उदास मेरे। वर्णन करते हैं गुणको, जगतमें वेद व्यास मेरे ॥ मैं तो हूँ आत्मा कृष्ण, यह शरीर मेरा है मंडल। सुनो कान दे बना है तनमें, मेरे रहस मंडल ॥ आये वहाँ गोपिका बनके, ज्ञानरूप श्रीगोपेश्वर। मैंने उनको लखा अगोपी, नहीं है शिवशंकर ॥ पूजन करके पास बिठाया, रहस दिखाया अति सुंदर। कहाँलौं वर्णन करूँ, इस कायामें है चराचर ॥ बनारसी सच्चिदानंद, चैतन्यरूप निर्गुण

निर्मल। सुनो कान दे बना है तनमें, मेरे रहस मंडल ॥ २२१ ॥

चार वर्णमें वही बड़ा, जिन राधाकृष्ण रटा रटा रे ॥ टेक ॥ काहेको जोड़े माल खजाने, काहेको छावत ऊँची अटा रे। जब यमकी तलवी आवेगी, छोड़ जाय सब लटा पटा रे ॥ यह दम हीरा लाल अमोलक, पल पल जात घटा घटा रे। वहाँ आया तू कौल करार कर, यहाँ फिरता तू नटा नटा रे ॥ अपने कुटुम्बको ऐसा देखे, पलक उठाये पटा पटा रे। जब तेरा हंसा चल्या जात है, छोड़ जाय तू राज पटा रे ॥ यह संसार मतलबका गरजी, बातां करता झूठ मुठा रे। चन्द्रसखी भज बालकृष्ण-छवि, कानन कुंडल मुकुट जटा रे ॥ २२२ ॥

नामको अधार राधेश्यामको अधारा रे। टेक ॥ नजर भरके देख प्राणी, धुन्धका पसारा रे ॥ यमुनामें गेंद गिरी, ग्वाल बाल हारा रे। काली नाग नाथि लियो, कृष्ण भयो कारा रे ॥ राजा बलिके द्वारे ठाढ़े, बावनरूप धारा रे। बीस भुजा रावणकी, छिनमें काटि डारा रे ॥ मथुरामें जन्म लीनो, गोकुल सिधारा रे। कंसको निर्वंश कीनो, मोर मुकुटवारा रे ॥ २२३ ॥

छैला तेरे नयनोंकी लागी चोट। टेक ॥ रसिक रसीले हैं तेरे नैना, करत हजारों खोट ॥ नैनोंकी घाली कित जाउँ आलीरी, नहिं दीखत कहुँ ओट। कहत मनोहर मथुरावासी रे, भली बनी है जोट ॥ २२४ ॥

नन्दके कन्हैया नैया पार लगाओ। टेक ॥ भवसागरमें बहो जात हूँ, आयके बेग बचाओ ॥ तुम ब्रजराज तुम्हें डर काको, अपने माऊँ जाओ। अरज मनोहर करत जोरि कर, अपनेको अपनाओ ॥ २२५ ॥

जो नर ऊधो मोहिं ना बिसारे, मैं न बिसारूँ छिनएक घड़ी रे।

टेक ॥ जन्म जन्मके संकट काटैं, सुख राखौं आनंदभरी रे ॥ कचा माट मँजारीके बच्चे, दिये अवेमें जब खबर पड़ी रे। प्रजापतिने अग्नि लगाई, राख लियो रघुनाथ धनी रे ॥ द्रोपदीको चीर हरो दुश्शासन, भक्त जान ह्वाँ सहाय करी रे। उनका चीर अनन्त बढ़ायो, केरूरे मुख धूर परी रे ॥ अंबरीष घर गये दुर्वासा, चक्र सुदर्शन छाँह करी रे। महाभारतमें भुरुहीके अंडा, टूट परो गजघंट धनी रे ॥ वे मेरे मैं उनका ऊधो, भक्त जान नरदेह धरी रे। सूरदास आशा चरणनकी, अपने दासकी बाँह गही रे ॥ २२६ ॥

गोविंद नामको आधार, सच्चे नामको आधार ॥ टेक ॥ पीपा तारि सुदामा तारे, नरसी भक्तके काज सँवारे। खंभ फारि हिरणाकुश मारयो, धरि नरसिंह औतार ॥ दुर्योधनकी मेवा त्यागी, जाय विदुर घर पायो सागी। सेन भक्तकी संशा भागी, नामदेवजी करी पुकार ॥ गोविंद नाम सदा सुखदाई, जिन सुमिरो तिन नहिं गति पाई। शिवदत यह छबि बरणि न जाई, महिमा अगम अपार ॥ २२७ ॥

टेरत ग्वाल भोर भई मोहन, जागो प्रेमपियारे ॥ टेक ॥ निकसत भानु विदा भइ रजनी, विकसन लागे तारे। जैसे करत वेदध्वनि पंडित, पक्षी शब्द उचारे ॥ सुनतै वचन दूर कर आलस, नैनन पलक उघारे। कर दाँतोन मुख धोय कुँवर तुम, वसन पहरलो सारे ॥ मोहनभोग माखन औ मिश्री, किसमिस गिरी छुहारे। भाँति भाँतिके लाई व्यंजन, लेउ कलेऊ खारे ॥ चाबो पान आचमन करिके, वनबिच आओ ललारे। कहत सनेही रसना यह ही, वेग दरश दो प्यारे ॥ २२८ ॥

विनती कुँवरकिशोरी मेरी मान मान मान। टेक ॥ बिनचूक

मोते मान की, मत ठान ठान ठान ॥ काहेको बैठे श्यामा, भँवै तान तान तान । तूही तो मेरे जीवन, धन प्रान प्रान प्रान ॥ मेरे हियेकी पीरको, तू जान जान जान । जन जान रसिक लीजै, दीजै दान दान दान ॥ २२९ ॥

श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊँ । टेक ॥ जो तुम तान कहो मुरलीमें, सोइ सोइ गाय सुनाऊँ ॥ हमरे भूषण तुम सब पहिरो, मैं तुमरे सब पाऊँ । हमारी बिंदी तुमही लगाओ मैं शिर मुकुट धराऊँ ॥ तुम दधि बेंचन जाओ वृन्दावन, मैं मग रोकन आऊँ । तुमरे शिर माखनकी मटकिया, मैं मिल ग्वाल लुटाऊँ ॥ माननी होकर मान करो तुम, मैं गहि चरण मनाऊँ । सूरश्याम प्रभु तुम जो राधिका, मैं नँदलाल कहाऊँ ॥२३०॥

चलो पिया वाही कदमतरे झूलैं। टेक ॥ झुक रहीं लता अति सघन प्रफुल्लित, कालिंदीके कूलें ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला, अलिगण गुंजत भूलें । ललितकिशोरी मग बतरावें, कहि कहि बतियाँ फूलें ॥ २३१ ॥

रेखता—झूलन युगलकिशोरकी, दिलमें मेरे बसी । बैठे हैं रंग हिंडोरना, करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटका, दुपट्टा जो छोरदार । शिरपै सुरंग सारी, प्यारीकी क्या लसी ॥ बेसर बुलाक वेनी, वेंदी जो भालपै । हीरोंका हार उरपै, कटि काछनी कसी ॥ योवनके जोर शोरसों, रमके बढ़ावती । ललिताकिशोरी श्यामकी, छवि देखके हँसी ॥ २३२ ॥

भजन—वंशीवारे तू मेरी गली आजा रे । टेक ॥ तेरे देखे विन कल न पड़त हे, टुक मुखड़ा दिखलाजा रे ॥ रैनादिना मोहिं ध्यान तिहारो, वंशीकी टेर सुनाजा रे । चरणदास सुखदेव पियारे, मेरोहि माखन खाजा रे ॥ २३३ ॥

रेखता–सुनिये यशोदा रानी, छाँड़ें यह ब्रज तिहारो। कहीं जायके बसेंगी, अंतहि करें किनारो ॥ नित कहाँतलक सहिये, नुकसान तेरे सुतको। घर जायके हमारे माखन चुरावै सारो ॥ तेरेहि पास बालक, यह बनके आय बैठे। जब जाय घर सखिनके, सुन्दर तरुण निहारो ॥ छींकेपै हो कमोरी, लठियाते फोर डालै। दधिकी मथनियाँ तोड़के, माखन सभी बिगारो ॥ नित करै हानि हमरी, रंगी तू याहि बरजो। ऐसो चपल यह ढीठ है, यशुदाजी सुत तिहारो ॥ २३४ ॥

भजन–जा जारे भौंरा दूर दूर। टेक ॥ तेरो सो अंग रंग है उनको, जिन मेरो चित कियो चूर चूर ॥ जबलग तरुण फूल महकत है, तबलग रहत हुजूर जूर ॥ सूर श्याम हरि मतलब मधुकर, लेत कली रस घूर घूर ॥ २३५ ॥

नाथ अनाथनकी सुध लीजे। टेक ॥ तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी, बेगहि दर्शन दीजे ॥ नैनन जल भर आये हरी बिन, ऊधोको पतियाँ लिख दीजे। सूरदास प्रभु आश मिलनकी, अबकी बेर हरि आवन कीजे ॥ २३६ ॥

अबहूँ नाच्यों बहुत गोपाल ॥ टेक ॥ कामक्रोधको पहिर चोलना, कंठ विषयकी माल। महामोहकी नूपुर बाजत, निन्दा शब्द रसाल ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर, नाना विधिकी ताल। मायाको कटि फेंटा बांध्यो, लोभतिलक दियो भाल ॥ कोटिक कला नाच दिखराई, जल थल सुध नहिं काल। सूरदासकी सबी अविद्या, दूर करो नँदलाल ॥ २३७ ॥

मलार–आज हिंडोरे झूलें फूलें, नवलकुँवर नवदुलहिन दूलें ॥ टेक ॥ धाधा किटता, धाधा किटता। बजत मृदंग सखी

सुघर तान, गावैं झंननन झननन नाचत मोर ॥ सघन वन प्रफुल्लित, श्रीयमुनाजीके कूलें कूलें ॥ नवलकिशोरी, वृषभानकी कुँवरी । भोरी भोरी संग जोरी रस राचो ॥ उरझी माल लटक नकवेसर, अंग अंग भुज भूलें फूलें ॥ २३८ ॥

होली—श्याम मोसे खेलौ न होरी, पा लागौं कर जोरी ॥ टेक ॥ गैयाँ चरावन मैं निकसी हूँ, सास ननँदकी चोरी । सगरी चुनरिया रँगमें न भिजवो, इतनी सुनो बात मोरी ॥ श्याम० ॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर, जोरसे वहियाँ मरोरी। दिल धड़कत मेरा श्वाँस चढ़त है, देह कँपत गोरी गोरी ॥श्याम०॥ अविरा गुलाल लिपट गयो मुखसे, सारी रंगमें बोरी । सास हजारन गारी देगी, बालम जीता न छोरी ॥ श्याम० ॥ फाग खेलके तैंने रे मोहन, क्या गति कीनी मोरी । सूरदास आनन्द भयो उर, लाज रही कछु थोरी ॥ २३९ ॥

डगर मोरी छाँड़ो श्याम, विंध जाओगे नैननमें ॥ टेक ॥ भूल जाओगे सव चतुराई, लाला मारूँगी सैननमें । जो तेरे मनमें होरी खेलनकी, तो ले चल कुंजनमें ॥ चोवा चंदन और अरगजा, छिड़कूँगी फागुनमें ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्णछवि, लागी है तन मनमें ॥ २४० ॥

भजन—दर्शन देना प्राणपियारे, नन्दलला मेरे नैनोंके तारे। दीनानाथ दयाल सकल गुण, नवकिशोर सुन्दर मुखवारे ॥ मनमोहन मन रुकत न रोके, दर्शनकी चितचाह हमारे । रसिक खुशाल मिलनकी आशा, निशदिन सुमिरन ध्यान लगारे ॥२४१॥

लाग गई तव लाज कहा री । टेक ॥ जे दृग लागे नंदनँदनसों, औरनसों फिर काज कहा री ॥ भर भर पिये प्रेमरस

प्याले, ओछे अमलको स्वाद कहा री। व्रजनिधि व्रजरस चाख्यो चाहै, या सुख आगे राज कहा री ॥ २४२ ॥

गजल—हमैं है चाह दर्शनकी, निहारोगे तो क्या होगा ॥ टेक ॥ सुनो नँदनन्दके नन्दा, जगत्में झूँठका धन्धा। मेरी विनती अपावनकी, विचारोगे तो क्या होगा ॥ कोई योगी फिरे वनमें, कोई मुश्ताक दर्शनका। सजन कंचनवदन अपना, दिखादोगे तो क्या होगा ॥ कि भवसागर अथाह गहरा, झकोले प्रेमके निशदिन। मेरी तो नाव अति झँझरी, उतारोगे तो क्या होगा ॥ सदा मेरी बिगाड़ी है, मुझे अब सोच भारी है। सदा मेरी बिगाड़ीको, सँवारोगे तो क्या होगा ॥ सुनो मीराँ लाल गिरधारी, अगमकी टेक है न्यारी। कुमतिके फन्दसे हमको, छुड़ादोगे तो क्या होगा ॥ २४३ ॥

श्रीकृष्णचंद्र महाराजने, गोकुलका आना छोड़ दिया ॥ वंशीवट यमुनातटका अब, ठीक ठिकाना छोड़ दिया। निशदिन प्यारे व्रजवासिनपै, तटपर आना छोड़ दिया ॥ मिश्री मेवा भोग लगावें, माखन-खाना छोड़ दिया। कंसा मार भये अब राजा, धेनु चराना छोड़ दिया ॥ रासमंडल सब भूलगये, हँसना इतराना छोड़ दिया। निशदिन व्रज वनके पंछी, पानी और दाना छोड़ दिया ॥ अब तो प्रीति करैं कुबजासँग, वंशीका बजाना छोड़ दिया। गोविंद प्राण रहैं अब कैसे, मुखड़ा दिखलाना छोड़ दिया ॥ २४४ ॥

तुम्हारे दरश बिन मोहन, तरसते नैन रहते हैं। विरहकी आगमें जलते, सदा दिन रैन रहते हैं ॥ नेत्र कहते हैं हम देखें, यह दिल कहता है मैं पाऊँ। इसी तरहसे झगड़ेमें, सनम-बेचैन रहते हैं ॥ उतारो जगतसागरसे, मेरी नैयाको मनमोहन। तुम्हारे

नामकी स्वामी, बजाते चैन रहते हैं ॥ दया करके दरश दो और, कुछ ख्वाहिश न छिदाकी । तुम्हारी छविके निरखे बिन, उबलते फेन रहते हैं ॥ २४५ ॥

भजन–सुनो दोनों रूपकी शोभा, जाकी मायामें जगत लोभा ॥ राम दशरथजीके लाला, कृष्ण नन्दजीके व्रजपाला । राम कौशल्याके प्यारे, कृष्ण यशुदाके नैनतारे ॥ राम लक्ष्मण दोऊ वीरा, कृष्ण बलदेव रणधीरा । राम फिरई सरयूतीरा, कृष्ण अचवें यमुनानीरा ॥ राम शिर क्रीट अति राजे, कृष्ण पख मौर सिर साजे । राम कर धनुष बान सोहै, कृष्ण मुरली मधुर मोहै ॥ राम मिथिलापुरी आये, कृष्ण बरसानेको धाये । रामने व्याही जनकवारी, कृष्ण वृषभानुकी प्यारी ॥ राम वनवासको धाये, कृष्ण द्वारकामें जा छाये । रामने रावणको मारा, कृष्ण शिशुपाल संहारा ॥ राम शबरीके फल खाये, कृष्ण भाजी विदुर पाये । राम गौतम त्रिया तारी, कृष्ण द्रोपदि विनय धारी॥ राम शरभंग गति दीनी, कृष्ण कुबरी सरल कीनी । रामने बाँधा सेतु सागर, कृष्ण नखपर राखो गिरिवर ॥ राम राज नीतिसे कीना, कृष्ण लीलामें परवीना । रामको तुलसी अति जानै, कृष्णको सूर पहिचानै ॥ २४६ ॥

गजल–वह झलक जो मोर मुकुटकि थी, मुझे लखके श्याम लखागया । बसी जबसे चितवन चित्तमें आ, चितमें चोर समा-गया ॥ वह स्वरूप रूप था जलवागर, लजै कोटि रविशशि दृष्टिकर । भृकुटी कुटिल लखि श्यामकी, दृग देख मृग शरमा गया ॥ कानोंमें कुंडलकी झलक, दो नागिनी छूटीं जुलफ । बस यह है उनमें विषभरा, डस मेरा तन लहरा गया ॥ कटि पीतपट शिरपे मुकुट. तिरछी लटक निरतत मटक । मुरली मधुर

अधरन धरी, रसभीनी तान सुना गया ॥ इच्छा शरण आया तेरी, रख लाज अब गिरधर हरी। तनकी कसक वाकी रही, सुपनेमें दर्श दिखा गया ॥ २४७ ॥

भजन—चले गये दिलके दामनगीर ॥ टेक ॥ जब सुधि आवे प्यारे दर्शनकी, उठत कलेजे पीर। अन्तर भेष नैन रतनारे, सुन्दर श्याम शरीर ॥ आपु तो जाय द्वारका छाये, खारी नदीके तीर। व्रज गोपिनको प्रेम विसारो, ऐसे भये बेपीर ॥ वृन्दावन वंशीवट त्यागो, निर्मल यमुनानीर। सूर श्याम ललिता उठि बोली, आखिर जात अहीर ॥ २४८ ॥

कोटिन पतित उबारे मुरारीजीने, कोटिन पतित उबारे॥ टेक॥ विष लिपटाय पूतना आई, सो वैकुंठ सिधारी । जो शिशुपाल चँदेरीका राजा, बोला वचन कुठारी ॥ एकसे एक वचन तुम सहि गये, चक्र सुदर्शन धारी । वाल्मीक एक वनका ठगके, कोटिन विप्र बिडारे ॥ ताको जाप मंत्र तुम दीनो, उलटा नाम पुकारी। शिव ब्रह्मा जाको ध्यान धरत हैं, व्रजकी सखी दें गारी ॥ ग्वालसंग तुम खेलत होगे, दे दे नचावत तारी। सूरके स्वामी प्रभु विनती करत, गुण औगुण न विचारी ॥ २४९ ॥

गजल—हकीकत व्रजकी ऊधो, जरा तुम जाके समझाना। मुनासिब है दमे आखिर, तुम्हें तशरीफ ले जाना ॥ खफा हो हो निकल जाती है, तनसे रूह गोकुलको। न खुश आता है व्रज हमको, न वृन्दावन न वरसाना ॥ वह भूले सुहबतें अगली, खफा अब हमसे हो बैठे। येही बस शर्त उलफत है, येही बस तर्ज याराना ॥ लगाकर खतको छातीसे, ये बोलीं गोपियाँ रो रो। लिखा है श्यामने ऊधो, ये अपने हाथ परवाना ॥ २५० ॥

भजन–जय जय युगलकिशोर विहारी । टेक ॥ जय निकुंजमें अविचल जोरी, जय मनमोहन प्रीतम प्यारी ॥ जय मुखचंद्र चकोर परस्पर, जय छवि रूपसिन्धु मनहारी । जय व्रजजीवन रसिकशिरोमणि, महिमा अमित अपार तिहारी ॥ जय भक्तन वश रहत परस्पर, नाना चरित करत सुखकारी । नारायण निशदिन यह याँचत, चरणकमल राखो उर धारी॥२५१॥

रेखता–सुन्दर सलोने श्यामने, वंशी मधुर बजाई । टेक ॥ ध्वनि सुनके व्रजकी वाला, सुधबुध सभी गँवाई ॥ कोइ पहिरै हार पावन, पाजेब गलमें पहिने । नथ कोइ कान पहिरै, अद्भुत शृंगार लाई ॥ कोइ एक आँख अंजन,आँजेही उठके दौरी । कोइ ओढ़ लहँगा शिरपै, साड़ी कमर सजाई ॥ कोइ जैसे बैठी घरमें, वैसेही उठके भाजी । कुछ ना सम्हार घरकी,जादूकी राग गाई ॥ फिर जाय सबने वनमें, नँदलालको निहारा । करते ही दर्श सबने, सब पीर धो बहाई ॥ शिर पेंच मुकरेसी, कुण्डल जड़े हुये । नासा बुलाक मोतीपै, मन जाता है भुलाई ॥ कटि किंकिणी पीताम्बर, पग पायजेव सोहै । लखि रूपकी निकाई, वलिहारी रंगी जाई ॥ २५२ ॥

भजन–आज तो आनन्द हमारे कृष्णजीको आवना ॥ टेक ॥ फूलनकी सेज विछाई, फूलन उढ़ावना । फूली फूली में फिरूँजी, कृष्ण मेरे मनभावना ॥ यमुनाके नीरे तीरे, गौवोंको चरावना । मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, वंशीको बजावना॥ मथुरामें कंस पछाड़े, लंकपती रावना । राजा बलिके द्वारे ठाढ़े, रूप धरयो वावना ॥ धन्य भाग्य वाके कहिये,साधू आये पाहुना । सूरदास यों समझावे, मीराबाई कामना ॥ २५३ ॥

ऊधो कारे सवही बुरे ॥ टेक ॥ कारेकी परतीत न करिये, कारे विषके भरे । कारो अंजन देत दृगनमें, तीखी सान धरे ॥ नाग नाथ हरि बाहर आये, फन फन निरत करे । कोयलके सुत कागा पाले, अपनोही ज्ञान धरे ॥ पंख लगे जब उड़ने लागे, जाय कुटुम्ब लरे । सूर श्याम कारो मतवारो, कारेसे काल डरे ॥

ऊधो यहही अभिलाष रही ॥ टेक ॥ एक समय हरि आयेजी मेरे, मैं दधि मथत रही । दधि माँगत हम मान कियो है,, उन रिस राह लही ॥ केतिक दूरि गोकुलसे मथुरा, बैरिन वीच वही । आपन तो हरि पार उतरि गये, हमसे कछु न कही ॥ यह बतियाँ छतियाँ लिख राखूँ, जो श्रीकृष्ण कही । बिछुड़न श्रीगोपाललालको, चलत न फेंट गही ॥ तड़पत और पछितात राधिका, गिर गिर पड़त मही । सूर श्यामको बेग मिलाओ, विपति न जात सही ॥ २५५ ॥

ऊधो श्याम सनेही हरि काके ॥ टेक ॥ रहत निरन्तर चोर सदाके, कली कली रस छाके । प्रीति लगाय रहे या व्रजमें, करि सखियन संग साखे ॥ कौन किसीका तात मात है, दूध पियेके नाते । नन्द यशोदा लाड़ लड़ायो,सो न भये हरि ताके ॥ आपुन जाय द्वारका छाये, मीत भये कुब्जाके । सूरदास चलि जांय चरणकी, कहँलग कहूँ गुण वाके ॥ २५६ ॥

ऊधो हम तवहीसे योग लियो रे । टेक ॥ जा दिनसे मनमोहन मधुकर, मधुपुर गवन कियो रे ॥ पशु पक्षी जल थल सब त्यागे, बालकपे न पियो रे । सूरदास स्वामीके बिछुरे, मरण न जात जियो रे ॥ २५७ ॥

ऊधो प्यारे मन न बनाये दशवीस । टेक ॥ एक मन हतो सो गयो कृष्णसँग, को आराधे ईश ॥ इन्द्री शिथिल भई सब

मदकर, ज्यों देही विन शीश । आशा लागि रही पुनि उनसों, जीवो कोटि वरीश ॥ तुम तो सखा श्याम सुन्दरके, सकल जोग आधीश । सूर हमारे नँदनन्दनसों, और नहीं जगदीश ॥

माथेपै मुकुट श्रुति, कुंडल विशाल लाल, अलख कुटिल सोहै, आली मदगंजनी । काछनी कलित कटि, किंकिणी विचित्र चित्र, पीताम्बर वरणमें, विराजै द्युति वैंजनी ॥ दिये गर वाँह पिया, पीतम विहार करें, अति अनुराग भरे, आई नई दुंजनी । कहै जयदयालु प्रभु, मेरो मन मोहि लियो, मन्द मन्द वाजत, गोविंद पाँउ पैंजनी ॥ २५९ ॥

तुमविन कौन रखै पत मेरी, हे दीनन हितकारी ॥ टेक ॥ खड़ी सभामें द्रोपदी नारी, टेरत तोहिं मुरारी । आय सहाय करो मम स्वामी, डूब रही दुखसिंधुमें सारी ॥ दुष्ट दुशासन नगन करत है, जात है लाज हमारी । वेगि आय सुधि मेरी लीजे, भीर पड़ी मोपर है भारी ॥ हा हा नाथ यादवकुलस्वामी, सिंह गायको चाहत मारी । काटहु संकट हे प्रभु स्वामी, घासी-राम जावै वलिहारी ॥ २६० ॥

जय मनमोहन श्याम मुरारी, जय व्रजनाथ मुकुंदविहारी । टेक ॥ जय नखपर श्रीगिरवरधारी, जय श्रीकृष्णचन्द्र वनवारी॥ मोसे नाथ कछु लखी न जाई, वरणों कहाँतक तोर वड़ाई । महिमा तुम्हरी अपार कन्हाई, थकित भई वर्णत श्रुति चारी ॥ है अपार अलख तव माया, ब्रह्मादिकने भेद न पाया । कोटिन मुनियन ध्यान लगाया, माया समझ पड़ी न तिहारी ॥ कहाँ-तलग गुण तुम्हरे गाऊँ, कौन हृदयमें ध्यान लगाऊँ । कहा समुझि प्रभु तोहि मनाऊँ, शोच भयो जन उर यह भारी ॥ सुधि

लीजै अब तो प्रभु मेरी, निजजन समुझि करौ मत देरी । दीनदयालु शरण हौं तेरी, करौ कृपा भक्तन सुखकारी ॥ २६१ ॥

राग धनाश्री—आजु परम दिन मंगलकारी । टेक ॥ लोक लोकको टीको आयो, मुदित सकल नर नारी ॥ शंभु सुरेश शेष अरु नारद, चन्द्रानन कर यारी । हरि कर पाठ बन्ध न्यौछावर. करत रतन पटसारी ॥ बाजत ढोल निशान शंखध्वनि, बहुत कुलाहल भारी । अपने अपने लोग चले सब, सूरदास बलिहारी ॥ २६२ ॥

भजन—मंगल माधौ नाम उचार । टेक ॥ मंगल वदनकमलकर मंगल, मंगल जानहिं सदा सँभार ॥ देखत मंगल पूजत मंगल, गावत मंगल चरित उदार । मंगल श्रवण कथारस मंगल, मंगलतन वसुदेवकुमार ॥ गोकुल मंगल मधुबन मंगल, मंगल रुचि वृन्दावनचन्द । मंगल करन गोवर्धनधारी, मंगल वेष यशोदानन्द ॥ मंगल धेनु रेनु भुव मंगल मंगल मधुर बजावत वेनु । मंगल गोपवधू परिरंभन, मंगल कालिन्दी पयफेनु ॥ मंगल चरणकमल मणि मंगल, मंगल कीरत जगतनिवास । अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि, मंगल मति परमानँददास ॥ २६३ ॥

भक्तिज्ञानकवितावली ।

कवित्त—दशहू दिशाननमें द्रुम बेलि काननमें, पुष्पनमें पाननमें जलमें कृशानमें । पर्वत पषान पौन पंकज पिपील पील, पादपन पात पात पल्लव लतानमें ॥ भनत गोविंद कवि कहाँलौं बखान करौं, व्योम विदिशान अन्तरिक्ष शशि भानमें ।

घटघटवासी अविनाशी - सुखराशी प्रभु, पूरण पुरुष परिपूरण जहानमें ॥ २६४ ॥

परब्रह्मपंचक ।

कवित्त—अजर अमर सदा अगम अखंड और, अकथ अपार जाके गुण निरधारे है । अमल अव्यक्त और अद्वय अनूप महा, अनंत अतर्क्य सदा ओपत अपारे है ॥ एक है अनादी सर्व अंतरके यामी जामें, किंचित ना खामी चारौ वेदमें पुकारे है । गोविंद कहत ऐसे सर्वशक्तिमान महा, ब्रह्मको भजन सदा हियमें हमारे है ॥ २६५ ॥

दृष्टि विन देखत है श्रवण विन सुनत है, नाक विन श्वास लेत सर्वदा सहेत है । मुख विन बोलत है जिभ विन स्वाद लेत, बाहु विन विश्व धरि राखत सचेत है ॥ पॉयविन चालत है पर्श विन जानत है,कोमल कठोर शीत उष्णता समेत है । गोविंद कहत ऐसे अद्भूत करमके, कारक कमाल सोइ ओपत अद्वैत है ॥२६६॥

जाते भये देव और दानव अनेक महा, जाते बनि वेद गर्भ सृष्टिको सृजाता है । जाते शिव शक्ति और लक्ष्मी रमेश भये, जाते रविचन्द उदय अस्त नित्य पाता है ॥ जाते जल अग्नि और पवन प्रगट भये, जाते जग प्रगट हुइ जाहिमें समाता है । गोविंद कहत ऐसे अजर अजन्म सदा, निगम निरंजनसो विमल विभाता है ॥ २६७ ॥

सर्व गुणज्ञाता सर्व शक्तिमय भाता पुनि, सर्वमें सुहाता और अलग रहाता है । जगमें न जाता और नाश नहिं पाता पुनि, रूप न लखाता जगकारण कहाता है ॥ तर्कमें न आता और अजर रहाता पुनि, आप नहिं खाता और भुखित न भाता है।

गोविंद कहत ऐसे उक्तिमें न आता सोइ, परम परमात्मा सो विमल विभाता है ॥ २६८ ॥

गोरसमें आज्य जैसे राजत ललाम सदा, तिलमाहिं तैल जैसे सुन्दर सुहात है। पथरीमें पावक ज्यों सहित सदाय रहि, पुष्पमें सुगन्ध जैसे जाहिर जनात है ॥ मिसिरीमें मिष्टता ज्यों ओपत अधिक और, लोनमें लवण जैसे भाय बहु भाँत है । गोविंद कहत तैसे परब्रह्म विश्वमाहिं, मायाते रहित सदा विमल विभात है ॥ २६९ ॥

विष्णुविनयपंचक ।

कबित्त–संपतिकरन और दारिद्दरन सदा, कष्टके हरन भवतारन तरन है। भौनके भरन चारौ फलके फरन महा, तापत्रयहरन अशरनके शरन है ॥ भक्तदुखहरन और विघनहरन सदा, जनममरन महादुःखके दरन है। गोविंद कहत ऐसे वारिज बरन बर, मोदके करन मेरे प्रभुके चरन है ॥ २७० ॥

सुंदर सुहाता महा मंगलप्रदाता पुनि, तीन लोक त्राता सर्व धरणीके धाता है । सर्वगुणज्ञाता सर्व शक्तिमय भाता पुनि, दुष्टको डराता और भक्तनको भाता है ॥ वाको जो ध्याता सोइ झूठको जराता और, परम प्रख्याता महामोक्षपद पाता है । गोविंद कहत ऐसे विष्णुवरदाता मेरी, बुद्धिको बढ़ाता और विघ्नको बिलाता है ॥ २७१ ॥

विधिके स्वरूपें सदा विश्वको बनात बर, विष्णुके स्वरूपें सदा पालन करत है । शंकरस्वरूपें सदा वाहिको बिलाता और, चन्द्रके स्वरूपें सदा पोषन धरत है ॥ सूर्यके स्वरूपें सदा करत प्रकाश शुभ, वारिदस्वरूपें सदा भूमिपें परत है। गोविंद कहत ऐसे मंगलस्वरूप सदा, प्रभुको प्रणाम हम प्रेमते करत है ॥२७२॥

दानवके दंडनको देवनके मंडनको, दुष्टनके खंडनको नेक निरधारे है । भक्तभयभंजनको छलनके छंडनको, व्यापि वह मंडनको ओपत अपारे है ॥ और रचि अंडनको जीवनके झुंडनको, खास नवखंडनको वेश विस्तारे है । गोविंद कहत ऐसे विष्णु जगमंडनको, व्याधिके विहंडनको इष्ट उर धारे है ॥२७३॥

परम कृपाला मेरी काटि अघजाला करो, निद्धिके निहाला और विघन विडारो जी । काटिके कसाला सर्व दीजै सुखशाला और, बुद्धि दे विशाला मेरी जड़ताको जारोजी ॥ झूठ जगज्वाला-हीतें त्राहि ततकाला मेरे, रम्य रचिताला नित्यनेहते निहारो जी । गोविंद कहत ऐसे विनय विशाला सुनि, दीन प्रतिपाला प्रभु मोहिंको उधारो जी ॥ २७४ ॥

गोकर्णनाथपंचक ।

कवित्त–शिरपर है गड़हा और श्यामलो सुरंग अंग, दासहि विलोकि करत पलमें निहाल हैं । गंगाजल निर्मलकी धारासों प्रसन्न होत; घंटाके नादसों पूरण सुखहाल है ॥ चैत्र वदी तेरसिसे मेलाकी धूम होत, महिमा सु तासु देव वर्णत वहाल हैं । कहत नारायण धन्य गोला गोकर्णनाथ, तीरथ पुनीत जहँ भोला चन्द्रभाल हैं ॥ २७५ ॥

मन्दिर पुनीत जासु दर्शन विनोद हेत, देशदेशके मनुष्य आवत वहाल हैं । खेलत हैं फाग और गावत महेशगुण, रंगके फुहारेनसों आवत निहाल हैं ॥ बाजत मृदंग ताल ढोल डफ डमरू शैव, छिरकत गुलाब और डारत गुलाल हैं । कहत नारायण धन्य गोला गोकर्णनाथ, तीरथ पुनीत जहँ भोला चन्द्रभाल हैं ॥ २७६ ॥

पूरब दिशि नन्दीगण संकटा भवानी पुनि, ताही दिशि भूतनाथ कालहुके काल हैं। पश्चिम दिशि भैरवजी गाजैं गलगाजैं अरु, ताही दिशि महावीर मूरति विशाल हैं ॥ मन्दिरढिग गोकर्ण वहै पवित्र धारासों, जाके स्नान किये कटत भ्रमजाल हैं। कहत नारायण धन्य गोला गोकर्णनाथ, तीरथ पुनीत जहँ भोला चन्द्रभाल हैं ॥ २७७ ॥

अवधके मंडलमाहिं नैमिष सुक्षेत्र जहाँ, लालता भवानीके दर्शन निहाल हैं। ताके पश्चिमोत्तर नव योजन प्रमाण गोला, गोकर्ण पुनीत क्षेत्र वसत सुचाल हैं ॥ बड़े बड़े राजा महाराजाधिराज जहाँ, नानाविध द्रव्यसों भरत शिवभाल हैं। कहत नारायण धन्य गोला गोकर्णनाथ, तीरथ पुनीत जहँ भोला चन्द्रभाल हैं ॥ २७८ ॥

श्रावणके मासमाहिं पूजन विनोद हेत, आवत अनेक विध विद्वज्जन पाल हैं। वेदध्वनि करत औ रिझावत महेशजीको, ठौर२ बाँचत पुराण सुखजाल हैं ॥ पावत वरदान मनवांछित सुभक्ति पाय, आवत स्वदेश गुण गावत वहाल हैं। कहत नारायण धन्य गोला गोकर्णनाथ, तीरथ पुनीत जहँ भोला चन्द्रभाल हैं ॥

कालीपंचक।

कवित्त—एक हाथ खड्ग एक खप्पर विराजमान, एक हाथ रुंड एक मुंडनकी मालिका। सिंहपै सवार मात करमें त्रिशूल लिये, आठ भुजा धारिणि रूप धारे विकरालिका ॥ देखिके स्वरूप तेरो योगिनी प्रचंड भई, हूजिये सहाय मात कीजे प्रतिपालिका। दुष्टनको काटि काटि धरौ वीच खप्परमें, चुगुलनके चौतरा बँधाउ मात कालिका ॥ २८० ॥

मोहिं जो सतावै सुख पावै नाहिं आठौ याम, टेरि करौं अर्ज मात सुनिये सुवालका । तेरे दरबारमें पुकारि कहौं बार बार, मेरे सब शत्रुनको खाउ ज्योतिज्वालका ॥ जाहीसे कटार तेग राखौं नाहिं कमरबीच, मेरी रखवारी एक तुही रुद्रपालका । दुष्टनको काटि काटि धरौ बीच खप्परमें, चुगुलनके चौतरा बँधाउ मात कालका ॥ २८१ ॥

तुही चंड मुंड खंड खंड दंड खंडहीमें, कीन्हे उद्दंड दंड शूर अति भारे री । तुही रक्तबीज चाबि चाबि चूसि चूसि मैया, देवनके दाहसे उछाह मन धारे री ॥ प्रबल प्रचंड तूही पौरुष अखंडवारे, शुंभ औ निशुंभ भूमिमंडलमें डारे री । भनत महेश एक अचरज बड़ोई यह, जो न तू हमारे दुखदारिद विदारे री ॥

चाट जा चंडी तू चबाइके घरानेको, चटकदे चटाकदे पटाक चन्द्रभालका । वंशपूत नाती निपात वा दुष्टनके, भूँज भूँज भूरीसी भसक जाउ ज्वालका ॥ धाय धाय धमकि धमकि धरणिमें धसकि देउ, चक्र चाप हाथ साथ लीन्हे वेतालका । यमको जगाउ जोर कालको पठाउ अब, कलेवा कर खाउ मेरे शत्रुनको कालका ॥ २८३ ॥

भूँखी जो होउ तो दुष्टनको भक्षण करो, होउ जो अघानी अभयदान मोहिं दीजिये । धर्मिनको छोड़िके अधर्मिनको बीनि खाउ, चुगुलको चबाउ मात देर नाहिं कीजिये ॥ होउ जगदम्बे मात दासनकी रक्षा करो, ऋद्धि सिद्धि दान करि कीरति बढ़ाइये । देवीको सहाय मात हाथ जोरि अर्ज करै, काज करो मेरे देर काहेको लगाइये ॥ २८४ ॥

शिवआदिदेवकवितावली ।

कवित्त—सिद्धिके सदन गजवदन विशाल तन, दरश कियेतें वेगि हरत कलेशको । अरुण परागको ललाटमें तिलक सोहैं, बुद्धिके निधानरूप तेज ज्यों दिनेशको ॥ मंगलकरण भव-हरण शरण गये, उदित प्रभाव जाको विदित हमेशको । जेते शुभ काज तामें पूजिये प्रथम ताहि, ऐसो जगवन्दन सुन-न्दन महेशको ॥ २८५ ॥

नागानन नाजर सो हाज़िर रहैं हजूर, श्रीपति सरिश्तेदार पुखमासने रहैं । ब्रह्मा दीवान मघवान ऐसे मुंशीजी, मार्तण्ड तुलित मुत्सद्दी यों बने रहैं ॥ वरुण वकील तहसीलदार तारापति, यमसे जमादार हाथ जोड़े खड़े रहैं । सुकवि मुनीन्द्र कहैं जगत् महाराणीजीके, महादेव ऐसे मुसाहिब बने रहैं ॥ २८६ ॥

नीचे है वारि तापै कच्छप सवार तासु, कच्छपकी पीठपै सवार शेष कारा है । शेषपै सवार अवनि भारसों दबाये रहैं, अवनिपै सवार सिंधु पर्वत विस्तारा है ॥ पर्वतपै सवार है कैलास शिवधाम जहँ, कैलासपै सवार नन्दी असुर समर मारा है । नन्दीपै सवार शंभु शंभुपै सवार जटा, जटापै सवार भागीरथी-जीकी धारा है ॥ २८७ ॥

सवैया—शुंभ निशुंभ विनाशिनि पासिनि, वासिनि विंध्य-गिरीशकी रानी । शंकरसंग विलासिनि अंग, हुलासिनि श्रीक-मलासिनि दानी ॥ जाहि सदाशिव ध्यान धरैं अरु, मान करैं मुनि चातुर ज्ञानी । दास कहै सोइ शैलकुमारी, हमारी करैं रखवारी भवानी ॥ २८८ ॥

कवित्त–आदि मूरतिमें शंभु सब लोकनमें शंभु, देवयूथनमें शंभु प्रतिपालनमें शंभु है । सब देवनमें शंभु नरपालनमें शंभु, तीनि रूपनमें शंभु वहु मूरतिमें शंभु है ॥ सब दिशनमें शंभु व्योमभूतलमें शंभु, सब क्षेत्रनमें शंभु वहु कोशनमें शंभु है । लोकपालनमें शंभु भूतपालनमें शंभु, जन शंकर अभय दै सर्व मूरतिमें शंभु है ॥ २८९ ॥

नन्दीकी सवारी नाग शृंगी कर धारी, नित सन्तसुखकारी नीलकंठ त्रिपुरारी हैं । मुंडमाल कारी शिर गंग जटाधारी, वाम अंगमें विहारी गिरिराजसुता प्यारी हैं ॥ दानिरेख भारी शेष शारदा पुकारी, काशीपति मदनारी कर शूल चक्रधारी हैं । कलाउजियारी शंभुदास सो निहारी, यश गावें वेद चारी सो हमारी रखवारी हैं ॥ २९० ॥

चारि वेद गुण गावै ब्रह्म विष्णु जेहि ध्यावै, शेष पारहू न पावै दयासागर कहावै है । भस्म अंगमें लगावै व्याल कंठमें सोहावै, कर डमरू बजावै सिद्धि सकल बढ़ावै है ॥ भक्तआपदा नशावैं मनवांछित देवावै, जाहि परम प्रभावै सब पापन घटावै है । भक्त शंकर कहावै चन्द्रमौलि गुण गावै, मनवाँछितको पावै करि अस्तुति सुनावै है ॥ २९१ ॥

मारा है जलन्धरको त्रिपुरको सँहारा जिन; जारा है काम जाके शीश गंगधारा है । धारा है अपार जासु महिमा है तीनि लोक, भाल नयन इन्दु जाके सुखमाको सारा है ॥ सारा है बात सब खायो हलाहल जानि, जगत्के अधार' जाहि वेदन उचारा है । चारा है भाँग जाके दारा है गिरीशकन्या, कहर शिवदास सोई मालिक हमारा है ॥ २९२ ॥

काहेको विसारे मूढ डोलत महेश पद, परम पवित्र क्षो॰

लोभके हरैया हैं। मायाकी मरोरनिके मोह झकझोरनिके, कामकी करोवनिके पलमें बरैया हैं॥ आठौ याम रक्षण करैया साधुसन्तनके, संकट कटैया.उर धीरके धरैया हैं। धर्मके बढ़ैया शुद्धि बुद्धि उपजैया, निजरूप दरशैया भवसिंधुके तरैया हैं॥ २९३॥

सब देवनमें आला अर्ध आसनमें वाला, आप ओढ़ व्याघ्रछाला सदा दीनन दयाला हैं। कंठ सोहै नाग काला भाल चन्द्रमा विशाला, गले धारे मुंडमाला करें दीनन दयाला हैं॥ भक्तमानसमराला मेटि अंक विधि भाला, नयन तीसरेमें ज्वाला मारि दारिदको हाला है। जन शंकर प्रतिपाला सब मेटति कसाला, बहु रोगनको घाला शंभु मूरति विशाला है॥ २९४॥

सवैया—भालमें जाके कलानिधि है, सोइ साहब ताप हमारी हरैगो। अंगमें जाके विभूति भरी रहै, भौनमें संपति भूरि भरैगो॥ शंकर दीनदयाल दयानिधि, भक्तनके दुख दूरि करैगो। जो शिव शीशपै गंग धरे, रह ताकी कृपा कहो को न तरैगो॥ २९५॥

कर जोरि कहौं विनती सुनिये, निजभक्तन मोद सदा करणं। पदपंकजप्रीति बढ़ै नितही, निशवासर नाथ रहौं शरणं॥ तुमरो यश गायनमें अभिलाष, सदा दुखदारिदके शमनं। जन जानि सदा प्रतिपाल करौ, शिवशंकर संकटके हरणं॥ २९६॥

तुम आशु दयाल कहावत हौ, जन आरतदुःख सदा दमनं। मोहिं जानि अनाथ सनाथ करौ, करुणा करिकें गिरिजारमणं॥ पदपंकज छोड़िके जाउँ कहाँ, तुमरो यश वेदनमें वरणं। जन जानि सदा प्रतिपाल करौ, शिवशंकर संकटके हरणं॥ २९७॥

शिवअर्धंगरूप।

सवैया—छहरै शिरपै छविगंग इतैसु, उतै तिलरी नथुनी

लहरै । भहरै गजचर्म कपाल इतैसु, उतै पट विद्युत सो फहरै ॥ थहरै अँग गौर दयाल इतैसु, उतै रँग केसरिको झहरै । विहरै युवरूप शिवाशिवको, जन शंकरके हियमें ठहरै ॥ २९८ ॥

दहिने गजखाल कपाल लसै अरु, वाम अभूत विभूपण साजै । डमरू असि शूल अभय दहिने अँग, वाम अनूप सिंगारहि भ्राजै ॥ दहिने वर वाहन बैल लिये अँग, वामदिशा मृगराज बिराजै । अर्धंगस्वरूप शिवाशिवको सो, दया करि शंकरके सब काजै ॥

बैठ शिवाशिव आसन एक, लसै विधु भाल इतै उतरो री । ओढ़े वघम्बर व्याल इतै सु, उतै रँग केशर चूनरि बोरी ॥ इत अंग विभूति अनूप लसै, उत शोभित भूषण अंगकी गोरी । निशिवासर ध्यान धरौ सुखसों, सुलखौ हियमाहिं मनोहर जोरी॥

शुंभनिशुंभ बली मधुकैटभ रक्तविजादि दल्यो दल भारी । देवनपै पुनि कष्ट परयो, जबहीं तबहीं तुम ताहि उबारी ॥ तैसेहीं दास गोविंदके संकट, बेगि हरौ गिरिराजकुमारी । है अवलंब तिहारो इहे, जगदम्ब विलंब कहा मम वारी ॥ २०१ ॥

ज्ञानविषयके कवित ।

सवैया–हाड़को पिंजर चाम मढ़यो, सबमाहिं भरयो मलमूत्र विकारा । थूक रु लार परै मुखते पुनि, व्याधि बहै सब औरहु द्वारा ॥ मांसकी जीभसों खाय सबै कुछ, ताहीते ताको है कौन विचारा । ऐसे शरीरमें पैठिके सुन्दर, कैसेके कीजिय शौच अचारा ॥ २०२ ॥

गेह तज्यो अरु नेह तज्यो पुनि, खेह लगायके देह सँवारी। मेघ सहे शिर शीत सहे तनु, धूपसमयज पँचागिनि वारी ॥ भूख सहे रहि रूखतरे पर, सुन्दरदास सहे दुख भारी । डासन छाँडिके कासन ऊपर, आसन मारयो पै आश न मारी ॥२०३॥

कोइक जात प्रयाग बनारस, कोई गया जगन्नाथहि धावै। कोइ मथुरा बदरी हरद्वार सो, कोई गंगा कुरुक्षेत्र नहावै॥ कोइक पुष्कर ह्वै पँच तीरथ, दौरेही दौरे जो द्वारका आवै। सुन्दर वित्त गड्यो घरमाहिं, सो बाहर ढूँढ़त क्यों करि पावै॥३०४॥

प्रीति प्रचण्ड लगै परब्रह्महिं, और सबै कछु लागत फीको। शुद्ध हृदय मन होय सो निर्मल, द्वैत प्रमाण मिटै सब जीको॥ गोष्ट रु ज्ञान अनन्त चलै जहँ, सुन्दर जैसें प्रवाह नदीको। ताहीतें जानि करौ निशिवासर, साधुको संग सदा अति नीको॥

कोउक निंदत कोउक वन्दत, कोउक देत हैं आयके भक्षण। कोउक आय लगावत चन्दन, कोउक डारत धूरि ततक्षण॥ कोउ कहै यह मूरख दीसत, कोउ कहै यह आय विचक्षण। सुन्दर काहूसों राग न द्वेष, सोई सब जानहु साधुके लक्षण॥ ३०६॥

तात मिलै पुनि मात मिलै सुत, भ्रात मिलै युवती सुखदाई। राज मिलै गज वाजि मिलै सब, साज मिलै मनवांछित पाई॥ यह लोक मिलै सुरलोक मिलै, विधिलोक, मिलै वैकुंठहु जाई। सुन्दर और मिलै सबही सुख, सन्तसमागम दुर्लभ भाई॥३०७॥

देखत ब्रह्म सुने पुनि ब्रह्मही, बोलत है सोइ ब्रह्महीं बानी। भूमिहू नीरहू तेजहू वायहू, व्योमहू ब्रह्म जहाँलग प्रानी॥ आदिहू अन्तहू मध्यहू ब्रह्महीं, है सब ब्रह्म यही मति ठानी। सुन्दर ज्ञान अज्ञानहू ब्रह्म है, आपहू ब्रह्महीं जानत ज्ञानी॥ ३०८॥

बैठत केवल ऊठत केवल, बोलत केवल बात कही है। जागत केवल सोवत केवल, जोवत केवल दृष्टि लही है॥ भूतहू केवल भव्यहू केवल, वर्तत केवल ब्रह्म सही है। है सबही अधऊरध केवल, सुंदर केवल ज्ञान वही है॥ ३०९॥

एक अखंडित ब्रह्म विराजत, नामजु दो करि विश्व कहावै।

एकहि ग्रन्थ पुराण वखानत, एकहि दत्त वशिष्ठ सुनावै ॥ एकहि अर्जुन उद्धवसों, कहि कृष्ण कृपा करिके समुझावै । सुन्दर द्वैत कछू मति जानहु, एकहि व्यापक वेद वतावै ॥ ३१० ॥

ब्रह्महीमाहिं विराजत ब्रह्महि, ब्रह्मविना जनि औरहि जानो । ब्रह्महो कुंजर कीटहू ब्रह्महि, ब्रह्महि रंक रु ब्रह्महि रानो ॥ कालहु ब्रह्म स्वभावहु ब्रह्महो, कर्महु जीवहु ब्रह्म वखानो । सुन्दर ब्रह्म विना कछु नाहिंन, ब्रह्महि जानि सबै भ्रम मानो ॥ ३११ ॥

भूमिहु तैसही आपहु तैसही, तेजहु तैसही तैसही पौना । व्योमहु तैसही आप अखंडित, तैसही ब्रह्म रह्यो भरि भौना ॥ देहसंयोग वियोग भयो, जब आयो सो कौन गयो केही कौना । जो कहिये तो कहे न बनै, कछु सुन्दर जानि गही मुख मौना॥

एकही ब्रह्म रह्यो भरपूर, तो दूसरो कौन वतावनहारो । जो कोउ जीव करै जो प्रणाम, तो जीव कहा कछु ब्रह्मते न्यारो ॥ जो कहै जीव भयो जगदीशते, तो रविमाहिं कहाँको अँध्यारो । सुंदर मौन गही यह जानिके, कौनहुँ भाँति न ह्वै निरधारो ३१२

योगी थके कहिं जैन थके ऋषि,तापस थाकि रहे फल खाते । न्यासी थके वनवासी थके जो, उदासी थके बहु फेरि फिराते ॥ शेष मसायक और उलायक, थाकि रहे मनमें मुसक्याते । सुन्दर मौन गही सिध साधक, कौन कहे उसकी मुखबाते ॥ ३१४ ॥

वैदको वेद गुणीको गुणी, ठगको ठग ठूमकको मनभावै । कागको काग मराल मरालको, काँध गधाको गधा खुजलावै ॥ कृष्ण भनै बुधको बुध त्यों अरु, रागीको रागी मिलै स्वर गावै । ज्ञानीसों ज्ञानी करे चरचा, लबराके ढिगा लबरा सुख पावै ॥३१५॥

कवित्त–योग करै यज्ञ करै वेद विधि त्याग करै,जप करै तप करै योंही आयु खुटि है । यम करै नेम करै तीर्थहू व्रतादि करै, पुहुमि

अटन करै वृथा श्वास टूटि है ॥ जीवेको यतन करै मनमें न वास धरै, पचि पचि योंही मरै काल शिर कूटि है । औरहू अनेक विधि कोटिन उपाय करै, सुन्दर कहत विन ज्ञान नहिं छूटि है ॥

कोई फिरै नाँगे पायँ गूदरी बनाय करि, देहकी दशा दिखाय आप लोग पूटयो है । कोई दूधाधारी होय कोई फलाहारी होय, कोई औंधे मुख झूलि झूलि धूम घूँट्यो है ॥ कोई नहीं खाय लोन कोई मुख गहि मौन, सुन्दर कहत योंही वृथा भुस कूट्यो है । प्रभुसों तो प्रीति नाहिं ज्ञानसों न परचै होय, देखो भाई आँधरैने ज्यों वजार लूटयो है ॥ ३१७ ॥

आपहीके घटमें प्रगट परमेश्वर है, ताहि छाँड़ि भूलि नर दूरि दूरि जात है । कोई दौरे द्वारकाको कोई काशी जगन्नाथ, कोई दौरै मथुरा कोई हरद्वार न्हात है ॥ कोई दौरै बदरीको विषम पहाड चढ़े, कोई तो केदार जात मनमें सिहात है । सुंदर कहत गुरुदेव देय दिव्यनयन, दूरहीके दूरबीन निकट दिखात है ॥ ३१८ ॥

खैंचिके करीं कमान ज्ञानको लगायो बाण, मार्‌यो महावली मन जग जिन रान्यो है । ताके अगवानी पंच योधाहू कतल किये, और रह्यो पर्‌यो सव अरिदल भान्यो है ॥ ऐसो कोऊ सुभट जगतमें न देखियत, जाके आगे कालहू सो कम्पिके परान्यो है । सुंदर कहत ताकी शोभा तिहुँलोकमाहिं, साधुसों न शूरवीर कोऊ हम जान्यो है ॥ ३१९ ॥

आठौ याम यम नेम आठौ याम रहै प्रेम, आठौ याम योगयज्ञ कियो वहु दानजू । आठौ याम जप तप आठौ याम लियो व्रत, आठौ याम तीरथमें करत सनानजू ॥ आठौ याम पूजाविधि आठौ याम आरतीहू, आठौ याम दण्डवत सुमिरन

ध्यानजू। सुन्दर कहत जिन कियो सब आठों याम, सोई साधू जाके उर एक भगवानजू ॥ ३२० ॥

कामी है न यती है न सम है न सती है, न राजा है न रंक है न तन है न मन है। सोवे है न जागे है न पीछे है न आगे है, न गृही है न त्यागी है न घर है न वन है ॥ थिर है न डोले है न मौन है न बोले है, न बँधे है न खुले है न स्वामी है न जन है। ऐसो कोई होवै जब वाकी गति जानै तब, सुन्दर कहत ज्ञानी ज्ञान शुद्ध धन है ॥ ३२१ ॥

जैसे एक लोहके हथ्यार नानाभाँति किये, आदि अंत मध्य एक लोह ही प्रमानिये। जैसे एक कंचनके भूषण अनेक भये, आदि अंत मध्य एक कंचन ही जानिये ॥ जैसे एक मैनके सँभारे नर हाथी हय, आदि अंत मध्य एक मैनही बखानिये। तैसेही सुंदर यह जगत सो ब्रह्ममय, ब्रह्म सो जगतमय निश्चय करि मानिये ॥ ३२२ ॥

आइके जगतबीच काहूसों न करै बैर, कोऊ कछु काम करै इच्छा जौन जोईकी। ब्राह्मणकी क्षत्रिनकी वैश्य अरु शूद्रनकी, अन्त्यज मलेच्छकी न ग्वालकी न भोईकी ॥ भलेकी बुरेकी हरिचन्द्रसे पतितहूँकी, थोरेकी बहुतकी न एककी न दोईकी। चाहे जो चुनिंदा भयो जगबीच मेरे मन, तो न तू कबहुँ कहुँ निन्दा करु कोईकी ॥ ३२३ ॥

फूट गये हीराकी विकानी कनी हाट हाट, काहु घाट मोल काहू बाढ़ मोलको लयो। टूटि गई लंका फूटि मिल्यो जो विभीषण है, रावणसमेत वंश आसमानको गयो ॥ कहै कवि गंग दुर्योधनसे छत्रधारी, तनकके फूटते गुमान वाको नैगयो। फूटते नरद उठि जात बाजी चौपरकी, आपुसके फूटे कहो कौनको भलो भयो ॥ ३२४ ॥

ईशके भजनमें न भूसुरके तनमें, न रंकधाम अनमें कहूँ न वृन्दावनमें । ज्ञाति गुरुजनमें न धोखे पितृगनमें, न उठे कवितनमें न वेद उचरनमें ॥ कहैं कवि रामते वसत प्रेम तनमें, विचार देखो छिनमें दया न जाके तनमें । कहा परगनमें बनाय धनीगनमें, न लागे हरिजनमें तो थूक ऐसे धनमें ॥ ३२५ ॥

जोर परे जोर जात जब परे भूमि जात, झूमि जात यौवन अनंग रस रस है । गढ़ ढहि जात गरुआई औ गरब जात, जात सुख साहिबी समूह सरवस है ॥ कहैं हेमनाथ धन सम्पति विपति जात, जात दुख दारिद दरुण दरवस है । बाग कटि जात कुवाँ ताल फटि जात, नदी नद घटि जात पै न जात जग यश है ॥ ३२६ ॥

सत्यते प्रतीति होय जाकी सब देशनमें, सत्यतें सचाई और सत्यतें भलाई है । सत्यहीसों सुख पावै यश और धर्म वढ़ै, सत्यहीते लेवा सत्यते बड़ाई है ॥ साधूलाल कहैं होय आदर बहुत यातें, मुक्ति होय अन्तमाहिं पुण्यफलदाई है. । सत्यबिना मानुषके दरजा रहत नाहिं, याते चतुराननने सुसत्य उपजाई है॥३२७॥

राजा तो मगन राजकाजके समाजनपै, रंक तो मगन सेर चूनकी लगन है । कामी तो मगन काम लोचनीके नैननपै, धनी तो मगन धन धरत अगन है ॥ क्रूर तो मगन क्रूरताईके बखानिवेपै, शूर तो मगन रण झारत खगन है । सन्त तो मगन भगवन्तके भजन कोऊ, काहूमें मगन कोऊ काहूमें मगन है ३२८

केते राजकाज देखे सुखनके साज देखे, दीरघ समाज देखे खरे खान पानमें । द्विज बलदेव कहै दानिनके दान देखे, मानिनके मान देखे ध्यानी देखे ध्यानमें ॥ सुन्दर सुचाल देखे वड़े वड़े माल

देखे,लाल देखे तौन जौन पूरेपूरी तानमें।देखे सब लेखे हैं अलेखे एक याही प्रभु, मित्रके मिलनसम सुख न जहानमें ॥ ३२९ ॥

वेद न बताय सकै भेद वाको भली विधि, गाइ न सकत गिरा गुण वाके बानिये । पेखिये पुराणमें न नेक निरधार पुनि, शास्त्रमें न शोध वाको लागत प्रमानिये ॥ हाटमें न होय पुनि बाटमें लखात नाहिं, घाटमें न मिलै सोइ पुरमाहिं आनिये । गोविंद कहत ऐसो अकथ अगम्य महा, प्रेमको स्वरूप सदा प्रेमते पिछानिये ॥ ३३० ॥

सवैया—जगमें बहु पंडित जुत्थ रहैं, जिनकी बुधि शक्तिको पार अहै ना । शास्त्र विवेक करैं बहुभाँतिन, नीति रु न्यायको पंथ तजै ना॥काम करैं सत्कृत्यनके,चितमें पर किंचित द्वेष धरैना। एते सुकृत्य करै सो भले, पर सार यही उपकार तजैना ॥३३१॥

दुःख न नेक परै सहिबो, चहिबो अति ही सहजै अनुमानो । ऐसो जो होय सबै चहि लेय, लहै कोउ काहे कलेश सयानो ॥ प्रीति बढ़ी मनमें जबहीं, तब प्राणपियासम कौन बखानो । प्रेमके बन्धनमें बँधिके हँसिके छुटिबो हँसी खेल न जानो ॥ ३३२ ॥

दूरहू राम समीपहु रामहिं देशहू राम प्रदेशहू रामे । पूरब रामहिं पश्चिम रामहिं, दक्षिण रामहिं उत्तर धामे ॥ आगेहु रामहिं पाछेहु रामहिं, व्यापक रामहि है वनग्रामे । सुन्दर राम दशों दिशि पूरण, स्वर्गहु राम पतालहु रामे ॥ ३३३ ॥

भक्तिज्ञानभजनावली ।

भजन—विश्वपालक विश्वमालिक विश्वरूप नमो हरे । विश्वकर्ता विश्वधर्ता विश्वहरता ईश्वरे ॥ दोषगंजन शोकभंजन सतनिरंजन केशवे । सगुण निर्गुण आप स्वामी भक्तरंजन माधवे ॥ सत्त चित्त आनन्द हो प्रभु शेष हरि हर नित भजे । अति अगाध अगम अगोचर शिव अनूप अमर अजे ॥ स्वयंजोति स्वयंप्रकाशक स्वयंभासक दिव्य ये । कृपासिंधू दीनबंधू हृदय इन्दू अव्यये ॥ त्रिभुवनपति लक्ष्मीपति अपतिको तू ही हरे । पतितपावन आदिकारण दुखहरण जगदीश्वरे ॥ आदि तुमही अन्त तुमही मध्य तुम हो अक्षये । प्राणपति हो प्राणधारी प्राणपोषक निर्भये ॥ सर्वव्यापी सर्वयामी सर्वरूप तु ही धरे । सर्वसे न्यारा रहे अरु सर्व माया विस्तरे ॥ अति प्रबल माया तुम्हारी नाहिं टारेसे टरे । सर्व शक्तिमान ईश्वर कीटसे ब्रह्मा करे ॥ परम पावन नाम हरिको जो भजे सोही तरे । भक्तरक्षक कालभक्षक दासहित परमेश्वरे ॥ हे अवीगत अल्पमति हम आपके चरणन परें । शुद्धमति दो आप स्वामी जगतसे सब निस्तरें ॥ नाहिं शक्ती करूं अस्तुति शब्दसे हो तुम परे । निर्वचन निर्लेप निश्चल निर्विकार महेश्वरे ॥ शरण आयो चतुर तेरे भक्ति याचकता करे । हो प्रसन्न परम उदारा प्रेमसे हिरदा भरे ॥ ३३४ ॥

लावनी—तुम सुनो दीनके नाथ विनय इक मेरी । अब कृपा करो भगवान शरण मैं तेरी ॥ टेक ॥ यह दास आपके चरण शरणमें आया । रख लीजो दीनकी लाज विश्वपति राया ॥ तव नाम अनन्त अपार वेदमें गाया । गुण गावत तव

ऋषि मुनी पार नहिं पाया ॥ मैं क्या वरनन कर सकूँ अल्पमति मेरी । तुम सुनो० ॥ हे निर्विकार निर्लेप जगतके स्वामी । सच्चिदानन्द सर्वज्ञ सकल घटयामी ॥ मैं महा मलिन मतिमन्द कुटिल खल कामी । मोहिं कीजै नाथ अब शुद्ध जान अनुगामी ॥ देउ अमर भक्ति वरदान पिता विन देरी । तुम सुनो० ॥ इस जगमें जन्मत मरत बहू दुख पाया । करि धारण जन्म अनेक बहुत घबराया ॥ करुणानिधान जन जान करो अब दाया । अति दुखित हुवा तव शरण आपकी आया ॥ काटो जगदीश्वर कठिन कर्मकी वेरी । तुम सुनो० ॥ मैं किसे सुनाऊँ व्यथा आपने मनकी । यहाँ अपना नहिं कोउ आश करूँ मैं जिसकी ॥ मैं कहँलग करूँ वखान दशा निज तनकी । तुम सब जानत सर्वज्ञ पीड निज जनकी ॥ अति आरत हो यह दीन कहत इक वेरी । तुम सुनो दीनके नाथ विनय इक मेरी । अब कृपा करो जन जान शरण मैं तेरी ॥ ३३५ ॥

भजन—केशव याही शोच वड़ो है, कौन जतनसे तुम्हें मनाऊँ ॥ टेक ॥ चरणनमें गंगाजी वहत हैं, जलते क्या स्नान कराऊँ । सचित् आनंद चोला पहनो, पट पीतांबर कहा उढ़ाऊँ ॥ केशव० ॥ सब भूतनमें वास करत हो, वासुदेव आसन क्या लाऊँ । रवि शशि दोउ सन्मुख रहें निशदिन, मिथ्या क्या दर्पण दिखलाऊँ ॥ केशव० ॥ सब ज्योतिनकी ज्योति आप हो, कहो कौनसी ज्योति जगाऊँ । अनहद वाजे निशदिन वाजत, शंख झाँझ डफ कहा वजाऊँ ॥ केशव० ॥ चारो वेद चारो वानीमें, गावत हैं मैं कहा रिझाऊँ । जेते रस सबमें रस तेरो, निर्भयराम क्या भोग लगाऊँ ॥ केशव याही शोच वड़ो है, कौन जतनसे तुम्हें मनाऊँ ॥ ३३६ ॥

अलख एक नाम आधारा, ब्रह्मको भूल मत प्यारा । टेक ॥

न थी धरती न था अंबर, पड़ा था कूप अँधियारा ॥ नहीं थे वेद और ब्रह्मा, शब्दका होत टंकारा । किया एक पिंड पानीसे, अँधेरे कूपमें डारा ॥ वही प्रतिपाल जो कीनी, तो लेता नाम क्यों हारा । किया जलसे कमल पैदा, कमलमें मूल है सारा ॥ वही जलमें वही थलमें, उसीसे होत निर्वारा । रची सब सृष्टि पानीसे, हुआ इक छिनमें उजियारा ॥ बनायो वेद और ब्रह्मा, किया हर शैका विस्तारा । अरे मल्लाह लगा किश्ती, वहा सब जात संसारा ॥ मेरे महाराजजी इसको, करो दुनियाँसे अब पारा । जो सेठ दाउको चूका, तो बाजी जीतकर हारा ॥ ३३७ ॥

म्हाने पार उतारो जी, थाने निजभक्तनकी आन । टेक ॥ हमरे औगुण नेक न चितवो, अपनोही कर जान ॥ काम क्रोध मद लोभ मोहवश, भूलेउ पद निर्वान । अब तो शरण गही चरणनकी, मत दीजो मोहिं जान ॥ लाख चौरासी भ्रमत भ्रमते, नेक न पड़ी पिछान । भवसागरमें वहो जात हूँ, राखिये श्याम सुजान ॥ हूँ तो कुटिल अधम अपराधी, नहिं सुमिरो तेरो नाम । नरसीके प्रभु अधम उधारन, गावत वेद पुरान ॥ ३३८ ॥

विनयपद ।

सुन लीजे विनती मेरी. मैं शरण गही प्रभु तेरी ॥ टेक ॥ तैं पतित अनेक उधारे, भवसागर पार उतारे । मैं सबका नाम न जानूँ, मैं कोइ कोइ भक्त वखानूँ ॥ अंवरीष सुदामा नामा, पहुँचाये हैं निजधामा । ध्रुव पाँच वर्षका बाला, तैं दरश दियो नँदलाला ॥ धन्नेका खेत जमाया, कबीर घर बैल लियाया । शबरीके तैं फल खाये, सब काज किये मनभाये ॥ सदनाते सेना नाई, तैं बहुत करी अपनाई । कर्माकी खिचड़ी खाई, तैं गणिका

पार लगाई ॥ मीराँ तुमरे रँगराती, यह जानत नहिं सब साखी। चरणदास तेरे यश गावै, फिर जन्ममरण नहिं पावै ॥ ३३९ ॥

हो हरि तुमही पार लगैया, भव सिंधु परी मोरी नैया ॥ टेक ॥ नीर गँभीर पोत अति जारण, पवन देत झकोरैया । भँवरजालके परी भँवरमें, घूम लेत घुमरैया ॥ काम क्रोध जलजंतू व्याधी, है उत्पात करैया । चितवत चारौ ओर चकित हुइ, सूझत हितू न भैया ॥ एकौ अंग उपाय न सूझै, विद्या बल न रुपैया । सब पौरुष विचार कर थाक्यो, मिलत न कोइ रखवैया ॥ दीनदयालु दीन विनती अब, तुम बिन कौन सुनैया । रामलाल आधीन अधमकी, पार लगायो नैया ॥ ३४० ॥

राग विभास—अबकी करौ सहाय हमारी। टेक ॥ दुष्टदलन अरु भक्त बचावन, ऐसी साखि तुम्हारी ॥ जिन प्रहलाद असुर गहि बाँध्यो, लीन्हो खङ्ग निकारी । हिरणाकुश हनि दास उबारो, नरसिंहको तनु धारी ॥ खैंचि ग्राह गज बोरन लाग्यो, राम कहो यकबारी। सुनत पुकार पयादेहि धाये, तजिके गरुड़ सवारी ॥ द्रौपदि लाज उबारण कारण, लाये सभामँझारी । दीनानाथ लई सुधि वेगहि, बाढ़ो चीर अपारी ॥ जिन जिन शरण गही संकटमें, कहा पुरुप कहा नारी । चारौ युग हरि करी सहाई, रक्षक भये मुरारी ॥ गुरु शुकदेव बतायो तोकों, सन्तनकी रखवारी । चरणदास थकि द्वारे तेरे, गुण पौरुप दियो डारी ॥ ३४१ ॥

राग धनाश्री—अब तुम करो सहाय हमारी । मनके रोग होय गये दीरघ तनके बड़े विकारी ॥ तुमसों वेद और को दूसर, जाहि दिखाऊँ नारी । सजीवन मूल अमरमूल हो, जासों

सोहै दया तुम्हारी ॥ क्रियाकर्मको औषधि जेती, रोग बढ़ावनहारी । दीजै चूरण ज्ञानभक्तिको, मेटो सकल व्यथारी ॥ जनके काज पयादे धावत, चरणकमलपर वारी । मैं भयो दास अधीन तुम्हारो, मेरो करो सँवारी ॥ जो मोहिं कुटिल कुचालि जानिके, मेरी सुरति बिसारी । चरणदास शुकदेव है तेरो, दुष्ट हँसैंगे भारी ॥

हरिजी संकट वेगि निवारो । जनको भीर पड़ी है भारी चक्र सुदर्शन धारो ॥ कंसनिकन्दन रावणगंजन, हिरणाकुश गहि मारो । दुष्टदलन अरु भक्तउवारण, जन प्रहलाद उवारो ॥ पाँचों पांडव राख लिये हैं, कौरवदल संहारो । जिन जिन दोष कियो सन्तनसों, सो सोई हानि डारो ॥ निर्भय भक्ति करैं जन तेरे, ऐसो समय विचारो । चरणदासके घटमें वैरी, तिनको क्यों न विदारो ॥ ३४३ ॥

राग विभास—राखोजी लाज गरीवनिवाज । तुम बिन हमरे कोन सँवारे, सवही बिगरैं काज ॥ भक्तवछल हरिनाम कहावो, पतित उधारणहार । करौ मनोरथ पूरण जनको, शीतल दृष्टि निहार ॥ तुम जहाज मैं काज तिहारो, तुम तजि अंत न जाऊँ । जो तुम हरिजी मारि निकासौ, और ठौर नहिं पाऊँ ॥ चरणदास प्रभु शरण तिहारी, जानत सब संसार । मेरी हँसीसों हँसी तिहारी, तुमहूँ देखि विचार ॥ ३४४ ॥

भजन विनय—तुमबिन कौन हमारो प्रभुजी ॥ टेक ॥ होय असत्यके हम अनुरागी, हितकर सत्य विसारो । दिव्यज्ञान बिन अंध भये हम, सूझै न सार असारो ॥ कबहुँ न बैठ क्षणक निर्जनमें, जीवनतत्त्व विचारो । दीन हीन अति कृपापात्र लखि, करुणा हस्त पसारो ॥ पापविकार हरो गिरधर अब, ज्यों जान्यो त्यों तारो ॥ ३४५ ॥

पार लगाई ॥ मीराँ तुमरे रँगराती, यह जानत नहिं सब साखी । चरणदास तेरे यश गावै, फिर जन्ममरण नहिं पावै ॥ ३३९ ॥

हो हरि तुमही पार लगैया,भव सिंधु परी मोरी नैया ॥ टेक॥ नीर गँभीर पोत अति जारण, पवन देत झकोरैया । भँवरजालके परी भँवरमें, घूम लेत घुमरैया ॥ काम क्रोध जलजंतू व्याधी, है उत्पात करैया । चितवत चारौ ओर चकित हुइ, सूझत हितू न भैया ॥ एकौ अंग उपाय न सूझै, विद्या वल न रुपैया । सव पौरुप विचार कर थाक्यो, मिलत न कोइ रखवैया ॥ दीनदयालु दीन विनती अव, तुम विन कौन सुनैया । रामलाल आधीन अधमकी, पार लगायो नैया ॥ ३४० ॥

राग विभास—अवकी करौ सहाय हमारी । टेक ॥ दुष्टदलन अरु भक्त वचावन, ऐसी साखि तुम्हारी ॥ जिन प्रहलाद असुर गहि वाँध्यो, लीन्हो खड्ग निकारी । हिरणाकुश हनि दास उवारो, नरसिंहको तनु धारी ॥ खैंचि ग्राह गज वोरन लाग्यो, राम कहो यकवारी । सुनत पुकार पयादेहि धाये, तजिके गरुड़ सवारी ॥ द्रौपदि लाज उवारण कारण, लाये सभामँझारी । दीनानाथ लई सुधि वेगहि, वाढ़ो चीर अपारी ॥ जिन जिन शरण गही संकटमें, कहा पुरुप कहा नारी । चारौ युग हरि करी सहाइ, रक्षक भये मुरारी ॥ गुरु शुकदेव वतायो तोकों, सन्तनकी रखवारी । चरणदास थकि द्वारे तेरे, गुण पौरुप दियो डारी ॥ ३४१ ॥

राग धनाश्री—अव तुम करौ सहाय हमारी । मनके रोग होय गये दीरघ तनके वड़े विकारी ॥ तुमसों वेद और को दूसर, जाहि दिखाऊँ नारी । सजीवन मूल अमरमूल हो, जासों

सोहै दया तुम्हारी ॥ क्रियाकर्मको औषधि जेती, रोग वढ़ावनहारी। दीजै चूरण ज्ञानभक्तिको, मेटो सकल व्यथारी ॥ जनके काज पयादे धावत, चरणकमलपर वारी। मैं भयो दास अधीन तुम्हारो, मेरो करो सँवारी ॥ जो मोहिं कुटिल कुचालि जानिके, मेरी सुरति विसारी। चरणदास शुकदेव है तेरो, दुष्ट हँसैंगे भारी ॥

हरिजी संकट वेगि निवारो। जनको भीर पड़ी है भारी चक्र सुदर्शन धारो ॥ कंसनिकन्दन रावणगंजन, हिरणाकुश गहि मारो। दुष्टदलन अरु भक्तउवारण, जन प्रहलाद उवारो ॥ पाँचौ पांडव राख लिये हैं, कौरवदल संहारो। जिन जिन दोष कियो सन्तनसों, सो सोई हानि डारो ॥ निर्भय भक्ति करैं जन तेरे, ऐसो समय विचारो। चरणदासके घटमें वैरी, तिनको क्यों न विदारो ॥ ३४३ ॥

राग विभास—राखोजी लाज गरीवनिवाज। तुम विन हमरे कोन सँवारे, सवही विगरैं काज ॥ भक्तवछल हरिनाम कहावो, पतित उधारणहार। करौ मनोरथ पूरण जनको, शीतल दृष्टि निहार ॥ तुम जहाज मैं काज तिहारो, तुम तजि अंत न जाऊँ। जो तुम हरिजी मारि निकासौ, और ठौर नहिं पाऊँ ॥ चरणदास प्रभु शरण तिहारी, जानत सव संसार। मेरी हँसीसों हँसी तिहारी, तुमहूँ देखि विचार ॥ ३४४ ॥

भजन विनय—तुमविन कौन हमारो प्रभुजी ॥ टेक ॥ होय असत्यके हम अनुरागी, हितकर सत्य विसारो। दिव्यज्ञान विन अंध भये हम, सूझै न सार असारो ॥ कवहुँ न वैठ क्षणक निर्जनमें, जीवनतत्त्व विचारो। दीन हीन अति कृपापात्र लखि, करुणा हस्त पसारो ॥ पापविकार हरो गिरधर अव, ज्यों जान्यो त्यों तारो ॥ ३४५ ॥

राग बिलावल—प्रभुजी शरण तिहारी आयो । जो कोइ शरण तिहारी नाहीं, भरमि भरमि दुख पायो ॥ औरनके मन देवी देवा, मेरे मन तुहि भायो । जबसों सुरति सँभारी जगमें, और न शीश नवायो ॥ नरपति सुरपति आश तिहारी, यह सुनि करि मैं धायो । तीरथ वरत सकल फल त्यागे, चरणकमल चित लायो ॥ नारदमुनि अरु शिव ब्रह्मादिक, तेरो ध्यान लगायो । आदि अनादि युगादि तेरो यश, वेद पुराणन गायो ॥ अब क्यों न बाँह गहो हरि मेरी, तुम काहे बिसरायो । चरणदास कहैं करता तू ही, गुरु शुकदेव बतायो ॥ ३४६ ॥

राग केदार—अबकी तारि हौ बलवीर । चूक मोसों परी भारी, कुबुधिके संग सीर ॥ भवसागरकी धार तीक्षण, महा गँधीलो नीर । काम क्रोध मद लोभ भँवरमें, चित न धरत अब धीर ॥ मच्छ जहाँ बलवंत पाँचौ, थाह गहर गंभीर । मोह पवन झकोर दारुण, दूर पैलवतीर ॥ नाव तो मँझधार भरमी, हिये बाढ़ी पीर । चरणदास कहैं कोई नहिं संगी, तुम बिना हरि हीर ॥३४७॥

भजन—हरि बिन कोई काम न आयो ॥ टेक ॥ यह देही परपंच मोहवश, रुचि रुचि भवन बनायो । रहन न पायो घड़ी एक पल, आय यम त्रास दिखायो ॥ त्रिया कहत थी संग चलूँगी, रहस धाँस धन खायो । चलती बार फेरकर मुखको, पग एकहु न पठायो ॥ आशा करि करि जननी जायो, बहु विधि लाड़ लड़ायो । निकल गया जब तनका राजा, तुरतहिं वदन जलायो ॥ गज गणिका प्रहलाद उबारे, सो शठ तैं बिसरायो । रामनाम धोखे नहिं लीना, सूर समुझि पछितायो॥३४८॥

प्रभुहूँ सब पतितनको टीको ॥ टेक ॥ और पतित सब दिवस

चारके, हों तौ जन्मतहीको । वधिक अजामिल गणिका तारी, और पूतनाहीको ॥ कोउ न समरथ अघ करबेको, खींच कहत हूँ लीको । मरियत सूर लाज पतियनमें, हमते को है नीको॥३४९॥

गजल–तुम्हें धनवाद हे ईश्वर, तेरे सब खेल न्यारे हैं। तिरेवे अंत सागरमें, कई पैराक हारे हैं ॥ महा अंध घोरसे जल-पर, पृथ्वीका रचा मंडल । कमलसे ब्रह्मा पैदा करके, चारौ वेद उचारे हैं ॥ कहीं जल औ कहीं खुश्की, कहीं पहाड़ोंको कर कायम । जुदा हर द्वीप और चश्मे, जो धरतीपर सिंगारे हैं ॥ सितूँ विन अर्श कायम कर, लगाया रंग कुदरतका । जमाया चाँद सूरजको, सजाये क्या सितारे हैं ॥ बनाकर पेड़ फूलोंके, किये तकसीम गुलशनमें । अयाँ कुदरत है हर गुलंसे, अजब तेरे नज़ारे हैं ॥ हुई कायम जब यह हस्ती, फनाको भी दी तब शक्ती । किसीकी वश नहीं चलती, जो रावण जैसे मारे हैं ॥ किसे ताकत दुलीचंद उसकी, लीला जो करे वर्णन । ऋषीश्वर और मुनीश्वर और, युगीश्वर सब पुकारे हैं ॥ ३५० ॥

भजन–नमो वेदविद्याके परकाशकर्ता । नमस्कार अज्ञानके नाशकर्ता ॥ नमस्कार बलबुद्धिके देनेवाले । नमस्कार दुःखोंके हर लेनेवाले ॥ नमस्ते निरंजन अविद्याविनाशक । नमस्ते परम मित्र सबके सहायक ॥ निराकार नरदेव मुक्तीके दाता । तुम्हें है नमस्कार सायं व प्राता ॥ नमो नाडी और नसके बंधनसे बाहर । नमो सर्व आधार करुणाके सागर ॥ यही माँगता आपका दास केवल । कि शुद्धी हो हिरदैमें बुद्धी हो निर्मल ॥ रहै आपका चित्तमें नित्य सुमिरन । रहूँ करता वेदोक्त किरियाका सेवन ॥ ३५१ ॥

गजल।

तसव्वुर दिलमें हरदम लवपै, दमदम यादगारी है।
मिलेगा जाने कव हमदम, निहायत वेकरारी है॥
दोहा–निशदिन क्षणपल रहत है, केवल तुमरो ध्यान।
तुमविन इक इक श्वास म्वहिं, वीतत कल्पसमान॥
दिखादो अव तो जलवा यार, हरदम दम शुमारी है।
तसव्वुर दिलमें हरदम लवपै, दमदम यादगारी है॥
दोहा–आसन लागा प्रेमका, अँसुवन माला धार।
तन मन जला विभूतकी, जपूँ नाम हर वार॥
दिगर हालत हो क्या योगीकी, साहव जो हमारी है।
तसव्वुर दिलमें हरदम लवपै, दमदम यादगारी है॥
दोहा–देहत्रय त्रयगुणरहित, सत् चित् आनँदरूप।
परिपूरण आकाशवत, शोभा महा अनूप॥
नहीं देखी वजह हमने, किसीकी जो तुम्हारी है।
तसव्वुर दिलमें हरदम लवपै, दमदम यादगारी है॥
दोहा–वर्णाश्रम परिवार धन, मृत्यु अध ऊरध लोक।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश मुद शोक॥
हैं मनके धर्म निर्भयराम, मैं निश्चय हमारी है।
तसव्वुर दिलमें हरदम लवपै, दमदम यादगारी है॥ ३५२॥

भजन–हमें ना सूझे अजपासा कोई जाप॥ टेक॥ ना आसन चहिये ना माला, हृदयकमलमें हो उजियाला। स्वाँसामें मनुआ रमजावे, रहजा आपहि आप॥ महाकाशके वाहर भीतर, अखंड एकहि जाप। ध्यानकी ओट ज्ञानसे परखो, अनहद धुनिको अलाप॥ चाहे वन वन हेरत डोलो, चाहे वेद पुराण टटोलो। नेम करो चाहे व्रत राखो, द्वंद्व पुन्य और पाप॥

निर्भय नानक सुन्दर दादू, कवीर तुलसीदास । वाहर भीतर आते जाते, अन्त हुये गर गाप ॥ २५३ ॥

मोहिं नीको लागै वाजै अनहद तूर ॥ टेक ॥ सोहं सोहं सोहं सोहं. धुनि चहुँदिशि रहि पूर । अन्तरिक्ष पाताल स्वर्गमें, शब्द रह्यो भरपूर ॥ रैन दिना अन्तर और वाहर, तेरे सन्मुख दूर । निर्भयराम यही धुनि गहिलो, दरशे नूरहि नूर ॥ २५४ ॥

होली—घटमें कैसो फाग मचोरी ॥ टेक ॥ घनघन नौबत झड़ने लागी, अनहद धुनि टनकोरी । सोहं सोहं सोहं सोहं, सोहं हं चहुँ ओरी । शूनमें शोर मचो री ॥ बाजत हैं मिरदंग मुरलिया, शंख झाँझ डफ घोरी । सुरत निरत कर पियाको रिझावै, नैननमें चोराचोरी । मोहनी मंत्र पढ़ोरी ॥ उतसों पिया इतसों मैं धाई, प्रेमगुलाल भर झोरी । ज्ञानको रंग ध्यानसों छिड़को, तार तार दियो वोरी । पाग पिया चूनर वोरी ॥ झटपट बहियाँ डाल गलेमें, मुख चूमो वरजोरी । निर्भय लिपट झपट कर पिया-सँग, सो रहो रात रही थोरी । होने दो ऐसीही होरी ॥ २५५ ॥

भजन—आई बदरिया कारी कारी ॥टेक॥ श्यामघटामें दामिनि दमकै, रिमझिम परत फुआरी । अद्भुत रूप जगत् यह हरिको, इस छबिपै बलिहारी ॥ आपहि गर्जै आपहि वर्षै, सननन पवन चलारी । पिउ पिउ चातक आप करै है, स्वाँतिबिन्दुपै वारी ॥ आपहि प्रीतम प्रीति आप है, आप विरहिन मतवारी । आपहि बिछुरै आपहि मिलि है, आप बनो हितकारी ॥ आपहि बादर मोर आप है, कूकत शोर मचारी । आपहि कमल आपही भौंरा, करत सदा झनकारी ॥ आप सुगन्ध आप है माली, आप वनो फुलवारी । आप हिंडोला आप झुलावै, झूलै आप बिहारी ॥

आपहि सवमें न्यारा सबसे, यह माया विस्तारी । आपहिं निर्गुण आप सगुण है, आप चतुर देहधारी ॥ २५६ ॥

आली री मोहिं लगत वृन्दावन नीको । टेक ॥ घर घर तुलसी घर घर ठाकुर, दर्शन गोविंदजीको ॥ निर्मल नीर बहुत यमुनाको, भोजन दूध दहीको । रत्नसिंहासन आप विराजैं, मुकुट धरयो तुलसीको ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिका, शब्द सुनत मुरलीको । मीराके प्रभु गिरिधर नागर, भजन विना नर फीको ॥ २५७ ॥

राग देस–मन अब सुमिर गणपतिचरण ॥ प्रथम पूजत नारि नर सब, जानि मंगलकरण । सन्तजनको कल्पतरुसम, खलनको दलहरण ॥ लहहिं बुधवर सकल विद्या, भजहिं सो करि परण । सुखद अधिक पुनीत पावन, भक्ततारणतरण ॥ जानि मंगलमूलको जन, ध्यान लागे धरन । ताहि क्षण त्रयताप भागे, पाप लागे डरन ॥ गौरिलाल गणेश सुन्दर, महा अद्भुत वरण । दास बालगोविंद जाके, रहत नितप्रति शरण ॥ २५८ ॥

लावनी।

शंभुसुत गौरीके नन्दन, नाम गणपती जगतवंदन ॥ टेक ॥
शीशपर सोहै मुकुट आला, तिलक चन्दनका छविवाला ।
गलेमें मोतिनकी माला, नैनमें काजर दिये काला ॥
दोहा–मूषकवाहन गजवदन, शोभित जिनको अंग ।
छवि वर्णन कवि को करै, लाजत काम अनंग ॥
धरूँ मैं ध्यान तासु चरनन, नाम गणपती जगतवंदन ॥
रूपमहिमा जिनकी न्यारी, छुटीं अलकें घूँघरवारी ।
ओढ़े शिर पीतांबर सारी, अधर मुसक्यान भुजा चारी ॥

दोहा–थिरक थिरक नाचत फिरैं, श्रीगणपति महराज ।
पाँयन छमछम बजैं पैंजनी, घुँघुरुनकी आवाज ॥
साजोंकी होरही जहाँ खननन, नाम गणपती जगतवन्दन ॥
हाथमें सोहै गदा त्रिशूल, मिटावैं सब सुजननकी शूल ।
नाम जिनका सुखदायक मूल, तिन्हैं नहिं भजै बड़ी है भूल ॥
दोहा–सेवहिं अमर नरेश तेहि, नारी नर समुदाय ।
आरति निशदिनते करैं, धूप दीप बहु लाय ॥
चढावें फूलरोरी चन्दन, नाम गणपती जगतवंदन ॥
प्रथम पूजा जिनकी भारी, दियो वर तिनको त्रिपुरारी ।
विना तुमरे नहिं शुभकारी, मनावै तुमको संसारी ॥
दोहा–विघ्नहरण मंगलकरण, श्रीगणपति महराज ।
सभाबीच लज्जा रखो, गौरीसुत तुम आज ॥
काटि देउ सब यह भवफंदन, नाम गणपती जगतवंदन ॥ २५९ ॥

उमास्तुति–लावनी ।

उमा नवकोटि रूप गण गौर, नमो भगवती शक्ति शिर मौर ॥ टेक ॥
करैं सुरवधू सकल शृंगार, माँग गजमुक्तन भरि इकसार ।
गुही बेनी प्रसून सुकुमार, महावर चरनन विविध प्रकार ॥
दोहा–शीश मुकुट नवरतनयुत, चपला चमक चलाय ।
श्रवण फूलसम तुल्य चन्द्रयुग, नकबेसर पहिराय ॥
लसत मस्तक मलयागिरि खौर, नमो भगवती शक्ति शिरमौर ॥
त्रिविध गुणके तीनौ लोचन, तापत्रयहरन तिमिरमोचन ।
कुटिल भ्रुकुटी आनन रोचन, कहत छबि लगे शेष शोचन ॥
दोहा–ललित चतुर कर कमलसम, नख शिख रूप गँभीर ।
विविध भाँति अम्बर आभूपण, राजत गौर शरीर ॥
न उपमा तुमसमान कोइ और, नमो भगवती शक्ति शिरमौर ॥

लगे सब यात्रिनके दरबार, करत अस्तुति मुनि अपरंपार ।
पौरिपर बरद छड़ी बरदार, शक्ति यक तुही सार संसार ॥
दोहा–रमा लिये कर बीजनी, ढोरें त्रिविध बयार ।
चन्द्रासनसे आय इन्दिरा, आरति रही उतार ॥
विष्णु कर छत्र करें विधि चौर, नमो भगवती शक्ति शिरमौर ॥
खड़ी कोइ सेवामें खासी, लिये कोई पीकदान दासी ।
इतर कर कोइ गुलाब पाँसी, लखें कोइ अनसासन पासी ॥
दोहा–नारद शारद सप्त ऋषि, सनकादिक सुर सर्व ।
अस्तुति करत सदा अम्बेकी, जयजय करि तजि गर्व ॥
करें सेवक सेवकाई दौर, नमो भगवती शक्ति शिरमौर ॥
करें तपसी तप निपुण तमाम, जपें योगीजन आठौ याम ।
करत त्रिभुवनजन तुमहिं प्रणाम, लहत फल अर्थधर्मगतिकाम ॥
दोहा–जहाँ जहाँ संकट परो, टारी भारी भीर ।
दास आपनेपर सहाय हुइ, देहु ज्ञान गम्भीर ॥
करो निशदिन गणेशपर गौर, नमो भगवती शक्ति शिरमौर ३६०

गंगास्तुति–राग आसावरी ।

महिमा अनन्त जग जानी, जय जय गंगा महरानी ॥ टेक ॥
तप कियो भगीरथ भारी, सुरसरि आवे संसारी ।
जन जानि आनि सुख चारी, वरदान दियो इकवारी ॥
छन्द–ब्रह्मलोकसे वही सुरसरी मृत्युलोक पाई ।
लई शीशपर धार ईश पदवी पुनीत पाई ॥
भागीरथ बहु भांति विनय शिवशंकरकी गाई ।
दीन्हो बुंद निचोर तीनि त्रिभुवन भाई धाई ॥
टूट–सगर भूपतिसुत साठि हजार, तारि भागीरथको परिवार ।
सागरमें जाय समानी, जय जय गंगा महरानी ॥

जननी अति पतित निवाजे, त्रयताप आपसे भाजे।
जो भजै सदा तुम् काजे, शिवपुरमें आय विराजे॥
छंद--जटाजूट शिर गंग लसत मस्तक मयंक आला।
लाल लाल लोचन विशाल उर पड़ी मुंडमाला॥
अंग अंग लिपटे भुजंग विष पिये भंग प्याला।
वाघंवर विस्तर वृषवाहन ओढ़े मृगछाला॥
टूट--दयावर वदल दिया चोला, किया कितनोंका बंबोला।
तुम कामधेनु कल्यानी, जय जय गंगा महरानी॥
यम गये विष्णुके पासै, कर जोरि कहा इतिहासै।
हम हड़े बड़े गंगासे, पापी पहुँचे कैलासे॥
छंद--मृत्युलोकमें अदल अदालत गंगाकी सारी।
लगे रहें दरवार पुण्यका परवाना जारी॥
पापिनकी अर्जीपर मरजी है जिनकी प्यारी।
अधम अधम कुटिल करैं सुरपुरकी तैयारी॥
टूट--हुक्म गंगाजीका नाटक, नरकका बंद किया फाटक।
तुम चार पदारथ दानी, जय जय गंगा महरानी॥
हैं चरित तिहारे नीके, दर्शन सम तुल्य अमीके
निर्मल जल गंगाजीके, पी पाप कटत पापीके॥
छंद--जो करने अस्नान निकट गंगाजीके आवै।
पग बोरत पुनि शीश हरीहरकी पदवी पावै॥
जव जिसने घट भरा चाल चतुरानन कहलावै।
ब्रह्मा विष्णु महेश रूप तीनोंका दरशावै॥
टूट--निकट सुरसरी फरुखावाद, करि अस्तुति गणेशपरशाद।
देउ चरणभक्ति मनमानी, जय जय गंगा महरानी॥ २६१॥

शिवस्तुति ।

राग खम्माच—हर हर वं वं शिव चन्द्रभाल । महिमा अपार संसार सार ॥ टेक ॥ नयना रसाल भ्रुकुटी विशाल । माला कपाल उर लसत व्याल ॥ दीनन दयाल करुणावतार । महिमा०॥ छवि अंग अती सोहैं पारवती । लिये योग यती कैलासपती ॥ चढ़ें वेलपती वृषपर सवार । महिमा० ॥ सुरसरि जटान शोभायमान । लिये डमरु पान अति करत गान ॥ भाषत पुराण यश वेद चार । महिमा० ॥ हरि विधि सुरेश नित रटत शेश । निशादिन कलेश काटत महेश ॥ गावत गणेश प्रभु सुन पुकार । महिमा अपार संसार सार ॥ २६२ ॥

भजन—शंकर शिव वं वं भोला । कैलासपती महाराज राज, शंकर शिव वं वं भोला ॥ टेक ॥ ओढ़े मिरगछाल गले मुंडमाल, लोचन विशाल हैं लाल लाल । इत चन्द्रभाल सोहत विराज ॥ शंकर शिव० ॥ अर्धंगरूप जैसे छाँह धूप, निरखत अनूप भये छकित भूप । कर डमकि डूप गति डमरु वाज ॥ शंकर शिव० ॥ वछवा तुरंग छवि अंग अंग, लिय गौरि संग सोहे शीश गंग । पिये भंग ढंगसों करत काज ॥ शंकर शिव०॥ कहै दास नित्य कर जोर जोर, देउ भक्तिदान रख मान मोर । शिवचरण छाँड़ि कहँ जाउँ आज ॥ शंकर शिव० ॥ २६३ ॥

राग प्रभाती इकताला ।

शंकर संसार सार वं वं वं भोला । शीश गंग चंद्र भाल चिताभस्म चोला ॥ टेक ॥ लोचन विशाल लाल, जटा मुकुट मुंडमाल । नीलकंठ कर निवास असमशान टोला ॥ शंकर० ॥ राजत भुजंग अंग, लीन्हे प्रभु गौरि संग । प्यावत घन घोटि

घोटि भरें भंग झोला ॥ शंकर० ॥ चरणपद्म वृषविमान, डमरू कर करत गान । गावत अति ललित राग सुनि मुनिमन डोला ॥ शंकर० ॥ निशादिन करि करि प्रणाम, सुमिरत शिव रामनाम । रटत शेश वेद भेद जिनको नहिं खोला ॥ शंकर० ॥ नारद शारद सुरेश, शिवगुण गावत गणेश । चतुरानन विष्णु करत अस्तुति मृदु वोला ॥ शंकर संसार सार वं वं वं भोला ॥२६४॥

लावनी रंगत मोहनी ।

भाल शशि चिताभस्म चोला, अगड़ वं वं वं वं भोला ॥ टेक ॥
शीशपर सोहे जिनके गंग । सुधासे जाकी सरस तरंग ॥
विराजत शैलसुता अर्धंग । अंगमें लिपटे अधिक भुजंग ॥
दोहा--जटा मुकुट भ्रुकुटी कुटिल, लोचन लाल विशाल ।
नीलकंठ यज्ञोपवीत उर, राजत माल कपाल ॥
संगमें भरे भंग झोला, अगड़ वं वं वं वं भोला ॥
खौरि सोहै ललाट चन्दन । वदन द्युति अमित भाल चंदन ॥
चतुर्भुज भक्तन भयभंजन । मदनमर्दन मुनिमनरंजन ॥
दोहा--कर त्रिशूल पदपद्म छवि, नखशिख रूपनिधान ।
डिमक डिमक डिमडिम डमरूमें, करत रागिनी गान ॥
तान सुनि तपसिन मन डोला । अगड वं वं वं वं भोला ॥
वाघअम्बर विस्तर मृगछाल । वैल वाहन ओढ़े गजखाल ॥
गोदमें सोहै गणपतिलाल, मुकुट मस्तक गजवदन विशाल ॥
दोहा--रजत शिखर कैलासपर, वैठे आसन मार ।
काढ़ो रतन मथ्यो भवसागर, जपत रकार मकार ॥
रामरतननमें अनमोला । अगड वं वं वं वं भोला ॥
नवलदल कमल वेलपाती । चढ़ै शंकरके मनभाती ॥
दरशहित अमर भीर आती । सँजोये घृत कपूर वाती ॥

दोहा–करैं आरती चतुर्मुख, विष्णु बजावैं शंख।
सुर तेंतीस सारद रु नारद, अस्तुति करत असंख्य ॥
मर्म नहिं शंकरका खोला। अगड़ बं बं बं बं भोला ॥
त्रिपुरअरि मारो अविनाशी। बसाई त्रिशूलपर काशी ॥
प्रगट जहँ ऋद्धि सिद्धि खासी। मुक्ति जहँ पड़ी रहै दासी ॥
दोहा–अन्नपूरणा भगवती, पुर भैरव कुतवाल।
वाराणसी चतुष्फल फूली, लखि नर होत निहाल ॥
अजब छबि है टोला टोला। अगड़ बं बं बं बं भोला ॥
भनत यश चतुर्वेद वंदी। खडे गण द्वारपाल नंदी ॥
भजौ गिरिजापति आनन्दी। कटै भव चौरासी फंदी ॥
दोहा–सुखदायक संकटहरण, मंगलकरण महेश।
चरणभक्ति वरदान देहु प्रभु, अस्तुति करत गणेश ॥
अटल वह जो हर हर बोला। अगड़ बं बं बं बं भोला ॥२६५॥

भजन–भजले मन गौरीपति कृपाल। कटि जात सकल भ्रममोहजाल ॥ टेक ॥ कैलासशिखर पर्वत विशाल। जहँ वसत सदाशिव तीनि काल ॥ तहँ पीवत हैं नित घोटि भंग। शिर लसत गंग भूषण भुवंग ॥ रीझै हैं जलदल फलफूल चाल, अनुकूल प्रसन्न बजाय गाल ॥ जिनके विधि लिखी संपति न भाल। तिनको शिव दीन्ही हुइ दयाल ॥ हियमें धरु शंकर चरणरेनु। फलदायक सुरतरु कामधेनु ॥ मनवांछित पावत वृद्ध बाल, निर्धन धन बाँझिनि पुत्र हाल ॥ भज० ॥ कहि विश्वनाथ कीरति उदार, सुन याचक वर होंय दीनदार ॥ मोहिं नयन खोलि हर करु निहाल, दर्शन प्रभु दीजे चंद्रभाल ॥ भजले मन गौरीपति कृपाल, कटि जात सकल भ्रममोहजाल ॥ २६६ ॥

प्रभाती–गंगाधर महादेव सुन पुकार मेरी । दीजै वर वेगि नाथ करत कहा देरी ॥ चन्द्र भाल दृग विशाल, कंठ धार मुंडमाल, काटौ भ्रम मोहजाल, दयादृष्टि हेरी ॥ दीननके नाथ शंभु दीननपर हुइ दयाल, वेगि दरश देहु मोहिं आश गही तेरी ॥ देवीको सहाय सदा सेवक तेरो कहाय, आनँद वनवास आश पूर्ण होय मेरी ॥ ३६७ ॥

भैरवी–हे गौरीश शरण मैं तेरी । तुम उदार त्रिभुवनपति स्वामी करहु कृपा निज जन तन हेरी ॥ दीननकी सुधि लेत सदा तुम हमरी वेर करी किमि देरी । निशदिन वसो नाथ उर मेरे वेगि करहु प्रभु कृपा घनेरी ॥ वाराणसी वासहित दीजै विश्वनाथ आशा यह मेरी । अव तो दरश चहत मन मेरो चितवौ वेगि कमलमुख फेरी ॥ भवसागरको पार मिलै नहिं यासों दुखित कहत हौं टेरी । देवीसहाय सकल सुर सेवत अणिमादिक जाकी सब चेरी ॥ ३६८ ॥

भैरवी खेमटा–भोले वावा बसौ मेरी नगरी । तुमरे बैलको मेवा मँगाय देउँ तुमको पियैहौं भाँग भरि गगरी ॥ जे गिरिजापति जानत नाहीं तिनके धरम करम गये विगरी । देवीसहाय मगन निशवासर शिव शिव नाम जपत पग पग री॥३६९॥

मान लीजै हमारी पूजा । चन्दन धूप दीप अक्षत लै बेलपत्रके कूजा ॥ ममता मोहविवश मतवारे ताते तुम्हैं नहिं वूझा । जापर ।कटाक्ष करत तुम ताहीको कछु सूझा ॥ जन्मजन्मके पाप :त सब शिवपदपंकज छूजा । देवीसहाय कहत सबसों यह ।वसम देव न दूजा ॥ ३७० ॥

राग देस–शिव शिव रटत संकट कटत ॥ जन्म जन्मनके

पुरातन पाप आपै हटत । अटक कछु नहिं रहत ताको जो शिवाशिव जपत ॥ नाममें शिवरूप दरशत धन्य नर जे लखत । वेद और पुराणके फल नाममें सब बसत ॥ तरत भवसागर सोई जग योनिसों नर छुटत । देविसहाय महेश पदरज प्रेमपूरन करत ॥

भजन–वारंवार पुकारत आरत जय शिवशंकर शरण तिहारी ॥ जहँ जहँ भीर पड़ी भक्तनपर, तुमहीं सहाय कीन भय टारी । लोचन तीनि सकल दुखमोचन सुखसागर सबके हितकारी ॥ वारंवार० ॥ शीश गंग अर्धंग उमा छवि शोभित मुंडमाल विषधारी । नीलकंठ तन भस्म चिताकी ओढ़े व्याघ्र-चर्म त्रिपुरारी ॥ वारंवार० ॥ चन्द्र ललाट पदम पद शोभित अविनाशी कैलास विहारी । पाणि त्रिशूल विराजत डमरू नन्दीगण जनकी रखवारी ॥ वारंवार० ॥ हरि विरंचि नारद शारद मुनि सुर तेंतीस शेष संसारी । निशदिन ध्यान धरत भोलाको रहत वेद बंदीजन चारी ॥ वारंवार० ॥ दूरि करौ प्रभु सकल आपदा कहत गणेश पुकार पुकारी । वारंवार पुकारत आरत मैं शिवशंकर शरण तिहारी ॥ ३७२ ॥

सूर्यस्तुति ।

लावनी–हे दीनदयाल दिनेश कलेश नशावौ । तुम हौ प्रत्यक्ष भगवान ज्ञान दरशावौ ॥ माया ममतामें फँसो कसो तन मेरो । करिये किरणनसों कृपा होय निरवेरो ॥ तुम हो ब्रह्मा अरु विष्णु महेश हमारे । हम हैं आरत महराज पुकारत द्वारे ॥ तुमरे दर्शनको देखि जगत सुख पावै । तुम्हरे पद पूजे विना भाव नहिं आवै ॥ तुम हौ भवदीपक देव दृगनके वासी । तुमही जीवनके मीत सकल सुखरासी ॥ भवसागरमें मैं परो हरौ दुख

मेरो । मैं हौं सविता महराज चरणको चेरो ॥ तुमरे अस्ताचल होत तिमिर घिरि आवै । आलसवश हुइ सब जीव शयन मन लावै ॥ तुमरो आगमन निहारि जगत सब जागै । निज निज सब हाथ कृपाल करन सब लागै ॥ पापी औ अजापी जीव प्रात नित सोवैं । तिनको कैसे सुख मिलै देखि दुख रोवैं ॥ सुर सिद्ध सुरेश धनेश ध्यान करि ध्यावैं । तुम्हरे वन्दीजन वेद विमल यश गावैं ॥ शुचि हुइ प्रभात कर जोरि निहोरै कोई । ताको सुख संपति मिलै दरिद्र न होई ॥ रविके सेवक सुख करैं होयँ नहिं रोगी । तन त्यागे शुभगति होय जाय जहँ योगी ॥ तिल तंदुल अंजुलि साजि भानुको दीजे । नरतन दुर्लभ द्विजदेह सफल करि लीजै ॥ शंकर सहाय वर देहु दास अपनावौ । आनँद मंगल करि हमहिं महेश मिलावौ ॥ ३७३ ॥

निराकार ब्रह्मस्तुति ।

नमस्ते सर्व आधारा ॥ टेक ॥ नमस्ते आदिते सूना, नमस्ते निर्विकार आतम । नमस्ते अन्तते न्यारा, नमस्ते रहित आकारा ॥ नमस्ते भक्तहितकारी, नमस्ते सर्वका प्यारा । नमस्ते सर्वमें पूरण, नमस्ते सर्व उजियारा ॥ नमस्ते सर्वरूपाय, नमस्ते सर्व आकारा । नमस्ते सर्व दुखभंजन, नमस्ते सर्व दातारा ॥ नमस्ते शुद्ध स्वयंज्योती, नमस्ते एक ओंकारा । नमस्ते पुरुष पुरुषोत्तम, नमस्ते सर्व विस्तारा ॥ नमस्ते ज्ञानके दाता, नमस्ते सत्य करतारा । नमस्ते सर्वते उत्तम, नमस्ते प्राणआधारा ॥ नमस्ते एक अविनाशी, नमस्ते प्रभु निराकारा । नमस्ते धरणिके धारी, नमस्ते सर्व प्रतिपारा ॥ नमस्ते स्वतः परकाशी, नमस्ते रहित आधारा । नमस्ते सुखभवनस्वामी, नमस्ते परम कृपारा ॥ नमस्ते सर्वके द्रष्टा, नमस्ते ज्ञानउजियारा । नमस्ते

सर्वके ईश्वर, नमस्ते सर्व रखवारा ॥ नमस्ते सर्वके अन्तर, नमस्ते सर्वतें न्यारा । नमस्ते मुक्तिके दाता, नमस्ते निज अमलसारा ॥ अचल निर्गुण अकाल अद्वै, अगम अवगति निराकारा ॥ करै हेमा नमस्कारा, नमस्कारा नमस्कारा ॥ ३७४ ॥

सामयिक कवितावली ।

कवित्त—मैं तो हूँ अनाथ नाथ तूही एक नाथ मेरो, दूजो और कौन ताको राखों कछु भाव रे । धर्म अर्थ काम मोक्ष चारोंको दाता सुनि, तासों तो नित्य मोहिं चित्त वढ़्यो चाव रे ॥ गणनके नायक वरदायक सदाके आप, तेरी ही आशपै एतो सव उछाव रे । आधी तो ये आयु आछी वीत चुकी शरण तुव, आधी और रही ताकी लाज राखु राव रे ॥ ३७५ ॥

जिनहीं सरितान अरु पोखरिन जल सोंकि लीन्ह्यो, तेई सरितानमें फेरि जल भरि हैं । जिनहीं तरुवरनको पत्रफलविहीन कीन्हों, तेई तरुवरनमें फेरि पत्र करि हैं ॥ जिनहीं वलिराजजूको स्वर्गते पताल राख्यो, तेई वलिराज फेरि इन्द्रपदवी करि हैं । कहै छत्रशाल वीर येरे मन धरे धीर, जिनहीं उपराजी पीर तेई पीर हरि हैं ॥ ३७६ ॥

सवैया—चाहे सुमेरुकी छार करै, अरु छारकी चाहे सुमेरु वनावै । चाहे तो रंकते राव करै, चहै रावको द्वारहि द्वार फिरावै ॥ रीति यही करुणानिधिकी, कविदेव कहै विनती मोहिं भावै । चींटीके पायँमें वाँधि गयन्दहि, चाहे समुद्रके पार लगावै ॥ ३७७ ॥

हौं कवको रट लाय रह्यो, गहि दीन स्वभाव मनै वच कायक ।

दीनके बंधु कहावत हौ, हरि काहेते होत न आनि सहायक ॥
काहेसे ढील करी करुणामय, कृष्ण कहै प्रभु हौ सबलायक ।
जानि परी तुमहूँको कछू अब, ब्यार लगी जगकी जगनायक ३७८

हुइ अति आरत मैं विनती, बहु बार करी करुणारसभीनी ।
कृष्णकृपानिधि दीनके बंधु, सुनी असुनी तुम काहेक कीनी ॥
रीझते रंचकही गुणसों, यह बानि बिसारि मनों अब दीनी ।
जानि परी तुमहूँ प्रभुजी,कलिकालके दानिनकी गति लीनी॥३७९॥

जाप जप्यो नहिं मंत्र थप्यों,नहिं वेदपुराण सुन्यो न बखानो ।
बीति गये दिन यौंहि सबै, रसमोहन मोहनके न बिकानो ॥
चेरो कहावत तेरो सदा, पुनि और न कोऊ मैं दूसर जानो ।
कै तो गरीबको लेहु निवाज, न तो छोंड़ो गरिबनिवाजको बानो॥

सेवक चूक करै बहुधा, प्रभु ताहि न क्रोधविरोध विचारो ।
पूत कपूती करै कितनो, पितु मातु नहीं दुखभाव निहारो ॥
पालन पोषण नित्य करै, मुद मोदसमेत हमेश दुलारो ।
बूडत हौं भवसागरमें, सुदया करिके प्रभु बेगि उबारो ॥ ३८१ ॥

आलस नींदमें मातो सदा, अरु उद्यमहीन दुबेर खवैया ।
प्यास लगै नहिं पानी भरों, अरु पास धरो उठिके न पिवैया ॥
ऐसे निकम्मनके शुकदेव, कृपाके निधान हौ पेट भरैया ।
भोरते साँझ अरु साँझते भोरलौं, मोसों कपूत न तोसों दिवैया ॥

जब दाँत न थे तब दूध दियो, जब दाँत भये तो अनाजहि देई ।
जीव बसै थल औ जलमें, तिनकी सुधि लेइ तौ तेरिहु लेई ॥
जानको देत अजानको देत, जहानहुँ देत सो तोहुँक देई ।
क्यों अब शोच करै मन मूरख,शोच करे कछु आज न देई॥३८३॥

कवित्त–हाथीके दाँतनके खिलौना बनैं भाँति भाँति-
बाघनकी खाल तापै शिवमन भाई है। मृगनकी खालनको ओढ़त

हैं योगी जती, छेरीकी खाल थोड़ा पानी भरि लाई है ॥ साबरकी खालनको बाँधत सिपाही लोग, गैंड़नकी खाल राजा रायन सोहाई है । कहै कवि दयाराम रामके भजन विन, मानुषकी खाल कछु काम नहिं आई है ॥ ३८४ ॥

रहा है न कोई यहां रहि है न कोई, यहां जाने सब कोई पै न मानै मोह परिगे। हाथी अरु घोड़े रथ छोड़े सब ठौर ठौर, भौननमें गाड़े भूरि भॉड़ेते बिसरिगे ॥ कहै छबिनाथ रघुनाथके भजन विन, ऐसेही विचारे जन्म कोटिन निसरिगे। जंगवाले जोरवाले जाहिर जरबवाले, जोशवाले जालिम चिताकी आग जरिगे ॥ ३८५ ॥

नारिके विकार सब ख्वार किये जीवजन्तु, नारिके विकार ब्रह्मादिक भरमाये हैं। नारिके विकार हार चले सब ऋषी मुनी, नारिके विकार शिव ध्यानसा छुड़ाये हैं ॥ नारिके विकार शशि सूरकला दूर भये, नारिके विकार राउ रंक मरवाये हैं । कहै एक साईं लोक नारिक़ा विकार तजि, ताते योगीजन संत तभी तो कहाये हैं ॥ ३८६ ॥

बैठिये न जहाँ तहाँ संगति कुसंगतिमें, कायरके संग शूर भागैपै भागै । फूलकी सुवास जैसे वासनामें मोय रही, कामिनीके संग काम जागैपै जागै ॥ घर बसे घरवाले वैरागीके घर कैसो, काम क्रोध लोभ मोह पागैपै पागै। काजरकी कोठरीमें कैसहू चतुर घुसो, एक रेख काजरकी लागैपै लागै ॥ ३८७ ॥

सुदामा तन हेरे तो रंकहूते राव कीने, विदुर तन हेरे तो राजा कीने चेरेते। कूबरी तन हेरे तो सुन्दर स्वरूप कीने, द्रौपदी तन हेरे तो चीर बाढ़े टेरेते ॥ कहत छत्रशाल प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी, हरनाकुश मारयो का नेक नजर फेरेते । कामी

अभिमानी गुनी ज्ञानी भये कहा होत, नामी नर होत गरुड़-गामीके हेरेते ॥ ३८८ ॥

गुणीजन सेवक रु चाकर चतुरके हैं, कविनके मीत चित हित गुणगानीके । सीधनसो सीध महा बाँके हम बाँकनसों, हरिचंद नकद दमाद अभिमानीके ॥ चाहवेकी चाह काहूकी न कछु परवाह, नेही नेहके दिवाने सूरत निवानीके । सर्वस रसिकके सुदास दास प्रेमिनके, सखा प्यारे कृष्णके गुलाम राधारानीके ॥ ३८९ ॥

लाजको जहाज डूब्यो शीलको समुद्र सूख्यो, दयाके खजाने कीनो ताली कोऊ लैगयो । सत्यहूकी कोठी लूटी धर्मकी ध्वजाही टूटी, पाप घर घर घट घट बीच छै गयो ॥ सन्तनको दोष कहा होत कोऊ देत नाहीं, नाहींको नकीब घरघरमें कह्यो गयो । संत कहैं चेतरे तू चेतरे अचेती नर, पुण्य धर्म दया बीज अंश कहँ रहगयो ॥ ३९० ॥

मुनिमख राख्यो मार ताड़का सुवाहु वीर, चरण छुवाय जिन शिला तार दीना है । सो कवि रसीले आय मिथिला शहरमाहिं, नर अरु नारिनको मन हर लीना है ॥ सोई यह सलोने कुमार दशरत्थजूके, राजत निहार कोटि काम छबि छीना है । मेरी महारानी तीनलोकमें प्रमानी सिया, सोनेकी अँगूठी राम साँवरो नगीना है ॥ ३९१ ॥

नीर बिनमीन दुखी क्षीर बिन शिशु जैसे, पीरकी औषध बिन कैसे रह्यो जात है । चातक ज्यों स्वातिबूँद चन्दको चकोर जैसे, चन्दनकी चाह कर सर्प अकुलात है ॥ निर्धन ज्यों धन चाहे कामिनीको कंत चाहे, ऐसी जाकी चाह ताहि कछु न सुहात है । प्रेमको प्रवाह ऐसे प्रेम तहाँ नेम कैसे, सुन्दर कहत यह प्रेमहीकी बात है ॥ ३९२ ॥

सवैया–धूत कहो अवधूत कहो, रजपूत कहो जुलहा कहो कोऊ । काहूकी बेटीसों बेटा न ब्याहन, काहूकी जात बिगारन सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलाम है रामको, जाके रुचै सो कहो कछु ओऊ । माँगके खैबो मजीतको सोइबो, लेवेको एक न दीवेको दोऊ ॥ ३९३ ॥

आपनी ओरकी चाहें लिखी,लिखी जात कथा उत मोहन ओरकी।
प्यारे दयाकर वेग मिलो, सहा जात व्यथा नहिं मान मरोरकी ॥
आपहिं बाँचत अंग लगावत, हो किन आनी चिठी चितचोरकी।
राधिके मौन रही धरि ध्यान, औ हुइ गइ मूरति नंदकिशोरकी ॥

नादके लोभ तजे मृग प्राण, सो वीन सुने अहि आप बँधाये ।
मीन सो त्याग अगाध जलै, उर लोभ जगे गल लोह पहाये ॥
कागजकी पुतली करिनी, वश मत्त गयंद सो अंकुश खाये ।
या भुविमंडलमाहिं सुनो, उर लोभ करे दुख कौन न पाये॥३९५॥

विधि एक अनीति रची जगमें, शुभ संतनके तन पेट लगायो।
मुख चारन फेर विचार कियो, तृणपल्लव नाहिं अहार बनायो ॥
अति दीन मलीन दुखी नर जो, तिनको घर भीतर भीख मँगायो।
मनके अनुसार रचे जगको, विधि जानत हो नहिं सीख बतायो॥

प्रेम लग्यो परमेश्वरसों, तब भूल गयो सगरो घरवारा । ज्यों उन्मत्त फिरै जितही, तित नेक रहे न शरीर सँभारा॥ श्वास उसाँस उठे सब रोम, चले दृग नीर अखंडित धारा । सुन्दर कौन करै नवधा विधि, छाक परयो रस पी मतवारा ॥ ३९७ ॥

नभमें सुरलोक रचे हरिजी, अरु भूमि विषे निधि क्षीर बनाये ।
माणि हीरनकी गिरि कूट रचे, फल फूलनके वन कोटि उपाये ॥
सब लोकनको प्रभु पोषत हो, सब भूँख मिटे तुममें मन लाये ।
विन प्रेम कहा फल फूल दिये, विन ते पदपंकजकी रज पाये ॥

तिल तैलके संग लहै दुखको, रससंगहिते जग ईख पेड़ाये। फ़लसंगते पादप ईंट सहैं, अरु गंधके संगते फूल तपाये ॥ कर तंदुल संगतिको जगमें. पुनि शीशविषे तुष मूशल खाये। तिल ईखसमंकर खोट न संगति, या जगमें दुख कौन न पाये ॥३९९॥

धन ईश दियो जगभीतर जो, विनबुद्धि गयो न कछू फल पाये। शुभ संतनकी नहिं सेव करी, अरु विप्रनते नहिं यज्ञ कराये॥ नहिं कूप खने जलहेत कभी, घरभीतर ना जलताल बनाये। बलहीननको सुखदान दिये, नहिं दीननको दुख दूर मिटाये ॥४००॥

दश चार सो भौन रचे जिनके, इक आहि बली भुविमंडल-माहीं। जिनके दश चार सो भौन बली, इक त्याग गये तृण ज्यों घरिमाहीं॥ दश चार सो भौनको भोगत है, इक एकहि राज करे जगमाहीं। दश वीसक ग्रामको राज लहे, नर क्यों गरवे अपने उरमाहीं ॥ ४०१ ॥

जानु भुजा कटि केहरिके सम, कंज प्रभा दृग हैं मदमाते। कोटि सुरागण नाचत हैं, अरु गंध्रव आय सबी पुर गाते ॥ भौन भँडार अपार भरे धन, या विधि आप रचे सो विधाते। यों विध पाहि भई तो कहा, जब जानकीनाथके रंग न राते ॥ ४०२॥

जो सुख है सतसंगतिमें, चतुराननमें सुख नेक न पायो। सो सुख इन्द्रके लोक नहीं अरु, सो सुख शंभुके ध्यान न आयो ॥ सो सुख जाप न ताप किये अरु, सो सुख योग न ज्ञान दृढायो। सो सुख है सतसंगतिमें, अविनाशीके रूपमें जाय समायो॥४०३॥

नाहिं फले जगमाहिं निशेश, दिनेश फले जगमें कहु काहीं। पुण्य बिना फल आहिं कहाँ, विधिलोक सो भूमि रसातलमाहीं ॥ नाहिं सुरेश फले जगमें सो, महेश फले जगमें कहु काहीं। और फले नहिं को जगमें, कृत पुण्य फले द्रुम ज्यों ऋतुमाहीं॥४०४॥

रघुभूप दिलीप तजी क्षितिमें, अरु जाय बसे तपोवनमाहीं । अज नाभिको नंदन त्याग विभूति, गयो वनको न रमे पुरमाहीं ॥ महिमंडल राजको त्याग दियो, पुरमंडल त्यागनमें श्रम नाहीं । अब और न बात कहा कहिये, रघुवीर विभूति तजी छिनमाहीं॥

तातको आयसु मान चले, जिनके पदपंकज पूजत लोई । राजविभूति तजी छिनमें, वनको निकसे जननी बहु रोई ॥ तौ न फिरे पुरको हरिजू, जब भ्रात गहे करमें पद दोई । धर्मबराबर राज नहीं, यह सूचत राम सनातन जोई ॥ ४०६ ॥

शेष धरे धरनी शिरमें, अरु सूर फिरे सो सदा नभमाहीं । धार गदा अबलौं हरिजी, बलि द्वार रहे सो पतालके माहीं ॥ घेर हलाहल लोक चरे, हग शंकर नीठ धरे जगमाहीं । प्राणसमान धरे व्रतको, दुख भूरी भये व्रत टारत नाहीं ॥ ४०७ ॥

जे चतुराननके सुत चारि, गही न विभूति रमे हरिमाहीं । यद्यपि है हरि पूरणते, अबलौं रति है शुभसंतनमाहीं ॥ शेषसमीप सुने हरिको यश, शंभुसमीप सदा चल जाहीं । होवत हैं गुण उत्तम नाश, कुसंगतितें सनकादि डराहीं ॥ ४०८ ॥

कवित्त—पूँछ पूँछ सुख राखें मूछनके केश नाखें, मधु मधु बैन भाषें कहें हम ज्ञानी हैं । देहको असत्य कहें विषयनमें मन बहें, भोगनको चित्त चहे यही तो हेरानी हैं ॥ जबहीं आपको जाना तातु मिथ्या कर माना, फेर चहें खूब खाना जानिये तूफानी हैं । शकल औलियाओंकी काम शैतानोंके हैं, जम्बुककी चाल चलें, सिंह जैसी बानी हैं ॥ ४०९ ॥

एक ब्रह्म मुखसों बनाय कर कहत हैं, अन्तःकरण तो विकारन सोंई भरयो है । जैसे ठग गोबरको कूँपोभर राखत है, सेर पंच घृत लेके ऊपर ज्यों करयो है ॥ जैसे कोई भाँडेमाहीं प्या-

जको छिपाय राखे, चीथरा कपूरको ले मुख बाँधि धरयो है। सुन्दर कहत ऐसे ज्ञानी हैं जगतमाहिं, तिनको तो देखकर मेरो मन डरयो है ॥ ४१० ॥

देहसों ममत्व पुनि गेहसों ममत्व, सुत दारासों ममत्व मन मायामें रहत है । थिरता न लहे जैसे कंदुक चौगानमाहिं,कर्मनके वश मारयो धक्काको वहत है ॥ अन्तःकरण तो सदा जगतसों रच रहयो, मुखसों बनाय बात ब्रह्मकी कहत है । सुंदर याहीते मोहिं अधिक अचंभो आहि, भूमिपर परयो कोऊ चंद्रको गहत है ॥४११ ॥

वचनते आनि मिले वचन विरोध होय, वचनते राग बढ़े वचनते दोषजू । वचनते ज्वाल उठे वचन शीतल होय, वचनते मुदित वचनहीते रोषजू ॥ वचनते प्यारो लगे वचनते दूर भगे, वचनते मर जाय वचनते पोषजू । सुन्दर कहत यह वचनको भेद ऐसो, वचनते बंध होत वचनते मोषजू ॥ ४१२ ॥

एकनके वचन सुनत अति सुख होय, फूलसे झरत हैं अधिक मनभावने । एकनके वचन तो असि मानो, बरसत, श्रवणके सुनत लगत अलखावने ॥ एकनके वचन कटुक कटु विषरूप, करत मरत छेद दुख उपजावने । सुन्दर कहत घटघटमें वचन भेद, उत्तम रु मध्य अरु अधम सुहावने ॥ ४१३ ॥

देख तो विचार कर सुनै तो विचार कर, बोलै तो विचार कर करे तो विचार है । खाय तो विचार कर, पीवै तो विचार कर,सोवै तो विचार कर जागे तो न टार है॥ बैठे तो विचार कर पीवै तो विचार कर, चलै तो विचार कर सोई मति सार है । देय तो विचार कर लेय तो विचार कर, सुंदर विचार कर याही निरधार है ॥ ४१४ ॥

जिन तन मन प्राण दीने सब मेरे हेत, औरह ममत्व बुद्धि

आपनी उठाई है । जागतहू सोवतहू गावत हैं मेरे गुण, करत भजन ध्यान दूसरो न कोई है ॥ तिनके मैं पीछे लाग्यों फिरत हों निशदिन, सुन्दर कहत मेरी उनते बड़ाई है । वे हैं मेरे प्रिय मैं उनके अधीन सदा, सन्तनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाई है ॥

साँचे उपदेश देत भली भली शिख देत, समता सुबुद्धि देत कुमती हरत हैं । मारग दिखाय देत भावहू भगति देत, प्रेमकी प्रतीत देत अभरा भरत हैं ॥ ज्ञान देत ध्यान देत आतम विचार देत, ब्रह्मको बताय देत ब्रह्ममें चरत हैं । सुन्दर कहत जग सन्त कछु लेत नाहीं, सन्त जन निशदिन देवोही करत हैं॥

धूल जैसो धन जाके शूल संसारसुख, भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है । पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सन्मान, बड़ाई बिच्छुन जैसी नागिनसी नारी है ॥ अग्नि जैसो इन्द्रलोक विधिलोक, कीरति कलंक जैसी सिद्धिसी ठगारी है । वासना न कोई वाकी ऐसी मति सदा जाकी, सुन्दर कहत ताहि बन्दना हमारी है ॥ ४१७ ॥

जाहिके विवेक ज्ञान ताहिके कुशल भयो, जाही ओर जाय वाको ताही ओर सुख है । जैसे कोई पायँन पैजारको चढ़ाय लेत, ताको तो न कोऊ काँटे खोवरेको दुख है ॥ भावै कोऊ निन्दा करै भावै तो प्रशंसा करै, वे तो देखे आरसीमें अपनोही मुख है । देहको ब्योहार सब मिथ्या कर जानत है, सुंदर कहत एक आतमाही रुख है ॥ ४१८ ॥

काहूको पूँछत रंक धन कैसे पाइयत, कान देके सुनत श्रवण सोई जानिये । उन कह्यो धन हम देख्यो है अमुक ठौर, मनन करत भयो कब घर आनिये ॥ फेर जब कह्यो धन गाड्यो तेरे

घरमाहिं, खोदन लग्यो है जब निदध्यास ठानिये । धन निकस्यो है जब दारिद गयो है तब, सुंदर साक्षातकार नृपति बखानिये॥

एक तो श्रवणज्ञान पावक ज्यों देखियत, मायाजाल परसत वेगि बुझि जात है । एक है मनन ज्ञान विजली ज्यों घनमध्य, मायाजल बरषत तामें न बुझात है ॥ एक निदध्यास ज्ञान वडवाअनल जैसे, प्रगट समुद्रमाहिं मायाजल खात है । अनुभव साक्षात ज्ञान प्रलयकी अगिनसम, सुंदर कहत द्वैत प्रपंच बिलात है ॥ ४२० ॥

भोजनकी बात सुन मनमें मुदित भयो, मुखमें न परै जौलौं मेलिये न ग्रास है । सकल सामग्री आन पाकको करन लागो, मनन करत कब जेंवों यह आस है ॥ पाक जब भयो तब भोजन करन बैठो, मुखमें मेलत जाय यह निदध्यास है। भोजन पूरण कर तृषित भयो है जब, सुंदर साक्षातकार अनुभव प्रकाश है ॥

जबहीं जिज्ञासा होय चित्त इक ठौर आन, मृग ज्यों सुनत नाद श्रवणसों कहिये । जैसे स्वाँतिबूँदहूको चातक रटत पुनि, ऐसेही मनन करै कब बूँद लहिये ॥ रात्रिको चकोर जैसे चन्द्रमाको धरै ध्यान, ऐसे जान निदध्यास दृढ़ कर गहिये । यही अनुभव यही कहिये साक्षातकार, सुन्दर पारेते गल पानी होय रहिये ॥ ४२२ ॥

गर्वते सुलक्ख जाय सूमताते यश जाय, कुपुत्रते कुल जाय, जोग तो कुसंगते । लाड़ किये पुत्र जाय शोकते शरीर जाय, भूँखते मरजाद जाय बुद्धि जाय भंगते ॥ कपटते मित्र जाय लोभते बड़ाई जाय, माँगहूते मान जाय पाप जाय गंगते । नीतिबिना राज जाय क्रोधते तपस्या जाय, रजपूती जाय जब मुडे जात जंगते ॥ ४२३ ॥

रूठे क्यों न राजा वाते कछु नहीं काज एक, तूही महाराजा और कौनको सराहिये । रूठे क्यों न भाई वाते कछू न वसाई एक, तूही है सहाई और कौन पास जाइये ॥ रूठे शत्रु मित्र उदासीन आठौं याम एक, रावरे चरणनके नेहको निवाहिये । लोक सब झूँठा एक तूही है अनूठा सब, चूमेंगे अँगूठा प्रभु तू न रूठा चाहिये ॥ २२४ ॥

गगनके मंडलमें चंद्रमा मसालची किये, हैं लाख तारे वाके दीपक दरवार हें । ब्रह्माहू वजीर विष्णु कारदार देखियत, शंकर दीवान रु गणेश चोवदार हैं ॥ शीलहूकी लक्ष्मी सो सदा अंग संग रहे, कुवेर भंडारी और इन्द्र जमींदार हें । कहै अवधूत प्यारे समझ विचार देखो,राजन् पति राजा महाराजा करतार है॥

सवैया–जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत, तो नित संत समागम कीजै । अंतर भेट निरन्तर ह्वैकर, लै उनको अपनो मन दीजै ॥ वे मुखद्वार उचार करें, कछु सो अनयास सुधारस पीजै। सुन्दर सूर प्रकाश भयो जब, और अज्ञान सवी तम छीजै२२६

है दिलमें दिलदार सही, अँखियाँ उलटी कर ताहि चितैये । आवमें खाकमें वादमें आतश, जानमें सुंदर जान जनैये ॥ नूरमें नूर है तेजमें तेज है, ज्योतिमें ज्योति मिले मिल जैये । क्या कहिये कहते न वनै, कछु जो कहिये कहतेही लजैये ॥२२७॥

सूरके तेजते सूरज दीसत, चंद्रके तेजते चंद्र उजासी । तारेके तेजते तारेहूँ दीसत, वीज्जुली तेजते वीज चकासी ॥ दीपके तेजते दीपक दीसत, हीरके तेजते हीरोही भासी । तैसेहि सुन्दर आतम जानहु, आपके ज्ञानते आप प्रकासी ॥ २२८ ॥

जग मानवदेह मिले न सदा, नर राम भजो जिहिते सुख पावो । जग जोग वराटकके वदले, न अमोलक लाल अकाज

गँवावो ॥ लरकापन जाठरमें बल छीन, सो यौवनमें दृढ पुण्य कमावो । शुभ सीख इहै जन मान चलो, जिहिते नहिं अंतसमय पछतावो ॥ ४२९ ॥

दीन मलीन दुखी अँगहीन, विहंग परयो छिति छीन दुखारी। राघव दीनदयालु कृपालुको, देख दुखी करुणा भइ भारी ॥ गीधको गोदमें राखि कृपानिधि, नैनसरोजनमें भरि वारी । बारहिं वार सुधारत पंख, जटायुकी धूरि जटानसों झारी ॥४३०॥

पीरोहि कुंडल पीरोहि नूपुर, पीत पीतांबर ओढ़ेओ ठाढ़ो । पीत बनी कटि काछनियाँ, अरु पीरोसो खौर बन्यो चहिं गाढ़ो ॥ पीरोहि मूकुट लालको सोहत, पीरोहि खौर बन्यो पटुकाको । गोविंद यों प्रभु शोभा वखानत, पीरो लकुट्ट लियो हथ गाढ़ो ॥

कारेहि मोहन कारेहि सोहन, चाल कलिंदीजुके तट आयो । काली कलिंदिन कारिहु नागिन, कारोसो नागहु जाय जगायो ॥ कारेको नाथ लिये छिनमें, जब शीशके ऊपर नृत्य करायो । गोविंद यों प्रभु शोभा वखानत, कारो सो नाथके नाथ कहायो ॥

धौरेहि मोहन धौरेहि सोहन, धौरेहि चन्दन खौर विशाला । धौरे कड़े कर हाथ न सोहैं, औ धौरे सोहैं गले फूलन माला ॥ धौरो दधि बेंचनको निकसी, मग रोकत मोहिं सो नंदको लाला। गोविंद यों प्रभु शोभा बखानत, धौरी सोहै गल मोतिन माला॥

लालहिं लालके लालहि लोचन, लालनके मुख लालहि बीरा। लाल वनी कछनी कटि लालके, लालके शीश सु लालहि चीरा ॥ लालहि बाग बने अति सुन्दर, लाल खड़े यमुनाजुके तीरा। गोविंद यों प्रभु शोभा वखानत, लालके कंठ विराजत हीरा॥४३४॥

प्रीतिकि रीति कछू नहिं राखत, जाति न पाँति नहीं कुल गारो । प्रेमके नेम कहूं नहिं दीसत, लाज न कानि लग्यो सब

सारो ॥ लीन भयो हरिसों अभ्यन्तर, आठहु याम रहै मतवारो । सुन्दर कोऊ न जानि सकै, यह गोकुल गाँवको पैंड़ोहि न्यारो ॥ ४३५ ॥

ज्ञान दियो गुरुदेव कृपा करि, दूरि कियो भ्रम खोलि किवारो। और क्रिया कहि को न करै अब चित्त लग्यो परब्रह्म पियारो॥ पाँव विना चलिवो कहि ठाहर, पंगु भयो मन मित्र हमारो । सुन्दर कोऊ न जानि सकै, यह गोकुल गाँवको पैंड़ोहि न्यारो ॥

एक अखंडित ज्यों नभ व्यापक, वाहर भीतर है इकसारो । दृष्टि न मुष्टि न रूप न रेख, न श्वेत न पीत न रक्त न कारो ॥ चकृत होय रहे अनुभव विन, ज्यों लगि नाहिंन ज्ञान उचारो । सुन्दर कोऊ न जानि सकै, यह गोकुल गाँवको पैंडोहि न्यारो ४३७

द्वन्द्व विना विचरैं वसुधा, परि जा घट आतम ज्ञान अपारो। काम न क्रोध न लोभ न मोह, न राग न द्वेष न म्हारो न थारो ॥ योग न भोग न त्याग न संगर, देहदशा न ढक्यो न उघारो । सुंदर कोऊ न जानि सकैं, यह गोकुल गाँवको पैंड़ोहि न्यारो ॥ ४३८ ॥

लक्ष अलक्ष अदक्ष न दक्ष, न पक्ष अपक्ष न तूल न भारो । झूँठ न साँच अवाच न वाच, न कंचन कांचन दीन उदारो ॥ जान अजान न मान अमान, न सान गुमान न जीत न हारो। सुंदर कोऊ न जानि सकै, यह गोकुल गाँवको पैंड़ोहि न्यारो ४३९

नेकहींके विछुरे सवही सुख, साज भये दुखदायक भारे । नैनन नीर झरी वरसैं, तरसैं छतियाँ विन प्राणपियारे॥ आली वियोग व्यथा ढरिवेते, भलो मरिवो मनमान्यो हमारे। एकको दुःख भरे मिटि जात, वियोगमें होत हैं दोऊ दुखारे ॥ ४४० ॥

सूरति तेरी वसै उरमें, अरु तो सुधि जाय नहीं विसराई ।

मो मन मोहन होय रह्यो, नित होत रहै हितकी सरसाई ॥ कागदमाँझ कहाँलौं लिखौं, गुण जात लिखे नहिं तेरी निकाई। तेरे वियोगते तातीहुती, जब पाती पढ़ी तब छाती सिराई ॥४४१॥

कवित्त—फरकन लागी बाँह आँख फरकन लागी, प्यारे मनमोहनको मिलन जनावै हैं। आगी दरकन लागी तन तरकन लागी, बोलि बोलि वायस हियेको हुलसावै हैं ॥ चन्दन समीर चन्द दुख सरसावते हैं, तेवे मेरे मनमाहिं सुख सरसावै हैं। आज मोहिं होत सब सगुन सुहावने हैं, जानति हौं आली वनमाली आज आवै हैं ॥ ४४२ ॥

जाके देह रोग होय औषध विचार करै, ताको तन कंचनहि ख्वा कहा दीजिये। अन्तरपट भयेको खोजिवो अवश्य कह्यो, तेरे नित रहे खोज तासु क़हा लीजिये ॥ रामलाल अमृतके सागरको छोड़ कौन, पोखरन तट जाय खारी जल पीजिये। ऊधो तुम बारबार कहा ध्यान ध्यान कहो, ध्यानसूँ न जाये ताहि ध्यान कहा कीजिये ॥ ४४३ ॥

जगमग तन रंग सोहति अति चारु संग, भूषण मन अंग अंग कुंडल छवि कानमें। जरकसी दुकूल लाल बिरखसी लखाति बाल, झरकसी झुकाति चाल घूमसी सिखानमें ॥ घरी घरी उठे कराहि बावरी वियोग, नाह फैलि अंग दाह कामके कृशानमें। निमेषको बिसारती इतै उतै निहारती, हरी हरी पुकारती हरी हरी लतानमें ॥ ४४४ ॥

सींचि सींचि चन्दन सुगंधनसों अंग ऊधो, फूलनसों साँवरे समारे छवि लटके। कुंज कुंज बेलिनमें नवेली अलबेलिनको, लै लै परताप डोले ओट पीतपटके ॥ तेई गात मेरे आब राखके

चढायवेको, साँवरे पठाई योगपाती निजकटके । ऊधव उपाव अब दूसरो न आनि रह्यो, तजि हैं परान अव कान्ह कान्ह रटके ॥४४५॥

बूड़त समुद्र दुख पोत भये ऊधो तुम, प्रभुको सँदेशो पाय आनँद उलहियो । जायवेको तुमको प्रताप कहो कैसेकै, हमको तुम्हारो दर्श दुर्लभ सुलहियो ॥ चित्तमें अपाने आप आपही विचारि देखौ, देहलौं नातो नेक नेहको निवहियो । ऊधो कृपाकै वहुभाँति आपु पायँन परि, मेरि गुपालजूसे जयगुपाल कहियो ॥

नारंगी अनार अमरूदकी वहारैं छाई, सेव नासपाती फरैं हरित सुडारीमें । गेंदा औ गुलाब गुलजाफरी सुफूली कैसी, अरु गुलदावली लखाति मंजुक्यारीमें ॥ मनहर त्रिविध समीर सुख-दाई वहैं, काको न सुखद होत निशि उजियारीमें । कइयो वार देखी मैं तिहारी फुलवारी इन्दु, एक वार आइयो तू हमारी फुलवारीमें ॥ ४४७ ॥

मानती न मालिन कहेतें क्यों न मेरी वात, काहेते लतान-नकी लौंद झकझोरती । कहै शिरताज फुलवारीकी वहार देखि, करि अनुराग अनमोले सुखरोरती ॥ फूलेरी गुलाव गुलदावदी गहवदार, वेला औ चमेलिनकी वेलिन विथोरती । कारण कहा है इन मालिनको वागवीच, नाहक प्रसून ये अनारनके तोरती ॥४४८॥

एरी हुस्नवारी प्यारी नरगिस चश्मवारी, अवरू कमानवारी वाला क्यों वताती है । जुल्फकत्लकारी रुखसार महतावबारी, रसिकविहारी हाय दिल क्यों सताती है ॥ वाँह गल डारी जियजरन मिटारी, आय दरश दिखारी सुकुमारी क्यों लुभाती है । नजर मिलारी करी क्यारी वेकरारी, अव तेरी इन्तिजारीमें हमारी जान जाती है ॥ ४४९ ॥

घर ना सुहात ना सुहात वन वाहरहू, चन्द ना सुहात चांद-

नीहूँ जोग जोहीसों । साँझ ना सोहात ना सोहात परभात प्यारे, व्यापी यह बात सो सुनाई हम तोहीसों ॥ अपनी व्यथाकी कथा कहाँलौं बखान करौं, और सब होतपै न प्राण जात ओहीसों । उरसों न दाग जात सब सुख भाग जात, जब मन लागि जात काहू निरमोहीसों ॥ ४५० ॥

लोचन चपल चारु मीन मनभाय लसै, आननं अरविन्दनकी शोभा सरसात है । बारहे सिवार काय कसतूरी कर्दमसी, उरज उभय अति चकवा सुहात है ॥ जोबन झलक जल सोहत अधिक तामें, नेक नाभि भौंर लखि हियरा डरात है । गोविंद अनूप ऐसे तियतनतालनमें, जे नर नहात सोइ धन्यही कहात है ॥

कंजनसे आननमें मन्द मुखक्याननमें, नैननकी शासनमें चित्तको चुरागई । मन्दमुख बोलनमें घूँघटके खोलनमें, बेसरके डोलनमें बुद्धिको भ्रमागई ॥ केसरकी खौरनमें हारके हिलोरनमें, भौंहकी मरोरनमें भावको बढ़ागई । गोविंद न जान परी सुन्दरी नवीन एक, हावभाव भेदनते मेरो मन लैगई ॥ ४५२ ॥

जनवरी सबसन फरवरी बातें कहैं, मारचही शोभा अपरैल ठान ठायो है । रंग मई बाम देखि जूनहिंको मोहत हैं, साँचहू जुलाई दृष्टि जापै मनभायो है ॥ सोखत अगस्तसम ज्ञानअंबु तज्ञ पंथ, पहिरे सितम्बराकतूबर सतायो है । धारित नवम्बर उतारि डारे एकै बेर, रातकी सुवेलामें दिसम्बर बनायो है ॥४५३॥

प्रथम समागमके औसर नवेली बाल, सकल कलान करि प्यारेको रिझायो है । देखि चतुराई मन सोच भयो प्रीतमके, लखिके चरित्र मन सम्भ्रम भुलायो है ॥ कालिदास ताहि समय निपट प्रवीन तिया, काजर लै भीतड़ीमें चित्रक बनायो है ।

ब्यात लिखी सिंहनी निकट गजराज लिख्यो, गर्भते निकसि छौना मस्तकपै आयो है ॥ ४५४ ॥

काह कहौं प्यारे कछु कहिवेकी बात नांहीं, बातन बनाइ मन धीर लाइयतु है । आठहु पहर हरि हहरि हियेमें हम, रावरे प्रवीन वेनी गुन गाइयतु है ॥ थाह जो नदी है तामें नावको उपाय कहाँ, अथाह नदीमें पैरपार पाइयतु है । आपनी हमारी यह समझ न देखो बूझि, जहाँ रैन चाहे तहाँ भोर आइयतु है ॥ ४५५ ॥

कारी अँधियारी रैन बिजली चमके ऐन, दादुरके बैन मेघ बरसैं फुहूँफुहूँ । पौन कोर झोर करैं झिल्लिनके शोर घोर, चातक चकोर मोर कूकत कुहूँ कुहूँ ॥ ताही समय सुधि करि छातीसे लगायो प्यारे, आँसू चले प्यारे प्यारे नैनन लुहूँ लुहूँ । मसकि मसकि प्यारे ज्यों ज्यों कुच कसकि जात, त्यों त्यों मुख मोरि मोरि करत उहूँ उहूँ ॥ ४५६ ॥

सवैया–मनरंजन अंजनके तनमें, अंगराग रचें रतिरंगनमें । घरके सिगरे नित काज करैं, गुरुलोगनके सतसंगनमें ॥ कहिये कहि कौनसों कौन सुने, सु परे बने प्रेमप्रसंगनमें । धनि वे धनि हैं तिनके लहने, पहिरे गहने नित अंगनमें ॥ ४५७ ॥

क्यों इन कोमल गोल कपोलन, देखि गुलाबको फूल लजायो । त्यों हरिचन्दजू पंकजके, दलसों सुकुमार सबै अँग भायो ॥ अमृतसे युग ओठ लसैं, नवपल्लव सो कर क्यों है सुहायो । पाहनसो मन होत सबै, अँग कोमल क्यों करतार बनायो ॥४५८॥

नैनन चाय लुभाय सभा, अरु तानके बानसे मारि गिरावैं । केतोंने खा विप जान दई, अरु केतिक योगी वियोगी कहावैं ॥ लाखन मूँड मुड़ाये फिरैं, मन चाहे तो बैठि समाधि जगावैं । नामभी दें बदनाम भी होयँ, जो रूपके खातिर प्राण गँवावैं ॥४५९॥

यौवनरूप अनूप नवीन ये, जो विधि दीन्ह दया करि भारी। तो कोउ सुन्दर छैल प्रवीनसों, प्रीति करै विन प्रेम पसारी ॥ चारिहि द्योसकी चाँदनी है, अपने मनमें यह लेहु विचारी। ऐसो समय अनमोलको पाय, न व्यर्थ वितावहु प्रेमपियारी ॥४६०॥

जाहि निहारत नींद गई, निशिवासर खान औ पान विसारी। बावरेकीसी दशा ह्वै रही, गुन औगुनहूँ नहिं जात बिचारी ॥ तासे इती विनती तुमसे, विषको विष औषधि हो निरधारी। औरहु एक दफे बहुरूप, अनूप दिखाय दे रामदुलारी ॥ ४६१ ॥

जा दिनसे हम प्रीति लगाई है, ता दिनसे कछु मोहिं न भावै। नीकै न लागै हमैं कतहूँ, विन देखे तेरे जिय चैन न आवै ॥ भाषत गंगप्रसाद यही, परमेश्वर नेह कवौं न छुड़ावै। मेरे तो चित्त बसै तुमहीं, अरु दूसरो आजलौं नाहिं सुहावै ॥ ४६२ ॥

एक समय घरसे निकसी, रसमाहिं पगी वृषभानुदुलारी। देखत सुंदर बाग तड़ाग, विलोकि लता अरु मंजुल क्यारी ॥ जात भई वह वा वनमें, जहँ धेनु चराय रहे बनवारी। कृष्ण बिहाल तुरन्त भये, लखि प्यारीकि दृष्टि है कामकटारी ॥ ४६३ ॥

तानि कमानसों भौंह लली, मन मोहत मंद हँसानसु नारी। युगनैनमों अंजन रंजन है, दोऊ मुखकंजपै खंजन भारी ॥ ठाढ़ी अटान छटा न लखै, नभ छायो छपाकरसों छवि सारी। देखिके सीतहु राम कहैं, यह प्यारीकी दृष्टि है कामकटारी ॥ ४६४ ॥

कवित्त—पल्लव रसालके सुहावन नवीन जैसे, ऐसे दृग दोऊ लाल सौरभ पसारी है। भौंहको विलास मानौं सोहत मनोज पास, श्यामता सरोवरमें फूल्यो कंज भारी है ॥ कै धौं पद्मलोचनपै अवली मलिन्दनकी झाकै मकरंद भ्रम याते मत-

वारी है । सीताराम स्वच्छ मुखचंद्रको विलोकि कहै, प्यारीकी कटाक्ष कोर लागत कटारी है ॥ ४६५ ॥

नैनके सैन आन तिरछे करेरे लगैं, आले मतवाले मंत्र मोहनी पसारी है । अंजन अशोक मनरंजन हैं युग्मभरे, कामकी छटान छाये तेगता वधारी है ॥ ठाढ़ी सुकुमारी स्वच्छ सारी शुभ अंगमाहिं, सीताराम सौंह नाहिं भूलत हियारी है । मेलत है पीर पुंज वीरसों करे जे दृग, प्यारीकी कटाक्ष कोर लागत कटारी है ॥

रेलके कवित्त ।

रथकी सवारी गजरथकी सवारी, और ताँगेकी सवारी देखी गाडीतक मद्द है । पालकी सवारी और नालकी सवारी, सुखपालकी सवारी देखी पीनसमें गद्द है ॥ वग्घीकी सवारी सेजगाडीकी सवारी, वेलगाडीकी सवारी टमटमतक हद्द है । किस्तीकी सवारी धुवाँ कसकी सवारी, भाई रेलकी सवारीसे सवारी सब रद्द है ॥ ४६७ ॥

हाथी हैं न घोड़ा हैं न वैल गैल जोडा है, न हाँकिवेको कोड़ा हैं फकत एक कल है । चारि चारि अंगुलके लोहेकी पटरींपै, चारि चारि अंगुलके पहिया प्रवल हे ॥ सीधी सीधी गली जात तनिक न विचलि जात, पोनहूंसों वेगि जात अजब अकल हे । वेगमें प्रवल है सवारीकी सकल है, विमानकी नकल हे सो पालकी सकल है ॥ ४६८ ॥

फफकत फहरात ओ उड़ात धुन्धकार, करि वाज ऐसी धाव प्रचण्डकी प्रमान है । ऐशकी सवारी महसूल आध आना कोश सतनके करत काम माधव कवि वखान है ॥ देखो तो अजूव चीनवालेकी मॅसूवा, पॅचके इशारेसे चलत प्राणके समान है

धावै ज्यों शशान बाज दूसरी न आन यार, रेल मेरी जान तो कुबेरको विमान है ॥ ४६९ ॥

भकभक भभक भंभक ज्वाला झक झक झक, धकधक धुवाँ होत वमकलदानमें । आसमान छाये जात हवा छितराये जात, सन्मुख हो ताके वाके परे अँखियानमें ॥ वचन भनत इक दराशि तमाशे देखि, खुशी होत जात अपने मुसाफिरानमें । तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ होत जात, बात सुनि परत न दूसरेकि कानमें॥

थरथर काँपत धराधर धरणि अति, हरवर नरवर करत परा-मने । भर भर भर भहरात त्यों भुवनमाहिं, हर हर हर हहरात पौन सामने ॥ भनत गुविन्द धक धक धधकत धुनि, लूमसी लखात आगि धूम धार धामने । हंका दै सुडंका दै निशंका वीर बंका रेल, जात हनुमान मानों फेर लंका त्यावने ॥ ४७१ ॥

पौनगति जाति कवौं रथगति जाति, कवौं वाजिगति जाति कवौं मृगगति जाति है । ढोलसो सुनाति कवौं तासासो सुनाति कवौं, दुन्दुभीसो धुनि अरगन सो सुनाति है ॥ भनत गुविन्द करि वृन्दसों लखाति घन, वृन्दसो लखाति घर वृन्दसो लखाति है। येती छबि छावति धरामें रेल धाइ रही, धन्य अँगरेज बाद-शाह करामाति है ॥ ४७२ ॥

एक श्रेणीके कवित्त ।

बाजी उठि धाई बाजी देखिबेको दौड़ी आई, बाजी मुरझाई सुनि तान गिरधरकी । बाजी न धरत धीर बाजी न सँभारैं चीर, बाजिनकी विरह अनल अति भरकी ॥ बाजी हँसि बोलैं बाजी करत कलोलैं बाजी, संग लागी डोलैं सुधि रही नहिं घरकी । बाजी कहैं कहाँ बाजी बाजी कहैं कहूँ बाजी, बाजी ब्रज बाँसुरी तो साँवरे सुघरकी ॥ ४७३ ॥

बाँधे द्वारका करी चतुर चित्त काकरी, सो उमिरि वृथा करी न रामकी कथा करी। पापको पिनाकरी न जानै नाक नाकरी, सो हारिलकी लाकरी निरन्तरही ना करी॥ ऐसी सूमता करी न कोऊ समता करी, सो वेनी कविता करी प्रकाशता सता करी। देवअरचा करी न ज्ञानचरचा करी, न दीनपै दया करी न बापकी गया करी॥ ४७४॥

कुन्दकी कलीसी दन्तपाँति कौमुदीसी, दीसी बीच बीच मीसी रेख अमीसी गरकि जात। वीरी त्यों रचीसी विरचीसी लखें तिरछीसी, रीसी अँखियाँ वैस फरीसी फरकि जात॥ रसकी नदीसी दयानिधिकी नदीसी, थाह चकित अरीसी रति डारीसी सरकि जात। फन्दमें फँसीसी भरि भुजमें कसीसी, जाकी सीसी करिवेमें सुधा सीसीसी ढरकि जात॥ ४७५॥

फूलन फरशफूल फबे फूल फूल दिखें, फूलनके खंभा फूल झालर सुहात हैं। फूलनके छत्तर चमरहू सुफूलनके, सुखि सखि फूलनको बेजन डुलात हैं॥ फूलनको मन्दिर रच्यो है शिवनाथ शुभ, भूल धनु देख फूल फूले न समात हैं। फूल कनफूल अँग फूलनको भूषण है, फूलसेजपर दोऊ सुख सरसात है॥ ४७६॥

सवैया—वसुधाधरमें वसुधाधरमें, औ सुधाधरमें त्यों सुधामें लसै। अलिवृन्दनमें अलिवृन्दनमें, अलिवृन्दनमें अतिशय सरसे॥ हियहारनमें हरहारनमें, हिमहारनमें रघुराज लसे। व्रज वारन वारन वारन वारन, वारन चार वसंत बसे॥ ४७७॥

वे घिरकी वतियाँ कहिके, थिरजे थिरकी कहिये घिरकी है। वे खिरकी खिरकीनि बतावत, के खिरकी खिरकी खिरकी है॥ वे सरदार सुनै सवरी, नवरी नवरी नवरी टरकी है। वे घरकी न विचारत ये, परकी परकी परकी परकी है॥ ४७८॥

कवित्त—रूसनमें दूसनमें लाल मन मूसनमें, मैनकी मसूस-नमें धीर कैसे रहै री। कोकिलकी कूकनिमें पौन मन्द झूकनमें, औसरकी चूकनमें फेरि पछितैहै री॥ वेलिन नवेलिनमें संगकी सहेलिनमें, खेलनमें केलनमें मनसा समैहै री। वृन्दावन कुंजनमें फूलनके पुंजनमें, भौंरनकी गुंजनमें भूलि मान जैहै री॥४७९॥

घहर घहर घहरात चहुँ घाते घेरि, सघन घन उमड़ि घुमड़ि बरसत है। छहर छहर छहरात छितिमंडलपै, छूटि छूटि बुन्द मानो छर्राको छरत है॥ भहर भहर भहरात भौनभाँति भारी, भीति भारी भारतीके भौनहूँ भरत है। थहर थहर थहरात मेरो गातआली, प्यारो विजयानँद विदेशमें वसत है॥ ४८०॥

सुनत झमाके त्यों छमाके भूरि भूषणके, सागर छमाके सिद्धि चौंकत छमाके हैं। जातही छिपाके उठि दौरत छिपाके, अँग आवत छिपाके जे न छाके छत छाके हैं॥ कायल क्षुधाके वसु-धाके कीरधाके ओंठ, चाखत सुधाके ये मजाके विम्ब पाके हैं। नन्दराम ताके दृग ताके हैं मृगाके कहाँ, काके समताके जो रमाके उपमाके हैं॥ ४८१॥

अम्बुज तटान फैलि फूटत फटान जैसे, धावत नटान छबि छाई है छटानकी। चातक रटान नदी नद उपटान, जल जंगल बटान महा मारुत कटानकी॥ भीगत पटान बुन्द चुवत लटा-नमुखी, तन लपटान मानों मदन घटानकी। पीवके तटान ओढ़े कुसुमी पटान अरु, ठाढ़ी है अटान लहैं लेत है घटानकी॥४८२॥

जाके चखबाँके ताके छाके मुनिदेवसम, काके दुनियाके बीच बाँके उपमाके हैं। लाज वरपाके कै घटाके मघवाके ताके, पूरण कलाके कहि आनँद पताके हैं॥ थाके कंजनाके कै चलाके

देखि लज्जितसे, शावक मृगाके विधिनाके सुषमाके हैं । कुंड हैं सुधाके वसुधाके सुख वाके वीच, विन सुरमाके नैन श्याम सुरमाके हैं ॥ ४८३ ॥

काम वनितासी चारु चंपकलतासी, स्वच्छ पन्नगसुतासी कै तो ऐसी मैनताकी है । गोविन्द सुरीसी मंजु देखी आसुरीसी, सुधासिंधु निसरीसी किन्नरीसी प्रभाकी है ॥ कोऊ मैनकासी कोऊ कहै इन्दिरासी, कोऊ इन्दुकी कलासी कहै ऐसी मति जाकी है । रूप मद छाकी चली इते उत ताकी, ढूँढि वाकी समताकी कविताकी मति थाकी है ॥ ४८४ ॥

फूलनके अनवट औ फूलके विछिया, औ फूलनकी पायजेव वाजत गति न्यारी है । फूलनको लहँगा औ संजाव लागी फूलनकी, फूलनकी अँगियापर फूली वेलि कारी है ॥ फूलनकी सारीपै सोहत अति किनारी फूल, फूलनको हरवाको गरे बीच डारी है । कहत कवि केशवदास सुनु री सखी आज, राधाजीके वदनपै फूली फुलवारी है ॥ ४८५ ॥

मतलवके राजा औ परजा सव मतलवके, मतलवकी नगरी औ मतलव सरदार है । मतलवकी पूजा औ सेवा सव मतलवकी, मतलवकी वन्दगी औ मतलव करतार है ॥ मतलवके माता औ पिता सव मतलवके, मतलवके भाई औ मतलव घर नार है । कहत हौं वारवार सुनो मेरी एक वार, कलियुगके मंत्री सव मतलवके यार हैं ॥ ४८६ ॥

चाँदनीके आँगन विछौना नीके चाँदनीके, चाँदनीसों देखि अँखियान सुख लह्यो है । चाँदनीसों चीर चारु चाँदनीके आभूषण, चम्पकके गातन वखानो जाते कह्यो है ॥ हटी आसपास वैठीं सुघर सुजान सखी, जिन्हें देखि रतिको गुमान जात वह्यो

है । राधे मुख चन्दकी निकाई व्रजचन्द आज, अवनी अंकाशलौं प्रकाश फैलि रह्यो है ॥ ४८७ ॥

जाकी खूब खूबी खूब खूबनमें खूबी खूब, ताकी खूब खूबी खूब खूबी अवगाहना । जाकी वदजाती वदजाती यहाँ पंचनमें, ताकी वदजाती वदजाती ह्वाँ उराहना ॥ ग्वाल कवि येही परसिद्ध सिद्ध रहैं पर, सिद्ध वहै जाकी यहाँ वहाँकी सराहना । जाकी यहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाहना है, जाकी यहाँ चाह ना है, ताकी वहाँ चाह ना ॥ ४८८ ॥

बाँकी चारु चन्द्रिका विराजै भाल बाँकी खौरि, बाँकी भौंह चंचल चितौन चख बाँकी है । बाँकी नकबेसरि मधुर मुसक्यानि बाँकी, कहै हनुमान बाँकी अधर ललाकी है ॥ मुखशशि भूषण शृंगार चन्द्रकला कीन्हे, बाँकी परयंक बैठी मूरि झरनाकी है । झुकि झुकि झूमि झूमि झाँकी करैं देववधू, कहैं अनुपम शिरीराधिकाकी झाँकी है ॥ ४८९ ॥

श्याम घनघोर श्याम सदनमें मोर श्याम, चली श्याम ओर श्याम वसन बनायके । द्विज बलदेव कहे कारी निशि कारी दिशि, कारी कंचुकीको कसि कारे कंजलायके ॥ कामदसे कारे केश कचरि फणेश कारे, कारी हितकारी वै कलिन्दी तट आयके । तन कृष्ण मन कृष्ण धन कृष्ण कृष्ण कृष्ण, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण रट लायके ॥ ४९० ॥

श्याम द्रुम श्याम तनु श्याम निशि श्याम वन, श्याम नभ श्याम श्याम श्याम घनश्याम हैं । श्याम नैनी श्याम बैनी गूँदी श्याम माणिकसों, दीन्हों श्याम खौर करै चली श्याम काम हैं ॥ मंसाराम श्याम चोली भुज निकसी है बाम, धरे श्याम चीर

धाई भौंर भीर श्याम हैं । श्याम कुंजधाम सराजाम श्याम के कै गईं, श्यामा श्याम जहाँ श्याम जहाँ श्यामाश्याम हैं ॥ ४९१ ॥

कारी कारी रैनि तैसी कारी कारी बादरीमें, कारी कारी सारी कारी कारी कचवेली त्यों । कारे कारे काजरसों कारे करि डारे नैन, कारी कारी कंचुकी उरोजनपै मेली त्यों ॥ कहै नन्दराम कारो कारो अंगराग अंग, कारी कारी बाल यानि-कारीपै पछेली त्यों । कारी कारी कुंजवै तमालतरु कारे कारे, कारे कारे कान्हरपै जात है अकेली त्यों ॥ ४९२ ॥

सवैया—साँवरी सारी सखीसँग साँवरी, साँवरे धाहि विभूषण ध्वैके । त्यों पदमाकर साँवरेई, अँगरागिन आँगी रची कुच ढैके ॥ साँवरी रैनिमें साँवरीपै, घहरैं घनघोर घटा छिति छैके । साँवरी पाँवरीकी देखु ही वलि वलि, साँवरीपै चली साँवरी ह्वैके ॥ ४९३ ॥

कवित्त—लाल लाल अम्बर अनोखे नैन लाल लाल, लाल लाल अधर ललाई है दशनमें । लाल लाल रेशमके फूलरा सुकेशनमें, छायरहे छातीपर छाजत कुचनमें ॥ लाल लाल करण विराजें कंज लाल लाल, लाल लाल चरण चमक मुक्तनमें । कहै नन्दराम वामरूपकी रसाला आला, हेम कैसी माला व्रज-वाला चली वनमें ॥ ४९४ ॥

नैन लाल बैन लाल अधर औ बीरी लाल, लाल लाल दशन सनेहकी लगनमें । नीर लाल पाग लाल जरीको इजार लाल, कलँगी शिरपेंच लाल माणिक नगनमें ॥ सेज लाल कुंज लाल छत्र चौर व्यंज लाल, सुषमा प्रताप लाल बसी है दृगनमें । वाली औ बुलाक लाल केसरिकी खोर लाल, लाल लाल मेंदही रची लालके पगनमें ॥ ४९५ ॥

हरी वेलि हरी भूमि हरे द्रुम रहे झूमि, हरी हरी कुंज हरी बागन सघनमें। हरी हरी बूँद हरे वादर वरषापै हरे, हरी हरी यमुना लहराय रही तनमें ॥ हरे छत्र हरे चौर हरी हरी सखियाँ सब, हरी हरी झलकें प्रताप हरे मनमें। हरे हरे फूलके शृंगार किये प्यारी पिय, झूलत हिंडोले हरे हरे हरे वनमें ॥ ४९६ ॥

पीले पीले गोलन कपोलन विराजि रहे, पीले पीले कुंडल दुचन्दद्युति दरसै। पीले पीले हार उर गेंदा गुलदावदीके, पीले पीले कुसुम सुकेश छवि सरसै ॥ पीले पीले केशरिके अंगराग अंगनमें, पीले पीले पौनते परागपुंज परसै। नन्दराम पीले पीले किंशुक झरत जात, मानो प्यारी अंगनते पीलो रंग वरसै॥४९७॥

षट्ऋतुके कवित्त।

तत्रादौ वसन्तऋतु वर्णन—सवैया।

सखि आयो वसन्त ऋतूनको कन्त, चहूँदिशि फूलि रही सरसों। वर शीतल मन्द सुगंध समीर, सतावनहार भयो गरसों ॥ अव सुन्दर साँवरो नन्दकिशोर कहै हरिचंद गयो घरसों। परसोंको विताय दियो वरसों, तरसों कव पायँ पिया परसों ॥ ४९८ ॥

आयो वसन्त दहन्त सखी, घर आये न कन्त न पाये सँदेशन। शंभु कहैं पथिकाये सबै, अरु कोऊ विदेश रहे न विदेशन ॥ चन्द्रमुखी दृगते अँसुवा, ढुरि आनि पड़े कुच याही अँदेशन। मानो मयंक सरोजनमें, मुकताहल लै लै चढ़ावै महेशन ॥ ४९९ ॥

कवित्त—कलित कमंडल कमल कलिकाके कीर, किंशुक कुसुमवर अम्बर सुहायो है। ठौर ठौर भौंरनकी श्रेणी जयमाल मौर, सजे हैं रसाल जटाजूटसों बढ़ायो है॥ शिखिनके गोत कीर कोकिल कपोत संग; पढ़े है उमंग चहूँ ओर शोर छायो है।

कन्त वनमालीको पठायो लालीसों लसन्त, आलीरी वसन्त धनि सन्त बनि आयो है ॥ ५०० ॥

तालनपै तालपै तमालनपै आलनपै, लाल माल बालपै रसाल सरसो परै । पढ़ै कवि रामचन्द्र कंद कंद वंदनपै, चन्दनपै चन्दपै मलिन्द दरशो परै ॥ केकी कल केसर करंज केतकीपै कंज, कारकूल कोकिल कदम परसो परै। रंग रंग रागनपै संगही परागनपै, वृन्दावन बागनपै वसन्त वरसो परै ॥ ५०१ ॥

ग्रीष्मऋतुके कवित्त ।

कवित्त–ग्रीषम प्रचंड घाम चण्डकर मंडलते, उमड्यो है देव भूमिमण्डल अखण्ड धार । भौनते निकुंज भौन लहलही डारन है, दुलही सिधारी उलही ज्यों लहलही डार ॥ नूतन महल नूतनपल्लवन छ्वै छ्वै सेद, लवनि सुखावत पवन उपवन सार । तनक तनक मणि कनक नूपुर पाय, आय गई झनक झनक झनकाये यार ॥ ५०२ ॥

जीवनको त्रासकर ज्वालाको प्रकाशकर, भोरहीते भासकर आसमान छायो हैं । धमकाधमक धूप सूखत तलाव कूप, पौनको न गौन भौन आगीमें तचायो है ॥ तकि थकि रहे जग सकल विहाल हाल, ग्रीषम अचर चर खचर सतायो है । मेरे जान काहू वृषभानु जगमोचनको तीसरो त्रिलोचनको लोचन खोलायो है ॥ ५०३ ॥

चंडकर झारन झकोरत सरोप पौन, तोरत तमालगन मन्ददिन भारोसो । धर्षके धरणि गिरि तमकै प्रताप जाके, देखत मजेजरेज जगत निदारोसो ॥ तरु क्षीण क्षायासर सूखत समुद्र वन, करण विचारि देखो आतप अँगारोसो । छावत गगन धूर धावत धघात आवे, चाप चढ़ो ग्रीषम गयन्द मतवारोसो ॥५०४॥

सवैया–ग्रीषममें तपै भीषम भानु, गई वन कुंज सखीनके भूलसों। घामते कामलता मुरझानी, वयार करै घनश्याम दुकूलसों॥ कम्पति औ प्रगटै परस्वेद, उरोजनदत्तजू ठीढ़ीके मूलसों। है अरविन्द कलीनपै मानों, झरै मकरंद गुलावके फूलसों॥५०५॥

वर्षाऋतुके कवित्त।

कवित्त–आई ऋतु पावस असाढ़ धराधर वाढ़ि, ललित कदम्बन लतान ललिताई है। कहत नारायण जोर दाहनदरप जैसी, तैसि ये तड़प तडिताकी अति छाई है॥ छोड़ै कौन मानरतिको वगोड़े कौन आली, उनई घटाकी छिति छविं अति छाई है। मेघनकी झुकन झकोरन प्रभंजनकी झिंल्लिनकी झनक झुलानकी अवाई है॥ ५०६॥

कंपू वन वागन कदम्ब कपतान खड़े, सूबेदार साहव समीर सरसायो है। कहै कवि प्रेमसो तिलंगी भीर भृंगनकी, मेजर तमूरची मयूर गुण गायो है॥ काहट करै है घरराहट अटाननको, येही अरराहट अरावनको छायो है। मानमुखभृंगी सफ़ज़ंगी ये निसंगी लिये, रंगी ऋतु पावस फिरंगी बनि आयो है॥

वाटिका विहंगनपै वारिगा तरंगनपै, वायुवेग गंगनपै वसुधा वगार है। वाँकी बेणु ताननपै वँगले विताननपै, वेश औध पाननपै वीथिन वजार है। वृन्दावन वेलिनपै वनिता नवेलिनपै, व्रजचन्द केलिनपै वंशीबट मार है। वारिके कनाकनपै वहलन वाँकनपै, विज्जुली वलाकनपै वर्षा वहार है॥५०८॥

सवैया–धनि वै जिन पावसकी ऋतुमें, नित प्रीतिमें प्रीति सँजोवती हैं। धनि वै जिन कारी घटामें अटा, विच विज्जुछटा छवि छोवती हैं॥ धनि वै जिन रामचरित्र हिये, हिलि हौसन

हर्षित होवती हैं । धनि वै धनि पावसकी रतियाँ, पतिकी छतियाँ लगि सोवती हैं ॥ ५०९ ॥

शरदऋतुके कवित्त ।

कवित्त–फूले आसपास कास विमल अकाश भयो, रही न निशानी कहूँ महिमें गरदकी । गुंजत कमलदलऊपर मधुप मैन, छापसी दिखाई आनि विरह फरदकी ॥ श्रीपति रसिकलाल आली वनमाली विन, कछु न उपाय मेरे दिलके दरदकी । हर-दसमान तन जरद भयो है अव, गरद करत मोहिं चाँदनी शरदकी॥

चन्द्रमा प्रकासनमें चन्द्रमुखी हासनमें, अवनि अकासनमें कासनमें छाई है । नन्दराम तालनमें इन्दीवनमालनमें, चंचरीक जालनमें अधिक अमाई है ॥ मैत्रकाकी डारिनमें मालती किया-रिनमें, फूली फुलवारिनमें सौगुणी सोहाई है । कामकेसी खेति-नमें वालुका समेतिनमें, सूरसुता रेतिनमें शरदसमाई है ॥ ५११ ॥

ह्वैरही तयारी महारानी रासमंडलकी, मल्लिका व मालती सो तहाँ अमित अगार हैं । कहैं नन्दराम गई सारी सेतसारी साजि, गोपकी कुमारी हिये हीरनके हार हैं ॥ षोडश कलासों आजु उदित कलाधर है, चांदनीके भारनसों छोड़े अभिसार हैं। सेत चाँदनीमें सेत चाँदनी चँदोवा तने, मानों क्षीरसिन्धु परे पाराके पहार हैं ॥ ५१२ ॥

षोडश हजार वाल षोडश शृंगार साजि, षोडश वरष वैस मुदित विहार है । वाहुनसों वाहु जोरि मोरि मोरि अंगनसों, कीन्हो महामंडल अखंडल अपार है ॥ कहे नन्दराम तैसे तार औ सितार मिलि, चूरी खनकार स्वर पंचम उचार है । भूतल दिशान विदिशान आसमानहूलों, छमछम छाई घुँघुरूकी झन-कार है ॥ ५१३ ॥

हेमन्तऋतुके कवित्त।

कवित्त—आयो है हेमन्त जोर जाड़ेके प्रसंगनसों, रेशमके झंगनमें अंगन दुराये देत। कहैं नारायण त्यों हमामहू न काम सरै, धाम धाम आला पौनपाला कोउसाये देत॥ तू लपेट पीठिन अँगीठिनमें दीठि लागी, तरुणी विहीन तनकम्प सरसाये देत। दोगुनो कहो तो चित चौगुनो चुरात हेरि, नौगुनो न सौगुनो समीर सरसाये देत॥ ५१४॥

आसव निराला भल भौनाकि निकाला देत, प्यालापर प्याला तौहूँ शीत सर पेटें लेत। कहत नारायण वैरे दीपनकी माला लगे, पेचिया विशाला धूम धाला अरपेटे लेत॥ दोहरे दुशाला ऊनशाला छौनशाला पट्ट,शाला कीटशाला छीटशाला गरपेटे लेत। बन्द किये ताला तोपै तोलके मशाला उर, लागै वेश-वाला तौनपाला झरपेटे लेत॥ ५१५॥

सवैया—नवल निकुंज बनो रसपुंज, चहूँदिशि हेम वितान है तानो। आछे परे परदा मख तूलके, तूलको चारु बिछायो बि-छानो॥ केलि करैं गिरधारनजू, सँग लै तियको मध आतश-खानो। पावकहीकी शिखानके संग, अनंगहि पावक पूजत मानो॥ ५१६॥

सेज सजाई रजाई समेत, जहाँ तहँ आई प्रिया जो सुअन्तकी। गाढ़ सुरा है तुरन्त अँची, तब कीनी शुरू कछु वात इकन्तकी॥ त्यों हरितोपजूसो हँसिके, रसकै चंसकै सिसकै छबिवन्तकी। हूलै हिये झुक झूलै सुमूरति, भूलै नहीं हमैं केलि हिमन्तकी॥५१७॥

शिशिरऋतुके कवित्त।

कवित्त—अशनमें आसनमें अमल अवासनमें, साँसनमें

कछुक हुताशनमें आइगो । फूलनमें तूलनमें मंजुमख तूलनमें, दोहरे दुकूलनमें कूलन अघाइगो ॥ सेजनमें तीखे सुरतेजन उताजनमें, मदनमजेजन करेजन कँपाइगो । नीरनमें त्योंही जग-मोहन समीरनमें, जहाँ जहाँ देखो तहाँ शिशिर समाइगो ॥५१८॥

कोप काश्मीरते चल्यो है दल साजि वीर, धीर ना धरत गल गाजिबेको भीम है । सुन्न होत साँझैते बजत दाँत आधीरात, तीसरे पहरमें दहल दे असीम है ॥ कहै कवि गंग चौथे पहर सतावै आनि, निपट निगोरो म्वहिं जानिके यतीम है । बाढ़ी शीत शंका काँपे उर है अतंका लघु, शंकाके लगेते होत लंकाकी मुहीम है ॥ ५१९ ॥

झर झर झाँपै बड़े दर दर ढाँपै तऊ, थर थर काँपै मुख बाजत बतीसी जात । फेर पशमीननके चौहरे गलीचा तापै, सेज मखमली बिछी सोऊ सरदीसी जात ॥ ग्वाल कवि तैसे मृगमदसों धुकाये भौन, ओढ़ि ओढ़ि छार भार आगहू छपीसी जात । छाको सुरासीसी तौलौं सीसी ना मिटैगी जौलौं, कुच उकसीसी छाती छातीसों न मीसी जात ॥ ५२० ॥

चिड़िया चुहुचुहानी रजनी बिहानी जानी, प्रगटी प्रभात बानी गोपिनके गीतमें । कालिदास औचकसी सेजते उतरि प्यारी, अनल लगाई चली चितै नवनीतमें । गात अँगराग अलसात अलबेली भाँत, भाव तो तजो न जात शिशिरके शीतमें । फेर परयंकपर ओटभर ओढ़ि पट, पीतमें लपटि लप-टाय रही पीतमें ॥ ५२१ ॥

दोहरे शब्दोंके कवित्त ।

कवित्त—छूटी शिवकेशते प्रचंड तेजधारा धसी, काटत अघ-ओघनके पातक हिते हिते । कहैं प्राणनाथ गंग तेरीही तरंग

देखि, गये स्वर्गलोक सब पातक विते विते ॥ सुरसरि महरानीकी महिमा बखानै कौन, वेद औ पुराण यश गावत निते निते। यम आगे पाप रोवैं पाप आगे यम रोवैं, चित्रगुप्त आप रोवैं कागज चिते चिते ॥ ५२२ ॥

कियो जब क्रोध मातु चढ़िउ है सिंहमाहिं, असुरन फारयो हिय जिय होय धकधक। खैंचिके कृपाण हस्त लीन्हो जब मातु काली, मारयो भट योधनको पेट फारयो भकभक ॥ लीये खून खप्पर है बिन्दु नाहीं जाय पावै, पियै मातु कालिका औ युद्ध करै जकजक । रुंड अरु मुंड मरे लोटनी पसारे भूमि, कहै रामलाल काली खून पिये चकचक ॥ ५२३ ॥

न्यारी होहु नीरते तो देहिं चोर ऐसी सुनि, न्यारी भई नीरहूते तीरमें कढ़े कढ़े। कहैं गिरिधारी देत कस न वसन श्याम, रसना पिरानी हा हा विनती पढ़े पढ़े ॥ मीत जो महीके वीच नीचे करि पावती, तौ कौतुक दिखावती विनोदन बढ़े चढ़े। छीनि लेती अम्बर पीताम्बर समेत अब, कहौ कान्ह बातैं जू कदम्बपै चढ़े चढ़े ॥ ५२४ ॥

जोई जोई देखै कछु सोई सोई मन आय, जोई जोई सुने सोई मनहीको भ्रम है। जोई जोई सूँघै जोई खाय जो सपर्श होय, जोई जोई करै सोई मनहीको कर्म है ॥ जोई जोई गृह जोई सोई सोई त्यागी सोई, सोई अनुरागी सोई मनहीको श्रम है। जोई जोई कहै सोई सुन्दर सकल मन, जोई जोई कलमें सोई मनहीको धर्म है॥ ५२५ ॥

उमड़ि घुमड़ि घन आवत अटान चोट, छनधन ज्योति छटा छटकि छटकि जाति। शोर करैं चातक चकोर पिक चहुँ ओर, मोर ग्रीव मोरि मोरि मटकि मटकि जाति ॥ सावनलौं आवन सुनो

है घनश्यामजूको, आँगनलों आय पाये पटकि पटकि जाति। हिये विरहानलकी तपनि अपार उर, हार गजमोतिनको चटकि चटकि जाति ॥ ५२६ ॥

जोरि जोरि जोरि दृग मोरि मोरि मोरि मुख, चोरि चोरि चोरि चित चपनि चितै गई । झुकि झुकि झांकनि झरोखा झाँकि झाँकि जात, ताकि ताकि तीछनसे तीरतन दै गई ॥ सुमति प्रवीण मुखचन्दसों उदोत होत, मृदु मुसक्यानिमें चकोर चित्तकै गई । लुकि लुकि लोचन सकोचनसों हेरि हेरि, लगीसी लगायके लपेटि मन लैगई ॥ ५२७ ॥

व्रजमें वसन्त राग वागमें वसन्त वन, वेलिन वसंत सरसंत आम वौरमें । भनत दिवाकर समीर नीर तीर तीर, वनिता वसन्तकर दीन्हे और तौरमें ॥ ठौर ठौर कोकिलको वोल अनमोल भयो, वगरो वसन्त है मलिन्दनके झौरमें । और और लौर लौर घरघर जहँ तहँ, कियो है वसन्त सलसन्त सब दौरमें ॥ ५२८ ॥

लाल वनमाल लाल वेंदी भाल लाल लाल, योवनकी ज्योति औ कपोल लाल लाल हैं । अंग लाल रंग लाल संगकी सहेली लाल, लाल पान वीरी मुख अधर लाल लाल हैं ॥ लाल लाल चन्द्र चाँदनी प्रकाश लाल लाल, लसें लाल संग ग्वाल वाल लाल लाल हैं । लाल लाल रास रच्यो वृन्दावन कुंज लाल, एते सब लालमें गोपाललाल लाल हैं ॥ ५२९ ॥

नैननकी कोरसों मरोरि तन तोरि तोरि, जोरि जोरि नेह प्रेम कोर कोर वैगई । नासिका सिकोरि रस तिनकासों वोरि कर, लटकन लटक चटाक चोट कैगई ॥ कहत प्रताप रागरंगकी तरंगनसों, जंगन वजायके अनंग अंग देगई । कटि मटकाय दे दे तालै औ घताय नथ, झूमि झूमि झुमका झिकोरि मन लेगई ॥

जूझो मेघनाद नारि आरतको नाद करि, शोचति विषादसों विनोदन विते विते। कहैं नन्दराम दिगपाल जीति बाहुबल, प्रबल प्रबल वीर विक्रम रिते रिते॥ येहो प्राणनाथ मोहिं क्यों न साथ आज्ञु, करिके अनाथ गये लक्ष्मणे जिते जिते। नीरभरे नैना वात काहूकी सुनै ना अति, रोवति सुनैना वाँह नाहकी चिते चिते॥ ५३१॥

सवैया–हरि हेरि हमारे हिये विषबीजन, वैगयो वैगयो वैगयो री। ठनि ठौर कुठौर सनेहकी ठोकर, दै गयो देगयो दै गयो री॥ नँदरामज्ञु त्यों विरहानलते, तन तैगयो तैगयो तैगयो री। चित मेरो चुरायके चोर अरी, मन लैगयो लैगयो लैगयो री॥

तुम चाहो सो कोऊ कहो हमको, नँदवारेके संग ठई सो ठई। तुमहीं कुलबीनै प्रवीनै सबै, हमरी कुल छाँडि गई सो गई। रसखानि ये प्रीतिकी रीति नई, सो कलंककी मोटैं लई सो लई। यहि गाँवके वासी हँसौ सो हँसौ, हम श्यामकी दासी भई सो भई॥ ५३२॥

सिंहावलोकन छन्द–सवैया।

साँवरी मूरति मोहि लियो, मन गेह सुहात सोहात न गाँवरी। गाँवरी कैंधों न कुंजनमें, हरि हाय किते अब ढूँढन जाँवरी॥ जाँवरी तो कुलकानि मिटै, सब लोग लोगाई धरैं मिलि नाँवरी। नाँवरी तो अपनो करि ले, मोहिं आनि मिलाय दे मूरति साँवरी॥ ५३४॥

बालरी आई लिये रँग केसरि, खेलत मोहनके सँग फागरी। फागरी खूब मची ब्रजमें, अवलोकि वसन्त सोहावनो लागरी॥ लागरी नेह नयो हरिसों, निरखैं निज पूरवको कृत भागरी। भागरी लोनी न कोऊ लखै, अवलोकि रहीं नँदनन्दको बालरी॥

आवत गाढ़ असाढ़के बादर, मो तनुमें अति आगि लगावत । गावत चाव चढ़े पपिहा, जिन मोसों अनंगसों वैर बढ़ावत ॥ धावत वारि भरे वदरा, कवि श्रीपतिजू हियरा डरपावत । पावत मोहिं न जीवत प्रीतम, जो नहिं पावसमें घर आवत ॥ ५३६ ॥

कान्हकी बाँसुरी ऐसी बजी, मन मेरो हरो सुधि ना रही प्रानकी । प्रानकी कौन गुमान करै, अनुमान विचार कियो सुर तानकी ॥ तानकी तेग लगी जियमें, हियमें अति शोच करै वृष-भानकी । भानकी भौनको भूली फिरै, जबतै परी कानमें बाँसुरी कान्हकी ॥ ५३७ ॥

धावन भेज सखी वहि देश, बसै ज्यहि देश पिया मनभावन । भावन भोर या लूक लगी, तनु बीच लगी जियरा झर-सावन ॥ सावनमें न भयो हनुमन्त, दोऊ मिलि झूलि मलारहि गावन । गावन मोहिं सोहात नहीं, बदरा बदराह लगे झुरि धावन॥

लैगई मोहिं कलिंदीके कूल दुकूल दिखाय ठगोरसी कैगई । कैगई आज विथा तनुमें, मनही मन मैन मरोर न दैगई ॥ दैगई दाग दगा करिकै, औधेश कहैं तनुतापन तैगई । तैगई नेकन लाई कछू सुधि, गोरी गुवालिनि मो मन लैगई ॥ ५३९ ॥

कोरनलौं दृग देती हौ काजर, कारी घटा उमड़ी घनघोरन । घोरनते जो चली अति सुन्दरि, बोलत ज्यों सखी बागके मोरन ॥ मोरनकी गति नाचत है, नहिं मानत है हटको वरजोरन । जोर न अंजन देहु सखी, अँगुरी कटि जैहैं कटाक्षकी कोरन ॥५४०॥

कवित्त—आई है बहार वनवेलिन नवेलिनमें, बहुधा चमेलि-नमें भौंर भीर छाई है । छाई है छपाकरकी मरीचिका दरीचि-नमें, तिनहूँ लखि तनको तनु तापताई है ॥ ताई है सकल सुधि बुधि यश मेरी, जवते प्राणप्यारे प्राणप्यारी विसराई है । राई

है न नेक कहूँ नवमें कलेवरमें, कहियो हो कन्तसों वसन्त ऋतु आई है ॥ ५४१ ॥

उपमाके कवित्त।

भोजन ज्यों घृतविन पंथ जैसे साथी विन, हाथी विन दल जैसे दारुविन वान है। राव रंगरानी विन कूप जैसे पानी विन, कवि जैसे वानी विन सुगरविन तान है ॥ रस रासरीति विन मित्र ज्यों प्रतीति विन, ब्याहकाज गीत विन आदर विन दान है। रंग जैसे केसर विन मुख जैसे वेसर विन, प्यारी विन रैन ज्यों सुपारी बिन पान है ॥ ५४२ ॥

विद्या बिन द्विज औ बगीचा विन आँवनको, पानी विन सावन सोहावन न जानी है। राजा विन राजकाज राजनीति सोचे विन, पुण्यकी वसीठी कहो कैसे धौं वखानी है ॥ कहैं जयदेव बिन हितको हितू है जैसे, साधु बिन संगति कलंककी निसानी है। पानी विन सर जैसे दान विन कर जैसे, शील विन नर जैसे मोती बिन पानी है ॥ ५४३ ॥

हीराकी झलक जैसे जुगनूकी दमक जैसे; दामिनीकी चमक जैसे मोती झलकान है। सुधाको सीर जैसे नावकको तीर जैसे, जादूको वीर जैसे करत पयान है ॥ शोभाको मूल जैसे फुलझरीको फूल जैसे, तेजक त्रिशूल जैसे राखो धरी सान है ॥ पुहुप विकसान जैसे ज्योति शशि भान जैसे, कंचनकी खान जैसे तेरी मुसक्यान है ॥ ५४४ ॥

अस्त्र बिन वीर भोंडो गाँसी विन तीर भोंडो, स्वाद विन क्षीर भोंडो नीर भोंडो झीलको। श्रीपति सुजान कहैं राह वाट रेत भोंडो, भूपति अचेत भोंडो खेत भोंडो लीलको ॥ पूरवको पौन भोंडो ऊँठ चढ़ि गौन भोंडो, विद्याधर मौन भोंडो भौन

भोंडो भीलको । साँझ भोर शयन भोंडो श्वाननको चैन भोंडो, शील विन नयन अरु वदन वखीलको ॥ ५४५ ॥

शीलवान नर नीको वालकको घर नीको, दानयुत कर नीको उजियारो चन्दको । विद्याको विवाद नीको रामगुणनाद नीको, कोमल मधुर सदा स्वाद नीको कन्दको ॥ गऊको नवनीत नीको जेठमास शीत नीको, श्रीपतिजू मित्र नीको विना फर-फन्दको । झटपटको कार नीको रेशमको पट नीको, वंशीवट तट नीको नट नीको नन्दको ॥ ५४६ ॥

ताल फीको अजल कमल विन जल फीको, कहत सकल कवि हवि फीको रूमको । विन गुणरूप फीको ऊसरको कूप फीको, परम अनूप भूप फीको विन भूमको ॥ श्रीपति सुकवि महावेग विन तुरी फीको, जानत जहान सदा जोह फीको धूमको । मेह फीको फागुन अवालकको गेह फीको, नेह फीको तियको सनेह फीको सूमको ॥ ५४७ ॥

फूल विन वाग जैसे वाणी विन राग जैसे, पानी विन तड़ाग अरु रूप विन अंग है । धन विन साज जैसे सोचे विन काज जैसे, राजा विन राज्य जैसे नदी विन तरंग है ॥ एक अंगी प्रीति जैसे वेश्या विन रीति जैसे, प्रेमविन मीत जैसे शोभा विन रंग है । प्यारी विन रैन जैसे मनमें विचारि देखो, शील विन नैन अरु साधु विन संग है ॥ ५४८ ॥

नटको न धाम ना नपुंसकको काम नाहिं, ऋणीको अराम वाम वेश्या ना सहेलरी । ज्वारीको न शोच मांसाहारीको न दया होत, कामीको न नातो गोत छाया ना सहेलरी ॥ देवीदास वसुधामें वनिक न सुनो साधु, कूकरको धीरज न माया है सहेलरी । चोरको न यार वटपारको न प्रीति होत, लावर न मीत होत सौति ना सहेलरी ॥ ५४९ ॥

होरीके कवित्त ।

सवैया—खेलन फाग सबै निकसी, अरु रंग गुलाल लिये भरि झोरी । मूठि चलावत ग्वालिनपै, अरु श्यामलके मुख आवन रोरी ॥ जबहीं हँसि हेरि गह्यो अँचरापर, सादसी प्रीति गुलालसी जोरी । मोसे दुरैहौ कहा सजनी, निहुरे निहुरे कहुँ ऊँटकी चोरी ॥ ५५० ॥

फागके भीर अभीरन त्यों, गहि गोविंद लैगई भीतर गोरी । भाय करी मनकी पदमाकर, ऊपर नाय अबीरकी झोरी ॥ छीनि पितम्बर कम्मरते, सो विदा दई मींजि कपोलन रोरी । नैन नचाय कही मुसुक्याय, लला फिरि आइयो खेलन होरी ॥ ५५१ ॥

कवित्त—मधुर मधुर मुख मुरली वजाई धुनि, धमकि धमारनकी धाम धाम कैगयो । कहैं पदमाकर त्यों अगर अबीरनकी, करिके घलाघली छलाछली चितै गयो ॥ को है वह ग्वालिनि गुवालिनिके संगमें, अंग छवि वारों रस रंगमें भिजै गयो । वै गयो सनेह फिर छ्वै गयो छराको छोर, फगुवा न दैगयो हमारो मन लै गयो ॥ ५५२ ॥

सवैया—फाग मचो सिगरे व्रजमों, नभ वादर लाल गुलावसे छाये । नागरी औ मनमोहन नागर, सामने होत चितै मुसुकाये ॥ मान गयो छुटि मोद भयो, मन दोऊ सनेहभरे वतलाये । मूठी अवीर चलाय सुगन्ध, लगावतके मिससों लपिटाये ॥५५३॥

स्वप्नदर्शन कवित्त ।

सवैया—व्याकुल काम सतावत मोहिं, पियाविन नीक न लागत कोई । प्रीतमसे सपने भइ भेंट, भली विधिसों लपटायके सोई ॥ नैन उघारि पसारिकें देखौं, चौंकि परी कितहूँ नहिं कोई ।

एरी सखी दुख कासों कहौं, मुसुक्याय हँसी हँसिके फिरि रोई ॥
पौढ़ी हती पलँगापर मैं, निशि ज्ञान रु ध्यान पिया मन लाये । लागि गई पलकैं पलसों, पल लागतही पलमें पिय आये ॥ ज्योंही उठी उनके मिलिबेको, जागि परी पिय पास न पाये । मीरन और तो सोयके खोवत, हौं सखि प्रीतम जागि गँवाये ॥५५५॥

फुटकर कवित्त ।

कवित्त–अश्व विन दौर नहीं हुकम विन तौर नहीं, व्याह बिन मौर नहीं जेब पाई । दया विन दान नहीं द्रव्य विन सान नहीं, ताल विन तान नहीं जात गाइ ॥ योग विन युक्ति नहीं गुरु विन उक्ति नहीं, राम बिन मुक्ति नहीं वेद गाई । डोर विन चंग नहीं तेग बिन जंग नहीं, अंग बिन रंग नहीं होत भाई ५५६

सवैया–बंधुविरोध करो सिगरो, झगरो नित होत सुधारस चाटत । मित्र करै करणी रिपुकी, धरणीधर देखि न न्याउ निपाटत ॥ राम कहैं विष होत सुधा, घर नारि सती पतिसों चित फाटत । भा विधिना प्रतिकूल जबै, तव ऊँट चढ़ेपर कूकर काटत ॥ ५५७ ॥

दामकी दाल छदामके चाउर, घिउ अँगुरीन लै दूरि दिखायो । टोनोसो नोन धरयो कछु आनि, सबै तरकारीको नाम गनायो ॥ विप्र बुलाय पुरोहितको, अपनी बिनती बहुभाँति सुनायो । साहसी आज सराध कियो, सो भली विधिसों पुरुषा फुसलायो ॥ ५५८ ॥

कवित्त–दामहीसों आठौ याम बुद्धिको प्रकाश होत, दामहीसों सबै ठौर होत बड़ो नाम है । दामहीसों भाई बन्धु आय सब रुजू होत, दामहीसों बनहूमें होत सबे काम है ॥ दामहीसों

---

१ समस्याके कवित्त पंचम भागमें लिखेंगे ।

सभामाँझ आदरको पावत है, दामहीसों गृहमाँझ होत विसराम है। कहै कवि हेम यह नीके कै विचारि देखौ, मेरे भाये वीसौ विश्वा दामहीमें राम है॥ ५५९॥

दोहा--नारायण हितकरि लिख्यो, सुमिरि कृष्ण करतार।
रागरत्नआगर सुखद, रसिकजनन मुदकार॥ ५६०॥

इति श्रीमन्नारायणभक्त नारायणलिखित रागरत्नाकर
चतुर्थ भाग समाप्त॥ ४॥

एरी सखी दुख कासों कहौं, मुसुक्याय हँसी हँसिके फिरि रोई ॥

पौढ़ी हती पलँगापर मैं, निशि ज्ञान रु ध्यान पिया मन लाये । लागि गई पलकैं पलसों, पल लागतही पलमें पिय आये ॥ ज्योंही उठी उनके मिलिवेको, जागि परी पिय पास न पाये । मीरन और तो सोयके खोवत, हौं सखि प्रीतम जागि गँवाये ॥५५५॥

फुटकर कवित्त ।

कवित्त–अश्व विन दौर नहीं हुकम बिन तौर नहीं, व्याह बिन मौर नहीं जेब पाई । दया विन दान नहीं द्रव्य विन सान नहीं, ताल विन तान नहीं जात गाइ ॥ योग विन युक्ति नहीं गुरु विन उक्ति नहीं, राम विन मुक्ति नहीं वेद गाई । डोर विन चंग नहीं तेग विन जंग नहीं, अंग विन रंग नहीं होत भाई ५५६

सवैया–बंधुविरोध करो सिगरो, झगरो नित होत सुधारस चाटत । मित्र करै करणी रिपुकी, धरणीधर देखि न न्याउ निपाटत ॥ राम कहैं विष होत सुधा, घर नारि सती पतिसों चित फाटत । भा विधिना प्रतिकूल जबै, तब ऊँट चढ़ेपर कूकर काटत ॥ ५५७ ॥

दामकी दाल छदामके चाउर, घिउ अँगुरीन लै दूरि दिखायो । टोनोसो नोन धरयो कछु आनि, सबै तरकारीको नाम गनायो ॥ विप्र बुलाय पुरोहितको, अपनी बिनती बहुभाँति सुनायो । साहसी आज सराध कियो, सो भली विधिसों पुरुषा फुसलायो ॥ ५५८ ॥

कवित्त–दामहीसों आठो याम बुद्धिको प्रकाश होत, दामहीसों सबै ठौर होत बड़ो नाम है । दामहीसों भाई बन्धु आय सब रुजू होत, दामहीसों बनहूमें होत सबै काम है ॥ दामहीसों

१ समस्याके कवित्त पंचम भागमें लिखेंगे ।

करया । ऊडेऊड आवैं सैकोसां तिस पाछे वछरे छरया ॥ तिन कवन खलावैं कवन चुगावै मनमें सिमरन करया । सभ निधान दस अष्ट सिधान ठाकुर करतल धरया ॥ जन नानक वल वल सदवल जाइये तेरा अंत न पारा वरया ॥ ४ ॥

राग आसावरी ।

सोदर तेरा केहा सौ घर केहा जित वहि सर्व समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे । केते तेरे राग परी सिउ कही अहीं केते तेरे गावणहारे ॥ गावन तुधनूँ पवन पाणी वैसंदर गावै राजा धर्मद्वारे । गावन तुधनूँ चित्र-गुप्त लिख जानण लिख लिख धर्म विचारे ॥ गावन तुधनूँ ईश्वर ब्रह्मा देवी सोहन तेरे सदा सवारे । गावन तुधनूँ इन्द्र इन्द्रासन वैठे देवतियाँ दरनाले ॥ गावन तुधनूँ सिद्ध समाधी अन्दर गावन तुधनूँ साध विचारे । गावन तुधनूँ यती सती सन्तोष गावन तुधनूँ वीर करारे ॥ गावन तुधनूँ पंडित पढ़न ऋषीश्वर युग युग वेदां नाले । गावन तुधनूँ मोहनियां मनमोहन सुरंगा मच्छ प्याले ॥ गावन तुधनूँ रत्न उपाये तेरे अठसठ तीरथ नाले । गावन तुधनूँ जो महावल सूरा गावन तुधनूँ खाणी चारे ॥ गावन तुधनूँ खंड मंडल ब्रह्मांडाकर कर रखे तेरे धारे ॥ सोई तुधनूँ गावन जो तुध भावन रत्ते तेरे भगत रसाले । होर केते तुधनूँ गावनसे मैं चित्त न आवन नानक क्या वीचारे ॥ सोई सोई सदा सच साहब साँची साँची नाई । हैभी होसी जाय न जासी रचना जिन रचाई ॥ रंगी रंगी भातीं कर कर जिनसीं माया जिन उपाई । कर कर देखे कीता अपणा ज्यों तिसदी वड़ि आई ॥ जो तिस भावै सोई करसी फिर हुकम न करना जाई । सो पातशाह शाहांपति साहब नानक रहण रजाई ॥ ५ ॥

पंचम भाग ।

ग्रन्थसाहवके शब्द ।

पवन गुरू पाणी पिता, माता धरति महत्त । दिवस रात दोय दाई दाया, खैल सकल जगत्त ॥ चंगि आइयाँ बुरी आइयाँ, वाचै धर्म हजूर । करमी आयो आपणी, के नेडै के दूर ॥ जिन्हीं नाम ध्याइया, गये मुशकत घाल । नानक ते मुख उज्जले, केती छुट्टी नाल ॥ १ ॥

जत्तपहारा धीरज सुनि आर । अहरण मत्तवेद हथियार ॥ भौ खल्ला अग्नि तपाउ । भांडाभाउ अमृत तित ढाल ॥ घड़ीये शब्द सची टकसाल । जिनको नदर करम तिन कार ॥ नानक नदरीं नदर निहाल ॥ २ ॥

जे युग चारे आरजा होर दसूणी होय । नवाँ खंड विच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चंगा नाँउ रखायके यशकीरति जग लेय । जे तिस नदर न आवई तां वात न पुच्छे केय ॥ कीटां अंदर कीटकर दोसीं दोस धरेय । नानक निर्गुण गुण करे गुणवंत्यां गुण देय ॥ तेहा कोइ न सूझई जेति सगुण कोय करेय ॥ ३ ॥

राग गूजरी ।

काहेरे मन चितवै उद्यम जाँ आहर हरिजी उपरिआ शैल ॥ पत्थरमें जंत उपाये तांका रिजक आगे कर धरिआ । मेरे माधोजी सतसंगति मिले सो तरया ॥ गुरुप्रसाद परम पद पाया शकेका शट हरया । जननी पिता लोक सुत वनिता कोय न किसकी धरया ॥ सिर सिर रिजक सँवा है ठाकुर करहे मन भौं

राग माँझ ।

पारब्रह्म अपरंपर देवा । अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीनदयाल गोपाल गोविन्दा हरि ध्यावो गुरुमुख गीताजी ॥ गुरुमुख मधुसूदन निस्तारे।गुरुमुख संगी कृष्ण मुरारे ॥ दयाल दामोदर गुरुमुख पाइये होर तूं किते न भातीजी । निरहारी केशव निरवैरा ॥ कोटि जनां जाके पूजें पैरा । गुरुमुख जाके हिरदे हर हर सोई भगत इकाती जी ॥ अमोघ दर्शन वे अन्त अपारा॥ वड़ समरत्थ सदा दातारा ॥ गुरुमुख नाम जपियें तित तरिये गति नानक विरली जाती जी ॥ १० ॥

राग गौरी पूरवी ।

करो विनती सुनो मेरे मीता संत टहिलकी वेला ॥ ईहा खाल चलो हरि लाहा आगे वसन सुहेला ॥ औध घटै दिन सु रैनारे । मन गुरु मिल काय सवारे ॥ यह संसार विकार संशये-माहिं तरयो ब्रह्मज्ञानी ॥ जिनहिं जगाय प्यावे यह रस अकथ कथा तिन जानी ॥ जाको आये सोइ विहाझहु हरि गुरुते मनहि वसेरा । निजघर महल पावो सुख सहजे बहुरन होयगो फेरा ॥ अंतरयामी पुरुष विधाते सरधा मनकी पूरे ॥ नानक दास इहै सुख मांगे मोकों कर संतनकी धूरे ॥ ११ ॥

राग श्री ।

जाको मुशकल अति बणै ढोई कोय देय । लागू होय दुशमना साक भी भन्न खले ॥ सभो भज्ज आसरा चुकै सभ असराउ । चित्त आवै उस पारब्रह्म लगै न तत्ती वाउ ॥ साहिब निताणिआंका ताण । आय न जाई थिर सदा गुरु सब दीं सच जाण ॥ जे को होवे दुर्बला नंग भूखकी पीर । दमडा पल्ले

भई प्राप्त मानुष्य देहरिया । गोविंद मिलनकी यह तेरी बेरिया॥ अवर काज तेरे किते न काम । मिल साधसंगत भज केवल नाम ॥ सरंजाम लाग भवजल तरनके । जन्म वृथा जात रंग मायाके ॥ जप तप संयम धर्म न कमाया । सेवा साध न जान्या हरिराया ॥ कह नानक हम नीचकर्मा । शरण पड़ेकी राखो शर्मा॥६॥

घट घट अन्तर सर्व निरन्तर जीहर एको पुरुष समाणा ॥ इक दाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज विड़ाना । तूँ आपे दाता आपे भुगता जीहौं तुधविन अवर न जाणा ॥ तूँ पारब्रह्म वे अंत वे अंतजी तेरे क्या गुण आख वखाणा । जो सेवाही जो सेवहिं तुधजी जन नानक तिन कुरवाणा ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ।

किते प्रकार न टूटो प्रीत । दास तेरेकी निर्मल रीत ॥ जीय प्राण मन धनते प्यारा । हौं मैं वंध हरि देवन हारा ॥ चरण कमलसों लागो नेह । नानक की है विनती एह ॥ ८ ॥

गगनमय थाल रविचंद्र दीपक वने तारिका मंडला जनक मोती । धूप-मलि आनलो पवन चवरो करे सकल वनराय फूलंत जोती ॥ कैसी आरती होय भव खंडना तेरी आरती अनहदा शब्द वाजंत भेरी ॥ सहस तव नयननन ननन है तोहिको सहस मूरत नना एक तोही ॥ सहस पद विमल नन एक पद गंध-बिन सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ सवमें जोति जोति है सोय । तिसदे चानण होय । गुरु साखी जोत परगट होय । जो तिस भावे सो आरती होय ॥ हरिचरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आहि प्यासा । कृपाजल देहु नानक सारंगको होय जाते तेरे नाइँ वासा ॥ ९ ॥

चित न आवे नाउ । हरि बिन जीव जलवल जाउ ॥ मैं आपणा गुरु पूँछ देख्या अवसर नाहीं थाउ । धरती तां हीरे लाल जड़ती पलँग लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुख मणी सोहै करे रंग पसाल । मत देख भूला वीसरै तेरा चित्त न आवै नाउ । सुलतान होवां मेल लशकर तखत राखां पाउ ॥ हुकम हासम करी बैठा नैनका सब वाउ । मत देख भूला वीसरै तेरा चित्त न आवै नाँउ ॥ १३ ॥

राग सोरठ ।

जीय अंत सभ तिसके कीये सोई संत सहाई । अपने सेवककी आपे राखे पूरन भई वड़ाई ॥ पारब्रह्म पूरा मेरे नाल गुरु पूरे पूरी सभ राखी होवे सर्व दियाल ॥ अनुदिन नानक नाम ध्याये जीय प्राणका दाता । अपने दासको कंठ लाय राखै ज्यों वारिक पितु माता ॥ १४ ॥

अंतरकी गति तुमहीं जानी तुझही पास निबेरो । बखश लेहु साहिब प्रभु अपने लाख खते कर फेरो ॥ प्रभुजी तू मेरो ठाकुर नेरो । हरिचरण शरण मोहिं चेरो ॥ बेशुमार बेअंत स्वामी ऊँचो गुनी गहेरो । काटि सिलक कीनो अपनो दासरो तौ नानक कहा निहेरो ॥ १५ ॥

राग गौरी ।

थिर घर वैसो हरिजन प्यारे । सतगुरु तुमरे काज सँवारे ॥ दुष्ट दूत परमेश्वर मारे । जनकी पैज रखी करतारे ॥ बादशाह शाह सब वश कर दीने । अमृत नाम महारस पीने ॥ निर्भय होय भजो भगवान । साधु संगत मिल कीनो दान ॥ शरण पड़े प्रभु अन्तरजामी । नानक ओट पकड़ी प्रभु स्वामी ॥ १६ ॥

नां पवे ना को देवै धीर ॥ स्वार्थ स्वाउनको करे ना किछु होवे काज । चित्त आवै उस पारब्रह्म छता निश्चल होवे राज ॥ जाको चिन्ता वहुत वहुत देही व्यापै रोग । गिरिस्त कुटुंब पलेव्या कदे हर्ष कदे सोग ॥ गोण करे कहुं चहुं कुंटका घड़ी न वैसन होय । चित्त आवै उस पारब्रह्म तन तन मन शीतल होय ॥ काम क्रोध मोहवस कीया किरमन लोभ प्यार । चारे किलविष उन अघ किये होया असुर संहार ॥ पोथी गीत कवित्त कछु कदे न करन धरया । चित आवे उस पारब्रह्म तां निमिप सिमरत वरया ॥ सासत सिमृत वेद चार मुखाकर विचरे । तपी तपीसर योगी या तीर्थ गमन करे ॥ खट करमोतें दुगुने पूजा करता न्हाय । रंगन लग्गी पारब्रह्म तां सरपर नरके जाय ॥ राज मिलक सिकदारीया रस भोगन विस्तारा । वाग सुहावे सोहणे चले हुकुम अफारा ॥ रंग तमासे वहु विधि चाय लग रहिया। चित्त न आयो पारब्रह्म तां सरपकी जून गया ॥ वहुत धनाढ्य अचारवंत शोभा लिर्मल रीत । मात पिता सुत भाइयां साजन संग प्रीत ॥ लशकर तरसक वंद वंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां खड रसातल दीत ॥ कायां रोग न छिद्र कछु नां कछु काढा सोग । मिरत न आवी चित्त तिस अहनिस भोगें भोग ॥ सभ कछु कीतो न आपणा जीउ निशंकु धरया । चित्त न आयो पारब्रह्म जम किंकर वस परया ॥ कृपा करे जिस पारब्रह्म होवे साधूसंग । ज्यों ज्यो ओह वधाइयै त्यों त्यों हरिसों रंग ॥ दोहां सिरांका खसम आप अवर न दूजा थाउँ । सतगुरु तुट्टे पाइया नानक सचा नाउँ ॥ १२ ॥

मोता तां मंदर ऊसरहिं रतनी तां होहिं जड़ाउ । कस्तूरि कुंगू अगर चंदन लीप आवे चाउ ॥ मत देखं भूला वीसरे तेरा

पियारी ॥ हरीचंद दान करै यश लेवै । विन गुरु अंत न पाया भेवै ॥ आम भुलाय आपे मति देवै ॥ दुर्मत हिरणाकुश दुराचारी । प्रभु नारायण गर्वप्रहारी । प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ भूलो रावण मुगध अचेत । लूटी लंका सीस समेत । गर्व किया विन सतगुरु हेत ॥ सहसबाहु मधुकीट महिषासा । हिरणाकुशले नखहु विधासा । दैत सँहारे विन भगति अभ्यासा ॥ जरासंध कालयवन संहारे । रक्तबीज कालनेमि विदारे । दैत्य सँहार सन्त निस्तारे ॥ आपे सतगुरु शब्द विचारे । दूजे भाय देत संहारे । गुरुमुख साँचि भगति निस्तारे ॥ बूड़ा दुर्योधन पति खोई । राम न जान्या करता सोई । जनको दुःख पचै सुख होई ॥ जन्मेजय गुरुशब्द न जान्या । क्यों सुख पावै भर्म भुलान्या । इकतिल भूले बहुरि पछतान्या ॥ कंस केशी चाणूर न कोई । राम न चीन्हा अपनी पति खोई । विन जगदीश न राखै कोई ॥ विन गुरु गर्व न मेट्या जाय । विन गुरु मति धर्म धीरज हरि नाय । नानक नाम मिले गुण गाय ॥२०॥

माधौ हरि हरि हरि मुख कहिये । हमते कछू न होवै स्वामी ज्यों राखो त्यों रहिये ॥ क्या कछु करे कि करनेहारा क्या इस हाथ विचारे । जित तुम लावो तितही लागा तितही पूरण खसम हमारे ॥ करहु कृपा सर्वके दाते एकरूप लव लाइहु । नानककी विनती हरिपै अपना नाम जपावहु ॥ २१ ॥

राग आसावरी ।

पवन उपाय धरी सब धरती जल अगिनिका बंध किया । अंध ले दह सिर मूड़ कटाया रावण मार क्या बड़ा भया ॥ क्या उपमा तेरी आँकी जाय तू सरवे पूर रहया लवलाया । जीय उपाय जुगति हथ कीनी काली नथ क्या बड़ा भया ॥ किस तूँ

वड़े वड़े जो दीसहिं लोग । तिनको व्यापै चिंता रोग ॥ कौन वड़ा माया वड़ि आई । सो वड़ा जिन राम लवलाई ॥ भूमि आ भूमिऊपर नित लूझे । छोड़ चलैं तृष्णा नहिं वूझे ॥ कह नानक यह तत्व विचारा । विन हरि भजन नहीं छुटकारा ॥१७॥

जाके वश खान सुलतान । जाके वश है सकल जहान ॥ जाका किया सभ कछु होय । तिससे वाहर नाहीं कोय ॥ कहु विनती अपने सतगुरु पाहि । काज तुम्हारे देय निवाहि ॥ सभते ऊँच जाका दरबार । सकल भगत जाका नाम अधार ॥ सर्व व्यापत पूर्ण धनी । जाकी शोभा घट घट वनी ॥ जिस सिमरत दुख डेरा ढहे । जिस सिमरत जम कछू न कहे ॥ जिस सिमरत होत सूके हरे । जिस सिमरत डूवत पाहन तरे ॥ संत सभाको सदा जैकार । हर हर नाम जन प्राण अधार ॥ कह नानक मेरी सुनि अरदास । संत प्रसाद मोको नाम निवास ॥ १८ ॥

उवरत राजारामकी शरणी । सर्व लोक मायाके मंडल गिर गिर परते धरणी ॥ शास्त्र सिमृत वेद विचारे महापुरुषन यूं कहया । विन हरिभजन नाहीं निस्तारा सुख न किनहूँ लह्या ॥ तीन भवनकी लक्ष्मी जोरी वूझत नाहीं लहरे । विन हरिभगत कहा थित पावै फिर तो पहरे पहरे ॥ अनक विलास करत मनमोहन पूरन होत न कामा । जलतो जलतो कभू न वूझत सकल वृथे विन नामा ॥ हरिका नाम जपो मेरे मीता इहै सार सुख पूरा । साधुसंगत जन्ममरण निवारे नानक जनकी धूरा ॥ १९ ॥

ब्रह्मै गर्व किया नहीं जान्या ॥ वेदकी विपत पड़ी पछतान्या । जहिं प्रभु सिमरे तही मन मान्या ॥ ऐसा गर्व वुरा संसारे । जिस गुरु मिलै तिस गर्व निवारे ॥ वलि राजा माया अहंकारी । जगत करे वहु भार अफारी ॥ विन गुरु पूछे जाय

जप तप संयम कर्म न साधा । नाम प्रभूका मनहि अराधा ॥ कछु न जान मति मेरी थोरी । विनवत नानक ओट प्रभु तोरी २५

भगतवच्छल हरि बिरद आप बनाइया । जहिं जहिं सन्त अराधहिं तहिं तहिं प्रगटाइया ॥ प्रभु आप लिये समाय सहज सुभाय भगत कारज सारिया । आनंद हरियश महामंगल-सर्व दुःख विसराइया ॥ चमत्कार प्रकार दह दिस एक तहिं दर-शाइया । नानक पिअँपै चरण जंपै भगतवच्छल हरि बिरद आप बनाइया ॥ २६ ॥

आठ पहर निकट कर जानै । प्रभुका कीया मीठा मानै ॥ एक नाम सन्तन आधार । होय रहै सभकी पग छार ॥ संत रहत सुनो मेरे भाई । वाकी महिमा कही न जाई ॥ वरतन जाके केवल नाम । अनन्दरूप कीर्तन विश्राम ॥ मित्र शत्रु जाके एक समानै । प्रभु अपने विन अवर न जानै ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा । दुख दूर करन जीयके दातारा ॥ शूर वीर वचनके वली । कमला वपुरी संतन छली ॥ तांका संग वांछहि सुरदेव । अमोघ दरश सफल जाकी सेव ॥ कर जोर नानक करे अरदास । मोहिं सन्तहि टहल दीजै गुण तास ॥ २७ ॥

थिर सन्तन सुहाग मरै न जावहे । जाके गृह हरि नाहु सों सदही राव है ॥ अविनाशी अविगत सो प्रभु सदा न वतन निर्मला । नहिं दूर सदा हजूर ठाकुर दह दिस पूरन सद सदा ॥ प्राणपति गति मति जाते प्रिय प्रीति प्रीतम भावहे । नानक वखाने गुरु वचन जाने स्थिर संतन सुहाग भरै न जावहे ॥२८॥

चरणकमलकी आश प्यारे । यमकिंकर नाशि गये विचारे ॥ नूँ चित आवहि तेरी मया । सिमरत नाम सकल रोग पया ॥ अनिक दूख देवहि अवरांको । पहुँचन साकहि जन तेरेको ॥

पुरुप जोरू कौन कहिये सर्व निरन्तर रम रहया । नाल कुटुंब साथ वरदाना ब्रह्मा भालण सृष्टि गया ॥ आगे अंत न पायो ताका कंस छेद क्या वड़ा भया । रत्न उपाय धरे क्षीर मथ्या होर भख लाये जिअसी कीया ॥ कहै नानक छपै क्यों छपा एकी एकी वड़ दीया ॥ २२ ॥

जिस नीचको कोई न जानै । नाम जपत सो चहुँ कुंट मानै ॥ दर्शन माँगो देहु प्यारे । तुमरी सेवा कौन कौन न तारे ॥ जाके निकट न आवे कोई । सकल सृष्टि वाके चरणमल धोई ॥ जो प्राणी काहु न आवत काम । संतप्रसाद ताको जापिये नाम ॥ साधुसंग मन सोवत जागे । तव प्रभु नानक मीठे लागे ॥२३॥

राज मिलक जोवन गृह शोभा रूपवन्त जो आनी ॥ वहुत द्रव्य हस्ती अरु घोड़े लाल लाख वय आनी । आगे दरगहिं काम न आवहिं छोड़ चले अभिमानी ॥ काहे एक विना चित लाइये । ऊठत वैठत सोवत जागत सदा सदा हरि ध्याइये ॥ महा विचित्र सुन्दर आखाड़ रणमें जिते पवाड़े । हौं बाँधौं हौं मारौं छोड़ौं सुखते एक ववाड़े ॥ आया हुकम पारब्रह्मका छोड़ चल्या एक दिहाडे ॥ कर्म धर्म जुगति वहु करता करनेहार न जानै । उपदेश करै आप न कमावै तत्व शब्द न पछानै ॥ नामा आया नांगो जासी ज्यों हस्ती खाक छानै ॥ सन्त सुजन सुनहु सभ मीता झूँठा एक पसारा । मेरी मेरी कर डूबे खप खप मुये गँवारा । गुरु मिल ना एक नाम ध्याया साँच नाम निस्तारा ॥ २४ ॥

उक्ति सयानप कछू न जाना । दिन रैन तेरा नाम वखाना ॥ मैं निर्गुण गुण नाहीं कोय । करन करावनहार प्रभु सोय ॥ मूरख मुगध अज्ञान विचारी । नाम तेरेकी आश मन धारी ॥

जप तप संयम कर्म न साधा। नाम प्रभूका मनहि अराधा॥ कछु न जान मति मेरी थोरी। विनवत नानक ओट प्रभु तोरी २५

भगतवच्छल हरि बिरद आप बनाइया। जहिं जहिं सन्त अराधहिं तहिं तहिं प्रगटाइया॥ प्रभु आप लिये समाय सहज सुभाय भगत कारज सारिया। आनंद हरियश महामंगल सर्व दुःख विसराइया॥ चमत्कार प्रकार दह दिस एक तहिं दरशाइया। नानक पिअंपै चरण जंपै भगतवच्छल हरि बिरद आप बनाइया॥ २६॥

आठ पहर निकट कर जानै। प्रभुका कीया मीठा मानै॥ एक नाम सन्तन आधार। होय रहे सभकी पग छार॥ संत रहत सुनो मेरे भाई। वाकी महिमा कही न जाई॥ वरतन जाके केवल नाम। अनन्दरूप कीर्तन विश्राम॥ मित्र शत्रु जाके एक समानै। प्रभु अपने बिन अवर न जानै॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा। दुख दूर करन जीयके दातारा॥ शूर वीर वचनके वली। कमला बपुरी संतन छली॥ तांका संग वांछहि सुरदेव। अमोघ दरश सफल जाकी सेव॥ कर जोर नानक करे अरदास। मोहिं सन्तहि टहल दीजै गुण तास॥ २७॥

थिर सन्तन सुहाग मरै न जावहे। जाके गृह हरि नाहु सों सदही राव है॥ अविनाशी अविगत सो प्रभु सदा न वतन निर्मला। नहिं दूर सदा हजूर ठाकुर दह दिस पूरन सद सदा॥ प्राणपति गति मति जाते प्रिय प्रीति प्रीतम भावहे। नानक वखाने गुरु वचन जाने स्थिर संतन सुहाग मरै न जावहे॥२८॥

चरणकमलकी आश प्यारे। यमकिंकर नाशि गये विचारे॥ नूँ चित आवहि तेरी मया। सिमरत नाम सकल रोग पया॥ अनिक दूख देवहि अवरांको। पहुँचन साकहि जन तेरेको॥

दरश तेरेकी प्यास मन लागी। सहज आनंद वसै वैरागी॥ नानाककी अरदास सुनीजै। केवल नाम हृदयमें दीजै॥ २९॥

कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सभ संसार। कूड़ मंडप कूड़ माडी कूड़ वैसनहार॥ कूड़ सोना कूड़ रूपा कूड़ पैनणहार। कूड़ कायां कूड़ कप्पड़ रूप अपार॥ कूड़ मीयाँ कूड़ बीवी खप्प होये खार। कडे कडे नेहु लग्गा विसरया करतार॥ किसनाल कीजे दोस्ती सभ जगत चल्लणहार॥ कूड़ मिट्ठा कूड माघ्यो कूड़ डोवे पूर। नानक वखाने विनती तुर्ध वाझ कूडो कूड़॥ ३०॥

राग देवगंधार।

हरि राम नाम जपलाहा। गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जमके काहा॥ खोजत खोजत खोज सुविचारयो हरि संतजना पहिआहा। तिन्हा प्राप्त यह विधा-ना जिनके कर्म लिखाहा॥ से वड़भागीसे पतिवंते सेई पूरे शाहा। सुंदर सुघड सुरूपते नानक जिन हरि हरि नाम विसाहा॥ ३१॥

अव हम चली ठाकुरपहिं हार। जव हम शरण प्रभूकी आई राख प्रभु भावे मार॥ लोकनकी चतुराई उपमाते वैसंदर जार। कोई भला कहो भावे वुरा कहो हम तन दियो है ढार॥ जो आवत शर्ण ठाकुर प्रभु तुमरी तिस राखो किरपा धार। जन नानक शर्ण तुम्हारी हरजी राखो लाज मुरार॥ ३२॥

प्रभु एही मनोरथ मेरा। कृपानिधान दयाल मोहिं दीजै कर संतनका चेरा॥ प्रातहि काल लागो जन चरनी निशिवासर दर्शन पावों। तन मन अर्प करों जन सेवा रसना हरिगुन गावों॥ सांस सांस सुमिरो प्रभु अपना संतसंग नित रहिये। एक अधार नाम धन मोरा अनंद नानक यह लहिये॥ ३३॥

राग सोरठ।

जौलौं भाव अभाव यह मानै तौलौं मिलण दुराई। आन आपना करत विचारा तौलौं बीच विषाई॥ माधव ऐसी देहु बुझाई। सेवों साधु गहों ओट चरना नहिं विसरै मुहुत चसाई॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी हृदय न आई। प्राणपति त्याग आन तूं रच्या उरझो संग वैराई॥ शोक न व्यापै आपन थापे साधु संगत बुद्धि पाई। शाकतका बकना एउ जानो जैसे पवन झुलाई॥ कोटि पाप अछादयो एह मन कहना कछु न जाई। जन नानक दीन शरण आयो प्रभु सब लेखा रखो उठाई॥ ३४॥

आपै सेवा लो यदा प्यारा आपै भगति उमाहा। आपे गुण गावां यदा प्यारा आपै शब्द समाहा॥ आपै लेखण आप लिखारी आपै लेख लिखाहा। मेरे मन जप राम नाम उमाहा॥ अनुदिन अनंद होवै वड़भागी लैगुर पूरै हरि लाहा॥ आप गोपी कान्ह है प्यारा बन आपै गऊ चराहा। आपै साँवल सुंदर प्यारा आपै वंशी बजाहा॥ कुवलयापीड़ आप मरांयदा प्यारा कर बालक रूप पचाहा। आप अखाड़ा पायंदा प्यारा कर देखै आप जो चाहा॥ कर बालक रूप उपायंदा प्यारा चंडुर कंसकेस मराहा। आपैही वल आप है प्यारा वल भनैं मूरख मुगधाहा॥ सभ आपै जगत उपायँदा प्यारा वस आपै जुगति हथाहा। गल जेवड़ी आपै पायदा प्यारा ज्यों प्रभु खिंचै त्यों जाहा॥ जो गरवे सो पचशी प्यारे जप नानक भगति समाहा॥३५॥

तन सन्तनका धन सन्तनका मन संतनका कीया। सन्तप्रसाद हरिनाम ध्याया सर्व कुशल तब थीया॥ संतन बिन अवर न दाता वीया। जो जो शरण परे साधूकी सो पारगामी

दरश तेरेकी प्यास मन लागी । सहज आनंद वसै वैरागी ॥ नानाककी अरदास सुनीजै । केवल नाम हृदयमें दीजे ॥ २९ ॥

कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सभ संसार । कूड़ मंडप कूड़ माडी कूड़ वैसनहार ॥ कूड़ सोना कूड़ रूपा कूड़ पैनणहार । कूड़ कायां कूड़ कप्पड़ रूप अपार ॥ कूड़ मीयाँ कूड़ बीवी खप्प होये खार । कडे कडे नेहु लग्गा विसरया करतार ॥ किसनाल कीजै दोस्ती सभ जगत चल्लणहार ॥ कूड़ मिट्ठा कूड माष्यो कूड़ डोवे पूर । नानक वखाने विनती तुध वाझ कूडो कूड़ ॥ ३० ॥

राग देवगंधार ।

हरि राम नाम जपलाहा । गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जमके काहा ॥ खोजत खोजत खोज सुविचारयो हरि संतजना पहिआहा । तिन्हा प्राप्त यह विधा-ना जिनके कर्म लिखाहा ॥ से वड़भागीसे पतिवंते सेई पूरे शाहा । सुंदर सुघड सुरूपते नानक जिन हरि हरि नाम विसाहा ॥ ३१ ॥

अब हम चली ठाकुरपहिं हार । जब हम शरण प्रभूकी आई राख प्रभु भावे मार ॥ लोकनकी चतुराई उपमाते वैसंदर जार । कोई-भला कहो भावे बुरा कहो हम तन दियो है ढार ॥ जो आवत शर्ण ठाकुर प्रभु तुमरी तिस राखो किरपा धार । जन नानक शर्ण तुम्हारी हरजी राखो लाज मुरार ॥ ३२ ॥

प्रभु एही मनोरथ मेरा । कृपानिधान दयाल मोहिं दीजै कर संतनका चेरा ॥ प्रातहि काल लागो जन चरनी निशिवासर दर्शन पावों । तन मन अर्प करों जन सेवा रसना हरिगुन गावों ॥ सांस सांस सुमिरो प्रभु अपना संतसंग नित रहिये । एक अधार नाम धन मोरा अनंद नानक यह लहिये ॥ ३३ ॥

राग सोरठ ।

जौलौं भाव अभाव यह मानै तौलौं मिलण दुराई । आन आपना करत विचारा तौलौं बीच विषाई ॥ माधव ऐसी देहु बुझाई । सेवों साधु गहों ओट चरना नहिं विसरै मुहुत चसाई ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी हृदय न आई । प्राण-पति त्याग आन तूं रच्या उरझो संग वैराई ॥ शोक न व्यापै आपन थापे साधु संगत बुद्धि पाई । शाकतका वकना एउ जानो जैसे पवन झुलाई ॥ कोटि पाप अछादयो एह मन कहना कछु न जाई । जन नानक दीन शरण आयो प्रभु सव लेखा रखो उठाई ॥ ३४ ॥

आपै सेवा लो यदा प्यारा आपै भगति उमाहा । आपे गुण गावां यदा प्यारा आपै शब्द समाहा ॥ आपै लेखण आप लिखारी आपै लेख लिखाहा । मेरे मन जप राम नाम उमाहा ॥ अनुदिन अनंद होवै वड़भागी लैगुर पूरै हरि लाहा ॥ आप गोपी कान्ह है प्यारा वन आपै गऊ चराहा । आपै सॉवल सुंदर प्यारा आपै बंशी बजाहा ॥ कुवलयापीड़ आप मरांयदा प्यारा कर बालक रूप पचाहा । आप अखाड़ा पायंदा प्यारा कर देखैं आप जो चाहा ॥ कर बालक रूप उपायंदा प्यारा चंडुर कंसकेस मराहा । आपैही वल आप है प्यारा वल भनैं मूरख मुगधाहा ॥ सभ आपै जगत उपायँदा प्यारा वस आपै जुगति हथाहा । गल जेवड़ी आपै पायदा प्यारा ज्यों प्रभु खिंचै त्यों जाहा ॥ जो गरवे सो पचशी प्यारे जप नानक भगति समाहा ॥३५॥

तन सन्तनका धन सन्तनका मन संतनका कीया । सन्त-प्रसाद हरिनाम ध्याया सर्व कुशल तव थीया ॥ संतन विन अवर न दाता वीया । जो जो शरण परे साधूकी सो पारगामी

कीया ॥ कोटि अपराध मिटहिं जन सेवा हरिकीर्तनरस माइये। ईहां सुख आगे सुख ऊजल जनका संग बड़भागी पाइये॥ रसना एक अनेक गुणपूरन जनकी केतक उपमा कहिये । अगम अगोचर सद अविनाशी शरण संतनकी लहिये ॥ निरगुण नीच अनाथ अपराधी ओट संतनकी आही। बूड़त मोह गृह अन्ध-कूपमें नानक लेहु निबाही ॥ ३६ ॥

जेती समग्री देखहु रे नर तेतीही छड़ जानी। रामनाम सँग कर ब्योहारा पावहिं पद निरबानी ॥ प्यारे तू मेरो सुखदाता। गुरु पुरे दीया उपदेशा तुमहीं संग पराता॥ काम क्रोध मोह लोभ अभिमाना तामें सुख नहिं पाइये। होहु रैनि तू सकलकी मेरे मन तो आनंद मंगल सुख पाइये ॥ घालन भानै अन्तर विधि जानै ताकी कर मन सेवा। कर पूजा होम एह मनुआं अकाल मूरत गुरुदेवा ॥ गोविंद दामोदर दयाल माधवे पारब्रह्म निरं-कारा ॥ नामवर तन नामो वालेवा नाम नानक प्राण अधारा ३७

खोजत खोजत खोज विचाऱ्यो राम नाम तत्त्व सारा। किल-विष काटे निमिष अराध्या गुरुमुख पार उतारा ॥ हरि रस पीवो पुरुष ज्ञानी। सुन सुन महा तृप्त मन पावै साधू अमृत-वानी ॥ मुक्ति भुगति जुगति सचुपाइये सर्व सुखांका दाता। अपने दासको भगतिदान देवै पूरण पुरुष विधाता ॥ श्रवणीं सुनिये रसना गाइये हिरदय ध्याइये सोई। करन कारन समरत्थ स्वामी जात वृथा न कोई ॥ बड़े भाग रत्नजन्म पाया करो कृपा कृपाला। साधुसंग नानक गुण गावै सुमिरै सदा गोपाला ॥३८॥

रत्न छाँड़ कौड़ी सँग लागे जाते कछु न पाइये। पूरन पार-ब्रह्म परमेश्वर मेरे मन सदा ध्याइये ॥ सुमिरो हरि हरि नाम प्रानी। विनशै काची देह अज्ञानी॥ मृगतृष्णा अरु सुपन मनो-

रथ ताकी कछु न वड़ाई । रामभजन विन काम न आवसि संग न काहू जाई ॥ हौं हौं करत विहाय अवरदा जियको काम न कीना । धावत धावत नहिं तृपतास्या रामनाम नहिं चीना ॥ स्वाद विकार विषयरसमातो असंख खते कर फेरे । नानककी प्रभु पाहि वीनती काटो अवगुण मेरे ॥ ३९ ॥

मायामोह मगन अँधियारे देखनहार न जानै । जीउ पिंड साज जिन रच्या बल अपनो कर मानै ॥ मन मूढ़े देख रह्यो प्रभु स्वामी । जो कछु करहिं सोई सोई जाणे रहै न कछु ऐछानी॥ जिह्वा स्वादलोभ मदमातो उपजे अनिक विकारा । वहुत योनि भ्रमत दुख पाया हौं मैं वन्दनके भारा ॥ देयँ किवाड़ अनिक पड़देम परदारा सँग फाकै । चित्रगुप्त जव लेखा माँगहिं तव कौन पडद तेरा ढाकै ॥ दीनदयाल पूरन दुखभंजन तुमविन ओट न काई । काढ़ि लेहु संसारसागरमहिं नानक प्रभु शरणाई॥

गुण गावो पूरन अविनाशी काम क्रोध विष जारे । विषम अग्निको सागर साधू संग उधारे ॥ पूरे गुरु मेट्यो भ्रम अंधेरा । भज प्रेमभगति प्रभु मेरा ॥ हरि हरि नाम निधान रस पीया मन तन रहे अघाई । जतकत पूरि रह्यो परमेश्वर कत आवै कत जाई ॥ जप तप संयम ज्ञान तत्ववेत्ता जिस मन वसै गुपाला । नामरतन जिन गुरुमुख पाया तांकी पूरण घाला ॥ कलि कलेश मिटे दुख सकले काटी यमकी फाँसा । कहु नानक प्रभु किरपा धारी मन तन भये विकासा ॥ ४१ ॥

सकल वनस्पतिमें वैसंदर सकल दूधमें घीया । ऊँच नीचमें जोति समानी घटघट माधो जीया ॥ संतो घट घट रह्या समाह्यो । पूरन पूर रह्यो सर्वमें जल थल रमैया आह्यो ॥ गुणनिधान

नानक यश गावै सतगुरु भर्म चुकायो। सर्वनिवासी सदा अलेपा सबमें रह्यो समायो ॥ ४२ ॥

रामदास सरोवर न्हाते । सब उतरे पाप कमाते ॥ निर्मल होयकर अस्नाना । गुरु पूरे कीने दाना ॥ सब कुशल छेम प्रभु धारे । सही सलामत सब थोकदा उबारे गुरुका शब्द वि-चारे ॥ साधुसंग मल साथी । पारब्रह्म भयो साथी ॥ नानक नाम ध्याया । आदि पुरुष प्रभु पाया ॥ ४३ ॥

अविनाशी जीवनको दाता सुमिरत सब मल खोई ॥ गुण-निधान भगतनको कीर्तन विरला पावै कोई ॥ मेरे मन जप गुरु गोपाल प्रभु सोई । जाकी शरण परे सुख पाइये बहुरि दुःख न होई ॥ बड़भागी साधुसंग प्राप्त तिन भेटत दुर्मति खोई । तिनकी धूर नानकदास बांछे जिन हरिनाम हृदय परोई ॥ ४४ ॥

प्राणी कौन उपाव करै । जाते भगती रामकी पावै यमको त्रास हरै ॥ कौन कर्म विद्या वह कैसी धर्म कौन पुनि करई । क़ौन नाम गुरु जाके सुमिरे भवसागरको तरई ॥ कलिमें एक नाम किरपानिधि जाहि जपै गति पावै । और धर्म ताके सम नाहिंन यहि विधि वेद बतावै ॥ सुख दुख रहत सदा निर्लेपी जाको कहत गुसाईं । सो तुमहींमें वसै निरन्तर नानक दर्पण न्याईं ॥

माई मन मेरो वश नाहिं । निशिवासर विषयनको ध्यावत किहि विधि रोकों ताहि ॥ वेद पुराण सिमृतिके मत सुन नि-मिष न हिये वसावै । परधन परदारासों राच्यो विरथा जन्म सिरावै ॥ मद मायाके भयो बावरो सूझत नहिं कछु ज्ञाना । घटही भीतर वसत निरंजन ताको मर्म न जाना ॥ जबहीं शरण साधुकी आयो दुर्मति सकल विनासी । तब नानक चेत्यो चि-न्तामणि काटी यमकी फाँसी ॥ ४६ ॥

माई मैं किहि विधि लखों गुसाईं । महामोह अज्ञान तिमिर मैं मन रह्यो उरझाई ॥ सकल जन्म भ्रमही भ्रम खोयो नहीं स्थिर मति पाई । विषयासक्त रह्यो निशिवासर नहिं छूटी अधमाई ॥ साधुसंग कबहू नहिं कीना नहिं कीरति प्रभु गाई । जन नानक मैं नाहीं कोऊ गुण राखि लेहु शरणाई ॥ ४७ ॥

मनरे गह्यो न गुरु उपदेश । कहा भयो जो मूँड़ मुड़ायो भगवो कीनो भेष ॥ साँच छाँड़के झूँठहि लाग्यो जन्म अकारथ खोयो । कर परपंच उदर निज पोष्यो पशुकी नाईं सोयो ॥ रामभजनकी गति नहिं जानी माया हाथ बिकाना ॥ उरझ रह्यो विषयन संग बौरा नाम रत्न बिसराना ॥ रह्यो अचेतन चेत्यो गोविन्द विरथा औध सिरानी । कहु नानक हरि विरद पछानो भूले सदा परानी ॥ ४८ ॥

रे नर यह सांची जिय धार । सकल जगत है जैसे सुपना विनशत लगत न वार ॥ वारू भीत बनाई रच पच रहत नहीं दिन चार । तैसेही यह सुख मायाको उरझ्यो कहा गँवार ॥ अजहुँ समझ कछू बिगरयो नाहिंन भजले नाम मुरार । कहु नानक निजमति साधनको भाष्यों तोहि पुकार ॥ ४९ ॥

जो नर दुखमें दुख नहिं माने । सुखसनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटी मानै ॥ नहिं निन्दा नहिं स्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना । हर्ष शोकते रहे नियारो नाहिं मान अपमाना ॥ आसा मनसा सकल त्यागकै जगत रहे नीरासा । काम क्रोध जिहिं परसै नाहिंन तिहिं घट ब्रह्म निवासा ॥ गुरुकिरपा जिहिं नरको कीनी तिहिं यह युगति पछानी । नानक लीन भयो गोविन्दसों ज्यों पानीसँग पानी ॥ ५० ॥

कबीरकी साखी।

—:०:—

माधो जलकी प्यास न जाय। जलमहिं अग्नि उठी अधिकाय॥ तू जलनिधि हौं जलकी मीन। जलमहिं रहौं जलहिं बिन खीन॥ तू पिंजर हौं सुअटा तोर। जम मंजार कहा करै मोर॥ तू तरुवर हौं पंखी आहिं। मँदभागी तेरो दर्शन नाहिं॥ तू सतगुरु हौं नौतन चेला। कह कबीर मिल अंतकि वेला॥५१॥

अब मोहिं जलत राम जल पाया। राम उदक तन जलत बुझाया॥ मन मारण कारण बन जाइये। सो जल बिन भगवंत न पाइये॥ जिहिं पावक सुर नर हैं जारे। राम उदक जन जलत उबारे॥ भवसागर सुख सागरमाहीं। पीवरहे चल निखुटत नाहीं॥ कह कबीर भज्ञ शारँगपानी। रामउदक मेरी तृषा बुझानी॥ ५२॥

अंधकार सुख कभूं न सोइ हैं॥ राजा रंक दोउ मिलि रोइ हैं॥ जोपै रसना राम न कहवो। उपजत बिनशत रोवत रहवो॥ जस देखिये तरुवरकी छाया। प्राण गये कहु काकी माया॥ जस जंतीमहिं जीउ समाना। मुये मर्मको का कर जाना॥ हंसा सरवर काल शरीर। रामरसायन पिउ रे कबीर॥ ५३॥

जब हम एको एक कर जान्या। तब लोगहिं काहे दुख मान्या॥ हम आपतहिं अपनी पति खोई। हमरे खोज परो मत कोई॥ हम मंदे मंदे मनमाहीं। साँझ पात काहूसों नाहीं॥ पति अपति ताकी नहीं लाज। तब जानहुँगे जब उघरैगो पाज॥ कह कबीर पति हरि परमान। सर्व त्याग भज श्रीभगवान॥५४॥

जो जन परमित परम न जाना। वा तनही बैकुंठ समाना॥

ना जाना बैकुंठ कहाही । जान जान सभ कहहिं तहाँहीं ॥
कहन कहावन नहिं. पतियैहै । तौ मनमाने जाते हौं मैं जैहै ॥
जबलग मन बैकुंठकी आस । तबलग होय नहीं चरणनिवास ॥
कहु कबीर इह कहिये काहि । साधुसंगत बैकुंठहि आहि ॥ ५५ ॥
अवर मूये क्या सोग करीजे । तो कीजे तो आप न जीजे ॥
मैं न मरौं मरबो संसारा । अब मोहिं मिल्यो जियावनहारा ॥
या देही मरमल महकंदा । ता सुख विसरे परमानन्दा ॥
कुअटा एक पंचपनिहारी । टूटी लाज भरैं मतिहारी ॥ कह
कबीर इक बुद्धि विचारी । ना वह कुअटा ना पनिहारी ॥ ५६ ॥
स्थावर जंगम कीट पतंगा । जन्म अनेक किये बहु रंगा ॥
तबसे हम घर बहुत बसाये । जब हम राम गरभ है आये ॥
योगी जती तपी ब्रह्मचारी । कब्रहूँ राजा छत्रपति कबहूँ भिखारी ॥
शाकत मरहिं सन्त सब जीवहिं । राम रसायन रसना पीवहिं ॥
कह कबीर प्रभु किरपा कीजे । हार परे अब पूरा दीजे ॥ ५७ ॥
चोवा चन्दन मर्दन अंगा । सो तन जलै काठके संगा ॥
इस तन धनकी कवन बड़ाई । धरनि परैं उर वार न जाई ॥
रात जो सोवहिं दिस करे काम । इक क्षण लेहिं न हरिको नाम ॥
हाथ तांडोर मुख खायो तंबोर । मरती बार कस बांध्यो चोर ॥
गुरुमति रसरस हरिगुण गावै । रामहिं राम रमत सुख पावै ॥
किरपा करके नाम दृढ़ाई । हहि हरि बास सुगंध बसाई ॥
कहत कबीर चेत रे अंधा । सत्य राम झूँठा सब धंधा ॥ ५८ ॥
जमते उलट भये हैं राम । दुख विनसे सुख कियो विश्राम ॥
वैरी उलट भये हैं मीता । शाकत उलट सुजन भये चीता ॥
अब मोहिं सर्व कुशलकर मान्या । शांत भई जब गोविंद जान्या ॥
तनमें होती कोटि उपाधि । उलट भई सुख सहज समाधि ॥

आंप पछानै आपै आप । रोग न व्यापै तीनौं ताप ॥ अव मन उलट सनातन हुआ । तव जान्या जव जीवत मुआ॥ कह कवीर सुख सहज समावो । आप न डरो न अवर डरावो ॥ ५९ ॥

कंचन सो पाइये नहिं तोल । मनदे राम लिया है मोल ॥ अव मोहिं राम अपना कर जान्या । सहस सुभाय मेरा मन मान्या ॥ ब्रह्मा कथ कथ अंत न पाया । राम भगति बैठे घर आया ॥ कह कवीर चंचल मति त्यागी । केवल रामभगति निज भागी ॥ ६० ॥

जिहिं मरनेसमय जगत त्रास्या । सो मरना गुरुशब्द प्रगास्या ॥ अव कैसे मरौं मरन मन मान्या । मर मर जाते जिन राम न जान्या ॥ मरनो मरन कहै सव कोई । सहजै मरै अमर होय सोई ॥ कह कवीर मन भया अनँदा । गया भरम रह्या परमानंदा ॥ ६१ ॥

जाके हरिसा ठाकुर भाई । मुक्ति अनंत पुकारन जाई ॥ अव कहु राम भरोसा तोरा । तव काहूका कवन निहोरा ॥ तीनि लोक जाके हैं भार । सो काहे न करे प्रतिपार ॥ कह कवीर इक वुद्धि विचारी । क्या वश जो विप दे महतारी ॥६२॥

विनसत सती होय कैसे नारि । पंडित देखौ हृदय विचारि ॥ प्रीति विना कैसे वँधै सनेह । जवलग रस तवलग नहिं नेह ॥ साह निसत करै जीय अपने । सो रमैये को मिलै न सुपने ॥ तन मन धन गृह सौंप शरीर । सोइ सुहागन कहै कवीर ॥६३॥

विपय व्याप्या सकल संसार । विपया लै डूवी संसार ॥ रे नर नार चौंड़ कत वोड़ी । हरिसों तोड़ि विपया सँग जोड़ी ॥ सुर नर दाधे लागी आग । निकट नीर पशु पीवसन आग ॥ चेतत चेतत निकस्यो नीर । सो जल निर्मल कथत कवीर ॥६४॥

जिहिं कुल पूत न ज्ञान विचारी। विधवा कस न भई महतारी॥
जिहिं नर रामभगति नहिं साधी। जन्मत कस न मुयो अपराधी॥
मुच मुच गरभ गये किन बच्या। वुड भुजरूप जीवै जगमइया॥
कह कबीर जैसे सुंदर सरूप। नाम विना जैसे कुब्ज कुरूप॥ ६५॥
जो जन लेहिं खसमका नाउँ। तिनके सद वलिहारे जाउँ॥
जो निर्मल हरिके गुण गावै। सो भाई मेरे मन भावै॥
जिहिं घट राम रह्यो भरपूर। तिनकी पदपंकज हम घूर॥
जाति जुलाहा मतिका धीर। सहज सहज गुण रमे कबीर॥ ६६॥
जिहिं मुख पाँचों अमृत खाये। तिहिं मुख देखत लूकट लाये॥
इक दुख रामराय काटहु मेरा। अगनि दहै अरगर भवसेरा॥
काया विगूती वहुविध भाँती। को जारे को गड़ले माटी॥
कह कबीर हरिचरण दिखावहु। पाछेते यम क्यों न पठावहु॥ ६७॥
आपै पावक आपै पवना। जारै खसम तो राखै कवना॥
राम जपत तन जर क्यों न जाय॥ रामनाम चित रह्या समाय॥
काको जरै काहि दोय हान। नटवर खेलै शारंगपान॥
वीर अक्षर दोय भाख। होयगा खसम तो लेगा राख॥ ६८॥
ना मैं योग ध्यान चित लाया। बिन वैरागन छूटै माया॥
कैसे जीवन होय हमारा। जब न होय राम नाम अधारा॥
कहु कबीर खोजहुँ असमाना। रामसमान न देखो आना॥ ६९॥
जिहिं सिर रच रच धांवत पाग। सो सिर चुंच सवाँरहिं काग॥
इस तन धनको क्या गरबैया। राम नाम काहे न दृढैया॥
कहत कबीर सुनहु मन मेरे। यही हवाल होहिंगे तेरे॥ ७०॥
अहनिशि एक नाम जो जागे। केतक सिद्धि भये लव लागे॥
साधक सिद्ध सकल मुनि हारे। एक नाम कलिपतर तारे॥
जो हरि हरे सो होहिंन आना। कह कबीर राम नाम पछाना॥ ७१॥

कबीर भजनावली।

राग सोरठ।

कौनको पूत पिता को काको। कौन मरै को देय संतापो॥ हरि हठ जग को ठगौरी लाई। हरिके व्योग कैसे जीवो मेरी माई॥ कौनको पुरुष कौनकी नारी। या तत्त्व लेहु शरीर विचारी॥ कह कबीर ठगसों मन मान्या। गई ठगौरी ठग पहँचान्या॥७२॥

रे जीव निलज लाज तोहिं नाहीं। हरि तज कत काहूके जाहीं॥ जाको ठाकुर ऊँचा होई। सो जन परघर जात न सोई॥ सो साहिब रह्या भरपूर। सदा संग नाहीं हरि दूर॥ कमला चरण शरण है जाके। कहु जन का नाहीं घर ताके॥ सब कोऊ कहै जासुकी वाता। सो समरथ निज पति है दाता॥ कहै कबीर पूरन जग सोई। जाके हिरदय अवर न होई॥ ७३॥

अब मोकों भये राजाराम सहाई। जन्ममरण कट परम गति पाई॥ साधू संगत दियो रलाय। पंच दूतते लियो छुड़ाय॥ अमृत नाव जपों जप रसना। अमोल दास कर लीनो अपना॥ सतगुरु कीनो पर उपकार। काढ़ लीन सागर संसार॥ चरण कमलसों लागी प्रीत। गोविंद वसै निता नित चीत॥ माया तप्त वुझ्या अंगार। मन संतोष नाम आधार॥ जल थल पूर रहे प्रभु स्वामी। जत पेखो तत अंतरयामी॥ अपनी भगति आपही दृढ़ाई। पूरब लिखत मिल्यो मेरे भाई॥ जिस कृपा करै नित पुरन साज। कबीरको स्वामी गरीबनेवाज॥ ७४॥

राग गौरी।

जेते जतन करत ते डूबे भवसागर नहिं तार्यो रे। कर्म धर्म करते बहु संयम अहंबुद्धि मन जार्यो रे.॥ सास ग्रासको

दातों ठाकुर सो क्यों मनो विसारयो रे । हीरा लाल अमोल जन्म है कौड़ी बदले हारयो रे ॥ तृष्णा तृषा भूँख भ्रम लागी हिरदय नाम विचारयो रे। उनमत मान रह्यो मनमाहीं गुरुका शब्द न धारयो रे ॥ स्वादलुब्ध इन्द्रीरस प्रेरयो मन्दरस लेत विकारयो रे । भरम भाग सन्तन संगाने कासट लोह उधारयो रे ॥ धावत योनि जन्म भ्रम थाके अब दुख कर हम हारयो रे। कह कबीर गुरु मिलत महारस प्रेमभक्ति निस्तारयो रे ॥ ७५ ॥

॥ हरीयश सुनहि न हरीगुन गावहिं । बात नहीं असमान गिरावहिं ॥ ऐसे लोगनको क्या कहिये । तिनते सदा डराने रहिये ॥ आप न देहिं चुरूभर पानी । तिहिं निंदहिं जिहिं गंगा आनी ॥ बैठत उठत कुटिलता चालहि । आप गये औरनहूँ घालहि ॥ छाँड कुचर्चा आन न जानहि । ब्रह्माहूको कह्यो न मानहि ॥ आप गये औरनहू खोवहिं । आग लगाय मंदिरमें सोवहिं ॥ औरन हँसत आप हैं काने । तिनको देख कबीर लजाने ॥ ७६ ॥

एक ज्योति एका मिली किंवा होय महोय ॥ जित घट नाम न ऊपजै फूट मरै जन सोय । साँवल सुन्दर रामैया मेरा मन लागा तोहिं ॥ साथ मिले सिद्ध पाइये कि यह योगकी भोग । दुहुँ मिल कारज ऊपजै राम नाम संयोग ॥ लोग जाने यह गीत है यह तो ब्रह्म विचार। ज्यों काशी उपदेश होय मानस मरती बार ॥ कोई गावै को सुने हरी नामा चित लाय । कहु कबीर संशय नहीं अंत परमगति पाय ॥ ७७ ॥

अगिन न दहै पवन नहिं मगनै तस्कर नेर न आवै । राम नाम धनकर संचोनी सो धन कतहुँ न जावै ॥ हमारा धन माधव गोविंद धरणीधर यही सार धन कहिये । जो सुख प्रभु

गोविन्दकी सेवा सो सुख राज न लहिये ॥ इस धन कारण शिव सनकादिक खोजत भये उदासी । मन मुकुन्द जिह्व नारायण परै न जमकी फाँसी ॥ निजधन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागा । जलत अंभ थंभ मन धावत भ्रम बन्धन भय भागा ॥ कहै कबीर मदनके माते हिरदय देख विचारी । तुम घर लाख कोटि अश्व हस्ती हम घर एक मुरारी ॥७८॥

कालबूतकी हस्तनी मन बौरा रे चरित रच्यो जगदीश । काम सु आय गज वश परे मन बौरा रे अंकुश सह्यो शीश ॥ विषय वाच हरि राच समझ मन बौरारे । निरभय होय न हरी भज्यो मन बौरा रे ॥ गह्यो न राम जहाज मरकट मुष्टी अनाजकी मन बौरारे लीनी हाथ पसार । छूटनको संसार परया मन बौरारे नाच्यो घर घर वार ॥ ज्यों नलनी सुअटा गह्यो मन बौरारे माया यह व्योहार । जैसा रंग कुसुंभका मन बौरारे त्यों पसरयो पासार ॥ न्हावनको तीर्थ घने मन बौरारे पूजनको बहु देव । कह कबीर छूटन नहीं मन बौरारे छूटन हरिकी सेव ॥७९॥

ज्यों कपिके कर मुष्टि चननकी लुब्धन त्याग दियो । जो जो कर्म कियो लालचसों ते फिर गरहि परयो ॥ भगति बिन बिरथे जन्म गयो । साधु संगत भगवान भजन बिन कहीं न सचु रह्यो ॥ ज्यों उद्यान कुसुम प्रफुल्लित कितहूँ न प्राण लियो । तैसे भ्रमत अनेक योनिमें फिर फिर काल हयो ॥ या धन यौवन अरु सुत दारा पेखनको जो दियो । तिनहीं माहीं अटक जो उरझे इन्द्री प्रेर लियो ॥ अवध अनल तन तृणको मन्दिर चहुँदिशि ठाट ठयो । कह कबीर भवसागर तरणको पै सतगुरु ओट लियो ॥ ८० ॥

लख चौरासी जीव योनिमें भ्रमत नन्द बहु थाको रे ॥ भगति

हेत अवतार लियो है भाग बड़ो वपुराको रे ॥ तुम जो कहत हो नन्दको नन्दन नन्द सो नन्दन काको रे । धरणि अकाश दशौ दिशि नाहीं तब यह नंद कहाँ थो रे ॥ संकट नहीं परै योनि नहिं आवै नाम निरंजन जाको रे । कबीरको स्वामी ऐसो ठाकुर जाके माई न बापो रे ॥ ८१ ॥

आस पास घन तुलसी कबिरवा माँझ बनारस गाउँ रे । वाका सरूप देख मोहिं ग्वारनि मोको छोड़ न आउ न जाउँ रे ॥ तोहि शरण मन लागो । शारंगधरसों मिलै जो वड़भागो ॥ बृन्दावन मनहरन मनोहर कृष्ण चरावत गाउँरे । जाका ठाकुर तुहीं शारंगधर मोहिं कबीरा गाउँरे ॥ ८२ ॥

राग गौरी पूरवी ।

स्वर्गवास नहिं वांछिये डरिये न नर्क निवास । होना है सो होय है मनहिं न कीजे आस ॥ रमैया गुन गाइये जाते पाइये परम निधान । क्या जप क्या तप संयमो क्या व्रत क्या अस्नान ॥ जबलग जुगति न जानिये भाव भगति भगवान ॥ संपति देख न हरषिये विपति देख न रोय । ज्यों संपति त्यों विपति है विधिने रच्या सो होय ॥ कह कबीर अब जान्या संतन हृदय मँझार । सेवक सो सेवा भले जिहिं घट वसहिं मुरार ॥ ८३ ॥

राग आसावरी ।

हज्ज हमारी गोमती तीर । जहाँ वसहिं पीतांवर पीर ॥ वाह वाह क्या खूब गावता है । हरिका नाम मेरे मन भावता है ॥ नारद शारद करहिं खवासी । पास बैठी बीबी कमला दासी ॥ कंठे माला जिह्वा राम । सहस्र नाम लै लै करूं सलाम ॥ कहत कबीर रामगुण गावों । हिंदु तुरक दोऊ समझावों ॥ ८४ ॥

जवलग तेल देवे मुखवाती तव सूझे सभ कोई। तेल जले वाती ठहरानी सूना मन्दिर होई॥ रे वौरे तोहिं घरी न राखे कोई। तू राम नाम जप सोई॥ काकी मात पिता कहु काको कवन पुरुषकी जोई। घट फूटे कोउ वात न पूछे काढ़ो काढ़ो होई॥ देहरी वैठी माता रोवे खटिया लेगये भाई। लट छिटकाये तिरिया रोवे हंस इकेला जाई॥ कहत कवीर सुनो रे संतहु भवसागरके ताई। इस बन्दे शिर जुलम होत है जम नहीं हटे गुसाई॥ ८५॥

कहा श्वानको सिमृत सुनाये। कहा शाकतपै हरिगुन गाये॥ राम राम राम रमे रम रहिये। शाकतसों भूल नहिं कहिये॥ कौआ कहा कपूर चुगाये। कहिं विसीयरको दूध पियाये॥ सतसंगत मिल विवेक वुद्ध होई। पारस परस लोहा कंचन सोई॥ शाकत श्वान सभ करे कराया। जो धुर लिख्या सो कर्म कमाया॥ अमृत लै लै नीम सिंचाई। कहत कवीर वाको सहज न जाई॥ ८६॥

कियो शृंगार मिलनके ताई। हरि न मिले जग जीवन गुसाई॥ हरि मेरो पीर हौं हरिकी वहुरिया। राम वड़े मैं तनक लहुरिया॥ धनि पुर एकै संग वसेरा। सेज एक पै मिलन दुहेरा॥ धन्य सुहागन जो पिय भावे। कह कवीर फिर जन्म न आवे॥ ८७॥

लंकासा कोट समुद्रसी खाई। तिहिं रावण घर खवर न पाई॥ क्या माँगों कछु थिर न रहाई। देखत नयन चल्यो जग जाई॥ इक लख पूत सवालख नाती। तिहिं रावणघर दिया न वाती॥ चंद सूरज जाके तपत रसोई। वैसन्दर जाके कपड़े धोई॥ गुरु मति रामहिं नाम वसाई। आस्थिर रहै न कतहूँ जाई॥

कहत कबीर सुनोरे लोई। राम नाम बिन मुक्ति न होई ॥८८॥
अतर मिले जो तीरथ न्हावे तिस वैकुंठ न जाना। लोक पतीने कछू न होवे नाहीं राम अयाना ॥ पूजो राम एकही देवा। साँचा न्हावन गुरुकी सेवा ॥ जलके मज्जन जे गति होवे नित नितमें ढग न्हावहिं। जैसे मेंढ़क तैसे ओह नर फिर फिर योनी आवहिं ॥ मनों कठोर मरें बनारस नरक न बाच्या जाई। हरिका संत मरे हाढँवहिं सकली सैन तराई ॥ दिन सुरैन वेद नाहीं शास्त्र तहाँ वसे निरंकारा। कह कबीर नर तिसहि ध्यावो बाव-रिया संसारा ॥ ८९ ॥

सोरठ।

जब जरिये तब होय भसम तन रहै किरम दल खाई। काची गागर नीर परत है या तनकी यही बड़ाई ॥ काहे भया फिरतो फूल्या फूल्या। जब दश मास ऊर्ध्व मुख रहता सो दिन कैसे भूल्या ॥ ज्यों मधुमाखी त्यों सठोर रस जोर जोर धन कीया। मरती बार लेहु लेहु करिये भूत रहन क्यों दीया ॥ देह-रीलों बरती नारि संग भई आगे सहज सुहेला। मरघटलौं सब लोग कुटुंब भयो आगे हंस इकेला ॥ कहत कबीर सुनो रे प्राणी परे काल ग्रस कूआ। झूँठी माया आप बँधाया ज्यों नलिनी भ्रम सूआ ॥ ९० ॥

क्या पढ़िये क्या सुनिये। क्या वेद पुराणा सुनिये ॥ पढ़े सुने क्या होई। जो सहज न मिल्या सोई ॥ हरिका नाम न जपसि गँवारा। क्या शोचहिं बारंबारा ॥ अँधियारे दीपक चहिये। इक वस्तु अगोचर लहिये ॥ वस्तु अगोचर पाई। घट दीपक रह्यो समाई ॥ कह कबीर अब जान्या। जब जाना तो मन मान्या ॥ मैंने माने लोग न पतीजै। न पतीजै तो क्या कीजै॥९१॥

वेद पुराण सभी मत सुनके करी कर्मकी आशा । काल ग्रसत सब लोग सयाने उठ पंडितपहँ चले निराशा ॥ मनरे सरयो न एकौ काजा । भज्यो न रघुपति राजा ॥ वनखंड जाय योग तप कीन्हो कन्द मूल चुन खाया । नादी वेदी शब्दी मौनी यमके पट लिखाया ॥ भक्ति नारदी हृदय न आई काछ पूछ तन दीना । रात रागिन डिंभ होय बैठा उन हरिपहिं क्या लीना ॥ परयो काल सभी जग ऊपर माहिं लिखे ब्रह्मज्ञानी । कह कबीर जन भये खलासे प्रेमभगति जिहिं जानी ॥ ९२ ॥

बहु प्रपंच कर परधन ल्यावै । सुत दारा वहिं आन लुटावै ॥ मन मेरे भूले कपट न कीजै । अंत निबेरा तेरे जीयपहिं लीजै ॥ छिन छिन तन छीजै जरा जनावै । तब तेरी ओप कोई पानी हूँ न पावै ॥ कहत कबीर कोई नहिं तेरा । हिरदय राम क्यों न जबहि सवेरा ॥ ९३ ॥

हृदय कपट मुख ज्ञानी । झूँठे कहा विलोकत पानी ॥ काया मांसज कौन गुना । जो घटभीतर है मलना ॥ लोकी अडसठ तीरथ कन्हाई । करुणांपन तऊ न जाई ॥ कह कबीर बीचारी । भवसागर तार मुरारी ॥ ९४ ॥

राग धनाश्री ।

जो जन भावभक्ति कछु जानै ताको अचरज काहो । क्यों जलजलमें पैठ न निकसै त्यों दुर मिल्या जुलाहो ॥ हरिके लोगा मैं तो मतिका भोरा । जो तन काशी तजहि कबीरा ॥ रमैये कहा निहोरा ॥ कहत कबीर सुनोरे लोई । भर्म न भूला कोई ॥ क्या काशी क्या ऊखर मगहर राम हृदय जो होई ॥९५॥

भजन ।

सतगुरु हो महराज मोपै साईं रंग डारो ॥ टेक ॥ शब्दकी

चोट लगी मेरे मनमें वेध गयो तन सारो। औषध मूल कछू नहिं लागे क्या करै वैद विचारो॥ सुर नर मुनि जन पीर औलिया, कोई न पावै पारो। साहब कबीर सर्व रंग रंगिया सब रंगसे रंग न्यारो॥ ९६॥

क्या गावै घर दूर दिवाने क्या गावै घर दूर॥ टेक॥ शेख फरीद कुयेमें लटके होगये चकना चूर। अनलहक कह हकको पहुँचे, सूली दे मनसूर॥ पाँच चोर निशिवासर लूटैं जानत सकल जहूर। तिनको जीत परम सुख पावै सोई सियानो शूर॥ शाह सुलतान वलख तज दीनो सोलहसौ तज दइ हूर। गोरख गोपीचन्द भरथरी शिरमें डाली धूर॥ नानक नामा और वाजीदा, मिलमिल झलकै नूर। कहत कबीर सुनो भाई साधो सौदा पूरम्पूर॥ ९७॥

मैं क्या करूं तशवीह और माला मनमाला हुआ मेरा रे॥ टेक॥ धाम देहरे वहुतिक देखे दरगाहनविच हेरारे। पीर मुनी सव खोजत हारे कहीं न पाया तेरा डेरारे॥ कोइ कहे ब्रह्म नाभिकमलमें कोइ गगनविच हेरारे। अडसंठ तीरथ या घटभीतर वहीं मित्र तेरा डेरारे॥ दौड़ दौड़ मेरे मन वसिया सहज सुरतसे फेरारे। आठ पहर सोवत और जागत लागरहा जप तेरारे॥ नूर और जलवे इसीमें दरशें, दीये तले अँधेरा रे। मानत नाहिं अमानी दुनिया, कहत कबीर बहुतेरा रे॥ ९८॥

तनका तनिक भरोसा नाहीं काहे करत गुमाना रे॥ टेक॥ टेढ़े चलैं मरोड़ैं मुछें विषय बान लिपटानारे। ठोकर लागे चेतकर चलना कर जायँ प्राण पयाना रे॥ मेरी मेरी करता डोलै माया देख लुभाना रे। या वस्तीमें रहना नाहीं साँचे घर उठ ज़ाना रे॥ पीर फकीर औलिया योगी रहे न राजा रानारे।

पैग पैग पै तक तक मारे, काल अचानक बानारे ॥ काम क्रोध मद लोभ छाँड़के शरण धनीकी आनारे । कहत कवीर विसारे नाम त्रैलोकी नहीं ठिकानारे ॥ ९९ ॥

कबीरा तेरे हाथ न आवै ॥ टेक ॥ क्या नैना चमकावै सुन्दर क्या नैना चमकावै ॥ रूपा पहरे रूप दिखावै सोना पहर रिझावै । गले पहिरे मोतीकी माला तीनलोक ललचावै ॥ चटक मटकके नैन फिरावै बहुतेरे यह नारि रिझावै । हम नहीं वैसे कौशक मुनिसे, कुत्ता करके फिरावै ॥ कहत कबीरा सुनो भाइ साधो, दिन दिन भक्त बढ़ावै । हरिचरनन पर करूं बलैया तनकी तपन बुझावै ॥ १०० ॥

नहरवा हमको न भावै । टेक ॥ साईंकी नगरी परम अति सुंदर, जहँ कोइ जाय न आवै ॥ चाँद सूरज जहाँ पवन न पानी, को सँदेश पहुँचावै । दरद यह साईंको सुनावै ॥ आगे चलूँ पंथ नहिं सूझै पीछे दोप लगावै । क्यहि विधि ससुरे जाउँ मोरि सजनी विरहा जोर जनावै ॥ विषय रस नाच नचावै ॥ बिन सतगुरु अपना नहिं कोई को यह राह बतावै । कहत कबीरे सुनो भाइ साधो स्वप्ने न प्रीतम पावै ॥ तपन यह जीवकी बुझावै ॥ १०१ ॥

हटड़ी छोड़ चला बंजारा । टेक ॥ इस हटड़ी बिच मानिक मोती कोइ विरला परखनहारा । इस हटड़ीके नौ दरवाजे दशवाँ ठाकुर द्वारा ॥ निकल गया ठाकुर मंदिरसे रहगया चिकड़ गारा । कहत कबीर सुनो भाइ साधो झूँठा जगतपसारा ॥ १०२ ॥

मन तू क्यों भूलारे भाई तेरी सुध बुध कहाँ विसराई ॥ टेक ॥ जैसे पंछी रैन बसेरा बसे वृक्षमें आई । भोर भये सब आप आपको जहाँ तहाँ उड़ जाई ॥ स्वपनेमें तोहि राज्य मिलो है

हाकिम हुकम दुहाई । जाग पड़ा जबला उन लशकर पलक खुलै सुध पाई ॥ मात पिता बन्धू सुत तिरिया ना कोइ सगा सगाई । ये तो सब स्वारथके संगी झूँठी लोक बड़ाई ॥ सागरमाही लहर उठत है गनिता गिनी न जाई । कहैं कबीर सुनो भाइ साधो दरिया लहर समाई ॥ १०३ ॥

जायगा मैं जानी मन रे तू जायगा मैं जानी ॥ टेक ॥ आवेगी कोइ लहर लोभकी डूबैगा बिन पानी । राज्य करन्ते राजा जायँगे रूपावन्ती रानी ॥ वेद पढ़न्ते पंडित जायँगे कथा सुनंते ज्ञानी । जोगी जैहैं जंगम जैहैं औ जैहैं अभिमानी ॥ धरती जाय अकाशहु जैहै जाय पवन अरु पानी । कहत कबीर सतभक्तन जैहैं जिनकी मत ठहरानी ॥ १०४ ॥

गगनमें आवाज होरही झीनी । कोइ सुनता है नर ज्ञानी ॥ ॥ टेक ॥ पहले जो आया नाद बिन्दसे फेर जमाया पानी । घट घट अन्दर आप रमरहा अलख पुरुष निर्वानी ॥ बिन धरती इक मंदिर देखा बिन सागर जहाँ पानी । बिन दीपक उजियार मंदिरमें बोलत अमृत बानी ॥ मृतमंडलमें गऊ जो ब्यानी धरती भई सियानी । माखन माखन संतन खाया छाछ जगत भरमानी ॥ कहत कबीर सुनो भाइ साधो पद पद है निर्वानी । जो कोइ याको अर्थ लगावै सो नर पूरण ज्ञानी ॥१०५॥

माया महा ठगनी हम जानी । टेक ॥ निर्गुण फाँस लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी ॥ केशवके कमला होय बैठी शिवके भवन भवानी । पंडाके मूरत हुइ बैठी तीरथमें भइ पानी ॥ योगीके योगिनि होय बैठी राजाके घर रानी । काहूके हीरा होय बैठी काहूके कौड़ी कानी ॥ भक्तनके भगतिन हुइ बैठी ब्रह्माके ब्रह्मानी । कहै कबीर सुनो भाइ सन्तो यह सब अकथ कहानी १०६

आपही धारम धारी साहब आपही खेल खिलाड़ी रे । टेक ॥ तंबू तो आसमान वनाया जमीं गलीचा धारी रे । चाँद सूरज दोउ मशल वनाये तारागण फुलवारी रे ॥ चेतन माली वाग लगाया लख चौरासी क्यारी रे । एक वीजका सकल पसारा क्यारी न्यारी न्यारी रे ॥ सुरत निरतकी चौसर वाजी यह फाँसा जग सारी रे । फाँसा चाहे जिसे जितावे सारी कौन विचारी रे ॥ छक्के पंजेसे नर्द वचावै वाजी कठिन करारी रे । जिसकी नर्द पक्के घर आवै सोई सुघड़ खिलारी रे ॥ शृंगी ऋषिसे वनमें मोहे दीना कौन चिकारी रे । जिसके ऊपर नजर साहवकी उसका जगत भिखारी रे ॥ कहैं कवीर समझके खेलो अवके जीत हमारी रे ॥ १०७ ॥

चुवत अमीरस भरत ताल जहाँ शब्द उठै आसमानी । टेक॥ सरिता उमंड सिंधको सोखे नहीं कुछ जात वखानीं हो ॥ चाँद सुरज तारागण नहिं वहँ नहिं वहँ रैन विहानी हो । वाजे वजें सितार वाँसुरी निरंकार मृदु वानी हो ॥ कोट झिलमिली जहँ वहँ झलकें विन जल वर्षत पानीहो । शिव अज विष्णु सुरेश शारदा निज निज मत अनुमानी हो ॥ दश औतारएक तत राजैं अस्तुति सहज सहानी हो । कहै कवीर भेदकी वातें विरला कोइ पहिचानी हो ॥ १०८ ॥

क्या देख दिवाना हुआ रे । टेक ॥ माया वनी सारकी सूली नारी नरकका कुआरे । हाड़ चाम नाड़ीको पिंजर तामें मनुआँ सुआरे ॥ भाई वन्धू कुटुँव घनेरा तिनमें पच पच मुआरे । कहत कवीर सुनो भाइ साधो हार चल्यो जग जुआँ रे ॥ १०९ ॥

मुखड़ा क्या देखै दर्पनमें । तेरे दया धर्म नहिं मनमें ॥ आँवकी डाल कोयलिया वोलै सुअना वोले वनमें । घरवारी तो

घरमें राजी फकड़ राजी वनमें ॥ ऐंठा धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुलफनमें ।, गली गलीकी सखी रिझाई दाग लगायो तनमें ॥ पाथरकी इक नाव बनाई उतरा चाहै दिनमें । कहत कबीर सुनो भाइ साधो यह क्या चढ़ै गेरनमें ॥ ११० ॥

भजन चेतावनी ।

भजन ।

जगत है रैनका सुपना, समझ मन कोइ नहिं अपना । पड़ा क्यों लोभकी धारा, बहा सब जात संसारा ॥ घड़ा ज्यों नीरका फूटा, पात ज्यों डारसे टूटा । ऐसी तू जान जिन्दगानी, अबहूँ मन सोच अभिमानी ॥ फूल मत देख तन गोरा, जगतमें जीव ना थोरा । तजो मन लोभ निठुराई, रहो निःशंक जगमाई ॥ सजन परिवार सुत दारा, सभी उस वक्त हैं न्यारा । निकल जब प्राण जावेंगे, नहीं कोइ काम आवेंगे ॥ सदा मत जान यह देहा, लगा श्रीकृष्णसे नेहा । छुटे यमजालका घेरा, कहै हरिदास जन तेरा ॥ १११ ॥

रे मन तो सम कौन अभागी । टेक ॥ धनके हेत बहुत दुख पावे हरिचिन्तामणि त्यागी ॥ संकटहरण सर्व दुखभंजन हरिसे प्रीति न लागी । परमातमसे विमुख रहा तू नहिं तेरी मति जागी ॥ सार पदारथ कैसे पावै हे विषयोंके रागी । अर्थ काम ईश्वरसे चाहै भक्ति कभी नहिं माँगी ॥ अब भी अपना रूप विचारो बन आतम अनुरागी । परमानन्द चतुर वह पावै जिनकी दुर्मति भागी ॥ ११२ ॥

वँगला अजव वनाया साहव वँगला अजव वनायाहो ॥ टेक ॥ इस वँगलेका मोल न तोला हीरा लाल जड़ाया हो । नौ दरवाजे इस वँगलेके दशवाँ वन्द कराया हो ॥ पहरा चौकी हर दरवाजे देखो उसकी माया हो । अंदर इसके वाग वगीचे वीच फवारा लगाया हो ॥ झलकै ज्योती वरसै मोती सतगुरु भेद वताया हो । अनहद गरजै मेहा वरसै पवन चलै पुरवाया हो ॥ हंसा मान सरोवर न्हावें कागा कुमत कमाया हो । पाँच तत्वका वना यह वँगला हरतत आप समाया हो ॥ इस वँगलेकी सार न जानी आखर खाक मिलाया हो । घासीराम निरखै जव वँगला साहव इसमें पाया हो ॥ ११३ ॥

मन तू काहे गुमान करै । टेक ॥ रामनाम कवहूँ नहिं सुमिरै ना कवुँ ध्यान धरै ॥ जो दिन आज है कलको नाहीं पल-पल इक विछुरो । जो कुछ करना है अव करले, औसर जात टरो ॥ रामचन्द्रसे तपसी राजा तिनपर विपत पड़े । सीताहरन मरन दशरथका वन वन राम फिरे ॥ हरिश्चंद्र औ वलिसे दानी तिनसे मान टरे । कहाँ गये मोरध्वज राजा जो धर्मवीच अड़े ॥ और अत्यन्त महावलवानी कालके मुक्ख पड़े । घासीराम हरि शरण जो आवै फिर क्यों जोन पड़े ॥ ११४ ॥

प्यारे मन रणमें चौकस जाना ॥ टेक ॥ तीनि लोक मायाने जीते तृष्णा अति वलवाना । साधुसन्त अवधूतहु लूटे वाँच लियो परवाना ॥ राग द्वेष सेनापति ऐसे मारे सन्मुख वाना । एड़ी नवेश अस्मता मंत्री कठिन वड़ो मैदाना ॥ क्षमा अरज विद्या तोश सत् पाँचो शस्त्र लगाना । ज्ञान विमान बैठ धीरजसों निश्चय जोर जमाना ॥ निर्भय प्राण रहै या जावै नेकहु मति घवराना । सो मुझसे कहे देत हैं माधौ पावैं पद निरवाना ॥

अपना आप करो निस्तार ॥ टेक ॥ अपना लेखा आप संभारो खोटा खरा विचार। औ जो दुष्टकर्म मन चितवै सो सो वेग निकार ॥ बैठ विचार करो मनमाहीं अपना आप सँभार। देह अभिमान छरदवत त्यागौ मिथ्या जान असार ॥ जो जो कर्म करौ निशिवासर सो सो बैठ विचार। साक्षी होय विचारो सबको जो आचार विहार ॥ देहते भिन्न प्राणते न्यारा अपना आप चितार। नहिं कोइ दुश्मन मानौ नहिं कोइ अपना यार॥ ना काहूको बलकर जीतौ ना काहूते हार। जहँ जहँ चरण धरौ धरनीपर नीची दृष्टि निहार ॥ जो जो भला करौ काहूको सो सो मनसे डार। जो जो बुरा करै कोइ तुमसे सगरो बैठ विसार॥ मुन्सिफ होके आप विचारो खोटे कर्म निकार। जो जो सन्त उपदेश बतावैं सो सो हृदयमें धार ॥ परस्त्री परनिन्दा त्यागौ परधन विष ज्यों डार। चोरी हिंसा खुदी वखीली मिथ्या वचन विसार ॥ साँची रीति चलावो जगमें सबसे राखौ प्यार। कहै हेमा निश्चय कर मानौ भवसे उतरौ पार ॥ ११६ ॥

प्राणी अब तू सुरत सँभार। टेक ॥ क्षण क्षण अवधि घटै निशिवासर बूझत नाहिं गँवार। जो कछु आज होय सो होवै मनते काल विसार ॥ काल काल करते गई आयू किया न कछू विचार। श्वाँसमात्र आयूभर बौरे सोयो पाँव पसार ॥ जो गुजरी सो फेर न आवे अब तू काज सँभार। दुर्लभ देह पाय भज हरिहर हेमा हो उद्धार ॥ ११७ ॥

प्राणी नारायण सुध ले। टेक ॥ छिन छिन अवधि घटै निशिवासर वृथा जात है देह ॥ तरुणापन विषयनसों खोयो बालापन अज्ञाना। वृद्ध भया अबहूँ नहिं समझे कौन कुमति उरझाना ॥ मानुप जन्म दियो जिहि ठाकुर सो तू क्यों विस

रायो । मुक्त होत नर जाके सुमिरे निमिष न ताको गायो ॥ मायाको मद कहा करत है संग न काहू जाय । नानक कहत चेत चिंतामणि हुइ है अंत सहाय ॥ ११८ ॥

रे मन जन्म पदारथ जात । टेक । बिछुरे मिलन बहुरि कब हुइ है ज्यों तरवरके पात ॥ सुनत वात कफ कंठ विरोधी रसना टूटी वात । प्राण लिये यम जात मूढमति देखत जननी तात ॥ छिन इकमाहिं कोटि युग बीतत पीछे नर्ककी वात । यह जग प्रीत सुआ सेमरको चालतही उड़ जात ॥ यमके फंद नहीं पड़वो रे चरणन चित्त लगात । कहत सूर वृथा यह देही अंतर क्यों इतरात ॥ ११९ ॥

मत रहो दिलगीर हरिसों प्रीति लगाय ले ॥ टेक ॥ चिन्ता तजौ भजौ भगवाना प्रेममगन गुण गाय ले । तीन अवस्था वृथा गँवा दी हरिचरणों चित लाय ले ॥ रामसो स्वामि सदा सुखदायक याद करत अपनाय ले । कुल कुटुंब तन धन एक सुपना केवल कृष्ण मनाय ले ॥ साँवरी सूरत माधुरी मूरत नैनन बीच समाय ले । कंठ घिरै तब कौन सहाई हरिके हाथ विकाय ले ॥ सकल काम तू तज मन मेरे रामनाम लौलाय ले । तोको खबर रहैगी नाहीं निकस जायगी वायु रे ॥ सोच विचार देख या तनको माटी बना बनाय रे । जो आयो सो रहन न पायो क्या रंक क्या राव रे ॥ सौधरमें क्यों बूड़त है तू राम नाम निज नाव रे । कहत कबीर कूच शिर ऊपर साधसंग तिर जाव रे ॥ १२० ॥

तेरी चंचलता मिट जायगी मन भ्रुकुटी ध्यान लगाय ले ॥ आलस मिटै देह थिर होवै आसन सिद्ध जमाय ले ॥ तेरी० ॥ निद्रा जाय स्वप्न नहिं आवै अनहद जोत जगाय ले ॥ तेरी० ॥

अक्षय निर्विकल्प सुख होवे संयमको रस खाय ले ॥ तेरी० ॥ निर्भयराम परमगति पावे आतमदेव मनाय ले ॥ तेरी चंचलता मिट जायगी० ॥ १२१ ॥

योंही समदृष्टी हो जायगी, मन गगनाकार बनावो रे ॥ नासाअग्र नयन थिर राखो आसन पद्म जमावो रे ॥ योहीं० ॥ जिह्वा दंत अलग नहिं होवे, दृढ़ यही बंध लगावो रे ॥ योहीं० ॥ अजपा जाप सुरतसों लावो घटमें अलख जगावो रे ॥ योहीं० ॥ निर्भयराम ऐसे संयमते, अंत परम पद पावो रे ॥ योहीं समदृष्टी हो जायगी० ॥ १२२ ॥

नाम जपन क्यों छोड़ दिया । टेक ॥ क्रोध न छोड़ा झूँठ न छोड़ा सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥ झूँठे जगमें दिल ललचा कर असल वतन क्यों छोड़ दिया । कौड़ीको तो खूब सँभाला लाल रत्न क्यों छोड़ दिया ॥ जिहि सुमिरणते अतिसुख पावै सो सुमिरण क्यों छोड़ दिया । खालिस एक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड़ दिया ॥ १२३ ॥

प्रभूने शक्ति अपनीकी अजब होरी लगाई है । अखाड़ा जगतका रचकर अलौकिक रास पाई है ॥ चढ़ाकर प्रेमका सूरज बनाया मस्त आलमको । सुबहसे शामतक जगमें सकल सृष्टी नचाई है ॥ उठाकर बहरसे धूआँ चढ़ाया आसमाँ ऊपर । पवनसे दूदने मिलकर घटा काली जमाई है ॥ घटा कालीमें दामिन जगमगाकर नाच नाचै है । दमामेकी तरह बादलने अद्भुत धूम पाई है ॥ पिघलकर तावसे बादल पड़े धरतीपे धारोंमें । चलाकर मेघ पिचकारी तपत सगरी बुझाई है ॥ उड़ाकर बादसे मट्टी चढ़ाई आसमाँ ऊपर । अबीर अबरक गुलाल आसा सबोंके शिरपै आई है ॥ सुबह और शामको कीड़े परिन्दे गीत गाते

हैं । खुशीमें आके सारोंने अजब शोभा बनाई है ॥ छिपाक भानु पश्चिममें किया तारीक आलमको । पिलाकर भाँग निद्रावे सकल सृष्टी सुलाई है ॥ निकलकर चाँदने क्या फर्श नूरानं विछाया है । सितारोंकी चमकने आसमाँकी तह छिपाई है । उठाकर भेदका परदा निहारा रासमंडलको । जिधर देखा उध लीला प्रभूकी जीको भाई है ॥ लगाकर ध्यान मन आनन्दसे गदगद हुआ ऐसा । जगत्की भावना हेमा हृदयसे अब भुलाई है ॥ १२४ ॥

दिला इकदम न हो गाफिल यह दुनिया छोड़ जाना है। बगीचे छोड़कर खाली जमीं अन्दर समाना है ॥ वदन नाजुक गुलों जैसा जो लेटे सेज फूलोंपर । यह होगा एकदिन मुर्दा यही कीड़ोंने खाना है ॥ नवेली होयगा भाई न बेटा बाप ना भाई । क्या फिरता है सौदाई जमलने काम आना है ॥ फरिश्ते रोज करते हैं मनादी चार खूटोंमें । महल्ला ऊँचियावाले जहाँको छोड़ जाना है ॥ पियारे नजर कर देखो पड़ी जो माड़िया खाली । गये सब छोड़ यह फानी दगावाजीका वाना है ॥ गलत फहमी है यह तेरी नहीं आराम इस जगमें । मुसाफिर बेवतन है तू कहाँ तेरा ठिकाना है ॥ पियारे नजर कर देखो न खेशोंमें कोई तेरा । जनो फरजन्द सब कूके किसे तुझको छुड़ाना है ॥ तमामी रैन गफलतमें गुजारी चारपाईपर । गुजारे रोज खेलोंमें वृथा आयू गँवाना है ॥ यह होंगे सरवसर लेखे हशरके रोज ऐ गाफिल । यह दोजख बीच बद अमलीसे तन अपना जलाना है ॥ १२५ ॥

कहों कहा अपनी अधमाई । टेक ॥ उरझेउ कनक कामिनीके रस नहीं कीर्ति प्रभु गाई ॥ जग झूँठेको साँच जानिके तासों

रुचि उपजाई । दीनबन्धु सुमिरेउ नहिं कबहूँ होत जो संग सहाई ॥ मग्न रह्यो मायामें निशिदिन छुटी न मनकी काई । कह नानक अब नाहिं अंतगति बिन हरिकी शरणाई ॥ १२६ ॥

रे मन ओट ले हो हरिनामा । टेक ॥ जाके स्मरण दुर्मति नाशै पावहिं पद निर्वाना ॥ बड़भागी तिहि जनको जानो जो हरिके गुण गावै । जन्म जन्मके पाप खोयके पुनि वैकुंठ सिधावै ॥ अजामेलको अन्तकालमें नारायण सुधि आई । जा गतिको योगीश्वर वांछित सो गति छिनमें पाई ॥ नाहीं गुण नाहीं कछु विद्या धर्म कौन गज कीन्हा । नानक बरद रामका देखो अभयदान तेहि दीना ॥ १२७ ॥

सैयाँ निकस गये मैं न लड़ी थी ॥ टेक ॥ दश दरवाजे कायानगरके ना जानूँ कौन खिड़की खुली थी । पाँच जिठनियाँ दश दिवरानियां ना जानूँ जने कौनसी लड़ी थी ॥ ना मैं बोली ना मैं चाली ताने दुपट्टा अकेली पड़ी थी । कहत कमाल दई कबीरको बेटी ऐसी ब्याहीसे मैं कुँआरी भली थी ॥१२८॥

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या ॥ जिन नैनोंसे नींद गँवाई तकिया लेफ बिछौना क्या । रूखा सूखा रामका टुकड़ा चिकना और सलोना क्या ॥ पाया है तो करले शादी पाइ पाइ फिर खोना क्या । कहत कमाल प्रेमके मारग शीश दिया फिर रोना क्या ॥ १२९ ॥

फूलरही फुलवारी रे सन्तो । टेक ॥ आओ चलें फुलवारी देखैं अजब बनी गुलजारी । सतसंगति भूमीपर शोभै धर्मकी यह फुलवारी ॥ मन्द-मन्द पवन चलै वचनोंकी देह अभिमान विसारी । क्यारी क्यारी फूल लहरावैं नित्य विहार विहारी ॥ कोई क्यारी जित कर शोभै, कोइ वैराग विचारो । धीरज क्षमा

दया सवहूँ ले कंटक क्रोध निवारो ॥ भँवरा चित मतवारा डालै एक एक फूलपै वारी । ब्रह्म सुगंधि सवहिते लेवै द्वितिया भाव निवारी ॥ नित्य विहार रहै फूलनको देख फूलें नरनारी । राम कहत वरणिहुँ नहिं जावै शोभा यहाँकी न्यारी ॥ १३० ॥

न जाने कौनसी विरियाँ वजैगा कूच नकारा । जगत् दिन दिन चारका मेला करो कुछ धर्म है वेला ॥ विषयसुख देख मत भूलो वृथा जंजालमें फूलो ॥ प्रभा धन महल औ अटारी छुटै सव अंतकी वारी ॥ स्वजन सुत नार औ नाती न होवैं अंतको साथी । धर्मका लाभ सुन प्यारी सहाइ हो अंतकी वारी ॥ धर्म धन जोड़िये भाई जो अंतको काममें आई । भजन मन धार ले प्यारे अधम अति पापियन तारे ॥ खरा व्योपार इस जगमें हरीभक्ती करी मनमें । तू संगी चाहे जो प्यारा हरीको जान आधारा ॥ सकल यह रैनका सपना वतन तू यादकर अपना ॥ १३१ ॥

अंतर मल निर्मल नहिं कीना बाहर भेप उदासी । हृदयकमल घट ब्रह्म न चीन्हा काहे भया सन्यासी ॥ भरमे भूली रे जैचन्दा । नहीं नहीं चीन्हा परमानन्दा ॥ घर घर खाया पिंड वधाया खिंथा मुंदा माया । भूमि मसानकी भसम लगाई गुरुविन तत्त्व न पाया ॥ काय जपोरे काय तपोरे काय विलोको पानी । लख चौरासी जिन उपजाई सो सुमिरो निरवानी ॥ काय कमंडल कापडियारे अडसठ काहि फिराही । वदत त्रिलोचन सुनरे प्राणी कणविन गाहुकि पाही ॥ १३२ ॥

राग तिलंग ।

यह अर्ज गुफतम पेश तो दरगोश कुन करतार । हक्का कवीर करीम तू वेएव परवर दिगार ॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक

दिलदानी। ममसर मू इजराईल गरिफ्तह दिल हेच नादानी। जन पिसर पिदर बिरादरा कस नेस्त दस्तगीर। आखिर वियफ्तम कस नदारत चूँ शवद तकबीर ॥ शव रोज गश्तम दरहवा करदेम वदी ख्याल। गाहे न नेकी कार करदम गम ईचुनी अहवाल ॥ वद वक्तहगचू वखील गाफिर वेनजर वेवक। नानक बुगोयद जनतुरा तेरे चाकरां पाखाक ॥ १३३ ॥

चेतना है तौ चेतले निशिदिनमें प्रानी। छिन छिन अवध विहात है फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरिगुण काहे न गावही मूरख अज्ञाना। झूठे लालच लागके नहि मर्म पछाना ॥ अजहूँ कछु बिगर्यो नहीं जो प्रभुगुण गावै। कहु नानक तिहिं भजनते निरभय पद पावै ॥ १३४ ॥

हरिके नाम विना दुख पावै। भगति विना संशय नहिं चूकै गुरु यह भेद बतावै ॥ कहा भयो तीरथ व्रत कीये राम शरण नहिं आवै। योग यज्ञ निष्फल तिहिं मानो जो प्रभु यश बिसरावै ॥ मान मोह दोनौंको परिहरि गोविंदके गुण गावै। कहु नानक यहि विधिको प्राणी जीवन्मुक्त कहावै ॥ १३५ ॥

जामें भजन रामको नाहीं। तिहिं नर जन्म अकारथ खोयो यह राखो मनमाहीं ॥ तीरथ करै व्रत पुनि राखै नहिं मनुआँ वश जाको। निष्फल धर्म ताहि तुम मानो साँच कहत मैं याको ॥ जैसे पाहन जलमें राख्यो भेदै नहिं तिहि पानी। तैसेही तुम ताहि पछानो भगतिहीन जो प्रानी ॥ कलिमें मुक्ति नामते पावत गुरु यह भेद बतावै। कह नानक सोई नर गरुवा जो प्रभुके गुण गावै ॥ १३६ ॥

ऐसे यह संसार पेखना रहन न कोऊ पइहै रे। सूधे सूधे रेंग चलो तुम नतरक धका देवइहै रे ॥ वारे बूढे तरुने भैया सबहूँ

यम ले जइहै रे । मानस वपुरा मूसा कीनो मीच विलैया खइहै रे ॥ धनवन्ता अरु निर्धन मनई ताकी कछू न कानी रे । राज परजा सम कर मानै ऐसो काल वड़ानी रे ॥ हरिके सेवक जो हरि भाये तिनकी कथा निरारी रे । आवहिं जाहिं न कवहूँ मरते पारब्रह्म संगारी रे ॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया इहै तजहु जिय जानु रे । कहत कवीर सुनो रे संतहु मिलि है शारंगपानी रे ॥ १३७ ॥

राग विलावल ।

जिहि कुल साधु वैष्णव होय । वर्ण अवर्ण रंक नहिं ईश्वर विमल वास जानिय जग सोय ॥ ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्रिय डोम चंडाल मलेच्छ मन सोय । होय पुनीत भगवन्तभजनते आप तार तारे कुल दोय ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो ठाउँ धन्य पुनीत, कुटुंव सव लोय । जिन पीया साररस तजे आन रस होय रसमगन डारे विप खोय ॥ पंडित शूर क्षत्रपति राजा भगत बरावर और न कोय । जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनत रामदास जन्मे जग ओय ॥ १३८ ॥

दारिद देख सव कोइ हँसै ऐसी दशा हमारी । अष्टादश सिद्धि करतलें सव कृपा तुम्हारी ॥ तू जानत मैं कछु नहीं भव खंडन राम । सकल जीवन शरणागती प्रभु पूरणकाम ॥ जो तेरी शरणागती तिन नाहीं भार । ऊँच नीच तुमते तरे आल ज्ञ संसार ॥ कह रामदास अकथ कथा वहु काय करीजै । जैसा तू तैसा तुहीं क्या उपमा दीजै ॥ १३९ ॥

नृपकन्याके कारने इक भयो भेपधारी । कामारथी स्वारथी वाकी पैज सवारी ॥ तव गुण कहा जगत गुण जो कर्म न नासे । सिंह शरण कत जाइये जो जंवुक ग्रासै ॥ एक बूँद जल कारने

चातक दुख पावै । प्राण गये सागर मिले पुनि काम न आवै ॥ प्राण जो थाके थिर नहीं कैसे विरमावो । बूड़ मुये नौका मिले कहु काहि चढ़ावो ॥ मैं नाहीं कछु हौं नहीं कछु आहि न मोरा। औसर लज्जा राखि लेहु सधना जन तोरा ॥ १४० ॥

राग गौड़ ।

गुरुकी मूरत मनमें ध्यान । गुरुके शब्द मंत्र मन मान ॥ गुरुके चरण हृदय लै धारो । गुरु पारब्रह्म सदा नमस्कारो ॥ मतको भ्रम भूलै संसार । गुरु विन कोय न उतरत पार ॥ भूलेको गुरु मारग पाया । अवर त्याग हरिभगती लाया ॥ जन्ममरणकी त्रास मिटाई । गुरु पूरे कीवे अंव वड़ाई ॥ गुरुप्रसाद ऊरध कमलविकास अंधकारमें भया प्रकास ॥ जिन कीया सो गुरुते जान्या गुरु कृपाते मुगध मनमान्या ॥ गुरु करता गुरु करने जोग । गुरु परमेश्वर है भी होग ॥ कह नानक प्रभु यही जनाई । विन गुरु भक्ति न पाइये भाई ॥ १४१ ॥

नरू मरै नर काम न आवै । पशू मरै दश काज सँवारै ॥ हाड़ जले जैसे लकरीका तूला । केश जले जैसे घासका तूला ॥ कहत कवीर तवहीं नर जागे। यमका डंड सूंडमें लागे ॥ १४२ ॥

संत मिलै कछु सुनिये कहिये । मिलै असंत मष्टकर रहिये ॥ वावा वोलना क्या कहिये । जैसे रामनाम रम रहिये ॥ संतनसों बोले उपकारी । मूरखसों वोले झख मारी ॥ वोलत वोलत वढ़ै विकारा । विन वोले क्या करैं विचारा ॥ कह कवीर छूछा घट वोलै । भरया होय सो कवहुँ न डोलै ॥ १४३ ॥

राम राम संग कर व्योहार । राम राम राम प्राण अधार ॥ राम राम राम कीर्तन गाय । रमत राम सब रह्यो समाय ॥ संत जनां मिल बोलो राम । सवते निर्मल पूरण काम ॥

राम राम धन संच भँडार। राम राम राम कर अहार॥ राम राम वीसर नहिं जाय। कर किरपा गुरु दियो बताय॥ राम राम राम सदा सहाय। राम राम राम लवलाय॥ राम राम जप निर्मल भये। जन्मजन्मके किल्विश गये॥ रमत राम जन्ममरन निवारै। उचरत राम भव पार उतारै॥ सबते ऊँच रामपरकास। निशिवासर जप नानकदास॥ १४४॥

राग मारू।

चार मुक्ति चारौ सिद्ध मिलके दुलह प्रभुकी शरण परयो। मुक्ति भयो चौहूँ युग जान्यो यश कीरति माथे छत्र धरयो॥ राजाराम जपतको कोन जान्यो॥ गुरु उपदेश साधुकी संगति भगत भगत ताको नाम परयो। शंख चक्र माला तिलक विराजत देख संताप हरयो॥ अंबरीषको दियो अभयपद राज बिभीषण अधिक करयो॥ नौ निधि ठाकुर दई सुदामहि धरू अटल अजहूँ न टरयो॥ भगतहेत मारयो हरनाकुश नृसिंहरूप होय देह धरयो। नाभा कहे भगतवश केशव अजहूँ वलिके द्वार खरो॥ १४५॥

सुखसागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाकेरे। चारि पदारथ अष्ट महासिधि नवनिधि करतल ताके रे॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना। अवर सब छाडँ वचन रचना॥ नाना-ख्यान पुराण वेदविधि चौंतीस अक्षरमाहीं। व्यास विचार कह्यो परमारथ रामनाम सरनाहीं॥ सहज समाधि उपाधि रहित हुए वड़े भाग लवलागी। कह रामदास उदास दास मति जन्ममरण भय लागी॥ १४६॥

राग केदारा।

अस्तुति निन्दा दोउ विवर्जित तजो मान अभिमाना। लोहा

कंचन सम कर जानै ते मूरत भगवाना ॥ तेराजन एक आध कोई। काम क्रोध लोभ मोह विवर्जित हरिपद चीन्है सोई ॥ रजगुण तमगुण सतगुण कहिये यह तेरी सभ माया। चौथे पद-को जो नर चीन्हे तिनहीं परमपद पाया॥ तीरथ वर्त नेम शुचि संयम सदा रहै निह कामा। तृष्णा अरु मायाभ्रम चूका चितवत आतमरामा ॥ जिहिं मंदिर दीपक प्रकाश्या अंधकार नहिं नाशा। निर्भय पूररहे भ्रम भागा कह कबीर जन दासा ॥१४७॥

राग भैरव ।

माथे तिलक हथमालाबाना। लोगन राम खिलौना जाना॥ जो हौं बौरा तो राम तोरा। लोग मर्म नहिं जानैं मोरा ॥ तोरौं न पाति पूजों न देवा। रामभगति बिन निष्फल सेवा ॥ सतगुरु पूजों सदा मनावों। ऐसी सेव दरगहि सुख पावों ॥ लोग कहैं कबीर बौराना। कबीरका मर्म राम पहिचाना ॥ १४८ ॥

सभ कोइ चलन कहत वहाँ। न जानो वैकुंठ है कहाँ ॥ आप आपका मर्म न जाना। बात नहीं वैकुंठ बखाना ॥ जबलग मन वैकुंठकी आस। तबलग नाहीं चरणनिवास ॥ खाई कोट न परल पगारा। ना जानो वैकुंठदुआरा ॥ कह कबीर अब कहिये काहि। साधुसंगत वैकुंठहि आहि ॥ १४९ ॥

दूध कटोरी गड़वे पानी। कपिल गाय नामे दुह आनी ॥ दूध पियो गोविंदेराय। दूध पियो मेरो मन पतियाय ॥ नाहीं तो घरको बापरिसाय ॥ सोयन कटोरी अमृत भरी। लै नाम हरि आगे धरी॥ एक भगत मेरे हिरदै वसै। नामे देख नारायण हँसै॥ दूध प्याय भगत घर गया। नामे हरिका दर्शन भया ॥ १५० ॥

परधन परदारा परहरी। ताके निकट वसहि नरहरी ॥ जो न भजंते नारायना। तिनका मैं न करौं दर्शना॥ जिनके भीतर

है अन्तरा । जैसे पशु तैसे वह नरा ॥ प्रणमत नाम देउ कहि विना । ना सोहै वत्तीसुलक्षना ॥ १५१ ॥

कवहूँ खीर खाँड़ घिउ न भावै । कवहूँ घर घर टूक मँगावै ॥ कवहूँ कूरन चने विनावै ॥ ज्यों राम राखे त्यों रहियेरे भाई । हरिकी महिमा कछु कथन न जाई ॥ कवहूँ तुरे तुरंग नचावै । कवहूँ पायँ पनहींहूँ न पावै ॥ कवहूँ खाट सुपदी सुहावै । कवहूँ भूमिपै आरन पावै ॥ भनत नामदेव इक नाम निस्तारै । जिहिं गुरु मिलै तिहिं पार उतारै ॥ १५२ ॥

राग मलार ।

हे गोविन्द हे गोपाल हे दयाल लाल । प्राणनाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ हे समर्थ अगम्य पूरण मोहि मयाधार। अंधकूप महाध्यान नानक पार उतार ॥ १५३ ॥

राग कान्हरा ।

चरण शरण गोपाल तेरी । शोह मान द्रोह भ्रम राख लीजै काट वेरी ॥ वूड़त संसारसागर । उधरे हरि सिमर रत्नाकर ॥ शीतल हरि नाम तेरा पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ दीनदरद निवार तारन । हरि कृपानिधि पतितउधारन ॥ कोटि जन्म दुखकर पायो । सुखी नानक गुरु नाम दृढ़ायो ॥ १५४ ॥

प्रभाती ।

गुण गावत मन होय अनन्द । आठ पहर सिमरो भगवंत ॥ जाके सिमरन कलिमल जाहि । तिस गुरुकी हम चरनी पाहि ॥ सुमति देवो सन्त हम चरनी पाहि । सुमति देवो संत प्यारे ॥ सिमरो नाम मोहिं निस्तारे ॥ जिन गुरु कह्या मारग सीधा । सकल त्याग नाम हरि गीधा ॥ तिस गुरुके सदा वल जाइये ।

हरि सुमिरन जिस गुरुते पाइये ॥ बूड़त प्रानी जिन गुरुहि तराया। जिस प्रसाद मोहै नहिं माया ॥ हलत पलत जिन गुरा सँवारया। तिस गुरुऊपर सदा हौं धारया ॥ महा मुगधते कीया ज्ञानी। गुरु पूरेकी अकथ कहानी ॥ पारब्रह्म नानक गुरुदेव। वड़े भाग पाइये हरिसेव ॥ १५५ ॥

राग जैजैवंती।

वाह गुरू वाह गुरू वाह गुरू वाह जी ॥ कमलनयन मधुर बैन कोटि सैन संग शोभ कहत मा जसोध जिसहिं दहीभात खाहिं जी। देख रूप अति अनूप मोह महा मग्न भई किंकिणी शब्द झनतकार खेल पाहिजी ॥ काल कलम हुकम हाथ कहो कौन मेट सकै ईश थंम ज्ञान ध्यान धरत हिये चाहिजी। सत्व साँच श्रीनिवास आदिपुरुष सदा तुही वाह गुरू वाह गुरू वाह गुरू वाह जी ॥ १५६ ॥

प्रभाती।

मनमें क्रोध महा अहंकारा। पूजा करहिं वहु विस्तारा ॥ कर अस्नान तन चक्र बनाये। अंतरकी मल कबहूँ न जाये ॥ इत संयम प्रभु किनहूँ न पाया। भगौती मुद्रा मन मोह्या माया ॥ पाप करहिं पंचोंके बसरे। तीरथ न्हाय कहहिं सब उतरे ॥ बहुरि कमावहिं निशंक। यमपुर बाँध खरे कालंक ॥ घुँघुर बाँध बजावहिं ताला। अंतर कपट फिरहिं बैताला ॥ वरमी मारी सांप ज्ञु मूआ। प्रभु सब कछु जानै जिन तू कीया ॥ पूँअर ताय गेरीके वस्त्रा। अपदाका मारया गृहते नसता ॥ देश छोड़ परदेशहि धाया। पंच चंडाल नाले लै आया ॥ कान फराय हिराये टूका। घर घर माँगै तृसावनते चूका ॥ विनता

छोड़ वद नजर परनारी । वैस न पाइये मा दुखारी ॥ वोलै नाहीं होय वैठा मौनी । अंतर कपल भवाइये जोनी ॥ अन्नते रहिता दुख देही सहिता । हुकम न वूझै व्याप्या ममता ॥ विन-सतगुरु किने न पाई परमगते । पूँछहु सकल वेदसिमृते ॥ मन सुख कर्म करै अजाई । ज्यों वालू घर ठौर न ठाई ॥ जिससूँ भये गोविन्द दयाला । गुरुका वचन तिन वाँध्यो पाला ॥ कोटि-मध्ये कोटि संत दिखाया । नानक तिनके संग तराया ॥ जो होवै भाग तो दर्शन पाइये । आप तरै सव कुटुंव तराइये ॥ १५७ ॥

भजन ।

दादू दरश दिवाना, आरसी यार दिखाना । टेक ॥ आधी रात गगनमध चंदा, तारा खिलगे खिलाना ॥ चटकी सुरत चढ़ी ज्यों चकरी फूटगया असमाना । मिलगया यार प्यार वहु कीन्हा खुलगया अर्श निशाना ॥ आदि अंत देखा मधम्याना क्योंकर करूँ वखाना । गुप्त वात गुप्तहि भइ गाफिल अंदरमाहिं छिपाना ॥ मैं कुछ कीन्ह लीन्ह सोइ जानत और काहु नहिं चीन्हा । दादू पीर मिटी परलयकी, जन्ममरण नहिं माना ॥ १५८ ॥

कैसे होली खेलूँ पियासँग दुविधा रार मचा रही रे । पाँच पचीसो फाग रचो है ममता रंग वनारही रे ॥ नाचत लाज कर्मके आगे शंसा भाव वतारही रे । करके सिंगार कुमति वन वैठो, भ्रमके घुँघरू वजारहीरे ॥ ये तीनों ताल मृदंग वजावें मनमें रागनी छायरही रे । कपट कटोरा मध विप भरभर तृष्णा मनको छकाय रही रे ॥ याही जीवको वशकर अपने हंसको काग वनाय रही रे । जान पूँछके सुनो भाइ साधो संतजननने पीठ दईरे ॥ दास कवीर कहें कर जोरत हमरी तो ऐसीही वीतगईरे ॥ १५९ ॥

अरे वहु मूरख खेतीवारा जतनविन मिगौंने खेत उजारा ॥ टेक ॥ पाँच मिरग पचीस मिरगनी चंचल नैन चिकारा । अपने अपने रसके लोभी चरते फिरें न्यारा न्यारा ॥ काम क्रोध दो असल मिरग हैं नित उठ चरत सवेरा । प्रेमवाण लै चलो पारधी भावभक्तिकर मारा ॥ वेदी वेद सकल सब वाँचें जासे भेद निराला । अटल जोत सूना घर ताली परसे पीतम प्यारा ॥ सतकी वाढ़ धर्मकी खेती गुरुका शब्द रुखाला । कहै कवीर सुनो भाइ साधो विरयां भली सँभाला ॥ १६० ॥

गुरुने मोहिं दीन्ही अजब जड़ी ॥ टेक ॥ सो जड़ी मोहिं प्यारी लागत अमृतरसन भरी । काया नगर अजब इक बँगला तामें गुप्त धरी ॥ पांचों नाग पचीसो नागिन सूँघत तुरत मरी । यह कारेने सव जग खायो सतगुरु देख डरी ॥ कहत कवीर सुनो भाइ साधो ले परवार तरी ॥ १६१ ॥

जाग री मेरी सुरत सुहागिन जाग री । टेक ॥ क्या तुम सोवत मोह लोभमें उठके भजनमें लाग री । चितसे शब्द सुनो श्रवण दे उठत मधुर धुन राग री ॥ दोनों कर जोड़ शीश चरणन दे भक्ति अचल वर माँग री । कहत कबीर सुनो भाइ साधो जगत पीठ दे भाग री ॥ १६२ ॥

समस्याके कवित्त ।

१ क्यहिकारण चंद्र पिपीलन पायो ॥

एकसमय शिवजी करि ध्यान सियापतिको निज माथ नवायो । भालसों चन्द्र गिरो छितिमें भये प्रेमके वश्य सो जानि न पायो ॥

छिद्र पिपीलनको तहँ वृन्द गई लपिटाय सुधारस पायो। है विपरीत कहे न बने यहि कारण चंद्र पिपीलन पायो ॥ १६३ ॥

२ चुचुवाती लटें अरु मूँड मुड़ाये ॥

शंकर श्रीगिरिजा अरधंगके मज्जन तीरथराजमें आये। त्याग कियो शिर केश वृषध्वज मुण्डनवार उमा नहिं भाये ॥ बीच सितासित हुइ निकसे अवलोकि प्रभा बलदेव बताये। छाती छटा छबिकी छितिपै चुचुवाती लटें अरु मूड़ मुड़ाये ॥ १६४ ॥

३ हमारी ओर हेरिये ॥

तापनको तिमिर मिटायहित आपनदे थापनको थापि पुंज पापनको पेरिये। द्विज बलदेव कहें द्रोपदीपै दीन्हो डीठ दीन सुखदायक गयन्द गति गेरिये ॥ प्रीति घन आपने पगनको बसाय मन तन बचहूँसो घन आनँदको घेरिये। ए हो गिरिधारी बनवारी श्रीविहारीलाल बारीको विचारिकें हमारी ओर हेरिये॥

४ नजरि सँभारे लाल डारियो ॥

उरज उतंगनपै जोर युग जंघनपै त्रिवली तरंगनपै भरि भरि डारियो। लटकी चटकंपर भ्रुकुटी मटकपर पानन चटकपर पलक न पारियो ॥ और गोरे गातपर मनरुचि घातपर बलदेव बात- पर नेकहू न टारियो। शंक मानि प्यारीजूकी लंक लचकीलीपर ढ़ीली ढ़ीली नजरि सँभारे लाल डारियो ॥ १६६ ॥

५ कान्हके कलाकी कठिनाई है ॥

कौतुक विलोकन कलिन्दिजाके कूल कलि काल्हिही कढ़ीथी गति कैसी करि लाई है। कवि बलदेव कहैं कल ना परत नेक कौन दृग कानन कहाँ धौं छबि छाई है ॥ भ्रुकुटी मटकपर अलक लटकपर नैनकी मटकपर चटक सोहाई है। काँटासी करेजेमें कसक करि दीन्हो कहँ कुंजनमें कान्हके कलाकी कठिनाई है ॥१६७॥

६ पूरो नहीं मुख देखन पायो ॥

इक चन्द्रसी सुन्दर नारि हुती करिके जु सिंगार स्वरूप वनायो । सेंदुर माँग भरे शिरसों रचिके कजरा वेंदिया जु लगायो ॥ द्वारपै खोलि कपाट खड़ी भइ आनि तहाँ नर जैसेहि आयो । आधो दिखायके वन्द कियो पट पूरो नहीं मुख देख न पायो ॥ १६७ ॥

७ आँगन खेलत नन्दको लाला ॥

प्राण चढ़ायके योग करो कहा काहे करो व्रतपुंज विशाला। देह तपाय तपाय पचागिन काहे सहो वन वैठि कसाला ॥ ब्रह्मविचार तजो हियमें सोइ रूप धरे नरको यहि काला । जाय लखो किन वा नँदरायके आँगन खेलत नन्दको लाला ॥१६९॥

चौतनी सूहा सजी शिरपै सखि पीरो झगा उर मोतिन माला । लाल लट्टू चकई चटकीली लिये कर वोलत वोल रसाला ॥ धावत गावत मोद वढ़ावत दत्तजू घेरि रहीं व्रजबाला । हों अबहीं लखि आवत हों नँद आँगने खेलत नन्दको लाला ॥ १७० ॥

८ छपै चन्द्रमा करै प्रकास ॥

कालिन्दीके कूलपै तमालनकी कुंजमाहिं कदमके वृक्षमें हिंडोराको वन्यो अवास । दत्तजू दुहूँघा वेस रेशमकी डोरैं लगीं रतन जड़ाऊ चौकी झालरैं बनी हैं तास ॥ गादी मखमलकीपै सादी श्यामसारी पैन्हि वैठी मध्य राधा पैंगैं सखीजुगैं आसपास । झूलतमें प्यारी द्रुममाहिं दुरै दीसै मानो घनमाहिं छपै चन्द्रमा करै प्रकास ॥ १७१ ॥

काननमें मोतिनके झूमका सुझूमैं जामें नथमें अकथ मुक्तानकी वन्यो विकास । वेनीमाहिं हीरा जगमग करिरहे ऐसी रानी राधिकाको रह्यो आनन किये उजास ॥ तापै नीली

सारीको सुघूँघट फरफरात वायुते यों दत्त दीख्यो तासमयमें रूप खास । मेघमण्डलीते जैसे तारा मण्डलीसमेत अम्बरके माहिं छपै चन्द्रमा करै प्रकाश ॥ १७२ ॥

९ आज विपरीतसमय सबै विपरीत है ॥

मेरे प्राणप्यारे वारे वनको सिधारे सीय लखणसमेत धारि मुनिनकी रीत है । दत्तकवि खानपान रागरंग भावे नाहिं सेज औ सिंहासन अजीत है ॥ प्रेतके निवाससों अवास यह लागै मोहिं भोजन सुधासों लगे सुधातें अतीत है । आनँदके कन्द रघुनन्दन विना री आली आजु विपरीतसमय सबै विपरीत है ॥ १७३ ॥

शीश लै मुकुट धरयो कुंडल करन करयो तैसेही उतारि ओढ़यो उपरैना पीत है । वेप धरि पीको नीको राधिका रही है राजि राधा रौन त्योंही लई राधिकाकी रीत है ॥ रूप विपरीत रचि दोउन दुहूँन लखि बाढ़ी दत्त प्रीत है । आली जाय जाली रन्ध्र राह तैं विलोकि आजु विपरीतसमय सबै विपरीत है ॥१७४॥

१० पेटसों और कोई नहिं पापी ॥

पेटके कारण जीव हने बहु पेटही मांस भखै औ सुरा पी । पेटही लैकर चोरी करावत पेटहीको गठरी गहि कापी ॥ पेटही फाँसि गलेमें डारत पेटहि डारत कूपहि वापी । सुन्दर काहेको पेट दियो प्रभु पेटसों और नहीं कोइ पापी ॥ १७५ ॥

११ पेटहीके वश प्रभु सकल जहान है ॥

पेटहीके वश रंक पेटहीके वश राव पेटहीके वश और खान सुलतान है । पेटहीके वश योगी जंगम संन्यासी शेप पेटहीके वश वनवासी खात पान है ॥ पेटहीके वश ऋषि मुनि तपधारी

सब पेटहीके वश सिद्ध साधक सुजान है । सुन्दर कहत नहिं काहूको गुमान रहै पेटहीके वश प्रभु सकल जहान है ॥ १७६ ॥

१२ मुरि मुसकानकी ककाकी सौंह खानकी ॥

छूटी लरिकाई आई सबै चतुराई अंग अंगमें निकाई कामदेव प्रगटानकी । नैनमें लुनाई सुघराई सरसाई ताकी कोककी कलासी खासी मूरति वखानकी ॥ जोवन जवाहिरसों चमक्यो सकल देह नेहकी लगन हियेमाहिं हुलसानकी । थोरेसे दिनाते भौंहको मरोरि लई वानि मुरि मुसकानकी ककाकी सौंह खानकी ॥

दक्खिनकी गणिकाके गने जात गाढ़े कुच गुरुवे नितम्ब वानि रखैं तानगानकी । बंगाली वरंगनाके केश भले वेश होत नैनऊ विशाल वानि घने पानखानकी ॥ जैपुरकी वेश्या भली भेप रचि जानि दत्त वरनी है वानि काँई काँईके बखानकी । वारवधू व्रजकी देखियत वानि यहै मुरि मुसकानकी ककाकी सौंह खानकी ॥ १७८ ॥

१३ पायो भलो सेवती सुहागफल पूरो है ॥

शीशपै जटा है भाल चन्द्रकी छटा हैं जाके फूलनमें जाके प्रिय आक औ धतूरो है । गंगऊ रहति संग भसम रमाये अंग कंठमाहिं विषपैन कहै बैन पूरो है ॥ जाके तीनि नैन दत्त कविहूके चैन दैन नन्दीगण जाके नित रहत हजूरो है । तिन शिवके पदारविन्दनको गिरिजातें पायो भलो सेवती सोहागफल पूरो है ॥ १७९ ॥

१४ विरहिनि सुखदाई है ॥

माताकी औ सासकी कछुक ईरषाई वश एक तिय गेह एक नैहर बुलाई है । पतिने दुहूंते प्रेम नेम निरबाहिवेको सासुरेके गाँवमाहिं नौकरी लगाई है ॥ चार मास चौमासेकी छुट्टी लेइ

ऐवे लग्यो तहाँकी तिया सो शिर धुनि पछिताईकी । कैसी अद्भुत वरषाकी ऋतु आई जो संयोगिनि दुखद विरहिनि सुखदाई है ॥ १८० ॥

१५ तरवार वही तरवाके तरेलों ॥

भोरते साँझलों सूर्य चलें अरु शूर चले हैं कबंध परेलों । यही शिरताज गनी मनको प्रण तौन टरे दुहुँ लोक टरेलों ॥ ऐसी वही अरवी गरवी शिव शंकरहू यमलोक डरेलों । सो शिर काटि गनीमनके तरवार वही तरवाके तरेलों ॥ १८१ ॥

१६ यमुनाजी वहीं तरवाके तरेलों ॥

लै प्रभुको वसुदेव चले सो विचार कियो तव नन्दगृहेलों । जाय कलिन्दीमें ठाढ़े भयो वसुदेव डरे जल आयो गरेलों ॥ चरननको यमुना उमहीं जल बाढ़ो जवै वसुदेव गरेलों । हूँक-तही यदुनन्दनके यमुनाजी वहीं तरवाके तरेलों ॥ १८२ ॥

१७ साँवरी साँपिनि सोइ रही ॥

मृगनैनीकी पीठपै वेणी लसै सुखसाज सनेह समोइ रही । सुचि चीकनी चारु चुभी चितमें भरि भौनभरी सुख वोइ रही ॥ कवि गंगजु या उपमा जो कियो लखि सूरति ता श्रुति गोइ रही । मानों कंचनके कदली दलपै अति साँवरी साँपिनि सोइ रही ॥ १८३ ॥

१८ पाँच रवि दश शशि संगही उदय भये ॥

सारी श्वेत प्यारी पैन्हि मोतिन किनारीदार बड़े स्वच्छ मोती नाक नत्थ गुथिको दये । वीच बीच वेंदी भाल केसरके वेस देइ बन्दी छोर हीरा असदात सात को लये ॥ शीशफूल शीश चौबुंदा चर ईंगुरके हार दश दाने देव नागमणि को धये । अमित तरैयन ऋषीश सात कविगुरु पाँच रवि दश शशि संगहीं उदय भये १८४

१९ अमी निकस्यो वहि पूँछकी ओरन ॥

एक समय वृषभानुसुता सो प्रभात गई सरितानकी खोरन। अंजन धोय अँगौछत देह अरु बाहर बैठिकै वार निचोरन ॥ ब्रह्म भनै त्यहिकी उपमा जलके कणका वहैं केशके छोरन। मानहु चन्दको चूसत नाग अमी निकस्यो वहि पूँछकी ओरन॥ १८५॥

२० दन्त दावि आँगुरी हथेली दावि छतियाँ ॥

प्यारीके मिलन काज साँकरी गलीके बीच ठाढ़े नँदनन्द लसि जानि निज घतियां। अतिही समीप पाय फूलो गात आनँदसों भरिवेको अंक चहो दाँव भली भतियाँ ॥ सिसकि सलोनि वाल भृकुटी नचाय वर कछुक पछेलि कह्यो शंकितसी वतियाँ। उतही रहौजू पीछे आवति यशोमति है दन्त दावि आँगुरी हथेली दावि छतियाँ ॥ १८६ ॥

प्रेमवश धीरजको धारत न कौनौ भाँति उदित मयंक ऋतु-राज रस रातियाँ। आतुर है साँकरी गलीमें नँदनँन्द ठाढ़े प्यारीके मिलैकी सब भाँति गनि घतियाँ ॥ आवत समीप सिसकी सो सौंहहेरि हँसी भ्रुकुटी नचाय कहो चौचँदकी बतियाँ। अन्तको चली सो तन्त कन्तको विचारि वाल दन्त दावि आँगुरी हथेली दावि छतियाँ ॥ १८७ ॥

२१ क्यहि हेत सखी मुरझानी पड़ी ॥

जबते मनमोहन मौन सुन्यो तबते विरहागि हियेमें पड़ी। चहुँधा मुख हेरत दूतिनको भरि ऊरध श्वास अनंग जड़ी ॥ अति नीर प्रवाह चलै चखसों मनों सूखी लता गति हेम छड़ी। कछु चेत नहीं मुख श्वेत भयो त्यहि हेत सखी मुरझानी पड़ी ॥

२२ यहि लाज निगोड़ीपै गाज पड़ै ॥

बनशीरी समीर लगे तन तीरसों पीरमें क्यों मन धीर धरै।

अति ओज जनावत रोज सरोज मनोज विथा उर आनि अरै॥
हठि होयगो हाल जो भाल लिखो गुरु लोगनको शिपजाल जरै ।
मिलिहौं ब्रजराजको आज अली यहि लाज निगोड़ीपै गाज परै ॥

२३ लाजको जहाज आज डूवन चहत है ॥

कैसो ठानि वैठी हठ मेरो मन वा क्षणसों कोऊ समझावै तासों वैरकै रहतहै । हैहै कहा एहो वलदेव दशा देखो यह नीरको प्रवाह दृग दूनो उमहत है ॥ कछु तन धनके संभारकी गिनावों कहा प्राण तो निछावर करनको कहत है । तजि सब काज संग कीन्हो सुख साज अव लाजको जहाज आज डूवन चहत है॥१९०॥

२४ मछली जल छोड़ि चली वनको ॥

हठि तून फँसे ब्रजचंदके फन्द विनय कर हौं वरजो मनको । अव वीन वजै लगी काननसों सुनि पीर करै तन वेतनको ॥ अँखिया दुखियाँ किमि धीर धरैं ढरैं नीर भरै सिगरे तनको । मृग छौननकी छवि छीनी मनो मछली जल छोड़ि चली वनको ॥

२५ लोटि लोटि जात जैसे लोटन कबूतरी ॥

सम्पुट सरोजसे उरोज खोज चोजनको रोजं रुचि रूरी श्रीमनोज कैसी पूतरी । कैधों रूपराशि रति रम्भासी सराहै सव रतनजटित मानों अम्वरसे उतरी ॥ प्रथम समागम नवोढ़ा त्यों नवल पति पानिप प्रकाशी करै वातैं मुख तूतरी । नखतन खोंटि खोंटि पटीपट जोटि जोटि लोटि लोटि जात जैसे लोटन कबूतरी ॥ १९२ ॥

फुटकर पदावली ।

राग कान्हरो ।

मेरे मन वस गयो सीताराम ॥ जटा मुकुट मुनिभेष धरयो है कठिन धनुष लिये शारंगवान । गौरवर्ण सिया जनकनन्दनी रघुवर हैं सुन्दर घनश्याम ॥ सरयूके तीर अयोध्या नगरी विहरत हैं लक्ष्मण अरु राम । असानन्द कहे कर जोरी चौंसठ घड़ी आठों याम ॥ १९३ ॥

मेरी गति जानकीजीवन राम । चौरासीको भटकत आयो कहीं न पायो विश्राम ॥ यही लोक परलोक हमारा चरणकमल नित ध्यान । जन माधौके तनमन्दिरमें विराजत सीताराम ॥१९४॥

राग देश ।

श्रीवृन्दावन वास दीजिये यही हमारी आशा है । यमुनातीर छाय माधुरी जहाँ रसिकोंका वासा है ॥ सेवा कुंज मनोहर सुन्दर इकरस वारोंमासा है । ललितकिशोरीको दिल वेकल युगलरूपरस प्यासा है ॥ १९५ ॥

हरिगुणगान–छन्द ।

तुम दीनवन्धु दयाल हो । करुणानिधान कृपाल हो ॥
तुम भक्तपातकहरण हो । तुम दुःख दारिद दलन हो ॥
तुम भक्तजनमनरंजनं । तुम सकल खलगणगंजनं ॥
तुम भली होय सो कीजिये । रघुनाथ यह यश लीजिये ॥
मोहिं भक्त पदवी दीजिये । जन आपनो कर लीजिये ॥
तुम सन्तजन प्रतिपाल हो । तिहुँलोकके रछपाल हो ॥

तुम राधिकापति रमण हो । परकाश चौदह भुवन हो ॥
तुम ज्ञान गोकुलचन्द हो । हरिवंश कंसनिकंद हो ॥
हम पतितपावन सुनत हैं । नित नाम निर्मल जपत हैं ॥
जगदीश ईश गुपाल हो । व्रज देत सुख नँदलाल हौ ॥
यदुवंश तारण तरण हो । दुख देवकीके हरण हो ॥
वसुदेवके घर आयके । सब दैत्य मारे धायके ॥
तुम लियो काली नाथके । गुण रटत ब्रह्मा भाँतिके ॥
गिरि धरयो नखपर साँवरे । यश लियो गोकुल गाँवरे ॥
रँगभूमि मल्ल पछारणं । गज मत्त दन्तउखारणं ॥
भूलोक भार उतारणं । गहि केश कंस पछारणं ॥
व्रजभूमिमें नँदनन्दनं । गोपाल गण उर चन्दनं ॥
वलिराज वामन छलन हौ । दशकंध लंकादहन हौ ॥
दनुजादि कुलदलगंजनं । सुरलोक सुरपति रंजनं ॥
गजराज भुज मर्दिक लये । सुरलोकमें आसन दये ॥
प्रहलाद खंभ विदारिके । तुम लिये हाथ पसारिके ॥
हरनाकुशहि तुम गर्जिके । मारो सकल छल वर्जिके ॥
तुम नाम धर नरसिंह हौ । तुम अगमगति वहु रंग हौ ॥
तुम उग्रसेनके ऐन हौ । तुम सर्व सुखके दैन हौ ॥
रघुवंशमाहिं विकाश हो । दिवि कोटि कोटि प्रकाश हो ॥
गौतम त्रियाके तारणं । तुम योगयज्ञ सँभारणं ॥
ध्रुवराज कार्य निवंधनं । रावण कियो बध वंधनं ॥
तुम जनकपुर पूजा करी । तहँ जानकी तुमने वरी ॥
चहुँ देशके राजा तहाँ । शंका न रघुपति तुम तहाँ ॥
हरिचन्द सूरज वंशमें । कीने जु अपने अंशमें ॥
रुक्मांगदी एकादसी । जिहि जाचिके महिमा लसी ॥

तुम मोरध्वज किरपा करी। अर्धंग अँग माँग्यो हरी॥
तुमको सु शंकर सेवते। जानै न कोई भेवते॥
तुम विदुरके भोजन करे। हित जानिके हरि यश भरे॥
तुम पीतपट मुरली धरी। शिर खौर चंदनकी करी॥
दोय मोरकी धरि चंद्रिका। दोउ नयन मोहे इन्द्रिका॥
मृगलता लालनके वने। नवखंडमें शोभा गने॥
दोउ चरणकमल गोपालके। मणिजटित मानों लालके॥
सुखकंद मोहनलालजी। तुम वने रूप रसाल जी॥
तुम गोप गोपिनमें रचे। तुम रासमंडलमें कछे॥
तुम जन्म लीयो मधुपुरी। तहाँ पूतना कुबजा तरी॥
तुम द्वारका रणछोरजी। ब्रज भये नन्दकिशोरजी॥
तुम द्रोपदी प्रतिपालकं। तुम हरत सन्तन पातकं॥
तुम साधुसंग निहार ले। तुम शरण भारतके मिले॥
जहँ पाँडु कौरवसों लरे। तहँ आप दर्शन सब तरे॥
तहँ कर्ण भीषमसे वली। भगदत्तसे मारे छली॥
जीतेजु पांडव नन्दनं। तुम चरित सर्वसं वंदनं॥
जहँ व्यासमुनि भाषत रहे। शुकदेवसों नारद कहे॥
तुम मच्छ कच्छ वराह हो। वैकुंठपति सुर बाँह हो॥
तुम मिले विप्रसों धायके। जहँ जनकभवन बनायके॥
तुम जरासंध विनाशनं। तुम दैत्यवंशविघातनं॥
गोरख जु गोपीचंदसे। वीधेजु मायाफंदसे॥
कवि सूर रामानन्दसे। विधि करत हैं आनंदसे॥
तुम नामदेव कवीरके। प्रभु पिये दूध अहीरके॥
तुम भीलनीके ग्रह गये। जूठे जु फल ताके लये॥
तुम कृष्णदास.मलूकसे। प्रभु मिले श्यामसलूकसे॥

तुम वंदना जगदेवसे । करि कृपा गे अति नेहसे ॥
युग चारि पुरण ब्रह्म हौ । महिमंड मंडल खंभ हौ ॥
को नहिं तरे तुव आशसों । हरिभजन नित्य प्रकाशसों ॥
गुरु परम परमानंदनं । वसुदेव दशरथनन्दनं ॥
तुव भजे फल नर पावहीं । दुखजाल भवभय भाजहीं ॥१९६॥

लावनी ।

नाथ तुम भक्तनहितकारी । पतितपावन कलिमलहारी ॥
प्रथम नरसिंहरूप धारयो । नखनसों हिरणाकुश मारयो ॥
दोहा–ब्रह्मादिक थरहर करैं, लक्ष्मी ढिग नहिं जात ।
जन अपने प्रहलादके, धरयो शीशपर हात ॥
भक्तकी विपति घटी सारी । नाथ तुम भक्तनहितकारी ॥
जुरे दल दोउ ओर भारी । करी जव भारतकी त्यारी ।
दीन हुइ भुरुही त्र पुकारी । खवर मेरी लीजै गिरधारी ॥
दोहा–ऐसो को या जगतमें, मेरो राखनहार ।
इतनि सुनत तब तुरतहीं, गजघंटा दियो डार ॥
करी अंडनकी रखवारी । नाथ तुम भक्तनहितकारी ॥
सभामें द्रुपदसुता नारी । करन जो लगे जवाब भारी ।
देखते सकल धर्मधारी । कर्ण भीषम द्रोणाचारी ॥
दोहा–कहा भयो वैरी प्रवल, जो सहाय वलवीर ।
दश हजार गजवल घट्यो, घट्यो न दशगज चीर ॥
दुशासन बैठ गयो हारी । नाथ तुम भक्तनहितकारी ॥
ग्राहने गजको गहि लीनो । परस्पर युद्ध बहुत कीनो ॥
भयो गजराजको वल हीनो । याद तव गोविंदको कीनो ॥
दोहा–सुनतहि टेर गजेन्द्रकी, उठ धाये व्रजराज ।
सुधि ना रही शरीरकी, कियो भक्तको काज ॥

जनार्दन सन्तन दुखहारी । नाथ तुम भक्तनहितकारी॥१९७॥

गजल ।

किसीने आजतक जगमें तुम्हारा पार पाया है । दृष्टि पड़ता है जो कुछ भी ये अपरम्पार माया है॥ शेष सनकादि ब्रह्मा ईश सुर सब ध्यान कर हारे । वेद गीता पुराणोंमें नेति एक सार गाया है ॥ तुम्हारे रोममें भगवन् कोटि ब्रह्मांड बसते हैं । सूर्य और चन्द्र तारोंमें तेरी करतार छाया है ॥ हो सबसे दूर सबमें हो मेरे स्वामी अगोचर तुम । रहित गुण ब्रह्म अविनाशी सगुण अवतार काया है ॥ तुम्हारी गत वो अद्भुत है उसे कोइ लख नहीं सकता। चकित होकर शरण बाबू ये बारम्बार आया है॥१९८॥

कारीगर कर्ताराकि उसने तन जामा तैयार किया । दृढकी लीनी सुई कर्म कर और श्वासका तार किया ॥ विध बजाजके ह्वाँ जाकर उन खरीद कपड़ेकी कीनी । अहंकार था दलाल उसने सबही जिन्स दिलवा दीनी ॥ पाँचौ रंगके पाँचौ कपड़े रंगत उनकी नवीनी । खरीदार था जीवकि उसने ज्ञान दाम देकर लीनी ॥ जा दरजीके ब्योंत हुआ उन सीनेका इकरार किया । दृढ़की लीनी सुई कर्म कर और श्वासका तार किया ॥ नौ महीने दरजीके ताई लगे सींवने सुन प्यारे । चित चोली कर्मोंका बनाके नकल कीनी है तैयारे ॥ ममताके करकोस बनाके मानों बन्दमें जड़े तारे । काम क्रोधका आगा पीछा लगादिया कर शुम्मारे ॥ क्याही अच्छी गोट लगाई खूबही उसने कार किया । दृढ़की लीनी सुई कर्मकर और श्वाँसका तार किया ॥ इस चोलेको पाकर प्यारो करो जगत्में भल्लाई । सबसे तैं मिलकरके चालो यह चतुरोंकी चतुराई॥ विरोधभाव दिया छोड़ जिन्होंने साहबसे है लौलाई । यहाँभी

उनका वड़ा मर्तवा मरके मुक्ति वहँ जा पाई ॥ काम क्रोध मद लोभ मोहका इस जगका उद्धार किया ॥ दृढ़ की लीनी सुई कर्म कर और श्वाँसका तार किया ॥ महाराज श्रीरिसालगिरका नया ख्याल सबसे आला । सुरतसिंह रणजीतसिंहने क्या अच्छा मतलव डाला ॥ खुशालसिंहकुं जार्यो कहता गाता है तुर्रेवाला । कलियानसिंहके सुनके ख्यालको भाग गया कलँगीवाला ॥ वंशीचन्द आनंद देख ले, दंगलमें तुझे जेर किया । दृढकी लीनी सुई कर्मकर और श्वाँसका तार किया ॥ १९९ ॥

भजन ।

हमसे कौन वड़ा घरवारी ॥ टेक ॥ सतसे पिता धर्मसे वेटा लज्जासी महतारी । शील वहन सन्तोप पुत्र है क्षमा हमारी नारी ॥ आशा सासू तृष्णा सारी मोह लोभ ससुरारी । अहंकार हैं श्वसुर हमारे यह सबके हितकारी ॥ ज्ञानी गुरू विवेकी चेला सदा रहैं ब्रह्मचारी । मोह लोभ दो वसैं चोर जी है इनका डर भारी ॥ कहैं कवीर सुनो भाई साधो यह पद है निर्वानी । भूलो मत सुमिरो तुम भाई महिमा अगम अपारी ॥ २०० ॥

धुविया फिर मरजायगा चादर लीजे धोय ॥ टेक ॥ चादर लीजे धोय मैल है वहुत समानी । चल सतगुरुके घाट भरा जहँ निर्मल पानी ॥ चादर भई पुरानी दिनोंदिन वार न कीजे । सतसंगतमें सौंद ज्ञानका सावुन दीजे ॥ छूटै त्रैगुण दाग नामका कलप लगावै । चलिये चादर ओढ़ वहुरि नहिं वहु जल आवै ॥ पलटू ऐसा कीजिये मन नहिं मैला होय । धुविया फिर मर जायगा चादर लीजे धोय ॥ २०१ ॥

मनरे कोई नहीं है प्यारा चिड़िया रैन गुजारा ॥ टेक ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठा सब संसारा । जीवतहीके सब हैं

संगी, अंत होयँगे न्यारा ॥ वहुतसे हाथी तूने देखे, आखिर होगये ख्वारा। वड़े वड़े ऋषि मुनि और साधू, वहि गये एकहि धारा ॥ माता पिता बहिन औ भाई, जीतेजीके हैं यारा। जब यह सीस जुदा होय तनसे, सबही करिहैं किनारा ॥ अबहूँ चेतो ऐ मन मूरख, प्रभुको लेहु सहारा। घासीराम किस सोच पड़ा है, बाजत मौत नगारा ॥ २०२ ॥

जग दर्शनका मेला साधो, जग दर्शनका मेला ॥ टेक ॥ गुरू हमारे गगन विराजैं, पताल विराजै चेला। जब यह हंसा निकल जायगा, कहाँ गुरू कहँ चेला ॥ सुमिरन ध्यान कबहुँ ना कीना, फिरा किया अलबेला। हाथ मलै अब क्या पछतावै, सारी उमर तो खेला ॥ सुत दारा औ कुटुम्ब तेरा, साथ कोइ नहिं देगा। यमका दूत आन जब घेरै, जायगा एक अकेला ॥ माया जोड़ी लाख करोड़ी, दगा फरे बछल करके। जब आया सन्देश मौतका, साथ गया ना धेला ॥ घासीराम अब क्या सोचत है, आवै है पानीका रेला ॥ २०३ ॥

राग बिलावल।

घटमें खेल ले मन खेला। सकल पदारथ घटही माहीं, हरिसों होय जु मेला ॥ घटमें देवल घटमें जाती, घटमें तीरथ सारे। वेगहि आव उलटि घटमाहीं, बीते परवीन्हारे ॥ घटमें मानसरोवरमों भर, मोती और मराला। घटमें ऊँचो ध्यान शब्दका, सोहं सोहं माला ॥ घटमें बिन सूरज उजियारा, रात दिना नहिं सूझे। अमृत भोजन भोग लसत है, विरला जन कोइ बूझे ॥ घटमें पापी घटमें धर्मी, घटमें तपसी योगी। गुण अवगुण सब घटहीमाहीं, घटमें वैद्य रु रोगी ॥ रामभक्ति

घटहीमें उपजै, घटमें प्रेमप्रकासा । शुकदेव कहैं चौथपद घटमें, पहुँचै चरणहिं दासा ॥ २०४ ॥

वतादे तोमें बोलन है सो को है ॥ टेक ॥ ब्रह्मा हरी महेश भवानी, पंडित वैद्य ज्योतिषी ज्ञानी । योगी यती ऋषी सुनि नाहीं, कौन सृष्टिमें वह है ॥ वतादे० ॥ अग्नि पवन जल अकाश माटी, तारागण रवि शशि दिन राती । इन्द्री देह प्राण मनमाहीं, अचरज यह ही बड़ो है ॥ वतादे० ॥ वैश्य ब्राह्मण कायथ क्षत्री, तगा शूद्र विष्णोई खत्री । सैयद शेख मुगल ईसाई, पठान ना कम वो है ॥ वतादे० ॥ कड़वा चरपरा खारी मीठा, नमका अलोना खट्टा मीठा । लम्बा चौड़ा ऊँचा नीचा, मोटा नाहिं लटो है ॥ वतादे० ॥ रक्त श्वेत नारंजी नीला, काला हरा वेंजनी पीला । कर्रो नर्म कुरूप नहीं, तातो है न सियरो है ॥ वतादे० ॥ आपही भूला पूँछत डोलै, आपहीमाहिं आपही बोलै । रहै अचेतन चेतै तौलौं, निर्भय ज्ञान न होवै ॥ वतादे तोमें बोलत है सो को है ॥ २०५ ॥

भजन ।

भोर भयो पक्षीगण बोले, उठ जन प्रभु गुण गाओ रे । देखि प्रभात प्रकृतिकी शोभा, वार वार हरपाओ रे ॥ प्रभुकी दया सुमिर निज मनमें, सरस भाव उपजाओ रे । होय प्रफुल्लित प्रेममें उनके, नयनन नीर वहाओ रे ॥ ब्रह्मरूप सागरमें मनको, वारम्वार डुवाओ रे । निर्मल शीतल लहरें ले ले, आतम ताप वुझाओ रे ॥ २०६ ॥

तू सुमिरन करले मेरे मना, तेरी वीती जात उमर गुरु नाम विना रे ॥ पंछी पंखविन हस्ती दंतविन, नारी पुरुषविना रे । वेश्याको पुत्र पिताविन हीना, तैसे प्राणी गुरुनामविना रे ॥

देह नैनविन नैन चंदविन, धरती मेघ विना रे । जैसे पंडित वेदविहीना, तैसे प्राणी गुरुनामबिनारे ॥ कूप नीरविन धेनु क्षीर-विन, मन्दिर दीपविना रे । जैसे तरुवर फलकर हीना, तैसे प्राणी गुरुनाम विना रे ॥ काम क्रोध मद लोभ निवारो, छाँड़ क्रोध अब संत जना रे । कहें नानक शाह सुनो भगवंता, या जगमें नहीं कोई अपना रे ॥ २०७ ॥

सब कुछ जीवतको व्योपार । टेक ॥ मात पिता भाई सुत बन्धू, अपनी गृहकी नार ॥ तनसे प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार । आध घड़ी कोऊ नहिं राखत, घरते देत निकार ॥ मृगतृष्णा ज्यों जगरचना है, देखो हृदय विचार । कहै नानक भज सत्यनाम नित जातें होत उद्धार ॥ २०८ ॥

राग कान्हरा ।

मैं तुम्हरी शरणागत प्यारे ॥ परमानन्द मुकुन्द परातम दीनानाथ सकल भय टारे । दामोदर अच्युत अघनाशक पाप-हरन तव नाम मुरारे ॥ व्यापक एक अखंड अगोचर नाम न रूप प्रकाशनवारे । दास गुलाब वसो चित हमरे चार पदारथ याहि मँझारे ॥ २०९ ॥

गजल ।

जरा टुक शोच ऐ गाफिल, इस दमका क्या ठिकाना है । निकल जब जायगा तनसें तो सब अपना बिगाना है ॥ मुसाफिर तू है और दुनियाँ, सराँ है भूल मत प्यारे । सफर परलोकका आखिर, तुझे दरपेश आना है ॥ लगाता है अवस दौलतपै, क्यों तू दिलको अब नाहक । न जावे संग कुछ हरगिज, यहीं सब छोड़ जाना है ॥ न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना अपना ।

वखूवी गौरकर देखा,तो मतलबका जमाना है ॥ रहो लग यादमें हकके, अगर अपनी शफा चाहो । बली दुनियाँके धंधोंमें, हुआ तू क्यों दिवाना है ॥ २१० ॥

दिला यकदम न हो गाफिल, य दुनियाँ छोड़ जाना है । वगीचे छोड़ कर खाली, जमीं अंदर समाना है ॥ वदन नाजुक गुलों जैसा, जो लेटे सेजफूलोंपर । य होगा एकदिन मुरदा, इसे कीड़ोंने खाना है ॥ न वेली होय गा भाई, न वेटा वाप ना माई । तू क्या फिरता है सौदाई, अमलने काम आना है ॥ फरिश्ते रोज करते हैं,मुनादी चार कुंटोंमें । महल्ला ऊँचियोंवाले, जहाँको छोड़ जाना है ॥ पियारे नजर कर देखो, पड़ी जो माड़ियाँ खाली । गये सब छोड़ यह फानी, दगावाजीक बाना है ॥ गलत फहमी ये है तेरी, नहीं आराम इस जगमें । मुसफिर वेवतन है तू, कहाँ तेरा ठिकाना है ॥ पियारे नजर कर देखो, न खेशोंमें कोई तेरा । जनो फरजंद सब कूकें, किसे तुझको छुड़ाना है ॥ तमामी रैन गफलतमें, गुजारें चारपाईपर । गुजारें रोज खेलोंमें, वृथा आयू गँवाना है ॥ ये होंगे सर वसर लेखे, हशरके रोज ऐ गाफिल । ये दोजख वीचं वद अमलींसे, तन अपना जलाना है ॥ २११ ॥

राग माँझ ।

दुनियाँ झूँठी ते साईं सच्चा पर दुनियाँ प्यारी लग्गे । सच छोड़क झूँठ व्याझे न्याउँ प्या तेरे अग्गे ॥ घर जिहिंदे विच दुशमन होवन ओह किचरक ताईं तग्गे । संत रैन ओह कदी न मिलनन जो दुनियाँ दे ठग्गे ॥ २१२ ॥

एह जुवानी तेरा मस्त दिवानी कुछ अग्गेदा करी तोसा । कई जुवानियाँ तैं अग्गे छड्डियाँ हुण इसदा कौन भरोसा ॥ मिल

सतगुरु कम्ल करलै झवदे पकड़ वहीं कोई गोशा । संत रैन ढिल्ल तेरी वल्लो रव्व नहीं तेरे नाल रोसा ॥ २१३ ॥

राग गौरी ।

उड़रे पखेरू दिन तो रहगया थोड़ा ॥ उडत्यां उडत्यां जन्म गँवाया जहाँ शहर ताहाँ डेरा । चुन चुन कंकर महल वनाया मूरख कहे घर मेरा ॥ ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़ियाँ रैन वसेरा । शाह हुसेन फकीर साईदा जंगल होगया डेरा ॥२१४॥

राग देश ।

भाई तैंने सितम गुजारा रे । दिलसे राम विसारा रे ॥ वाला-पन औ तरुण अवस्था जव नहिं राम सँभारारे । वृद्ध भया कफ वायने घेरा थकत भया हंकारारे ॥ महल गाड़ियाँ छिनमें छीने वाँध घाटपर डारा रे । शाहसे सभ भये वटेऊ लुटन लगा घर-वारा रे ॥ घरे ढकेको पूछन लागे कुटुँव कवीला सारा रे । मर्म कर्मकी कोई न पूछे दगावाज संसारा रे ॥ नंगे पैर कटीला रस्ता ज्यों खाँडेकी धारा रे । विश्वामित्र महवूव साहिवको भजले वारंवारा रे ॥ २१५ ॥

राग जंगला ।

श्रीरामचन्द्र दशरथसुतनन्दन यह पद भज मन मोरारे ॥ वालापनमें खेल गँवाई ज्वानी जोवन जोरारे । वृद्ध भयो चिन्ता तव उपजी अव क्या करत निहोरा रे ॥ पाँचो चोर समझकर पकड़ो चढ़ो प्रेमरस घोड़ा रे । ज्ञानखड्गसे मार गिरावो यह मुजरा नर तोरारे ॥ भूला भूला कहा फिरत है जगमें जीवन थोरारे । धरे रहें रंगमहल तेरे जंगल होत वसेरा रे ॥ भवसाग-रकी धार कठिन है वहाँ तोरा नहिं मोरा रे । कहत कवीर सुनो भाई साधो समझ देख मन भोरा रे ॥ २१६ ॥

गजल।

हमन हैं इश्कके माते हमनको दौलतां क्यारे । नहीं कुछ मा-की परवा किसीकी मिन्नतां क्यारे ॥ हमनको खुश्क रोटी वस मरको इक लँगोटी वस । औ शिरपर एक टोपी वस हमनको ज्ञतां क्यारे॥ कबा शाला वजीरोंको जरी जर वक्त अमीरोंको। मन जैसे फकीरोंको जगत्की न्यामतें क्यारे ॥ जिन्होंके सुख स्याने हैं उन्हींको खलक माने हैं । हमन आशिक दिवाने हैं मनको मजलसां क्यारे ॥ कियो हम दरदका खाना लियो हम पका वाना । वली वस शौक मन माना किसीकी मसलतां यारे ॥ २१७ ॥

लावनी ।

सो जन मस्ताना मस्ताना, जिन पायो पद निर्वाना ॥
मगन होय चढ़गयो गगनपै अधर धार धर ध्याना ।
लगन लाय विसराय विश्वको अनहद शब्द पछाना ॥
परम सुन्नमें परचा हूआ चेतन चरण समाना ।
निर्गुण सेज तेजकी नगरी यहि अविगत अस्थाना ॥
लक्ष कला लिये चन्द्र प्रकाशे कोटि कला लिये भाना ।
जगमग लगी महलके भीतर देखत दरश दिवाना ॥
वरपे पदम दामिनी दमके हर हीरोंकी खाना ।
गमसे दूर आगमसे आगे अद्भुत अजब ठिकाना ॥
खुलगयो कमल नवल वर पायो नितप्रति अमृतपाना ।
अमर कन्द दुखभंजन व्यापी जिस घर भर्म सुलाना ॥
अस्तुति निन्दा दोऊ त्यागो खोजो पद निर्वाना ।
हर्ष शोकसे रहे अतीता तिन जग तत्व पछाना ॥

पाँच पचीस पुरी तज भागे जीत लियो मैदाना।
नितानन्द महबूब स्वामी अब निश्चय कर जाना ॥ २१८ ॥

राग जंगला।

जन्म तेरो बातोंमें बीत गयो। तैंने कबहूँ न कृष्ण कह्यो॥ पाँच वर्षका आला भोला अब नो वीस भयो ।.मकर पचीसी माया कारण देश विदेश गयो॥ तीस वरषकी अत्र मति उपजी लोभ बढ़े नित नयो। माया जोरी लाख करोरी अजहूँ न तृप्त भयो॥ वृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कंठ रह्यो। साधुकि संगति कबहुँ न कीन्ही विरथा जन्म गयो॥ यह संसार मतलबका लोभी झूँठा ठाठ रच्यो। कहत कबीर समझ मन मूरख तूं क्यों भूल गयो॥ २१९॥

राग बरवा।

अब मैं अपने रामको रिझाऊँ। नाम ध्याऊँ भजन गुण गाऊँ॥ पात पातमें साहब मेरा मुड़ मुड़:शीश नवाऊँ। गंगा न जाऊँ यमुना न जाऊँ ना कोइ तीरथ न्हाऊँ॥ औषध न खाऊँ बूटी न लाऊँ ना कोइ वैद्य बुलाऊँ। पूरन गुरू मिले अविनाशी भर्मके पुरजे उडाऊँ॥ ज्ञानकटारा कसकर बाँधों सुरति कमान चढ़ाऊँ। पाँचो चोर बसें घटभीतर उनको मार गिराऊँ॥ योगी होय न जटा बढ़ाऊँ न अंग विभूति रमाऊँ। जो रँग रँग्यो आप विधाता और क्या रंग लगाऊँ॥ डाली न छेड़ूँ पत्ता न तोड़ूँ ना कोइ जीव सताऊँ। देहरा न पूजों न देवल पूजों परम ज्योति मिल जाऊँ॥ चंद्र सूरज दोउ समकर राखों सुखमनसेज बिछाऊँ। कहत कबीर सुनो भाइ साधो आवागोन मिटाऊँ॥ २२०॥

राग तिलंग।

जग जानी कछु मसलत करले जांदी रैन विहानी ।
तेरे कोलो लख चल चल जांदे तैं मन एक न मानी ॥
एक घड़ी हरिभजन न कीता दिसदा काल सिरानी ।
शाह हुसेन फ़कीर साईंदा आखर दुनिया फानी ॥ २२१ ॥

राग सोरठ।

नहीं ऐसो जन्म वारंवार । क्या जानूँ कछु पुण्य प्रगटे मानुसा अवतार ॥ बढ़त पल पल घटत छिन छिन चलत न लागे वार । विरछके ज्यों पात टूटे लगे नहिं पुनि डार ॥ भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार । सुरतका नर बाँध बेड़ा वेग उतरो पार ॥ साधुसंतां ते महंतां चलत करत पुकार । दास मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥ २२२ ॥

राग सिंधड़ा ।

क्या कहें आलममें हम इनसान या हैवान थे । खाक थे क्या थे गरज इक आनके मिहिमान थे ॥ कर रहे थे अपना कवजा गैरोंके इमलाक पर । छीनली जब उसने तो जाना कि हम नादान थे ॥ एक दिन उस उस्तख्वाँपर जा पड़ा मेरा जो पाउँ। क्या कहें उस वक्त मेरे दिलमें क्या क्या ध्यान थे ॥ पाउँ पड़तेही गरज उस उस्तख्वांने आह की । अरकहा जालम कभी हम भी तो साहव जान थे ॥ दस्तो पा जानूँ शिरो गर्दन शिकम पुश्तो कमर । देखनेको आँख और सुननेकी खातर कान थे ॥ अबरू ओ बीनी ज़वी नक्शो नगारे खालो खत । लाल मर वारीदसे विहतर लवोदंदान थे ॥ रातके सोनेको क्या क्या नरमो नाज़ुक थे पलंग । दिनकी खातर बैठनेको ताक और ऐवान थे ॥

लग रहा थां दिल कहीं चंचल परीजादोंके साथ। कुछ किसीसे अहद थे और कुछ कहीं पैमान थे ॥ गुलवदन औ गुल अजारों-से कनारो वोस्ता। कुछ निकाले थे हवस कुछ औरभी अरमान थे ॥ होरही थीं चहचहीं और मचरही थीं कहकहीं। साकी औ सागर सुराही अतर फूल और पान थे ॥ एकहीं चक्कर अजलने आनकर ऐसा दिया। न तो हम थे न वह सारे ऐशके सामान थे ॥ ऐसी वेर हमींसे मत रख पाउँ हमपै ऐ नजीर। वो मियाँ हम भी कभी तेरी तरह इनसान थे ॥ २२३ ॥

गजल।

हमनसे मत मिलो लोगो हमन खफती दिवाने हैं। खुशीका राह छोड़ा है कठिनमें जा समाने हैं ॥ तजी खिदमत वजीरीकी पाई लज्जत फकीरीकी। चढ़े किश्ती सबूरीकी फकरके यह मकाने हैं ॥ हम न दिन रैंग रोते हैं गमोंसे जान खोते हैं। शूलोंकी सेज सोते हैं विरहोंके यह निशाने हैं ॥ हमारा यार ओ जानी पीवे हरिनामका पानी। कि आखिर होवना फानी वली रामे समाने हैं ॥ २२४ ॥

राग झूलना।

दुनियाँके परपंचोंमें हम मजा नहीं कुछ पाया है। भाई वन्धु पिता माता सुत सवसों चित अकुलाया है ॥ छोंड़ छाँड़ घर गाम नाम कुल यही पंथ मन भाया है। ललितकिशोरी आनँद घनसों अव हठ नेह लगाया है ॥ २२५ ॥

जंगलमें अव रमते हैं दिल वस्तीसे घवराता है। मानुषगन्ध न भाती है सँग मर्कट मोर सुहाता है ॥ चाक गरेवाँ करके दमदम आहीं भरने भाता है। ललितकिशोरी इश्क रैनदिन यह सब खेल खिलाता है ॥ २२६ ॥

गजल।

नहीं हम वेदके वादी विरागी मन हमारा है। नहीं हम वेषके योगी हमारा पंथ न्यारा है॥ नहीं हम सुन्नके मंडल जहाँ बहु बेशुमारा है। नहीं वह जाय हरयककी जहाँ हम जीव डारा है॥ देखा दिल दूर बीनीसे जहाँ तहँ पीव प्यारा है। करैं हम एककी सेवा वली जिसका पसारा है॥ २२७॥

कुंडलिया।

साईं वैर न कीजिये, गुरु पंडित कवि यार।
वेटा वनिता पौरिया, यज्ञ करावनहार॥
यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई।
विप्र परोसी वैद्य आपको तपै रसोई॥
कह गिरिधर कविराय वात चतुरनके ताईं।
इन तेरहसों तरह दिये वनि आवै साईं॥ २२८॥
प्राण पुत्र दोऊ वड़े, युग चारो परमान।
सो राजा दशरथ तजे, वचन न दीन्हे जान॥
वचन न दीन्हे जान वड़ेनकी यहै वड़ाई।
वात रहै पै रहै और सर्वस किन जाई॥
कह गिरिधर कविराय भये दशरथ प्रणवाना।
वचन कहे नहिं तजे तजे निज सुत अरु प्राना॥ २२९
दौलत पाय न कीजिये, सपनेमें अभिमान।
चंचल जल दिन चारको, ठाउँ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान जियत जगमें यश लीजे।
मीठे वचन सुनाय विनय सवहीकी कीजे॥
कह गिरिधर कविराय अरे यह सव घट तौलत।
पाहुनि निशिदिन चार रहत सवहीके दौलत॥ २३०

विना विचारे जो करै, सो पाछे पछताय ।
काम विगारै आपनो, जगमें होत हँसाय ॥
जगमें होत हँसाय चित्तमें चैन न आवै ।
खान पान सन्मान रागरँग मनहिं न भावै ॥
कह गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जियमाहिं कियो जो विना विचारे ॥ २३१ ॥
साईं अपने चित्तकी, कवहुँ न कहिये कोय ।
तवलग मनमें राखिये, जवलग काज न होय ॥
जवलग काज न होय भूल कवहूँ नहिं कहिये ।
दुर्जन हँसै न कोय आप सियरे हो रहिये ॥
कह गिरिधर कविराय वात चतुरनके ताईं ।
करतूती कहि देत आप कहिये नहिं साईं ॥ २३२ ॥
साईं अपने भाइको, कवहुँ न दीजै त्रास ।
पलक ओट नहिं कीजिये, सदा राखिये पास ॥
सदा राखिये पास त्रास कवहूँ नहिं दीजै ।
त्रास दियो लंकेश तासुकी गति सुनि लीजै ॥
कह गिरिधर कविराय रामसों मिलिगो जाईं ।
पाय विभीषण राज्य लंकपति वाज्यो साईं ॥ २३३ ॥
प्रीति कीजिये वड़ेनसों, समया लावे पार ।
कायर क्रूर कपूत है, वोरि देत मँझधार ॥
वोरि देत मँझधार प्रीतिकी कवन वड़ाई ।
पछिताने फिर देहि जगतमें अपयश पाई ॥
कह गिरिधर कविराय प्रीति साँची सिख लीजै ।
व्यवहारी जो होय तऊ तन मन धन दीजै ॥ २३४ ॥
साईं अवसरके पड़े, को न सहै दुख द्वन्द ।

चूक उन्होंसे होय पढ़े जे पंडित मुल्ला ॥
कह गिरिधर कविराय कलाहूते नट चूकै ॥
चुगुल चौकसीदार दुष्ट कबहूं नहिं चूकै ॥ २४३ ॥
बीती ताहि बिसारदे, आगेकी सुधि लेहु ।
जो बनि आवे सहजही, ताहीमें चित देहु ॥
ताहीमें चित देहु बात जोई बनि आवे ।
दुर्जन होय न कोय चित्तमें खता न पावै ॥
कह गिरिधर कविराय यही कर मन परतीती ।
आगेको सुख होय समझ बीती सो बीती ॥ २४४ ॥
नैनोंकी नोकैं बुरी, बेधि जान जस तीर ।
हेरे घाव न पाइये, बेधा सकल शरीर ॥
बेधा सकल शरीर बैद का करै बैदाई ।
करिहो कोटि उपाय घाव नहिं देत दिखाई ॥
कह गिरिधर कविराय विरहिनी देत है चोकें ।
समझि बूझिके चलौ बुरी नैननकी नोकें ॥ २४५ ॥
गुणके गाहक सहस्र नर, बिन गुण गहै न कोइ ।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनो सभ कोइ ॥
शब्द सुने सब कोय कोकिला सबहि सुहावन ।
दोऊ एकै रंग काग सम भये अपावन ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो ठाकुर मनके ।
बिन गुरु लहे न कोय सहस नर गाहक गुणके ॥ २४६ ॥
बानी बहुत प्रकारकी, ताको नाहीं अंत ।
जोई अपने कामकी, सोई सुने सिधांत ॥
सोई सुने सिधांत संत जन गावन होई ।
चित्त आनके ठौर सुने जो नितप्रति सोई ॥

यथा हंस पय पिये रहै ज्यों को त्यों पानी ।
ऐसे लहै विचार शिष्य बहुविध है बानी ॥ २४७ ॥
मित्र बिछोहा अति कठिन मत दीजै करतार ।
वाके गुण जब चित चढ़ै वर्षत नयन अपार ॥
वर्षत नयन अपार मेघ सावन झरि लाई ।
अब बिछुरे कब मिलौ कहो कैसी बनि आई ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो विनती एहा ।
हे करतार दयालु देहु जनि मित्रबिछोहा ॥ २४८ ॥
लाठीमें गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग ।
गहरी नदि नारा जहाँ, तहाँ बचावै अंग ॥
तहाँ बचावै अंग झपटि कुत्ताकहँ मारै ।
दुश्मन दावागीर होय तिनहूँको झारै ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो धुरके वाटी ।
सब हथियारन छाँड़ि हाथमहँ लीजे लाठी ॥ २४९ ॥
कमरी थोरे दामकी, आवै बहुतै काम ।
खासा मलमल वाफता, उनकर राखै मान ॥
उनकर राखै मान बूँद जहँ आड़े आवै ।
बकुचा बाँधै मोट रातको झारि बिछावै ॥
कह गिरिधर कविराय मिलति है थोरे दमरी ।
सब दिन राखै साथ बड़ी मर्यादा कमरी ॥ २५० ॥

बारहमासा-रावणमंदोदरीसंवाद ।

दशकंध अंध मतिमन्द अर्ज सुन मेरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ टेक ॥ वैशाख वैर पिया किया तुम्हें नहिं शंका । हैं दशरथसुत रणधीर युगल बल बंका ॥ अब बाजि हैं नगर तमाम रामका डंका ॥ फिरि करै विभीषण राज गई

जाय विकाने डोमघर, वे राजा हरिचन्द ॥
वे राजा हरिचन्द करे मरघट रखवारी ।
किये तपस्वी वेष फिरे अर्जुन वलधारी ॥
कह गिरिधर कविराय तपै वह भीम रसोई ।
कौन करै घटि काम परै अवसरके साईं ॥ २३५ ॥
साईं वेटा वापके, विगरे भयो अकाज ।
हरणाकुश अरु कंसको, गयो दुहुनको राज ॥
गयो दुहुँनको राज वाप वेटामें विगरी ।
दुश्मन दावागीर हँसै सब मंडल नगरी ॥
कह गिरिधर कविराय युगन याही चलि आई ।
पिता पुत्रके वेर कहाँ सुख कौन पाई ॥ २३६ ॥
वेटा बिगरो वापसों, करि तिरियनसों नेहु ।
लटापटी होने लगी, मोहिं जुदा करि देहु ॥
मोहिं जुदा करि देहु घरेमाँ माया मेरी ।
लेहौं घर अरु वार करौं मैं फजिहत तेरी ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो गदहाके लेटा ।
समय परयो है आय वापसे झगरत वेटा ॥ २३७ ॥
साईं ऐसे पुत्रसे, वाँझ रहै वरु नारि ।
विगरी वेटा वापसों, जाय रहे ससुरारि ॥
जाय रहे ससुरारि नारिके नाम विकाने ।
कुलके धर्म नशाय और परिवार नशाने ॥
कह गिरिधर कविराय मातु झीकै वहि ठाईं ।
अस पुत्रिनि नहिं होय वाँझ रहतिउँ वरु साईं ॥ २३८ ॥
नारी अतिवलके भये, कुलकर होय विनाश ।
कौरव पांडव वंशको, कियो द्रौपदी नाश ॥

कियो द्रौपदी नाश केकयी दशरथ मारे।
राम लषणसे पुत्र तेऊ वनवास सिधारे॥
कह गिरिधर कविराय सदा नर रहे दुखारी।
सो घर सत्यानाश जहाँ है अतिवल नारी॥ २३९॥
काची रोटी कचपची, तामें माछीवार।
फूहर वही सराहिये, परसत टपकै लार॥
परसत टपकै लार झपटि लरिकै सौंचावै।
चूतर पोंछे हाथ दुहत्था शिर खुजलावै॥
कह गिरिधर कविराय फुहरके याही धैना।
काजर जो नहिं मिलै लुकाठन रगरै नैना॥ २४०॥
चिन्ताज्वाल शरीरकी, दाह लगे न बुझाय।
प्रगट धुवाँ नहिं देखिये, उर अंतर धुँधवाय॥
उर अन्तर धुँधवाय जरै जस काँचकी भट्टी।
रक्त मांस जरि जाय रहै पाँजरकी टट्टी॥
कह गिरिधर कविराय सुनो रे मेरे मीता।
वे नर कैसे जियैं जाहि व्यापी है चिंता॥ २४१॥
साईं समय न चूकिये, यथाशक्ति सन्मान।
को जानै को आइ है, तेरी पौरि प्रमान॥
तेरी पौरि प्रमान समय असमय तकि आवै।
ताको तन मन खोलि अंकभरि हृदय लगावै॥
कह गिरिधर कविराय सबै यामें सुधि आई।
शीतल जल फल फूल समय जनि चूको साईं॥ २४२॥
कबहुँ न चूकै चुगुल नर, अरु चूकै सब कोय।
वरकन्दाज कमानियाँ, चूक उन्होंसे होय॥
चूक उन्होंसे होय जे बाँधैं बरछी गुल्ला।

चूक उन्होंसे होय पढ़े जे पंडित मुल्ला ॥
कह गिरिधर कविराय कलाहूते नट चूकै ॥
चुगुल चौकसीदार दुष्ट कबहूँ नहिं चूकै ॥ २४३ ॥
बीती ताहि विसारदे, आगेकी सुधि लेहु ।
जो बनि आवै सहजही, ताहीमें चित देहु ॥
ताहीमें चित देहु बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन होय न कोय चित्तमें खता न पावै ॥
कह गिरिधर कविराय यही कर मन परतीती ।
आगेको सुख होय समझ बीती सो बीती ॥ २४४ ॥
नैनोंकी नोकैं बुरी, बेधि जान जस तीर ।
हेरे घाव न पाइये, वेधा सकल शरीर ॥
वेधा सकल शरीर वैद का करै वैदाई ।
करिहो कोटि उपाय घाव नहिं देत दिखाई ॥
कह गिरिधर कविराय विरहिनी देत है चोकें ।
समझि बूझिके चलौ बुरी नैननकी नोकें ॥ २४५ ॥
गुणके गाहक सहस नर, विन गुण गहै न कोइ ।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनो सभ कोइ ॥
शब्द सुने सब कोय कोकिला सबहि सुहावन ।
दोऊ एके रंग काग सम भये अपावन ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो ठाकुर मनके ।
विन गुरु लहे न कोय सहस नर गाहक गुणके ॥ २४६ ॥
बानी बहुत प्रकारकी, ताको नाहीं अंत ।
जोई अपने कामकी, सोई सुने सिधांत ॥
सोई सुने सिधांत संत जन गावन होई ।
चित्त आनके ठौर सुने जो नितप्रति सोई ॥

यथा हंस पय पिये रहै ज्यों को त्यों पानी ।
ऐसे लहे विचार शिष्य वहुविध है वानी ॥ २४७ ॥
मित्र विछोहा अति कठिन मत दीजै करतार ।
वाके गुण जव चित चढ़ै वर्षत नयन अपार ॥
वर्षत नयन अपार मेघ सावन झरि लाई ।
अव विछुरे कव मिलौ कहो कैसी वनि आई ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो विनती एहा ।
हे करतार दयालु देहु जनि मित्रविछोहा ॥ २४८ ॥
लाठीमें गुण वहुत हैं, सदा राखिये संग ।
गहरी नदि नारा जहाँ, तहाँ वचावै अंग ॥
तहाँ वचावै अंग झपटि कुत्ताकहँ मारै ।
दुश्मन दावागीर होय तिनहूँको झारै ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हो धुरके वाटी ।
सब हथियारन छाँड़ि हाथमहँ लीजै लाठी ॥ २४९ ॥
कमरी थोरे दामकी, आवै बहुतै काम ।
खासा मलमल वाफता, उनकर राखै मान ॥
उनकर राखै मान बूँद जहँ आड़े आवै ।
वकुचा बाँधे मोट रातको झारि विछावै ॥
कह गिरिधर कविराय मिलति है थोरे दमरी ।
सब दिन राखै साथ वड़ी मर्यादा कमरी ॥ २५० ॥

बारहमासा—रावणमंदोदरीसंवाद ।

दशकंध अंध मतिमन्द अर्ज सुन मेरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ टेक ॥ वैशाख वैर पिया किया तुम्हैं नहिं शंका । हैं दशरथसुत रणधीर युगल बल बंका ॥ अब बाजि हैं नगर तमाम रामका डंका ॥ फिरि करै विभीपण राज गई

पति लंका ॥ विन खेवट नैया माँझधार लै बोरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ १ ॥ हम जेठ मास वन जाय कठिन तप कीन्हा । चढ़ि हंस विधाता आय मोहिं वर दीन्हा ॥ विधि कही माँगु वरदान माँगि हम लीन्हा । कोइ मो समान बलवान होय पृथिवी ना ॥ डरपै अति नारि स्वभाव सदा ते रोरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ २ ॥ आयो अषाढ़ घनघोर कहत समुझाई । भंजो शिवचाप जहाज आप रघुराई ॥ पिय जनक यज्ञमें बूड़ि गई ठकुराई । कुछ तुमको राज समाज लाज नहिं आई ॥ सिय धनुष तोड़ि ना वरी करी क्यों चोरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ३ ॥ सावन रावन समुझाय कहत भुज वीशा । शंकर पर अपने काटि चढ़ाये शीशा ॥ प्रभु दिया हमहिं वरदान उमापति ईशा । तुम अचल करौ शिर सकल करी बखशीशा ॥ क्या जाने नारि गँवारि बुद्धि है थोरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ४ ॥ भादौं भूषण पहिराय वदन सुन्दरसे । पटरानी करैं सिंगार सियाको करसे ॥ कोइ रतनजटित सुन्दर विमान सज घरसे । तामें सीता बैठाय मिलौ रघुवरसे ॥ पति अटल करैं रघुनाथ बनै सब तोरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ५ ॥ आसौज करै अंदेश गई मति मारी । हैं कुंभकरण घननाद वीर बलकारी ॥ भुजबल जीते भूपाल सकल संसारी । सुरपुरमें वरुण कुबेर इन्द्र गये हारी ॥ यमपुर हारे यमराज काल बाँधोरी । लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ६ ॥ कातिकमें कपि इक आय उजारी बारी । फल खाये विटप उखार हने भट भारी ॥ तुम ताकी पूँछ बँधाय लंक सब जारी । इक बचो विभीपणभवन भक्तहितकारी ॥ अब सेतु

बाँधि रघुवीर कटक उतरोरी। लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ७ ॥ अगहनमें अति विन काज आज भय मानी। हौं जगयोधा लंकेश ईश वरदानी ॥ हम उठालिया कैलास सहित शिव रानी। वे रामलखण सुत भूप कित्तक बलवानी ॥ है महिमंडलमें अदल आज अपनो री। लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ८ ॥ पिय पूप परम सुख सीख श्रवण सुनि लीजै। अव मेघनादको राजतिलक करि दीजै ॥ तजि सकल राज अभिमान गवन वन कीजै। करि रघुनंदनको भजन जगत यश लीजै ॥ शिव जपत समाधि लगाय नाम जिनको री। लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ९ ॥ धरि माँह शंभुको ध्यान सुमिरि विधि नामा। मैं करौं कटकमें जाय विकट संग्रामा ॥ जो हुइ हैं पूरनब्रह्म अवधके रामा। तो समरमाहिं मोहिं मारि दिहैं निजधामा ॥ दोनौं विधि रानी बनो काज मेरो री। लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ १० ॥ फागुनमें वर्षत रंग राम अनुरागी। पिया सुमति विभीषण दई तुमहिं विष लागी ॥ तुम मारी ताके लात सभा जिन त्यागी। सो मिल्यो जाय रघुनाथ भक्त बड़भागी ॥ प्रभु कही आप लंकेश हाथ पकरो री। लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया कर जोरी ॥ ११ ॥ पिय चैत मासमें चतुर नारि समुझाया। वह हुआ कालवश असुर ज्ञान नहिं आया ॥ कर नारायणको ध्यान परम सुख पाया। वंदिश गणेशपरशाद रामगुण गाया ॥ बारहमासी अति ललित भक्तिरस बोरी। लै मिलौ सिया रघुनाथ पिया० ॥ १२ ॥ २५१ ॥

ख्याल-रंगत वशीकरण।

नरगिसी चश्म गुलवदन उमर है बाली। घूँघटकी ओट कर चोट मोहनी डाली ॥ अलबेली बाँकी अदादार भामिन है

करके सोलह शृंगार खड़ी कामिन है ॥ योवन मिसाल दम दमक रही दामिन है । दिल हुआ मेरा मुश्ताक खुदा जामिन है ॥ क्या फबन है गुंचे दहन पानकी लाली । घूँघटकी ओट कर चोट मोहनी डाली ॥ १ ॥ इस कदर तेरे रुखसारोंपर योवन है । जिस कदर फलकमें झलक माह रोशन है ॥ क्या मदनकी आमद वदनमें नाजुकपन है । मखमली मुलायम शिकम जिस्म कुन्दन है ॥ क्या अदासे काली लट नागिन लटकाली । घूँघटकी ओट कर चोट मोहनी डाली ॥ २ ॥ कानोंमें तेरे करनफूल वाला है । रुख झूम झूम झुमकोंने चूम डाला है ॥ वेंदी वेसर नौरतन गले माला है । अफसरे जहाँ योवनका उजियाला है ॥ क्या अजब नाज अन्दाज चाल मतवाली ॥ घूँघटकी ओट कर चोट मोहनी डाली ॥ ३ ॥ क्या परी परीसी तेरी पेशानी है । वह अदा तेरी कुल जहाँके मनमानी है ॥ हकतालाकी इस कदर मेहरवानी है । वंदिश गणेशपरशाद शेर ख्वानी है ॥ छबि दिखाके तावियत वेशुमार उलझाली । घूँघटकी ओट कर चोट मोहनी डाली ॥ ४ ॥ २५२ ॥

तथा ।

करके सोलह शृंगार शीश धरि झारी । छम छम करती जल भरन चली पनिहारी ॥ है वशीकरण मोहनी नोक नैननकी । कुल किये फिदा दिल चला साँगि सैननकी ॥ वेसर वाँकी दिखलाके लटक लटकनकी । नौरतन गले गुलहार झलक योवनकी ॥ शिर सुरख चूनरी वदन वसन्ती सारी । छम छम करती जल भरन चली पनिहारी ॥ १ ॥ साँचेमें ढ़ाला वदन कमर वलखाती । विच मिले नन्द फर्जन्द पकड़ लई छाती ॥ गोरी हटके नागरनट पनिघट समझाती । क्या इन वातोंमें तुम्हें

शरम नहिं आती ॥ है कठिन कंसका राज अदल है भारी। छम छम करती जल भरन चली पनिहारी ॥ २ ॥ दिल लिया हमारा बाँकी अदा दिखाके। है धन योवनका दान घाट यमुनाके ॥ देउ हँसी खुशीसे कहैं कृष्ण समुझाके। मत रहे भरोसे कठिन कंस राजाके ॥ क्या असल कंसकी गई तेरी मति मारी। छम छम करती जल भरन चली पनिहारी ॥ ३ ॥ मैं कहूँ हकीकत जाके नँदरानीसे। तुम नहीं बाज आते हो नादानीसे ॥ क्या नफा तुम्हें हरघड़ी छेड़खानीसे। जानेदे मोहन मुझे मेहरबानीसे ॥ क्यों रोकै मेरी गैल छैल बनवारी। छम छम करती जल भरन चली पनिहारी ॥ ४ ॥ क्या मदन मनोहर चतुर सखी समझाई। गई लिपट गलेमें भूल गई चतुराई ॥ हो मेहेरवान भगवान गले लागाई। गोरी भर यमुना नीर महलमें आई ॥ वंदिश गणेशपरशाद कलम है जारी। छम छम करती जल भरन चली पनिहारी ॥ ५ ॥ २५३ ॥

तथा–रासलीला रंगत वशीकरण।

वृन्दावन रचा गोपाल रास कुंजनमें। थेइ थेइ नागर नट निरत करत सखियनमें ॥ निशि शरद चाँदनी चंद्र परम सुखदाई। वंशीमें मदनगुपाल मधुर धुनि गाई। नारद सुर शेश महेश मुनिन मन भाई। मोहीं व्रजबाल विशाल सुरति बिसराई ॥ धुनि रही मनोहर छाय लोकलोकनमें। थेइ थेइ नागरनट निरत करत सखियनमें ॥ १ ॥ बाजी वाजी यों कहैं बाँसुरी बाजी। बाजिनके लागी चोट विरहकी ताजी ॥ उलटे आभूषण पहिर किंकिणी साजी। अम्बरकी नाहिं शुमार विकल वन भाजी ॥ मुखचन्द्र सखिनके वृन्द भरे योवनमें। थेइ थेइ नागरनट निरत करत सखियनमें ॥ २ ॥ बोले गोपिनसे कठिन वचन

वनवारी । तजि लोकलाज तुम चलीं कहाँको प्यारी ॥ मृदु वचन कहें समुझाय विरजकी नारी । वंशीकी लागी चोट करेजे कारी ॥ मनहरन मधुर धुनि भनक पड़ी काननमें । थेइ थेइ नागरनट निरत करत सखियनमें ॥ ३ ॥ वंशीबटमें क्या रची नवल हरिमाया । जितनी गोपी सोइ कृष्ण-रूप दिखराया ॥ तिहुँ लोक चतुर्दश भुवन परम सुख पाया । वंशी मृदंग वंशीमें राग दरशाया ॥ छवि रही अनूठी छाय नन्दनन्दनमें । थेइ थेइ नागरनट निरत करत सखियनमें ॥ ४ ॥ डोलें व्रजबाल गोपाल गलेविच बैयां । छमछम करती पग धरें फिरें फिरकैयां ॥ दामिन दमके चहुँओर उमिरि लरिकैयां । सुर वर्षत यमुनाकूल फूल वनमैयां ॥ होरही रागिनी राग झुंड झुंड-नमें । थेइ थेइ नागरनट निरत करत सखियनमें ॥ ५ ॥ विच विच गोपिनके ठुमक चलत वनमाली । इत उत व्रजबाल विशाल वजावें ताली ॥ ताथेइ ताथेइ थेइ करें मदनमतवाली । व्रजबाल मदनमोहनको रिझानेवाली ॥ गावें गणेशपरशाद चरित छन्द-नमें । थेइ थेइ नागरनट निरत करत सखियनमें ॥ ६ ॥ २५४ ॥

तथा—द्रौपदीविनय ।

विनकाज आज महराज लाज गई मेरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ दुश्शासन वंशकुठार महादुखदाई । कर पकरत मेरो चीर लाज नहिं आई ॥ अब भयो धर्मको नाश पाप रहो छाई । लखि अधम सभाकी ओर नारि बिलखाई ॥ शकुनी दुर्योधन कर्ण खड़े खल घेरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ १ ॥ तुम दीननकी सुधि लेत देवकीनंदन । महिमा अनन्त भगवन्त भक्तदुखभंजन ॥ तुम किया सियादुख दूरि शंभुधनुखंडन । अति आरतहरन गुपाल मुनिनमनरंजन ॥

करुणानिधान भगवान करी क्या देरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ २ ॥ तुम सुनि गयन्दकी टेर विश्व अघनासी । ग्रह मारि छुटाई बन्दि काटि पग फाँसी ॥ मैं धरौं तुम्हारो ध्यान द्वारकावासी । अव काहे राजसमाज करावत हाँसी ॥ अव कृपा करो यदुनाथ जानि चित चेरी । दुख हरो द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥३॥ तुम पति राखी प्रहलाद दीनदुख टारो । भये खंभ फारि नर-सिंह असुर संहारो ॥ व्रज खेलत केशी आदि बकासुर फारो । मथुरा मुष्टिक चाणूर असुर संहारो ॥ तुम मात पिताकी जाय कटाई बेरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ ४ ॥ भक्तनहित ले अवतार कन्हाई तुमने । नलकूबरकी जड़योनि छुटाई तुमने ॥ जल वर्षत प्रभुता अगम दिखाई तुमने । नखपर गिरि धरि व्रज लियो बचाई तुमने ॥ प्रभु अव विलंब क्यों करी हमारी बेरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ ५ ॥ बैठे सब राजसमाज नीति जिन खोई । नहिं कहत धरमकी वात सभामें कोई । पाँचौ पति बैठे मौन कौन गति होई । लै नँदनन्दनको नाम द्रौपदी रोई ॥ करि करि विलाप संताप सभामें टेरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ ६ ॥ सुनि दीनबंधु भगवान भक्तहितकारी । हरि भये चीरमय आप हरो दुख भारी ॥ खैंचत हारो मतिमंद वीर बलकारी । रख लई दीनकी लाज आप व्रन-वारी ॥ हर्षत वर्षत सुर सुमन बजावत भेरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ ७ ॥ क्या करी द्वारकानाथ मनोहर माया । अंबरका लगा पहाड अंत नहिं पाया ॥ तिहुँलोक चतुर्दश भवन चीर दरशाया । वंदिश गणेशपरशाद कृष्णगुण गाया ॥ दीन-नके दीनानाथ विपति निरवेरी । दुख हरौ द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥ ८ ॥ २५५ ॥

भ्रमरगीत–रंगत वशीकरण।

कुछ कपट प्रीतिकी रीति कही ना जाती। लिखि लिखि पातीमें योग जरावत छाती॥ सुनि सुनि ऊधोके वैन नैन भरि आये। किसकारण तजि हरि हमें द्वारका छाये॥ तजि लोकलाज कुलकानि भवन विसराये। कुब्जाके कीन्हे काज कृष्ण मन-भाये॥ दिन रैन चैन नहिं पड़े नींद नहिं आती। लिखि लिखि पातीमें योग जरावत छाती॥ १॥ इत राधावल्लभ नाम लेत ब्रजवासी। उत कूबरिकृष्ण कहाय करावत हाँसी॥ हरि माखन चाखनहार छाछ कुबिजासी। कैसे मन मानी कृष्ण कंसकी दासी॥ ब्रजबालक मल कुब्जा करीलकी पाती। लिखि लिखि पातीमें योग जरावत छाती॥ २॥ उनहींके भाग सुहाग सौत सुख पावै। हम सेली डालैं अंग विभूति रमावैं॥ कानोंमें मुद्रा पहिन कृष्णगुण गावैं। इतनी ब्रजबाला मृगछाला कहँ पावैं॥ कुंजनमें आसन मारि अलख जागाती। लिखि लिखि पातीमें योग जरावत छाती॥ ३॥ हरि रहे द्वारका छाय भला ना कीया। उनहींसे बाढ़ी प्रीति हमें दुख दीया॥ वे निठुर श्याम होगये हमारे पीया। इन बातोंमें फट गया हमारा जीया॥ ऊधो कहियो समुझाय शरम नहिं आती। लिखि लिखि पातीमें योग जरावत छाती॥ ४॥ हरि खेले गोपिनसंग सदा लरि-कैयाँ। अब भये द्वारकानाथ छांड़ि हमकैयाँ॥ ऊधौ समुझाई सखी कदमकी छैयां। हम दीहें तुम्हें मिलाय कृष्ण-वनमैयां॥ वंदिश गणेशपरशाद चरणरति भाती। लिखि लिखि पातीमें योग जरावत छाती॥ ५॥ २५६॥

गजल।

श्यामकी ऊधौ जुदाई अब सही जाती नहीं। चैन दिनको

रातको आंखोंमें नींद आती नहीं ॥ बेवफा हमसे खफा हो जादिया सौतनको दिल। क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती नहीं ॥ दिल दिया गैरोंको हमदम गम दिया हमको सनम। अब कोई मिलनेकी सूरत हमको दिखलाती नहीं ॥ छोड़कर माखन औ मिसरी वह गये पीनेको छाछ। ताब जुगनूकी कहीं महताबको पाती नहीं ॥ क्या कहें गोकुलके तुमसे हाल बरसा-नेके हम। कुंजकी कोई गली हरगिज हमें भाती नहीं ॥ उनकी उल्फतमें हमेशा गोपियाँ गाती थीं राग। वह गये जबसे कोई गाती है परभाती नहीं ॥ कानोंमें मुद्रा गले सेली मलैं तनुसे विभूत। होवैं हम योगिन उन्हें कहते शरम आती नहीं ॥ मार कर आसन लिये माला करो कुंजन भजन। यह सखुन लिखते तबीयत तरस कुछ खाती नहीं ॥ आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश। है कोई दाना सखी हमदमको समझाती नहीं ॥

रामकलेवा–रंगत बेनजीर।

मुनिसंग मनोहर माई। सोहैं समाज रघुराई ॥ टेक ॥ मणि मुकुट चमक चपलासी। छवि कोटि काम उपमासी ॥ लखि श्याम गौर सुखरासी। गये मोहि जनकपुरवासी ॥ छन्द–कहा जनकने जाय यज्ञमें जमा वीर बाँके। जो कोइ तोड़ें धनुष वरौं मैं सिया संग ताके ॥ उठा न पाया धनुष किसीने मिथि-लापुर आके। लिया हाथ रघुनाथ करदिया खंड खंड जाके ॥ टूट--शब्द सुनि महिमंडल हाला। सिया पिय पहिराई माला ॥ सुर सुमन रहे बरषाई। सोहैं समाज रघुराई ॥ २ ॥ घन घोर शोर भौ भारी। गई डगमगाय महि सारी ॥ शंकर समाज सुनि टारी। गई छूटि मुनिनकी नारी ॥ छन्द–परशुरामने आय सभामें जब कुठार ताना। क्यों नृप जनक धनुष क्यहि तोड़ा

हमको वतलाना ॥ भृगुवंशी रघुवंश मिले जिसदम दोनौं दाना। हुआ राम अवतार जहाँमें परशुराम जाना ॥ टूट–सभामें रमानाथने आप । चढ़ाया नारायणका चाप ॥ मुनि चले चरण शिर नाई । सोहैं समाज रघुराई ॥ २ ॥ लिख जनक पत्र पहुँचाये । लै दूत अवधपुर आये ॥ दशरथ बहु नृप बुलवाये । सुनि समाचार सुख पाये ॥ छन्द–बदल बदल पोशाक कुँवर करते हैं तैयारी । वेशुमार असवार सजी रैयत रेजा सारी ॥ हवादार सुखपाल झुकी हाथिनपर अम्बारी । ऋषि वशिष्ठ रिपुदमन भरतकी आवै असवारी ॥ टूट–बजा जव दशरथका डंका । सजा दल बेशुमार बंका ॥ साजि सुघर बरायत आई । सोहैं समाज रघुराई ॥ ३ ॥ सजि मुनि विदेह मिथिलासे। गये राम लषण पितुपासे ॥ भई पूरन मनकी आसे । लाये बरात जनवासे ॥ छन्द–जले झाड़ गुलजार चढ़ी जिसदम बरात आला । कदम कदम पर किला सुघर टट्टिनका उजियाला ॥ उझकि उझकि रहीं झांकि झरोखन झमकि झमकि बाला । रघुवंशिनके कुँवर जनकपुरमें जादू डाला ॥ टूट:-बजे दल बेशुमार बाजा । किया राजाने दरवाजा ॥ दशरथ बहु सम्पति पाई । सोहैं समाज रघुराई ॥ ४ ॥ शिर मौर मनोहर सोहै । लखि वदन मदन मन मोहै ॥ कंकन कर सुघर बंधो है । तन श्याम गौर तिनको है ॥ छन्द--जनकभवन शुभ लगन गई दशरथसुत सुख पाई । कोटि कोटि रविचन्द रतनमंडप छवि छाई ॥ राम भरत रिपुदमन लखन ब्याहे चारौ भाई । त्रिभुवन परमानन्द बजी सुरपुरमें बाधाई ॥ टूट--लिये कर कंचनकी थारी । आरती करैं जनकनारी ॥ शोभा वरनी नहिं जाई । सोहैं समाज रघुराई ॥५॥ जव सजे साज महिफिलके । जहँ बिछे फर्श मखमलके ॥ रघुवर

पोशाक वदलके । बैठे नृप सम्हल सम्हलके ॥ छन्द–विश्वामित्र वशिष्ठ इन्द्र बैठे विरंचि बंगला । शिव नारद सनकादि सभामें ठनकि रहे तवला । करें गान गन्धर्व अप्सरा नृत्य करें अवला । धनाशिरी खम्माच रागिनी गायरहीं जँगला ॥ टूट–करें ताता थेइ थैया । फिरें महिफिलमें फिरकैया ॥ रघुवरको रहीं रिझाई । सोहैं समाज रघुराई ॥ ६ ॥ जव कुँवर कलेवा काजे । रघुवीर मनोहर साजे ॥ सजि सजि गयन्द तन साजे । हौदनपर नृपति विराजे ॥ छन्द–अनुजसहित रघुनाथ सब्ज घोड़ेसवार आते । कारे कोतल कच्छी काही कदम चले जाते । नीलानुकरा खाकी लाखी श्याम सुखं भाते । चीनी चपला चटक चंपई चंचल दिखलाते ॥ टूट–वदन जेवर लगाम रंगीन । मखमली पड़े जड़ाऊ जीन ॥ निरखैं नर सुन्दरताई । सोहैं समाज रघुराई ॥७॥ सुंदर तन धरि धरि देवा । आये प्रभु कुँवरकलेवा ॥ दइ परसि मिठाई मेवा । सव करैं सुन्दरी सेवा ॥ छन्द–करत कलेवा कुँवर जनकपुर जमाँ सकल सखियाँ । राम भरत रिपुदमन लखन लखि सुफल भई अँखियाँ । ज्यों नभचन्द्र चकोर मुदित मन छिनछिन छवि छकियाँ । मृगनैनी मोहनी करैं मृदु मदनभरी वतियाँ ॥ टूट–किये सोलह सिंगार कामिन । महलमें दमकि रही दामिन ॥ चितवत चित लेयँ चुराई । सोहैं समाज रघुराई ॥ ८ ॥ कोइ कोइ सखि पान खिलावैं । कोइ कोइ सखि अतर लगावैं । कोइ कोइ दर्पण दिखलावैं । कोइ कोइ सखि चँवर डुलावैं ॥ छन्द–पीकदान ले हाथ खड़ी कोइ खिदमतमें दासी । कोइ गोरी गुलवदन करती गुलाव पासी । सरहज सारी सखी सामने वैठि गईं पासी । छोटी छोटी छटी छवीली करैं विविध हाँसी ॥ टूट–उमा रमा श्याम गौर सुत चार । महलमें दई मोहनी डार ॥ नैनन छवि रही

समाई । सोहैं समाज रघुराई ॥ ९ ॥ छप्पन व्यंजन वनवाये । ज्यौनार वराती आये ॥ पग धोय धोय बैठाये । कंचनके थार परसाये ॥ छन्द–पेड़ा पपड़ी खाजे ताजे खरे कन्द पागे । लड्डू औलो जात जलेवी देखि भूँख भागे ॥ कलाकंद अकवरी अमिरती परसि दई आगे । परसि परसि पेठा पिराक पापड परसन लागे ॥ टूट--मगद वावर गुलाब कतरी । तिकोनादार मौठ मठरी ॥ तिनगिनी स्वार परसाई । सोहैं समाज रघुराई ॥ १० ॥ घेवर औ शकर पारे । हैं नकुल अँदरसे न्यारे । वूँदिनके भरे हैं थारे । फेनिनके टूट रहे तारे ॥ छन्द--वरकदार वरफी गुलाव जामन वालू साई । मेवा मोहन-भोग मुरब्बा मिसरी वालाई । ताजी ताजी पुरी कचौरी परसि दई लाई । दूध दही वूरा अचार इच्छाभोजन भाई ॥ टूट--बूट भिंडी कटहर कोया । साग मेथी पालक सोया । गंगाजलकी अधिकाई । सोहैं समाज रघुराई ॥ ११ ॥ जेवैं ज्योनार बराती । छवि अमित कही ना जाती ॥ गुण गाय गिरा सकुचाती । कवि कथन करैं केहिभाँती ॥ छन्द--नागसुता गन्धर्वसुता और यच्छसुता सारी । राजवधू सुरवधू वधू मिथिलापुरकी नारी ॥ लै लै नाम राम दशरथको गाय रहीं गारी । लेखराजसुत सदा चरण रघुवरकी वलिहारी ॥ टूट--मदनमोहन सुन्दर सम्वाद है छन्द वंदिश गणेशपरशाद ॥ अति ललित रागिनी गाई । सोहैं समाज रघुराई ॥ १२ ॥ २५८ ॥

ठुमरी व खेमटा ।

सँवलियारे मोहिं मारी नजरिया ॥ टेक ॥ भौंहैं कमान वान नैननके, श्याम चितै मारे मोरी ओरिया ॥ सँवलिया० ॥ कुंज-गलीमें दृष्टि पड़ी है तवसे ना मोहिं भावै सेजरिया ॥ सँवलिया ॥

रामनवल चितसे नहिं भूलैं, मोहनकी वह प्यारी सुरतिया ॥ सँव-लियारे मोहिं मारि नजरिया ॥ २५९ ॥

तथा।

कोइ जायके सुनावै सँदेशवारे । टेक ॥ नहिं व्रजराज आज घर आये, लागो जियाको अँदेशवारे ॥ कोइ जायके० ॥ नींद रैनदिन चैन न आवत, बाढ़त पीर करेजवारे ॥ कोइ जाय० ॥ रामनवल विरहा तन जारत, प्यारे पिया परदेशवारे । कोइ जायके सुनावे सँदेशवारे ॥ २६० ॥

तथा।

नहिं आये भवनवाँ सजनवाँरे ॥ टेक ॥ वारी समय अति प्रीति बढ़ावत चाहत मोरा गवनवाँरे ॥ नहिं आये० ॥ जब हम भैली योग पियाके, तबसे बसे मधुवनवाँरे ॥ नहिं० ॥ चढ़ली जवानी पिया नहिं आये, कैसे कटै मोर दिनवाँरे ॥ नहिं० ॥ नहिं चित चैन रैन आवे, ढारत नीर नयनवाँरे ॥ नहिं० ॥ रामनवल बिन श्याम पियाके, तरसत मोरा जोबनवाँरे ॥ नहिं आये भवनवाँ सजनवाँरे ॥ २६१ ॥

तथा।

कठिन प्रण ठाने सखी मिथिलेश । टेक ॥ कहँ धनु अति कठोर शंकरको, कहँ सुत अवधनरेश ॥ कठिन प्रण० ॥ सियहि वेलोकि सुनैना व्याकुल बाढ़त अधिक कलेश ॥ कठिन० ॥ बारंबार देखि कोमल तन, उपजत सखिन अँदेश ॥ कठिन० ॥ रामनवल धरि धीर मनावैं, गौरीकंत महेश ॥ कठिन प्रण ठाने सखी मिथिलेश ॥ २६२ ॥

तथा।

हे प्रभु कीजै सुरतिया हमारी । टेक ॥ दीननके दीनानाथ

कहावत, तुम विन और कवन हितकारी ॥ हे प्रभु० ॥ गौतम ऋषिकी नारि अहल्या, शापविवश पाहन तन धारी ॥ हे प्रभु० ॥ तापर कृपा कियो रघुनन्दन, पदपंकजरज परसि उबारी ॥ हे प्रभु० ॥ जय रघुवंश नवल तन चितवो, अबकी नाथ हमारी वारी ॥ हे प्रभु कीजै सुरतिया हमारी ॥ २६३ ॥

दादरा ।

जरा कह दो सँवलियासे आया करें । जरा कहदो० ॥टेक०॥ आया करें मत जाया करें जरा वंशीमें राग सुनाया करें ॥ जरा कहदो० ॥ दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदिया सपनेमें दर्श दिखाया करें ॥ जरा० ॥ शैर । फिराके यारमें ये जाँ लबोंपे आई है । आह उस शोखने तिसपर न रहम खाई है ॥ अपने बेगाने छोड़की जहाँमें रुसवाई है । दिल लगानेकी ये हमने सजा पाई है ॥ जरा कह दो सँवलियासे आया करें ॥ २६४ ॥

तथा ।

आवो आवो नगरिया हमारी ॥
शैर । करके करार भूलगये किसके ख्यालमें ।
तुम भी जाके फँसगये गेसूके जालमें ॥
क्यों ना लीनी खबरिया हमारी । आवो आवो नगरिया० ॥
शैर । नामाको मेरे पढ़ना जरा देख भाल कर ।
कागजको रखदिया है कलेजा निकालकर ॥
काहे बिसराई सुरतिया हमारी । आवो आवो० ॥
शैर । चूहा जो वत्ती लेगया अपनी मुरादसे ।
सारा महल्ला जलगया एकी चिरागसे ॥
एक बचगई मड़ैया हमारी । आवो आवो नगरिया हमारी ॥२६५॥

तथा ।

निदिया मोरी सजन बिन हरि गई । टेक ॥
शेर । दोस्ती यार दो दिन न निभी फेर जुदाई ठहरी ।
मुफ्त बदनाम हुये लोग हँसाई ठहरी ॥ निदिया० ॥
शेर । दोस्ती दो दिन बढ़ाकर फिर घटाने लगगये ।
या तो थी वो ऐश इशरत फिर सताने लगगये ॥ निदिया० ॥
शेर । दिल उधर सीनेमें तड़पे जी इधर बीमार है ।
क्या कहूँ अब तो बहुत मिट्टी हमारी ख्वार है ॥ निदिया० ॥
शेर । दिलही दिलमें रहते हैं बाहर वो आते क्यों नहीं ।
क्या खता मुझसे हुई मुझसे बताते क्यों नहीं ॥
निदिया मोरी सजन बिन हरि गई ॥ २६६ ॥

तथा ।

मोरा भोला सिपहिया मैं संग चलूँगी । तुम जैहो कचहरी में संग चलूँगी ॥ तुम करना मुकदमा मैं पेश करूँगी । मोरा भोला० ॥ तुम जैहो बजरिया मैं संग चलूँगी । तुम लेना चुनरिया मैं मोल करूँगी ॥ मोरा भोला सिपहिया मैं संग० ॥२६७॥

तथा ।

मनमोहनको लेके अलग रहिबे । टेक ॥ महला दुमहला मनहीं न भावे टूटी झोपड़िया गुजर करिबे ॥ शाल दुशाला मेरे मनहीं न भावे फाटी कमरिया गुजर करिबे ॥ गंगाकिनारे धूनी रमैबो राजा औ रानी भजन करिबे ॥ मनमोहनको लेके अलग रहिबे ॥ २६८ ॥

तथा ।

आली सियावर कैसा सलोना । चिंतवनमें चित आन फँस्यो

है देख सखी चल राजाढिठोना ॥ जनकनगरमें कहर भयो है भूले खान पान सब सोना । श्रीरघुराज धनुपधारीपर अब तो मोहिं फकीरिन होना ॥ आली सियावर कैसा सलोना ॥ २६९॥

काहे मारी नजरिया सँवलिया रे । काहे० ॥ यमुनाके नीरे तीरे गौवें चरावें अधरनपै सोहै बाँसुरिया रे ॥ काहे मारी नजरिया० ॥ वृन्दावनकी कुंजगलिनमें मैं मथुराकी गुजरिया रे ॥ काहे० ॥ वंशी बजावै जिया ललचावै ओढ़े कारी कामरिया रे ॥ काहे मारी नजरिया सँवलिया रे ॥ २७० ॥

राग देश ।

भज मन चन्द्रशेखरचरन ॥ टेक ॥
सगुण निर्गुण रूप जाको नाम मंगलकरन ।
शेष सुमिरन करत जाको धरैं रजसम धरन ॥ भज० ॥
सिद्ध औ सनकादि नारद निगम आगम बरन ।
व्याध महा असाध पामर अन्त लाग्यो मरन ॥ भज० ॥
शीतवश शिवनाम सुमिरत मिटी जियकी जरन ।
इन्द्र चन्द्र कुबेर विधि हरि रहत जाकी शरन ॥
कहत देविसहाय शिव भज मिटै आवागमन ॥ २७१ ॥

गौरीशाष्टक ।

भज गौरीशं भज गौरीशं गौरीशं भज मन्दमते ॥ जड़ भवदुस्तर जलधिसुतरणं । ध्येयं चित्तं शिवहरचरणं ॥ अन्योपायं नहि नहिं सत्यं । ज्ञेयं शंकर शंकर नित्यं ॥ भज गौरीशं० ॥ १ ॥ दारापत्यं क्षेत्रं वित्तं । देहं गेहं सर्वमनित्यं ॥ इति परिभावय सर्वासारं । गर्भविकृत्या स्वप्नविचारं ॥ भज गौरीशं० ॥ २ ॥ मलवैचित्ते पुनरावृत्तिः । पुनरपि जननीजठरोत्पत्तिः ॥ पुनरप्याशाकुलितं जठरं । किं नहि मुंचसि कथ मे चित्तं ॥ भज गौरीशं० ॥३॥

मायाकल्पितमैन्द्रंजालं । नहि तत्सत्यं दृष्टिविकारं ॥ ज्ञाते तत्वे सर्वमसारं । माकुरु माकुरु विषय विचारं ॥ भज० ॥ ४ ॥ रज्जौ सर्पभ्रमणारोपस्तद्वद्ब्रह्मणि जगदारोपः ॥ मिथ्या मायामोहविकारं । मनसि विचारय वारंवारं ॥ भज० ॥ ५ ॥ अध्वर कोटी गंगागमनं । कुरुते योगं चेन्द्रियदमनं ॥ ज्ञानविहीने सर्वमतेन । न भवति मुक्तिर्जन्मशतेन ॥ भज गौरीशं० ॥ ६ ॥ सोहं हंसो ब्रह्मैवाहं । शुद्धानन्दस्तत्वपरोहं ॥ अद्वैतोहं संगविहीने । चेन्द्रिय-आत्मा निखिले लीने ॥ भज० ॥ ७ ॥ शंकर किंकर मा कुरु चिंतां । चिन्तामणिना विरचितमेतत ॥ यः सद्भक्त्या पठतिहि नित्यं । ब्रह्मणि लीनो भवतिहि सत्यम् ॥ भज गौरीशं भज गौरीशं गौरीशं भज मंदमते ॥ ८ ॥ २७२ ॥

नारायणस्वामीके दोहे।

मन लाग्यो सुखभोगमें, तरन चहै संसार।
नारायण कैसे बनै, दिवस रैनको प्यार ॥ २७३ ॥
काम क्रोध मद लोभकी, लगी हियेमें आग।
नारायण वैराग भट, सहित ज्ञान गयो भाग ॥ २७४ ॥
विद्यावन्त स्वरूप गुण, सुत दारा सुखभोग।
नारायण हरिभक्ति बिन, यह सबही है रोग ॥ २७५ ॥
नारायण निज हियेमें, अपने दोष निहार।
ता पीछे तू औरके, औगुण भले विचार ॥ २७६ ॥
सन्तसभा झाँकी नहीं, कियो न हरिगुणगान।
नारायण फिरि कौन विधि, तू चाहत कल्यान ॥ २७७ ॥
कथा सुनत गइ आयु सब, भयो न मन अनुराग।
नारायण तिन श्रवणसों, भवन भले हैं नाग ॥ २७८ ॥
भीतरसों मैलो हियो, बाहर रूप अनेक।

नारायण तासों भलो, कव्वा तन मन एक ॥ २७९ ॥
अपनो साखी आपतो, निज मनमाहिं विचार।
नारायण जो खोट है, ताको तुरत निकार ॥ २८० ॥
दो बातोंको भूल मत, जो चाहे कल्यान।
नारायण इक मौतको, दूजे श्रीभगवान ॥ २८१ ॥
नारायण कीजै सदा, दुष्ट संगको त्याग।
जिमि लोहारके ढिंग परे, वदन चिंगारी आग ॥ २८२ ॥
फूली लता करीलकी, खिले मनोहर फूल।
नारायण ताके निकट, भ्रमर न वैठत भूल ॥ २८३ ॥
नारायण हरिभजनमें, तू जनि देर लगाय।
को जाने या देरमें, श्वाँस रहै कै जाय ॥ २८४ ॥
नारायण विन वोधके, पंडित पशूसमान।
तासों अति मूरख भलो, जो सुमिरै भगवान ॥ २८५ ॥
ज्ञान कथा सीखी घनी, प्रश्न करत अति गूढ।
नारायण विन धारणा, वृथा बकत है मूढ ॥ २८६ ॥
चटक मटक नित छैल बन, तकत चलत चहुँ ओर।
नारायण यह सुधि नहीं, आज मरैं की भोर ॥ २८७ ॥
पुण्यपाठ पूजा करत, प्रगट सहित हंकार।
नारायण रीझै नहीं, चतुरनको सरदार ॥ २८८ ॥
नारायण ते धन्य नर, जिन वश कीन्हे पाँच।
साहिवसों मुख ऊजरे, जगकी लगी न आँच ॥ २८९ ॥
चन्द्रवदन मृगसम नयन, गति गयन्द मृदु बोल।
नारायण हरिभक्ति विन, यह कौड़ीके मोल ॥ २९० ॥
नारायण या जगतमें, यह दो वस्तू सार।
सबसों मीठो बोलिवो, करिबो परउपकार ॥ २९१ ॥

रक्षा करी न जीवकी, दियो न आदर दान।
नारायण ता पुरुषसों, रूख भलो फलवान ॥ २९२ ॥
नारायण दो बातको, दीजै सदा बिसार।
करी बुराई औरने, आप कियो उपकार ॥ २९३ ॥
वशीकरणके मंत्र हैं, नारायण ये चार ॥
रूप राग आधीनता, सेवा भली प्रकार ॥ २९४ ॥
अहंकार मनमें नहीं, सबसों राखत प्यार।
नारायण ता सन्तपै, बारबार बलिहार ॥ २९५ ॥
मगन रहैं नित भजनमें, चलत न चाल कुचाल।
नारायण ते जानिये, ये लालनके लाल ॥ २९६ ॥
नारायण हरिभक्तकी, प्रथम यही पहिचान।
आप अमानी ह्वै रहै, देत औरको मान ॥ २९७ ॥
सन्तदरशकी लालसा, नारायण जो होय।
रीते कर नहिं जाइये, फूल पत्र फल तोय ॥ २९८ ॥

निवेदनपत्रिका (अर्जी)।

गजल।

कहाँ गये ऐ मेरे सतगुरु हजूरी। बसाई कौनसी अब तुमने पूरी ॥ छिपे हो कौनसे परदेमें दाता। निकल आओ मेरे पितु और माता ॥ छिपाई है कहाँ सुन्दर वह मूरत। दिखादो चाँदसी मुझको वह सूरत ॥ मेरी आँखोंकी वह पुतली कहाँ है। अँधेरी रातकी बिजली कहाँ है ॥ कहाँ जाऊँ किधर ढूढूँ बतादो। मेरे प्रीतमकी बाँकी छबि दिखा दो ॥

पता उनका कहीं चलता नहीं है । निशाँ उनका कहीं मिलता नहीं है ॥ नहीं मालूम वह प्राणोंके प्यारे । अकेला छोड़ किस वनको सिधारे ॥ हवा तुमही जरा जाकरके ढूँढो । जमीनो आसमाँको जायँ खूँदो ॥ लगी अब आग छातीमें हमारे । वुझादो कोइ सतसंगी पियारे ॥ मुझे सूना दिखाता है जमाना । कहीं भी अब नहीं मेरा ठिकाना ॥ तड़पता हूँ दरश बिन प्राणप्यारे । रहूँ तनहा मैं अब किसके सहारे ॥ न कोई यार नैगमख्वार मेरा । मुसीवतजदा अबतर हाल मेरा ॥ मेरे पापोंकी यह मुझको सजा है । तड़पता छोड़ पीतम चल दिया है ॥ तड़पता मैं रहूँ दिनरात हे हाथ । निवाहूँ उम्र बाकी हाय किस साथ ॥ न निकली जान अबतक बेहया हूँ । भला मैं तुम बिना क्यों जीरहा हूँ ॥ अरी ओ मौत क्यों आती नहीं है । पकड़ मुझको भी ले जाती नहीं है ॥ जरा मुखड़ा तो दिखला जाओ प्यारे । हवस दिलमें रह जावे हमारे ॥ दयालू दीनबंधू प्राणप्यारे । थका बैठा हूँ मंजिलके किनारे ॥ निकलती जान है कालिबसे मेरी । नजर आजाय बाँकी छबि वह तेरी ॥ नकारा कूचका हाय बजगया अब। कमर बाँधे मुसाफिर डटगया अब ॥ मेरी इस बेकसीपर रहम कीजे । कि दर्शन स्वामि अपना जल्द दीजे ॥ उठा दीजे वह पर्दा दर्मियाँसे । कि कतरा सिंधुका मिलजाय सिंधसे ॥ हवस श्रीदासके दिलमें यही है । न और कुछ चाह दुनियाँ दीनकी है ॥ पड़ी रहे सुर्त चरणोंमें तुमारे । गगनसे पार जाकर वह पधारे ॥ सुना करे नित वहाँ बंशीकी धुनको । पिया करे रात दिन छांके अमीको ॥ मेरी अर्जी यह गरम कबूल कीजै । तो किरपा दासपर अत्यंत कीजे ॥ २९९ ॥

सूर्यभजनाष्टक ।

श्रीगणराज अरज सुनि लीजै ॥ कलिमलग्रसित मूढ़ मन मेरो ताहि विमल करि दीजै । नहिं विद्या नहिं दाम बाहुबल केहि विधि विनती कीजै ॥ कीन्ह चहौं कछु हरिगुण गाना मोहिं भक्तिवर दीजै । सूर्यप्रसाद कहत कर जोरे वेगि खवर लै लीजै ॥ ३०० ॥

करौ मन गुरुचरणन अनुराग ॥ निशदिन भ्रमत श्वान शूकर-सम अब तू मोह निशाते जाग । जब यमदूत लेन तोहिं ऐहैं तब न चलै तेरो राग ॥ अब चित चेत भजन करु निशदिन टूटि जाय भ्रमताग । सूर्यप्रसाद अमित खल तरिगे शरण गये अघ भाग ॥ ३०१ ॥

जड़ चेतन प्रभु रह्यो समाई । जैसे क्षीरमें घृत राजत है विना मथे नहिं परत दिखाई ॥ करिके ध्यान लखौ तन अपने ब्रह्मरन्ध्रमें सुरति लगाई । सूर्यप्रसाद विना सतगुरुके निराकार को सकै लखाई ॥ ३०२ ॥

अजपा माला चली जाय मनकी । करिके ध्यान बैठि सिंहासन छोड़ि चपलता चितकी ॥ शून्य शिखरपर सुरति लगावै लखै ज्योति निर्गुनकी । सूर्यप्रसाद विना सतगुरुके मिलै न डगर अगमकी ॥ ३०३ ॥

सन्तनकी महिमा अगम है भाई । शारद शेष पुराण वेद कवि सबनपै कहि नहिं पाई॥ निर्गुण सगुण होत है जिनके बार-बार प्रभु आई । सूर्यप्रसाद करु संतनकी संगति तेरी बिगरी सबै बनि जाई ॥ ३०४ ॥

---

१ ये आठ भजन सूर्यप्रसाद ब्रह्मचारी लखीमपुरनिवासीके बनाये हैं ॥

दुविधामें भाई दोनों नशानी । न बन्यो स्वारथ न बन्यो परमारथ धोखेमें काया बुढानी ॥ आयो काल अचानक ले गयो रही न नाम निशानी । सूर्यप्रसाद कहै हरिके भजन बिन पशुसमान ते प्राणी ॥ ३०५ ॥

वेद सन्तनकी महिमा अगम गाई । द्वादश कोटि रहे द्विज मखमें सुपच भक्त आइ यज्ञ पूरी कराई ॥ वेद० ॥ सन्तन कृपा धनापर कीन्हीं विना वीज दियो खेत जमाई । कहे सूर्यप्रसाद राम सन्तनमें कुछ अंतर नहीं परत दिखाई ॥ ३०६ ॥

प्रभु काहे न लीन्हीं खबर मेरी । दीन मलीन महाखल पापी ऐसे अधमकी कहो कैसे सुधरी ॥ निशदिन भ्रमत श्वान शूकर सम छलबल करि नित उदर भरी । सूर्यप्रसाद कहत कर जोरे प्रभु दीजिये विसारि जो होइ गुजरी ॥ ३०७ ॥

आत्मानन्दपंचक।

राग जंगला ।

जय गणेश शिवसूनु दया करि, नाश करहु सब विघन हमारे ॥ टेक ॥ धरत ध्यान जो मनुज तिहारो, ताके पुजत मनोरथ सारे । जय० ॥ गज आनन लंबोदर सुन्दर, परशु त्रिशूल ऊर्ध्व कर धारे । जय० ॥ चमर डुलावत ऋद्धि सिद्धि मिलि, मूषकवाहन दृग अरुणारे । जय० ॥ ध्यान धरत ब्रह्मादिक सुरगण, ऋषिसमूह जन दास तिहारे । जय० ॥ आत्मानन्द सहा-

१ ये पाँच भजन आत्मानन्दभजनमालाके हैं. यह पुस्तक पं. हरिप्रसाद भागीरथ पुस्तकालय, कालदेवी रोड़ रामवाडी बंबई इस पतेसे मिलती है ॥

-यक प्रभु तुम, निजभक्तनके हो रखवारे । जय गणेश शिवसूनु दया करि नाश करहु सब विघन हमारे ॥ ३०८ ॥

नारायण निशदिन जेहि रक्षक, ताहि न कोउ सताय सकेरे ॥ टेक ॥ जन प्रहलादहिं डारि अनलमें, कोइ नहिं रोम जलाय सकेरे । नारायण० ॥ पकड़ ग्राहने खैंचि गजेंद्रहिं, जलमें नाहिं डुबाय सकेरे । नारायण० ॥ सभामध्य श्रीद्रुपदसुताकी, नहिं कोउ लाज गँवाय सकेरे । नारायण० ॥ आत्मानन्द हरियश गायेते, भक्त परमपद पाय सकेरे । नारायण० ॥ ३०९ ॥

नारायण प्रभु शरण तिहारी, करहु कृपा महराज हमारे । टेक ॥ पिता मातु दारा सुत सोदर, आवत कोउ नहिं काज हमारे । नारायण० ॥ भवसागर दुस्तर जलमाहीं, तुव पद-कमल जहाज हमारे । नारायण० ॥ किये पाप हम वहु जगअंतर, प्रभु सन्मुख है लाज हमारे । नारायण० ॥ आत्मानन्द कृपा करिये हरि, दुख जावें सब भाज हमारे । नारायण० ॥ ३१० ॥

नारायण प्रभु जासु हृदयमहँ, सो नर कर्म करै न करै रे ॥ टेक ॥ जलहीमाहिं मिली नौका जेहि, भुजते सलिल तरे न तरेरे । नारायण० ॥ जिनके घरमें है पारसमणि, सो धन जोरि धरे न धरेरे । नारायण० ॥ ज्योति प्रकाश भई रविकी जब, दीपक ज्योति जरे न जरेरे । नारायण० ॥ आतमानंद रूप पहिचाने, काशीमें जाय मरे न मरेरे । नारायण० ॥ ३११ ॥

नारायण प्रभुको सुमिरन करि, मेटहु जन्ममरण दुख भारी ॥ टेक ॥ जीति लियो यह दाव मनुजतन, नहिं होवै पुनि हारि तुम्हारी । नारायण० ॥ लोक उभयमहँ जौन सहायक, तौन हरिहिं क्यों दीन्ह विसारी । नारायण० ॥ काल विराजत है शिर ऊपर, सुख सोवत तैं पाँव पसारी । नारायण० ॥

आत्मानन्द हरिके सुमिरन विन, को भवसागर पार उतारी। नारायण० ॥ ३१२ ॥

निर्गुण आरती।

जय जगदीश हरे ॥ टेक ॥ भक्त जनोंके संकट छिनमें दूर करे ॥ जो ध्यावै फल पावै दुख विनशै मनका। सुख संपति गृह आवे कष्ट मिटै तनका ॥ जय० ॥ मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी। तुम विन और न दूजा आश करूं जिसकी ॥ जय० ॥ तुम पूरण परमातमा तुम अन्तर्यामी। पारब्रह्म परमेश्वर तुम सवके स्वामी ॥ जय० ॥ तुम करुणाके सागर तुम पालनकर्ता। मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥ जय० ॥ तुम हो एक अगोचर सवके प्राणपती। किसविध मिलूं गुसाईं तुमको मैं कुमती ॥ जय० ॥ दीनवंधु दुखहर्ता ठाकुर तुम मेरे। अपने हाथ उठावो द्वार परया तेरे ॥ जय० ॥ विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा। श्रद्धाभक्ति वढ़ावौ सन्तनकी सेवा। जय जगदीश हरे ॥ ३१३ ॥

भजन-मंगल।

मंगल माधो नाम उचार ॥ टेक ॥
मंगल वदनकमल कर मंगल। मंगल जानहिं सदा सँभार ॥
देखत मंगल पूजत मंगल। गावत मंगल चरित उदार ॥
मंगल श्रवणकथारस मंगल। मंगल तन वसुदेवकुमार ॥
गोकुल मंगल मधुवन मंगल। मंगल रुचि वृन्दावनचन्द ॥
मंगल करन गोवर्धनधारी। मंगल वेष यशोदानन्द ॥
मंगल धेनु-रेनुभुवमंगल। मंगल मधुर वजावत वेनु ॥
मंगल गोपवधू परिरंभन। मंगल कालिंदी पयफेनु ॥

मंगल चरणकमल मणिमंगल। मंगल कीरत जगत निवास॥
अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि । मंगल मति परमानंददास॥

स्तुति।

हरे राम हरे राम हरे राम हरे हरे। हरे श्याम हरे श्याम हरे श्याम हरे हरे॥ टेक॥ हरे नाथ हरे नाथ व्रजनाथ प्राणनाथ, दीनबंधू दीनानाथ हरे श्याम हरे हरे॥ निर्विकल्प निर्विकार निराधार जगअधार। केलि करत नन्दद्वार हरे श्याम हरे हरे॥ हृषीकेश गोपवेष ध्यावत जेहि विधि महेश। गावत गुण श्रुती शेष हरे श्याम हरे हरे॥ अज अरूप गोपरूप त्रिभुवनपति अमर भूप। हरे श्याम हरे हरे॥ मुरतिमान ज्योतिमान गुण-निधान ज्ञानखान। वासुदेव विरजभान हरे श्याम हरे हरे॥ नंदनंद विरजचंद सत् चिद् आनन्दकंद। काट देओ भवके फन्द हरे श्याम हरे हरे॥ श्याम राम राम श्याम गुणग्राम शोभा-धाम। लज्जित देखि कोटि काम हरे श्याम हरे हरे॥ आदि-पुरुष आदि कृष्ण जगतमय अनादि कृष्ण। कृष्ण विष्णु विष्णु कृष्ण हरे श्याम हरे हरे॥ हरे गोपाल नन्दलाल गिरिधर गोविन्दलाल। संग सखा ग्वाल बाल हरे श्याम हरे हरे॥ लटक चलत हंसचाल चरणकमल मेहँदी लाल। बाजत नूपुर रसाल हरे श्याम हरे हरे॥ कमलदल चपल नैन बोलत अति मधुर बैन। चटक मटक करत सैन हरे श्याम हरे हरे॥ कंठ ललित गुंजमाल तिलक भाल अति विशाल। अधरनपर पान लाल हरे श्याम हरे हरे॥ चित्त चोर चीर चोर माखन नवनीत चोर। छबि अनूप पोर पोर हरे श्याम हरे हरे॥ विरजचंद विरजराज मधुर मधुर मुरली बाज। भक्तनके करत काज हरे श्याम हरे हरे॥

राम श्याम नाम माल जपत कटत भरमजाल । हे गोविन्द गोपाल हरे श्याम हरे हरे ॥ ३१५ ॥

दोहा–है लक्ष्मीपुर अवधमें, नारायणको धाम ।
रागग्रन्थ संग्रह लिख्यो, रत्नाकर अभिराम ॥ १ ॥
नारायणको धर्मसुत, सीताराम सुनाम ।
रहत पुस्तकालय विषे, जो सबमें सरनाम ॥ २ ॥
सड़क सदर बाजारमें, है दूकान सुहात ।
गद्दीऊपर सामुहें, हनूमान दर्शात ॥ ३ ॥
भूल चूक जो होय कछु, छमि हैं सकल सुजान ।
अज्ञानी जन जानि मोहिं, नरस्वभाव करि ध्यान ॥ ४ ॥
भक्ति भक्तियुत ग्रन्थ यह, संग्रह लिख्यो बनाय ।
ब्रजवल्लभहित बंबई, भेज्यो मोद बढ़ाय ॥ ५ ॥
नारायण भगवान्‌की, लीला अगम अपार ।
पढ़ि हैं सुनि हैं रसिकजन, बढ़ि है भक्ति अपार ॥
राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
राम राम कहि राम कहि, कीन्ह ग्रन्थ विश्राम ॥ ७

इति श्रीनारायणभक्तनारायणसंग्रहीते राग-
रत्नाकरे पंचम भाग सम्पूर्णम् ।

रागरत्नाकर ग्रन्थ समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

हरिप्रसाद भगीरथजीका

प्राचीन पुस्तकालय,

कालकादेवी रोड, रामवाडी–मुंः